CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुं॰ नं॰ १३३

लब्धिसार।

(क्षपणासार)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गांधी-हरीभाई देवकरण जैनग्रंथमाला ।

५

आचार्यप्रवर श्रीमन्नेमिचंद्र सैद्धांतचक्रवर्तिविरचित

लब्धिसार ।

(क्षपणासार गर्भित)

श्रीमत्केशववर्णीकृत जीवतत्त्वप्रदीपिका नामकी संस्कृत टीका

और पंडित टोडरमल्लजी कृत सम्यग्ज्ञानचंद्रिका नामकी हिंदीटीका एवं अर्थसंदृष्टि अधिकार सहित ।

जिसको

भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्थाके महामंत्री पन्नालाल बाकलीवालने

संस्थाके जैनसिद्धांत प्रकाशक (पवित्र) प्रेसमें छपाकर

प्रकाशित किया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संपादक—

पं० गजाधरलाल जैन न्यायतीर्थ,

और

श्रीलाल जैन, काव्यतीर्थ।

मुद्रक—

श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ

जैनसिद्धांतप्रकाशक (पवित्र) प्रेस,

नं० ८ महेंद्रबोसलेन श्यामबाजार कलकत्ता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निवेदन।

परमपावन परमब्रह्म परमात्माको अनेकानेक धन्यवाद है जिसकी अनिर्वचनीय वीरतापर विश्वासकर मनुष्य, कठिन भी कार्यको सरल समझकर उसमें प्रवृत्त हो जाता है और उसके पूरा करनेकेलिये भिड जाता है। हम श्रीगोम्मटसारजीकी प्रस्तावनामें यह निवेदन कर चुके हैं कि श्रीगोम्मटसारजी सरीखे विशाल ग्रंथका प्रकाश करना कष्टसाध्य होने पर भी संस्थाने उसे पूरा कर दिखाया और वह ग्रंथराज आज सर्वांगसुंदर हो शास्त्र भंडारोंका भूषण बन रहा है। ग्रंथराज श्रीगोम्मटसारजीका ही परिशिष्ट भाग श्रीलब्धिसार और क्षपणासारजी हैं। ये भी दोनों विशाल ग्रंथ हैं जो कि पाठकोंके सन्मुख संस्कृतटीका और भाषाटीकाके साथ समाप्त विराजमान हैं।

लब्धिसार और क्षपणासार ग्रंथोंके मूलकर्ता प्रातः स्मरणीय भगवान नेमिचंद्रसिद्धांतचक्रवर्ती हैं। जीवकांडमें जीवोंका और कर्मकांडमें कर्मकी मूल उत्तर प्रकृतियोंका वर्णनकर उन ही भगवान नेमिचंद्रने लब्धिसारमें पांचो लब्धियोंका खुलासा वर्णन किया है और क्षपणासारमें कर्म प्रकृतियोंके क्षय करनेका क्रम बतलाया है। भगवान नेमिचंद्रके जीवनकी कुछ घटनाओंका उल्लेख हम गोम्मटसारजीकी प्रस्तावनामें दे चुके हैं, पाठक वहां पढलें।

इन दोनों ग्रंथरत्नोंमें लब्धिसारहीकी संस्कृतटीका उपलब्ध हुई थी क्षपणासारकी संस्कृतटीका नहीं मिली। हिंदी टीका दोनोंकी मिली है इसलिये लब्धिसारकी संस्कृत और भाषाटीका, क्षपणासारकी केवल भाषाटीका और संदृष्टि अधिकार प्रकाशित कर यह विशाल ग्रंथ तयार हुआ है। यद्यपि क्षपणासारकी कोई भी टीका उपलब्ध नहीं है तथापि क्षपणासार नामका स्वतंत्र ग्रंथ माधवचंद्रत्रैविद्यदेवका बनाया हुआ उपलब्ध है। जो क्षपणासारके विषयोंका प्रायः क्रमानुसार वर्णन करनेवाला है। पूज्यपाद पं० टोडरमल्लजीने भी क्षपणासारकी हिंदी टीकाके विषयमें यह लिखा है कि—"क्षपणासारकी संस्कृतटीका नहीं प्राप्त हुई है माधवचंद्रत्रैविद्यदेवका बनाया हुआ जो स्वतंत्र ग्रंथ क्षपणासार है उसीके आधारपर क्षपणासारकी हिंदी टीका लिखी गई है"। इस क्षपणासार ग्रंथकी हमारे पास एक प्रति मोजूद है प्रेस कापी भी की जा चुकी है। किंतु शुद्ध प्रतिके न मिलनेसे इसके प्रकाशनका कार्य रुका पडा है। शुद्ध प्रतिके मिलते ही यह ग्रंथ शीघ्र प्रकाशित किया जायगा और ग्राहकोंकी सेवामें भेज दिया जायगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिगंबर श्वेतांबर और स्थानकवासी तीनों संप्रदायोंमें कई ग्रंथ प्रकाशन करनेवाली संस्थायें मोजूद हैं और भारतीय जैन सिद्धांतप्रकाशिनी संस्थाकी अपेक्षा उन संस्थाओंकी आर्थिक परिस्थिति भी अच्छी है किंतु लब्धिसार और क्षपणासारके साथ अत्यंत विशाल श्रीगोम्मटसारजी सरीखे ग्रंथराजके प्रकाशन करनेका सौभाग्य इस समय इसी संस्थाको है। संस्थाके इस सौभाग्यको सर्वसाधारणपर प्रगट करनेवाले 'हरीभाई देवकरण नामके प्रसिद्ध फार्मके' मालिक जिनवाणभिक्त दानवीर श्रीमान सेठ हीराचंदजी रामचंदजी शोलापुर हैं। उक्त दानवीर सेठ साहबकी असाधारण सहायतासे ही ग्रन्थराज श्रीगोम्मटसारजीका उद्धार हुआ है इसलिये सेठ साहबका यह अपूर्व परमोपकारी दान अत्यंत प्रशंसनीय है और परमात्मासे यह प्रार्थना है कि दानवीर सेठ साहबका जिनवाणी माताके उद्धारार्थ दान देनेके लिए सदा उत्साह रहा आवे और भंडारोंमें जो ग्रन्थ रत्न सडघुनकर कीडोंका कलेवर पुष्ट कर रहे हैं उनके उद्धारका श्रेय उन्हें प्राप्त हो।

इन (लब्धिसार क्षपणासार) ग्रन्थोंका प्रकाशन अनेक प्रतियोंके आधारसे हुआ है। संशोधनमें खूब सावधानी रक्खी गई है तथापि ग्रन्थकी अनिर्वचनीय गहनतासे बहुतसी जगह स्खलन होनेकी संभावना है इसलिये विद्वानोंके समक्ष अपने प्रमादकी आलोचना करते हुए हम क्षमाके प्रार्थी हैं।

विनीत—
गजाधरलाल जैन,
श्रीलाल जैन।

६४८ वें पृष्ठकी अशुद्धि।

दशमी पंक्तिमें 'अपूर्व अंतरकृष्टि होंइ' इस जगह "अपूर्व अंतरकृष्टि भएं एक बंधकी अपूर्व अंतरकृष्टि होइ" ऐसा पाठ है।

तेरहवीं पंक्तिमें 'पूर्वोक्तप्रकार' से आगे 'च्यारिप्रकार' ऐसा पाठ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लब्धिसारक्षपणासारजीकी विषय सूची।

विषय	पृष्ठ
भाषा टीकाकारका मंगलाचरण	१
भाषाटीकाकारकी प्रस्तावना	२
भाषाटीकाकारका ग्रंथमें प्रवेशकरनेकेलिये कर्मोंके बंधसत्त्वादिका वर्णन	४
संस्कृत टीकाकारका मंगलाचरण	३६
ग्रन्थकारका मंगलाचरण तथा ग्रंथ बनानेकी प्रतिज्ञा	४०
दर्शनलब्धि अधिकार।	
प्रथमोपशमसम्यक्त्वके प्राप्त होनेकी योग्यता	४१
पांच लब्धियोंके नाम	४२
क्षयोपशमलब्धिका स्वरूप	४३
विशुद्धि लब्धिका स्वरूप	४४
देशनालब्धिका स्वरूप	४४
प्रायोग्यलब्धिका स्वरूप	४५
प्रकृतिबंधापसरणके ३४ स्थानोंका बंध, उदयसत्त्वादिगर्भित वर्णन	४८
करणलब्धिका स्वरूप	७०
अधःकरणका स्वरूप	७०
अपूर्वकरणका स्वरूप	८२
गुणश्रेणीका वर्णन	१०२
गुणसंक्रमण	१०६
स्थितिखण्डन	१११
अनुभागखंडन	११४
अनिवृत्तिकरणका स्वरूप	११८
प्रथमोपशमसम्यक्त्वकी प्राप्तिके योग्य समय	१३६
क्षायिकसम्यक्त्वका विवरण।	
क्षायिकसम्यक्त्वके योग्य सामग्री आदिका कथन	१४९
अन्तकांडकका वर्णन	१६२
दर्शनमोहकी क्षपणाके अल्पबहुत्वके तेतीस स्थान	२०६
चारित्रलब्धि अधिकार।	
चारित्र लब्धि का स्वरूप और उसके भेद	२२१
एक देशचारित्र	२२२
सकलचारित्र	२३५
उपशमचारित्र	२५१
चारित्रमोहके उपशमनमें आठ अधिकारोंका कथन	२६५
बन्धापसरणादिका वर्णन	२६७
उपशांतकषायगुणस्थानसे गिरनेका वर्णन	३६५
उपशमश्रेणी चढ़नेवाले बारह प्रकारके जीवोंकी विशेष क्रियाएं	४४१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षायिकचारित्राधिकार ।

भाषाटीकाकारका मंगलाचरण	४७९	कृष्टिकथन	५५७
चारित्रमोहक्षपणामें अधिकारोंके नाम तथा अधःकरणका वर्णन	४८०	कृष्टिवेदनाका वर्णन	६०८
		बारहवें गुणस्थानका स्वरूप	७१३
अपूर्वकरणका कथन	४८७	पुरुषवेदी श्रेणी चढनेवालेका स्वरूप	७१७
गुणश्रेणी	४८७	श्रेणीचढनेवाले स्त्रीवेदीका स्वरूप	७२०
गुणसंक्रमण	४८९	नपुंसक वेदसहित श्रेणी चढने वालेका स्वरूप	७२१
स्थितिखण्डन	४९२	सयोगकेवली	७२३
अनुभागखण्डन	४९३	अनन्तचतुष्टयका वर्णन	७२५
अनिवृत्तिकरण	४९५	दुःखका लक्षण	७२८
स्थितिबंधापसरणक्रम	४९८	केवलीके आहारमार्गणा होनेमें कारण	७३०
स्थितिसत्त्वापसरण	५०६	समुद्घातका कथन	७३२
क्षपणाका स्वरूप	५१०	अयोगकेवली	७५७
देशघातिकरण	५१२	सिद्धशिलाका वर्णन	७६१
अंतरकरण	५१३	शुक्लध्यानके भेदोंके अधिकारी	७६२
संक्रमण	५१७	सिद्धस्तवन	७६३
अश्वकर्णका स्वरूप	५२३	ग्रन्थकारकी प्रशस्ति	७६५
अपूर्वस्पर्धक	५४२	गुरुनमस्कार	७६६

इति विषयसूची ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लब्धिसार क्षपणासारजीके गाथाओंकी

अकारादि क्रमसे गाथा सूची।

गाथा	पृष्ठ	पंक्ति	गाथा	पृष्ठ	पंक्ति
अ			अणुभयगणंतरजं	३०२	१५
अकसायकसायाणं	२७९	६	अणुसमओवट्टणायं	२०३	७
अजहण्णमणुक्कस्स	६६	१४	अथिरसुभगजसअरदी	५२	५
अजहण्णमणुक्कस्सं	६८	१३	अद्धाखए पडन्तो	३१३	१६
अट्ठमपुराणपदेसुवि	५०	३	अपुव्वादि वग्गणाणं	७५१	११
अडवस्सादो उवरिं	१७१	५	अमणं ठिदिसत्तादो	१६०	७
अडवस्से उवरिमि वि दु	१७४	४	अवगयवेदो संवो	७२१	१२
अडवस्से य ठिदीदो	१८८	७	अवरवरदेसलद्धी	२३४	१६
अडवस्से संपहियं	१८६	१	अवराजेट्ठाबाहा	४६६	४
अडवस्से संपहियं	१७५	६	अवरादो चरिमोत्ति य	३६४	१०
अणियट्टी अद्धाए	१५२	११	अवरादो वरमहियं	४५४	५
अणियट्टस्स य पढमे	१६५	८	अवरामिच्छतियद्धा	२३१	१
अणियट्टिकरणपढमे	१५९	८	अवरे देसट्ठाणो	२३५	१४
अणियट्टिस्स य पढमे	२७३	११	अवरे बहुगं देदि दु	३५१	१२
अणियट्टी संखगुणो	१३२	४	अवरे विरदट्ठाणो	२३८	१५
अणियट्टी संखेज्जा	१५५	१	असुहाणं पयडीणं	११४	१६
अणुपुव्वी संकमणं	३०५	६	असुहाणं पयडीणं	४१३	१०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असुहाणं रसखंडम	२७६	६
अहवावलिगदवरठिदि	९८	१२
आ		
आउगवज्जाणं ठिदि	११२	६
आउगवज्जाणं ठिदि	४११	१६
आऊ पडि णिरयदुगे	४८	१९
आदिमकरणद्धाए	७४	७
आदिमकरणद्धाए	७५	१०
आदिमकरणद्धाए	४८६	१०
आदिमलद्धिभवो जो	४४	१
आदोल्लस्स य चरिमे	५७०	१०
आदोल्लस्स य पढमे	५६९	१५
आदोल्लस्स य पढमे	५७१	६
आयादो वयमहियं	६२५	१३
आवरणदुगाण खये	७२५	१५
इ		
इदि संढं संकामिय	५२१	१५
उ		
उक्कट्टिदइगिभागं	६१६	९
उक्कट्टदि पडिसमयं	७५२	३
उक्कट्टदि पडिसमयं	४७८	१२
उक्कट्टदि जे अंसे	४१०	३
उक्कट्टिददव्वस्स य	५७७	१७
उक्कट्टिदं तु देदिअ	५५२	८
उक्कट्टिदइगिभागे	१०२	१
उक्कट्टिद इगिभागं	३४१	१७
उक्कट्टिद इगिभागं	१४०	९
उक्कट्टिद बहुभागे	१९५	५
उक्कट्टिदम्हि दे दि हु	१०७	३
उक्कस्सट्ठिदिबंधो	६०	३
उक्कस्सट्ठिदिबंधिय	१६१	५
उक्कस्सट्ठिदिबंधे	९६	१३
उक्किरणो अवसाणे	७११	१२
उक्कीरिदं तु दव्वं	५१४	१२
उदइल्लाणं उदये	६६	४
उदधिसहस्सपुधत्तं	४६७	७
उदधिसहस्सपुधत्तं	५०२	१०
उदयगदसंगहस्स य	६२९	१०
उदयवहिं उक्कट्टिय	२०४	५
उदयाणमावलिम्हि य	१०२	४
उदयाणं उदयादो	३६४	१५
उदयादिअवट्ठिदगा	३८५	१०
उदयादिगलिदसेसा	१९७	११
उदयावलिस्स दव्वं	१०५	६
उदयावलिस्स वाहिं	२७२	१

।२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदयिल्लाणंतरजं	३०१	१४	एक्कं च ठिदिविसेसं	४९०	१०
उदये चउदसघादी	६१	९	एत्तो उवरिं विरदे	२३७	१
उदरिय तदो विदीया	१००	१६	एत्तो समऊणावलि	८८	११
उवणोउ मंगलं वो	२१८	८	एत्तो करोदि किट्टिं	७५०	१०
उवरिसमं उक्कीरइ	२९८	१३	एत्तो पदर कवाडं	७३९	३
उवरिं उदयट्ठाणा	६१३	१७	एत्तो सुहमंचोत्तिय	७०८	११
उवसमचरियाहिमुहा	२५१	९	एत्थापुव्वविहाणं	७५४	७
उवसमसम्मत्तुवरिं	१३७	११	एदेणप्पाबहुग	७०६	८
उवसमसेढीदो पुण	४४०	३	एदेहिं विहीणाणं	६०	३
उवसमसम्मत्तद्धा	१३७	६	एयट्ठिदि खंडुक्की	११६	२२
उवसामगो य सव्वो	१२६	१०	एयणउंसय वेदं	३०७	१
उवसामणा णिधत्ती	४३०	१६	एवं पमत्तमियर	२६४	१०
उवसंतद्धा दुगुणा	१६१	१५	एवं पल्लं जादा	५०१	७
उवसंते पडिवडिदे	३९०	९	एवं पल्लाजादा	२७९	१०
उवसंतपढमसमये	३८३	१६	एवं पल्लासंखं	४२६	१
उवहिसहस्सं तु सयं	१५५	११	एवंविह संकमणं	११०	३
उव्वट्टणा जहण्णा	४८९	६	एवं संखेज्जेसु	३१२	७
ए			**ओ**		
एइंदियट्ठिदीदो	२७७	८	ओदरगकोहपढमे	४०८	१
एइंदियट्ठिदीदो	४९६	६	ओदरगकोहपढमे	४१३	३
एक्कक्कस्स णिंठमणा	७४२	४	ओदरगपुरिसपढमे	४१३	१२
एक्केक्कट्ठिदिखंडय	११४	४	ओदरगमाणपढमे	४०६	११
एक्केक्कट्ठिदिखंडय	४९२	१४	ओदरगमाणपढमे	४०७	८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओदरबादरपढमे	४०२	१८	अंतोकोडाकोडी	४९२	७
ओदरमाया पढमे	४०५	११	अंतोकोडाकोडी	२७४	१०
ओदरमायापढमे	४०५	१९	अंतोमुहुत्तकाला	७०	१
ओदरसुहुमादीए	३९६	८	अंतोमुहुत्तकाले	२२१	१३
ओदरसुहुमादीदो	४३३	७	अंतोमुहुत्तकालं	१५७	१
अं			अंतोमुहुत्तमद्धं	१३९	१
अंतरकडपढमादो	१२२	१	अंतोमुहुत्तमाऊ	७३२	१३
अंतरकदपढमादो	३०७	१०	अंतोमुहुत्तमेत्तं	२५५	१६
अंतरकदपढमादो	५३१	४	अंतोमुहुत्तमेत्तं	३८१	८
अंतरकदादुछण्णा	३२०	१४	अंतोमुहुत्तमेत्तं	३८४	१३
अंतरकरणादुवरिं	३१०	३	क		
अंतरपढमठिदिचिय	६९८	५	कदकरणसम्मखवणा	२०९	८
अंतरपढमठिदित्तिय	७००	१३	कमकरणविणट्ठादो	४२४	११
अंतरपढमठिदित्तिय	७०४	१८	कम्ममलपडलसत्ती	४३	३
अंतरपढमादु कमे	३०६	७	करणपढमादुजावय	२०१	१८
अंतरपढमे अवणे	२९९	१७	करणे अधापवत्ते	४३६	११
अंतरपढमं पचे	१२५	१	किट्टिगजोगीझाणं	७५६	९
अंतरहेदुक्कीरिद	३००	१३	किट्टि सुहुमादीदो	३८०	३
अंतिमरसखंडुक्की	१३०	१	किट्टीकरणद्धाए	३६६	१२
अंतिमरसखंडुक्की	२३०	९	किट्टीकरणद्धाए	६०५	४
अंतोकोडाकोडी	४५	१०	किट्टीकरणे चरमे	७५४	७
अंतोकोडाकोडी	५८	१२	किट्टीकरणद्धहिया	४५७	१५
अंतोकोडाकोडी	१३४	१७	किट्टीयद्धाचरिमे	३६७	५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किट्टीयो इगिफड्ढय	५७८	७
किट्टीवेदगपढमे	६१०	११
किट्टीवेदगपढमे	६८८	३
कोहदुगं संजलणा	३२६	१८
कोहदुसेसेणवहिद	५५८	१२
कोहपढमं वमाणो	६६५	५
कोहस्स पढमकिट्टी	६३१	१४
कोहस्स य पढमठिदी	३२७	१३
कोहस्स पढमकिट्टी	६७२	१५
कोहस्स पढमसंगह	६१३	१५
कोहस्स पढमकिट्टी	६५९	१०
कोहस्स पढमसंगह	६५५	६
कोहस्स य पढमादो	६१०	१७
कोहस्स य माणस्स य	५८३	१
कोहस्स य जे पढमे	६२५	४
कोहस्स य पढमठिदी	७१६	१६
कोहस्स विदियकिट्टी	६५७	७
कोहस्स विदियसंगह	६५७	१४
कोहादि किट्टियादि	६५२	१२
कोहादिकिट्टिवेदग	६५१	११
कोहादीणं सगसग	५७७	१०
कोहादीणमपुव्वं	५५६	८
कोहोवसामणद्धा	४६१	१
कोहं च छुहदिमाणे	२१८	२
कंडय गुणचरिमठिदी	७०१	१०

ख

खयउवसमियविसोही	४२	६
खवग सुहुमस्स चरिमे	२४७	११
खीणे घादिचउक्के	७२५	५
खुज्जद्धं णाराए	५१	११

ग

गणणादेयपदेस	५४२	१०
गुणसेढिअणंतगुणे	५२८	१
गुणसेढि असंखेज्जा	५२०	१५
गुणसेढि अंतरट्ठिदि	६९५	१०
गुणसेढिसंखभागा	१९१	१८
गुणसेढीये सीसं	१२०	४
गुणसेढीगुणसंकम	७२	१०
गुणसेढीगुणसंकम	८४	१२
गुणसेढीगुणसंकम	४८५	४
गुणसेढीगुणसंकम	४८७	३
गुणसेढीदीहत्त	८६	१
गुणसेढीदीहत्तं	४८७	१२
गुणसेढी सत्थेदर	३९७	४
गुणियचउरादिखंडे	६१६	११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घ		
घादयदव्वादो पुण	६२६	७
घादितियाणं णियमा	४१७	११
घादितियाणं संखं	६०६	४
घादितियाणं बंधो	६५४	१
घादितियाणं बंधो	६६३	४
घादितियाणं सत्तं	६६२	११
घादितिसादं मिच्छं	५६	३
घादीणं मुहुतत्तं	७१४	८
च		
चउसमयेसु रसस्स य	७३७	१३
चडपडणमोहचरिमं	४७१	१
चडपडणमोहपढमं	४६९	१८
चडणे णाम दुगाणं	४७२	७
चडणोदरकालादो	४३७	४
चडपडअपुव्वपढमो	४७४	६
चडबादरलोहस्स य	४५८	१०
चडमाणस्स य णामा	४६७	१०
चडमाणअपुव्वस्स य	४७६	४
चडमायमाणकोहो	४६८	१२
चडमायावेदद्धा	४६०	४
चदुगदिमिच्छो सण्णी	४१	१
चलतदिय अवरबंधं	४६८	१
चरिमणिसेउक्कट्टे	९१	७
चरिमाबाहा तत्तो	२३१	५
चरिमे खंडे पडिदे	७१५	१७
चरिमे पढमं विग्घं	७२३	१०
चरिमे फालिं दिण्णे	२००	१
चरिमे सव्वे खंडा	७९	१५
चरिमं फालिं देदि दु	१९८	९
छ		
छक्कम्मे संछुद्धे	५७६	३
छद्दव्वणवपयत्थो	४४	१३
ज		
जगपूरणम्हि एक्का	७३८	६
जत्तोपाये होदि हु	३११	१
जत्तोपाये होदि हु	४२५	८
जत्थ असंखेज्जाणं	१६४	४
जदि गोउच्छविसेसं	१८९	३
जदि मरणसासणो सो	४२८	१३
जदि वि असंखेज्जाणं	२०४	६
जदि संकिलेसजुत्तो	२०४	७
जदि होदि गुणिदकम्मो	१६६	१६
जस्स कसायस्स जं	६६०	५
जस्स य पायपसाए	७६५	१४
जस्सुदयेणारूढो	५४५	११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जस्सुदयेणारूढो	४४६	३
जस्सुदयेण य चडिदो	४५०	१३
जम्हा उवरिमभावा	८३	५
जम्हा हेट्ठिमभावा	७०	१२
जावंतरस्स दुचरिम	२६०	११
जेट्ठवरिट्ठिदि बंधे	४६	८
जे हीणा अवहारे	५५८	५
जोगिस्स सेसकाले	७३४	११
जोगिस्स सेसकालं	७५७	९
जं णोकसायविग्घ	७२७	१४
जं णोकसायविग्घ	७२८	५

ठ

ठिदिखंडपुधत्तगदे	५२६	३
ठिदिखंडयंतु चरिमं	४७३	८
ठिदिखंडयंतु खइये	२६६	१०
ठिदिखंडाणुक्कीरण	१८५	१
ठिदिखंडमसंखेज्जे	७३६	१२
ठिदिखंडसहस्सगदे	५१३	८
ठिदिबंधपुधत्तगदे	२७६	५
ठिदिबंधपुधत्तगदे	५१२	५
ठिदिबंधपुधत्तगदे	५२५	११
ठिदिबंधपुधत्तगदे	५११	३
ठिदिबंधसहस्सगदे	२९५	३
ठिदिबंधसहस्सगदे	२९५	११
ठिदिबंधसहस्सगदे	४९८	१
ठिदिबंधसहस्सगदे	४९८	१२
ठिदिबंधसहस्सगदे	५१०	१
ठिदिबंधसहस्सगदे	५१९	१
ठिदिबंधो सरणं पुण	८५	५
ठिदिबंधाणोसरणं	३१२	११
ठिदिरसघादो णत्थिदु	२२७	४
ठिदिसत्तमपुव्वदुगे	२५३	१३
ठिदिसत्तमघादीणं	५७४	१६
ठिदिसंतं घादीणं	५३०	१

ण

णट्ठा य रायदोसा	७२८	१२
णरतिरियक्खणराउग	४३९	८
णव णोकसायविग्घ	७२६	११
णरतिरियाणं ओघो	५२	१४
णरतिरिये तिरियणरे	२३८	६
णवफड्डयाणकरणे	५६४	७
णवरि असंखाणंतिम	३६३	१५
णवरि य पुंवेदस्स य	३१६	५
णवरि य णामदुगाणं	४१५	१३
णवरि समुग्घादगदे	७३०	१२
णामदुग वेयणिय	३१५	१०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णामदुगे वेयणीये	७११	१२
णामधुवोदयवारस	३८८	३
णासेदि परट्ठाणिय	६२४	१५
णिक्खेवमदित्थावण	८७	७
णिहवगो तट्ठाणे	१५०	२

त

तक्कालवज्जमाणे	९४	४
तक्काले ठिदिसंतं	४९६	१५
तक्काले मोहणियं	४२२	११
तक्काले वेयणियं	२१३	८
तक्काले वेयणियं	५०६	६
तग्गुणसेढी अहिया	४५७	४
तच्चरिमे ठिदिबंधो	७४	१५
तच्चरिमे पुंबंधो	३१६	७
तट्ठाणे ठिदिसंतो	१३५	११
तत्थक्काले दिस्सं	१९०	१७
तत्तो अणियट्टिस्स य	४३०	३
तत्तो अभव्वजोग्गं	६९	८
तत्तो उदय सदस्स य	४७	१४
तत्तोणुभयट्ठाणे	२४३	३
तत्तो तियरणविहिणा	२५२	८
तत्तो दित्थावणगं	९३	१८
तत्तो पडिवज्जगया	२४१	६
तत्तो पढमो अहियो	१३१	१
तत्तो य सुहुम संजम	२४४	१८
तत्तो सुहुमं गच्छदि	६९३	३
तत्थ असंखेज्जगुणं	१९५	३
तत्थ गुणसेढिकरणं	७५७	१७
तत्थ य पडिवादगया	२३९	९
तत्थ य पडिवायगया	२३६	१८
तदियग मायाचरिमे	६६९	१
तदियस्स माणचरिमे	६६७	१२
तप्पढमट्ठिदिसत्तं	४७५	५
तम्मायावेदद्धा	४५९	७
तस्सम्मत्तद्धाए	४३७	१५
तस्साणु पुव्विसंकम	५१६	१६
ताए अधापवत्त	७७	१
ताणं पुणठिदिसंतं	६१४	७
ताहे अपुव्वफड्ढ	५६२	११
ताहे असंखगुणियं	५२४	१
ताहे कोहुच्छिट्ठं	६०८	१०
ताहे चरिमसवेदो	४५३	१
ताहे दव्ववहारो	५६१	४
ताहे मोहो थोवो	५२३	१०
ताहे संखसहस्सं	५२३	३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताहे संजलणाणं	५३४	४
ताहे संजलणाणं	५४१	१७
ताहे संजलणाणं	६६२	१३
ताहे संजलणाणं	६५३	५
तिकरणबंधोसरणं	३६५	३
तिकरणमुभयोसरणं	४८०	४
तिरियदुगुज्जोवोवि य	५०	१६
तिहुवणसिहरेण मही	७६१	११
तिण्हं घादीणं ठिदि	७१२	३
तीदे बंधसहस्से	२६४	७
तीदे बंधसहस्से	५०९	८
तीसियचउण्हपढमो	४७२	१५
ते चेव चोद्दसपदा	५३	१९
ते चेवेक्कारपदा	५५	७
तेण परं हायदि वा	२६३	१५
तेत्तियमेत्ते बंधे	२९०	१८
तेत्तियमेत्ते बंधे	२९१	१४
तेत्तियमेत्ते बंधे	२९२	११
तेत्तियमेत्ते बंधे	५०४	११
तेत्तियमेत्ते बंधे	५०५	४
तेत्तियमेत्ते बंधे	५०५	१३
ते तेरसविदियेण य	५४	१२
तेसिं रसवेदमव	३८९	१
तो देसघादिकरणा	२९७	८
तं णरदुगुच्चहीणं	५८	२
तं सुरचउक्कहीणं	५७	८
थ		
थी अणुवसमे पढमे	४१६	१०
थी अद्धा संखेज्जा	५२२	५
थी उदयस्स य एवं	४५१	६
थी उवसमिदाणंतर	३१५	१
थी पढमट्ठिदिमेत्ता	७२१	१०
थीयद्धा संखेज्जदि	३१४	४
द		
दव्वं असंखगुणियं	२२६	६
दव्वगपढमे सेसे	६८२	६
दव्वं पढमे समये	६७४	१३
दिज्जदि अणंतभागे	६३३	१३
दुतिआउतित्थहार	६७	८
दुविहाचरित्तलद्धि	२२१	३
दूरावकिट्टि पढमं	२१०	११
देवतसवण्णअगुरु	५६	१५
देवेसुदेवमणुए	२००	३
देसो समये समये	२२८	८
दोण्हं तिण्हं चउण्हं	४४१	१०
दंसणमोहक्खवणा	१४९	६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंसणमोहुवसमणं	२५३	३
दंसणमोहूणाणं	२११	१३
दंसण मोहे खविदे	२१७	१७
प		
पडणस्स तस्स दुगुणं	४६९	६
पडणाणियट्टियद्धा	४६३	१४
पडणस्स असंखाणं	४६३	५
पडणजहण्णट्ठिदिं	४५५	४
पडिपदमणंतगुणिदा	६०६	१०
पडिवज्जजहण्णदुगं	२४६	१३
पडिवादादीतिदयं	२४६	५
पडचरिमे गहणादी	२४६	१
पडिवाददुगवरवरं	२४०	८
पडिसमयं दिज्जतमं	७३०	१
पडिसमयमसंखगुणं	३४५	१७
पडिसमयं उक्कट्टदि	४८८	४
पडिसमयं असुहाणं	५२६	१७
पडिसमयं अहिगदिणा	६१९	११
पडिसमयमसंखगुणं	४८८	१३
पडिसमयमसंखगुणं	५११	८
पडिसमयं संखेज्जदि	६२३	१५
पडिखंडगपरिणामा	७८	८
पडिवादगया मिच्छं	२४०	४

पडिसमयगपरिणामा	७७	१४
पडिसमयं उक्कट्टिदि	१०८	१६
पडिसमयमसंखगुणं	१०९	१२
पडिवडवरगुणसेढी	४६४	१०
पढमगमायाचरिमे	६६८	३
पढमगुणसेढिसीसं	७०५	९
पढमट्ठिदियावलिपडि	१२३	१
पढमस्स संगहस्स य	६१२	१२
पढमट्ठिदिअद्धंते	३३६	१७
पढमट्ठिदिसीसादो	३२६	१६
पढमट्ठिदिखंडुक्की	२३०	१३
पढमादिसु दिज्जकमं	५६६	५
पढमादिसु दिस्सकमं	५६७	१७
पढमादिसंगहाओ	५८२	१२
पढमापुव्वजहण्णं	१३२	६
पढमादिसंगहाणं	६५५	१७
पढमावेदोतिविहं	३२४	१८
पढमावेदे संजल	३२४	४
पढमादिसु दिस्सकमं	६८	१६
पढमादो गुणसंकम	१२७	७
पढमापुव्वरसादो	११७	१
पढमे अवरो पल्लो	२३१	१३
पढमे असंखभाग	७५५	८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पढमे करणे अवरा	८०	८	पलिदोवमसंतादो	२११	१
पढमे करणे पढमा	८१	१७	पलिदोवमसंतादो	२११	५
पढमे चरिमे समये	७९	२	पुणरवि मदिपरिभोगं	२९५	१३
पढमे चरिमे समये	३७३	३	पुणरवि मदिपरिभोगं	५१२	७
पढमे छट्ठे चरिमे	२७२	१८	पुरिसस्स य पढमठिदी	३२०	१
पढमे छट्ठे चरिमे	४९४	५	पुरिसस्स उत्तणवकं	३२१	७
पढमे सव्वे विदिये	६०	१०	पुरिसस्स य पढमट्ठिदि	५३०	७
पढमो अधापवत्तो	४३२	१०	पुरिसादीणुच्छिट्ठं	३८२	३
पढमो विदिये तदिये	६५८	५	पुरिसादो लोहगयं	३८२	१५
पढमं अवरवरट्ठिदि	१११	११	पुरिसे दु अणुवसंते	४१४	४
पढमं वि विदियकरणं	८२	१०	पुरिसोदएण चडिद	७२०	७
परमाणुभागखंडे	५६९	५	पुव्वगदस्स तिजोगो	७६२	२०
परिहारस्स जहण्णं	२४७	३	पुव्वादिम्मि अपुव्वा	६०३	७
पल्लट्ठिदिदो उवरिं	१६१	४	पुव्वादिवग्गणाणं	७४७	७
पल्लस्स संखभागो	१५४	७	पुव्वापुव्वप्फड्ढय	६०७	५
पल्लस्स संखभागं	७३	१०	पुव्वाणफड्ढयाणं	५४६	१
पल्लस्स संखभागं	१६१	१७	पुव्वं तियरणविहिणा	१५०	१६
पल्लस्स संखभागं	२३१	९	पुव्विल्लबंधजेट्ठा	६१७	१
पल्लस्स संखभागं	२७८	८	पुंकोधोदयचलिय	४४०	१७
पल्लस्स संखभागं	४८६	३	पुंकोहस्स य उदये	४५३	११
पल्लस्स संखभागं	४९१	३	पुंसंजलणिदराणं	४१४	१३
पल्लस्स संखभागं	४९६	१०	ब		
पल्लस्स संखभागं	५००	७	बहुठिदिखंडे तीदे	७१४	१६

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाहरपढमे किट्टी	४०१	१	माणोदयचडपडिदो	४४८	११
वादरमणवचिउस्सा	७४०	५	मायदुगं संजलणग	३३४	१४
बादरलोभादिठिदी	३६८	१६	मायाए पढमठिदी	३३४	५
बादरपढमे पढमं	४९६	२	मायाए पढमठिदी	३३५	७
बाहत्तरिपयडीओ	७६०	११	मायतियादो लोभ	६८८	५
बोलियबंधावलियं	१४	२	मासपुधत्तं वासा	६६६	८
बंधण दव्वादो पुण	६३२	६	मिच्छणथीणतिसुरचउ	५१	११
बंधणदव्वाणंतिम	६२१	७	मिच्छत्तमिस्ससम्मस	१२५	१५
बंधेण होदि उदओ	५१९	१३	मिच्छत्तं वेदंतो	१४६	६
बंधेण होदि उदओ	५२७	९	मिच्छंतिमठिदिखंडो	२१०	७
बंधे मोहादिकमे	५०६	१६	मिच्छस्स चरमफालिं	१६६	४
बंधोदएहिं णियमा	५२८	१०	मिच्छाइट्ठी जीवो	१४६	१६
म			मिच्छुच्छिट्ठादुवरिं	१६४	१४
मज्झिमधणमवहरिदे	१०५	८	मिच्छे खवदे सम्मदु	२१०	३
मज्झिमबहुभागुदया	७५६	१	मिच्छो देसचरित्तं	२२२	१०
माणदुगं संजलणग	३३२	१	मिच्छो देसचरित्तं	२२३	५
माणतियकोहतदिये	६६०	१२	मिस्सुच्छिट्ठे समये	१६५	९
माणतियाणुदयमहो	७१८	६	मिस्सुदये सम्मिस्सं	१४५	१२
माणस्स य पढमठिदी	३३१	६	मिस्सदुगचरिमफाली	१६७	१२
माणस्स य पढमठिदी	३३२	१३	मोहगपल्लासंखं	२९०	३
माणादितियाणुदये	४४९	१६	मोहगपल्लासंखं	५०४	१
माणादीणहियकमा	५७१	१०	मोहस्स असंखेज्जा	४१९	३
माणोदयेण चडिदो	४४७	५	मोहस्स य ठिदिबंधो	४२७	१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लब्धि क्षपणा सार

१३

मोहस्स पल्लबंधे	४२९	१
मोहं तीसिय वीसिय	४२३	२
र		
रसखंडफड्ढयाओ	५३५	१२
रसगदपदेसगुणहा	११५	१५
रसठिदिखंडाणोत्रं	५७२	१४
रसठिदिखंडुक्कीरण	२०९	१
रससंतं आगहिदं	५३४	१२
ल		
लोभस्स तिघादीणं	६९३	१५
लोभस्स विदियकिट्टिं	६९२	३
लोभादी कोहोत्ति य	५८५	९
लोभोदएण चडिदो	४१७	१७
लोयाणमसंखेज्जं	४२१	१५
लोहस्स अवरकिट्टिग	५८९	१२
लोहस्स अवरकिट्टिग	५९०	११
लोहस्स असंकमणं	४१९	१३
लोहस्स तदियसंगह	६७२	१
लोहस्स पढमकिट्टी	६७३	१
लोहस्स पढमचरिमे	६६९	१५
लोहस्स य तदियादो	६८७	११
लोहादो कोहादो	६०९	११
व		
वस्साणं बत्तीसा	३१२	३
वारेक्कारसमणंतं	६०२	१६
विदियकरणस्स पढमे	२११	९
विदियकरणादिसमया	८२	१८
विदियकरणादिमादो	१२९	१०
विदियकरणादु जावय	२२९	१६
विदियकरणादिमादो	२०८	१०
विदियकरणादि समये	२६६	१
विदियगमाया चरिमे	६६८	१०
विदियतिभागो किट्टी	५७६	७
विदियद्धा संखेज्जा	३६६	२
विदियद्धा परिसेसे	३६८	१
विदियद्धे लोभावर	३२९	१७
विदियट्ठिदिस्स दव्वं	२५७	१६
विदियट्ठिदिस्स दव्वं	२६१	८
विदियस्स माणचरिमे	६६७	५
विदियादिसु समयेसु वि	५६२	१८
विदियादिसु समयेसु	६८१	१८
विदियावलिस्स पढमे	१७१	१५
विदियादिसु समयेसु	२७६	११
विदियादिसु चउठाणा	६१५	१०
विदियं व तदियकरणं	११७	१५

अकारादि क्रमणिका

१३

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विवरीयं पडिहरणदि	४२०	१४	समखंडं सविसेसं	५४८	४
वीरिंदणंदिवच्छे	७६५	६	समयट्ठिदिगो बंधो	७२९	९
वेदज्जादिट्ठिदिए	६६२	३	सम्मत्तचरिमखंडे	१६४	१
वेदगजोगो मिच्छो	२३६	९	सम्मत्तपयडिपढम	२५६	६
स			सम्मत्तपयडिपढम	२५७	४
सगसगफड्ढयएहिं	५१७	१	सम्मत्तहिमुहमिच्छो	४७	३
सट्ठाणे आवज्जदि	७३३	८	सम्मत्तुप्पत्ति वा	२२३	७
सट्ठाणे तावदियं	४३५	१३	सम्मत्तुप्पत्तीए	२६३	४
संढुवसमे पढमे	४१८	५	सम्मदुचरिमे चरिमे	२०६	९
संढुदयंतरकरणो	४५२	३	सम्मस्स असंखेज्जा	२५४	८
सगिणविसुद्धमणि पुरुषो	७४१	१०	सम्मस्स असंखाणं	१६२	२
संतकरणाणि अंतर	३०४	४	सम्मादिठिदिज्झीणो	२६२	८
सत्तकरणाणियंतर	५१७	१४	सम्मुदए चलमलिण	१४४	६
सत्तगट्ठिदिबंधो	६२	१७	सम्मे असंखवस्सिय	२०९	१३
सत्तण्हं पढमट्ठिदि	५२५	३	सयलचरित्तं तिविहं	२३५	१३
सत्तण्हं पयडीणं	२१७	१३	सामयिय दुगजहण्णं	२४७	७
सत्तण्हं पयडीणं	२१८	४	सायारे वट्ठवगो	१३७	१७
सत्तण्हं पढमट्ठिदि	५२४	९	सिद्धे जिणिंदचंदे	४०	२
सत्तण्हं संकामग	५२९	११	सीलेसिं संपत्तो	१४४	८
सत्थाणमसत्थाणं	७२	१	सुत्तादो तं सम्मं	१४४	८
सत्थाणमसत्थाणं	४८५	११	सुहुमाओ किट्टीओ	६७४	३
समऊणदोण्णि आवलि	५३१	१४	सुहुमप्पविट्ठसमये	३६४	३
समए समए भिण्णा	७१	११	सुहुमद्धादो अहिया	७०५	१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुहुमाणं किट्टीणं	७०७	६
सुहमस्स य पढमादो	७४२	१२
सुहुमे संखसहस्से	७०८	२
सुँहुमंतिमगुणसेढी	४५६	९
सेकाले ओवट्टिणि	५३३	८
सेकाले किट्टिस्स य	३६९	१४
से काले किट्टीओ	६०७	१५
से काले देसवदी	२२५	३
से काले माणस्स य	३२८	१३
से काले लोहस्स य	३३६	१
से काले कोहस्स य	६५४	१३
से काले कोहस्स य	६६४	१
से काले जोगिजिणो	७५९	६
से काले मायाए	३३३	६
से काले सुहुमगुणं	६९४	१४
से काले मायास्स य	६६४	११
से काले लोहस्स य	६७०	१४
से काले सो खीणे	७१२	१३
सेढिपदस्सअसंखं	७४६	१८
सेढिपदस्स असंखं	७५३	१
सेसगभागे भजिदे	१०४	१४
सेसाणं पयडीणं	६७०	८
सेसाणं वस्साणं	६०५	१२

सेसं विसेसहीणं	१७०	७
सोदीरणाणदव्वं	३६१	९
सो मे तिहुवणमहिओ	७६३	७
संकमदि संगहाणं	६२०	१
संकामे दुक्कट्टदि	४८६	१२
संकमदो किट्टीणं	६३४	१०
संकमणं तदवट्ठं	५२६	१
संखातीदगुणाणि य	६३२	१५
संखेज्जदिमे सेसे	११८	१८
संगहणे एक्केक्के	५८३	१४
संगहअंतरजाणं	६३५	१
संजलण चउक्काणं	३२६	५
संजलणाणं एक्कं	२९७	१७
संजदअधापवत्तग	४६५	९
संजलणाणं एक्कं	५१४	३
संछुहदि पुरिसवेदे	५१७	१८
संढादिमउवसमगे	३०६	१०

ह

हयकण्णकरणचरिमे	५७४	६
हेट्ठाअसंखभागं	५६२	३
हेट्ठगकिट्टिप्पहुदिसु	६३०	१६
हेट्ठादंडस्संतो	७३३	१
हेट्ठासीसं थोवं	३५४	६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेट्ठासीसे उभयग २४७ १०

हेट्ठिमिगुणयवरादो ६१७ १२

होदि असंखेज्जगुणं ५७१ ८

इति अकारादिक्रमणिका समाप्त ।

लब्धिसार क्षपणासारके अर्थ संदृष्टि अधिकारके

फुटकर यंत्रोंकी सूची।

एक कांडक भेदोंकी संदृष्टिका यंत्र ९ (क)

मिथ्यात्वका द्रव्य जिससमय मिश्र मोह और सम्यक्त्व मोहरूप परिणमता है उसकायंत्र १५ (क)

प्रथम पदसे लेकर पचीसवें पद पर्यंत पदोंकी रचनाका यंत्र १६ (क)

पुरुषवेदादिके बंध द्रव्यकी रचना ५२ (क)

उपशम श्रेणिके चढ़ने वा पडनेके कालकी यंत्र रचना १०२ (क)

सत्त्व द्रव्यमें गुणश्रेणि आदि वा बंध द्रव्यकी यंत्र रचना १०३ (क)

अपूर्व कृष्टियोंकी रचनाका यंत्र १३३ (क)

द्वितीय समयमें उदय अनुभय कृष्टियोंकी यंत्र रचना १३८ (क)

घात द्रव्य वा घातकृष्टिके प्रमाणकी यंत्र रचना १३९ (क)

ग्यारह संग्रह कृष्टियोंमें क्रोधके प्रथम संग्रहके घात द्रव्यके विभागकी रचनाका यंत्र १४३ (क)

बारह संग्रहोंमें कृष्टियोंकी रचनाका यंत्र १४६ (क)

इति फुटकर यंत्रोंकी सूची ।

संदृष्टि अधिकारकी विषय सूची ।

लब्धिसार

प्रथमोपशम सम्यक्त्वाधिकार १

क्षायिक सम्यक्त्वाधिकार १८

देशचारित्राधिकार ४५

सकलचारित्राधिकार ४७

चारित्रमोहोपशमाधिकार ४९

क्षपणासाराधिकार १०३

इति विषयसूची ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

गांधी-हरीभाईदेवकरणजैनग्रंथमाला ।

५

आचार्यप्रवरश्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धांतचक्रवर्तिविरचित

लब्धिसार ।

(क्षपणासार गर्भित)

(संस्कृत और हिंदी भाषा टीका सहित ।)

सम्यग्दर्शनचरनगुन पाय कुकर्म खिपाय ।
केवलज्ञान उपाय प्रभु भए भजौं शिवराय ॥ १ ॥
जिनवानीके ज्ञानतैं होत तत्त्व श्रद्धान ।
चरण धारि केवल लहै पावै पद निरवान ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नेमिचन्द आल्हादकर माधवचन्द प्रधान।
नमौं जास उजासतैं जाने निजगुण थान ॥ ३ ॥
लब्धिसारकौं पायकैं करिकैं क्षपणासार।
हो है प्रवचनसार सो समयसार अविकार ॥ ४ ॥

ऐसैं मंगलाचरणकरि लब्धिसारके सूत्रनिका भाषारूप व्याख्यान करिए है ताका प्रयोजन कहा? सो कहिए है—

श्रीमद्गोम्मटसार शास्त्रविषैं जीवकांड कर्मकांड अधिकारनिकरि जीव अर कर्मका स्वरूप प्रगट कीया ताकौं यथार्थ जानि मोक्षमार्गविषैं प्रवर्तना। जातैं आत्माहित मोक्ष है तिसही के अर्थि विवेकी जीवनिका उपाय है। सो मोक्ष मार्ग सम्यग्दर्शन सम्यक्चारित्र है सम्यग्ज्ञान भी मोक्षमार्ग है सो सम्यग्दर्शनका सहकारी ही जानना। तहां सम्यग्दर्शन तीन प्रकार औपशमिक १ क्षायोपशमिक २ क्षायिक ३। बहुरि सम्यक्चारित्र दोय प्रकार देशचारित्र १ सकलचारित्र २। तहां देश चारित्र तो क्षायोपशमिक ही है अर सकलचारित्र तीन प्रकार है क्षायोपशमिक १ औपशमिक २ क्षायिक ३। सो ऐसैं सम्यग्दर्शन सम्यक्चारित्रकी लब्धि भएं केवलज्ञानकौं पाइ तहां सयोगी अयोगी जिन होइ सिद्धपदकौं प्राप्त हो है। सो इनि सबनिका स्वरूप नीकै जान्या चाहिए जातैं एई आत्माके प्रयोजन भूत कार्य हैं तातैं इनिकौं होतैं पूर्वैं भए कर्मानिके बंध उदय सत्त्वकी कैसी कैसी अवस्था हो है अर जीवका परिणमन कैसैं कैसैं हो है? इत्यादि विशेष जानना युक्त है। बहुरि याकौं जानै चौदह गुणस्थाननिका भी स्वरूप विशेषपनै नीकै जानिए है। अर जीव कर्मादिकी सर्व चर्चानिविषै गुणस्थाननिकी चर्चा प्रधान है तातैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां तिन औपशमिक सम्यक्त्व आदिका वर्णन अवश्य करना ऐसा प्रयोजन विचारि उद्यम कीया तब हम यंत्रादि रचना सहित लब्धिसार नाम शास्त्रका मूल गाथानिका एक पुस्तक देख्या तहां तिन औपशमिक सम्यक्त्वादिकनिका विशेष वर्णन जानि तिनि गाथानिका भाषारूप व्याख्यान करनेका विचार भया बहुरि लब्धिसारकी टीकाके पुस्तक देखे तहां औपशमिक चारित्रका वर्णन पर्यंत गाथानिहीकी संस्कृत टीकाकरि समाप्त करी। अवशेष क्षायिक चारित्रादिकका वर्णन रूप गाथानिकी संस्कृत टीका नाहीं। बहुरि एक क्षपणासार नामा जुदा ग्रंथ शास्त्र ताके पुस्तक देखे तहां गाथा तौ नाहीं अर संस्कृत धारा रूप ही क्षायिक चारित्रादिकका वर्णन है सो याके अर्थका अर तिन अवशेष लब्धिसारकी गाथानिके अर्थका प्रयोजन समानसा देख्या सो ऐसैं अवलोकि यह विचार कीया जो औपशमिक चारित्र पर्यंत गाथानिका व्याख्यान तौ संस्कृत टीकाके अनुसारि करना। अर अवशेष गाथानिका व्याख्यान क्षपणासारके अनुसारि करना सो ऐसैं अनुसार लीए लब्धिसारकी गाथानिका संक्षेप अर्थ इहां लिखिए है। विस्तार होनेके भयतैं विशेष नाहीं लिखिए है वा कोई कठिन अर्थ मेरी समझिमैं नीके न आवनेतैं इहां न लिखिए है सो संस्कृत टीका वा क्षपणासारतैं जानियो। बहुरि ऐसैं व्याख्यान करतैं कहीं चूक होइ, बुद्धिकी मंदतातैं अन्यथा लिखौं तहां विशेषज्ञानी संवारि शुद्ध करियो जातैं अर्थ तौ गंभीर है अर बुद्धि मेरी तुच्छ है तातैं कहीं चूक भी परै। ऐसैं विचारिकरि इस भाषा करनेका प्रारंभ कीजिए है। तहां प्रथम केते इक अर्थ वा संज्ञा विशेष दिखाइए है। जिनिकौं जानैं आगैं तिनिका वर्णन जहां आवै तहां इनिकौं यादिकरि नीके अर्थज्ञानी होइ। तहां इस शास्त्रविषैं दश करणनिका विशेष प्रयोजन है तातैं प्रथम इनिका स्वरूप कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मनिकी दश अवस्था हैं बंध १ सत्व २ उदय ३ उदीरणा ४ उत्कर्षण ५ अपकर्षण ६ संक्रमण ७ उपशम ८ निधात्ति ९ निकांचना १० ए दश करण हैं। सो इनिका स्वरूप गोम्मटसारका कर्मकांडविषैं दश करण चूलिका नामा अधिकार है तहां कह्या है सो जानना। इहां भी प्रयोजन जानि किछू लिखिए है— तहां नवीन पुद्गलनिका कर्मरूप आत्माकैं सम्बन्ध होना ताका नाम बन्ध है। सो च्यारि प्रकार है प्रकृति बंध १ प्रदेश बंध २ स्थितिबंध ३ अनुभाग बंध ४। तहां कर्म रूप होने योग्य जे कार्माण वर्गणा रूप पुद्गल तिनिका ज्ञानावरणादि मूलप्रकृति वा उत्तर प्रकृतिरूप परिणमना सो प्रकृतिबंध है। तहां जेती प्रकृतिनिका जहां बंध संभवै तहां तितनी प्रकृतिबंध जानना। बहुरि तिनि प्रकृतिरूप जितनी पुद्गल परमाणू परिणमीं तिनिका प्रमाणरूप प्रदेश बंध है जातैं इहां प्रदेश नाम पुद्गल परमाणूका है सो अभव्य राशितैं अनन्त गुणा ऐसा जो सिद्धराशिके अनन्तवां भागमात्र प्रमाण तिस प्रमाणमात्र परमाणू मिलि एक कार्माण वर्गणा हो है। अर तितनी ही वर्गणा मिलि एक समय प्रबद्ध हो है। इतनी परमाणू समय समय विषैं कर्मरूप होइ एक जीवकैं बंधैं तातैं याका नाम समयप्रबद्ध है। सो यहु सामान्य प्रमाण है। विशेष योगनिकी अधिक हीनताके अनुसारि समय प्रबद्धविषैं परमाणूनिकी अधिक हीनता जाननी। बहुरि एक समयविषैं ग्रह्या हूवा जो समयप्रबद्ध सो यथासम्भव मूल प्रकृति वा उत्तर प्रकृति रूप परिणमै तहां तिन प्रकृतिनिके परमाणूनिके विभागका विधान गोम्मटसारका बंध सत्त्व उदय अधिकारविषैं प्रदेश बंधका व्याख्यान करते कह्या है सो जानना। सो जिस प्रकृतिकैं जितनी परमाणू वटमें आवैं तिस प्रकृतिका तितने परमाणूनिका समूह मात्र समयप्रबद्ध जानना। बहुरि जे परमाणू प्रकृतिरूप बंधीं ते परमाणू तिस रूप इतना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काल रहसी ऐसा बंध होतैं स्थितिका प्रमाण होना सो स्थिति बंध है। तहां एक समयविषैं जो स्थितिबंध भया ताविषै बंध समयतैं लगाय आबाधा काल पर्यंत तौ तहां बंधी हुई परमाणूनिके उदय आवने योग्यपनेका अभाव है तातैं तहां निषेक रचना है नाहीं। ताके पीछै प्रथम समयतैं लगाइ बंधी हुई स्थितिका अन्त समय पर्यंत एक एक समयविषैं एक एक निषेक उदय आवने योग्य हो है। तातैं प्रथम निषेककी स्थिति एक समय अधिक आबाधा कालमात्र है। द्वितीय निषेककी स्थिति दोय समय अधिक आबाधा कालमात्र है। ऐसैं क्रमतैं द्विचरम निषेककी स्थिति एक समय घाटि स्थिति बंध प्रमाण है। अन्त निषेककी स्थिति सम्पूर्ण स्थितिबंध प्रमाण है जैसैं मोहकी सत्तर कोडाकोडी सागरकी स्थिति बंधी तहां सात हजार वर्षका आबाधा काल है अर प्रथम निषेककी स्थिति एक समय अधिक सात हजार वर्ष है। द्वितीयादि निषेकनिकी क्रमतैं एक एक समय अधिक होइ अन्त निषेककी सत्तर कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति जाननी ऐसैं ही आयु विना सात कर्मनिका विधान है। बहुरि आयुका स्थिति बंध विषैं आबाधा काल नाहीं गिनिए है जातैं ताका आबाधा काल पूर्व पर्याय विषैं ही व्यतीत हो है। तहां तिस कायके उदय होने योग्यपनाका अभाव है तातैं आयुका प्रथम निषेककी स्थिति एक समय द्वितीय निषेककी दोय समय ऐसैं क्रमतैं अन्त निषेककी सम्पूर्ण स्थितिबंधमात्र स्थिति जाननी। ऐसैं एक समय विषैं बंधी जो स्थिति तिहिविषैं विशेष जानना। बहुरि सामान्यपनैं जो अंत निषेककी स्थिति तिस प्रमाण है तहां स्थिति बंध कहिए है जातैं सामान्य कथनविषैं उत्कृष्टका ग्रहण कीजिए है।

बहुरि एक समयविषैं बंध्या जो प्रकृतिका समयप्रबद्ध ताके परिमाणूनिविषैं प्रथमादि निषेक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निका कैसें विभाग हो है ? ताके जाननेकौं गोम्मटसारविषैं कर्मकांडका कर्मस्थिति रचना सद्भावनामा अंतका जो अधिकार तहां द्रव्यस्थिति गुणहानि नानागुणहानि अन्योन्याभ्यस्तराशि दो गुणहानिका प्रमाण कहि तहां विधान कह्या है सो जानना। इहां भी आगैं संक्षेपसा विधान कहिएगा । बहुरि इनि प्रथमादि निषेकनिकी रचना ऊपरि ऊपरि लिखिए है तातैं प्रथमादि पहले निषेकनिकौं नीचैंके निषेक कहिए है अर पिछले निषेकनिकौं ऊपरिके निषेक कहिए है ऐसा जानना । बहुरि जैसैं भाजनादि निमित्ततैं पुष्पादिक हैं ते मदिरा रूप परिणमैं तिनमैं ऐसी शक्ति हो है जो भक्षणकालविषैं हीनाधिक विशेषलीएं पुरुषकौं उन्मत्तता करै तैसैं रागादि निमित्ततैं पुद्गल हैं ते कर्मरूप परिणमैं, तिनमैं ऐसी शक्ति हो है जे उदयकालविषै हीनाधिक विशेष लीएं जीवकैं ज्ञान आच्छादनादि करैं। ऐसैं बंध होतैं शक्तिका होना ताका नाम अनुभाग बंध है। तहां एक प्रकृतिके एक समयविषैं बंधे जे परमाणू तिनविषैं नानाप्रकार शक्ति हो है सो कहिए है—

शक्तिका अविभाग अंश ताका नाम अविभाग प्रतिच्छेद है बहुरि तिनके समूहकरि युक्त जो एक परमाणू ताका नाम वर्ग है। बहुरि समान अविभाग प्रतिच्छेद युक्त जे वर्ग तिनके समूहका नाम वर्गणा है। तहां स्तोक अनुभाग युक्त परमाणूका नाम जघन्य वर्ग है। तिनके समूहका नाम जघन्य वर्गणा है। बहुरि जघन्य वर्गतैं एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त जे वर्ग तिनके समूहका नाम द्वितीय वर्गणा है ऐसैं क्रमतैं एक एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक वर्गनिका समूह रूप वर्गणा यावत् होइ तावत् तिन वर्गणानिके समूहका नाम जघन्य स्पर्धक है। बहुरि जघन्य वर्गतैं दूणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनिका समूहरूप द्वितीय स्पर्धककी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम वर्गणा हो है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक क्रम लीएं जे वर्ग तिनिका समूहरूप वर्गणा यावत् होइ तावत् तिनि वर्गणानिका समूहरूप द्वितीय स्पर्धक हो है। ऐसें ही तृतीय चतुर्थादि स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके वर्गविषै तौ जघन्य स्पर्धकतैं तिगुणे चौगुणे आदि अविभाग प्रतिच्छेद जानने। बहुरि इहां सर्व परमाणूनिका प्रमाण ऊपरि पूर्वोक्त एक एक अधिकका क्रम जानना। सो ऐसा विधान यावत् सर्व परमाणू संपूर्ण होंइ तावत् जानना। बहुरि इहां सर्व परमाणूनिका प्रमाण मात्र तौ द्रव्य है अर वर्गणानिका प्रमाणमात्र अनंत प्रमाण लीएं स्थिति है अर अनुभागसंबंधी यथासंभव अनंत प्रमाणलीएं गुणहानि अर नानागुणहानि अर अन्योन्याभ्यस्तराशि अर दोगुणहानि है। सो इनिकौं स्थापि तहां 'दिवड्ढगुणहाणि भाजिदे पढमा' इत्यादि आगे कहिए है सो विधान तातैं प्रथमादि गुणहानिनिका प्रथमादि वर्गणानिविषैं वर्गनिका प्रमाण ल्यावना। ऐसी वर्गणा एक स्पर्धकविषै जितनी पाइए ताका नाम एक स्पर्धक वर्गणा शलाका है। बहुरि एक गुणहानिविषैं जेता स्पर्धक पाइए है तिनिका नाम एक गुणहानि स्पर्धक शलाका है। ऐसैं अविभाग प्रतिच्छेदनिका समूह वर्ग है वर्गनिका समूह वर्गणा है। वर्गणानिका समूह स्पर्धक है। स्पर्धकानिका समूह गुणहानि है। गुणहानिका प्रमाण सोई नानागुणहानि है ऐसा जानना। सो यहु कथन गोम्मटसारविषैं भी है तथा इहां भी आगें नीके कहिएगा।

बहुरि इन प्रथमादि स्पर्धकनिकी रचना ऊपरि ऊपरि करिए है तातैं प्रथमादि पहिले स्पर्धकनिकौं नीचले स्पर्धक कहिए। अर पिछले स्पर्धकनिकौं ऊपरले स्पर्धक कहिए। बहुरि पूर्वोक्त विधानतैं प्रथमादि स्पर्धकनिविषैं क्रमतैं परमाणुनिका प्रमाण तौ घटता घटता है अर अनुभाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधता बंधता है। तहां प्रथमादि सर्व स्पर्धकनिका च्यारि विभाग करिए हैं ते घातियानिका तौ लता दारु अस्थि शैल समान अर अप्रशस्त अघातियानिका निंब कांजीर विष हलाहल समान अर प्रशस्त अघातियानिका गुड खंड शर्करा अमृतसमान च्यारि भाग जानने। बहुरि घातियानिविषैं लता भागके अर केताइक दारु भागके स्पर्धक देशघाती हैं। अवशेष सर्वघाती हैं। सो विशेष आगें आवेगा ऐसैं अनुभागविषैं विशेष है। सो स्थिति संबंधी एक एक निषेकके परमाणूनिविषैं ऐसा अनुभागका विशेष पाइए है। जैसैं स्थितिके पहिले निषेक पहलैं उदय आवैं पिछले पीछें उदय आवैं तैसैं अनुभागके पहिले स्पर्धक पहिले उदय आवनेका पिछले स्पर्धक पीछे उदय आवनेका नियम नाहीं है। बहुरि सामान्यपनैं जहां जो उत्कृष्ट अनुभाग पाइए सोई तहां अनुभाग बंधका प्रमाण कहिए है। ऐसैं बंधका स्वरूप कह्या।

बहुरि अनेक समयनिविषैं बंधे हुए कर्मनिका विवक्षित कालादिकविषै जीवकैं अस्तित्व ताका नाम सत्त्व है सो च्यारि प्रकार प्रकृति सत्त्व १ प्रदेशसत्त्व २ स्थिति सत्त्व ३अनुभाग सत्त्व ४ तहां अनेकसमयनिविषैं बंधी जो ज्ञानावरणादिक मूल प्रकृति वा तिनकी उत्तर प्रकृति तिनिका जो अस्तित्व सो प्रकृति सत्त्व है। बहुरि तिनि प्रकृतिरूप परिणमीं ऐसे जे अनेक समयनिविषैं बंधी ग्रही हुईं पुद्गल परमाणू तिनिका अस्तित्व सो प्रदेशसत्त्व है सो समय समय विषैं एक एक समयप्रबद्ध ग्रहे तिनके पूर्वोक्त प्रकार एक एक निषेक क्रमतैं निर्जरैं तहां जिनि समय प्रबद्धानिके सर्व निषेक गले तिनिका तौ अस्तित्व रह्या ही नाहीं। बहुरि कोई समय प्रबद्धका अन्य निषेक गालि एक निषेक अवशेष रह्या कोईके अन्य निषेक गालि दोय निषेक अवशेष रहे ऐसैं क्रमतैं जाका एक निषेक गल्या ताके तिस विना सर्व निषेक अवशेष रहे हैं। जाका कोई निषेक न गल्या ताके सर्व ही निषेक अ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वशेष रहें ऐसैं अवशेष रहे समस्त निषेक तिनके परमाणूनिका मिल्या हुवा प्रमाण किंचित् उन ड्योढ गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण है सो याका विधान गोम्मटसारका कर्मस्थिति रचना सद्भाव अधिकारविषैं त्रिकोण रचना करि दिखाया है सो जानना । ऐसैं इनि परमाणूनिका अस्तित्व सो प्रदेशसत्व जानना । इहां जो एक प्रकृतिकी विवक्षा होइ तौ एक प्रकृति संबंधी समयप्रबद्ध ग्रहण करना । जो सर्व प्रकृतिकी विवक्षा होइ तौ सर्व प्रकृति संबंधी समयप्रबद्ध जानना । बहुरि तिनि अनेक समयनिविषै बंधी प्रकृतिनिकी स्थिति ताका नाम स्थितिसत्व है तहां तिनि प्रकृतिनिका जिस समयप्रबद्धका एक निषेक अवशेष रह्या ताकी एक समयकी स्थिति है जाका दोय निषेक अवशेष रहे ताके प्रथम निषेककी एक समय अर द्वितीय निषेककी दोय समय स्थिति है । ऐसैं क्रमतैं जाका एक हू निषेक न गल्या ताकी प्रथमादि निषेकनिकी एक दोय आदि समयनिकरि अधिक आबाधाकालमात्र स्थितिका क्रमकरि तहां अंत निषेककी संपूर्ण स्थितिबंधमात्र स्थिति है । इहां सत्वविषैं अनेक समयप्रबद्धनिके एक समयविषैं उदय आवने योग्य अनेक निषेक मिलैं जो होइ सो एक निषेक जानना । सो इनि विषैं परमाणूनिका प्रमाण आगैं कहैंगे । बहुरि सामान्यपनै जो एक प्रकृतिकी विवक्षा होइ तौ ताके पहिले बंध्या वा पीछे बंध्या समय प्रबद्धनिविषैं जाके बहुत निषेक सत्ताविषैं पाइए तिस समयप्रबद्धके अंत का निषेककी जेती स्थिति तिस प्रमाण स्थितिसत्व कहना । अर सर्व प्रकृतिकी विवक्षा होइ तौ जिस प्रकृतिका समय प्रबद्धके अंत निषेककी बहुत स्थिति होइ ताका अंतनिषेककी स्थिति प्रमाण स्थिति सत्व कहना । बहुरि तिन अनेक समयनिविषैं बंधी जे प्रकृति तिनिका जो अनुभाग सत्ता रूप है ताका नाम अनुभाग सत्व है । तहां एक समयविषैं उदय आवने योग्य अनेक समय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रबद्धनिके निषेक मिलि भया सत्तासंबंधी एक निषेक ताके परमाणूनिविषैं अथवा अनेक समयनिविषैं बंधे समयप्रबद्धनिके गले पीछे अवशेष निषेक रहे तिन सवनिके परमाणूनिविषैं पूर्वोक्त प्रकार अविभाग प्रतिच्छेद वर्ग वर्गणा स्पर्धक रूप अनुभागका विशेष जानना। तहां परमाणूनिका प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार ल्यावना। बहुरि सामान्यपनैं तहां पूर्वोक्त च्यारि प्रकार अनुभागका ग्रहण जानना। ऐसैं सत्त्वनिका निरूपण कीया।

बहुरि कर्मनिका अपने काल आएं फलदेने रूप होइ खिरनेकौं सन्मुख होना सो उदय है सो च्यारि प्रकार-प्रकृति उदय १ प्रदेश उदय २ स्थिति उदय ३ अनुभाग उदय ४। तहां यथा संभव मूल प्रकृति वा उत्तर प्रकृतिका फल देने रूप उदय आवना सो प्रकृति उदय है। बहुरि तिस उदयरूप प्रकृतिके जे परमाणू खिरनेकौं सन्मुख होइ उदय आवैं सो प्रदेश उदय है। तहां अनेक समयनिविषैं बंधे समय प्रबद्धनिका तिस विवक्षित एक समय विषैं उदय आवने योग्य जे निषेक तिन सव निषेकनिके परमाणू तिस विवक्षित एक समयविषैं उदय हो हैं सो कहिए है—

जिस समयप्रबद्धका एकहू निषेक न गल्या ताका प्रथम निषेक उदय हो है। जाका प्रथम निषेक पूर्वैं गल्या ताका द्वितीय निषेक तहां उदय हो है। ऐसैं क्रमतैं जाके दोय निषेक अवशेष रहे ताका तहां उपांत निषेक उदय हो है। जाका एक निषेक ही अवशेष रह्या ताका सोई अंत निषेक तहां उदय हो है। ऐसैं सर्व निषेक मिलि एक समयप्रबद्धमात्र परमाणूनिका उदय हो है। बहुरि तहां उदीरणा उत्कर्षण अपकर्षण आदिका वशतैं विशेष है सो कहिए है—

ऊपरले नीचले अन्य समयनिविषैं उदय आवने योग्य निषेकनिके परमाणू तिस विवक्षित समयनिविषैं उदय आवने योग्य निषेकनिविषैं मिलाया होइ तौ ते परमाणु भी तिनही की साथि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिसही समयविषैं उदय हो हैं। जैसें अंक संदृष्टि करि तरेसठिसै परमाणू तौ तिस समय उदय आवने योग्य निषेकनिके थे अर हजार परमाणू अन्य निषेकनिके तहां मिलाए तौ तहां तिहत्त-रिसै परमाणूनिका उदय हो है। ऐसें ही तिस समयविषैं उदय आवने योग्य निषेक तिनिके पर-माणू अन्य निषेकनिविषैं मिलाए होंइ तौ तहां तिनिके अवशेष परमाणू उदय हो हैं जैसें तिरे-सठिसै परमाणू तिस समयविषैं उदय आवनेयोग्य निषेकनिके थे तिनमैं हजार परमाणू अन्य निषेकनिविषैं मिलाए तौ तहां तरेपनसैं परमाणूनिहीका उदय हो है। बहुरि तिस समय विषैं उदय आवने योग्य निषेकानिका केतेइक परमाणू अन्य निषेकानिविषैं अन्य निषेकनिका परमाणू ति-नविषैं मिलाए होंइ तौं तहां जेते परमाणू हीन अधिक भए तिनिहीका उदय हो है। जैसें तिरे-सठिसै परमाणू तिस समय उदय आवने योग्य निषेकके थे तिनमैं सातसै परमाणू तौ अन्य नि-षेकनिके मिले अर हजार परमाणू अन्य निषेकनिविषैं दीए तौं तिस समयविषैं हजार परमाणू ही का उदय हो है। ऐसें उदीरणादिककी अपेक्षा विशेष जानना। बहुरि विवक्षित एक समयविषैं जे तिस समयविषैं उदय आवने योग्य निषेक तिनिकाही उदय होइ। ताका उदय होतैं सत्ता रूप स्थितिविषैं एक समय घटै है। तातैं तहां एक समयमात्र स्थिति उदय जानना। बहुरि कांडक विधानतैं अनेक समयमात्र स्थिति घटाइए है सो विधानआगैं लिखेंगे। बहुरि तिस एक समय विषैं अनुभागका उदय होना सो अनुभाग उदय है। तहां तिस समयविषैं उदय आवने योग्य प-रमाणूनिविषैं पूर्वोक्त प्रकार अविभाग प्रतिच्छेद वर्गणा स्पर्धक आदि विशेष जानना बहुरि जो उत्कर्षण अपकर्षण कांडकादि विधानतैं अनुभागका घटना बधना भया होइ तौ तहां जैसा अनु-भाग संभवै तितनाहीका उदय जानना। इहां प्रश्न—जो तिस समय विषैं उदय आवने योग्य परमाणू-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निविषैं कोई परमाणूविषैं स्तोक अनुभाग है कोइ विषैं बहुत है तिनि सवनिका एक समय विषैं कैसें उदय हो है ? ताका समाधान—जैसें कोई वस्तु स्तोक शीतलता करनेकौं कारण है कोई बहुत शीतलता करनेकौं कारण है तिनि सवनिकी गोली एक भई ताका एक काल भक्षण कायी तहां सवनिकी शीतलता मिलैं जैसी शीतलता होनीं संभवै तैसी भक्षण करनवालाकैं शीतलता हो है तैसें कोई परमाणूनिविषैं स्तोक अनुभाग है कोई विषैं बहुत अनुभाग है तिनि सवनिका एक निषेक भया ताका एक कालविषैं उदय आया तहां सवनिका अनुभाग मिलैं जैसा अनुभाग होना संभवै तैसा उदयवालेकैं अनुभाग उदय हो है। सामान्यपनै च्यारि प्रकार अनुभाग यथासंभव तहां जानना। ऐसैं उदयका स्वरूप कह्या।

बहुरि अपक्वपाचन कहिए जो पच्या नाहीं उदय कालकौं प्राप्त न भया जो कर्म ताका पाचन कहिए पचावना उदय कालविषैं प्राप्त करना ऐसा है लक्षण जाका सो उदीर्णा कहिए है। तहां वर्तमान समयतैं लगाए आवलीमात्र कालविषैं उदय आवने योग्य जे निषेक तिनिका नाम उदयावली है। ताके ऊपरिवर्त्ती निषेकनिकौं उदयावलीवाह्य कहिए है। तहां उदयावली बाह्य तिष्ठते जे निषेक तिनके परमाणूनिकौं उदयावलीके निषेकनिविषैं मिलावना। ऐसैं बहुत कालविषैं उदय आवते ते अपक्व कहिए तिनिकौं उदयावलीके निषेकनिका साथी उदय होने योग्य करना सो पाचन कहिए ऐसा कार्य जिस समयविषैं होइ तिस समयविषैं उदीरणा नाम पावै है। तिस समयविषैं पीछे सोई द्रव्य सत्तारूप वा उदयरूप कहिए है। ऐसैं उदीरणा का स्वरूप कह्या।

बहुरि स्थिति अनुभागका वंधना ताका नाम उत्कर्षण है। तहां स्तोक कालमैं उदय आवने योग्य जे नीचेके निषेक तिनिके परमाणू ते बहुत कालमैं उदय आवने योग्य जे ऊपरिके निषेक तिनि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषैं मिलैं ऐसैं स्तोक स्थितिका बहुत स्थिति होनेका नाम स्थिति उत्कर्षण है। बहुरि स्तोक अनुभागयुक्त जे नीचेके स्पर्धक तिनिके परमाणू ते बहुत अनुभागयुक्त जे ऊपरिके स्पर्धक तिनिविषैं मिलैं ऐसैं स्तोक अनुभागका बहुत अनुभाग होनेका नाम अनुभाग उत्कर्षण है। बहुरि ऐसैं ही स्थिति अनुभागके घटनेका नाम अपकर्षण जानना। तहां बहुत कालमैं उदय आवने योग्य जे ऊपरिके निषेक तिनके जे परमाणू ते स्तोक कालमैं उदय आवने योग्य जे नीचेके निषेक तिनिविषैं मिलैं ऐसैं बहुत स्थितिका स्तोक स्थिति होनेका नाम स्थिति अपकर्षण है। बहुरि बहुत अनुभागयुक्त जे ऊपरिके स्पर्धक तिनिके जेते परमाणू ते स्तोक अनुभागयुक्त जे नीचेके स्पर्धक तिनिविषैं मिलैं ऐसैं बहुत अनुभागका स्तोक अनुभाग होनेका नाम अनुभाग अपकर्षण है। बहुरि तहां विवक्षित सर्व पारमाणूनिके समूहकौं उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं जो एक भागमात्र परमाणू तिनिकौं ग्रहि यथा योग्य नीचैं वा ऊपरि मिलाइए तहां उत्कर्षण वा अपकर्षणका होना संभवै है सो उत्कर्षणका वा अपकर्षण भागहारका प्रमाण आगे कहिए है जो गुण संक्रम भागहार तातैं तौ असंख्यातगुणा अर अधःप्रवृत्त संक्रम भागहारके असंख्यातवे भाग ऐसा पल्यके अर्धच्छेदानिके असंख्यातवां भागमात्र जानना। ऐसैं उत्कर्षण अर अपकर्षणका स्वरूप कह्या।

बहुरि अन्य प्रकृतिका परमाणू अन्य प्रकृतिरूप जो होइ ताका नाम संक्रमण है जैसैं संक्लेशपनेतैं पूर्वै असाता वेदनी बांधी थी पीछे विशुद्धताके बलतैं ताका परमाणू साता वेदनीय रूप होइ परिणमैं ऐसैंही यथायोग्य अन्य प्रकृतिका भी संक्रम जानना। तहां संक्रमण होनेविषैं पांचप्रकार भागहार संभवै है उद्वेलन १ विध्यात २ अधःप्रवृत्त ३ गुणसंक्रम ४ सर्वसंक्रम ५ सो इनका कथन गो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म्मटसारका कर्मकांडविषैं पंच भागहार चूलिका अधिकार है तहां जानना वा इहां यथावसर कहेंगे। किछू स्वरूप अब भी कहिए है —

उद्वेलन प्रकृतिके जे परमाणू तिनकौं उद्वेलन भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र परमाणू जहां अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमै तहां उद्वेलन संक्रमण कहिए। बहुरि जहां मंद विशुद्धतायुक्त जीवकैं जाका बंध न पाइए ऐसी जो विवक्षित प्रकृति ताके परमाणूनिकौं विध्यातभागहारका भाग दीएं एक भागमात्र परमाणू अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमैं तहां विध्यात संक्रमण कहिए। बहुरि जहां जाका बंध संभवै ऐसी जो विवक्षित प्रकृति ताके परमाणूनिकौं अधःप्रवृत्त भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र परमाणू अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमैं तहां अधः प्रवृत्त संक्रमण कहिए। बहुरि जहां विवक्षित अशुभ प्रकृतिके परमाणूनिकौं गुणसंक्रमण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र परमाणू अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणवै बहुरि प्रथम समय जेती परमाणू परिणई तातैं दूसरे समय असंख्यात गुणी परिणवैं तातैं तीसरे समय असंख्यात गुणी परिणवैं ऐसैं समय समय गुणकार संभवैं तहां गुणसंक्रमण भागहार कहिए। बहुरि तहां विवक्षित प्रकृतिके परमाणू अन्य प्रकृतिरूप समय समय परिणमता संता अन्त समयविषैं अन्त फालि रूप ही अवशेष परमाणू ते सर्व ही अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमैं तहां सर्व संक्रमण कहिए। अब इनि भागहारनिका प्रमाण कहिए है—

सर्व संक्रमण भागहारका तौ प्रमाण एक है जातैं अवशेष रही परमाणूनिकौं एकका भाग दीएं सर्व परमाणू मात्र प्रमाण आवै है तातैं असंख्यात गुणा ऐसा पल्यका अर्धच्छेद प्रमाणके असंख्यातवे भागमात्र गुणसंक्रम भागहारका प्रमाण है। बहुरि तातैं असंख्यात गुणा जो उ- १९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्कर्षण वा अपकर्षण भागहार तिसतैं भी असंख्यात गुणा ऐसा पल्यके अर्धच्छेदनिके असंख्यातवें भागमात्र अधःप्रवृत्त संक्रमण भागहारका प्रमाण है। बहुरि तातैं असंख्यात गुणी जो संख्यात पल्यमात्र कर्मकी स्थिति तातैं भी असंख्यात गुणा ऐसा सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र विध्यात संक्रमण भागहारका प्रमाण है। बहुरि तातैं असंख्यातगुणा ऐसा सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र उद्वेलन संक्रमण भागहारका प्रमाण है। ऐसैं संक्रमणका स्वरूप कह्या।

बहुरि विवक्षित प्रकृतिके जे उदयावलीतैं बाह्य निषेक तिनिके परमाणू जे उदयावलीविषै प्राप्त करने योग्य न होंइ सो उपशांत द्रव्य कहिए। इहां उपशम विधानतैं मोहका उपशम करिए है ताका ग्रहण न करना जातैं उपशमभाव मोहहीका है अर उपशांत करण सर्व प्रकृतिनिकैं पाइए हैं। अर उपशांत आदि तीन करण अष्टम गुणस्थान पर्यंत ही कह्या। अर उपशमभाव ग्यारहां गुणस्थान पर्यंत पाइए है।

बहुरि जे विवक्षित प्रकृतिके परमाणू संक्रमण होनेकौं वा उदयावलीविषैं प्राप्त होनेकौं योग्य न होंइ सो निधत्तिकरण द्रव्य है। बहुरि जो विवक्षित प्रकृतिके परमाणू संक्रमण करनेकौं वा उदयावलीविषैं प्राप्त करनेकौं वा उत्कर्षण अपकर्षण करने योग्य न होंइ सो निःकांचना द्रव्य है। ऐसैं इन तीन करणनिका स्वरूप कह्या। इहां ऐसा नियमतैं जानना जो उपशांतादि रूप द्रव्य है सो उपशांतादि रूप ही रहै है। पूर्वैं उपशांतादिरूप या पीछैं उदीरणा आदि रूप होइ तौ पीछैं किछू दोष नाहीं है। या प्रकार दश करणनिका स्वरूप पहिचानना। अब इहां दर्शन चारित्र लब्धिकरि मोक्षका साधन करिए है—

सो मोक्षकी प्राप्ति संवर निर्जरातैं होइ। संवर निर्जरा हैं ते बंध सत्वकी हानि भएं होंइ सो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन चारित्र लब्धिविषैं बंध सत्वकी हानि कैसैं होइ सो सामान्य स्वरूप इहां कहिए है। विशेष आगें कहिएगा। तहां च्यारि प्रकार बंध मिटनेका क्रम कहिए है--

दर्शन चारित्र लब्धिके निमित्ततैं पहिलैं मिथ्यात्व नारकगति आदि अति अप्रशस्त प्रकृतिनिका पीछैं ज्ञानावरणादि अप्रशस्त प्रकृतिनिका वा प्रशस्त प्रकृतिनिका बंध अभाव हो है। तहां प्रकृतिबंधका क्रमतैं घटना ताका नाम प्रकृति बंधापसरण कहिए है जातैं अपसरण नाम घटनेका है। बहुरि प्रदेश बंध योगानिके अनुसारि है तातैं योगनिकी चंचलता हीन भए प्रदेशबंध हीन हो है। सर्वथा योग नाश भएं प्रदेश बंधका सर्वथा अभाव हो है। बहुरि स्थितिबंध कषायनिके अनुसारि है सो मिथ्यात्व कषायादिककौं हीन होतैं स्थितिबंध घटै है तहां बहुरि स्थितिबंधका क्रमतैं घटना सो स्थितिबंधापसरण है सो पूर्वैं जेता स्थिति बंध होता था तातैं विवक्षित कालविषैं जेता स्थितिबंध घट्या तिस प्रमाण लीएं तहां स्थितिबंधापसरण जानना। बहुरि घटे पीछैं अवशेष जेता रह्या तितना तहां स्थितिबंध जानना बहुरि स्थितिबंधापसरण भएं जेता कालविषैं समान स्थितिबंध सम्भवै सो स्थिति बंधापसरणका काल जानना। इहां दृष्टान्त जैसैं पूर्वैं लक्षवर्षमात्र स्थितिबंध संभवै था तातैं एक हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबंधापसरण भया तब अवशेष निन्याणवै हजार वर्षमात्र स्थितिबंध रह्या सो स्थितिबंधापसरणके कालका पहिला समयविषैं इतना स्थिति बंध होइ बहुरि इतना ही दूसरे समय होइ ऐसैं स्थिति बंधापसरणके कालका अंत समय पर्यंत समान स्थितिबंध हूवा करै पीछै आठसै वर्षमात्र अन्य स्थितिबंधापसरण भया तब अठ्याणवै हजार दोयसै वर्षमात्र अवशेष स्थिति बंध रह्या सो तिस स्थितिबंधापसरण कालके प्रथमादि समयनिविषैं तितना समान स्थितिबंध हूवा करै ऐसैं ही यथासम्भव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमाण जानि स्वरूप जानना। ऐसैं स्थिति बंध घटतैं अपना व्युच्छित्ति होनेका समयविषैं जघन्य स्थितिबंध हो है पीछे स्थिति बंधका नाश है सो आयु विना सर्व प्रकृतीनिका ऐसैं क्रमतैं जानना। आयुका स्थितिबंधापसरण न संभवै है जातैं नरक विना तीन आयुका स्थिति बंध विशुद्धतातैं अधिक हो है। बहुरि अन्य सर्व शुभाशुभ प्रकृतिनिका स्थितिबंध संक्लेशतातैं तौ बहुत हो है अर विशुद्धतातैं स्तोक हो है। बहुरि अनुभाग बंध है सो पाप प्रकृतिनिका तौ संक्लेशतातैं बहुत हो है अर विशुद्धतातैं स्तोक हो है। बहुरि पुन्य प्रकृतिनिका संक्लेशतातैं स्तोक हो है। अर विशुद्धतातैं बहुत हो है। सो अनंतगुणा वा यथासम्भव घटता वा बधता अप्रशस्त वा प्रशस्त प्रकृतिनिका अनुभाग बंध अधिक हीन क्रमतैं जैसैं जहां संभवै तैसैं तहां जानना। बहुरि प्रशस्त प्रकृतिनिका अनुभाग बंध अधिक होनेतैं किछू आत्माका वुरा होता नाहीं जातैं संसारविषैं रहना तौ स्थिति बंधके अनुसारि है अर घातियानितैं आत्माका बुरा होइ सो घातिया अप्रशस्त ही है तातैं दर्शन चारित्रकी लब्धितैं प्रशस्त प्रकृतिनिके अनुभागकी अधिकता अप्रशस्त प्रकृतिनिके अनुभागकी हीनता हो है। तहां कषायनिका अभाव भएं सर्वथा अनुभाग बंधका अभाव हो है। ऐसैं बंधके अभावतैं संवर होनेका विधान जानना। अब सत्व नाशका क्रम कहिए है—

दर्शन चारित्र लब्धिके निमित्ततैं पहलैं मिथ्यात्वादि अति अप्रशस्त प्रकृतिनिका पीछैं ज्ञानावरणादि अप्रशस्त प्रकृतिनिका वा प्रशस्त प्रकृतिनिका सत्त्व नाश हो है सो सत्वनाश स्वमुख उदय करि अर परमुख उदय करि दोय प्रकार हो है। तहां जो प्रकृति अपने ही रूप रहि अपनी स्थिति सत्वका अंत निषेकका उदय भएं अभावकौं प्राप्त होइ ताका स्वमुख उदय करि सत्वनाश कहिए। जैसैं संज्वलन लोभ है सो क्षपक सूक्ष्म सांपरायका अंतविषैं अपने ही रूप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदय होइ नाशकौं प्राप्त हो है। बहुरि जो प्रकृति संक्रमणके वशतैं अन्य प्रकृति रूप परिणमि करि अपना अभावकौं प्राप्त होइ ताका परमुख उदय करि सत्वनाश कहिए। जैसें अनंतानुबंधीका विसंयोजन होतैं अनतानुबंधी कषाय है सो अन्य कषाय रूप परिणमि नाशकौं प्राप्त हो है। ऐसें ही यथा संभव अन्यत्र जानना। बहुरि एक एक सत्ताके निषेकके परमाणू एक एक समयविषैं उदय रूप होइ निर्जरैं। बहुरि दर्शन चारित्र लब्धिके निमित्ततैं ऊपरिके निषेकनिके परमाणू नीचले निषेक रूप होइ परिणमै हैं। तहां एक एक समयविषैं साधिक समयप्रबद्धकी वा अनेक समयप्रबद्धनिकी निर्जरा होइ अर बंध समय समय प्रति एक एक समय प्रबद्धका हो होइ। तातैं तहां निर्जरा बहुत हो है अर बंध स्तोक हो है। अथवा किसी कालविषैं कोई प्रकृतिका बंध नाहीं हो है केवल निर्जरा ही हो है। ऐसें सर्व कर्म परमाणूनिका नाश भएं सर्वथा प्रदेश सत्वका नाश हो है।

बहुरि स्थिति सत्व जो पाइए है तातैं एक एक समय व्यतीत होतैं तो एक एक समय घटै ही है। बहुरि दर्शन चारित्र लब्धिके निमित्ततैं स्थिति कांडकविधानतैं वा अपकृष्ट विधानतैं स्थिति सत्त्वका घटना हो है। तहां प्रथम कांडक विधान कहिए है—

बहुत प्रमाण लीए स्थिति सत्व था ताके समय समय विषैं उदय आवने योग्य बहुत ही निषेक थे तिनविषैं केते इक ऊपरिके निषेकनिका नाशकरि स्थिति सत्व घटावना। तहां तिनि नाश करने योग्य निषेकनिके जे सर्व परमाणू तिनिकौं नाश कीए पीछें जो स्थिति रहेगी ताके आवलीमात्र ऊपरिके निषेक छोडि सर्वनिषेकनिविषैं मिलाइए है। तहां तिनि सर्व परमाणूनिविषैं केते इक परमाणू पाहिले समय मिलाइए है केते इक दूसरे समय मिलाइए है ऐसें यथा सं- १९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत परमाणूनिकौं नीचले निषेकनिविषैं प्राप्त करिए तहां अंत समयविषैं अवशेष रहे सर्व परमाणूनिकौं नीचले निषेकनिविषैं प्राप्त होते संतैं तिनि नाश करने योग्य निषेकनिका नाश भया तब जितने निषेकनिका नाश भया तितना समय प्रमाण स्थितिसत्व तहां घटता भया। इहां दृष्टांत–

जैसैं स्थिति सत्त्व अठतालीस समयमात्र था ताके अठतालीस ही निषेक थे अर तिनि सर्व निषेकनिकी पचीस हजार परमाणू थीं तिनिविषैं आठ निषेकनिका नाश करना तहां तिनिनिषेकनिके एक हजार परमाणू तिनिके अवशेष रहेंगे जे चालीस निषेक तिनिविषैं ऊपरिके दोय निषेक छोडि नीचेके अठतीस निषेकनिविषैं मिलाइए है तहां तिन निषेकनिविषैं केते इक परमाणू तौ पहिले समय मिलाइये केते इक दूसरे समय मिलाइए ऐसैं च्यारि समय पर्यंत मिलाइए है। तहां चौथे समय अवशेष सर्व परमाणूनिकौं तिनि अठतीस निषेकनिविषैं मिलाएं तिनि आठ निषेकनिका अभाव हो है। तिनिके अभाव होतैं अठतालीस समयका स्थिति सत्व था सो चालीस समयहीका रहै है। ऐसैं ही यथा संभव प्रमाण जानि दार्ष्टांतविषैं विधान जानना। अब इहां संज्ञा कहिए है–

ऐसैं ऊपरिके निषेकनिकौं क्रमतैं नीचले निषेक रूप परिणमाइ स्थितिका घटावना ताका नाम स्थितिकांडक है, वा स्थितिखंड है। बहुरि इस एक कांडकविषैं निषेकनिका नाश करि जेती स्थिति घटाई ताके प्रमाणका नाम स्थिति कांडक आयाम है। जैसैं दृष्टांतविषैं आठ समय। बहुरि तिनिका नाश करने योग्य निषेकनिका जो सर्व द्रव्य ताका नाम कांडक द्रव्य है। जैसैं दृष्टांतविषैं एक हजार। बहुरि इस द्रव्यकौं अवशेष स्थितिके निषेकनिविषैं मिलावना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहां आवलीमात्र निषेकनिविषैं न मिलाया ताका नाम अतिस्थापनावली है। जैसैं दृष्टांतविषैं दोय निषेक। बहुरि या विना अन्य अवशेष स्थितिके निषेकनिविषैं तिस कांडक द्रव्यकौं मिलावना ताका नाम कांडकोत्करण है वा कांडकघात है। बहुरि एक कांडकका उत्कर्षण अंतर्मुहूर्त काल करि पूर्ण होइ ताका नाम कांडोत्करण काल है जैसैं दृष्टांतविषैं च्यारि समय। बहुरि इस कालके प्रथम समयविषैं तिस कांडक द्रव्यकौं ग्रहि जेते परमाणू अवशेष निषेकनिविषैं मिलाए ताका नाम प्रथम फालि है। द्वितीय समयविषै मिलाए ताका नाम द्वितीय फालि है। ऐसैं ही क्रमतैं अंत समय विषैं मिलाए ताका नाम चरम फालि है। अंत समयतैं पहिले समयविषैं मिलाए ताका नाम द्विचरम फालि है। ऐसैं एक कांडक समाप्त भएं द्वितीय कांडक प्रारंभ हो है। ऐसैं ही अनेक कांडक भएं स्तोक स्थितिसत्व अवशेष रहि जाइ तब कांडक क्रिया न हो है। एक एक समय व्यतीत होतैं एक एक समय क्रमतैं घाटि तिस अवशेष स्थितिका नाश हो है। ऐसैं कांडक विधान कह्या। अब अपकृष्टि विधान कहिए है—

विवक्षित कर्म प्रकृतिके सर्व निषेक संबंधी सर्व परमाणू तिनकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एकभागमात्र परमाणू ग्रहै ताका नाम अपकृष्ट द्रव्य है। तिस अपकृष्ट द्रव्यविषैं केते इक परमाणू तौ उदयावलीविषैं मिलाए केते इक प्रमाण गुणश्रेणि आयामविषैं मिलाए, अवशेष परमाणू उपरितन स्थितिविषैं मिलाए तहां वर्तमान समयतैं लगाय आवलीमात्र समय संबंधी जे निषेक तिनका नाम उदयावली है तिन विषै उदयावली विषै देने योग्य जो द्रव्य ताकौं निषेक निषेक प्रति एक एक चय घटता क्रमकरि मिलाइए। बहुरि तिनि आवलीमात्र निषेकनिके उपरिवर्ती यथासंभव अंतर्मुहूर्तके समय संबंधी जे निषेक तिनिका नाम गुणश्रेणी आयाम है। तिनि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषैं गुणश्रेणी आयामविषैं देने योग्य जो द्रव्य ताकौं निषेक निषेक प्रति असंख्यातगुणा क्रमलीएं मिलाइए है। बहुरि तिनके उपरिवर्ती अवशेष सर्व स्थिति संबंधी निषेक तिनका नाम उपरितन स्थिति है। तिनविषैं अंतके आवलीमात्र निषेकनिविषैं तौ द्रव्य न मिलाइए है ताका नाम तौ अतिस्थापनावली है। अर तिस विना अन्यनिषेकनिविषैं उपरितन स्थितिविषैं देने योग्य जो द्रव्य ताकौं नाना गुणहानि रचनाकरि निषेक प्रति चय घटता क्रमलीएं मिलाईए है। इहां दृष्टांत जैसैं विवक्षित कर्म प्रकृतिकी स्थिति अटतालीस समय ताके निषेक अडतालीस तिनके सर्व परमाणू पचीस हजार, तिनिकौं अपकर्षण भागहारका प्रमाण पांच ताका भाग दीएं पांच हजार पाए सो सर्व परमाणूनिमैस्यों इतनी परमाणू ग्रहिकरि तिनिविषैं दोयसै पचास परमाणू तौ उदयावलीविषैं दईं सो अठतालीस निषेकनिविषैं प्रथमादि च्यारि निषेक उदयावलीके हैं तिनविषैं चय घटता क्रमकरि मिलाइए। बहुरि एक हजार परमाणू गुणश्रेणि आयामविषैं दईं सो पांचवा आदि बारह्वां पर्यंत आठ निषेक गुणश्रेणि आयामके हैं तिनविषैं असंख्यात गुणा क्रमलीएं मिलाइए। बहुरि तीनहजार सातसै पचास परमाणू उपरितन स्थितिविषैं दईं सो छत्तीस निषेक अवशेष रहे तिनिविषैं अंतके च्यारि निषेक अतिस्थापना रूप छोडि अवशेष तेरह्वां आदि चवालीस पर्यंत बत्तीस निषेकनिविषैं नानागुणहानिकी रचना लीएं चय घटता क्रमकरि मिलाइए। ऐसैं ही दार्ष्टांतविषैं यथासंभव प्रमाण जानि स्वरूप जानना। चय घटता क्रमकरि वा असंख्यात गुणा क्रमकरि मिलाइये मिलावनेका विधान आगे कहेंगे। इहां यहु उदयावलीतैं बाह्य गुणश्रेणी आयाम का स्वरूप दिखाया। बहुरि कहीं उदयादिक गुणश्रेणि आयाम हो है तहां अपकृष्ट द्रव्यविषैं केताइक द्रव्यकौं तौ गुणश्रेणि आयाम प्रमाण जे वर्तमान समय संबंधी निषेकतैं लगाय निषेक ति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निविषैं असंख्यातगुणा क्रमकरि मिलावै। अवशेषकौं उपरितन स्थितिविषैं मिलावै सो इहां गुणश्रेणि आयामविषैं उदयावली गर्भित भई तातैं उदयादि गुणश्रेणि आयाम कहिए।

बहुरि गुणश्रेणिके निषेकनिका प्रमाणमात्र जो यह गुण श्रेणि आयाम कह्या सो कहीं गलितावशेष हो है कहीं अवस्थित हो है। तहां गलितावशेष गुणश्रेणिका प्रारंभ करनेकौं प्रथम समय विषैं जो गुणश्रेणि आयामका प्रमाण था तामैं एक एक समय व्यतीत होतैं ताके द्वितीयादि समयनिविषैं गुणश्रेणि आयाम क्रमतैं एक एक निषेक घटता होइ अवशेष रहै ताका नाम गलितावशेष है। बहुरि अवस्थित गुण श्रेणि आयामके प्रारंभ करनेका प्रथम द्वितीयादिसमयनिविषैं गुणश्रेणि आयाम जेताका तेता रहै। ज्यूं ज्यूं एक एक समय व्यतीत होइ त्यूं त्यूं गुणश्रेणि आयामके अनंतरिवर्ती ऐसा उपरितन स्थितिका एक एक निषेक गुणश्रेणि आयामविषैं मिलता जाइ तहां अवस्थित गुणश्रेणि आयाम कहिए है। बहुरि इस गुणश्रेणि आयामके अन्तके बहुत निषेकनिका नाम कहीं गुणश्रेणि शीर्ष कह्या है। कहीं अंतके एक निषेकका ही नाम गुणश्रेणी शीर्ष है। जातैं शीर्ष नाम उपरिवर्ती अंगका है। ऐसैं विवक्षित स्थानविषैं यथा संभव प्रमाण जानि गुणश्रेणि निर्जराका विधान जानना।

बहुरि इहां उदयावलीविषैं दीया द्रव्य ताका नाम उदीरणा जानना। बहुरि जहां स्तोक स्थिति सत्त्व अवशेष रहै है तहां गुण श्रेणिका भी अभाव हो है। अपकृष्ट द्रव्यविषैं केताइक द्रव्यकौं उदयावलीविषैं देइ अवशेषकौं उपरितन स्थितिविषैं दे है। बहुरि एक समय अधिक आवलीमात्र स्थिति रहैं आवलीके उपरिवर्ती जो एक निषेक ताका द्रव्यकौं अपकर्षणकरि उदयावलीके निषेकनिविषैं एक समय घाटि आवलीका उपरिवर्ती जो एक निषेक ताका द्रव्यकौं अप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्षणकरि उदयावलीके निषेकनिविषैं एक समयरूप घाटि आवलीका दोय त्रिभागमात्र निषेकनिकौं अतिस्थापना रूप छोडि समय अधिक आवलीकौं त्रिभागमात्र निषेकनिविषैं मिलावै है। तहां जघन्य उदीरणा नाम पावे है। ऐसैं अपकृष्टि विधान है। इहां ऐसा जानना—

कांडकविधानतैं तौ स्थिति सत्वका घटना मूलतैं हो है जातैं तहां ऊपरिके केतेइक निषेकनिका नाशकरि स्थिति सत्वका घटना मूलतैं है। बहुरि अनुकृष्टि विधानविषैं ऊपरिकी निषेकनिकी केतीइक परमाणूनिहीकी स्थिति घटाइए है। मूलतैं निषेक नाश नाहीं होइ तातैं मूलतैं स्थिति सत्व घटना न हो है। बहुरि स्थिति सत्वविषैं आवलीमात्र अवशेष रहै ताका नाम उच्छिष्टावली है। तहां उदीरणा आदि कार्य न हो है। पूर्वैं कार्य भए थे तिनिकरि एक एक समयविषैं उदय आवने योग्य ऐसे अनेक समय प्रबद्धमात्र परमाणूके समूह रूप निषेक भए तिनकरि एक समयविषैं गलै निर्जरै हैं। याका नाम अधोगलन है। ऐसैं उच्छिष्टावली व्यतीत भएं सर्वथा स्थिति सत्वका नाश हो है। ऐसैं मुख्यपनैं संक्षेप स्वरूप दिखाया है। विशेष आगे कहेंगे। बहुरि सत्तारूप विवक्षित कर्म प्रकृतिके जे परमाणू तिनविषैं अनुभागकी अधिकता हीनताकरि स्पर्धक रचना है सो पूर्वैं विधान कह्या है। तहां नीचेके स्पर्धक स्तोक अनुभाग युक्त हैं। ऊपरिके स्पर्धक बहुत अनुभाग युक्त हैं। तहां जो निषेक उदय आवै है ताके अनुभागका भी उदय पूर्वोक्त प्रकार हो है। बहुरि दर्शन चारित्र लब्धितैं अप्रशस्त प्रकृतिनिका अनुभाग घटावना हो है। तहां जैसे स्थिति घटावनेविषैं कांडक विधान कह्या तैसैं इहां भी विधान जानना। सो कहिए है-

बहुत अनुभाग युक्त ऊपरिके बहुत स्पर्धकनिका अभाव करि तिनके परमाणूनिकौं स्तोक अनुभाग युक्त नीचेके स्पर्धकनिविषैं क्रमतैं मिलाइ अनुभागका घटावना ताका नाम अनुभाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांडक है। वा अनुभाग खंडन है। ताकौं लांछिन करना कहिए खंडन करना सो अनुभाग कांडकोत्करण है। वा अनुभाग कांडक घात है। बहुरि एक अनुभाग कांडकका घात अंतर्मुहूर्त-कालकरि संपूर्ण होइ तिस कालका नाम अनुभाग कांडकोत्करण काल है। तिस कालविषैं नाश करने योग्य स्पर्धकानिके परमाणूनिकौं ग्रहि नाश कीएं पीछे जे अवशेष स्पर्धक रहे तिनिविषैं केते इक ऊपरिके स्पर्धक अतिस्थापनारूप छोडि अन्य सर्व स्पर्धकनिविषैं मिलावैं है। इहां दृष्टांत—

जैसैं विवक्षित प्रकृतिके पांचसै स्पर्धक थे तिनिका अनंतका प्रमाण पांच ताका भाग दीएं तहां बहुभाग प्रमाण च्यारिसै स्पर्धकानिका नाश करना। तहां तिनिके परमाणूनिकौं अवशेष सो स्पर्धक रहैंगे तिनिविषैं दश स्पर्धक अतिस्थापना रूप छोडि निंचे स्पर्धकनिविषैं मिलावै हैं। ऐसैं ही यथासंभव प्रमाण जानि दृष्टांतविषैं स्वरूप जानना। बहुरि इहां एक अनुभाग कांडककरि जेता अनुभाग घटाया ताका नाम अनुभाग कांडक आयाम है। बहुरि नाश करने योग्य स्पर्धकानिके सर्व परमाणूनितैं ग्रहि करि अनुभाग कांडकका प्रथम समयविषैं जेती परमाणू अवशेष स्पर्धकनिविषैं मिलाईं ताका नाम प्रथम फालि है। द्वितीय समय विषैं मिलाईं ताका नाम द्वितीय फालि है ऐसैं ही क्रम जानना। या प्रकार एक कांडककौं समाप्त भएं अन्य कांडकका प्रारंभ हो है सो ऐसैं अनेक अनुभाग कांडकानिकरि अनुभाग घटाइए है। बहुरि जहां विशुद्धता बहुत हो है तहां अंतर्मुहूर्त करि होता था जो कांडकघात ताका अनुभाग हो है। अर समयापवर्तन हो है। तहां समय समय प्रति अनंतगुणा क्रमकरि अनुभाग घटाइए है। पूर्व समय विषैं जो अनुभाग था ताकौं अनंतका भाग दीएं बहुभागका नाशकरि एक भागमात्र अनुभाग अ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वशेष राखै है। ऐसैं समय समय प्रति अनुभागका घटावना भया तातैं याका नाम अनुसमयापवर्तन है।

बहुरि संज्वलन कषाय विषैं अनुभाग घटनेका क्रमकरि अपूर्व स्पर्धक रचना अर वादर कृष्टि रचना हो है। संज्वलन लोभ विषैं सूक्ष्म कृष्टि रचना हो है सो इनिका विशेष व्याख्यान आगैं होगा। बहुरि सर्वत्र स्तोक अनुभागयुक्तकी तौ नीचैं रचना अर बधती अनुभाग युक्त की ऊपरि रचना जानना। ताकी अपेक्षा स्पर्धकानिकौं कृष्टिनिकौं नीचैं ऊपरि कहिए है। ऐसैं क्रमतैं अप्रशस्त प्रकृतिनिका अनुभाग सत्त्वका नाश हो है। प्रकृतिसत्त्व नाश भएं सर्वथा तिंनिका अनुभाग सत्व नाश हो है। बहुरि प्रशस्त प्रकृतिनिका कांडकादि विधानतैं अनुभाग सत्व का नाश करिए है। प्रकृति सत्वका नाशकी साथि तिनिका अनुभाग सत्त्वका नाश जानना। या प्रकार सत्वनाशका क्रमकरि निर्जरा होनेका विधान जानना। बहुरि संवर निर्जराके योगतैं सर्वकर्मका सर्वथा नाश भएं शुद्धात्मकी व्यक्त अवस्थारूप मोक्ष हो है सो यहु दर्शन चारित्र लब्धिका फल है। इहां कोई क्रियानिका किंचित् स्वरूप दिखाया है। इनिका भी वा अन्य क्रिया अनेक हो हैं तिनिका विशेष व्याख्यान आगैं ग्रंथ विषैं होइ हीगा। अब इहां केती एक संज्ञा कहीं वा आगैं संज्ञा कहैंगे तिनका स्वरूप दिखाइए है।

कर्म प्रकृतिनिका कथनविषैं तिनिकी परमाणूनिका नाम द्रव्य है जैसैं बंधरूप परमाणूनिका नाम बंध द्रव्य है सत्व रूप परमाणूनिका नाम सत्वद्रव्य है। स्थिति कांडकके निषेकानिकी परमाणूनिका नाम कांडक द्रव्य है। तहां प्रथमादि फालीनिके परमाणूनिका नाम प्रथमादि फालिनिका द्रव्य है। ऊपरिके वा नीचैके निषेक छोडि वीचिके केते इक निषेकानिका अभाव करनेरूप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतरकरण हो है। तहां अभाव करनेरूप निषेकनिके परमाणूनिका नाम अंतर करण द्रव्य है। उदय आवनेकौं अयोग्य कीए परमाणूनिका नाम उपशम द्रव्य है । विवक्षित सत्तारूप निषेक था तिस विषैं नवीन परमाणू मिलाईं तिनका नाम दीयमान द्रव्य है। आगैं सत्तारूप थीं अर ए नवीन मिलीं इनि सब परमाणूनिके समूहका नाम दृश्यमान द्रव्य है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि कांडक नाम पर्वका है अर जैसैं साठानिविषैं पैली हो है तैसैं मर्यादारूप स्थानका नाम पर्व है। जैसैं स्थितिविषैं घटनेकरि मर्यादारूप स्थान भया ताका नाम स्थिति कांडक है। अनुभागविषैं घटनेकरि मर्यादारूप स्थान भया ताका नाम अनुभाग कांडक है। बहुरि अनंतानुबंधीकी स्थितिविषैं च्यारि स्थान कहे तहां च्यारि पर्व कहे। बहुरि अपकृष्ट द्रव्यके मिलावनेकौं जहां तीन स्थान हैं तहां तीन पर्व कहे ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि आयाम नाम लंबाईका है सो कालके समय भी युगपत् न हो हैं तातैं कालका प्रमाणविषैं आयाम संज्ञा कहिए है। वा कहीं ऊपरि ऊपरि रचना होइ तहां तिनिका प्रमाणविषैं भी आयाम संज्ञा कहिए है जैसैं स्थितिके प्रमाणका नाम स्थिति आयाम है। स्थिति कांडकके निषेकनिके प्रमाणका नाम स्थिति कांडक आयाम है। अंतर करणविषैं जितने निषेकनिका अभाव कीया है ताका नाम अंतरायाम है। गुण श्रेणिके निषेकनिके प्रमाणका नाम गुणश्रेणि आयाम है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि गुण नाम गुणकारका है तहां गुणकारकी पंक्ति लीएं जहां निषेकनिविषैं द्रव्य दीजिए ताका नाम गुणश्रेणि है। समय समय गुणकार लीएं विवक्षित प्रकृतिकी परमाणू अन्य प्रकृति रूप संक्रमण करै ताका नाम गुणसंक्रम है। गुणकार लीएं हानि कहिए हीनता घटवारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहां होइ ताका नाम गुणहानि है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि कर्मस्थितिविषैं निषेकनि का प्रमाण रूप स्थिति कहिए है—

जैसैं विवक्षित निषेकनिके उपरिवर्ती निषेकनिका नाम उपरितन स्थिति है। गुण श्रेणि-का कथनविषैं तौ गुणश्रेणि आयामतैं उपरिवर्ती निषेकनिका नाम उपरितन स्थिति है। केवल उदीरणाका कथनविषै उदयावलीतैं उपरिवर्ती निषेकनिका नाम उपरितन स्थिति है इत्यादि जानना।

बहुरि विवक्षित प्रमाण लीएं नीचले निषेकनिका नाम प्रथम स्थिति है। बहुरि उपरिवर्ती सर्वस्थितिके निषेकनिका नाम द्वितीय स्थिति है। जैसैं अंतरायामतैं नीचले निषेकनिका नाम प्रथम स्थिति ऊपरले निषेकनिका नाम द्वितीय स्थिति है। अथवा संज्वलन क्रोधका जेता प्रमाण लीएं प्रथम स्थिति स्थापी ताके निषेकनिका नाम प्रथम स्थिति है। अवशेष सर्व स्थितिके नि-षेकनिका नाम द्वितीय स्थिति है। इत्यादि जानना।

बहुरि समुदाय रूप एक क्रिया विषैं जुदा जुदा खंडकरि विशेष करना ताका नाम फालि है जैसैं कांडक द्रव्यका कांडकोत्करण काल विषैं अन्यत्र प्राप्त करना तहां प्रथम समय प्राप्त कीया सो कांडककी प्रथम फालि द्वितीय समयविषैं प्राप्त कीया सो द्वितीय फालि, इत्यादि। बहुरि ऐसैं ही उपशमन कालविषैं पहले समय जेता द्रव्य उपशमाया सो उपशमकी प्रथम फालि, द्वितीय स-मय उपशमाया सो ताकी द्वितीय फालि इत्यादि ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि अन्य निषे-कके परमाणू अन्य निषेक विषैं मिलाइए तहां मिलावना वा देना वा निक्षेपण करना कहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनि निषेकनिविषैं दीए ते निषेक निक्षेपण रूप जानने। अर जिनि निषेकनिविषैं न मिलाइए ते निषेक अतिस्थापनरूप जानने। बहुरि द्वितीय स्थितिके निषेकनिका द्रव्यकौं प्रथम स्थितिके निषेकनिविषैं मिलाइए तहां आगाल संज्ञा कहिए है। अर प्रथमस्थितिके निषेकनिका द्रव्यकौं द्वितीय स्थितिके निषेक निविषैं मिलाइये तहां प्रत्यागाल संज्ञा कहिये बहुरि विवक्षितके कालका जो प्रमाण सोई ताका काल है। जैसैं एक कांडकका घात करनेका जो काल ताका नाम कांडकोत्करण काल है। तहां प्रथम समयविषैं प्रथम फालिका पतन जो नीचले निषेकनिविषैं प्राप्त होना सो हो है। तातैं तिस प्रथम समयकौं प्रथम फालिका पतन काल कहिए। द्वितीय समयकौं द्वितीय फालिका पतन काल कहिये। ऐसैं ही अन्त समयकौं चरमफालि पतन काल कहिए। ताके पूर्व समयकौं द्विचरम फालि पतन काल कहिए। बहुरि जिस कालविषैं अंतरकरण करिए ताका नाम अंतरकरण काल है बहुरि जिस कालविषै क्रोधकौं वेदै ताके उदयकौं भोगवै ताका नाम क्रोध वेदक काल है ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि आवलीमात्र कालका वा तितने काल संबंधी निषेकनिका नाम आवली है। तहां वर्तमान समयतैं लगाय आवलीमात्र कालकौं आवली कहिए वा तिनिके निषेकनिकौं भी आवली कहिए वा उदयावली कहिए। अर ताके ऊपरिवर्ती जो आवली ताकौं द्वितीयावली कहिए वा प्रत्यावली कहिए। बहुरि बंध समयतैं लगाय आवलीपर्यंत उदीरणादि क्रिया न होइ सकै ताका नाम बंधावली है। वा अचलावली है वा आबाधावली है। बहुरि द्रव्य निक्षेपण करतैं जिनि आवलीमात्र निषेकनिविषैं नाहीं निक्षेपण करिए ताका नाम अतिस्थापनावली है। बहुरि स्थिति सत्व घटतैं जो आवलीमात्र स्थिति अवशेष रहि जाय ताका नाम उच्छिष्टावली है। बहुरि जिस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवलीविषैं संक्रमण पाइए सो संक्रमणावली अर उपशमन करना पाइए सो उपशमावली। इत्यादि ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि अन्त नाम माहीका है सो उक्त प्रमाणतैं किछू घाटि होइ तहां अंत संज्ञा हो है तहां कोडाकोडीके नीचैं कोडिके ऊपरि ताकौं अन्तः कोटाकोटी कहिए। मुहूर्त्ततैं घाटि आवलीतैं अधिक ताकौ अंतर्मुहूर्त कहिये। दिवसतैं किछू घाटि ताकौं अंतर्दिवस कहिये। इत्यादि। बहुरि तीनके ऊपरि नवके नीचैं ताका नाम पृथक्त्व है। वा कहीं बहुत हजारोंका भी नाम पृथक्त्व है। सो यथासंबंध जानना। बहुरि कहीं दृष्टांत अपेक्षा संज्ञा हो है जैसैं कोऊ गायका पूंछ क्रमतैं घटता हो है तैसैं इहां एक एक चय घटता क्रमकरि निषेक पाइए तहां गोपुच्छ संज्ञा कहिए। बहुरि द्रव्य देनेविषैं जहां ऊंटकी पीठिवत् हीन अधिकपना होइ तहां उष्ट्रकूट संज्ञा कहिए। बहुरि जहां समान पाटीका आकारवत् सर्वस्थानानिविषैं समान रचना होइ तहां समपट्टिका कहिए इत्यादि जानना। या प्रकार जैसैं व्याकरणविषैं केती इक संज्ञा तौ संज्ञा संधिविषैं कहीं, केती इक संज्ञा जहां प्रयोजन भया तहां कहीं तैसैं इस ग्रंथविषैं केती इक संज्ञा तौ इहां पीठ बंधविषैं कही हैं। केती इक संज्ञा आगै शास्त्रविषैं जहां प्रयोजन होगा तहां कहिएगा। अब इहां द्रव्यका विभाग करनेका विधानकौं कारण करण सूत्र कहिए है। तहां नाना गुणहानिविषैं चय घटता क्रमरूप द्रव्यके विभागका विधान कहिए है—

पहिलैं द्रव्य १ स्थिति २ गुणहानि ३ नाना गुणहानि ४ दोगुणहानि ५ अन्योन्याभ्यस्त ६ राशि इनिका स्वरूप वा प्रमाण जानना। तहां प्रथम सम्बन्ध विषैं स्थिति रचनाकी अपेक्षा कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विवक्षित समयविषैं ग्रहण कीए जे समयप्रबद्ध परिमाण परमाणूं सो द्रव्य है। ताकी आबाधारहित स्थितिबंधके समयनिका जो प्रमाण सो स्थिति है। तहां एक गुणहानिविषैं निषेकनिका प्रमाण सो गुणहानि आयाम है। स्थितिविषैं गुणहानिका जो प्रमाण सो नाना गुणहानि है। गुणहानि आयामतैं दूणा प्रमाण सो दोगुणहानि है। नाना गुणहानिमात्र दूवा माडि परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ सो अन्योन्याभ्यस्त राशि है। जैसैं मिथ्यात्वका द्रव्य तौ अपने समय प्रबद्धमात्र है। स्थिति सत्तर कोडा कोडी सागर है। स्थितिकौं नाना गुणहानिका भाग दीएं जो प्रमाण होइ तितना गुणहानि आयाम है। पल्यके अर्धच्छेदनिविषैं पल्यकी वर्गशलाकाके अर्धच्छेद घटाएं जो होइ तितना नानागुणहानि है। गुणहानि आयामतैं दूणा दोगुणहानि है। पल्यकौं पल्यकी वर्गशलाकाका भाग दीजिए इतना अन्यन्याभ्यस्तराशि है। ऐसैं ही अन्य प्रकृतिनिविषैं यथासम्भव प्रमाण जानना। अत्र अनुभाग रचनाकी अपेक्षा कहिए है--

विवक्षित कर्म प्रकृतिके परमाणूनिका प्रमाण सो तो द्रव्य है। तहां सर्व वर्गणानिका जो प्रमाण सो स्थिति है। एक गुणहानिविषैं वर्गणानिका प्रमाण सो गुणहानि आयाम है। स्थितिविषैं गुणहानिका प्रमाण सो नाना गुणहानि है। दूणा गुणहानिमात्र दोगुणहानि है। नाना गुणहानिमात्र दूवानिकौं परस्पर गुणें जो होइ सो अन्योन्याभ्यस्तराशि है। सो सर्व प्रकृतिनिकी अनुभाग रचनाविषैं इन छहौनिका प्रमाण यथासम्भव हीनाधिकपनांकौं लीएं अनंत प्रमाण जानना। बहुरि जहां कांडकादि द्रव्य ग्रहिकरि यथायोग्य निषेकनिविषैं निक्षेपण करना होइ तहां कहिए है--

जेता द्रव्य ग्रह्या होइ सो तींहि प्रमाण तो द्रव्य है। जितने निषेकनिविषैं देना होइ तिनिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमाण मात्र स्थिति है। गुणहानिका प्रमाण बंधकी स्थिति रचनाविषैं कह्या तितना है। याका भाग इहां सम्भवती स्थितिकौं दीएं नाना गुणहानिका प्रमाण आवै है। दूणा गुणहानिमात्र दोगुणहानि है। नानागुणहानिमात्र दूवानिकौं परस्पर गुणैं अन्योन्याभ्यस्त राशिका प्रमाण हो है। सो इहां इन छहोंका प्रमाण विवक्षित स्थानविषैं जैसा संभवै तैसा जानना। अब इहां स्थिति रचना अपेक्षा निषेकनिविषैं द्रव्यका प्रमाण ल्यावनेकौं विधान कहिए है—

प्रथम दृष्टांत— जैसैं द्रव्य तरेसठिसै ६३००, स्थिति अडतालीस ४८, गुणहानि आठ ८, नाना गुणहानि छह ६, दोगुणहानि सोलह १६, अन्योन्याभ्यस्त राशि चौसठि ६४, स्थापि विधान कहिए है—"दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा" सर्व द्रव्यकौं साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम निषेक होइ जैसैं तरेसठिसैकौं साधिक बारहका भाग दीएं पांचसै बारा होइ। बहुरि 'तं दोगुणहाणिणा भजिदे पचयं' तिस प्रथम निषेककौं दोगुणहानिका भाग दीएं चयका प्रमाण आवै है जैसैं पांचसै बाराकौं सोलहका भाग दीएं बत्तीस होंइ सो द्वितीयादि निषेकनिविषैं एक एक चय प्रमाण द्रव्य घटता जानना। जैसैं द्वितीय निषेकनिविषैं च्यारिसै असी, तृतीयविषैं च्यारिसै अठतालीस इत्यादि जानना।

बहुरि ऐसैं क्रमतैं जिस निषेकविषैं प्रथम निषेकतैं आधा प्रमाण होइ तहांतैं लगाय दूसरी गुणहानि जाननी। जैसैं दूसरी गुणहानिका प्रथम निषेक दोयसै छप्पन बहुरि तहां चयका प्रमाण प्रथम गुणहानितैं आधा है जैसैं सोलह सो इहां भी द्वितीयादिनिषेकनिविषैं एक एक चय घटता क्रम जानना। ऐसैं प्रथम गुणहानितैं द्वितीय गुणहानिविषैं द्रव्य चय निषेकनिका प्रमाण आधा भया याही प्रकार तृतीयादि गुणहानिनिविषैं पूर्व पूर्व गुणहानितैं द्रव्य चय निषेकनिका प्रमाण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रमतैं आधा आधा जानना। सो जितना नानागुणहानिका प्रमाण होइ तितनी गुणहानिनि विषैं ऐसैं रचना करनी जैसैं दृष्टांतविषैं रचना ऐसी—

२२८	१४४	७२	३६	१८	९
३२०	१६०	८०	४०	२०	१०
३५२	१७६	८८	४४	२२	११
३८४	१९२	९६	४८	२४	१२
४१६	२०८	१०४	५२	२६	१३
४४८	२२४	११२	५६	२८	१४
४८०	२४०	१२०	६०	३०	१५
५१२	२५६	१२८	६४	३२	१६

बहुरि अन्यप्रकार विधान कहिए है—

सर्व द्रव्यकौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्त राशिका भाग दीएं अंत गुणहानिके द्रव्यका प्रमाण आवै है जैसैं तरेसठिसैकौं तरेसठिका भाग दीएं सौ होइ। बहुरि द्विचरम गुणहानि आदि विषैं दूणा दूणा होइ आधा अन्योन्याभ्यस्त राशि करि अंत गुणहानिके द्रव्यकौं गुणें प्रथम गुणहानिका द्रव्य हो है। जैसैं सौकौं बत्तीस करि गुणें बत्तीससै होइ ऐसैं गुणहानिके द्रव्यका प्रमाण ल्याइ अब गुणहानिनिविषैं निषेकनिके द्रव्यका प्रमाण ल्याइए है तहां प्रथम गुणहानिका सर्व द्रव्य वा निषेकनिका प्रमाण जानना।

जैसैं द्रव्य बत्तीससै ३२००, निषेक आठ, 'तहां अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे मज्झिम धणमागच्छदि' अध्वान जो निषेकनिका प्रमाणमात्र गच्छ ताकरि सर्वधन जो सर्वद्रव्य सो भाजित ३२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीएं बीचिके निषेकका प्रमाणमात्र मध्यम धन आवे है। जैसें बत्तीससैकौं आठका भाग दीएं च्यारिसै होइ। बहुरि 'तं रूऊणद्धाणूणेण णिसेयभागहारेण हदे पचयं' तिस मध्यम धनकौं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाण करि हीन जो निषेक भागहार दो गुणहानि ताका भाग दीएं चयका प्रमाण आवे है। जैसें सातका आधा साढा तीन ताकरि हीन सोलहकौं कीएं साढा बारह ताका भाग च्यारिसैकौं दीएं बत्तीस पाये सो चयका प्रमाण है। बहुरि 'तं दोगुणहाणिणा गुणिदे आदिणिसेयं' तिस चयकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेकका प्रमाण आवे है। जैसें बत्तीसकौं सोलकरि गुणें पांचसै बारा होइ। बहुरि 'तत्तो विशेषहीणकमं' तहां पीछें द्वितीयादि निषेकनिविषैं विशेष कहिए चयका प्रमाण ताकरि हीनक्रम जानना। एक एक चयमात्र घटता क्रमतैं जानना। तहां एक एक अधिक गुणहानिकरि चयकौं गुणैं अंत निषेकका प्रमाण हो है। जैसें नवकरि बत्तीसकौं गुणें दोयसै अठ्यासी होइ। बहुरि ऐसैं ही द्वितीयादि गुणहानिका द्रव्य स्थापि तहां निषेकनिके द्रव्यका प्रमाण ल्यावना। द्वितीयादि गुणहानिनिविषैं पूर्व गुणहानितैं द्रव्यका वा चयका वा निषेकका प्रमाण क्रमतैं आधा आधा जानना। ऐसैं विधान कह्या।

बहुरि अनुभाग रचनाविषैं भी ऐसैं ही विधान जानना। विशेष इतना—इहां द्रव्यादिकका प्रमाण जैसा संभवै तैसा जानना। बहुरि तहां जैसैं निषेकनिविषैं परमाणूनिका प्रमाण ल्याया तैसैं इहां वर्गणानिविषैं परमाणूनिका प्रमाण ल्यावना। बहुरि ऐसैं ही देने योग्य द्रव्यविषैं भी विधान जानना। विशेष इतना—इहां द्रव्यादिकका प्रमाण जैसा संभवै तैसा जानना। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार तहां निषेकनिका प्रमाण ल्याइ प्रथमादि निषेकनिका जो प्रमाण आवै तितना द्रव्य पूर्वैं जिनिविषैं द्रव्य देना तिनि सत्ताके प्रथमादि निषेकनिविषैं याकौं मिलाय देना। बहुरि ३३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहां द्रव्यकौं स्तोक निषेकनिहीविषैं देना होइ तहां गुणहानि रचना तो संभवै नाही। तहां द्रव्य कैसें देना ? सो कहिए है–

जैसें एक गुणहानिके निषेकनिविषैं द्रव्यके प्रमाण ल्यावनेका विधान कह्या है तैसें ही "अद्धाणेण सव्वधणे खांडिदे मज्झिमधणमागच्छादि" इत्यादि विधानतैं तहां प्रथमादि निषेकनिका प्रमाण ल्यावना। विशेष इतना इहां जितने निषेकनिविषैं द्रव्य देना होइ तींहि प्रमाण गच्छ स्थापना। अर जेता द्रव्य तहां देने योग्य होइ तींहि प्रमाण द्रव्य स्थापना। ऐसैं कीएं जो प्रथमादि निषेकनिका प्रमाण आवै तितने द्रव्यकौं विवाक्षितके पूर्वं सत्तारूपी जे प्रथमादि निषेक पाइए हैं तिनविषैं मिलाय देना। उदयावलीविषैं द्रव्य देना होइ तहां वा स्तोक स्थिति रहिगएं उपरितन स्थितिविषैं द्रव्य देना होइ तहां वा अन्यत्र ऐसा विधान जानना। बहुरि गुणश्रेणि आयाम आदि विषैं द्रव्य देना होइ तहां विधान कहिए है––

'प्रक्षेपयोगोद्धतमिश्रपिंडप्रक्षेपकाणां गुणको भवेदिति' इस करण सूत्र अनुसारि विधान जानना। सो कहिए है–जैसें सीरके द्रव्यका नाम तौ मिश्रपिंड है। अर सीरीनिके विसवानिका नाम प्रक्षेप है। सो प्रक्षेपका जोड देइ ताका भाग मिश्रपिंडकौं दीएं जो एक भागका प्रमाण आवै सो प्रक्षेपक, जे अपने अपने विसवे तिनिका गुणकार हो है। सो इनकौं परस्पर गुणैं जो जो प्रमाण आवै सो सो अपने अपने विसवानिके स्वामी जे सीरी तिनिका द्रव्य जानना। इहां सीरका द्रव्य मिश्रपिंड सो सतरहसै १७०० बहुरि सीरीनिके विसवे एकका एक, दूसरेके च्यारि, तीसरेके सोलह, चौथेके चौसाठि १।४।१६।६४ ए प्रक्षेप बहुरि इनिका जोड पिच्यासी ताका भाग मिश्रपिंडकौं दीएं वीस पाए ताकरि अपने अपने प्रक्षेप जे विसवे तिनकौं गुणैं पहिलेका वीस दूसरेका असी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीसराका तीनसै वीस चौथाका बारहसै असी द्रव्य आवै है। ऐसैं ही गुणश्रेणीका आयामविषैं जेता द्रव्य देना सो तौ मिश्रपिंड जानना। बहुरि गुण श्रेणि आयामके प्रथम समयकी एक शलाका, द्वितीय समयकी तातैं असंख्यात गुणी शलाका, तृतीय समयकी तातैं असंख्यात गुणी शलाका इसही प्रकार असंख्यात गुणा क्रम लीएं ताका अंत समय पर्यंतकी शलाका जाननी। इसका नाम प्रक्षेपक है। इनिकौं जोडें जो प्रमाण आवै ताका भाग तिस सर्व द्रव्यकौं दीएं जो प्रमाण होइ तिसकरि अपनी अपनी शलाकानिका प्रमाणकौं गुणें गुणश्रेणि आयामके प्रथमादि समय संबंधी निषेकानि विषैं द्रव्य देनेका प्रमाण आवै है। इतना इतना द्रव्य गुण श्रेणि आयामके प्रथमादि निषेकनिविषैं मिलाइए है। बहुरि ऐसैं ही गुण संक्रमविषैं विधान जानना। इहां जो गुण संक्रमकरि अन्य प्रकृतिरूप परिणमावने योग्य सर्व द्रव्य सो मिश्रपिंड अर गुणसंक्रमकालके प्रथमादि समय संबंधी एक आदि क्रमतैं असंख्यात गुणी शलाका सो प्रक्षेपक है। इनिके जोडका भाग मिश्रपिंडकौं देइ लब्धकरि अपनी अपनी शलाकाकौं गुणैं गुण संक्रमकालका प्रथमादि समयनिविषैं अन्य प्रकृतिरूप परिणमावने योग्य द्रव्यका प्रमाण आवै है। याही प्रकार अन्यत्र भी यथा संभव मिश्रपिंड वा प्रक्षेपनिका प्रमाण जानि जैसा जहां संभवै तैसा तहां जानना। या प्रकार द्रव्य देना आदि विषैं विधान कह्या। अब सत्ताविषै जे निषेक पाइए है। तिनके द्रव्य जाननेका विधान कहिए है—

विवक्षित कोई एक समयविषैं जो सत्तारूप कर्म परमाणूनिका द्रव्य है तहां स्थिति सत्वका प्रथम समय वर्तमान है। तिंहि विषैं उदय आवने योग्य जो द्रव्य सो प्रथम निषेकका द्रव्य है। ताका प्रमाण तौ संपूर्ण समयप्रबद्धमात्र है। काहेतैं ? सो कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वें जे समय समय प्रति समयप्रबद्ध बांधे तिनिविषैं जिस समयप्रबद्धका एक हू निषेक पूर्वें गल्या नाहीं ताका तौ प्रथम निषेक इस समय विषैं उदय होने योग्य है। जाका एक निषेक पूर्वें गल्या ताका द्वितीय निषेक इस समयविषैं उदय होने योग्य है। इसही क्रमतैं जाका एक निषेक विना अवशेष सर्व निषेक पूर्वें गले ताका अंत निषेक इससमयविषैं उदय होने योग्य है। अैसैं एक एक समय प्रबद्धका एक एक निषेक मिलि इस विवक्षित समयविषैं उदय आवने योग्य संपूर्ण समय प्रबद्धमात्र द्रव्य भया सो सत्ताका प्रथम निषेक है। जैसैं एक समय प्रबद्धका पांचसै बारह, दूसरेका च्यारिसै असी इत्यादि निषेकानिका द्रव्य मिलि तिरेसठिसै होइ। बहुरि स्थिति सत्वका दूसरे समय विषैं उदय आवने योग्य द्रव्य प्रथम निषेक घाटि समय प्रबद्धमात्र है। कैसैं ? सो कहिए है—

प्रथम समयविषैं जिस समयप्रबद्धका प्रथम निषेक गलै ताका तो दूसरा निषेक है। अर जाका दूसरा निषेक गलै ताका तीसरा निषेक इत्यादि क्रमतैं दूसरे समय उदय आवने योग्य निषेक हैं सो सर्व मिलि प्रथम निषेक घाटि समय प्रबद्धमात्र हो हैं। सो यह सत्ताका द्वितीय निषेक है। इहां प्रथम निषेकमात्र चय घटता भया जैसैं एकसमयप्रबद्धका च्यारिसै असी दूसरेका च्यारिसै अठतालीस इत्यादि निषेकानिका द्रव्य मिलि सत्तावनसै अठ्यासी होइ। इहां प्रथम समयविषैं जाका अन्त निषेक गल्या ताका तौ कोई निषेक रह्या नाहीं। अर प्रथम निषेक जाका इस दूसरे समयविषैं उदय होयगा अैसा समयप्रबद्ध न बधैगा तब वाका सत्त्व होइगा इस समयविषैं है नाहीं तातैं सत्ताके द्वितीय निषेकका प्रमाण पूर्वोक्त जानना। बहुरि स्थिति सत्वका तृतीय समयविषैं उदय आवने योग्य प्रथम द्वितीय निषेक घाटिसमय प्रबद्धमात्र द्रव्य है। कैसैं ? सो कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूसरे समय जाका द्वितीय निषेक गल्या ताका तीसरा निषेक जाका तीसरा निषेक गल्या ताका चौथा निषेक इत्यादि क्रमतैं तीसरे समयविषैं उदय आवने योग्य है सो सर्व मिलि प्रथम द्वितीय निषेक घाटि समय प्रबद्धमात्र द्रव्य है। सो सत्ताका तृतीय निषेक है। इहां द्वितीय निषेकमात्र चय घटता भया जैसैं एक समय प्रबद्धका च्यारिसै अठतालीस दूसरेका च्यारिसै सोला इत्यादि मिलि तरेपनसै आठ होइ। इहां भी पूर्ववत् कारण जानना। ऐसैं ही क्रमतैं स्थिति सत्वका अन्त समयविषैं उदय आवने योग्य समय प्रबद्ध अंत निषेक मात्र द्रव्य है। काहेतैं सो कहिए है— इस वर्तमान समयविषैं जो सत्व द्रव्य है तिसविषैं स्थिति सत्वका अंत समयविषैं एक समय प्रबद्धकौं एक अंत निषेक अवशेष रहैगा। अवशेष सर्व समयनिविषैं गलैंगे। बहुरि जिनिका आगामी कालविषैं बंध होइगा तिन समयप्रबद्धनिका तिस समय विषैं उदय आवने योग्य निषेक होंगे तिनिका अवार अस्तित्व नाहीं। तातैं समयप्रबद्धका एक अंतनिषेकमात्र ही सत्ताका अन्त निषेक जानना। जैसैं अंत निषेकके परमाणू नव। या प्रकार इन सर्व सत्ताके निषेकनिका जोड दीएं किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्धमात्र प्रमाण हो है सोई सत्व द्रव्य जानना। जैसैं तरेसाठिसै अर सत्तावनसै अठ्यासी इत्यादि एक एक निषेक घाटि क्रम लीएं सत्ताके निषेक लिखि तिनिका जोड दीएं गुणहानि आयाम आठ ताका ड्योढ बारह तामैं किछू घटाइ ताकरि समयप्रबद्धका प्रमाण तरेसठिसै ताकौं गुणें इकहत्तरि हजार तीनसै च्यारि हो है। सो यहु कथन त्रिकोण यंत्रकी रचनाकरि गोम्मटसार विषैं दिखाया है सो जानना। या प्रकार स्थिति सत्वके निषेकनिका द्रव्य स्वयंसिद्ध तौ ऐसा क्रम लीएं जानना।

बहुरि जो उत्कर्षण अपकर्षण गुणश्रेणि संक्रमण आदिके वशतैं अन्य निषेकनिका द्रव्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्य निषेकनिविषैं प्राप्त भया होइ वा अन्य प्रकृतिका द्रव्य अन्य प्रकृतिविषैं प्राप्त भया होइ तौ तहां यथासम्भव आय द्रव्यकी अधिकता कीएं व्यय द्रव्यकी हीनता कीएं जिस प्रमाण लीएं संभवै तिस प्रमाण लीएं सत्ताके निषेकानिकी रचना जाननी । इहां जैसैं लोकविषैं जमा खरच कहिए तैसैं विवक्षित विषैं और परमाणू आनि मिलैं ताका नाम आय द्रव्य है विवक्षितमैंस्यों परमाणू निकासि अन्यत्र प्राप्त भए ताका नाम व्यय द्रव्य जानना । विशेष इतना—जहां निषेकनिका द्रव्य चय घटता क्रम लीएं निकसै जैसैं निषेकानिका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भाग ग्रहण कीया तहां पूर्वै निषेकनिका सत्त्व जैसैं चय घटता क्रम लीएं था तैसैं ही चय घटता क्रम लीएं द्रव्यका ग्रहण भया । बहुरि जहां निषेकनिविषैं चय घटता क्रम लीएं द्रव्य मिलाया जैसैं उदयावली आदिके निषेक पूर्वै चय घटता क्रम लीएं थे तिनविषैं चय घटता क्रम लीएं ही द्रव्य दीया । तहां तौ आय व्यय होत संतैं भी यथासम्भव चय घटता अनुक्रम रहै है । बहुरि जहां निषेकानिका द्रव्य हीनाधिक क्रम लीएं ग्रहण करिए वा कोई निषेकनिका द्रव्य ग्रहण करिए कोई निषेकनिका नाही ग्रहण करिए बहुरि जहां हीनाधिक क्रमकरि वा गुणकार क्रमकरि द्रव्य दीया होइ तहां जो निकस्या वा मिलाया द्रव्य स्तोक होइ अर सत्त्व द्रव्य बहुत होइ तौ यथासम्भव चय घटता क्रम रहै अर निकस्या वा मिलाया द्रव्य बहुत होइ अर सत्त्व द्रव्य स्तोक होइ तौ तहां चय घटता क्रम नाही रहै है । ऐसैं स्थिति सत्वविषैं निषेकानिका प्रमाण आवै है । बहुरि अनुभाग सत्वविषैं वर्गणानिका प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार ल्यावना वा वर्गणानिविषैं यथासम्भव द्रव्य निकासैं वा मिलाएं पूर्वोक्त प्रकार चय घटता क्रमका रहना वा न रहना जानना । बहुरि अनिवृत्ति करणविषैं अपूर्व स्पर्धक वा कृष्टिनिका नवीन सत्व हो है । ताका विधान तहां अवसर आएं लिखेंगे सो जानना । ऐसैं सत्व द्रव्यविषैं क्रम जानना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

या प्रकार इहां द्रव्य देना आदि विषैं विधान कह्या है सो ऐसैं इहां जो यहु कथन कीया है ताकौं नीकैं यादिकरि लेना। जो इस कथनका स्मरण होइगा तौ आगें ग्रंथविषैं नीकैं प्रवेश होगा अर अर्थकौं नीकैं पहिचानौगे। इस ही वास्तैं पहिलैं यहु केताइक कथन कीया है। जाका इहां व्याख्यान कीया ताका प्रयोजन ग्रंथविषैं जहां आवैं तहां कथन कीया ताके अनुसारि स्वरूप जानना। बहुरि व्याख्यान तौ सर्व आगें ग्रंथविषैं होइहीगा। ऐसैं पीठ बंध कीया।

जयंत्यन्वहमर्हंतः सिद्धाः सूर्युपदेशकाः। साधवो भव्यलोकस्य शरणोत्तममंगलं॥ १॥

श्रीनागार्यतनूजातशांतिनाथोपरोधतः। वृत्तिर्भव्यप्रबोधाय लब्धिसारस्य कथ्यते॥ २॥

श्रीमान्नेमिचंद्रसिद्धांतचक्रवर्ती सम्यक्त्वचूडामणिप्रभृतिगुणनामांकितचामुंडरायप्रश्नानुरूपेण कषायप्राभृतस्य जयधवलाख्यद्वितीयसिद्धांतस्य पंचदशानां महाधिकाराणां मध्ये पश्चिमस्कंधाख्यस्य पंचदशस्यार्थं संगृह्य लब्धिसारनामधेयं शास्त्रं प्रारभमाणो भगवत्पंचपरमेष्ठिस्तवप्रणामपूर्विकां कर्तव्यप्रतिज्ञां विधत्ते—

अब कर्तव्यका प्रारंभ करिए है। आगैं चामुंडराय नामा राजाके प्रश्नके वशतैं कषाय प्राभृत अर ताहीका द्वितीय नाम जयधवल ताके पंद्रह अधिकार तिनिविषैं पश्चिम स्कंधनामा पंद्रहां अधिकार ताका अर्थकौं ग्रहण करि श्रीनेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती लब्धिसार नामा ग्रंथ कीया ताके सूत्रनिका संक्षेपमात्र अर्थ लिखिए है। तहां प्रथम लब्धिसार टीकाके अनुसारि केतेइक सूत्रनिका अर्थ लिखिए है। टीकाविषैं विस्तारतैं व्याख्यान है। इहां ग्रंथ बधनेके भयतैं संकोचरूप व्याख्यान करिए है तहां प्रथम ही मंगल करिए है—

चौपाई— श्री अरहंत सिद्धिवर सूरि। उपाध्याय धारें गुणभूरि॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधु परम मंगल जग श्रेष्ठ। जय शरणागतकौं परमेष्ठ ॥ अथ मूल सूत्र—

सिद्धे जिणिंदचंदे आयरिय उवज्झाय साहुगणे।
वंदिय सम्मदंसण-चरित्तलद्धिं परूवेमो ॥ १ ॥

सिद्धान् जिनेंद्रचंद्रान् आचार्योपाध्यायसाधुगणान्।
वंदित्वा सम्यग्दर्शनचारित्रलब्धिं प्ररूपयामः ॥ १ ॥

सं० टी—सिद्धान् जिनेंद्रचंद्रानाचार्योपाध्यायांश्च साधुगणान् वंदित्वा सम्यग्दर्शनचारित्रलब्धिं प्ररूपयामः। सम्यग्दर्शनसम्यक्चारित्रयोर्लब्धिः—प्राप्तिर्यस्मिन् प्रतिपाद्यते स लब्धिसाराख्यो ग्रन्थः तं प्ररूपयामः, इति शास्त्रकारेण कृतप्रतिज्ञा दर्शिता। पूर्वं किं कृत्वा ? वंदित्वा—स्तुत्वा प्रणम्य चेत्यर्थः। कान् ? जिनेंद्रचंद्रान्—जिनेंद्रा अर्हंतः चंद्रा इव चंद्राः सकललोकप्रकाशकाल्हादकत्वात्। मुख्यो वायं चंद्रशब्दः। तथा सिद्धान्—कृतकृत्यानुपलब्धात्मनश्च तथा आचार्यान् पंचाचारप्रवर्तनपरान् तथा उपाध्यायान्—उपेत्य विनयादधीयते भव्यलोका येभ्य इत्युपाध्यायास्तान् तथा साधुगणांश्च—साधयंति मोक्षमार्गमाराधयंतीति साधवस्तेषां गणान् देशान्तरकालान्तरवर्तिनः समूहान् गुरुकुलभेदभिन्नान् वा ॥ १ ॥ एवंकृतपंचपरमेष्ठिस्तवप्रणामरूपमुख्यमंगल आचार्यः प्रथमोद्दिष्टसम्यग्दर्शनप्राप्त्युपायप्ररूपणं प्रक्रमते—

स० चं-जिनेंद्र जे अरहंत तेई भए सकल लोकके प्रकाशनेतैं वा आल्हाद करनेतैं चंद्रमा तिनिकौं अर कृतकृत्य भए सिद्ध भगवान तिनिकौं अर पंचाचारके प्रवर्तक आचार्य तिनिकौं अर अध्ययन करना करवानाविषैं अधिकारी उपाध्याय तिनकौं अर मोक्षमार्गके साधक साधुसमूह तिनिकौं बंदिकारि सम्यग्दर्शन सम्यक् चारित्रकी लब्धि कहिए प्राप्ति सो जिसविषैं प्रतिपादन करिए ऐसा लब्धिसार नामा शास्त्र ताकौं हम प्ररूपै हैं। ऐसी आचार्य प्रतिज्ञा करी ॥ १ ॥
तहां प्रथम ही प्रथमोपशम सम्यक्त्वका विधान कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चदुगदिमिच्छो सण्णी पुण्णो गब्भज विसुद्ध सागारो।
पढमुवसमं स गिण्हादि पंचमवरलद्धिचरिमम्हि ॥ २ ॥

चतुर्गतिमिथ्यः संज्ञी पूर्णः गर्भजो विशुद्धः साकारः।
प्रथमोपशमं स गृह्णाति पंचमवरलब्धिचरमे ॥ २ ॥

सं–टी–चतुर्गतिमिथ्यादृष्टिः संज्ञी पूर्णो गर्भजो विशुद्धः साकारः प्रथमोपशमं गृह्णाति पंचमवरलब्धिचरमे, अनादिः सादिर्वा मिथ्यादृष्टिरेव चतसृष्वपि गतिषूत्पन्नः दर्शनमोहस्य प्रथमोपशमं गृह्णाति करोतीत्यर्थः। तिर्यग्गतौ तु संज्ञी पंचेंद्रिय एव नान्यः। तिर्यग्मनुष्यगत्योस्तु पर्याप्तको गर्भजश्चैव नान्यः। स च चतुर्गतिमिथ्यादृष्टिर्विशुद्ध एव क्षयोपशमलब्धिप्रथमसमयादारभ्य प्रतिसमयमनंतगुणवृद्ध्या वर्धमानविशुद्धिरित्यर्थः। सोऽपि साकारोपयोगवानेव गुणदोषादिविचाररूपज्ञानोपयोगे सत्येव तत्त्वार्थश्रद्धानरूपसम्यक्त्वप्राप्तिसंभवात्। अनाकारे दर्शनोपयोगे तद्विचाराभावात्। कस्मिन् काले प्रथमोपशमं गृह्णाति ? पंचमी लब्धिः करणलब्धिः तस्या वरः उत्कृष्टो भागः अनिवृत्तिकरणपरिणामः, तस्य लब्धिः प्राप्तिः तस्याः चरमसमये प्रथमोपशमसम्यक्त्वं गृह्णाति जीव इत्यर्थः, स च भव्य एव अभव्यस्य तद्ग्रहणायोग्यत्वात्। विशुद्ध इत्यनेन शुभलेश्यत्वं संगृहीतं उदयप्रस्तावे स्त्यानगृद्ध्यादित्रयोदयाभावस्य वक्ष्यमाणत्वात् जागरत्वमप्युक्तमेव ॥ २ ॥ अथ पंचलब्धिनामोद्देशं तत्कार्यविभागं च कुर्वन्नाह—

स० चं—च्यारयो गतिवाला अनादि वा सादि मिथ्यादृष्टि संज्ञी पर्याप्त गर्भज मंद कषायरूप जो विशुद्धता ताका धारक, गुण दोष विचार रूप जो साकार ज्ञानोपयोग ताकरि संयुक्त जो जीव सोई पांचवीं करण लब्धिविषैं उत्कृष्ट जो अनिवृत्ति करण ताका अंत समयविषैं प्रथमोपशम सम्यक्त्वकौं ग्रहण करै है। इहां ऐसा जानना—

जो मिथ्यादृष्टि गुणस्थानतैं छूटि उपशम सम्यक्त्व होइ ताका नाम उपशम सम्यक्त्व है ५१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि उपशम श्रेणी चढता क्षयोपशम सम्यक्त्वतैं जो उपशम सम्यक्त्व ताका नाम द्वितीयोपशम सम्यक्त्व है तातैं मिथ्यादृष्टिका ग्रहण कीया है। बहुरि सो प्रथमोपशम सम्यक्त्व तिर्यंच गतिविषैं असंज्ञी जीव हैं तिनकैं न हो है। अर मनुष्य तिर्यंचविषैं लब्धि अपर्याप्तक अर सम्मूर्छन हैं तिनकैं न हो है। बहुरि च्यार्‍यो गतिविषैं संक्लेशताकरि युक्त जीवकैं न हो है। बहुरि अनाकार दर्शनोपयोगका धारीकैं न हो है जातैं तहां तत्त्व विचार न संभवै है। बहुरि आगैं तीन निद्राके उदयका अभाव कहैंगे तातैं सूता जीवकैं न हो है। अर भव्यहीके सम्यक्त्व हो है तातैं अभव्यकैं न हो है। ए भी विशेषण इहां संभवैं हैं ॥ २ ॥ आगैं प्रथमोपशम सम्यक्त्व होनेतैं पहलैं मिथ्यादृष्टि गुणस्थानविषैं पंच लब्धि हो हैं तिनिका व्याख्यान करिए है—

खयउवसमियविसोही देसणपाउग्गकरणलद्धी य।
चत्तारि वि सामण्णा करणं सम्मत्तचारित्ते ॥ ३ ॥

क्षयोपशमविशुद्धी देशनाप्रायोग्यकरणलब्धयश्च।
चतस्रोऽपि सामान्यात् करणं सम्यक्त्वचारित्रे ॥ ३ ॥

सं॰ टी—क्षयोपशमविशुद्धिदेशनाप्रायोग्यताकरणलब्धयश्चतस्रोऽपि सामान्यात् करणं सम्यक्त्वचारित्रे। लब्धिशब्दः प्रत्येकमभिसंबध्यते क्षयोपशमलब्धिः विशुद्धिलब्धिः देशनालब्धिः प्रायोग्यतालब्धिः करणलब्धिश्चेति, एताः पंच लब्धयः। अत्र आद्याश्चतस्रोऽपि लब्धयः सामान्यादपि भव्याभव्यसाधारणत्वादपि भवंति। करणलब्धिः पुनर्भव्यस्यैव सम्यक्चारित्रे च साध्ये भवति ॥ ३ ॥ अथ क्रमप्राप्तक्षयोपशमलब्धिस्वरूपं कथयति—

स॰ चं—क्षयोपशम १ विशुद्धि १ देशना १ प्रायोग्यता १ करण १ ए पांच लब्धि हैं। तहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदिकी च्यारि तौ साधारण हैं। भव्यकैं वा अभव्यकैं भी हो हैं। बहुरि करण लब्धि भव्यहीकैं सम्यक्त्व वा चारित्रकौं साध्यभूत होत संतैं ही हो है॥ ३॥

कम्ममलपडलसत्ती पडिसमयमणंतगुणविहीणकमा।
होदूणुदीरदि जदा तदा खओवसमलद्धी दु॥ ४॥

कर्ममलपटलशक्तिः प्रतिसमयमनंतगुणविहीनक्रमा।
भूत्वा उदीर्यते यदा तदा क्षयोपशमलब्धिस्तु॥ ४॥

सं॰ टी॰—कर्ममलपटलशक्तिः प्रतिसमयमनंतगुणहीनक्रमा भूत्वा उदीर्यते यदा तदा क्षयोपशमलब्धिस्तु—कर्मसु मलान्यप्रशस्तकर्माणि ज्ञानावरणादीनि तेषां पटलं समूहः, तस्य शक्तिरनुभागः सा यदा यस्मिन् समये अनंतगुणविहीनक्रमा अनंतैकभागप्रमाणीभूत्वा क्रमेणोदेति तदा तस्मिन् समये तदनुभागानंतबहुभागहानिः क्षयोपशमलब्धिः। तुशब्देन पुनः प्रतिसमयं तदनंतबहुभागहानिक्रमः सूच्यते। देशघातिस्पर्धकानामुत्कृष्टानुभागानंतैकभागमात्राणामुदये सत्यपि सर्वघातिस्पर्धकानामुत्कृष्टानुभागानंतबहुभागप्रमाणानामुदयाभावः क्षयः। तेषामेवानुदयप्राप्तानां कर्मस्वभावेन सदवस्था उपशमः। तयोर्लब्धिः क्षयोपशमलब्धिः॥ ४॥ अथ विशुद्धिलब्धिस्वरूपमाह—

सं॰ चं॰—कर्मनिविषैं मल रूप जे अप्रशस्त ज्ञानावरणादिक तिनिका पटल जो समूह ताकी शक्ति जो अनुभाग सो जिस कालविषैं समय समय प्रति अनंतगुणा घटता अनुक्रमरूप होइ उदय होइ तिस कालविषैं क्षयोपशम लब्धि हो है। जातैं उत्कृष्ट अनुभागका अनंतवां भागमात्र जे देशघाती स्पर्धक तिनिके उदयकौं होतैं भी उत्कृष्ट अनुभागका अनंत बहुभागमात्र जे सर्वघाती स्पर्धक तिनिके उदयका अभाव सो तौ क्षय, अर तेई सर्वघाती स्पर्धक जे उदय अवस्थाकौं न प्राप्त भए तिनकी सत्ता अवस्था सो उपशम तिनकी प्राप्ति सो क्षयोपशम लब्धि जाननी॥ ४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदिमलद्धिभवो जो भावो जीवस्स सादपहुदीणं।
सत्थाणं पयडीणं बंधणजोगो विसुद्धलद्धी सो ॥ ५ ॥

आदिमलब्धिभवो यः भावो जीवस्य सातप्रभृतीनाम् ।
शस्तानां प्रकृतीनां बंधनयोग्यो विशुद्धिलब्धिः सः ॥ ५ ॥

सं० टी०— आदिमलब्धिभवो यो भावो जीवस्य सातप्रभृतीनां शस्तानां प्रकृतीनां बंधनयोग्यो विशुद्धिलब्धिः सः । मिथ्यादृष्टिजीवस्य प्रागुक्तक्षयोपशमलब्धौ सत्यां सातादिप्रशस्तप्रकृतिबन्धहेतुर्यो भावो धर्मानुरागरूपशुभपरिणामो भवति तत्प्राप्तिर्विशुद्धिलब्धिरित्युच्यते । अशुभकर्मानुभागस्यानंतगुणहानौ सत्यां तत्कार्यस्य संक्लेशपरिणामस्य हानिर्यथा यथा भवति तद्विरुद्धस्य विशुद्धिपरिणामस्य तथा तथा संभवस्सुसंगत एवेति ॥ ५ ॥ अथ देशनालब्धिस्वरूपमाचष्टे—

स० चं–पहली जो क्षयोपशम लब्धि तातैं उपज्या जो जीवकैं साता आदि प्रशस्त प्रकृतिबंध करनेकौं कारण धर्मानुराग रूप शुभ परिणाम होइ ताकी जो प्राप्ति सो विशुद्धि लब्धि है । सो अशुभ कर्मका अनुभाग घटैं संक्लेशताकी हानि अर ताका प्रतिपक्षी विशुद्धताकी वृद्धि होना युक्त हो है ॥ ५ ॥ आगे देशना लब्धिका स्वरूप कहे हैं–

छद्दव्वणवपयत्थोपदेसयरसूरिपहुदिलाहो जो।
देसिदपदत्थधारणलाहो वा तदियलद्धी दु ॥ ६ ॥

षड्द्रव्यनवपदार्थोपदेशकरसूरिप्रभृतिलाभो यः ।
देशितपदार्थधारणलाभो वा तृतीयलब्धिस्तु ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०—षट्द्रव्यनवपदार्थोपदेशकरसूरिप्रभृतिलाभो यः, देशितपदार्थधारणलाभो वा तृतीयलब्धिस्तु । षट्द्रव्याणि जीवपुद्गलधर्माधर्मकालाकाशानि पंचास्तिकाया अत्रांतर्भूताः । नव पदार्थाः जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षपुण्यपापानि । सप्ततत्त्वान्यत्रैवांतर्भूतानि तेषामुपदेशकराः आचार्याः उपाध्यायादयः, तेषां लाभो यस्तद्देशनाप्राप्तिः चिरातीतकाले उपदेशितपदार्थधारणलाभो वा स देशनालब्धिर्भवति तुशब्देनोपदेशकरहितेषु नारकादिभवेषु पूर्वभवश्रुतधारिततत्त्वार्थस्य संस्कारबलात् सम्यग्दर्शनप्राप्तिर्भवति, इति सूच्यते ॥ ६ ॥ अथ प्रायोग्यतालब्धिस्वरूपं कथयति—

सं० चं—छह द्रव्य नव पदार्थका उपदेश करनेवाले आचार्यादिकका लाभ तिनके उपदेशकी प्राप्ति अथवा उपदेशित पदार्थके धारनेकी प्राप्ति सो तीसरी देशनालब्धि है । तुशब्दकरि नारकादि विषैं जहां उपदेश देनेवाला नाहीं तहां पूर्व भवविषैं धार्‌या हूवा तत्त्वार्थके संस्कार बलतैं सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति जाननी ॥ ६ ॥

अंतोकोडाकोडी विट्ठाणे ठिदिरसाण जं करणं ।
पाउग्गलद्धिणामा भव्वाभव्वेसु सामण्णा ॥ ७ ॥

अंतःकोटाकोटिद्विस्थाने स्थितिरसयोः यत्करणम् ।
प्रायोग्यलब्धिर्नाम भव्याभव्येषु सामान्यात् ॥ ७ ॥

सं० टी०—अंतःकोटाकोटिद्विस्थाने स्थितिरसयोर्यत्करणं प्रायोग्यतालब्धिनामा भव्याभव्येषु सामान्यात । कश्चिज्जीवो लब्धित्रयसंपन्नः प्रतिसमयं विशुद्ध्यन् आयुर्वर्जितसप्तकर्मणां तत्कालस्थितिमेककांडकघातेन छित्वा कांडकद्रव्यमंतःकोटाकोटिमात्रावशिष्टस्थितौ निक्षिपति । अप्रशस्तानां घातिनामनुभागं वानंतबहुभागप्रमाणं खंडयित्वा तद्द्रव्यं लतादारुसमाने द्विस्थानमात्रे अघातिनां च निंबकांजीरसमाने अवशिष्टानुभागे निक्षिपति तदा जीवस्य तत्करणं प्रायोग्यतालब्धिर्नाम वेदितव्या, सा च भव्याभव्ययोः साधारणा भवति । विशुद्ध्या प्रशस्तप्रकृतीनामनुभागखंडनं नास्ति ॥ ७ ॥ अथ प्रसंगायातां प्रथमोपशमसम्यक्त्वग्रहणायोग्यतां प्रतिपादयति—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं—पूर्वोक्त तीन लब्धिसंयुक्त जीव समय समय विशुद्धताकरि वर्धमान होता संता आयु विना सात कर्मनिकी अंतःकोटाकोटीमात्र स्थिति अवशेष राखै। तिस कालविषैं जो पूर्वैं स्थिति थी ताकौं एक कांडक घातकरि छेदि तिस कांडकके द्रव्यकौं अवशेष रही स्थितिविषैं निक्षेपण करै है। बहुरि घातियानिका लता दारुरूप, अघातियानिका निंब कांजीररूप द्विस्थानगत अनुभाग इहां अवशेष रहै है। पूर्वैं अनुभाग था तामैं अनन्तका भाग दीएं बहुभागमात्र अनुभागकौं छेदि अवशेष रह्या अनुभागविषैं प्राप्त करै है। तिस कार्य करनेकी योग्यताकी प्राप्ति सो प्रायोग्यता लब्धि है। सो भव्यकैं वा अभव्यकैं भी समान हो है॥ ७॥

जेट्ठवरट्ठिदिबंधे जेट्ठवरट्ठिदितियाण सत्ते य।
ण य पडिवज्जदि पढमुवसमसम्मं मिच्छजीवो हु॥ ८

ज्येष्ठावरस्थितिबंधे ज्येष्ठावरस्थितित्रिकाणां सत्त्वे च।
न च प्रतिपद्यते प्रथमोपशमसम्यक्त्वं मिथ्यजीवो हि॥ ८॥

सं० टी०—ज्येष्ठावरस्थितिबंधे ज्येष्ठावरस्थितित्रयाणां सत्त्वे च न च प्रतिपद्यते प्रथमोपशमसम्यक्त्वं मिथ्यादृष्टिर्जीवः खलु। सर्वसंक्लिष्टसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तजीवसंभविन्युत्कृष्टस्थितिबंधे सर्वविशुद्धक्षपकसंभविनि जघन्यस्थितिबंधे सर्वसंक्लिष्टसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तकसंभविन्युत्कृष्टस्थित्यनुभागप्रदेशसत्त्वे सर्वविशुद्धक्षपकसंभविनि जघन्यस्थित्यनुभागप्रदेशसत्त्वे प्रथमोपशमसम्यक्त्वं जीवो न प्रतिपद्यते, उत्कृष्टबन्धसत्त्वयोस्तीव्रसंक्लेशनिबंधनत्वात् जघन्यबंधसत्त्वयोश्च तीव्रविशुद्धिनिबंधनत्वेन मिथ्यादृष्टित्वाभावात् प्रागेव गृहीतसम्यग्दर्शनस्य क्षपकश्रेण्यारोहणात्। ततोऽन्तःकोटाकोटिस्थितिद्विस्थानानुभागबंधसत्त्वपरिणामकर्मणां जीवः प्रथमोपशमयोग्यो भवतीति तात्पर्यं॥ ८॥ अथ प्रथमोपशमसम्यक्त्वाभिमुखस्य स्थितिबंधपरिणाममाह—

स० चं—संक्लेशी संज्ञी पंचेंद्री पर्याप्तके संभवता ऐसा उत्कृष्ट स्थिति बंध अर उत्कृष्ट स्थिति अनु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाग प्रदेशका सत्व, बहुरि विशुद्ध क्षपक श्रेणीवालाकैं संभवता ऐसा जघन्य स्थितिबंध अर जघन्य स्थिति अनुभाग प्रदेशका सत्व इनिकौं होतैं जीव प्रथमोपशम सम्यक्त्वकौं न ग्रहै है ॥ ८ ॥

सम्मत्तहिमुहमिच्छो विसोहिवड्ढीहि वड्ढमाणो हु।
अंतोकोडाकोडिं सत्तण्हं बंधणं कुणई ॥ ९ ॥

सम्यक्त्वाभिमुखमिथ्यः विशुद्धिवृद्धिभिः वर्धमानः खलु।
अंतःकोटाकोटिं सप्तानां बंधनं करोति ॥ ९ ॥

स० टी०—सम्यक्त्वाभिमुखमिथ्यादृष्टिर्विशुद्धिवृद्धिभिर्वर्धमानः खलु अंतःकोटीकोट्याः सप्तानां बंधनं करोति। प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखो मिथ्यादृष्टिर्जीवः प्रतिसमयमनंतगुणविशुद्धिवृद्ध्या वर्धमानः प्रायोग्यतालब्धिकालप्रथमसमयादारभ्य आयुर्वर्जितसप्तकर्मस्थितिबंधं पूर्वस्थितिबन्धस्य संख्यातैकभागमात्रमंतःकोटाकोटिप्रमितं बध्नाति ॥ ९ ॥ अथ प्रायोग्यतालब्धिकाले प्रकृतिबंधापसरणावतारमाह—

स० चं०—प्रथमोपशम सम्यक्त्वकौं सन्मुख भया मिथ्यादृष्टि जीव सो विशुद्धताकी वृद्धिकरि वर्धमान होत संता प्रायोग्य लब्धिका प्रथम समयतैं लगाय पूर्व स्थितिबंधकै संख्यातवैं भागमात्र अंतःकोटाकोटी सागर प्रमाण आयु विना सात कर्मनिका स्थितिबंध करै है ॥ ९ ॥

तत्तो उदय सदस्स य पुधत्तमेत्तं पुणो पुणोदरिय।
बंधम्मि पयडि बंधुच्छेदपदा होंति चोत्तीसा ॥ १० ॥

ततः उदये शतस्य च पृथक्त्वमात्रं पुनःपुनरुदीर्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंध प्रकृतिबंधोच्छेदपदानि भवंति चतुश्चत्वारिंशत् ॥ १० ॥

स० टी०—तत उदधिशतस्य च पृथक्त्वमात्रं पुनः पुनरवतीर्य बन्धे प्रकृतिबन्धोच्छेदपदानि भवंति चतुस्त्रिंशत् । तस्मादंतःकोटीकोटिसागरोपमप्रमितात् स्थितिबन्धनात् पल्यसंख्यातैकभागोनां स्थितिमंतर्मुहूर्तं यावत्समानामेव बध्नाति पुनस्ततः पल्यसंख्यातैकभागोनामपरां स्थितिमंतर्मुहूर्तं यावत् बध्नाति । एवं पल्यसंख्यातैकभागहानिक्रमेण पल्योनामन्तःकोटीकोटिसागरोपमस्थितिमंतर्मुहूर्तं यावद्बध्नाति । एवं पल्यसंख्यातैकभागहानिक्रमेणैव पल्यद्वयोनां पल्यत्रयोनामित्यादि स्थितिमंतर्मुहूर्तं यावद्बध्नाति । तथा सागरोपमहीनां द्विसागरोपमहीनां त्रिसागरोपमहीनां इत्यादि सप्ताष्टशतलक्षणसागरोपमपृथक्त्वहीनामंतःकोटीकोटिस्थितिमंतर्मुहूर्तं यावद्बध्नाति तदा एकं नारकायुःप्रकृतिबन्धापसरणस्थानं भवति, तदा नारकायुर्बंधव्युच्छित्तिर्भवतीत्यर्थः । पुनरपि पूर्वोक्तक्रमेण सागरोपमशतपृथक्त्वहीनामंतःकोटीकोटिस्थितिं यदा बध्नाति तदा तिर्यगायुर्बंधव्युच्छेदो भवति । एवमनेन सागरोपमशतपृथक्त्वहानिक्रमेण स्थितिबन्धे एकैकं प्रकृतिबन्धव्युच्छेदपदं भवति यावत् चतुस्त्रिंशत्तमं प्रकृतिबंधव्युच्छेदपदं प्राप्नोति तावन्नेतव्यं ॥ १० ॥ अथ चतुस्त्रिंशत्प्रकृतिबन्धापसरणस्थानानि गाथापंचकेनाह—

स० चं०—तिस अंतःकोटाकोटी सागर स्थितिबंधतैं पल्यका संख्यातवां भागमात्र घटता स्थितिबंध अन्तर्मुहूर्त पर्यंत समानता लीएं करै । बहुरि तातैं पल्यका संख्यातवां भागमात्र घटता स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त पर्यंत करै । ऐसैं क्रमतैं संख्यात स्थिति बंधापसरणनिकरि पृथक्त्व सौ सागर घटैं पहला प्रकृतिबंधापसरण स्थान होइ । बहुरि तिस ही क्रमतैं तिसतैं भी पृथक्त्व सौ सागर घटैं दूसरा प्रकृति बंधापसरण स्थान होइ । ऐसैं इस ही क्रमतैं इतना इतना स्थिति बंध घटैं एक एक स्थान होइ । ऐसैं प्रकृति बंधापसरणके चौंतीस स्थान होंइ । इहां पृथक्त्व नाम सात वा आठका है तातैं इहां पृथक्त्व सौ सागर कहनेतैं सातसै वा आठसै सागर जानने ॥ १० ॥ अब चौंतीस स्थाननिविषैं क्रमतैं कैसी कैसी प्रकृतिका व्युच्छेद हो है सो कहिए है—

आऊ पडि णिरयदुगे सुहुमतिये सुहुमदोणि पत्तेयं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बारदजुत दोण्णि पदे अपुण्णजुद बितिचसण्णिसण्णीसु ॥

आयुः प्रति निरयाद्विकं सूक्ष्मत्रयं सूक्ष्मद्वयं प्रत्येकं ।
बादरयुतं द्वे पदे अपूर्णयुतं द्वित्रिचतुरसंज्ञिसंज्ञिषु ॥ ११ ॥

सं॰ टी– प्रथमं नारकायुषो व्युच्छित्तिपदं, द्वितीयं तिर्यगायुषः, तृतीयं मनुष्यायुषः, चतुर्थं देवायुषः, पंचमं नरकगतितदानुपूर्व्यायाः, षष्ठं सूक्ष्मापर्याप्तकसाधारणप्रकृतीनां संयुक्तानां, सप्तमं सूक्ष्मापर्याप्तकप्रत्येकप्रकृतीनां संयुक्तानां, अष्टमं बादरापर्याप्तकसाधारणानां संयुक्तानां, नवमं बादरापर्याप्तकप्रत्येकानां संयुक्तानां, दशमं द्वींद्रियजात्यपर्याप्तकनाम्नोः संयुक्तयोः, एकादशं त्रींद्रियजात्यपर्याप्तकनाम्नोः, द्वादशं चतुरिंद्रियजात्यपर्याप्तयोः, त्रयोदशं असंज्ञिपंचेंद्रियजात्यपर्याप्तयोः, चतुर्दशं संज्ञिपंचेन्द्रियजात्यपर्याप्तयोः ॥ ११ ॥

स॰ चं–पहला नरकायुका व्युच्छित्ति स्थान है। इहांतैं लगाय उपशम सम्यक्त्व पर्यंत नरकायुका बंध न होइ ऐसैं ही आगैं जानना। दूसरा तिर्यंचायुका है। तीसरा मनुष्यायुका है। चौथा देवायुका है। इहां प्रथमोपशम सम्यक्त्वविषैं आयुबंधका अभाव है। तातैं सर्व आयुबंधकी व्युच्छित्ति कही है। बहुरि पांचवां नरक गति नरकानुपूर्वीका है। छठा संयोगरूप सूक्ष्म अपर्याप्त साधारणनिका है। इहां संयोगरूप कहनेकरि तीनोंका मिलाप लीएं तौ इहांही पर्यंत बंध होइ। अर इन तीनोंविषैं कोई प्रकृति बदलें यथासम्भव इनि प्रकृतिनिविषैं कोई प्रकृतिका बंध आगैं भी होइ ऐसा संयोगरूप कहनेका अभिप्राय जानना। आगैं संयोग रूप कहनेका ऐसैं ही अर्थ समझना। बहुरि सातवां संयोगरूप सूक्ष्म अपर्याप्त प्रत्येकका है। आठवां संयोगरूप बादर अपर्याप्त साधारणनिका है। नवमा संयोगरूप बादर अपर्याप्त प्रत्येकका है। दशवां संयोग रूप वेंद्री जाति अपर्याप्तका है। ग्यारहवां संयोगरूप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेंद्री अपर्याप्तका है। बारहवां संयोगरूप चौंद्री अपर्याप्तका है। तेरहवां संयोगरूप असंज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्तका है। चौदहवां संयोगरूप संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तका है ॥ ११ ॥

अट्ठ अपुण्णपदेसु वि पुण्णेण जुदेसु तेसु तुरियपदे।
एइंदिय आदावं थावरणामं च मिलिदव्वं ॥ १२ ॥

अष्टौ अपूर्णपदेष्वपि पूर्णेन युतेषु तेषु तुर्यपदे।
एकेंद्रियमातपः स्थावरनाम च मेलयितव्यम् ॥ १२ ॥

सं० टी– अष्टापूर्णपदेष्वपि पूर्णेन युतेषु तेषु तुर्यपदे एकेंद्रियमातपः स्थावरनाम च मेलयितव्यं। पंचदशं बादरपर्याप्तप्रत्येकैकेंद्रियसूक्ष्मपर्याप्तसाधारणानां संयुक्तानां, षोडशं सूक्ष्मपर्याप्तप्रत्येकानां संयुक्तानां, सप्तदशं बादरपर्याप्तसाधारणानां संयुक्तानां, अष्टादशं बादरपर्याप्तप्रत्येकैकेंद्रियजात्यातपस्थावराणां संयुक्तानां, एकान्नविंशं द्वींद्रियजातिपर्याप्तयोः संयुक्तयोः, विंशं त्रींद्रियजातिपर्याप्तयोः, एकविंशं चतुरिंद्रियजातिपर्याप्तयोः, द्वाविंशं असंज्ञिपंचेंद्रियजातिपर्याप्तयोः ॥ १२ ॥

स० चं–पंद्रहवां संयोगरूप सूक्ष्म पर्याप्त साधारणनिका है। सोलहवां संयोग रूप सूक्ष्म पर्याप्त प्रत्येकनिका है। सतरहवां संयोगरूप बादर पर्याप्त साधारणनिका है। अठारहवां संयोग रूप बादर पर्याप्त प्रत्येक एकेंद्री आतप स्थावरानिका है। उगणीसवां संयोगरूप वेंद्री पर्याप्तका है। बीसवां संयोगरूप तेंद्री पर्याप्तका है। इकवीसवां चौंद्री पर्याप्तका है। बावीसवां असंज्ञी पंचेंद्री पर्याप्तका है ॥ १२ ॥

तिरिगदुगुज्जोवोवि य णीचे अपसत्थगमण दुभगतिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुंडासंपत्तेवि य णओसए वामखीलीए ॥ १३ ॥

तिर्यग्द्विकोद्योतोपि च नीचैः अप्रशस्तगमनं दुर्भगत्रिकं ।
हुंडासंप्राप्तेपि च नपुंसकं वामनकीलिते ॥ १३ ॥

सं० टी– त्रयोविंशं तिर्यग्गतितदानुपूर्व्योद्योतानां संयुक्तानां, चतुर्विंशं नीचैर्गोत्रस्य, पंचविंशं अप्रशस्तगमनदुर्भगदुःस्वरानादेयानां संयुक्तानां, षड्विंशं हुंडसंस्थानासंप्राप्तसृपाटिकासंहननयोः, सप्तविंशं नपुंसकवेदस्य, अष्टाविंशं वामनसंस्थानकीलितसंहननयोः ॥ १३ ॥

सं० चं०-तेईसवां संयोगरूप तिर्यंच गति तिर्यंचानुपूर्वी उद्योतका है। चौईसवां नीच गोत्रका है। पचीसवां संयोगरूप अप्रशस्त विहायोगति दुर्भग दुःस्वर अनादेयनिका है। छबीसवां हुंडसंस्थान सृपाटिका संहननका है। सत्ताईसवां नपुंसक वेदका है। अठाईसवां वामन संस्थान कीलित संहननका है ॥ १३ ॥

खुज्जद्धं णाराए इत्थीवेदे य सादिणाराए ।
णग्गोधवज्जणारा–ए मणुओरालदुगवज्जे ॥ १४ ॥

कुब्जार्धनाराचं स्त्रीवेदं च स्वातिनाराचे ।
न्यग्रोधवज्रनाराचे मनुष्यौदारिकद्विकवज्रे ॥ १४ ॥

सं० टी– एकान्नत्रिंशं कुब्जसंस्थानार्द्धनाराचसंहननयोः, त्रिंशं स्त्रीवेदस्य, एकत्रिंशं स्वातिसंस्थाननाराचसंहननयोः, द्वात्रिंशं न्यग्रोधसंस्थानवज्रनाराचसंहननयोः, त्रयस्त्रिंशं मनुष्यगतितदानुपूर्व्यौदारिकशरीरतदंगोपांगवज्रवृषभनाराचसंहननानां संयुक्तानां ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० चं०—गुणतीसवां कुब्ज संस्थान अर्धनाराच संहननका है। तीसवां स्त्री वेदका है। इकतीसवां स्वाति संस्थान नाराच संहननका है। बत्तीसवां न्यग्रोध संस्थान वज्रनाराच संहननका है। तेतीसवां संयोगरूप मनुष्य गति मनुष्यानुपूर्वी औदारिक औदारिक अंगोपांग वज्रवृषभ नाराच संहननका है ॥ १४ ॥

अथिरसुभग जस अरदी सोयअसादे य होंति चोतीसा
बंधोसरणट्ठाणा भव्वाभव्वेसु सामण्णा ॥ १५ ॥

अस्थिरसुभगयशः अरतिः शोकासाते च भवंति चतुश्चत्वारिंशत् ।
बंधापसरणस्थानानि भव्याभव्येषु सामान्यानि ॥ १५ ॥

सं० टी– चतुस्त्रिंशं अस्थिराशुभायशस्कीर्त्यरतिशोकासातानां संयुक्तानां प्रकृतीनां बंधव्युच्छित्तिपदं । एवं प्रकृतिबन्धापसरणस्थानानि चतुस्त्रिंशदपि भव्याभव्ययोः समानानि भवन्ति । सर्वत्र सागरोपमशतपृथक्त्वहान्या आयुर्वर्जसप्तप्रकृतिस्थितिबन्धक्रमोऽपि पूर्ववद्द्रष्टव्यः ॥ १५ ॥ अथ एतेषां प्रकृतिबंधापसरणस्थानानां चतुर्गतिसंभवविशेषं कथयति—

स० चं—चौंतीसवां संयोगरूप अस्थिर अशुभ अयश अरति शोक असातानिका बंध व्युच्छित्ति स्थान है ऐसैं ए कहे चौंतीस स्थान ते भव्य वा अभव्यके समान हो हैं ॥१५॥

णरातिरियाणं ओघो भवणतिसोहम्मजुगलए बिदियं।
तिदियं अट्ठारसमं तेवीसदिमादि दसपदं चरिमं ॥ १६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नरतिरश्चामोघः भवनत्रिसौधर्मयुगलके द्वितीयं।
तृतीयं अष्टादशमं त्रयोविंशत्यादिदशपदं चरमम् ॥ १६ ॥

सं॰ टी– नरतिरश्चोरोघः भवनत्रिकसौधर्मयुगले द्वितीयं; तृतीयं अष्टादशं त्रयोविंशादीनि दशपदानि चरमं। मनुष्यगतौ तिर्यग्गतौ च प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखस्य मिथ्यादृष्टेः पदानि चतुस्त्रिंशदपि संभवंति। तद्बंधयोग्यानां सप्तदशोत्तरप्रकृतीनां मध्ये नारकायुरादिषट्चत्वारिंशत्प्रकृतिबन्धापसरणकथनात्। तथाहि–

नारकायुरादिषु षट्सु पदेषु नव, अष्टादशे पदे तिस्रः, तत्तत्पदेषु द्वित्रिचतुरिंद्रियजातयस्तिस्रः त्रयोविंशादिषु द्वादशसु पदेषु तिर्यग्द्विकोद्योतादयः एकत्रिंशत् एवं चतुस्त्रिंशत्पदेषु षट्चत्वारिंशत्प्रकृतयो बन्धतो व्युच्छिन्ना इति सूत्रे सूचितत्वात् शेषा एकसप्ततिप्रकृतयस्तेन बध्यंते। भावनादित्रये सौधर्मैशानयोश्च कल्पयोर्बन्धयोग्यानां त्र्यधिकशतप्रकृतीनां मध्ये तिर्यगायुरादिषु चतुर्दशसु पदेषु एकत्रिंशत्प्रकृतयो बन्धतो व्युच्छिन्नाः। शेषा द्वासप्ततिप्रकृतयो बध्यंते ॥ १६ ॥ अथ नरकगतौ देवगतौ च विशेषेण बंधापसरणपदसंभवं कथयति—

स॰ चं–मनुष्यतिर्यंचनिकैं तौ समान्योक्त चौंतीसौ स्थान पाइए है। तिनकै बंधयोग्य एकसौ सतरह प्रकृतिनिविषैं चौंतीस स्थाननिकरि छियालीस प्रकृतिकी व्युच्छित्ति हो है। तहां आदिके छह स्थाननिविषैं नव अर अठारहवां स्थाननिविषैं एकेंद्रियादिक तीन अर उगणीसवां आदि बीचिके स्थाननिविषैं बेंद्री तेंद्री चौंद्री ए तीन अर तेईसवां आदि बारह स्थाननिविषैं इकतीस ऐसैं छियालीसकी व्युच्छित्ति हो है। अवशेष इकहत्तरि बांधिए है। बहुरि भवनत्रिक सौधर्म युगलविषैं दूसरा तीसरा अठारहवां अर तेईसवां आदि दश अर अंतका चौंतीसवां ए चौदह स्थान ही संभवै हैं। तहां इकतीस प्रकृतिकी व्युच्छित्ति हो है। बंध योग्य एकसौ तीनविषैं बहत्तरि प्रकृतिनिका बंध अवशेष रहै है ॥ १६ ॥

ते चेव चोदसपदा अट्ठारसमेण हीणया होंति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रयणादिपुढविछक्के सणक्कुमारादिदसकप्पे ॥ १७ ॥

तानि चैव चतुर्दशपदानि अष्टादशेन हीनानि भवंति ।
रत्नादिपृथ्वीषट्के सनत्कुमारादिदशकल्पे ॥ १७ ॥

सं० टी०—तान्येव चतुर्दशपदानि अष्टादशेन हीनानि भवंति । रत्नप्रभादिपृथ्वीषट्के सनत्कुमारादिदशकल्पेषु नरकगतौ रत्नप्रभादितमःप्रभापर्यंते पृथ्वीषट्के प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखमिथ्यादृष्टेः प्रकृतिबंधापसरणपदानि पूर्वोक्तान्येव अष्टादशेन हीनानि त्रयोदश भवंति । तेषु तिर्यगायुरादयोऽष्टाविंशतिप्रकृतयो बन्धतो व्युच्छिन्नाः तद्योग्यप्रकृतिशतमध्ये तदपनयने शेषा द्वासप्ततिप्रकृतयो बध्यंते । एवं देवगतौ सानत्कुमारादिसहस्रारपर्यंतेषु दशसु कल्पेष्वपि बंधापसरणपदानि बंधव्युच्छिन्नप्रकृतयो बध्यमानप्रकृतयश्च ज्ञातव्याः ॥ १७ ॥ अथानतादिषु प्रकृतिबंधापसरणस्थानानि कथयति—

स० चं०—रत्नप्रभा आदि छह नरक पृथ्वीनिविषैं अर सनत्कुमारादि दश स्वर्गनिविषैं पूर्वोक्त चौदह स्थान अठारहवां विना पाइए है । तिन तेरह स्थाननिकरि अठाईस प्रकृति व्युच्छित्ति हो हैं । तहां बंध योग्य सौ प्रकृतिनिविषैं बहत्तरिका बंध अवशेष रहे है ॥ १७ ॥

ते तेरस विदिएण य तेवीसदिमेण चावि परिहीणा ।
आणदकप्पादुवरिमगेवेज्जंतोत्ति ओसरणा ॥ १८ ॥

तानि त्रयोदश द्वितीयेन च त्रयोविंशतिकेन चापि परिहीनानि ।
आनतकल्पाद्युपरिमग्रैवेयकांतमित्यपसरणाः ॥ १८ ॥

सं० टी०—तानि त्रयोदश द्वितीयेन त्रयोविंशेन चापि परिहीनानि, आनतकल्पाद्युपरिमग्रैवेयकांतं यावदपसरणानि । देवगतौ प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखस्य मिथ्यादृष्टेरानतप्राणतादिषूपरिमग्रैवेयकपर्यंतेषु विमानेषु वर्तमानस्य विशुद्धिविशेषा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तान्येव पूर्वोक्तानि त्रयोदश प्रकृतिबंधापसरणस्थानानि द्वितीयेन त्रयोविंशेन च हीनान्येकादशप्रकृतिबंधापसरणस्थानानि भवंति तेष्वबध्यमानाः प्रकृतयश्चतुर्विंशतिः । तद्योग्यषण्णवतिप्रकृतिमध्ये तदपनयने शेषा द्वासप्ततिः प्रकृतयो बध्यंते ॥ १८ ॥ अथ सप्तमपृथिव्यां बंधापसरणपदानि कथयति—

स० चं–आनत स्वर्गादि उपरिम ग्रैवेयक पर्यंतविषैं तेरह स्थान दूसरा तेईसवां विना पाइए । तहां तिनि ग्यारह स्थाननिकरि चौबीस घटाइ बंध योग्य छिनवै प्रकृतिनिविषैं बहत्तरि बांधिए है॥ १८ ॥

ते चेवेक्कारपदा तदिऊणा विदियठाणसंपत्ता ।
चउवीसदिमेणूणा सत्तमिपुढविम्हि ओसरणा॥१९॥

तानि चैवैकादशपदानि तृतीयोनानि द्वितीयस्थानसंयुक्तानि ।
चतुर्विंशतिकेनोनानि सप्तमीपृथिव्यामपसरणानि ॥१९॥

सं० टी०– तान्येवैकादशपदानि तृतीयोनानि द्वितीयस्थानसंयुक्तानि चतुर्विंशेनोनानि सप्तमपृथिव्यामपसरणानि-नरकगतौ सप्तमपृथिव्यां प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखस्य मिथ्यादृष्टेः प्रकृतिबंधापसरणस्थानानि तान्येव पूर्वोक्तानि तृतीयस्थानरहितानि द्वितीयस्थानसहितान्येकादश चतुर्विंशेन स्थानेन रहितानि दश भवंति । तेष्वबध्यमानाः प्रकृतयस्त्रयोविंशतिः । उद्योतेन सह चतुर्विंशतिर्वा । तद्योग्यषण्णवतिप्रकृतिमध्ये तदपनयने त्रिसप्ततिर्द्विसप्ततिर्वा प्रकृतयो बध्यंते । उद्योतबंधाबंधयोस्तदा संभवात् ॥ १९ ॥ अथ मनुष्यतिर्यग्गतयोः प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखमिथ्यादृष्टिना बध्यमानाः प्रकृतयः कथ्यंते—

स० चं–सातवीं नरक पृथ्वीविषैं जे ग्यारह स्थान तीसरा करि हीन अर दूसरा करि सहित चौईसवां करि हीन पाइए तहां तिनि दश स्थाननिकरि तेईसवां उद्योत सहित चौबीस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घटाइ बंध योग्य छिनवै प्रकृतिनिविषैं तेहत्तरि वा बहत्तरि बांधिए है जातैं उद्योतकौं बंध वा अबंध दोनों संभवै हैं । १९ ।

घादिति सादं मिच्छं कसायपुंहस्सरदि भयस्स दुगं ।
अपमत्तडवीसुच्चं बंधंति विसुद्धणरतिरिया ॥ २० ॥

घातित्रयं सातं मिथ्यं कषायपुंहास्यरतयः भयस्य द्विकम् ।
अप्रमत्ताष्टाविंशोच्चं बध्नाति विशुद्धनरातिर्यंचः ॥ २० ॥

सं० टी०— ज्ञानावरणस्य पंच, दर्शनावरणस्य नव, अंतरायस्य पंच, सातवेद्यं मिथ्यात्वं षोडशकषायाः पुंवेदो हास्यं रतिर्भयं जुगुप्सा अप्रमत्तस्याष्टविंशतिरुच्चैर्गोत्रमित्येकसप्ततिप्रकृतीः प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखा विशुद्धा मनुष्यतिर्यंचो बध्नंति । चतुस्त्रिंशद्बंधापसरणपदेषु षट्चत्वारिंशत्प्रकृतीनां बंधव्युच्छेदस्य प्रागेवोक्तत्वात् ॥ २० ॥ अथाप्रमत्तस्याष्टाविंशतिं प्रकृतीरुद्दिशति—

स० चं—ऐसैं व्युच्छित्ति भएं प्रथम सम्यक्त्वकौं सन्मुख मिथ्यादृष्टि मनुष्य वा तिर्यंच हैं ते ज्ञानावरण दर्शनावरण अंतरायकी उगणीस १९ सातावेदनीय १ मिथ्यात्व १ कषाय सोलह १६ पुरुषवेद १ हास्य १ रति १ भय १ जुगुप्सा १ अप्रमत्तकी अठाईस २८ उच्चगोत्र १ ऐसैं इकहत्तरि प्रकृति बांधै हैं ॥ २० ॥

देवतसवण्णअगरुचउक्कं समचउरतेजकम्मइयं ।
सग्गमणं पंचिंदी थिरादिछण्णिमिणमडवीसं ॥ २१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवत्रसवर्णागुरुचतुष्कं समचतुरस्रतेजःकार्मणकम्।
सद्गमनं पंचेंद्रियास्थिरादिषण्णिर्माणमष्टाविंशम् ॥ २१ ॥

सं० टी०— देवत्रसवर्णागुरुचतुष्काणि समचतुरस्रसंस्थानं तैजसं कार्मणं सद्गमनं पंचेंद्रियजातिः स्थिरादिषट्कं निर्माणमित्यष्टाविंशतिः ॥ २१ ॥ अथ देवनरकगत्योः प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखमिथ्यादृष्टिना बध्यमानाः प्रकृतीरुद्दिशति-

स० चं—देवचतुष्क ४ त्रसचतुष्क ४ वर्ण चतुष्क ४ अगुरुलघु चतुष्क ४ समचतुरस्र १ कार्माण १ तैजस १ शुभविहायोगति एक १ पंचेंद्री १ स्थिर आदि छह ६ निर्माण १ ए अठाईस प्रकृति अप्रमत्त संबंधी जाननी ॥ २१ ॥

तं सुरचउक्कहीणं णरचउवज्जजुद पयडिपरिमाणं।
सुरछप्पुडवीमिच्छा सिद्धोसरणा हु बंधंति ॥ २२ ॥

तत् सुरचतुष्कहीनं नरचतुर्वज्रयुतं प्रकृतिपरिमाणं।
सुरषट्पृथिवीमिथ्याः सिद्धापसरणा हि बध्नंति ॥ २२ ॥

सं० टी०— तत्सुरचतुष्कहीनं नरचतुष्कवज्रयुतं प्रकृतिपरिमाणं सुरषट्कपृथ्वीमिथ्यादृष्टयः सिद्धापसरणाः खलु बध्नंति। तिर्यग्मनुष्यबन्धप्रकृतिषु सुरचतुष्कमपनीय नरचतुष्के वज्रवृषभनाराचसंहनने च प्रक्षिप्ते द्विसप्तति प्रकृतीः प्रसिद्धबन्धापसरणाः सुरमिथ्यादृष्टयः षट्पृथ्वीनारकमिथ्यादृष्टयश्च बध्नंति ॥ २२ ॥ अथ सप्तमपृथिव्यां बंधप्रकृतीरुद्दिशति—

स० चं—तिन इकहत्तरिविषैं देवचतुष्क घटाइ मनुष्यचतुष्क वज्रवृषभनाराच मिलाएं बहत्तरि प्रकृतिनिकौं सिद्ध भए हैं बंधापसरण जिनके ऐसे मिथ्यादृष्टि देव छह पृथ्वीनिके नारकी बांधै हैं। इहां देवचतुष्कविषैं देवगति देवानुपूर्वी वैक्रियिक वैक्रियिक अंगोपांग जानना। ५७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर मनुष्यचतुष्कविषैं मनुष्यगति मनुष्यगत्यानुपूर्वी औदारिक औदारिक अंगोपांग जानने।

तं णरदुगुच्चहीणं तिरियदु णीचजुद पयडिपरिमाणं।
उज्जोवेण जुदं वा सत्तमखिदिगा हु बंधंति २३॥

तत् नरद्विकोच्चहीनं तिर्यग्द्विकं नीचयुतं प्रकृतिपरिमाणं।
उद्योतेन युतं वा सप्तमाक्षितिगा हि बध्नंति॥ २३॥

सं० टी०— तन्नरद्विकोच्चैर्गोत्रहीनं तिर्यग्द्विकनीचैर्गोत्रयुतप्रकृतिपरिमाणं उद्योतेन युतं वा सप्तमक्षितिगाः खलु बध्नंति। सुगमं॥ २३॥

इति प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखमिथ्यादृष्टेः प्रकृतिबंधाबंधविभागः कथितः।

स० चं०—तिनि बहत्तरनिविषैं मनुष्य द्विक उच्चगोत्र विना अर तिर्यंच द्विक नीच गोत्र सहित बहत्तरि अथवा उद्योतसहित तेहत्तरि प्रकृतिनिकौं सातवीं नरक पृथ्वीवाले बांधे हैं॥ २३॥ ऐसैं प्रकृतिबंध अबंधका विभाग कह्या।

अथ स्थित्यनुभागबंधभेदं कथयति—

अंतोकोडाकोडीठिदं असत्थाण सत्थगाणं च।
बिचउट्ठाणरसं च य बंधाणं बंधणं कुणइ॥ २४॥

अंतःकोटाकोटिस्थितिं अशस्तानां शस्तकानां च।
द्विचतुःस्थानरसं च च बंधानां बंधनं करोति॥ २४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०—अंतःकोटीकोटिस्थितिं अशस्तानां शस्तानां च द्विचतुःस्थानरसं च च बंधानां बंधनं करोति। चतुस्त्रिंशद्बंधापसरणपदेषु पदं प्रति पदं प्रति सागरोपमशतपृथक्त्वहीनामंतःकोटीकोटिसागरोपमप्रमितां बध्यमानप्रकृतीनां स्थितिं चतुर्गतिविशुद्धिमिथ्यादृष्टिर्बध्नाति तत्र तत्र पदे अप्रशस्तप्रकृतीनां द्विस्थानगतमनुभागं प्रतिसमयमनंतगुणहान्या बध्नाति प्रशस्तप्रकृतीनामनुभागं चतुःस्थानगतं प्रतिसमयमनंतगुणवृद्ध्या बध्नाति । तद्विशुद्धेः प्रतिसमयमनंतगुणवृद्धिसंभवात् ॥ २४ ॥ अथ सम्यक्त्वाभिमुखमिथ्यादृष्टेः प्रदेशबंधविभागं कथयति—

स० चं—प्रथम सम्यक्त्वकौं सन्मुख च्यार्‍यो गतिवाला मिथ्यादृष्टि जीव बध्यमान प्रकृतिनिकी चौंतीस बंधापसरण स्थाननिविषैं एक एक स्थान प्रति पृथक्त्व सौ सागर घटता क्रम लीएं अंतःकोटाकोटी सागर प्रमाण स्थिति बांधै है । अर अनुभाग अप्रशस्त प्रकृतिनिका तौ दोय स्थानकौं प्राप्त समय समय अनंत अनंतगुणां घटता बांधै है । प्रशस्त प्रकृतिनिका च्यारि स्थानकौं प्राप्त समय समय अनंत गुणा बंधता बांधै है ॥ २४ ॥

मिच्छणथीणति सुरचउ समवज्जपसत्थगमणसुभगतियं
णीचुक्कस्सपदेसमणुक्कस्सं वा पबंधदि हु ॥ २५ ॥

मिथ्यानस्त्यानात्रिकं सुरचतुःसमवज्रप्रशस्तगमनसुभगात्रिकं ।
नीचोत्कृष्टप्रदेशमनुत्कृष्टं वा प्रबध्नाति हि ॥ २५ ॥

सं० टी०— मिथ्यात्वमनंतानुबंधिनः स्त्यानगृद्ध्यादित्रयं सुरचतुष्कं समचतुरस्रसंस्थानं वज्रर्षभनाराचसंहननं प्रशस्तविहायोगमनं सुभगत्रयं नीचैर्गोत्रमि त्येकान्नविंशतेः प्रकृतीनामुत्कृष्टमनुत्कृष्टं वा प्रदेशं प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखो विशुद्धश्चातुर्गतिको मिथ्यादृष्टिर्बध्नाति ॥ २५ ॥

स० चं०— यहु जीव मिथ्यात्व १ अनंतानुबंधी चतुष्क ४ स्त्यानगृद्धित्रिक ३ देव च- ५९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुष्क ४ समचतुरस्र १ वज्रवृषभ नाराच १ प्रशस्तविहायोगति १ सुभगादि तीन ३ नीच गोत्र १ इन उगणीस प्रकृतिनिका उत्कृष्ट वा अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध करै है ॥ २५ ॥

एदेहिं विहीणाणं तिण्णि महादंडएसु उत्ताणं ।
एकट्ठिपमाणाणमणुक्कस्सपदेसंबधणं कुणइ ॥२६॥

एतैर्विहीनानां त्रिषुमहादंडकेषूक्तानाम्।
एकषष्टिप्रमाणानामनुत्कृष्टप्रदेशबंधनं करोति ॥ २६ ॥

सं० टी०— एतैर्विहीनानां त्रिषु महादंडकेषूक्तानां एकषष्टिप्रमाणानां प्रकृतीनामनुत्कृष्टप्रदेशबन्धनं करोति ॥ २६ ॥ अथैतत्प्रकृतिसम्भवं कथयति—

स० चं०—इनकरि जे हीन जे महादंडकनिविषैं कहीं ऐसी प्रकृतिनिविषैं इकसठि प्रकृतिनिका अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध करै है ॥ २६ ॥

पढमे सव्वे विदिये पण तिदिये चउ कमा अपुणरुत्ता
इदि पयडीणमसीदी तिदंडएसु वि अपुणरुत्ता ॥ २७॥

प्रथमे सर्वे द्वितीये पंच तृतीये चतुः क्रमादपुनरुक्ताः ।
इति प्रकृतीनामशीतिः त्रिदंडकेष्वपि अपुनरुक्ताः ॥ २७ ॥

सं० टी०— सिद्धांते प्रथमदंडके सर्वाः घातित्रयादयः एकसप्ततिप्रकृतयः उक्ताः । द्वितीयदंडके नरचतुष्कं वज्रवृषभनाराचसंहननमिति पंच प्रकृतयः अपुनरुक्ता उक्ताः, तृतीयदंडके तिर्यग्द्विकं नीचैर्गोत्रं उद्योत इति चतस्रः प्रकृ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तयः अपुनरुक्ता उक्ताः। एवं क्रमात्त्रिष्वपि दंडकेषु अपुनरुक्तानां प्रकृतीनामशीतिः प्रोक्ताः ॥ २७ ॥ एवं प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखस्य विशुद्धमिथ्यादृष्टेः प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशबंधाबंधभेदमभिधाय तस्यैवोदयप्रकृतिभेदमाह—

स० चं०—मनुष्य तिर्यंचकैं बंधयोग्य जो पहिला दंडक तीहिं विषैं सर्व इकहत्तरही अपुनरुक्त हैं। बहुरि भवन त्रिकादिककैं योग्य जो दूसरा दंडक तीहिंविषैं मनुष्य चतुष्क वज्रवृषभ नाराच ए पांच अपुनरुक्त हैं। अन्य प्रकृति पहिला दंडकविषैं कही हीं थीं। अर सातवीं पृथ्वीवालोंकैं योग्य तीसरा दंडक विषैं तिर्यंचद्विक २ नीचगोत्र १ उद्योत १ ए च्यारि अपुनरुक्त हैं। अन्य प्रकृति पहिला दूसरा दंडकविषैं कहीं हीं थी। ऐसैं तीनों दंडकनिविषैं अपुनरुक्त असी प्रकृति जाननी ॥२७॥ ऐसैं बंध कहि अब तिस ही जीवकैं उदय कहै हैं—

उदये चउदसघादी णिद्दापयलाणमेक्कदरगं तु।
मोहे दस सिय णामे वचिठाणं सेसगे सजोगेक्कं ॥

उदये चतुर्दश घातिनः निद्राप्रचलानामेकतरकं तु।
मोहे दश स्यात् नामनि वचःस्थानं शेषकं सयोग्येकं ॥ २८ ॥

सं० टी०— नरकगतौ प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखविशुद्धमिथ्यादृष्टेरुदये वर्तमानाः प्रकृतयो ज्ञानावरणस्य पंच, दर्शनावरणस्य स्त्यानगृद्ध्यादित्रयेण निद्राप्रचलाभ्यां च रहिताः चतस्रः, अंतरायस्य पंच, मोहनीयस्य दशकं नवकमष्टकं वा स्थानानि, नारकायुरेका, नाम्नो वाक्स्थानमेकान्नत्रिंशत् (प्रकृतिः) वेदनीयस्यैका, नीचैर्गोत्रं।

अत्र मोहनीयस्य ० अष्ट प्रकृतिस्थानेन युक्ताः कस्यचिज्जीवस्य चतुःपंचाशत्प्रकृतय·

२ । २
१
४ । ४ । ४ । ४
१

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तद्भंगाः मोहनीयस्याष्टौ वेदनीयभंगाभ्यां गुणिताः षोडश, नामप्रकृतीनां स्थिरसुभगयुगद्वयवर्जितानां नरकगतावप्रशस्तानामेवोदयाद्भंगाभावः। पुनस्ता एव कस्यचिज्जीवस्य भयेन जुगुप्सया वा

१
२।२
१
४।४।४।४
१

नवप्रकृतिस्थानेन युक्ताः पंचपंचाशत्प्रकृतयः तद्भंगाः पूर्वे एव भयजुगुप्साभ्यां गुणिता द्वात्रिंशत्। पुनः कस्यचिज्जीवस्य ता एव भयजुगुप्साभ्यां

२
२।२
१
४।४।४।४
१

दशप्रकृतिस्थानेन युक्ताः षट्पंचाशत्प्रकृतयः तद्भंगाः प्राग्वत् षोडश। भयजुगुप्सयोर्युगपदुदयसंभवाद्भंगाभावः। तिर्यग्गतौ पूर्वोक्तप्रकृतिषु संहनने प्रक्षिप्ते मोहाष्टकस्थानयुक्ताः पंचपंचाशत्प्रकृतयः तद्भंगा मोहस्य

०
२।२
१।१।१
४।४।४।४
१
१।१
१।१
१।१
१।१
१।१
१ १ १ १ १ १
१ १ १ १ १ १

चतुर्विंशतिर्वेदनीयस्य द्वौ नामकर्मणः "संठाणे संहडणे विहायजुम्मे य चरिमचदुजुम्मे" इत्यनेनोक्ता द्वापंचाशदुत्तराण्येकादशशतानि ११५२। चतुर्विंशत्या द्वाभ्यां च गुणितानि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षराणवत्युत्तरद्विशत्यधिकानि पंचपंचाशत्सहस्राणि । ५५२९६ । भवंति । पुनस्ता एव प्रकृतयः भयेन जुगुप्सया वा

१
२ । २
१ । १ । १
४ । ४ । ४ । ४
१

मोहनवकस्थानयुक्ताः षट्पंचाशद्भंगाः पूर्वभंगा एव द्वाभ्यां गुणिता द्वानवत्युत्तरपंचशत्यधिकदशस-हस्रसंयुक्तैकलक्षसंख्याः । ११०५९२ । पुनस्ता एव प्रकृतयो युगपद्भयजुगुप्साभ्यां

२
२ । २
१ । १ । १
४ । ४ । ४ । ४
१

मोहदशक-स्थानयुक्ताः सप्तपंचाशत्तद्भंगा भयजुगुप्साभंगद्वयरहितास्त एव षराणवत्युत्तरद्विशत्यधिकानि पंचपंचाशत्सहस्राणि— ५५२९६ । पुनरेतान्येव त्रीणि स्थलान्युद्योतेनाधिकानि षट्पंचाशत्सप्तपंचाशदष्टपंचाशत्प्रकृतिकानि भवंति भंगाः पुनः पूर्ववदेव । मनुष्यगतावपि तिर्यग्गतिवत् । अयं तु विशेषः—

उद्योतनामयुक्तं स्थलत्रयं नास्ति तदुदयस्य तिर्यग्गतावेवेति नियमात् । उच्चैर्गोत्रस्याप्युदयोऽस्तीति तिर्यग्गतिभंगा एव गोत्रभंगद्वयेन गुणिताः मनुष्यगतौ भंगा भवंति

५५	५६	५७
११०५९२	२२११८४	११०५९२

देवगतावपि नरकगतिवत् । अयंतु विशेषः— तत्र नामकर्मप्रकृतयः प्रशस्ता एव उच्चैर्गोत्रमेव मोहप्रकृतिषु नपुंसकवेदमपनीय स्त्रीपुंवेद-द्वयमेलनात् द्विगुणभंगाः—

०
२ । २
१ । १
४ ४ ४ ४
१

अतः कारणात् स्थलत्रयेऽपि भंगा एवं—

५४ ५५ ५६
३२ ६४ ३२

पुनर्निद्रया प्रचलया वा युक्ताः पूर्वोक्ता एव गतिचतुष्टये प्रकृतयः एकाधिका भवंति भंगाश्च पूर्वोक्ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एव निद्राप्रचलाभंगद्वयेन गुणिता भवंति ॥ २८ ॥ अथ प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखस्य विशुद्धमिथ्यादृष्टेरुदययोग्यप्रकृतीनां स्थित्यनुभागौ व्याचष्टे—

स॰ चं॰— प्रथम सम्यक्त्व सन्मुख जीवकैं नरकगतिविषैं ज्ञानावरणकी पांच ५ दर्शनावरणकी निद्रादि पांच विना च्यारि ४ अन्तरायकी पांच ५ मोहनीयकी दश १० वा नव वा आठ, आयुकी एक नरकायु, नामकी भाषापर्याप्ति कालविषैं उदय आवने योग्य गुणतीस तिनिके नाम गति १ जाति १ शरीर ३ अंगोपांग १ निर्माण १ संस्थान १ वर्णचतुष्क ४ अगुरुलघु १ स्थिर युगल २ शुभयुगल २ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ दुर्भग १ अनादेय १ अयशस्कीर्ति १ प्रत्येक १ उपघात १ परिघात १ उश्वास १ अशुभविहायोगति १ दुःस्वर १ ए जाननी। बहुरि वेदनीयकी एक कोई, गोत्रकी एक नीच गोत्र ऐसें इनि प्रकृतिनिका उदय है। इहां मोहनीयकी वा नामकी उदय प्रकृतिनिका अर प्रकृति बदलनेतैं भंग हो है तिनिका गोम्मटसारविषैं कर्मकांडका जो स्थान समुत्कीर्तन अधिकार तिहिविषैं विशेष वर्णन है तहांतैं जानना। ऐसैं मोहनीयकी मिथ्यात्व अर अनंतानुबंधी आदि च्यारि प्रकार क्रोधादिविषै कोई एक अर नपुंसक वेद अर हास्य शोक युगलविषै एक, रति अरति युगलविषै एक ऐसैं आठ प्रकृति सहित कोई जीवकैं चौवन प्रकृतिका उदय हो है। तहां मोहनीयके च्यारि कषाय अर दोय युगलके बदलनेतैं अर आठ भंग अर दोय वेदनीयके भंगनितैं गुणें सोलह भंग हो हैं। नामकी अप्रशस्तहीनिका इहां उदय है तातैं नामकर्मकी अपेक्षा भंग नाहीं हैं बहुरि भय वा जुगुप्सा विषै कोई एक मिलाएं मोहकी नव सहित पचवनका उदय होइ। तहां पूर्वोक्त सोलह भंगनिकौं भय जुगुप्साकरि गुणें बत्तीस भंग हो हैं। बहुरि भय जुगुप्सा दोऊनि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि युक्त मोहकी दश सहित छप्पन प्रकृतिका उदय होइ तहां सोलह ही भंग जानने । जातैं इहां दोऊनिका उदय युगपत् है। इहां क्रोध सहित अन्य प्रकृति लगाएं प्रथम भंग क्रोधकी जायगा मान कहैं दूसरा भंग ऐसैं ही प्रकृति बदलनेतैं भंगानिका होना जानना। बहुरि तिर्यंच गतिविषैं पूर्वोक्त प्रकृतिनिविषैं एक संहनन मिलाएं पचावन छप्पन सत्तावनका उदय जानना तहां पचावनका उदयविषैं इहां तीनों वेद पाइए तातैं तिनके बदलनेतैं मोहके भंग चौईस हो हैं। अर वेदनीयके दोय हैं ही। अर नामके 'संठाणे संहडणे' इत्यादि सूत्रकरि छह संस्थान छह संहनन विहायोगति युगल सुभगयुगल स्वरयुगल आदेय युगल यशस्कीर्ति युगल इनिके बदलनेतैं ग्यारहसै बावन भंग हो हैं। जातैं इहां इन सबनिका उदय संभवै है। ऐसैं ए भंग कहे। इनिकौं परस्पर गुणैं पचावन हजार दोयसै छिनवै भंग भए। बहुरि छप्पनका उदयविषैं भयजुगुप्सातैं गुणैं तिनतैं दूणे ११०५९२ भंग भए। बहुरि सत्तावनका उदयविषैं पचावनकेवत् ही ५५२९६ भंग जानने। बहुरि तिनविषैं उद्योत प्रकृति मिलाएं तहां छप्पन सत्तावन अट्ठावनका उदय हो है तहां भंग तीनों जायगा पूर्वोक्त प्रकार ही जानने। बहुरि मनुष्य गतिविषैं तिर्यंचवत् उदय जानना। विशेष इतना–तहां उद्योत सहित उदय नाहीं है। बहुरि तहां दोऊ गोत्रनिका उदय संभवै है तातैं तिर्यंच गतिविषैं कहे भंगनितैं तीनों जायगा गोत्रके बदलनेतैं दूणा भंग जानने। बहुरि देवगतिविषैं नरकवत् उदय जानना। विशेष इतना–इहां नामकी प्रशस्त प्रकृतिनिहीका अर उच्चगोत्रका अर मोहविषैं नपुंसक वेद विना स्त्री पुरुषविषैं कोई एक वेदका उदय पाइए है। तहां दोय वेदके बदलनेतैं नरक गतिविषैं कहे भंगनितैं तीनों जायगा दूणे भंग जानने। ऐसैं ए भंग निद्राका उदय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहित जीवनिकी अपेक्षा कहे। बहुरि इन च्यारयो गतिविषैं जे उदय कहे तिनविषैं निद्रा प्रचलाविषैं कोई एक प्रकृति मिलाएं एक एक प्रकृतिनिकरि अधिक उदय हो है। तहां इन दोऊ प्रकृतिनिके बदलनेतैं सर्वत्र पूर्वोक्त भंगानितैं दूणे भंग जानने ॥ २८ ॥

उदइल्लाणं उदये पत्तेकठिदिस्स वेदगो होदि।
विचउट्ठाणमसत्थे सत्थे उदयल्लरसभुत्ती ॥ २९ ॥

उदयवतामुदये प्राप्ते एकस्थितिकस्य वेदको भवति।
द्विचतुःस्थानमशस्ते शस्ते उदीयमानरसभुक्तिः ॥ २९ ॥

सं०टी०--उदयवतां कर्मणामुदयं प्रति उदयमुद्दिश्य एकस्थितेरुदयागतस्यैकनिषेकस्य वेदकोऽनुभविता भवति स जीवः, उदयवत्प्रकृतीनामप्रशस्तानां द्विस्थानगतस्य रसस्य प्रशस्तानां चतुःस्थानगतस्य रसस्य भुक्तिरनुभवस्तेन जीवेन क्रियते ॥ २९ ॥ अथ तस्य प्रदेशोदयमुदीरणां बब्रवीति--

स० चं०-- उदयवान प्रकृतिनिका उदय अपेक्षा एक स्थिति जो उदयकौं प्राप्त भया एक निषेक ताहीका भोक्ता सो जीव हो है। बहुरि अप्रशस्त प्रकृतिनिका द्विस्थानरूप अर प्रशस्त प्रकृतिनिका चतुःस्थान रूप अनुभागका भोगवना ताकौं हो है ॥ २९ ॥

अजहण्णमणुक्कस्सप्पदेसमणुभवदि सोदयाणं तु।
उदयिल्लाणं पयडिचउक्कणमुदीरगो होदि ॥ ३० ॥

अजघन्यमनुत्कृष्टप्रदेशमनुभवति सोदयानां तु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदयवतां प्रकृतिचतुष्काणामुदीरको भवति ॥ ३० ॥

सं० टी—सोदयानां प्रकृतीनामजघन्यमनुत्कृष्टं च प्रदेशमनुभवति स जीवः। पुनरुदयवतां प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशानां चतुर्णामुदीरको भवति स जीवः, उदयोदीरणयोः स्वामिभेदाभावात् ॥ ३० ॥ अथ तस्य सत्त्वप्रकृतीरुद्दिशति—

स० चं०— उदय प्रकृतिनिका अजघन्य वा अनुत्कृष्ट प्रदेशकौं भोगवै है। जघन्य वा उत्कृष्ट परमाणूनिका इहां उदय नाहीं। बहुरि प्रकृति प्रदेश स्थिति अनुभाग जे उदय रूप कहे तिनहीका यहु उदीरणा करनेवाला हो है। जातैं जाकैं जिनिका उदय ताकौं तिनहीकी उदीरणा भी संभवै है ॥ ३० ॥ ऐसैं उदय उदीरणा कहि अब सत्त्व कहै हैं—

दुति आउ तित्थहारचउक्कणा सम्मगेण हीणा वा।
मिस्सेणूणा वा वि य सव्वे पयडी हवे सत्तं ॥ ३१ ॥

द्वित्रिआयुःतीर्थाहारचतुष्काणां सम्यक्त्वेन हीना वा।
मिश्रेणोना वापि च सर्वेषां प्रकृतीनां भवेत् सत्त्वम् ॥ ३१ ॥

सं० टी—अनादिमिथ्यादृष्टिः सादिमिथ्यादृष्टिर्वा प्रथमोपशमसम्यक्त्वयोग्यो भवति तत्रानादिमिथ्यादृष्टेर्जीवस्याबद्धायुष इतरायुस्त्रयेण तीर्थकरत्वेनाहारकचतुष्केण सम्यक्त्वसम्यग्मिथ्यात्वाभ्यां च दशभिः प्रकृतिभिरूनाः सर्वाः प्रकृतयः १३८, सत्त्वेन विद्यंते। तस्यैव बद्धायुषः नवभिरूनाः १३९, सादिमिथ्यादृष्टेरबद्धायुषः इतरायुस्त्रयं तीर्थकरत्वमाहारकचतुष्कमित्यष्टभिरूनाः १४०, तस्यैवोद्वेल्लितसम्यक्त्वस्य नवभिरूनाः १३९, तस्यैवोद्वेल्लितसम्यग्मिथ्यात्वस्य दशभिरूनाः १३८, तस्यैव बद्धायुषः इतरायुर्द्वयेन तीर्थकरत्वेनाहारकचतुष्केण वा सप्तभिरूनाः १४१, तस्यैवोद्वेल्लितसम्यक्त्वस्याष्टभिरूनाः १४०, तस्यैवोद्वेल्लितसम्यग्मिथ्यात्वस्य नवभिरूनाः १३९,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समस्ताः प्रकृतयः सत्त्वेन विद्यंते । अनुद्वेल्लिताहारकचतुष्कस्य तीर्थकरसत्कर्मणश्च सादिमिथ्यादृष्टेः प्रथमोपशमसम्यक्त्वाभिमुखस्यासंभवात् ॥ ३१ ॥ अथ सत्कर्मप्रकृतीनां स्थित्यादिसत्त्वपूर्वकं प्रायोग्यतालब्धिमुपसंहरति—

स० चं०— सम्यक्त्व सन्मुख अनादि मिथ्यादृष्टिकैं अबद्धायुकैं तौ भुज्यमान विना तीन आयु ३ तीर्थंकर १ आहारक चतुष्क ४ सम्यग्मोहनी १ मिश्र मोहनी १ इनि दश विना एकसौ अठतीसका सत्व है। बहुरि तिस ही बद्धायुकैं एक बध्यमान आयु सहित एकसौ गुणतालीसका सत्व हो है। बहुरि सम्यक्त्व सन्मुख सादि मिथ्यादृष्टिकैं अबद्धायुकैं तौ भुज्यमान विना तीन आयु ३ तीर्थंकर १ आहारक चतुष्क ४ इनि आठ विना एकसौ चालीसका सत्व है। सम्यक्त्व मोहनीकी उद्वेलना भएं एकसौ गुणतालीसका सत्व हो है। मिश्रमोहनीकी उद्वेलना भएं एकसौ अठतीसका सत्व हो है। बहुरि तिस ही बद्धायुकैं बध्यमान आयु सहित एकसौ इकतालीस एकसौ चालीस एकसौ गुणतालीसका सत्व हो है। जातैं आहारक चतुष्टयकी उद्वेलना भएं विना तीर्थंकर सत्तावाला जीव प्रथमोपशम सम्यक्त्वके सन्मुख न हो है ॥ ३१ ॥

अजहण्णमणुक्कस्सं ठिदीतियं होदि सत्तपयडीणं।
एवं पयडिचउक्कं बंधादिसु होदि पत्तेयं ॥ ३२ ॥

अजघन्यमनुत्कृष्टं स्थितित्रिकं भवति सत्त्वप्रकृतीनाम्।
एवं प्रकृतिचतुष्कं बंधादिषु भवति प्रत्येकम् ॥ ३२ ॥

सं० टी—तस्य सत्कर्मप्रकृतीनामुक्तानां स्थित्यनुभागप्रदेशसत्त्वमजघन्यानुत्कृष्टं भवति। जघन्योत्कृष्टाभावस्य पूर्वमभि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हितत्वात्। एवं बंधादिषु बंधोदयोदीरणासत्त्वेषु प्रकृतिचतुष्कं प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशाः प्रत्येकमुक्तप्रकारेण प्रतिनियमिताः ईदृशः प्रकृतिबंधः, ईदृशः स्थितिबंधः, ईदृशोऽनुभागबंधः, ईदृशः प्रदेशबंधः इत्यादि विभज्य रूपिताः प्रायोग्यतालब्धिकालचरमसमयपर्यंतं प्रत्येतव्याः ॥ ३२ ॥ अथ क्रमप्राप्तां करणलब्धिमाचष्टे—

स० चं०—— तिन सत्तारूप प्रकृतिनिका स्थिति अनुभाग प्रदेश हैं ते अजघन्य अनुत्कृष्ट हैं जघन्य वा उत्कृष्ट स्थिति अनुभाग प्रदेशका सत्व इहां न संभवै है । ऐसैं प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश रूप चतुष्क है सो बंध उदय उदीरणा सत्वविषैं प्रत्येक कह्या । सो प्रायोग्यता लब्धिका अंत पर्यंत जानना ॥ ३२ ॥

तत्तो अभव्वजोग्गं परिणामं बोलिऊण भव्वो हु ।
करणं करेदि कमसो अधापवत्तं अपुव्वमणियट्टिं ३३

ततः अभव्ययोग्यं परिणामं मुक्त्वा भव्यो हि ।
करणं करोति क्रमशः अधःप्रवृत्तमपूर्वमनिवृत्तिम् ॥ ३३ ॥

सं० टी—ततः पश्चादभव्ययोग्यं लब्धिचतुष्टयसंभविनं विशुद्धपरिणामं नीत्वा भव्यः खलु क्रमेणाधःप्रवृत्तकरणमपूर्वकरणमनिवृत्तिकरणं च विशिष्टनिर्जरासाधनं विशुद्धपरिणामं करोति ॥ ३३ ॥ अथ त्रिकरणपरिणामकालमल्पबहुत्वसहितं कथयति—

स० चं०— तहां पीछे अभव्यकैं भी योग्य ऐसा च्यारि लब्धिरूप परिणामकौं समाप्त करि भव्य है सोई अधःप्रवृत्त अपूर्व करण अनिवृत्ति करणकौं करै है । सो इन तीनों करणनिका व्याख्यान गोम्मटसारविषैं जीव कांडका गुणस्थानाधिकारविषै वा कर्म कांडका त्रिकोण चूलिका अधिकारविषैं विशेष व्याख्यान है तहांतैं जानना । इहां भी सामान्यसा गाथानिका अर्थ कहिए है ॥ ३३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतोमुहुत्तकाला तिण्णिवि करणा हवंति पत्तेयं।
उवरीदो गुणियकमा कमेण संखेज्जरूवेण ॥ ३४ ॥

अंतर्मुहूर्तकालानि त्रीण्यपि करणानि भवंति प्रत्येकम्।
उपरितः गुणितक्रमाणि क्रमेण संख्यातरूपेण ॥ ३४ ॥

सं॰ टी–एते त्रयोऽपि करणपरिणामाः प्रत्येकमंतर्मुहूर्तकाला भवंति। तथापि उपरितः अनिवृत्तिकरणकालात्क्रमेणापूर्वकरणाधःप्रवृत्तकरणकालौ संख्येयरूपेण गुणितक्रमौ भवतः। तत्र सर्वतः स्तोकांतर्मुहूर्तः अनवृत्तिकरणकालः २ १ ततः संख्येयगुणः अपूर्दकरणकालः २ १ १ ततः संख्येयगुणः अधःप्रवृत्तकरणकालः २ १ १ १ ॥ अथाधःप्रवृत्तकरणस्वरूपं निरुक्तिपूर्वकं व्याचष्टे—

स॰ चं॰–तीनों ही करण प्रत्येक अंतर्मुहूर्त कालमात्र स्थितियुक्त हैं तथापि ऊपरतैं संख्यातगुणा क्रम लीएं हैं। आनिवृत्ति करणका काल स्तोक है। तातैं अपूर्व करणका संख्यात गुणा है। तातैं अधःप्रवृत्त करणका संख्यात गुणा है॥ ३४॥

जम्हा हेट्ठिमभावा उवरिमभावेहिं सरिसगा होंति।
तम्हा पढमं करणं अधापवत्तोत्ति णिद्दिट्ठं ॥ ३५ ॥

यस्मादधस्तनभावा उपरितनभावैः सदृशा भवंति।
तस्मात् प्रथमं करणं अधःप्रवृत्तमिति निर्दिष्टम्॥ ३५॥

सं॰ टी– यस्मात्कारणादधस्तनसमयवर्तिजीवविशुद्धिपरिणामाः उपरितनसमयवर्तिजीवविशुद्धिपरिणामैः संख्यया विशुद्धया च सदृशा भवंति तस्मात्कारणात्प्रथमः करणपरिणामः अधःप्रवृत्त इत्यन्वर्थतो निर्दिष्टः। तथाहि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्काले प्रथमसमयद्वितीयपुंजस्य परिणामसंख्याविशुद्धी द्वितीयसमयप्रथमपुंजस्य परिणामसंख्याविशुद्धिभ्यां सदृशे। तथा प्रथमद्वितीयतृतीयसमयेषु तृतीयद्वितीयप्रथमपुंजानां परिणामसंख्याविशुद्धी अन्योन्यं सदृशे। एवमधस्तनोपरितनसमयपरिणामपुंजसंख्याविशुद्धिसादृश्यं नेतव्यं यावच्चरमसमयचरमपुंजे परिणामाः अप्राप्ताः, प्रथमसमयप्रथमपुंजस्य चरमसमयचरमपुंजस्य च संख्याविशुद्धिसादृश्याभावात् ॥ ३५ ॥ अथापूर्वानिवृत्तिकरणयोः स्वरूपं निरूपयति—

स० चं०— जातैं इहां नीचले समयवर्ती कोई जीवके परिणाम ऊपरले समयवर्ती कोई जीवके परिणामनिके सदृश हो हैं तातैं याका नाम अधःप्रवृत्त करण है। भावार्थ—करणनिका नाम नानाजीव अपेक्षा है सो अधःकरण मांडै कोई जीवकौं स्तोक काल भया कोई जीवकौं बहुत काल भया तिनके परिणाम इस करणविषैं संख्या वा विशुद्धताकर समान भी हो हैं ऐसा जानना ॥ ३५ ॥

समए समए भिण्णा भावा तम्हा अपुव्वकरणो हु।
अणियट्टीवि तहं वि य पडिसमयं एक्कपरिणामो ॥

समये समये भिन्ना भावा तस्मादपूर्वकरणो हि।
अनिवृत्तिरपि तथैव च प्रतिसमयमेकपरिणामः ॥ ३६ ॥

सं० टी— अधःप्रवृत्तकरणकालस्योपरि अंतर्मुहूर्तकालपर्यंतं यस्मात्कारणात् समये समये भिन्ना एव अपूर्वा एव विशुद्धिपरिणामाः खलु भवंति तस्मात्कारणात्सोऽपूर्वकरण इत्युच्यते। अधस्तनोपरितनसमयेषु विशुद्धिपरिणामानां संख्याविशुद्धिसादृश्यं नास्तीत्यर्थः। अनिवृत्तिकरणोऽपि तथैव पूर्वोत्तरसमयेषु संख्याविशुद्धिसादृश्याभावात् भिन्नपरिणाम एव। अयं तु विशेषः—

प्रतिसमयमेकपरिणामः जघन्यमध्यमोत्कृष्टपरिणामभेदाभावात्। यथाधःप्रवृत्तापूर्वकरणपरिणामाः प्रतिसमयं जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदादसंख्यातलोकमात्रविकल्पाः षट्स्थानवृद्ध्या वर्धमानाः संति न तथाऽनिवृत्तिकरणपरिणामाः ते-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षामेकस्मिन् समये कालत्रयेपि विशुद्धिसादृश्यादैक्यमुपचर्यते ॥ ३६ ॥ अथाधःप्रवृत्तकरणस्य विशेषलक्षणं कथयति–

स० चं०– समय समयविषैं जीवनिके भाव भिन्न ही होंइ सो अपूर्व करण है । भावार्थ– कोई जीवकौं अपूर्व करण माडें स्तोक काल भया कोईकौं बहुत काल भया तहां तिनके परिणाम सर्वथा सदृश न होंइ । नीचले समयवालोंके परिणामतें ऊपर समयवालोंका परिणाम अधिक संख्या वा विशुद्धता युक्त होइ अर इहां जिनकौं करण माडें समान काल भया तिनके परिणाम परस्पर सदृश भी होंइ अथवा असदृश भी होंइ ऐसा जानना । बहुरि जहां समय समय एक ही परिणाम होइ सो अनिवृत्तिकरण है भावार्थ– जिनिकौं अनिवृत्ति करण माडें समान काल भया तिनिके परिणाम समान ही होंइ बहुरि नीचले समयवर्तीनितैं ऊपरि समयवर्तीनिके अधिक होंइ ऐसा जानना ॥ ३६ ॥

गुणसेढी गुणसंकम ठिदिरसखंडं च णत्थि पढमम्हि
पडिसमयमणंतगुणं विसोहिवड्ढीहिं वड्ढदि हु ३७

गुणश्रेणी गुणसंक्रमं स्थितिरसखंडं च नास्ति प्रथमे ।
प्रतिसमयमनंतगुणं विशुद्धिवृद्धिभिर्वर्धते हि ॥ ३७ ॥

सं० टी— प्रथमे अधःप्रवृत्तकरणे गुणश्रेणिविधानं गुणसंक्रमविधानं स्थितिकांडकघातोऽनुभागकांडकघातश्च न संति तु पुनः प्रतिसमयमनंतगुणवृद्ध्या विशुद्धिर्वर्धते ॥ ३७ ॥

स० चं०–पहिला अधःकरणविषैं गुणश्रेणि, गुणसंक्रमण, स्थिति कांडक घात, अनुभाग कांडक घात होइ । बहुरि इहां समय समय प्रति अनंतगुणी विशुद्धता बधै है ॥ ३७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सत्थाणमसत्थाणं चउविट्ठाणं रसं च बंधदि हु।
पडिसमयमणंतेण य गुणभाजियकमं तु रसबंधे ॥ ३८

शस्तानामशस्तानां चतुर्द्विस्थानं रसं च बध्नाति हि।
प्रतिसमयमनंतेन च गुणभाजितक्रमं तु रसबंधे ॥ ३८ ॥

सं० टी०—अधःप्रवृत्तकरणपरिणामे वर्तमानो जीवः सातादिप्रशस्तप्रकृतीनां चतुःस्थानानुभागं प्रतिसमयमनंतगुणं बध्नाति, असाताद्यप्रशस्तप्रकृतीनां द्विस्थानानुभागं प्रतिसमयमनंतैकभागमात्रं बध्नाति ॥ ३८ ॥

स० चं०—अर सातादि प्रशस्त प्रकृतिनिका समय समय प्रति अनंतगुणा चतुःस्थान रूप अनुभाग बांधै है। अर असातादि अप्रशस्त प्रकृतिनिका समय समय प्रति अनंतवे भागमात्र अनुभाग बांधै है ॥ ३८ ॥

पल्लस्स संखभागं मुहुत्तअंतेण ओसरदि बंधे।
संखेज्जसहस्साणि य अधापवत्तम्मि ओसरणा ॥ ३९

पल्यस्य संख्यभागं मुहूर्तांतरेण अपसराति बंधे।
संख्येयसहस्राणि च अधःप्रवृत्ते अपसरणानि ॥ ३९ ॥

सं०टी०—अधःप्रवृत्तकरणकाले प्रथमसमयादारभ्यांतर्मुहूर्तपर्यंतं प्राक्तनस्थितिबंधात्पल्यसंख्यातैकभागन्यूनां स्थितिं बध्नाति ततः परमंतर्मुहूर्तपर्यंतं पुनरपि पल्यासंख्यातैकभागन्यूनां स्थितिं बध्नाति। एवं तत्कालचरमसमयं यावत् स्थितिबंधापसरणानि संख्यातसहस्राणि भवंति। अनेनांतर्मुहूर्तेन प्र एकस्यां अपसरणशलाकायां फ एतावति काले—

२ १ १   १

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ २ ७ ७ ७ कियत्यः स्थितिबंधापसरणशलाका भवंतीति त्रैराशिकेण लब्धा अपसरणशलाकाः ७ ॥ ३९ ॥

स० चं०— अधःप्रवृत्तका प्रथम समयतैं लगाय अन्तर्मुहूर्त पर्यंत पूर्वस्थिति बंधतैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र घटता स्थितिबंध हो है। बहुरि तहां पीछैं अंतर्मुहूर्त पर्यंत तातैं भी पल्यका असंख्यातवां भागमात्र घटता स्थितिबंध है। ऐसैं एक अन्तर्मुहूर्त करि पल्यका असंख्यातवां भागमात्र घटता स्थिति बंधापसरण होइ। ऐसैं अपसरण अधःप्रवृत्तविषैं संख्यात हजार हो हैं ॥ ३९ ॥

आदिमकरणद्धाए पढमट्ठिदिबंधदो दु चरिमम्हि।
संखेज्जगुणविहीणो ठिदिबंधो होइ णियमेण ॥ ४० ॥

आदिमकरणाद्धायां प्रथमास्थितिबंधतस्तु चरमे।
संख्यातगुणविहीनः स्थितिबंधो भवति नियमेन ॥ ४० ॥

सं० टी०— अधःप्रवृत्तकरणप्रथमसमये स्थितिबंधः अंतःकोटिकोटिसागरोपमप्रमितः। सा अंतः को २। तस्माच्चरमसमये स्थितिबंधः संख्यातगुणहीनो नियमेन भवति सा अं को २ / ४ संख्यातसहस्रापसरणशलाकामहत्त्वेन तथाभावाविरोधात् ॥ ४० ॥

स० चं०—ऐसैं होतैं प्रथम करणके कालविषैं प्रथम समय सम्बन्धी अन्तःकोटाकोटी सागर प्रमाण स्थितिबंधतैं ताके अन्तसमयविषैं संख्यात गुणा घाटि हो है ॥ ४० ॥

तच्चरिमे ठिदिबंधो आदिमसम्मेण देससयलजमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिवज्जमाणगस्स वि संखेज्जगुणेण हीणकमो ॥

तच्चरमे स्थितिबंध आदिमसम्येन देशसकलयमम् ।
प्रतिपद्यमानस्यापि संख्येयगुणेन हीनक्रमः ॥ ४१ ॥

सं० टी०— अधःप्रवृत्तकरणचरमसमये प्रथमसम्यक्त्वाभिमुखस्य यः स्थितिबंधः सा अं को २ / ४ तस्माद्देशसंयमेन सह प्रथमसम्यक्त्वं प्रतिपद्यमानस्य स्थितिबंधः संख्यातगुणहीनः सा अं को २ – / ४।४ तस्मात्सकलसंयमेन सह प्रथमसम्यक्त्वं प्रतिपद्यमानस्य स्थितिबंधः संख्यातगुणहीनः सा अं को २ – / ४।४।४ ॥ ४१ ॥

स० चं०— तींहि अंतसमयविषैं जो स्थिति बंध कह्या तातैं देश संयम सहित प्रथमोपशम सम्यक्त्वकौं प्राप्त होनेवाले जीवकैं संख्यात गुणा घाटि स्थिति बंध हो है तातैं सकल संयम सहित प्रथमोपशम सम्यक्त्वकौं प्राप्त होनेवालेकैं संख्यात गुणा घाटि हो है ॥ ४१ ॥

आदिमकरणद्धाए पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।
अहियकमा हु विसेसे मुहुत्तअंतो हु पडिभागो ॥ ४२

आदिमकरणाद्धायां प्रतिसमयमसंख्यलोकपरिणामाः ।
अधिकक्रमा हि विशेषे मुहूर्तांतर्हि प्रतिभागः ॥ ४२ ॥

सं० टी०— अधःप्रवृत्तकरणकाले प्रथमसमयादारभ्याचरमसमयं त्रिकालगोचरजीवसंभविनो विशुद्धिपरिणामाः । असंख्येयलोकमात्राः ≡ a ते च प्रतिसमयं विशेषाधिकाः क्रमेण गच्छंति तत्र प्रथमसमये—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ ——— १ ᵔ
≡ ३ २ ७ ७ ७ । ७ २ । द्वितीयसमयविशेषाधिकाः— ≡ ३ २ ७ ७ ७ । ७ । २ एवं प्रतिसमयं विशेषाधिक-
२ ७ ७ ७ २ ७ ७ ७ ७ २ — २ ७ ७ ७ २ ७ ७ ७ । ७ २
(२ ——— १ ᵔ)

१ ——— १ ᵔ
क्रमेण गत्वा चरमसमये परिणामाः— ≡ ३ २ ७ ७ ७ । ७ २ एवं प्रतिसमयं विशेषाधिका अपि तत्परिणामा आलापा-
२ ७ ७ ७ २ ७ ७ ७ ७ २
पेक्षया असंख्यातलोकमात्रा इत्युच्यंते । विशेषे आनेतव्ये आदिधनस्यांतर्मुहूर्तमात्रः प्रतिभागहारो भवति । तत्प्रमाणं—

२ ७ ७ ७ ७ २ पदकदिसंखेण भाजिदे पचयं इत्यनेनानीतं विशेषं संस्थाप्य आदिधनगुणकारभागहाराभ्यामुप-
२

र्यधश्च गुणयित्वा गुणकारभूतं द्विकं हारस्य हारं कृत्वा समीक्ष्यमाणे आदिधनस्य भागहारः । अधःप्रवृत्तकरणकालात्सं-
ख्येयगुणः किंचिदूनो भवति सोऽप्यंतर्मुहूर्तमात्र एव ॥ ४२ ॥

स० चं०— पहला करणविषैं त्रिकालवर्ती जीवनिके जे कषायनिके विशुद्ध स्थान कहे हैं तिनिविषैं अधःप्रवृत्तकरणविषैं संभवते असंख्यात लोक मात्र हैं तिनविषै समय समय प्रति संभवते असंख्यात लोक मात्र परिणाम हैं । ते प्रथम समयतैं द्वितीयादि समयनिविषैं क्रमतैं समान प्रमाण रूप एक एक विशेष जो चय ताकरि बधते जानने । तहां आदि धन जो प्रथम समय सम्बन्धी परिणाम ताकौं अंतर्मुहूर्त मात्र भागहारका भाग दीएं विशेषका प्रमाण आवै है । 'पदकदिसंखणे भाजिदे पचयं' इस सूत्रकरि गच्छका वर्ग संख्यात गुणा ताका भाग सर्व धनकौं दीएं जो चयका प्रमाण आवै है सो प्रथमसमय संबंधी परिणामनिकौं किंचिदून संख्यातगुणाअधःप्रवृत्त करण कालमात्र जो अंतर्मुहूर्त ताका भाग दीएं भी इतना ही प्रमाण आवै है ॥ ४२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ताए अधापवत्तद्धाए संखेज्जभागमेत्तं तु ।
अणुकट्टीए अद्धा णिव्वग्गणकंडयं तं तु ॥ ४३ ॥

तस्या अधःप्रवृत्ताद्धायाः संख्येयभागमात्रं तु ।
अनुकृष्ट्या अद्धा निर्वर्गणकांडकं तत्तु ॥ ४३ ॥

सं० टी०– तस्या अधःप्रवृत्ताद्धायाः संख्येयभागमात्रोऽनुकृष्टयद्धा एकसमयपरिणामनानाखंडसंख्येत्यर्थः । अनुकृष्टयः प्रतिसमयपरिणामखंडानि तासामद्धा आयामः तत्संख्येत्यर्थः । तदेव तत्परिणाममेव निर्वर्गणकांडकमित्युच्यते। वर्गणा समयसादृश्यं ततो निष्क्रांता उपर्युपरि समयवर्तिपरिणामखंडा तेषां कांडकं पर्व निर्वर्गणकांडकं तानि च अधःप्रवृत्तकरणकाले संख्येयसहस्राणि भवंति ॥ ४३ ॥

स० चं–तिहिं अधःप्रवृत्त कालप्रमाण जो ऊर्ध्वगच्छ ताके असंख्यातवे भागमात्र अनुकृष्टिका गच्छ हो है । एक एक समय संबंधी परिणामनिविषैं एते एते खंड हो हैं ते वर्गणा कांडक समान जानने । वर्गणा जो समयनिकी समानता ताकरि रहित ऊपरि समयवर्ती परिणाम खंड तिनिका कांडक जो पर्व ताका नाम निर्वर्गण कांडक है । ते अधःकरणके कालविषै संख्यात हजार हो हैं ॥ ४३ ॥

पडिसमयगपरिणामा णिव्वग्गणसमयमेत्तखंडकमा।
अहियकमा हु विसेसे मुहुत्तअंतो हु पडिभागो ४४

प्रतिसमयगपरिणामा निर्वर्गणसमयमात्रखंडक्रमाः ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधिकक्कमा हि विशेषे मुहूर्तांतर्हि प्रतिभागः ॥ ४४ ॥

सं० टी०– प्रतिसमयगाः परिणामाः निर्वर्गणसमयमात्रखंडाः कृताः अधःप्रवृत्तकरणकालसंख्यातैकभागमात्रखंडाः कृता इत्यर्थः । ते च संख्यातावलिसमयमात्रा एव जघन्यखंडात् आ उत्कृष्टखंडं विशेषाधिका गच्छंति । तद्विशेषे साध्ये आदिखंडस्यांतर्मुहूर्तमात्रः प्रतिभागहारः । सोऽपि पूर्ववदानेतव्यः ॥ ४४ ॥

स० चं–समय समय संबंधी परिणामनिविषे निर्वर्गण कांडक समान खंड कीजिए ते भी प्रथम खंडतैं द्वितीयादि खंड क्रमतैं विशेष जो समान प्रमाण लीएं चय ताकरि बधता है तहा प्रथम खंडकौं अंतर्मुहूर्तका भाग दीएं विशेषका प्रमाण आवै है ॥ ४४ ॥

पडिखंडगपरिणामा पत्तेयमसंखलोगमेत्ता हु ।
लोयाणमसंखेज्जा छट्ठाणाणी विसेसेवि ॥ ४५ ॥

प्रतिखंडगपरिणामाः प्रत्येकमसंख्यलोकमात्रा हि ।
लोकानामसंख्येयाः षट्स्थानानि विशेषेपि ॥ ४५ ॥

सं० टी०– प्रतिनियताः खंडा जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदभिन्नाः तद्गताः परिणामाः विशुद्धिपरिणामविकल्पाः प्रत्येकमेकस्मिन्नेकस्मिन् खंडे असंख्येयलोकमात्राः संति । अनन्तभागवृद्धिरसंख्यातभागवृद्धिः संख्यातभागवृद्धिः संख्यातगुणवृद्धिरसंख्यातगुणवृद्धिरनंतगुणवृद्धिरिति षट्स्थानान्येकस्मिन् खंडे असंख्येयलोकमात्राणि संति । अनुकृष्टिविशेषेऽप्यसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानानि भवन्ति ॥ ४५ ॥

स० चं–तहां एक एक खंडविषैं जघन्य मध्य उत्कृष्टता लीएं विशुद्ध परिणामनिके भेद असंख्यात लोकमात्र हैं । तहां जैसैं गोम्मटसारका ज्ञानाधिकारविषै पर्याय समासविषै षट् स्थान पतित वृद्धिका अनुक्रम कह्या है तैसैं इहां एक एक खंडविषै वा एक एक अनु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टि विशेष विषैं भी असंख्यात लोकमात्र वारह षट् स्थानपतितवृद्धि संभवै हैं ॥ ४५ ॥

पढमे चरिमे समये पढमं चरिमं च खंडमसरित्थं ।
सेसा सरिसा सव्वे अट्ठुव्वंकादिअंतगया ॥ ४६ ॥

प्रथमे चरमे समये प्रथमं चरमं च खंडमसदृशम् ।
शेषाः सदृशाः सर्वे अष्टोर्वंकाद्यंतगताः ॥ ४६ ॥

सं० टी०–अधःप्रवृत्तकरणकालस्य प्रथमसमये प्रथमखंड ३९ । चरमसमये चरमखंड च ५७ । उपरितनाधस्तनसमयखंडैरसदृक्षमेव शेषाणि द्वितीयखंडादीनि द्विचरमसमयखंडपर्यंतानि सर्वाण्यपि खंडान्युपरितनाधस्तनसमयवर्तिखंडैः सदृशानि भवन्ति । तानि प्रथमादिचरमपर्यंतानि सर्वाण्यपि खंडान्यष्टांकादीनि उर्वंकांतानि भवंति । षट्स्थानानामादिरष्टांकः अनंतगुणवृद्धिरूपः अन्त उर्वंक अनन्तभागवृद्धिरूप इति वचनात् ॥ ४६ ॥

स० चं–प्रथम समयका प्रथम खंड अंत समयका अंत खंड ए तौ कोऊ खंडनिके समान नाहीं अवशेष सर्व खंड अन्य खंडनिकरि यथायोग्य समानता धरैं हैं । तहां खंडनिविषैं जो परिणाम पुंज कह्या तीहिंविषैं पहिला परिणाम तौ अष्टांक कहिए । पूर्व परिणामतैं अनंत गुणा वृद्धि रूप है । अर अंतका परिणाम ऊर्वंक कहिए पूर्व परिणामतैं अनंत भाग वृद्धि रूप है । जातैं षट् स्थाननिकी आदि तौ अष्टांक अर अंत ऊर्वंक कह्या है ॥ ४६ ॥

चरिमे सव्वे खंडा दुचरिमसमओत्ति अवरखंडाए ।
असरिसखंडाणोली अधापवत्तम्हि करणम्हि ४७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरमे सर्वे खंडा द्विचरमसमय इति अपरखंडैः।
असदृशखंडानामावलिरधःप्रवृत्ते करणे ॥ ४७ ॥

सं० टी०– अधःप्रवृत्तकरणकाले चरमसमयवर्तीनि जघन्यमध्यमोत्कृष्टानि सर्वाण्यपि प्रथमसमयादिद्विचरमसमयपर्यंतवर्तीनि जघन्यानि च खंडानि अंकुशाकारपंक्तिगतानि उपरि सादृश्याभावादसदृशानीत्युच्यन्ते ॥ ४७ ॥

स० चं–अधःप्रवृत्त करण कालविषैं अंत समय संबंधी तौ सर्व खंड अर दूसरा समय तैं लगाय द्विचरम समय पर्यंतका प्रथम खंड हैं ते तिनिके ऊपरिके समय संबंधी जे सर्व खंड तिनितैं समान नाहीं तातैं असदृश हैं ॥ ४७ ॥

पढमे करणे अवरा णिव्वग्गणसमयमेत्तगा तत्तो।
अहिगदिणा वरमवरं तो वरपंती अणंतगुणियकमा

प्रथमे करणे अवरा निर्वर्गणसमयमात्रकाः ततः।
अहिगतिना वरमवरमतो वरपंक्तिरनंतगुणितक्रमा ॥ ४८ ॥

सं० टी०–अधःप्रवृत्तकरणकाले निर्वर्गणाकांडकसमयमात्राः प्रतिसमयप्रथमखंडजघन्यपरिणामाः उपर्युपर्यनंतगुणितक्रमा गच्छंति। ततः प्रथमनिर्वर्गणाकांडकचरमसमयप्रथमखंडजघन्यपरिणामात् प्रथमसमयचरमखंडोत्कृष्टपरिणामोऽनन्तगुणः। ततो द्वितीयकांडकप्रथमसमयप्रथमखंडजघन्यपरिणामोऽनंतगुणः। ततः प्रथमकांडकद्वितीयसमयचरमखंडोत्कृष्टपरिणामोऽनंतगुणः, ततो द्वितीयकांडकद्वितीयसमयप्रथमखंडजघन्यपरिणामोऽनंतगुण एवं जघन्यादुत्कृष्टोऽनंतगुणः। उत्कृष्टाज्जघन्योऽनंतगुणोऽहिगतया गच्छति यावच्चरमकांडकचरमसमयप्रथमखंडजघन्यपरिणामं प्राप्नोति। तस्माच्चरमकांडकप्रथमसमयचरमखंडोत्कृष्टपरिणामोऽनंतगुणः। तस्मात्प्रतिसमयचरमखंडोत्कृष्टपरिणामपंक्तिरनंतगुणितक्रमा गच्छति यावच्चरमकांडकचरमसमयचरमखंडोत्कृष्टपरिणामं प्राप्नोति। सर्वत्र जघन्यपरिणामादुत्कृष्टपरिणामः असंख्यातलोकमात्रवारानंतगुणितः। उत्कृष्टपरिणामाज्जघन्यपरिणामः एकवारमनन्तगुणित इति विशेषो ज्ञातव्यः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वजघन्यविशुद्धेरप्यविभागप्रतिच्छेदाः जीवराशेरनंतगुणाः संतीति अनंतगुणवृद्ध्यादिषट्स्थानसंभवः ॥ ४८ ॥

स० चं–प्रथम करण विषैं विशुद्धताके अविभाग प्रतिच्छेदानिकी अपेक्षा समय समय संबंधी प्रथम प्रथम खंड। तिनके जघन्य परिणाम हैं ते उपरि उपरि अनंत गुणे हैं। बहुरि तहां पीछैं निर्वर्गण कांडकका अंत समय संबंधी प्रथम खंडका जघन्य परिणामतैं पहिले समयके अंत खंडका उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणा है तातैं द्वितीय कांडकके प्रथम समयके प्रथम खंडका जघन्य परिणाम अनंत गुणा है। तातैं प्रथम कांडकका द्वितीय समयके अंत खंडका परिणाम अनंत गुणा है तातैं द्वितीय कांडकके द्वितीय समयके प्रथम खंडका जघन्य परिणाम अनंतगुणा है ऐसैं जैसैं सर्प इधरतैं उधर उधरतैं इधर गमन करै है तैसैं जघन्यतैं उत्कृष्टका उत्कृष्टतैं जघन्यका अनंतगुणा क्रम है यावत् अंत कांडकका अंत समयके प्रथम खंडका जघन्य परिणाम होइ बहुरि तातैं अंत कांडकका प्रथम समयके अंत खंडका उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणा है। तातैं समय समय प्रति अंत खंडके उत्कृष्ट परिणामनिकी पंक्ति अनंतगुणा क्रम लीएं है यावत् अंत कांडकका अंत समयके अंत खंडका उत्कृष्ट परिणाम होइ। इहां इतना जानना।

जघन्यतैं उत्कृष्ट है सो तौ असंख्यात लोकमात्रवार अनंत गुणा है। अर उत्कृष्टतैं जघन्य है सो एकवार अनंतगुणा है। बहुरि सर्वतैं जघन्य विशुद्धताके भी अविभाग प्रतिच्छेद जीव राशितैं अनंतगुणें हैं तातैं इहां षट् स्थान संभवै हैं॥ ४८॥

पढमे करणे पढमा उड्ढगसेढीय चरिमसमयस्स। ८१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिरियगखंडाणोली असरित्थाणंतगुणियकमा ४९

प्रथमे करणे प्रथमा ऊर्ध्वगश्रेण्याः चरमसमयस्य ।
तिर्यग्गतखंडानामावलिरसदृशी अनंतगुणितक्रमा ॥ ४९ ॥

सं० टी०— अधःप्रवृत्तकरणे प्रथमसमयप्रथमखंडजघन्यपरिणामादारभ्य द्विचरमसमयप्रथमखंडजघन्यपरिणामपर्यंता ऊर्ध्वगा जघन्यपरिणामश्रेणिः, चरमसमयतिर्यक्खंडपरिणामश्रेणिश्च उपरिसादृश्याभावादसदृशी अनंतगुणितक्रमा च वेदितव्या ॥ ४९ ॥ एवमधःप्रवृत्तकरणपरिणामस्वरूपं निरूपितं, अथापूर्वकरणलक्षणमाह—

स० चं—प्रथम करणविषैं समय समयके परिणामनिकी ऊपरि ऊपरि पंक्ति कीएं अर अंत समयके परिणामनिकी बरोबरि तिर्यक्रूप पंक्ति कीएं अंकुशाकाररचना हो है। सो इनके ऊपरिके परिणामनितैं समानता नाहीं तातै असदृश हैं बहुरि ए परिणाम अनंत गुणा क्रम लीएं विशुद्धतारूप जानने ऐसैं अधःकरणका स्वरूप कह्या ॥ ४९ ॥

पढमं व विदियकरणं पडिसमयमसंखलोगपरिणामा
अहियकमा हु विसेसे मुहुत्तअंतो हु पडिभागो ॥ ५०

प्रथमं व द्वितीयकरणं प्रतिसमयमसंख्यलोकपरिणामाः ।
आधिकक्रमा हि विशेषे मुहूर्तांतर्हि प्रतिभागः ॥ ५० ॥

सं० टी०—यथाधःप्रवृत्तकरणपरिणामाः व्याख्यातास्तथापूर्वकरणपरिणामा व्याख्यातव्याः । अयं तु विशेषः—अधःप्रवृत्तकरणपरिणामेभ्यः असंख्येयलोकमात्रेभ्यः अपूर्वकरणपरिणामा असंख्येयलोकगुणिता भवंति । ते च प्रतिसमयं विशेषाधिका गच्छंति यावदपूर्वकरणचरमसमयपरिणामान् प्राप्नुवंति । विशेष आनेतव्ये आदिधनस्यांतर्मुहूर्तमात्रः प्रतिभागहारः स्यात् ॥ ५० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं—प्रथम अधःकरणवत् दूसरा अपूर्व करण है। तहां विशेष—जो असंख्यात लोकमात्र अधःकरणके परिणामनितैं अपूर्व करणके परिणाम असंख्यात लोक गुणे हैं। ते समय समय प्रति विशेष जो समान प्रमाणरूप चय ताकरि अधिक हैं। सो प्रथम समय संबंधी परिणामकौं अंतर्मुहूर्तका भाग दीएं चयका प्रमाण आवै है ॥ ५० ॥

जम्हा उवरिमभावा हेट्ठिमभावेहिं णत्थि सरिसत्तं।
तम्हा विदियं करणं अपुव्वकरणेत्ति णिद्दिट्ठं ॥५१॥

यस्मादुपरिभावानामधस्तनभावैः नास्ति सदृशत्वम्।
तस्मात् द्वितीयं करणमपूर्वकरणमिति निर्दिष्टम् ॥ ५१ ॥

सं० टी०—यस्मात्कारणादुपरितनसमयवर्तिपरिणामानामधस्तनसमयवर्तिपरिणामैः सदृशत्वं नास्ति तस्मात्कारणात् द्वितीयकरणपरिणामः अपूर्वकरण इति निर्दिष्टः। प्रथमसमयसर्वोत्कृष्टविशुद्धेर्द्वितीयसमयजघन्यविशुद्धिरनंतगुणा भवतीति पूर्वोत्तरसमयपरिणामयोः सादृश्यं दूरोत्सारितमेव। अधःप्रवृत्तकरणचरमसमये अप्राप्ता एव परिणामा अपूर्वकरणप्रथमसमये जायंते। तत्राप्राप्ता एव परिणामास्तद्द्वितीयसमये जायंते। एवमातच्चरमसमयमपूर्वा एव परिणामा जायंते। इत्यन्वर्था अपूर्वकरणसंज्ञा ॥ ५१ ॥

स० चं—जातैं उपरि समय संबंधी परिणाम हैं ते नीचले समय संबंधी परिणामनिके समान इहां न होंइ। प्रथम समयकी उत्कृष्ट विशुद्धतातैं भी द्वितीय समय संबंधी जघन्य विशुद्धता भी अनंतगुणी है। ऐसैं परिणामनिका अपूर्वपना है तातैं दूसरा करण अपूर्व करण कह्या है ॥ ५१ ॥

विदियकरणादिसमयादंतिमसमओत्ति अवरवरसुद्धी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहिगदिणा खलु सव्वे हौंति अणंतेण गुणियकमा ५२

द्वितीयकरणादिसमयादंतिमसमय इति अवरवरशुद्धी।
अहिगतिना खलु सर्वे भवंत्यनंतेन गुणितक्रमाः ॥ ५२ ॥

सं० टी०—अपूर्वकरणप्रथमसमयादारभ्य आ अंतिमसमयं जघन्योत्कृष्टविशुद्धिपरिणामाः अनंतगुणाः। तद्यथा—तत्प्रथमसमये जघन्यविशुद्धिपरिणामादुत्कृष्टविशुद्धिपरिणामोऽनंतगुणः। तस्मादुपरितनसमयजघन्यविशुद्धिपरिणामोऽनंतगुणः। तस्मात्तत्समयोत्कृष्टविशुद्धिपरिणामोनंतगुणः। एवं सर्वेऽपि जघन्योत्कृष्टविशुद्धिपरिणामा अनंतगुणितक्रमा अहिगत्या गच्छंति यावच्चरमसमयजघन्योत्कृष्टपरिणामौ। अत्रानुकृष्टिखंडविकल्पो नास्ति। अधस्तनसमयसर्वोत्कृष्टपरिणामादुपरितनजघन्यपरिणामस्यानंतगुणत्वासंभवात् ॥ ५२ ॥ अथापूर्वकरणपरिणामस्य कार्यविशेषज्ञापनार्थमाह—

स० चं०—दूसरे करणका प्रथम समयतैं लगाय अंत समय पर्यंत अपने जघन्यतैं अपना उत्कृष्ट अर पूर्व समयके उत्कृष्टतैं उत्तर समयका जघन्य परिणाम क्रमतैं अनंतगुणी विशुद्धता लीएं सर्पकी चालवत् जानने। इहां अनुकृष्टि नाहीं ॥ ५२ ॥

गुणसेढीगुणसंकमाठिदिरसखंडा अपुव्वकरणादो।
गुणसंकमेण सम्मा मिस्साणं पूरणोत्ति हवे ॥ ५३

गुणश्रेणीगुणसंक्रमस्थितिरसखंडा अपूर्वकरणात्।
गुणसंक्रमेण समा मिश्राणां पूरण इति भवेत् ॥ ५३ ॥

सं० टी०—अपूर्वकरणप्रथमसमयादारभ्य गुणसंक्रमेण सम्यक्त्वमिश्रप्रकृत्योः पूरणकालचरमसमयपर्यंतं गुणश्रेणिविधानं गुणसंक्रमविधानं स्थितिखंडनमनुभागखंडनं च वर्तते ॥ ५३ ॥ ८५

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं—अपूर्व करणके प्रथम समयतैं लगाय यावत् सम्यक्त्व मोहनी मिश्र मोहनीका पूरणकाल जो जिस कालविषैं गुणसंक्रमणकरि मिथ्यात्वकौं सम्यक्त्वमोहनी मिश्रमोहनी रूप परिणमावै है तिस कालका अंत समय पर्यंत गुणश्रेणि १ गुणसंक्रमण १ स्थितिखंडन १ अनुभाग खंडन १ ए च्यारि आवश्यक हो हैं ॥ ५३ ॥

ठिदिबंधोसरणं पुण अधापवत्तादुपूरणोत्ति हवे।
ठिदिबंधाट्ठिदिखंडुक्कीरणकाला समा होंति ॥ ५४ ॥

स्थितिबंधापसरणं पुनः अधःप्रवृत्तादापूरण इति भवेत्।
स्थितिबंधस्थितिखंडोत्कीरणकालाः समा भवंति ॥

सं० टी०— स्थितिबन्धापसरणं पुनरधःप्रवृत्तकरणप्रथमसमयादारभ्य आगुणसंक्रमणपूरणचरमसमयं प्रवर्तते । यद्यपि प्रायोग्यतालब्धिकाले स्थितिबन्धापसरणमारंभः कथितस्तथापि तत्र तस्यानवस्थितत्वेन अविवक्षितत्वात् करणपरिणामकार्यस्यावश्यंभावेन अवस्थितत्वादधःप्रवृत्तकरणप्रथमसमयादारभ्य स्थितिबंधापसरणं विवक्षितं स्थितिबन्धापसरणस्थितिकांडकोत्करणकालौ द्वावप्यंतर्मुहूर्तमात्रौ समानावेव ॥ ५४ ॥

स० चं—बहुरि स्थिति बंधापसरण है सो अधःप्रवृत्त करणका प्रथम समयतैं लगाय तिस गुणसंक्रमण पूरण होनेका काल पर्यंत हो है। यद्यपि प्रायोग्य लब्धितैं ही स्थिति बंधापसरण हो है तथापि प्रायोग्य लब्धिकैं सम्यक्त्व होनेका अनवास्थितपना है। नियम नाहीं तातैं ग्रहण न कीया। बहुरि स्थितिबंधापसरण काल अर स्थितिकांडकोत्करण काल ए दोऊ समान अंतर्मुहूर्तमात्र हैं ॥ ५४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणसेढीदीहत्तमपुव्वदुगादो दु साहियं होदि ।
गलिदवसेसे उदयावलिबाहिरदो दु णिक्खेवो ५५

गुणश्रेणिदीर्घत्वमपूर्वद्विकात् तु साधिकं भवति ।
गलितावशेषे उदयावलिबाह्यतस्तु निक्षेपः ॥ ५५ ॥

सं० टी०— गुणश्रेणिदीर्घत्वमपूर्वकरणानिवृत्तकरणकालाभ्यां साधिकं भवति २ ७ (४) गुणश्रेणिकरणार्थमपकृष्टद्र-

२ ७
२ ७ ७

व्यस्य निक्षेपयोग्यस्थित्यायाम इत्यर्थः । अधिकप्रमाणं पुनरनिवृत्तिकरणकालसंख्यातैकभागमात्रं २ ७ (४) उदयावलि-
बाह्यप्रथमसमयादारभ्य गलितावशेषे गुणश्रेण्यायामे अपकृष्टद्रव्यस्य निक्षेपो भवति ॥ ५५ ॥ अथ निक्षेपातिस्थापनयोः स्वरूपभेदप्रमाणविषयान् कथयति—

स० चं०—गुणश्रेणिका दीर्घत्व कहिए निषेक निषेकनिका प्रमाणमात्र आयाम सो अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरणके कालतैं साधिक है। सो अधिकका प्रमाण अनिवृत्ति करण कालके संख्यातवे भागमात्र जानना। सो यहु गुणश्रेणि आयाम गलितावशेष है। समय व्यतीत होतैं यहु गुणश्रेणि आयाम भी घटता होता जाय है। बहुरि उदयावलीतैं बाह्य है जातैं उदयावलीतैं ऊपरि गुणश्रेणि आयामके निषेक हैं। तिस गुणश्रेणि आयामविषैं गुण श्रेणिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्यका निक्षेपण करिए है—

अब इहां प्रसंग पाइ निक्षेपण अतिस्थापनाका स्वरूपादिक कहिए है। तहां अपक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्षण कीया हूवा वा उत्कर्षण कीया हूवा द्रव्यकौं जिनि निषेकनिविषैं मिलाइए ते निषेक निक्षेपण रूप जानने । ।जिनि निषेकानिविषैं न मिलाइए ते अतिस्थापन रूप जानने । सो स्थिति घटाइ ऊपरिके निषेकनिका द्रव्य नीचले निषेकानिविषैं जहां दीजिए तहां अपकर्षण कहिए । बहुरि स्थिति बधाय नीचले निषेकानिका द्रव्यकौं ऊपरिके निषेकनिविषैं जहां दीजिए तहां उत्कर्षण काहिए । सो इनकी अपेक्षा निक्षेपण अतिस्थापन निषेकानिका प्रमाण कहिए है ॥ ५५ ॥

णिक्खेवमदित्थावणमवरं समऊणआवलितिभागं ।
तेणूणावलिमेत्तं विदियावलियादिमणिसेगे ॥ ५६ ॥

निक्षेपमतिस्थापनमवरं समयोनमावलित्रिभागम् ।
तेन न्यूनावलिमात्रं द्वितीयावलिकादिमानिषेके ॥ ५६ ॥

सं० टी०— अव्याघातविषये अपकर्षणे द्वितीयावलिप्रथमनिषेके अपकृष्यमाणे निक्षिप्यमाणे समयोनावलित्रिभागसमयाधिको जघन्यनिक्षेपो भवति। तेन न्यूनावलिमात्रं जघन्यातिस्थापनं भवति । अपकृष्टद्रव्यस्य निक्षेप-

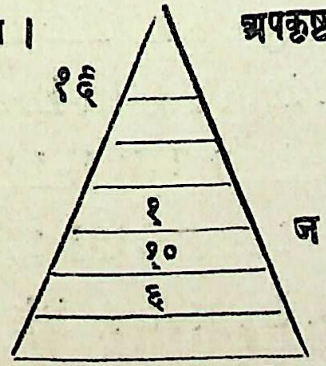

स्थानं निक्षेपः, निक्षिप्यतेऽस्मिन्निति निर्वचनात् । तेनातिक्रम्यमाणं स्थानमतिस्थापनं, अतिस्थाप्यते अतिक्रम्यतेऽस्मिन्निति अतिस्थापनं ॥ ५६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं–जहां स्थिति कांडक घात न पाइए सो अव्याघात कहिए। तिस विषैं प्रथम वर्णन करिए है–द्वितीय आवलीका प्रथम निषेकनिका अपकर्षण करि नीचै निक्षेपण करिए तहां प्रथम आवलीके निषेकनिविषैं समय घाटि आवलीका त्रिभाग एक समय अधिक प्रमाण निषेक तौ निक्षेप रूप हैं। इनिविषैं सोई द्रव्य दीजिए है। बहुरि अवशेष निषेक अतिस्थापन रूप हैं। तिनिविषैं सो द्रव्य न दीजिए है। ऐसैं यहु जघन्य निक्षेप जघन्य अतिस्थापन जानना। अंक संदृष्टिकरि जैसैं प्रथमादि सोलहनिषेक तौ प्रथमावलीके अर ताके ऊपरि सोलह निषेक द्वितीयावलीके हैं। तहां सतरह्वां निषेकका द्रव्य अपकर्षण करि नीचैं दीया तहां सोलहमैं एक घटाएं पंद्रह ताका त्रिभाग पांच तामैं एक मिलाएं छह सो प्रथमादि छह निषेकनिविषैं द्रव्य दीया सो यहु जघन्य निक्षेप है। बहुरि ताके ऊपरि दश निषेकनिविषैं द्रव्य नाहीं मिलाया सो यहु जघन्य अतिस्थापन है ॥ ५६ ॥

एत्तो समऊणावलितिभागमेत्तो तु तं खु णिक्खेवो।
उवरिं आवलिवज्जिय सगट्ठिदी होदि णिक्खेवो ॥

अतः समयोनावलित्रिभागमात्रस्तु तत्खलु निक्षेपः।
उपरि आवलिवर्जिता स्वकस्थितिर्भवति निक्षेपः ॥ ५७ ॥

सं० टी०–इतः परं द्वितीयावलिद्वितीयनिषेके अपकृष्टे निक्षेपः। स एव समयोनावलित्रिभागः समयाधिकः अतिस्थापनं समयाधिकं भवति। तथा द्वितीयावलितृतीयनिषेकेऽप्यपकृष्टे स एव समयोनावलित्रिभागः, समयाधिको निक्षेपो भवति। अतिस्थापनं तु द्विसमयाधिकं भवति। एवं समयोत्तरक्रमेण समयोनावलित्रिभागमात्रस्य समयाधिकस्योपरितननिषेकेऽप्यपकृष्टे स एव समयोनावलित्रिभागः समयाधिको निक्षेपो भवति। अतिस्थापनं तु वर्द्धमाना-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वलिमात्रं भवति तदुत्कृष्टातिस्थापनं तदुपरिनिक्षेपो वर्धते । अतिस्थापनं तु आवलिमात्रमवस्थितमेव । एवमुत्तरोत्तरनिषेके-ष्वपकृष्टेषु निक्षेपो वर्द्धमानः चरमनिषेके अपकृष्टे अधः आवलिमात्रमतिस्थापनं तदूनकर्मस्थितिर्निक्षेपो भवति ॥ ५७॥

स० चं०-यातैं ऊपरि द्वितीयावलीके द्वितीय निषेकका अपकर्षण कीया तहां एक समय अधिक आवलीमात्र याके नीचे निषेक हैं । तिनिविषैं निक्षेप तौ निषेक घाटि आवलीका त्रिभाग एक समय अधिक ही है। अतिस्थापन पूर्वतैं एक समय अधिक है ऐसैं क्रमतैं द्वितीयावलीके तृतीयादि निषेकनिका अपकर्षण होतैं निक्षेप तौ पूर्वोक्त प्रमाण ही अर अतिस्थापन एक एक समय अधिक क्रमतैं जानना । तहां समय घाटि आवलीका त्रिभाग एक समय अधिक प्रमाण जे द्वितीयादिआवलीके निषेक तिनिके ऊपरिवर्ती जे निषेक ताका अपकर्षण कीएं तहां निक्षेप तौ पूर्वोक्त प्रमाण अर अतिस्थापन आवलीमात्र हो है सो यहु उत्कृष्ट अतिस्थापन है । अंक संदृष्टिकरि जैसैं अठारहवां उगणीसवां बीसवां आदि निषेकनिका द्रव्य अपकर्षणकरि प्रथमादि छह निषेकनिविषैं ही दीजिए है अर ग्यारह बारह तेरह आदि निषेकनिविषैं न दीजिए है । तहां तेईसवां निषेकका द्रव्य अपकर्षण कीएं आदिके छह निषेक तौ निक्षेप रूप हैं। अर सोलह निषेक अतिस्थापन भए सो यहु उत्कृष्ट अतिस्थापन है। बहुरि इहांतैं ऊपरिके निषेकनिका द्रव्य अपकर्षण कीएं सर्वत्र अतिस्थापन तौ आवलीमात्र ही जानना । अर निक्षेप एक एक समय क्रमतैं बधता जानना । तहां स्थितिके अंत निषेकका अपकर्षण होतैं ताके नीचेके आवलीमात्र निषेक तौ अतिस्थापन रूप जानने । तिस विना अवशेष सर्व निषेक निक्षेप रूप जानने । अंक संदृष्टिकरि जैसैं चौईसवां पचीसवां आदि निषेकनिका अपकर्षण होतैं प्रथमादि छह सात आदि एक एक बधता निषेक तौ निक्षेप रूप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो है। अर अतिस्थापन रूप सर्वत्र सोलह ही निषेक हैं। सो यहु क्रम अंत निषेकका अपकर्षण पर्यंत जानना ॥ ५७ ॥

उक्कस्सट्ठिदिबंधो समयजुदावलिदुगेण परिहीणो।
उक्कट्ठिदिम्मि चरिमे ठिदिम्मि उक्कस्सणिक्खेवो ॥

उत्कृष्टस्थितिबंधः समययुतावलिद्विकेन परिहीनः।
उत्कृष्टस्थितौ चरमे स्थितौ उत्कृष्टनिक्षेपः ॥ ५८ ॥

सं० टी०—चरमनिषेके अपकृष्याधो निक्षिप्यमाणे समययुतावलिद्विकेन परिहीन उत्कृष्टकर्मस्थितिबन्धः सर्वोप्युत्कृष्टनिक्षेपो भवति क-४ । २ बंधसमयादारभ्यावलिपर्यंतमपकर्षणरूपोदीरणानुपपत्तेराबाधाकाले अचलावलिरेका त्याज्या। अग्रे चरमनिषेकस्याधोऽतिस्थापनावलिरेका त्याज्या, चरमनिषेक एकस्त्याज्य इति समयाधिकावलिद्वयमुत्कृष्टस्थितिबंधे अपनेतव्यं एवं गाथासूत्रत्रयेणाव्याघातविषयापकर्षणे जघन्यातिस्थापनं, जघन्यनिक्षेपः, उत्कृष्टातिस्थापनमुत्कृष्टनिक्षेपश्च व्याख्याताः ॥ ५८ ॥

(१—)

स० चं०— स्थितिका अन्तानिषेकका द्रव्यकौं अपकर्षणकरि नीचले निषेकनिविषैं निक्षेपण करतैं तिस अन्त निषेकके नीचैं आवलीमात्र निषेक तौ अति स्थापन रूप हैं अर समय अधिक दोय आवलीकरि हीन उत्कृष्ट स्थितिमात्र निक्षेप हो हैं सो यहु उत्कृष्ट निक्षेप जानना। इहां बंध भएं पीछैं आवली कालपर्यंत तो उदीरणा होइ नाहीं तातैं एक आवली तौ आबाधा विषैं गई अर एक आवली अतिस्थापनरूप रही अर अंत निषेकका द्रव्य ग्रह्या ही है तातैं उत्कृष्ट स्थितिविषैं दोय आवली एक समय घटाया है। अंकसंदृष्टि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि जैसैं उत्कृष्ट स्थिति हजार समय तहां सोलह समय तौ आबाधाविषैं गये अर नवसै चौरासी निषेक हैं तहां अंत निषेकका द्रव्य अपकर्षण करि प्रथमादि नवसै सतसाठि निषेकनिविषैं दीया सो यहु उत्कृष्ट निक्षेप है। अर ताके ऊपरि सोलह निषेकनिविषैं न दीया सो यहु अतिस्थापनावली है॥ ५८॥

उक्कस्सट्ठिदि बंधिय मुहुत्तअंतेण सुज्झमाणेण।
इगिकंडएण घादे तम्हि य चरिमस्स फालिस्स॥ ५९
चरिमणिसेउक्कट्ठे जेट्ठमदित्थावणं इदं होदि।
समयजुदंतोकोडाकोडि विणुक्कस्सकम्मठिदी॥ ६०

उत्कृष्टस्थितिं बंधयित्वा मुहूर्तान्तः शुद्ध्यता।
एककांडकेन घाते तस्मिन् च चरमस्य फालेः॥ ५९॥
चरमनिषेकोत्कर्षे ज्येष्ठमतिस्थापनमिदं भवति।
समययुतान्तःकोटीकोटिं विना उत्कृष्टकर्मस्थितिः॥ ६०॥

सं० टी०—केनचिज्जीवेन कर्मोत्कृष्टस्थितिं बद्ध्वा क्षयोपशमलब्धिमहिम्ना विशुध्यता बंधावलिमतिवाह्यांतर्मुहूर्तेनैककांडकघाते प्रतिसमयमसंख्येयगुणितफाल्यपनयने क्रियमाणे तस्मिंश्चरमफाल्याश्चरमनिषेके अपकृष्याधोनिक्षिप्यमाणे समययुतांतःकोटीकोटिरहितकर्मोत्कृष्टस्थितिर्व्याघातविषयापकर्षणे उत्कृष्टातिस्थापनं भवति, उपरिमचरमनिषेकसमयः अधोनिक्षेपस्थितिरंतःकोटीकोटी च कर्मोत्कृष्टस्थितौ वर्जनीये। ततः समययुतांतःकोटीकोटिरहिता कर्मोत्कृष्टस्थितिर्व्याघातविषये उत्कृष्टमतिस्थापनमिति सिद्धं॥ ५९—६०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— अब जहां स्थिति कांडक घात होइ सो व्याघात कहिए । तहां कहिए है—कोई जीव उत्कृष्ट स्थिति बांधि पीछे क्षयोपशम लब्धिकरि विशुद्ध भया तब बंधी थी जो स्थिति तीहिंविषैं आबाधारूप बंधावलीकौं व्यतीत भएं पीछैं एक अंतर्मुहूर्त कालकरि स्थिति कांडकका घात कीया तहां जो उत्कृष्ट स्थिति बांधी थी तिसविषैं अन्तःकोटाकोटी सागर प्रमाण स्थिति अवशेष राखि अन्य सर्व स्थितिका घात तिस कांडककरि हो है । तहां कांडकविषैं जेती स्थिति घटाई ताके सर्व निषेकनिका परमाणूनिकौं समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं अवशेष राखी स्थितिविषैं अंतर्मुहूर्त पर्यंत निक्षेपण करिए है । सो समय समयविषैं जो द्रव्य निक्षेपण कीया सोई फालि है। तहां अंतकी फालिविषैं स्थितिके अंन्त निषेकका जो द्रव्य ताकौं ग्रहि अवशेष राखी स्थितिविषै दीया तहां एक समय अधिक अंतःकोटाकोटी सागरकरि हीन उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण उत्कृष्ट अतिस्थापन हो है जातैं इसविषैं सो द्रव्य न दीया । इहां उत्कृष्ट स्थितिविषैं अंतःकोटाकोटी सागरमात्र स्थिति अवशेष रही तिसविषैं द्रव्य दीया सो यहु निक्षेपरूप भया तातैं यहु घटाया अर एक अन्त निषेकका द्रव्य ग्रह्या ही है तातैं एक समय घटाया है । अंक संदृष्टि करि जैसैं हजार समयकी स्थितिविषैं कांडक घातकरि सौ समयकी स्थिति राखी तहां हजारवां समय सम्बन्धी निषेकका द्रव्यकौं आदिके सौ समयसम्बन्धी निषेकनिविषैं दीया तहां आठसै निन्याणवै मात्र समय उत्कृष्ट अतिस्थापन हो है ॥ ५९–६० ॥

सत्तग्गट्ठिदिबंधो आदिठिदुक्कट्टणे जहण्णेण ।
आवलिअसंखभागं तेत्तियमेत्तेव णिक्खिवदि ॥ ६१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्ताग्रस्थितिबन्ध आदिस्थित्युत्कर्षणे जघन्येन ।
आवल्यसंख्यभागं तावन्मात्रमेव निक्षिपति ॥ ६१ ॥

सं० टी०—अव्याघातव्याघातविषये कर्मस्थितेरुत्कर्षणे प्राक्तनसत्त्वस्य अग्रस्थितिचरमनिषेकं बंधे तत्कालबध्यमाने समयप्रबद्धे तत्समानस्थितेरुपरि आवल्यसंख्येयभागमतिच्छायातिक्रम्य तावन्मात्रे आवल्यसंख्येयभागमात्रे एव निक्षिपति इति जघन्यातिस्थापनं जघन्यनिक्षेपश्च कथितौ । उत्कर्षणे आभ्यां स्तोकयोरतिस्थापननिक्षेपयोरभावात् ॥ ६१ ॥

स० चं० — अव्याघात विषैं वा व्याघातविषैं कर्म स्थितिका उत्कर्षण होतैं विधान कहिए है— पूर्वै जे सत्तारूप निषेक थे तिनिविषैं जो अंतका निषेक था ताका द्रव्यकौं उत्कर्षण करनेका समयविषैं बंध्या जो समयप्रबद्ध तीहिंविषैं जो पूर्व सत्ताका अंत निषेक जिससमय उदय आवने योग्य है तिस समयविषैं उदय आवने योग्य जो बंध्या समयप्रबद्धका निषेक तिस निषेकके ऊपरिवर्ती आवलीका असंख्यातवां भागमात्र निषेकनिकौं अतिस्थापन रूप राखि तिनके ऊपरिवर्ती जे तितने ही आवलीके असंख्यातवां भागमात्र निषेक तिनिविषैं तिस सत्ताका अंत निषेकका द्रव्यकौं निक्षेपण करिए है । यहु उत्कर्षणविषैं जघन्य अतिस्थापन अर जघन्य निक्षेप जानना। अंकसंदृष्टिकरि जैसैं पूर्व सत्ताका अंत निषेक जिससमय उदय होइगा तिस समयविषैं अब बंध्या समयप्रबद्धका पचासवां निषेक उदय होगा। बहुरि तिस सत्ताका अंत निषेकका द्रव्यकौं ग्रहि आवलीका प्रमाण सोलह ताका असंख्यातवां भाग च्यारि सो पचासवां निषेकके ऊपरि इक्यावनवां आदि च्यारि निषेकनिकौं अतिस्थापनरूप राखि पचावनवां आदि च्यारि निषेकनिविषैं निक्षेपण करिए है ॥ ६१ ॥

तत्तोदित्थावणगं वड्ढदि जावावली तदुक्कस्सं । ९२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवरीदो णिक्खेओ वरं तु बंधिय ठिदिं जेट्ठं ॥ ६२

बोलिय बंधावलियं उक्कट्टिय उदयदो दु णिक्खिविय

उवरिमसमये विदियावलिपढमुक्कट्टणे जादे ॥ ६३ ॥

तक्कालवज्जमाणे वारट्ठिदीए आदित्थियाबाहं ।

समयजुदावलियाबाहूणो उक्कस्सठिदिबंधो ॥ ६४ ॥

ततोतिस्थापनकं वर्धते यावादावलिस्तदुत्कृष्टम् ।
उपरितो निक्षेपो वरं तु बंधयित्वा स्थितिर्ज्येष्ठम् ॥ ६२ ॥
अपलाप्य बंधावलिकामुत्कर्ष्य उदयतस्तु निक्षिप्य ।
उपरितनसमये द्वितीयावलिप्रथमोत्कर्षणे जाते ॥ ६३ ॥
तत्कालवर्ज्यमाने वरस्थित्या अतिस्थिताबाधां ।
समययुतावलिकाबाधोनः उत्कृष्टस्थितिबन्धः ॥ ६४ ॥

सं० टी०— ततः— जघन्यातिस्थापनात् समयोत्तरक्रमेण अतिस्थापनं वर्धते यावदावलिमात्रमतिस्थापनं भवति । तस्यातिस्थापनस्योत्कर्षः वर उत्कृष्टो निक्षेपश्च उपरि वक्ष्यते । तत्कथं ज्येष्ठामुत्कृष्टां स्थितिं बध्वा तदाबाधायां बंधावलिमतिवाह्य चरमनिषेकमपकृष्य उदयनिषेकात्प्रभृति उपरि समयाधिकावलिं मुक्त्वा सर्वत्र निक्षिप्य उपरितनसमये अपकर्षणसमयानंतरसमये प्राक्निक्षिप्तद्वितीयावलिप्रथमनिषेकस्योत्कर्षणं भवति । तस्मिन्नुत्कर्षणे जाते तत्कालबध्यमाने उत्कृष्टस्थितिके समयप्रबद्धे समयाधिकावलिन्यूनामाबाधामतिक्रम्य प्रथमनिषेकात्प्रभृति उपरि समयाधिकावलिव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्जितोत्कृष्टकर्मस्थितौ उत्कृष्टद्रव्यं निक्षिपतीति समयाधिकावलिन्यूना आबाधा उत्कृष्टातिस्थापनं । समयाधिकावलि-युक्ताबाधान्यूना उत्कृष्टकर्मस्थितिरुत्कृष्टनिक्षेपो भवति । अपकृष्टद्रव्यस्याधो निक्षिप्तस्य यावती शक्तिस्थितिरस्ति तावत्पर्यंतं स्थित्युत्कर्षणं घटते ॥ ६२–६४ ॥

स० चं– तिस पूर्व सत्वके अंत निषेकतैं लगाय ते नीचेके निषेक तिनिका उत्कर्षण होतैं निक्षेप तौ पूर्वोक्त प्रमाण ही रहै अर अतिस्थापन क्रमतैं एक एक समय बंधता होइ सो यावत् आवलीमात्र उत्कृष्ट अतिस्थापन होइ तावत् यहु क्रम जानना। अंक संदृष्टिकरि सत्ताका अंत निषेकके नीचला उपांत निषेक जिससमयविषैं उदय होगा तिससमय हाल बंध्या समय प्रबद्धका गुणचासवां निषेक उदय होगा सो तिस उपांत निषेकका द्रव्य उत्कर्षण करि ताकौं पचासवां आदि पांच निषेकनिकौं अतिस्थापन रूप राखि तिनकेऊपरि पचावनमां आदि च्यारि निषेकनिविषैं निक्षपण करिए है। बहुरि ऐसैं ही उपांत निषेकतैं नीचले निषेकानिका द्रव्य उत्कर्षण करि बंध्या समय प्रबद्धका क्रमतैं गुणचासवां अठतालीसवां आदितैं लगाय छह सात आदि एक एक बंधते निषेक अतिस्थापन रूप राखि पचावनवां आदि च्यारि निषेकानिविषैं निक्षेपण करिएहै। तहां हाल बंध्या समय प्रबद्धका अठतीसवां निषेक जिस समयविषैं उदय होगा तिस समय विषै उदय आवने योग्य जो पूर्व सत्ताका निषेक ताका द्रव्यकौं उत्कर्षण करतैं हाल बंध्या समय प्रबद्धका गुणतालीसवां भाग आदि सोलह निषेकनिकौं अतिस्थापन रूप राखै है सो यहु उत्कृष्ट अतिस्थापन है। इहां पर्यंत पचावनवां आदि च्यारि निषेकनिविषैं निक्षेपण जानना। बहुरि आवलीमात्र अतिस्थापन भए पीछैं ताके नीचे नीचेके निषेकानिका उत्कर्षण करतैं अतिस्थापन तौ आवलीमात्र ही रहै है अर निक्षेप क्रमतैं एक एक निषेककरि बंधता हो है। अंक संदृष्टिकरि जैसैं हाल बंध्या समय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रबद्धका सैतीसवां निषेक जिस समय विषैं उदय होगा तिस समयविषैं उदय आवने योग्य सत्ताके निषेककौं उत्कर्षण होतैं अठतीसवां आदि सोलह निषेक अतिस्थापन रूप हो हैं । चौवनवां आदि पांच निषेक निक्षेपरूप हो हैं । बहुरि ताके नीचेके निषेकका उत्कर्षण होतैं सैंतीसवां आदि सोलह निषेक अतिस्थापनरूप हो हैं तरेपनवां आदि छह निषेक निक्षेपरूप हो हैं । ऐसैं अतिस्थापन तितना ही अर निक्षेप क्रमतैं बधता जानना । अर उत्कृष्ट निक्षेप कहां होइ ? सो कहिए है—

कोई जीव पहिलैं उत्कृष्ट स्थिति बांधि पीछैं ताकी आबाधाविषैं एक आवली गमाइ ताके अनंतरि तिस समय प्रबद्धका जो अंतका निषेक था ताका अपकर्षण कीया तहां ताके द्रव्यकौं अंतके एक समय अधिक आवलीमात्र निषेकनिविषैं तौ न दीया अवशेष वर्तमान समयविषैं उदय योग्य निषेकतैं लगाय सर्व निषेकनिविषैं दीया ऐसैं पहिले अपकर्षण क्रिया करी । बहुरि ताके उपरिवर्ती अनंतर समयविषै पूर्वैं अपकर्षण क्रिया करतैं जो द्रव्य उदयावलीका प्रथम निषेकविषैं दीया था ताका उत्कर्षण कीया तब ताके द्रव्यकौं तिस उत्कर्षण करनेका समयविषैं बंध्या जो उत्कृष्ट स्थिति लीएं समयप्रबद्ध ताके आबाधाकौं उलंघि पाइए है जे प्रथमादि निषेक तिनिविषैं अंतके समय अधिक आवलीमात्र निषेक छोडि अन्य सर्व निषेकनिविषैं निक्षेपण करिए है । इहां एक समय अधिक आवलीकरि हीन जा आबाधाकाल तींहि प्रमाण तौ अतिस्थापन जानना । काहेतैं ? सो कहिए है—

जिस द्वितीयावलीका प्रथम निषेकका उत्कर्षण कीया सो तौ वर्तमान समयतैं लगाय एक एक समय अधिक आवलीकाल भएं उदय आवने योग्य है । अर जिनि निषेकनि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषैं निक्षेपण कीया ते वर्तमान समयतैं लगाय बंधी स्थितिका आबाधा काल भए उदय आवने योग्य हैं सो इनि दोऊनिके बीचि एक समय अधिक आवली करि हीन आबाधाकालमात्र अंतराल भया। द्वितीयावलिके प्रथम निषेकका द्रव्यकौं बीचिमैं इतने निषेक उल्लंघि ऊपरिके निषेकनिविषैं दीया सोई इहां अतिस्थापनका प्रमाण जानना। बहुरि इहां एक समय अधिक आवलीकरि युक्त जो आबाधाकाल तीहिं करि हीन जो उत्कृष्ट कर्मस्थिति तींहि प्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप जानना। काहेतैं ? सो कहिए है—

एक समय अधिक आवलीमात्र तौ अंतके निषेकनिविषैं न दीया अर आबाधाकाल विषैं निषेक रचना है ही नाहीं तातैं उत्कृष्ट स्थितिविषै इतना घटाया। इहां इतना जानना—अपकर्षण द्रव्यका नीचले निषेकनिविषैं निक्षेपण कीया ताका जो उत्कर्षण होइ तौ जेती बाकी शक्तिस्थिति होइ तहां पर्यंत ही उत्कर्षण होइ ऊपरि न होइ। शक्तिस्थिति कहा ? सो कहिए है—

विवक्षित समयप्रबद्धका जो अंतका निषेक ताकैं तौ सर्व ही स्थिति व्यक्तिस्थिति है। बहुरि ताकैं नीचे नीचेके निषेकानिके क्रमतैं एक समय घाटि दोय समय घाटि आदि स्थिति व्यक्तिस्थिति है। बहुरि प्रथमादि निषेकानिकैं सर्व ही स्थिति शक्तिस्थिति है। सो उत्कर्षण कीया द्रव्यकौं जेती शक्ति स्थिति होइ तहां पर्यंत ही दीजिए है। बहुरि पूर्वैं निक्षेप अतिस्थापन कह्या ताका अंक संदृष्टिकरि स्वरूप दिखाइए है—

जैसैं पूर्वैं समयप्रबद्ध हजार समयकी स्थिति लीएं बंध्या तामैं सोलह समय व्यतीत भएं अन्त निषेकका द्रव्यकौं अपकर्षण करि आबाधाके ऊपरि तिस स्थितिके जे निषेक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थे तिनविषैं सतरह निषेक अन्तके छोडि अन्य सर्व निषेकनिविषैं द्रव्य दीया। बहुरि ताके अनंतर समयविषैं जो तिस अंत निषेकका द्रव्य जो उत्कर्षण करनेका समयतैं लगाय सतरहां समयविषैं उदय आवने योग्य ऐसा द्वितीयावलीका प्रथम निषेक तिसविषैं दीया था ताका उत्कर्षण कीया तब तींहि समयविषैं हजार समयप्रबद्ध प्रमाण स्थितिबंध भया ताकी पचास समय प्रमाण तौ आबाधा है अर नवसै पचास निषेक हैं तिनि निषेकनिविषैं अंतके सतरह निषेक छोडि अन्य सर्व निषेकनिविषैं तिस उत्कर्षण कीया द्रव्यकौं निक्षेपण करिए है। ऐसैं इहां वर्तमान समयतैं लगाय जाका उत्कर्षण कीया सो तौ सतरहवां समयविषैं उदय आवने योग्य था अर जिस बंध्या समयप्रबद्धका प्रथम निषेकविषैं दीया सो इकावनवां समयविषैं उदय आवने योग्य भया सो इनिके बीचि अंतराल तेतीस समय भया सोई अतिस्थापन जानना। बहुरि हजार समयकी स्थितिविषैं पचास समय आबाधाके सतरह निषेक अंतके घटाएं अवशेष नवसै तेतीस निषेकनिविषैं द्रव्य दीया सो यहु उत्कृष्ट निक्षेप जानना॥

अहवावलिगदवराठिदिपढमणिसेगे वरस्स बंधस्स।
विदियाणिसेगप्पहुदिसु णिक्खित्ते जेट्ठणिक्खेओ ६५

अथवावलिगतवरस्थितिप्रथमनिषेके वरस्य बंधस्य।
द्वितीयनिषेकप्रभृतिषु निक्षिप्ते ज्येष्ठनिक्षेपः॥ ६५॥

सं० टी०— अथवा आचार्यांतरव्याख्यानमतभेदात् उत्कृष्टस्थितिबंधस्य बंधावलिमतिवाह्य प्रथमनिषेके उत्कृष्टे तात्कालिकबध्यमानस्योत्कृष्टस्थितिसमयप्रबद्धस्य द्वितीयनिषेकप्रभृतिषु अग्रे अतिस्थापनावलिमुक्त्वा निक्षिप्ते समया-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

धिकावल्याबाधारहिता उत्कृष्टकर्मस्थितिरुत्कृष्टनिक्षेपो भवति । १– १– / ४ । ४ । / उ नि । क – आ विवक्षितसमयप्रबद्धस्य चरमनिषेकस्य सर्वा स्थितिर्व्यक्तिस्थितिः तस्याधो निषेकाणां समयोनद्विसमयोनादिस्थितयो व्यक्तिस्थितयः । प्रथमादिनिषेकाणां सर्वा स्थितिः शक्तिस्थितिरित्यभिप्रायः ॥ ६५ ॥

स० चं०—अथवा केई आचार्यनिके मतकरि निक्षेपणविषैं औसैं निरूपण है। उत्कृष्ट स्थिति बंध बाध्या था ताकी बंधावलीकौं गमाइ पीछैं ताका प्रथम निषेकका उत्कर्षण करि ताके द्रव्यकौं तिस उत्कर्षण करनेके समयविषैं बंध्या जो उत्कृष्ट स्थिति लीएं समयप्रबद्ध ताका द्वितीय निषेकका आदि देकरि अंतविषैं अतिस्थापनावलीमात्र निषेक छोडि सर्व निषेकनिविषैं निक्षेपण कीया तहां एक समय अर एक आवली अर बंधी स्थितिका आबाधा काल इन करि हीन उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप हो है। इहां बंधी जो उत्कृष्ट स्थिति ताविषैं आबाधा कालविषैं तौ निषेक रचना नाही अर प्रथम निषेकविषैं द्रव्य दीया नाही अर अंतविषैं अतिस्थापनावलीविषैं द्रव्य न दीया तातैं पूर्वोक्त प्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप जानना। इहां पूर्वोक्त प्रकार अंक संदृष्टिकरि कथन जानना ॥ ६५ ॥

उक्कस्सट्ठिदिबंधे आबाहागा ससमयमावलियं ।
उदरियणाणिसेगेसुक्कट्टेसु अवरमावलियं ॥ ६६ ॥

उत्कृष्टस्थितिबंधे आबाधाग्रा ससमयामावलिकाम् ।
उदीर्यमाणनिषेकेषूत्कर्षेषु अवरमावलिकम् ॥ ६६ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०— उत्कृष्टस्थितिबंधे तत्कालबध्यमानसमयप्रबद्धे आबाधाग्रादाबाधांत्यसमयात् समयावलिकामवतीर्य तत्मामान्यसमयप्रबद्धनिषेकस्योत्कर्षणे आवलिमात्रं जघन्यमतिस्थापनं भवति। आबाधागतामावलिकामतिक्रम्य उपरि निषेकेषु अंतिमातिस्थापनावलिं मुक्त्वा सर्वत्र निक्षिपतीत्यर्थः ॥ ६६ ॥

स० चं०— उत्कृष्ट स्थिति लीएं जो उत्कर्षण करनेके समयविषैं बंध्या समय प्रबद्ध ताकी आबाधाकालका जो अग्र कहिए अंत समय तींहिसेती लगाय एक समय अधिक आवलीमात्र समय पहलैं उदय आवने योग्य ऐसा जो पूर्व सत्ताका निषेक ताका उत्कर्षण करतैं आवलीमात्र जघन्य अतिस्थापन हो है जातैं तिस द्रव्यकौं आबाधाविषैं जो एक आवली मात्र काल रह्या ताकौं अतिक्रम्य कहिए उलंघिकरि तिस बंध्या समयप्रबद्धकैं प्रथमादि निषेकनिविषैं अंतविषैं अतिस्थापनावली छोडि निक्षेपण करिए है। अंक संदृष्टिकरि जैसैं हजार समयकी स्थिति लीएं समय प्रबद्ध बंध्या ताका पचास समय आबाधा काल ताके अंत समयतैं लगाय सतरह समय पहलैं उदय आवने योग्य ऐसा वर्तमान समयतैं चौंतीसवां समयविषैं उदय आवने योग्य पूर्व सत्ताका निषेक ताका उत्कर्षण करि तत्काल बंध्या समयप्रबद्धका आबाधा काल व्यतीत भएं पीछैं प्रथमादि समयविषैं उदय आवने योग्य नवसै पचास निषेक तिनिविषैं अन्तके सतरह निषेक छोडि प्रथमादि नवसै तेतीस निषेकनिविषै निक्षेपण करिए है। इहां उत्कर्षण कीया निषेकनिके अर दीया प्रथम निषेकके बीचि अंतराल सोलह समयका भया सोई जघन्य अतिस्थापना जानना ॥ ६६॥

उदरिय तदो बिदीयावलिपढमुक्कट्टणे वरं हेट्ठा।
अइट्ठावणमाबाहा समयजुदावलियपरिहीणा॥ ६७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदीर्य ततो द्वितीयावलिप्रथमोत्कर्षणे वरमधस्तना ।
अतिस्थापना आबाधा समययुतावलिकपरिहीना ॥ ६७ ॥

सं० टी— ततस्ततः अधोऽवतीर्य अन्यस्य सत्त्वसमयप्रबद्धस्य द्वितीयावलिप्रथमनिषेकोत्कर्षणे अधःसमययुताव-लिपरिहीणा आबाधा उत्कृष्टातिस्थापनं भवति । समयाधिकावलिहीनामाबाधामतिक्रम्य उपरि निषेकेषु अग्रे समयाधिकावलिमुक्त्वा निक्षिपतीत्यर्थः ॥ ६७ ॥ एवं प्रसंगायातमपकर्षणोत्कर्षणविषयजघन्योत्कृष्टनिक्षेपातिस्थापनलक्षणप्रमाणविषयानाचार्यान्तराभिप्रायं च व्याख्याय अथ प्रकृतगुणश्रेणिनिर्जराविधानं प्रक्रमते—

स० चं०— तहांतैं उतरि तिसतैं पहिलैं उदय आवने योग्य ऐसा अन्य कोई सत्तारूप समयप्रबद्ध सम्बन्धी द्वितीयावलीका प्रथम निषेक जो वर्तमान समयतैं आवलीकाल भएं पीछैं उदय आवने योग्य है ताका उत्कर्षण होतैं नीचैं एक समय अधिक आवलीकरि हीन आबाधाकाल प्रमाण उत्कृष्ट अतिस्थापन हो है । समय अधिक आवलीकरि हीन जो आबाधा ताकौं उलंघि ऊपरिके जे निषेक तिनिविषैं अंतिके अतिस्थापनावलीमात्र निषेक छोडि अन्य निषेकनिविषैं तिस द्रव्यकौं दीजिए है । इहां पूर्वोक्त प्रकार अंक संदृष्टि आदिकरि कथन जानि लेना । ऐसैं प्रसंग पाइ इहां उत्कर्षण अपकर्षण अपेक्षा निक्षेप अतिस्थापनका विधान कह्या । सो जहां उत्कर्षणकरि वा अपकर्षण करि ऊपरिके वा नीचेके निषेकनिविषैं द्रव्य देना होइ तहां इस कथनके अनुसारि विधान जानना । जिस निषेकका द्रव्य ग्रह्या होइ तिस निषेकके द्रव्यकौं इहां निक्षेपरूप निषेक कहे तिनिविषैं तौ दीजिए है अर अतिस्थापन रूप निषेक कहे तिनिविषैं न दीजिए है । बहुरि बहुत निषेकनिका द्रव्य एकै काल ग्रहण करिए तौ तहां भी जुदे जुदे निषेकनिके द्रव्य देनेका वा न देनेका विधान इहां कह्या कथनके अनुसारि जानना । इहां जो व्याख्यान कीया तिसविषैं मंद बुद्धीनिके समझावनेके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थि अंकसंदृष्टि आदि कथन कीया है अर लब्धिसारकी संस्कृत टीकाविषैं न था तिसविषैं कहीं चूक होइ सो ज्ञानी जन सवारि शुद्ध करियो ॥ ६७ ॥ याप्रकार प्रसंग पाइ कथनकरि अब गुणश्रेणिका विधान कहिए है—

उदयाणमावलिम्हि य उभयाणं बाहरम्मि खिवणट्ठं।
लोयाणमसंखेज्जो कमसो उक्कट्टणो हारो ॥ ६८ ॥

उदीयमानानामावलौ चोभयानां बाह्ये क्षेपणार्थम्।
लोकानामसंख्येयः क्रमश उत्कर्षणो हारः ॥ ६८ ॥

सं० टी— गुणश्रेणिनिर्जरार्थमपकृष्टानामुदयवतामेव कर्मणां मिथ्यात्वादीनां उदयावल्यां निक्षेपणार्थमसंख्येयलोकमात्रो भागहारो भवति। चशब्दात्तद्बहुभागमात्रद्रव्यस्योदयावलिबाह्येऽपि निक्षेपो भवति। उदयवतामेवोदयावल्यां निक्षेप इति नियम उक्तः। उभयेषामुदयवतामनुदयवतां च उदयावलिबाह्ये क्षेपणार्थमपकर्षणनामा भागहारो भवति। क्रमश इति वचनात् पल्यासंख्यातभागमात्रश्च भागहारो भवतीति व्यज्यते। वक्ष्यमाणभागहारक्रमस्य तथैव दर्शनात् ॥ ६८ ॥

स० चं०— जिनि प्रकृतिनिका उदय पाइए है तिनहीके द्रव्यका उदयावलीविषैं निक्षेपण हो है। ताके अर्थि असंख्यात लोकका भागहार जानना। बहुरि जिनि प्रकृतिनिका उदय पाइए वा जिनिका उदय न पाइए तिनि दोऊनिके द्रव्यका उदयावलीतैं बाह्य गुणश्रेणिविषैं वा उपरितन स्थितिविषैं निक्षेपण हो है। ताके अर्थि अपकर्षण भागहार जानना। क्रमशः इस वचनकरि पल्यका असंख्यातवां भागका भी भाग प्रकट कीजिए है। सो इस कथनकौं आगैं व्यक्तकरि कहे हैं ॥ ६८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कट्टिदइगिभागे पल्लासंखेण भाजिदे तत्थ ।
बहुभागमिदं दव्वं उव्वरिल्लठिदीसु णिक्खिवदि ॥

उत्कर्षितैकभागे पल्यासंख्येन भाजिते तत्र ।
बहुभागमिदं द्रव्यमुपरितनास्थितिषु निक्षिपति ॥ ६९ ॥

सं० टी०— सर्वकर्मसत्त्वमिदं स ३ १२ आयुर्द्रव्यस्य स्तोकत्वेन किंचिदूनं कृत्वा शेषे सप्तभिर्भक्ते मोहनीयद्रव्यं भवति । तस्मिन्ननंतेन खंडिते एक भागः मिथ्यात्वषोडशकषायरूपसर्वघातिद्रव्यं भवति । तस्मिन् सप्तदशभिर्भक्ते मिथ्यात्वप्रकृतिद्रव्यमिदं स ३ १२ — अस्मिन् गुणश्रेणिनिर्जरार्थमपकर्षणभागहारेण भक्ते तदेकभागोऽयं स ३ १२—
७ । ख । १७   ७ । ख । १७ ओ

१—
तद्बहुभागः स्वस्थितिरचनायामेव तिष्ठति (१४) स ३ १२ — ओ / ७ । ख । १७ । ओ पुनरपकृष्टैकभागपल्यासंख्येयभागेन खंडिते तद्ब-

१—
हुभागोऽयं स । ३ १२—प इदं द्रव्यं गुणश्रेण्या उपरितनस्थितिषु निक्षिपति ॥ ६९ ॥
३
७ । ख । १७ । ओ प
३

स० चं०— अपकर्षण भागहारका भाग दीएं तहां एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं निक्षेपण करैं हैं इहां ऐसा जानना— कर्मके सत्तारूप स्थितिके निषेक तिनिविषैं वर्तमान समयतैं लगाय आवलीकालविषैं उदय आवने योग्य निषेक तिनिविषैं जो द्रव्य दीया ताकौं उदयावलीविषैं दीया कहिए । बहुरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताके ऊपरि गुणश्रेणि आयाम प्रमाण जे निषेक तिनिविषैं जो द्रव्य मिलाया सो गुणश्रेणि विषैं दीया कहिए। बहुरि ताके ऊपरि अंतके अतिस्थापनावलीमात्र निषेक छोडि सर्वनिषेकनिविषैं जो द्रव्य दीया सो उपरितन स्थितिविषैं दीया द्रव्य कहिए। अब इहां मिथ्यात्वके उदाहरणकरि विधान कहिए है—

सर्व कर्मका सत्त्व रूप द्रव्य है सो किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रमाण है तामैं आयुका द्रव्य घटावनेकौं किंचित ऊन करि अवशेषकौं सात मूल प्रकृतिनिका विभागके अर्थि सातका भाग दीएं मोहनीयका द्रव्य होइ। बहुरि ताकौं देशघाती सर्वघातीका भागके अर्थि अनंतका भाग दीएं तहां एक भागमात्र सर्वघातिनिका द्रव्य हो है। बहुरि ताके सोलह कषाय एक मिथ्यात्वके विभाग करनेकौं सतरहका भाग दीएं मिथ्यात्वका द्रव्य हो है सो याकौं पूर्वैं पीठ बंधविषैं शक्ति प्रमाण लीएं जो अपकर्षण नामा भागहार ताका भाग दीएं तहां एक भाग विना अवशेष बहुभाग थे ते तौ पूर्वैं सत्ताविषैं जैसैं अपने निषेक रचनारूप तिष्ठे थे तैसैं ही रहे। बहुरि जो एक भाग रह्या ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं निक्षेपण करैं हैं॥ ६९॥

सेसगभागे भजिदे असंखलोगेण तत्थ बहुभागं।
गुणसेढीए सिंचदि सेसेगं च उदयम्हि॥ ७०॥

शेषकभागे भाजितेऽसंख्यलोकेन तत्र बहुभागम्।
गुणश्रेण्यां सिंचति शेषैकं च उदये॥ ७०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०—पल्यासंख्यातैकभागोसं स । a । १२ — अस्मिन्नसंख्येयलोकेन भाजिते बहुभागद्रव्यमिदं—
७ । ख । १७ । ओ । प
a

१ ~
स । a । १२ — ≡ a गुणश्रेण्यां सिंचति गुणश्रेण्यायामे निक्षिपतीत्यर्थः । शेषैकभागं—
७ । ख । १७ । ओ । प ≡ a
a

स । a । १२ — उदये उदयावल्यां निक्षिपति । चशब्दः परस्परसमुच्चयार्थः ॥ ७० ॥
७ । ख । १७ । ओ । प ≡ a
a

स० चं०— अवशेष एक भाग रह्या ताकौं असंख्यात लोकका भाग देइ तहां बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषैं देना । अर अवशेष एक भाग उदयावलीविषैं देना ॥ ७० ॥

उदयावलिस्स दव्वं आवलिभाजिदे दु होदि मज्झधणं ।
रूऊणद्धाणद्धेणूणेण णिसेयहारेण ॥ ७१ ॥
मज्झिमधणमवहारिदे पचयं पचयं णिसेयहारेण ।
गुणिदे आदिणिसेयं विसेसहीणे कमं तत्तो ॥ ७२ ॥

उदयावलेर्द्रव्यमावलिभाजिते तु भवति मध्यधनम् ।
रूपोनाद्धवानार्धेनोनेन निषेकहारेण ॥ ७१ ॥
मध्यमधनमवहरिते प्रचयं प्रचयं निषेकहारेण ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणिते आदिनिषेकं विशेषहीनं क्रमं ततः ॥ ७२ ॥

सं० टी०— तदेकभागमात्रे उदयावलिसंबंधिद्रव्ये आवल्या भक्ते मध्यमधनं भवति स ३ १२ –

७ । ख । १७ । ओ प ≡ ३ ८
३

रूपोनाध्वार्द्धेन रूपोनगच्छार्धेन ऊनेन रहितेन निषेकहारेण द्विगुणगुणहान्या तस्मिन् मध्यमधने भाजिते प्रचयो विशेषो भवति । स ३ १२ –

७ । ख । १७ । ओ । प । ≡ ३ ८ । १६ – ८ (१ / २)
३

तस्मिन् प्रचये द्विगुणगुणहान्या गुणिते आदिनिषेको भवति स ३ । १२ – १६

७ । ख । १७ । ओ । प । ≡ ३ । ८ । १६ – ८ (१ / २)
३

ततो द्वितीयादिनिषेकेषु विशेषहीनक्रमेण निक्षिप्यते यावच्चरमनिषेकः रूपोनावलिमात्रविशेषहीनप्रथमनिषेकमात्रो भवति स ३ १२ – १६ – ८ (१) ॥ ७१-७२ ॥

७ । ख । १७ । ओ । प ≡ ३ । ८ । १६ – ८ (१ / २)
३

स० चं०— तहां उदयावलीविषैं दीया जो द्रव्य ताकौं आवलीके समय प्रमाणका भाग दीएं मध्यधन आवै । बहुरि तिस मध्य धनकौं एक घाटि जो आवली प्रमाण गच्छ ताका आधाकौं निषेकहार जो दोगुणहानि तामैं घटाइ अवशेषका भाग दीएं चयका प्रमाण आवै है । बहुरि तिस चयकौं दोगुणहानिकरि गुणैं आवलीके प्रथमनिषेकविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण हो है तातैं द्वितीयादि निषेकनिविषैं दीया द्रव्य क्रमतैं एक एक चयकरि घटता प्रमाण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लीएं जानना। तहां एक घाटि आवलीमात्र चय घटैं अंत निषेकनिविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण हो है। ऐसैं उदयावलीके निषेकनिविषैं दीया द्रव्यका विभाग है॥ ७१–७२॥

उक्कट्टिदम्हि देदि हु असंखसमयप्पबद्धमादिम्हि।
संखातीतगुणक्कममसंखहीणं विसेसहीणकमं ७३

अपकर्षिते ददाति हि असंख्यसमयप्रबद्धमादौ।
संख्यातीतगुणक्रममसंख्यहीनं विशेषहीनक्रमम्॥ ७३॥

सं० टी०– पुनर्गुणश्रेण्यर्थमपकृष्टद्रव्यस्य असंख्यातलोकभक्तबहुभागद्रव्यमिदं स ∂ १२ – ≡ १ ∩ ∂ / ७। ख। १७। ओ। प ≡ ∂ / ∂

अस्मिन्नंतर्मुहूर्तमात्रे गुणश्रेण्यायामे प्रतिसमयमसंख्येयगुणितनिक्षेपाभ्युपगमात्, संख्यातावलिकालसर्वगुणकारसंयोगरूपेण प्रमाणराशिना भक्ते तदेकभागमसंख्यातसमयप्रबद्धमात्रं गुणश्रेण्यादिनिषेके ददाति, भागहारभूतपल्यभागहारस्यासंख्येयस्य माहात्म्यादसंख्येसमयप्रबद्धमात्रं गुणश्रेणिप्रथमनिषेके निक्षिप्यत इत्यर्थः। ततो द्वितीयादिनिषेकेषु गुणश्रेण्यायामचरमनिषेकपर्यंतेषु प्रतिनिषेकमसंख्येयगुणितं द्रव्यं निक्षिप्यते। तत्रांकसंदृष्ट्या गुणश्रेणिनिषेकाश्चत्वारः। असंख्येयगुणकारसंदृष्टिश्चत्वारः। एवं च प्रथमे निषेके एको गुणकारः। द्वितीये चत्वारः। तृतीये षोडश। चतुर्थे चतुःषष्टिः। सर्वगुणकारसंयोगः पंचाशीतिः। तत उपरितनस्थितिप्रथमनिषेके निक्षिप्तद्रव्यमसंख्येयगुणहीनं, कुतः? उपरितनस्थितौ निक्षिप्तद्रव्यमिदं स ∂ १२ – प १ ∩ ∂ / ७। ख। १७। ओ प ∂ इदं नानागुणहानिषु निक्षिप्यत इति प्रथमगुणहानिप्रथमनिषेके 'दिवड्ढ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणहानिभाजिदे पढमा' इत्यभिप्रायेण द्व्यर्धगुणहान्या भक्त्वा द्विगुणगुणहान्या अध उपरि च गुणयित्वा निक्षिप्य-माणो तद्द्रव्यागमनात्। ततो द्वितीयादिनिषेकेषु विशेषहीनक्रमेण अग्रे अतिस्थापनावलिं मुक्त्वा निक्षिपेत्। एवं गुण-श्रेणिकरणप्रथमसमयापकृष्टत्रिद्रव्यनिक्षेपसंदृष्टिर्मूलग्रन्थे द्रष्टव्या ॥ ७३ ॥

स० चं०— गुणश्रेणिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य ताकौं प्रथम समयकी एक शलाका यातैं दूसरेकी असंख्यात गुणी यातैं तीसरेकी असंख्यातगुणी ऐसैं अंत समय पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं जे शलाका तिनिका जोड देइ ताकौं भाग दीएं जो प्रमाण आवै ताकौं अपनी अपनी शलाकाकरि गुणें गुणश्रेणि आयामका प्रथम निषेकविषैं दीया द्रव्य असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है। जातैं इहां भागहार पल्यके असंख्यातवां भागहीका है। बहुरि तातैं द्वितीयादि निषेकनिविषैं द्रव्य क्रमतैं असंख्यातगुणा अन्तसमय पर्यंत क्रमतैं जानना। ऐसैं गुणश्रेणि आयामके निषेकनिविषैं दीया द्रव्यका विभाग है। बहुरि उपरितन स्थितिविषैं दीया द्रव्यकौं 'दिवड्ढगुणहाणि भाजिदे पढमा' इस सूत्रकरि साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं ताका प्रथम निषेकविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण हो है। सो गुणश्रेणिका अंत निषेकविषैं दीया द्रव्यके असंख्यातवे भाग प्रमाण है। तातैं प्रथम गुणहानिका द्वितीयादि निषेकनिविषैं दीया द्रव्य चय घटता क्रम लीएं है। उपरि गुणहानि गुणहानि प्रति निषेकानिका आधा आधा द्रव्य जानना। ऐसैं गुणश्रेणि करनेका प्रथम समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्यकौं तीन जायगा दीया ताकी संदृष्टि आगें लिखेंगे तहां देखनी ॥ ७३ ॥

पडिसमयं उक्कट्टदि असंखगुणियक्कमेण सिंचदि य।
इदि गुणसेढीकरणं आउगवज्जाण कम्माणं॥ ७४ ॥ १०९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिसमयमपकर्षति असंख्यगुणितक्रमेण सिंचति च ।
इति गुणश्रेणीकरणमायुष्कवर्ज्यानां कर्मणाम् ॥ ७४ ॥

सं० टी०— एवं प्रतिसमयं च गुणश्रेणिकरणाद्द्वितीयादिसमयेष्वपि गुणश्रेणिकरणकालचरमसमयपर्यंतेषु पूर्वा-कृष्टद्रव्यादसंख्येयगुणं द्रव्यमपकर्षति । सिंचति च पूर्वोक्तविधानेन उदयावल्यां गुणश्रेण्यायामे उपरितनस्थितौ च तत्तद्द्रव्यं निक्षिपति । इत्यनेन प्रकारेणायुर्वर्जितानां सप्तप्रकृतीनां द्रव्यस्य मिथ्यात्वद्रव्यवदेव गुणश्रेणिकरणं त्रिद्रव्यनिक्षेपविधानं ज्ञातव्यं ॥ ७४ ॥ अथ गुणसंक्रमविधानार्थमाह—

स० चं—गुणश्रेणि करनेकौं द्वितीयादिक अंतपर्यंत समयनिविषैं समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्यकौं अपकर्षण करै है । बहुरि सिंचति कहिए पूर्वोक्त प्रकार उदयावली आदिविषैं ताका निक्षेपण करै है । ऐसैं मिथ्यात्ववत् आयु विना सात कर्मनिका गुणश्रेणि विधान समय समय प्रति हो है सो जानना ॥ ७४ ॥ आगैं गुण संक्रमणका स्वरूप कहिए है—

पडिसमयमसंखगुणं दव्वं संकमदि अप्पसत्थाणं ।
बंधुज्झियपयडीणं बंधंतसजादिपयडीसु ॥ ७५ ॥

प्रतिसमयमसंख्यगुणं द्रव्यं संक्रामति अप्रशस्तानां ।
बन्धोज्झितप्रकृतीनां बध्यमानसजातिप्रकृतिषु ॥ ७५ ॥

सं० टी०— गुणसेढी गुणसंकम इति पूर्वमुद्दिष्टो गुणसंक्रमः अपूर्वकरणप्रथमसमये नास्ति तथापि स्वयोग्यावसरे भविष्यतस्तस्य स्वरूपं पूर्वोद्देशानुसारेणास्मिन् प्रकरणे कथ्यते । तद्यथा—अप्रशस्तानां बंधोज्झितप्रकृतीनां द्रव्यं प्रतिसमयमसंख्येयगुणं बध्यमानसजातीयप्रकृतिषु संक्रामति । पूर्वस्वरूपं त्यक्त्वान्यस्वरूपं गृह्णातीत्यर्थः ॥ ७५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

स० चं–गुणसंक्रमण है सो अपूर्व करणके पहले समयविषैं न हो है। अपने योग्य कालविषैं हो है तथापि याका स्वरूप इहां कहिए है–

जिनका बंध न पाइए ऐसी जे अप्रशस्त प्रकृति तिनिका द्रव्य है सो समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीए जिनका बंध पाइए ऐसी जे स्वजाति प्रकृति तिनिविषैं संक्रमण करै है अपने स्वरूपकौं छोडि तद्रूप परिणमै है ॥ ७५ ॥

एवंविह संकमणं पढमकसायाण मिच्छमिस्साणं।
संजोजणखवणाए इदरोसिं उभयसेढिम्मि ॥ ७६ ॥

एवंविधं संक्रमणं प्रथमकषायाणां मिथ्यमिश्रयोः।
संयोजनक्षपणयोरितरेषामुभयश्रेणौ ॥ ७६ ॥

सं० टी०–एवंविधं प्रतिसमयमसंख्येयगुणं संक्रमणं प्रथमकषायाणामनंतानुबंधिनां विसंयोजने वर्तते। मिथ्यात्वमिश्रप्रकृत्योः क्षपणायां वर्तते। इतरासां प्रकृतीनामुभयश्रेण्यामुपशमकश्रेण्यां क्षपकश्रेण्यां च वर्तते। यथा असातद्रव्यस्य श्रेण्यां बंधरहितस्य बध्यमाने सातद्रव्ये संक्रमणं सातबंधकालोऽन्तर्मुहूर्तः २। ७ असातबंधकालस्तु ततस्संख्येयगुणोऽन्तर्मुहूर्त्तः २ ७। ४ मिश्रकालः, प्र फ इ इति त्रैराशिकेन लब्धं सातद्रव्यं वेदनीयद्रव्यस्य संख्यातैकभा-

२ ७ ५ स ३ १२– २ ७ १

गमात्रं लब्धं स ३। १२ –। १ / ७। ५ एतस्मात्संख्येयगुणमसातद्रव्यं स ३। १२ –। ४ / ७। ५ श्रेण्यां बंधरहितस्यासातद्रव्यस्य बध्यमाने सातद्रव्ये प्रतिसमयमसंख्येयगुणं संक्रमणं भवति ॥ ७६ ॥ अथ स्थितिकांडकघातस्वरूपं निरूपयति–

स० चं—ऐसा असंख्यात गुणा क्रम लीएं जो संक्रमण ताकौं गुण संक्रमण कहिए सो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंतानुबंधी कषायनिका तौ गुणसंक्रमण ताका विसंयोजनविषैं हो है। अर मिथ्यात्व मिश्र मोहनीका गुणसंक्रमण तिनका क्षपणाविषैं हो है। अर अन्य प्रकृतिका गुणसंक्रमण उपशमक वा क्षपक श्रेणीनिविषैं पाइए है जैसैं श्रेणीविषैं बंध रहित जो असाता ताका द्रव्य है सो बध्यमान जो स्वजातीय साता तीहिविषैं संक्रमण करै है सो कहिए है—

साता निरंतर बंधनेका काल अंतर्मुहूर्त अर असाताका तींहिस्यौं संख्यात गुणा सो दोऊनिकौं मिलाय ताका भाग वेदनीय कर्मके द्रव्यकौं देइ अपने अपने काल करि गुणें सातावेदनीयका द्रव्य वेदनीयका द्रव्यके असंख्यातवें भागमात्र आवै है अर असाताका तातैं संख्यातगुणा आवै है सो श्रेणीविषैं ऐसैं असाताका द्रव्य समय समय असंख्यातगुणा क्रम लीएं साता रूप होइ परिणमै है। तहां गुणसंक्रमण जानना। ऐसैं ही अन्य का यथासंभव जानना ॥ ७६ ॥ आगैं स्थितिकांडक घातका स्वरूप कहैं है—

पढमं अवरवरट्ठिदिखंडं पल्लस्स संखभागं तु।
सायरपुधत्तमेत्तं इदि संखसहस्सखंडाणि ॥ ७७ ॥

प्रथममवरवरास्थितिखंडं पल्यस्य संख्येयभागं तु।
सागरपृथक्त्वमात्रमिति संख्यसहस्रखंडानि ॥ ७७ ॥

सं० टी०— अपूर्वकरणप्रथमसमये क्रियमाणमवरं जघन्यं स्थितिखंडं पल्यसंख्यातैकभागमात्रं प/७ तु पुनर्वरमुत्कृष्टस्थितिखंडं सागरोपमपृथक्त्वमात्रं भवति सा ८ यद्यपि तत्काले आयुर्वर्जितानां सप्तानां कर्मणां स्थितिरन्तःकोटीकोटिर्भवति तथापि विशुद्धिपरिणामभेदवशात् कस्यचिज्जीवस्य कर्मस्थितिर्जघन्या अल्पांतःकोटीकोटिर्भवति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कस्यचित् पुनरुत्कृष्टा कर्मस्थितिरधिकांतःकोटीकोटिसागरोपमा भवति । तदनुसारेण स्थितिकांडकमपि जघन्यमुत्कृष्टं च संभवतीत्यर्थः । मध्ये कांडकविकल्पा असंख्येयाः प ७ ७ स्थितिकालश्च ततः संख्येयगुणाः प ७ ७ एतावत्सु कांडकविकल्पेषु प्र० प ७ ७ यद्येतावंतः स्थितिविकल्पाः संभवंति फ प ७ ७ तदा एकस्मिन् कांडकविकल्पे कियंतः स्थितिविकल्पाः संभवेयुः इ ७ इति त्रैराशिकलब्धाः एककांडकविकल्पे संख्येयाः स्थितिविकल्पाः लब्धं ७ अंकसंदृष्टौ कांडकविकल्पाः पंचप्रमाणं प्र ५ स्थितिविकल्पा पंचदश फलं फ १५ इच्छा कांडकविकल्प एकः इ १ लब्धाः स्थितिविकल्पास्त्रयः लब्ध ३ एवमपूर्वकरणप्रथमसमयं प्रारब्धस्थितिकांडकमादिं कृत्वा अंतर्मुहूर्ते अंतर्मुहूर्ते एकैकस्थितिकांडकोत्करणसमाप्तौ सत्यां अपूर्वकरणकाले संख्यातसहस्राणि स्थितिकांडकानि भवंति । अपूर्वकरणकालस्य २ ७ ७ संख्यातैकभागमात्रः स्थितिकांडकोत्कर्षणकालः, ततः एतावति काले प्र २ ७ यद्येकं स्थितिखंडमुत्कीर्यते फ १ तदा एतावति काले इ २ ७ ७ कियंति स्थितिखंडान्युत्कीर्यंते ? इति त्रैराशिकेन लब्धानि अपूर्वकरणकाले संख्यातसहस्राणि स्थितिखंडानि भवंति । लब्ध ७ ० ० ० ॥ ७७ ॥ अथापूर्वकरणप्रथमचरमसमयस्थितिखंडादीनां अल्पबहुत्वं व्याचष्टे—

स० चं—अपूर्व करणका पहिला समयविषैं कीया ऐसा स्थिति खंड कहिए स्थितिकांडकायाम सो जघन्य तौ पल्यका संख्यातवां भागमात्र अर उत्कृष्ट पृथक्त्व सागर प्रमाण है। पृथक्त्व नाम सात वा आठका जानना। एक कांडककरि एती स्थिति घटावै है। यद्यपि तहां सत्त्व स्थिति सामान्यतैं अंतःकोटाकोटी है तथापि कोईकैं तौ अंतःकोटाकोटी पल्यमात्र जघन्य स्थिति सत्व है कोईकैं अंतः कोटाकोटी सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व है तातैं स्थितिके अनुसारि कांडक भी जघन्य उत्कृष्ट है मध्यविषैं कांडकके भेद असंख्याते हैं। ति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निमैं संख्यात गुणे स्थितिके भेद हैं । तातैं संख्यात स्थिति भेदनिविषैं एक कांडक भेद पाइए है । अंक संदृष्टि करि कांडक भेद पांच स्थिति भेद पंद्रह तहां त्रैराशिक कीएं एक कांडक भेदविषैं तीन स्थिति भेद पावैं । ऐसैं एक एक स्थिति कांडकका घात अंतर्मुहूर्त काल करि होइ सो ऐसैं स्थिति खंड अपूर्व करणके कालविषैं संख्यात हजार हो हैं जातैं अपूर्व करणके कालके संख्यातवे भागमात्र स्थिति कांडकका काल है ॥ ७७ ॥

आउगवज्जाणं ठिदिघादो पढमादु चरिमठिदिसत्तो ।
ठिदिबंधो य अपुव्वो होदि हु संखेज्जगुणहीणो ॥७८॥

आयुष्कवर्ज्यानां स्थितिघातः प्रथमाच्चरमास्थितिसत्त्वं ।
स्थितिबंधश्चापूर्वो भवति हि संख्येयगुणहीनः ॥ ७८ ॥

सं० टी०— अपूर्वकरणस्य प्रथमसमयवर्तिभ्यः स्थितिखंडस्थितिसत्त्वस्थितिबंधेभ्यः चरमसमयवर्तिनस्ते संख्येयगुणहीना भवंति । संदृष्टिः प्रथमसमये कांडकं प स्थितिसत्वं अंतःकोटीकोटि । स्थितिबंधः अंतःकोटीकोटि । चरमसमये
                                                  १   ४
कांडकं प । स्थितिसत्त्वं अंतः कोटिकोटि । स्थितिबंधः अंतःकोटिकोटि । संख्यातसहस्रस्थितिखंडस्थितिबंधापसरण-
        १ १   ४   ४ । ४
वशात् स्थितिसत्त्वस्थितिबंधयोः संख्यातगुणहीनत्वं तदनुसारेण स्थितिकांडकस्यापि संख्यातगुणहीनत्वं युक्तमेव ॥ ७८ ॥ अथानुभागकांडकस्वरूपोत्करणकालविषयायामभेदानाह—

स० चं०—अपूर्व करणके पहिले समय जे स्थिति खंड अर स्थिति सत्व अर स्थिति बंध पाइए हैं तिनतैं ताके अंत समयविषैं ते संख्यात गुणे घाटि हैं । इहां संख्यात हजार स्थिति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांडक घाति करि स्थिति सत्त्वका अर स्थितिके अनुसारि अर स्थिति कांडक है तातैं स्थिति कांडकका असंख्यात हजार स्थिति बंधापसरण करि स्थितिका अनुसार स्थिति बंधका संख्यात गुणा घाटि होना जानना ॥ ७८ ॥ आगैं अनुभाग कांडक घातकौं कहिए है—

एक्केक्कट्ठिदिखंडयणिवडणठिदिबंधओसरणकाले।
संखेज्जसहस्साणि य णिवडंति रसस्स खंडाणि ॥ ७९॥

एकैकस्थितिकांडकनिपतनस्थितिबन्धापसरणकाले।
संख्येयसहस्राणि च निपतन्ति रसस्य खंडानि ॥ ७९ ॥

सं० टी०— एकैकस्थितिखंडनिपतनकालः, एकैकस्थितिबंधापसरणकालश्च समानावंतर्मुहूर्तमात्रौ । तस्मिन्नंतर्मुहूर्ते संख्यातसहस्राण्यनुभागस्य खंडानि निपतंति । एकस्थितिखंडोत्करणस्थितिबंधापसरणकालस्य २ १ १ संख्यातैकभागमात्रोऽनुभागखंडोत्करणकाल इत्यर्थः २ १ अनेनानुभागकांडकोत्करणकालप्रमाणमुक्तं ॥ ७९ ॥

स० चं—जाकरि एकवार स्थिति सत्त्व घटाइए ऐसा स्थितिकांडकोत्करण काल अर जाकरि एकवार स्थिति बंध घटाइए सो स्थिति बंधापसरण काल ए दोऊ समान हैं अंतर्मुहूर्तमात्र हैं। बहुरि तिस एक विषैं जाकरि अनुभाग सत्व घटाइए ऐसा अनुभाग खंडोत्करण काल संख्यात हजार हो हैं जातैं तिस कालतैं अनुभाग खंडोत्करण यहु काल संख्यातवे भागमात्र है ॥ ७९ ॥

असुहाणं पयडीणं अणंतभागा रसस्स खंडाणि।
सुहपयडीणं णियमा णत्थित्ति रसस्स खंडाणि ॥८०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशुभानां प्रकृतीनामनन्तभागा रसस्य खण्डानि ।
शुभप्रकृतीनां नियमान्नास्तीति रसस्य खण्डानि ॥ ८० ॥

सं० टी०— अशुभानामप्रशस्तानामसातादिप्रकृतीनां रसस्यानुभागस्य अनंतबहुभागमात्राणि खंडानि भवंति । शुभप्रकृतीनामनुभागस्य खंडानि नियमान्न संति इति हेतोरशुभप्रकृतीनामेव विशुद्धया अनुभागखंडसंभवः । अपूर्वक-

३ १
रणप्रथमसमयानुभागस्यानंतबहुभागमात्रं प्रथमानुभागखंडं व ९ ना ख पुनरवशिष्टानंतैकभागस्यानंतबहुभागमात्रं
ख
३ १
द्वितीयखंडं व ९ ना ख इत्यादि क्रमेणांतर्मुहूर्तेंऽतर्मुहूर्ते २ १ एकैकमनुभागखंडं निपतति। प्रतिसमयमेकैकफाल्यपनयनं
ख ख
भवति, अनेन अनुभागकांडकायामशुभाशुभप्रकृतिविषयविभागश्च प्रदर्शितः ॥ ८० ॥

स० चं०–अप्रशस्त जे असातादि प्रकृति तिनका अनुभाग कांडकायाम अनंत बहुभाग मात्र है। अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं जो पाइए अनुभाग सत्व ताकौं अनंतका भाग दीएं तहां एक कांडककरि बहुभाग घटावै । एक भाग अवशेष राखै है। यहु प्रथम खंड भया याकौं अनंतका भाग दीएं दूसरे कांडक करि बहुभाग घटाइ एक भाग अवशेष राखै हैं। ऐसैं एक एक अंतर्मुहूर्त करि एक एक अनुभाग कांडक घात हो है तहां एक अनुभाग कांडकोत्करण कालविषैं समय समय प्रति एक एक फालिका घटावना हो है। बहुरि साता वेदनीय आदि प्रशस्त प्रकृतिनिका अनुभाग कांडक घात नियमतैं नाही है॥ ८० ॥

रसगदपदेसगुणहाणिट्ठाणगफड्डयाणि थोवाणि ।
अइत्थावणाणिक्खेवे रसखंडेणंतगुणियकमा ॥ ८१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रसगतप्रदेशगुणहानिस्थानकस्पर्धकानि स्तोकानि ।
अतिस्थापननिक्षेपे रसखण्डेऽनन्तगुणितक्रमाणि ॥ ८१ ॥

सं० टी०— रसगतान्यनुभागसंबंधीनि प्रदेशगुणहानिस्थानकस्पर्धकानि कर्मपरमाणुसंबंध्येकगुणहानिस्थिति-स्पर्धकानि स्तोकानि ९ ततः अतिस्थापनास्पर्धकान्यनंतगुणानि ९ ख । ततः निक्षेपस्पर्धकान्यनंतगुणानि ९ ख ख । ततः अनुभागकांडकस्पर्धकान्यनंतगुणानि ९ ख ख ख । अनेनानुभागकांडकायामाल्पबहुत्वं प्रदर्शितं ॥ ८१ ॥

स० चं–अनुभागकौं प्राप्त ऐसे कर्म परमाणु संबंधी एक गुणहानिविषैं स्पर्धकनिका प्रमाण सो स्तोक है । तातैं अनंत गुणे अतिस्थापना रूप स्पर्धक हैं । तातैं अनंतगुणे नि-क्षेप स्पर्धक हैं । तातैं अनंतगुणा अनुभाग कांडकायाम हैं । इहां ऐसा जानना–

कर्मनिके अनुभाग विषैं स्पर्धक रचना है तहां प्रथमादि स्पर्धक स्तोक अनुभाग युक्त हैं । ऊपरिके स्पर्धक बहुत अनुभाग युक्त हैं । तहां तिनि सर्व स्पर्धकनिकौं अनंत का भाग दीएं बहुभाग मात्र जे ऊपरिके स्पर्धक तिनके परमाणूनिकौं एक भाग मात्र जे नीचले स्पर्धक तिनिविषैं केते इक ऊपरिके स्पर्धक छोडि अवशेष नीचले स्पर्धकनिरूप परणमावे हैं । तहां केते इक परमाणू पहले समय परिणमावैं है केते इक दूसरे समय परिण-मावे है, ऐसैं अंतर्मुहूर्त कालकरि सर्व परमाणू परिणमाइ तिनि ऊपरिके स्पर्धकनिका अभाव करे है । इहां समय समय प्रति जो द्रव्य ग्रह्या ताका तौ नाम फालि है ऐसैं अंतर्मुहूर्त करि जो कार्य कीया ताका नाम कांडक है । तिस कांडक करि जिनि स्पर्धकनिका अभाव कीया सो कांडकायाम है । बहुरि तिनिका द्रव्यकौं जे कांडकघात भएं पीछैं अवशेष स्पर्धक रहैं तिनिविषैं तिन प्रथमादि स्पर्धकनिविषैं मिलाया ते तौ निक्षेप रूप हैं अर जिनि ऊपरिके स्पर्धकनिविषैं न मिलाया ते अतिस्थापन रूप हैं ॥ ८१ ॥ ११६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढमापुव्वरसादो चरिमे समये पसत्थइदराणं ।
रससत्तमणंतगुणं अणंतगुणहीणयं होदि ॥ ८२ ॥

प्रथमापूर्वरसात् चरमे समये प्रशस्तेतरेषाम् ।
रससत्त्वमनन्तगुणमनन्तगुणहीनकं भवति ॥ ८२ ॥

सं० टी०— अपूर्वकरणप्रथमसमये प्रशस्तप्रकृतीनामनुभागसत्त्वात् चरमसमय अनुभागसत्त्वमनंतगुणं भवति । प्रतिसमयमनंतगुणविशुद्धया प्रशस्तानुभागस्यानंतगुणसत्त्वसम्भवात् । इतरासामप्रशस्तप्रकृतीनां प्रथमसमयानुभागसत्त्वात् चरमसमये तदनुभागसत्त्वमनन्तगुणहीनं भवति, अनुभागकांडकाघातमाहात्म्येन तत्संभवात् । एवमपूर्वकरणपरिणामैः क्रियमाणं कार्यं व्याख्यातं ॥ ८२ ॥ अथानिवृत्तिकरणपरिणामस्वरूपं तत्कार्यं च प्राह—

स० चं– अपूर्वकरणके प्रथम समय सम्बन्धी प्रशस्त अप्रशस्त प्रकृतिनिका अनुभाग सत्व जो है तातैं ताके अंत समयविषैं प्रशस्तानिका अनंतगुणा बधता अर अप्रशस्तनिका अनंत गुणा घटता अनुक्रमतैं अनुभाग सत्त्व हो है । इहां समय समय प्रति अनंतगुणी विशुद्धता होनेतैं प्रशस्त प्रकृतिनिका अनंतगुणा अर अनुभाग कांडक घातका माहात्म्य-करि अप्रशस्त प्रकृतिनिका अनंतवे भाग अनुभाग अंत समयविषैं संभवै है ॥ ८२ ॥ आगैं अनिवृत्तिकरणके कार्य कहै हैं–

बिदियं व तदियकरणं पडिसमयं एक्क एक्क परिणामो
अण्णं ठिदिरसखंडे अण्णं ठिदिबंधमाणुवई ॥८३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीयमिव तृतीयकरणं प्रतिसमयमेक एकः परिणामः।
अन्ये स्थितिरसखंडे अन्यत् स्थितिबंधमाप्नोति ॥ ८३ ॥

सं० टी०— तृतीयकरणः अनिवृत्तिकरणः स च द्वितीयकरण इव व्याख्यातव्यः यथा अपूर्वकरणे स्थितिखंडादयः कार्यविशेषाः प्रोक्तास्तथात्राप्यनिवृत्तिकरणे ते प्रवक्तव्या इत्यर्थः। अयं तु विशेषः—

अस्मिन्ननिवृत्तिकरणकाले प्रतिसमयं नानाजीवपरिणामाः जघन्यमध्यमोत्कृष्टविकल्परहिता एव भवन्ति। यथापूर्वकरणचरमसमये नानाजीवपरिणामाः षट्स्थानवृद्धिगताः परस्परतो जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदभिन्नाः संति न तथा अनिवृत्तिकरणप्रथमसमये परस्परतो भिद्यंते तत्र तेषां सर्वेषामपि समानविशुद्धिकत्वात्। अत एव न विद्यते निवृत्तिः एकस्मिन् समये परस्परतो भेद एषामित्यनिवृत्तयः करणविशुद्धिपरिणामा इति अनिवृत्तिकरणसंज्ञा अन्वर्था। द्वितीयादिसमयेषु विशुद्धेरनंतगुणत्वेऽपि समये समये नानाजीवपरिणामाः सदृशा एव तत्करणप्रथमसमये अन्यदेव स्थितिखंडमन्यदेवानुभागखंडमन्यदेव स्थितिबंधनं च प्रारभते। अपूर्वकरणकालचरमस्थितिखंडानुभागखंडस्थितिबंधानां तच्चरमसमये समाप्तत्वात् ॥ ८३ ॥ अथानिवृत्तिकरणकाले कार्यविशेषं प्ररूपयति—

स० चं— दूसरा अपूर्व करणविषैं कहे स्थिति खंडादि कार्य विशेष ते तिस अनिवृत्ति करणविषैं भी जानने। विशेष इतना— इहां समान समयवर्ती नाना जीवके एकसा परिणाम हैं तातैं नाहीं है निवृत्ति कहिए परस्पर परिणामनिविषैं भेद जिनकैं ते अनिवृत्तिकरण हैं तातैं समय समय प्रति एक एक परिणाम ही है। बहुरि इहां और ही प्रमाण लीएं स्थिति खंड अनुभाग खंड स्थितिबंधका प्रारम्भ हो है जातैं अपूर्वकरण सम्बन्धी जे स्थिति खंडादिक तिनका ताके अन्त समयविषैं ही समाप्तपना भया ॥ ८३ ॥

संखेज्जादिमे सेसे दंसणमोहस्स अंतरं कुणई।
अण्णं ठिदिरसखंडं अण्णं ठिदिबंधणं तत्थ ॥ ८४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्येये शेषे दर्शनमोहस्यांतरं करोति ।
अन्यत् स्थितिरसखंडमन्यत् स्थितिबंधनं तत्र ॥ ८४ ॥

सं० टी०— अनिवृत्तिकरणकालमन्तर्मुहूर्तमात्रं २ ७ संख्येयरूपैर्भक्त्वा तद्बहुभागान् २ ७ ४/५ पूर्वोक्तस्थितिखंडादिविधानेन नीत्वा शेषतदेकभागे २ ७ १/५ दर्शनमोहस्यांतरविवक्षितस्थित्यायामनिषेकाभावं करोत्यनिवृत्ति करण विशुद्धिपरिणामो जीवः । तस्मिन्नंतरकरणकालप्रथमसमये अन्यदेव स्थितिखंडमन्यदेव रसखंडमन्यदेव स्थितिबन्धनं च प्रारभते । तद्बहुभागचरमसमये प्राक्तनस्थितिखंडादीनां परिसमाप्तत्वात् ॥ ८४ ॥ अथांतरकरणकालपरिमाणं प्ररूपयति—

स० चं०— ऐसैं स्थिति खंडादिकरि अनिवृत्तिकरण कालका संख्यात भागनिविषैं बहुभाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहैं दर्शन मोहका अंतर करै है। विवक्षित केई निषेकनिका सर्व द्रव्यकौं अन्य निषेकनिविषैं निक्षेपणकरि तिनि निषेकनिका जो अभाव करना सो अन्तर करण कहिए। तहां ताके कालका प्रथम समयविषैं और ही स्थिति खंड अनुभागबंध स्थिति बंधका प्रारंभ हो है ॥ ८४ ॥

एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरस्स णिप्पत्ती ।
अंतोमुहुत्तमेत्ते अंतरकरणस्स अद्धाणं ॥ ८५ ॥

एकस्थितिखंडोत्करणकाले अंतरस्य निष्पत्तिः ।
अंतर्मुहूर्तमात्रमंतरकरणस्याध्वा ॥ ८५ ॥

सं०टी० एकस्थितिखंडोत्करणकाले अंतरकरणस्य समाप्तिर्भवति स चांतरकरणस्याध्वा कालः अंतर्मुहूर्तमात्र एव २ ७ ।३/४ ।४

अथांतरायामप्रमाणं तन्निषेकनिक्षेपस्थानं चाख्याति—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— एक स्थिति खंडोत्करण कालविषैं अन्तरकी निष्पत्ति हो है। एक स्थिति कांडकोत्करणका जितना काल तितने कालकरि अंतर करिए है याकौं अंतरकरण काल कहिए है सो यहु अंतर्मुहूर्तमात्र है ॥ ८५ ॥

गुणसेढीए सीसं तत्तो संखगुण उवरिमाठिदिं च ।
हेट्ठुवरिम्हि य आबाहुज्झिय बंधम्हि संथुहदि ॥८६॥

गुणश्रेण्याः शीर्षं ततः संख्यगुणं उपरितनास्थितिं च ।
अधस्तनोपरि चाबाधोज्झित्वा बंधे संपातयाति ॥ ८६ ॥

सं० टी०—गुणश्रेण्यायामकथनकाले अपूर्वानिवृत्तिकरणकालद्वयादधिकं यदनिवृत्तिकरणकालसंख्यातैकभागमात्रमित्युक्तं, तदस्मिन् प्रकरणे गुणश्रेणिशीर्षमित्युच्यते । २ ७ (४) । १ ततः संख्येयगुणा उपरितनस्थितिषु निषेकाः २ ७ ७ (४ १)

उभयोप्यंतरायामः २ ७ ७ (४) सोऽप्यंतर्मुहूर्तमात्र एव शीर्षद्वयायोगलितावशेषगुणश्रेण्यायामः अनिवृत्तिकरणकालसंख्यातैकभागमात्रः । सोऽपि शीर्षात्संख्येयगुणः २ ७ ३ (४) तत्रांतरायामे स्थितान्निषेकानुत्कीर्य प्रतिसमयमसंख्येयगुणाः फालीर्गृहीत्वा तत्कालबध्यमाने मिथ्यात्वप्रकृतिसमयप्रबद्धे अंतरायामस्याबाधावर्जिताधःस्थितिषु उपरितनस्थितिषु च निक्षिपति अंतरायामसदृशस्थितिषु न निक्षिपतीत्यर्थः । अनादिमिथ्यादृष्टिर्मिथ्यात्वप्रकृतेरेवांतरं करोति । सादिमिथ्यादृष्टिस्तस्या मिश्रसम्यक्त्वप्रकृत्योरन्तरं करोति तयोरन्तरोत्कीर्णद्रव्यमपि तत्कालबध्यमानमिथ्यात्वप्रकृतेरध उपरि च निक्षिपति । अनिवृत्तिकरणसंख्यातैकभागमात्रस्य शेषस्य संख्यातैकभागमात्रोंतरकरणकालः २ ७ ३ (४ । ४) उपरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तद्बहुभागमात्रो प्रथमस्थितिः २ १ । ३ । ३ तदुपर्यंतर्मुहूर्तमात्रोंऽतरायामः २ १ १ ॥ ८६ ॥ अथांतरकरणस-
४ । ४ । ४ ४ । ४
माप्त्यनंतरसमयकर्तव्यं प्रतिपादयति—

स० चं—गुणश्रेणि आयामविषैं अपूर्व अनिवृत्ति करणतैं जो अधिक प्रमाण अनिवृत्ति करणका संख्यातवां भागमात्र कह्या था ताका नाम इहां गुणश्रेणि शीर्षहै। सो गुणश्रेणि शीर्षके सर्व निषेक अर यातैं संख्यातगुणा गुणश्रेणि शीर्षके उपारिवर्ती औसे उपरितन स्थितिके सर्व निषेक इनि दोऊनिकौं मिलाएं अंतरायाम हो है। एते निषेकानिका अभाव करिए है सो भी अंतर्मुहूर्तमात्र है। इहां शीर्षके नीचैं अनिवृत्तिकरणका अवशेष कालमात्र गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम अनिवृत्ति करण कालके संख्यातवे भाग प्रमाण है सो भी शीर्षतैं संख्यात गुणा जानना। तहां अंतरायामविषैं तिष्ठते जे निषेक तिनिके द्रव्यके समय समय अनंत गुणा क्रम लीएं जे फालि तिनिकौं ग्रहण करि तिस समय बंधता जो मिथ्यात्व कर्म ताकी स्थितिका आबाधाकाल छोडि अंतरायाम समान निषेकानिके नीचै वा ऊपरि जे निषेक तिनिविषैं निक्षेपण करै है। अंतरायाम समान काल सम्बन्धी जे निषेक तिनविषैं नाहीं निक्षेपण करै है। तहां अनादि मिथ्यादृष्टि जीव तौ मिथ्यात्व ही का अर सादि मिथ्यादृष्टी तीनों दर्शन मोहका अंतर करै है। बहुरि अंतर करण करनेके कालका प्रथम समयतैं लगाय जो अनिवृत्तिकरण कालका संख्यातवां भागमात्र काल अवशेष रह्या ताकौं संख्यातका भाग दीएं तहां एक भागमात्र तौ अंतरकरण काल है अर ताके ऊपरि अवशेष बहुभागमात्र प्रथम स्थितिका काल है। बहुरि ताके ऊपरि जिनि निषेकानिका अभाव कीया सो अंतर्मुहूर्तमात्र अंतरायाम है॥ ८६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतरकडपढमादो पडिसमयमसंखगुणिदमुवसमदि ।
गुणसंकमेण दंसणमोहणियं जाव पढमठिदी ॥८७॥

अन्तरकृतप्रथमतः प्रतिसमयमसंख्यगुणितमुपशाम्याति ।
गुणसंक्रमेण दर्शनमोहनीयं यावत् प्रथमस्थितिः ॥ ८७ ॥

सं० टी०— एवमेकस्थितिकांडकोत्करणकालेनांतरकरणं निष्ठाप्यांतरकृतो भवति । अन्तरं कृतं यस्मिन् येन वासौ अंतरकृतः, अंतरकरणकालचरमसमयस्तस्यानंतरसमयः प्रथमस्थितिप्रथमसमयः तत आरभ्य यावत्प्रथमस्थितिचरमसमयस्तावत्प्रतिसमयमसंख्येयगुणितक्रमेण द्वितीयस्थितिस्थिततद्दर्शनमोहनीयद्रव्यं गुणसंक्रमभागहारेण भक्त्वा लब्धफालीरुपशमयति । यद्यप्यधःप्रवृत्तकरणप्रथमसमयादारभ्यायं दर्शनमोहस्योपशमक एव तथापि तत्प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशानामस्मिन्नवसरे निरवशेषतः उपशमक इत्युच्यते ॥ ८७ ॥ अथ दर्शनमोहोपशमनक्रियायां संभवद्विशेषनिर्णयार्थमाह-

स० चं०—ऐसैं एक स्थिति कांडकोत्करण काल समान कालकरि कीया है अंतर जानैं ऐसा अन्तर कृत भया तिस कालके अनंतरवर्ती जो समय सो प्रथम स्थितिका प्रथम समय है तातैं लगाय ताहीका अंत समय पर्यंत समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं जे अंतरायामके उपरिवर्ती निषेक तिनरूप जो द्वितीय स्थिति तींहिविषैं तिष्ठता जो दर्शन मोह ताके द्रव्यकौं पीठविषैं उक्तप्रमाण जो गुणसंक्रमण भागहार ताका भाग दीएं जो प्रमाण आया तितने द्रव्यका समूह रूप जे फालि तिनकौं उपशमावै है । उदय आदि होनेकौं अयोग्य करना सो उपशम करना जानना । यद्यपि अधःकरण ही तैं यहु जीव दर्शन मोहका उपशमक ही है तथापि तिस दर्शन मोहके प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेशनिका निरवशेषपनैं इहां उपशमक कहिए है ॥ ८७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पढमट्ठिदियावलिपडिआवलिसेसेसु णत्थि आगाला।
पडिआगाला मिच्छत्तस्स य गुणसेढिकरणंपि॥ ८८॥

प्रथमस्थितावावलिप्रत्यावलिशेषेषु नास्ति आगालाः।
प्रत्यागाला मिथ्यात्वस्य च गुणश्रेणिकरणमपि॥ ८८॥

सं० टी०—प्रथमस्थितौ आवलिप्रत्यावलिद्वयं उदयावलिद्वितीयावलिद्वयं समयाधिक यावदवशिष्यते तावदागालप्रत्यागालौ वर्तेते। गुणश्रेणिकरणमपि वर्तते। आवलिद्वये समयाधिके अवशिष्टे आगालप्रत्यागालगुणश्रेणि—करणानि न संति। दर्शनमोहादन्यकर्मणां गुणश्रेणिरस्त्येव केवलं समयाधिकद्वितीयावलिनिषेकानसंख्येयलोकेन भक्त्वा तदेकभागस्योदयावल्यां समयोनावलिद्वित्रिभागमतिस्थाप्याधस्तनत्रिभागे समयाधिके निक्षेपरूपप्रतिसमयोदीरणा वर्तते। द्वितीयस्थितिद्रव्यस्यापकर्षणवशात्प्रथमस्थितावागमनमागालः। प्रथमस्थितिद्रव्यस्योत्कर्षणवशात् द्वितीयस्थितौ गमनं प्रत्यागाल इत्युच्यते। एकस्यामेव प्रत्यावल्यामवशिष्टायां प्रतिसमयोदीरणापि नास्ति। तन्निषेकाणां प्रतिसमयमधोगलनस्यैव संभवात्। उपशमविधानं तु प्रथमस्थितिचरमसमयपर्यंतमस्त्येव।

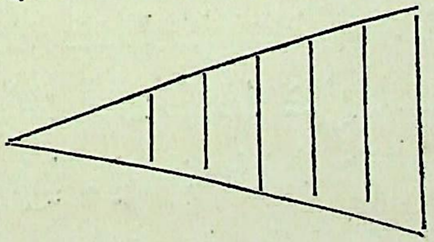

प्रथम-

फालिद्रव्यं स ३ १२ – द्वितीयफालिद्रव्यं स ३ । १२ – ३ एवं प्रतिसमयमसंख्येयफालिद्रव्यं चरमफालिद्रव्यं—
७ । ख १७ गु, ७ । ख १७ । गु

स ३ १२ – । ३ । २ १ । ३ । ३ चरमफालिद्रव्यस्य असंख्येयगु
७ । ख । १७ । गु । ४ । ४ । ४

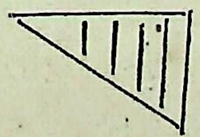

णाकाराः प्रथमस्थिति-

समया रूपोना यावंतस्तावंतो भवंतीत्यर्थः॥ ८८॥ अथ प्रथमोपशमसम्यक्त्वाद्यग्रहणकालं तत्कार्यविशेषं च प्रतिरूपयति—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं–प्रथम स्थितिविषैं आवली प्रत्यावली कहिए उदयावली अर द्वितीयावली एक समय अधिक अवशेष रहै तहां आगाल प्रत्यागाल अर मिथ्यात्वकी गुणश्रेणी न हो हैं। दर्शन मोह विना और कर्मनिकी गुणश्रेणी होय ही है। तहां मिथ्यात्वकी उदयावलीविषैं निक्षेपण करने रूप केवल उदीरणा ही पाइए है सो कहिए है—

समय अधिक द्वितीयावलीके निषेकनिके द्रव्यकौं असंख्यात लोकका भाग दीएं जो प्रमाण आवै तितने द्रव्यकौं उदयावलीके निषेकनिविषैं अंतके समय घाटि आवली के दोय तीसरा भागमात्र निषेक अतिस्थापन करि नीचेके एक समय अधिक आवलीके त्रिभागमात्र निषेकनिविषैं निक्षेपण करै है। ऐसैं समय समय प्रति उदीरणा पाइए है। द्वितीय स्थितिके निषेकनिके द्रव्यकौं अपकर्षण करि प्रथम स्थितिके निषेकनिविषैं प्राप्त करना ताका नाम आगाल है। अर प्रथम स्थितिके निषेकनिके द्रव्यकौं उत्कर्षण करि द्वितीय स्थितिके निषेकनिविषैं प्राप्त करना ताका नाम प्रत्यागाल है। बहुरि तिस प्रथम स्थिति विषैं एक प्रत्यावली ही अवशेष रहैं उदीरणा भी न हो है। तिस प्रत्यावलीके निषेकनिका समय समय प्रति अधोगलन ही है। एक एक समय व्यतीत होतैं एक एक समय निर्जरै है। बहुरि उपशम विधान प्रथम स्थितिका अंत पर्यंत है। तहां दर्शन मोहके द्रव्यकौं गुण संक्रम भागहारका भाग दीएं प्रथम स्थितिका प्रथम समयविषैं उपशम करने योग्य जो प्रथम फालि ताका द्रव्य हो है तातैं असंख्यात गुणा द्वितीय समय सम्बन्धी द्वितीय फालिका द्रव्य हो है ऐसैं क्रमतैं एक घाटि प्रथम स्थितिका समय प्रमाणवार असंख्यातका गुणकार भएं अंत फालिका द्रव्य हो है॥ ८८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतरपढमं पत्ते उपसमणामो हु तत्थ मिच्छत्तं ।
ठिदिरसखंडेण विणा उवइट्ठादूण कुणादि तिधा ॥ ८९

अंतरप्रथमं प्राप्ते उपशमनाम हि तत्र मिथ्यात्वम् ।
स्थितिरसखंडेन विना उपस्थापयित्वा करोति त्रिधा ॥ ८९ ॥

सं० टी०— अंतरायामप्रथमसमये प्राप्ते सति दर्शनमोहस्यानंतानुबंधिचतुष्टयस्यापि प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशानां निरवशेषोपशमनादौपशमिकं तत्त्वार्थश्रद्धानरूपसम्यग्दर्शनं प्रतिपद्यमानो जीवः प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टिनामा भवति । स तत्रांतरायामप्रथमसमये द्वितीयस्थितौ स्थितं मिथ्यात्वप्रकृतिद्रव्यं स्थित्यनुभागकांडकघातं विना अपवर्त्य गुणसंक्रमभागहारेण भक्त्वा त्रिधा करोति मिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वप्रकृतिरूपेण परिणमयतीत्यर्थः ॥ ८९ ॥

स० चं०— ऐसैं अनिवृत्तिकरण काल समाप्त भएं ताके अनंतरि अंतरायामका प्रथम समयकौं प्राप्त होतैं दर्शन मोह अर अनंतानुबंधी चतुष्क इनिके प्रकृति प्रदेश स्थिति अनुभागनिका समस्तपनैं उदय होने अयोग्य रूप उपशम होनेतैं औपशमिक तत्त्वार्थ श्रद्धानरूप सम्यग्दर्शनकौं पाइ जीव औपशमिक सम्यग्दृष्टी हो है । तहां प्रथम समयविषैं द्वितीय स्थितिविषैं तिष्ठता मिथ्यात्व रूप द्रव्यकौं स्थिति कांडक अनुभाग कांडकका घात विना गुणसंक्रमणका भाग देइ तीन प्रकार परिणमावै है ॥ ८९ ॥

मिच्छत्तमिस्ससम्मसरूवेण य तत्तिधा य दव्वादो ।
सत्तीदो य असंखाणंतेण य होंति भजियकमा ॥ ९०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यात्वमिश्रसम्यस्वरूपेण च तत्त्रिधा च द्रव्यतः।
शक्तितश्च असंख्यानंतेन च भवंति भजितक्रमाः ॥ ९० ॥

सं० टी— गुणसंक्रमभागहारेण तन्मिथ्यात्वद्रव्यं अपवर्त्य विभज्य मिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वप्रकृतिरूपेण परिणममानं द्रव्यतोऽसंख्येयभागक्रमेण शक्तितोऽनुभागतोऽनंतभागक्रमेण च परिणमति । तथाहि—

मिथ्यात्वद्रव्यमिदं स ७ १२ — गुणसंक्रमभागहारेण भक्त्वा बहुभागमात्रद्रव्यं मिथ्यात्वप्रकृतिरूपेण तिष्ठति—
७ । ख । १७

स ७ १२ — गु तदेकभागमात्रद्रव्यमिदं स । ७ । १२ — ७ अत्राधिकरूपं पृथक्स्थाप्यावशिष्टं स । ७ । १२— । ७
७ । ख । १७ । गु ७ । ख । १७ । गु
७ । ख । १७ । गु ७
७

इदं सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतिरूपेण परिणतं पृथक्स्थापितैकरूपमिदं स । ७ । १२ — । १ सम्यक्त्वप्रकृतिरूपेण परिणतं ।
७ । ख । १७ । गु

अतः करणादेताः प्रकृतयो द्रव्यतोऽसंख्येयभाजितक्रमा इति सूत्रे सूचितं । अनुभागतः मिथ्यात्वद्रव्यानुभागः— व । ९ । ना (२ / ख) संख्यातानुभागकांडकावशिष्टत्वात् । अस्यानंतैकभागमात्रो मिश्रप्रकृत्यनुभागः व । ९ । ना (२ / ख ख) असंख्यातैकभागमात्रः सम्यक्त्वप्रकृत्यनुभागः व ९ । ना (२ / ख ख ख) इदमनुभागाल्पबहुत्वमपि सूत्रसूचितमेव ॥ ९० ॥

स०चं०— मिथ्यात्व मिश्र सम्यक्त्वमोहनीरूपकरि तीन प्रकार हो है सो क्रमतैं द्रव्य अपेक्षा असंख्यातवां भागमात्र अनुभाग अपेक्षा अनंतवां भागमात्र जानने । सोई कहिए है—मिथ्यात्वका परमाणू रूप जो द्रव्य ताकौं गुण संक्रम भागहारका भाग देइ एक अधिक असंख्यातकरि गुणिए । इतना द्रव्य विना समस्त द्रव्य मिथ्यात्वरूप ही रह्या । अर गुण संक्रम भागहारकरि भाजित मिथ्यात्व द्रव्यकौं असंख्यात करि गुणिए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतना द्रव्य मिश्रमोह रूप परिणम्या । अर गुण संक्रम भागहारकरि भाजित मिथ्यात्व द्रव्यकौं एक करि गुणिए इतना द्रव्य सम्यक्त्व मोह रूप परिणम्या तातैं द्रव्य अपेक्षा असंख्यातवां भागका क्रम आया । बहुरि अनुभाग अपेक्षा संख्यात अनुभाग कांडकनिके घातकरि जो मिथ्यात्वका अनुभाग पूर्व अनुभागके अनंतवां भागमात्र अवशेष रह्या ताकै अनंतवे भाग मिश्रमोहका अनुभाग है । बहुरि याके अनंतवे भागि सम्यक्त्व मोहका अनुभाग है ऐसैं अनुभाग अपेक्षा अनंतवां भागका क्रम आया ॥ ९० ॥

पढमादो गुणसंकमचरिमोत्ति य सम्ममिस्ससम्मिस्से
अहिगदिणाऽसंखगुणो विज्झादो संकमो तत्तो ॥

प्रथमात् गुणसंक्रमचरम इति च सम्यग्मिश्रसंमिश्रे ।
अहिगतिनासंख्यगुणो विध्यातः संक्रमः ततः ॥ ९१ ॥

सं० टी०— अनन्तरप्रथमसमयादारभ्य द्वितीयादिषु समयेषु अन्तर्मुहूर्तमात्रगुणसंक्रमकालचरमसमयपर्यंतेषु प्रतिसमयमहिगत्या असंख्येयगुणं मिथ्यात्वद्रव्यं सम्यक्त्वमिश्रप्रकृतिरूपेण परिणमति । तद्यथा—

प्रथमसमये सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यं स्तोकं स a । १२–१ / ७ । ख । १७ । गु ततोऽसंख्येयगुणंमिश्रप्रकृतिद्रव्यं स a । १२ – a / ७ । ख । १७ । गु

ततो द्वितीयसमये सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यमसंख्येयगुणं स a । १२ – a a / ७ । ख । १७ । गु प्रथमसमयगृहीतद्रव्यात् द्वितीयसमयगृहीतद्रव्यस्य द्विरसंख्येयगुणत्वात् । ततो मिश्रप्रकृतिद्रव्यमसंख्येयगुणं स a । १२ – a a a / ७ । ख । १७ । गु ततस्तृतीयसमये सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यमसंख्येयगुणं स a । १२ a a a a / ७ । ख । १७ । गु द्वितीयसमयगृहीतद्रव्यात्तृतीयसमयगृहीतद्रव्यस्य द्विरसंख्येयगुण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वात् । ततो मिश्रप्रकृतिद्रव्यमसंख्येयगुणं स ३ । १२ − ३ ३ ३ ३ ३ एवं प्रतिसमयं द्विरसंख्येयगुणितक्रमेण अहि-
७ । ख । १७ । गु
गत्वा गत्वा गुणसंक्रमकालचरमसमये सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यस्य व्येकं पदं चयाभ्यस्तं तत्साद्यंतधनमिति सूत्रेणानीता असंख्येयगुणकारशलाकाः द्विरूपोनसंख्यातावलिसमयमात्रा द्विगुणद्विरूपाधिका भवंति स ३ १२ − ३ । २ ७ − २ २
७ । ख । १७ । गु
मिश्रप्रकृतिद्रव्यस्यासंख्येयगुणकारः तत्सूत्रानीता रूपोनसंख्यातावलिसमयमात्रा द्विगुणरूपाधिका भवंति—
स ३ । १२ − ३ । २ ७ । २ ततः परं गुणसंक्रमकालचरमसमयात्परं विध्यातसंक्रमभागहारेण मिथ्यात्वद्रव्यमपवर्त्या-
७ । ख । १७ । गु
न्तर्मुहूर्तपर्यंतं सम्यक्त्वमिश्रप्रकृत्योः संक्रमयति तदा विध्यातविशुद्धिकार्यत्वात् विध्यातसंक्रम इत्युच्यते । विध्यातशब्दस्य मन्दार्थत्वेन मन्दविशुद्धिकार्यस्य अंगुलासंख्यातभागमात्रविध्यातसंक्रमभागहारलब्धद्रव्याल्पत्वस्य सुघटत्वात् ॥ ९१ ॥
अथानुभागकांडकोत्करणकालप्रभृतीनां पंचविंशतेः पदानामल्पबहुत्वप्ररूपणां प्रक्रमते—

स० चं०— अनिवृत्ति करणके अनंतरि गुण संक्रम कालका प्रथम समयतैं लगाय अंत समय पर्यंत समय समय सर्पका चालवत् असंख्यात गुणा क्रम लीएं मिथ्यात्वका द्रव्य है सो सम्यक्त्व मिश्रप्रकृतिरूप परिणमै है सोई कहिए है—

पहिले समय सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य स्तोक है । तातैं असंख्यात गुणा मिश्रप्रकृतिका द्रव्य है । तातैं असंख्यातगुणा दूसरे समय सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य है । तातैं असंख्यात गुणा मिश्रका द्रव्य है । तातैं असंख्यात गुणा तीसरे समय सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य है । तातैं असंख्यातगुणा मिश्रका द्रव्य है ऐसैं सर्पकी चालवत् सम्यक्त्व मोहनीतैं मिश्रमोहनीरूप मिश्रमोहनीतैं सम्यक्त्वमोहनीरूप परिणया द्रव्य असंख्यात गुणा क्रमतैं अन्तसमय पर्यंत जानना । तहां अंतसमयविषैं गुण संक्रमकाल संख्यात आवलीमात्र है तातैं दोय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घटाइ ताकौं दूणाकरि तामैं दोय मिलाइए इतनीबार सम्यक्त्वमोहनीकैं असंख्यातका गुणकार हो है। असंख्यात आवलीमैं एक घटाइ ताकौं दूणा करि तामैं एक मिलाइए इतनीबार मिश्रमोहनीकैं असंख्यातका गुणकार हो है। बहुरि गुण संक्रम कालका अंतसमय पर्यंत मिथ्यात्व विना अन्य कर्मनिकी गुणश्रेणि स्थिति कांडक घात अनुभाग कांडक घात पाइए है। ताके अनंतरि तिस गुण संक्रम भए पीछैं अवशेष रह्या मिथ्यात्व द्रव्य ताकौं विध्यात संक्रम नामा भागहारका भाग दीएं जो प्रमाण आवै तितने द्रव्यकौं सम्यक्त्व मोहनी मिश्रमोहनीरूप परिणमावै है। विध्यात शब्दका अर्थ मंद है सो इहां विशुद्धता मंद भई है तातैं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग प्रमाण जो विध्यात संक्रम ताका भाग दीएं स्तोक द्रव्य आया तिसहीकौं तिनिरूप परिणमावै है ॥ ९१ ॥

बिदियकरणादिमादो गुणसंकमपूरणस्स कालोत्ति।
वोच्छं रसखंडुक्कीरणकालादीणमप्प बहु ॥ ९२ ॥

द्वितीयकरणादिमात् गुणसंक्रमपूरणस्य काल इति।
वक्ष्ये रसखंडोत्करणकालादीनामल्पं बहु ॥ ९२ ॥

सं० टी०— अपूर्वकरणप्रथमसमयादारभ्य गुणसंक्रमकालपूरणपर्यंतं क्रियमाणानुभागकांडकोत्करणकालादीनामल्पबहुत्वं वक्ष्यामीति प्रतिज्ञावाक्यमिदं ॥ ९२ ॥

स० चं—अपूर्व करणका प्रथम समयतैं लगाय गुणसंक्रमण कालका पूर्णपना पर्यंत संभवते अनुभाग कांडकोत्करण कालादिक तिनिका अल्प बहुत्व कहस्यों ॥ ९२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतिमरसखंडुक्कीरणकालादो दु पढमओ अहिओ ।
तत्ता संखेज्जगुणो चरिमट्ठिदिखंडहदिकालो ॥

अंतिमरसखंडोत्करणकालतस्तु प्रथमो अधिकः ।
ततः संख्यातगुणः चरमस्थितिखंडहतिकालः ॥ ९३ ॥

सं० टी०— दर्शनमोहस्य प्रथमस्थितिसमाप्तिसमकालभावि (संपूर्णं भवतीत्यर्थः) शेषकर्मणां गुणसंक्रमचरमसमयसमकालभावि यदनुभागकांडकं तदंत्यानुभागकांडकमित्युच्यते । तस्योत्करणकालोऽन्तर्मुहूर्तमात्रो वक्ष्यमाणपदेभ्यः सर्वेभ्यः स्तोकः २ ७ । १ पदं १ तस्मादपूर्वकरणप्रथमसमयादारब्धानुभागकांडकोत्करणकालो विशेषाधिकः २ ७ ५/४ विशेषप्रमाणं पूर्वकालसंख्यातैकभागमात्रं २ ७ १/४ पदे २ तस्मात् प्रथमानुभागकांडकोत्करणकालात् चरमस्थितिखंडोत्करणकालः चरमस्थितिबंधकालश्च द्वौ समौ संख्येय ४ गुणौ २ ७ । ५/४ । ४ एकस्थितिकांडकोत्करणकाले संख्यातसहस्रानुभागखंडसंभवात्, पदानि ४ ॥ ९३ ॥

स० चं०-दर्शन मोहका तौ प्रथम स्थितिका अंतविषैं संभवता अन्य कर्मनिका गुण संक्रम कालका अंत समयविषैं संभवता ऐसा जो अनुभाग कांडक ताके घात करनेका जो अंतर्मुहूर्तमात्र काल सो अंतका अनुभाग खंडोत्करण काल है सो आगें जे कहिए है तिनितैं स्तोक है ।१। यातैं याहीका संख्यातवां भागमात्र विशेषकरि अधिक अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं जाका आरंभ भया ऐसा अनुभाग कांडकोत्करणका काल है ।२। यातैं संख्यात गुणा अंतका स्थितिकांडकोत्करण काल अर स्थिति बंधापसरण काल ए दोऊ परस्पर समान हैं ४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तत्तो पढमो अहिओ पूरणगुणसेढिसीसपढमठिदी ।
संखेण य गुणियकमा उवसमगद्धा विसेसहिया ॥९४॥

ततः प्रथमः अधिकः पूरणगुणश्रेणिशीर्षप्रथमस्थितिः ।
संख्येन च गुणितक्रमा उपशमकाद्धा विशेषाधिकाः ॥ ९४ ॥

सं० टी०— ततश्चरमस्थितिकांडकोत्करणकालादंतरकरणकालस्तदात्वस्थितिबंधकालश्चान्योन्यं समानौ विशेषाधिकौ २ ७। ५ । ४ । ५ विशेषः पूर्वकालस्य संख्येयभागः । पदानि ६ । ततः प्रथमः अपूर्वकरणप्रथमसमयारब्ध-
४ । ४

स्थितिखंडोत्करणकालस्तदात्वस्थितिबंधकालश्च द्वौ समौ विशेषाधिकौ २ ७। ५ । ४ । ५ । ५ विशेषः पूर्वस्य संख्या-
४ ४ ४

तैकभागः । पदानि ८ । ततो गुणपूरणकालः संख्येयगुणः २ ७। ५ । ४ । ५ । ५ । ४ पदानि ९ । ततो गुणश्रेणि-
४ । ४ । ४

शीर्षः संख्येयगुणः २ ७। ५ । ४ । ५ । ५ । ४ । ४ पदानि १० । ततः प्रथमस्थित्यायामः संख्येयगुणः—
४ । ४ । ४

२ ७। ५ । ४ । ५ । ५ । ४ । ४ । ४ पदानि ११ । ततो दर्शनमोहोपशमनकालो विशेषाधिकः—
४ । ४ । ४

२ ७। ५ । ४ । ५ । ५ । ४ । ४ । ४ । ४ विशेषः समयोनद्व्यावलिमात्रः पदानि १२ ॥ ९४ ॥
४ । ४ । ४

स० चं०—तातैं ताहीका संख्यातवां भागमात्र विशेषकरि अधिक अंतर करण काल अर तहां अंतर करण करतैं ही संभवता स्थिति बंधापसरण काल ए दोऊ परस्पर समान हैं । ६ । तातैं ताहीका संख्यातवां भागमात्र विशेषकरि आधिक अपूर्व करणके पहिले समय जिनिका प्रारंभ भया ऐसे स्थिति कांडकोत्करण काल अर स्थिति बंधापसरण काल ए दोऊ परस्पर

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समान हैं ॥ ८ ॥ तातैं संख्यात गुणा गुण संक्रम पूरण करनेका काल है ॥ ९ ॥ तातैं संख्यातगुणा गुणश्रेणि शीर्ष है ॥ १० ॥ तातैं संख्यात गुणा प्रथम स्थितिका आयाम है ॥ ११ ॥ तातैं समय घाटि दोय आवलीमात्र विशेषकरि अधिक दर्शन मोहके उपशमावनेका काल है १२

अणियट्टीसंखगुणो णियट्टिगुणसेढियायदं सिद्धं ।
उवसंतद्धा अंतर अवरवरावाह संखगुणियकमा ॥९५॥

अनिवृत्तिसंख्यगुणं निवृत्तिगुणश्रेण्यायतं सिद्धम् ।
उपशांताद्धा अंतरमवरवराबाधा संख्यगुणितक्रमा ॥ ९५ ॥

सं०टी०—ततो दर्शनमोहोपशमनकालादनिर्वृत्तिकरणकालः संख्येयगुणः २ ७।५।४।५।५।४।४।४।४।४ ४।४।४ अयमपवर्त्य गुणित एतावान् २ ७ पदानि १३ । ततः अपूर्वकरणकालः संख्येयगुणः २ ७ ७ पदानि १४ । ततो गुणश्रेण्यायामो विशेषाधिकः २ ७ ७ । ४/५ विशेषोऽनिर्वृत्तिकरणकालस्तत्संख्येयभागश्च । निवृत्तिगुणश्रेण्यायतं सिद्धमित्यनेन करणत्रयावतारे 'उवरीदो गुणिदकमा कमेण संखेज्जरूवेणे' त्यनिर्वृत्तिकरणकालादपूर्वकरणकालस्य संख्येयगुणत्वं सिद्धं । गुणसेढीदिहत्तमपुव्वदुगादो दु साहियं होदीत्यत्र गुणश्रेण्यायामस्यापूर्वकरणकालाद्विशेषाधिकत्वं सिद्धमित्यनुवादः कृतः । पदानि १५ । ततः उपशमसम्यग्दर्शनकालः संख्येयगुणः २ ७ ७ । ४ । ४/५ पदानि १६ । ततोंतरायामः संख्येयगुणः २ ७ ७ ४ । ४ । ४/५ पदानि १७ । तस्मान्मिथ्यात्वस्य जघन्याबाधा संख्येयगुणा— २ ७ ७ । ४ । ४/५ । ४ । ४ सा प्रथमस्थितिचरमसमये बध्यमानजघन्यस्थितेर्भवति । शेषकर्मणां गुणसंक्रमकालचरमसमये पदानि १८ । ततो मिथ्यात्वस्योत्कृष्टाबाधा संख्येयगुणा २ ७ ७ । ४ । ४/५ । ४ । ४ । ४ सा चापूर्वकरणप्रथमसमयस्थितिबन्धस्य ग्राह्या पदानि १९ ॥ ९५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं–तातैं संख्यात गुणा अनिवृत्ति करणका काल है ॥ १३ ॥ तातैं संख्यात गुणा अपूर्व करणका काल है ॥ १४ ॥ तातैं अनिवृत्ति करणका काल अर याका संख्यातवां भागमात्र विशेष करि अधिक गुणश्रेणि आयाम है ॥ १५ ॥ तातैं संख्यात गुणा औपशमिक सम्यक्त्वका काल है ॥ १६ ॥ तातैं संख्यात गुणा अंतरायाम है ॥ १७ ॥ तातैं संख्यात गुणा जघन्य आबाधा है सो मिथ्यात्वकी तौ पृथक्त्वका काल है सो प्रथम स्थितिका अंत समय विषैं अर अन्य कर्मनिकी गुण संक्रमण कालका अंतसमयविषैं जो स्थिति बंधै ताकी आबाधा जाननी ॥ १८ ॥ तातैं संख्यातगुणी उत्कृष्ट आबाधा है सो अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता जो स्थितिबंध ताकी आबाधा ग्रहण करनी ॥ १९ ॥ ९५ ॥

पढमापुव्वजहण्णट्ठिदिखंडमसंखसंगुणं तस्स ।
अवरवरट्ठिदिबंधा तट्ठिदिसत्ता य संखगुणियकमा ॥

प्रथमापूर्वजघन्यस्थितिखंडमसंख्यसंगुणं तस्य ।
अवरवरस्थितिबंधस्तत्स्थितिसत्त्वं च संख्यगुणितक्रमं ॥ ९६ ॥

सं० टी०— प्रथमस्थितौ एकस्थितिखंडोत्करणकाले अंतर्मुहूर्ते अपूर्णे अवशिष्टे यच्चरमस्थितिखंडं पल्यसंख्यातैकभागमात्रमारब्धं तज्जघन्यस्थितिखंडमुच्यते । तच्च तस्मादुत्कृष्टाबाधाकालतोऽसंख्येयगुणं प/१ पदानि २० । ततः अपूर्वकरणप्रथमसमयोत्कृष्टस्थितिखंडं संख्येयगुणं सागरोपमपृथक्त्वमात्रं सा ७/८ पदानि २१ । ततः प्रथमस्थितिचरमसमये

---

१ " वरमवरट्ठिदिसत्ता एदे य संखगुणियकमा । " इत्यपि पाठः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यात्वस्य जघन्यस्थितिबन्धः संख्येयगुणोऽतःकोटीकोटिसागरोपमप्रमितः सा अं को २ पदानि २२। तस्मादपूर्व-
४४४
करणप्रथमसमयोत्कृष्टस्थितिबन्धः संख्येयगुणः सा अं को २ पदानि २३। ततः प्रथमस्थितिचरमसमये मिथ्यात्वस्य
४।४
जघन्यस्थितिसत्त्वं संख्येयगुणं सा अं को २ पदानि २४। ततोऽपूर्वकरणप्रथमसमये उत्कृष्टस्थितिसत्त्वं संख्येयगुणं-
४
सा अं को २ पदानि २५। इति दर्शनमोहोपशमकस्याल्पबहुत्वपदानि पंचविंशतिः कथितानि ॥ ९६ ॥ अथ प्रथमो-
पशमसम्यक्त्वग्रहणसमयस्थितिसत्त्वमाह—

स० चं—तातैं असंख्यात गुणा जघन्य स्थिति कांडकायाम है सो प्रथम स्थिति विषैं एक स्थिति कांडकोत्करण काल अवशेष रहैं जो अंतका स्थिति खंड पल्यका असंख्यातवां भाग प्रमाण प्रारंभ कीया सो ग्रहणा ॥ २० ॥ तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता उत्कृष्ट स्थिति कांडकायाम पृथक्त्व सागर प्रमाण है ॥ २१ ॥ तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरणका प्रथम समय विषैं प्रथम स्थितिका अंत समयविषैं संभवता मिथ्यात्वका जघन्य स्थिति विषैं बंध है ॥ २२ ॥ तातैं संख्यात गुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता उत्कृष्ट स्थिति बंध है ॥ २३ ॥ तातैं संख्यात गुणा प्रथम स्थितिका अंत समयविषैं संभवता मिथ्यत्वका जघन्य स्थिति सत्त्व है । २४ । तातैं संख्यात गुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व है । २५ । इहां जघन्य स्थिति बंधादि च्यारि पदनिका प्रमाण सामान्यपनैं अंतः कोटाकोटी सागर प्रमाण है। ऐसैं पचीस जायगा अल्प बहुत्व कह्या ॥ ९६ ॥

अंतो कोडाकोडी जाहे संखेज्जसायरसहस्से । १३६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णूणा कम्माण ठिदी ताहे उवशमगुणं गहइ ॥ ९७ ॥

अंतःकोटीकोटिर्यदा संख्येयसागरसहस्रेण ।
न्यूना कर्मणां स्थितिः तदा उपशमगुणं गृह्णाति ॥ ९७ ॥

सं० टी०— जाहे--यस्मिन् काले प्रथमोपशमसम्यक्त्वं गृण्हाति । ताहे--तस्मिन समये कर्मणां स्थितिसत्त्वं संख्येयसागरोपमसहस्रोनांतःकोटीकोटिमात्रं भवति । सा अं को २/४ अथवा यस्मिन् काले अन्तरायामप्रथमसमये कर्मणां स्थितिसत्त्वं संख्येयसागरोपमसहस्रोनांतःकोटीकोटिमात्रं भवति तस्मिन् काले प्रथमोपशमसम्यक्त्वगुणं गृण्हाति ॥ ९७ ॥
अथ देशसकलसंयमाभ्यां सह प्रथमोपशमसम्यक्त्वं गृह्णतः कर्मस्थितिसत्त्वविशेषमाह—

स० चं०— जिस अन्तरायामका प्रथम समयविषैं संख्यात हजार सागर करि हीन अंतः कोटाकोटी मात्र स्थिति सत्त्व होइ तिस समयविषैं उपशम सम्यक्त्व गुणकौं ग्रहण करै है ॥ ९७ ॥

तट्ठाणे ठिदिसत्तो आदिमसम्मेण देससयलजमं ।
पडिवज्जमाणगस्स वि संखेज्जगुणेण हीणकमो ॥ ९८ ॥

तत्स्थाने स्थितिसत्त्वं आदिमसम्येन देशसकलयमं ।
प्रतिपद्यमानस्य संख्येयगुणेन हीनक्रमं ॥ ९८ ॥

सं० टी०--तट्ठाणे अंतरायामप्रथमसमये प्रथमोपशमसम्यक्त्वेन सह देशसंयमं प्रतिपद्यमानस्य पूर्वस्मादवस्थितिसत्त्वात् संख्येयगुणहीनं स्थितिसत्त्वं भवति सा अं को २ सम्यक्त्वकारणविशुद्धेः सकाशाद्देशसंयमकारणविशुद्धिविशेषस्यानंतगुणत्वेन त-
४ । ४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्कार्यस्य स्थितिखंडायामस्य संख्येयगुणतोपलंभात् खंडितावशिष्टस्थितिसत्त्वस्य संख्येयगुणहीनत्वं युक्तमिति पुनस्ते नैव प्रथमोपशमसम्यक्त्वेन सह सकलसंयमं प्रतिपद्यमानस्य कर्मणां स्थितिसत्त्वं पूर्वस्मात्संख्येयगुणहीनं भवति— सा श्रं को २ देशसंयमहेतुविशुद्धेः सकाशात् सकलसंयमहेतुविशुद्धेरनंतगुणत्वेन तत्कार्यस्य स्थितिखंडस्य संख्येयगुण-
४।४।४
त्वात् खंडितावशिष्टस्थितिसत्त्वं ततः संख्येयगुणहीनं सुघटमेवेति ॥ ९८ ॥ अथ दर्शनमोहोपशमनकाले संभवद्विशेषमाह—

स० चं०— तिस ही अन्तरायामका प्रथम समय रूप स्थानविषैं जो देश संयम सहित प्रथमोपशम सम्यक्त्वकौं ग्रहै तौ ताकैं स्थिति सत्व पूर्वोक्ततैं संख्यात गुणा घाटि हो है अर जो सकल संयम सहित प्रथम सम्यक्त्वकौं ग्रहै प्राप्त होइ ताकैं स्थिति सत्व तिसतैं भी संख्यात गुणा घाटि हो है। जातैं अनंत गुणी विशुद्धताके विशेषतैं स्थितिखंडायाम संख्यातगुणा हो है। तिनि करि घटाई हुई अवशेष स्थिति संख्यातवे भाग संभवै है ॥ ९८ ॥

उवसामगो य सव्वो णिव्वाघादो तहा णिरासाणो।
उवसंते भजियव्वो णिरासणो चेव खीणम्हि ॥ ९९ ॥

उपशामकश्च सर्वः निर्व्याघातस्तथा निरासानः।
उपशांते भजितव्यो निरासनश्चैव क्षीणे ॥ ९९ ॥

सं० टी०— सर्वः सोपसर्गो निरुपसर्गो वा दर्शनमोहोपशमको निर्व्याघातः विच्छेदमरणलक्षणव्याघातरहित एव तथा निरासादश्च। तदुपशमनकाले अनंतानुबंध्युदयाभावेन सासादनगुणप्राप्तेरभावात्। उपशांते दर्शनमोहे अंतरायामे वर्तमानः प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टिः सासादनगुणप्राप्त्या भक्तव्यो विकल्पनीयः। कस्यचित्प्रथमोपशमसम्यक्त्वकाले एकसमयादिषडावलिकांतावशेषे सासादनगुणत्वसंभवात्। उपशमसम्यक्त्वकाले क्षीणे समाप्ते सति निरासादन एव तदा नियमेन मिथ्यात्वाद्यन्यतमोदयसंभवात् ॥ ९९ ॥ अथ सासादनस्वरूपं कालप्रमाणं चाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— सर्व ही दर्शन मोहका उपशम करनेवाला जीव निर्व्याघात कहिए विच्छेद वा मरण करि रहित है अर निरासादक कहिए सासादनकौं प्राप्त न हो है। बहुरि उपशम भए पीछें उपशम सम्यक्त्वी होइ तब भजनीय है— कोई जीव सासादनकौं प्राप्त न हो है कोई जीव सासादन हो है। बहुरि क्षीणे कहिए उपशम सम्यक्त्वका काल समाप्त भएं पीछें सासादन होइ। तहां नियमतैं दर्शन मोहकी तीनि प्रकृतिनिविषैं एकका उदय होय ॥ ९९ ॥

उवसमसम्मत्तद्धा छावलिमेत्ता दु समयमेत्तोति।
अवसिद्धे आसाणो अणअण्णदरुदयदो होदि ॥ १००

उपशमसम्यक्त्वाद्धा षडावलिमात्रस्तु समयमात्र इति।
अवसिद्धे आसादनः अनान्यतमोदयतो भवति ॥ १०० ॥

सं० टी०—उपशमसम्यक्त्वस्य काले एकसमयादिषडावलिकांते अवशिष्टे अनंतानुबंधिनामन्यतमोदयेन उपशमसम्यक्त्वं विराध्य मिथ्यात्वमप्राप्य सासादनो नाम भवति न सम्यग्दृष्टिर्नापि मिथ्यादृष्टिः किंतु सासादनोऽनुभयरूपः। अस्य कालः जघन्येनैकसमयः। उत्कर्षेण षडावलिका इत्यर्थः ॥ १०० ॥ अथ सिंहावलोकनन्यायेनोपशमसम्यक्त्वप्रारंभसामग्रीमाह—

स० चं०— उपशम सम्यक्त्वका कालविषैं उत्कृष्ट छह आवली जघन्य एक समय अवशेष रहैं अनंतानुबंधी क्रोधादिविषैं एक कोई उदय होनेतैं सम्यक्त्वकौं विराधि मिथ्यात्वकौं प्राप्त न होइ बीचिमें सासादन हो है ॥ १०० ॥

सायारे पट्ठवगो णिट्ठवगो मज्झिमो य भजणिज्जो। १३७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जोगे अण्णदरम्हि दु जहण्णए तेउलेस्साए ॥ १०१ ॥

साकारे प्रस्थापको निष्ठापकः मध्यमश्च भजनीयः ।
योगे अन्यतरास्मिन् तु जघन्यके तेजोलेश्यायाः ॥ १०१॥

सं० टी०— साकारे सविकल्पे उपयोगे ज्ञानोपयोगे वर्तमानो जीवः प्रथमोपशमसम्यक्त्वप्रारंभको भवति । तन्निष्ठापको मध्यमश्च भजनीयो विकल्पनीयः साकारे वा अनाकारे वा उपयोगे वर्तेत इत्यर्थः । अन्यतरस्मिन् योगे मनोवाक्काययोगानामेकस्मिन् योगे वर्तमानः प्रथमोपशमप्रारंभको भवति । तथा—यद्यपि तिर्यग्मनुष्यो वा मंदविशुद्धिस्तथापि तेजोलेश्याया जघन्यांशे वर्तमान एव प्रथमोपशमसम्यक्त्वप्रारंभको भवति । नरकगतौ नियताशुभलेश्यात्वेऽपि कषायाणां मन्दानुभागोदयवशेन तत्त्वार्थश्रद्धानानुगुणकारणपरिणामरूपविशुद्धिविशेषसंभवस्याविरोधात् । देवगतौ सर्वोऽपि शुभलेश्य एव प्रथमोपशमसम्यक्त्वप्रारंभको भवति ॥ १०१ ॥ अथ प्रथमोपशमसम्यक्त्वकालात्परमुदययोग्यकर्मविशेषमाह—

स० चं०— साकार जो ज्ञानोपयोग ताकौं होतैं ही जीवकैं प्रथमोपशम सम्यक्त्वका प्रारंभ हो है । अर ताका निष्ठापक कहिए सम्पूरण करनेवाला अर मध्य अवस्थावर्ती जीव भजनीय है । साकार अथवा अनाकार उपयोग युक्त होइ । भावार्थ यहु—कै दर्शनोपयोगी होइ कै ज्ञानोपयोगी होइ बहुरि तीन योगनिविषैं कोई एक योगविषैं वर्तमान प्रथम सम्यक्त्वका प्रारंभक हो है । बहुरि तिर्यंच मनुष्य है सो मंद विशुद्धता युक्त है । तौ भी तेजो लेश्याका जघन्य अंश ही विषैं वर्तमान जीव प्रथम सम्यक्त्वका प्रारंभक हो है । अशुभलेश्याविषैं न हो है । बहुरि यद्यपि नरकविषैं नियमतैं अशुभलेश्या है तथापि तहां जो लेश्या पाइए है तिस लेश्याका मंद उदय होतैं प्रथम सम्यक्त्वका प्रारंभक हो है । बहुरि देवकैं नियमतैं शुभलेश्या है तहां वर्तमान जीव ताका प्रारंभक हो है ॥ १०१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतोमुहुत्तमद्धं सव्वोवसमेण होदि उवसंतो ।
तेण परं उदओ खलु तिण्णेकदरस्स कम्मस्स ॥

अंतर्मुहूर्तमद्धा सर्वोपशमेन भवति उपशांतः ।
तेन परं उदयः खलु त्रिष्वेकतरस्य कर्मणः ॥ १०२ ॥

सं० टी०— अंतर्मुहूर्तमध्वानं अंतर्मुहूर्तकालपर्यंतं सर्वेषां दर्शनमोहस्य प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशानामुपशमेन उदयायोग्यभावेन जीवः उपशांतः उपशमसम्यग्दृष्टिर्भवति । तेन परं तस्मादुपशमसम्यक्त्वकालात्परं तिसृणां दर्शनमोहप्रकृतीनामेकतमस्य कर्मणः उदयो भवत्येव ॥ १०२ ॥ अथ दर्शनमोहांतरपूरणविधानांतरमाह—

स० चं०— अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत सर्व दर्शन मोहका उपशमकरि उपशम सम्यग्दृष्टी हो है । तातैं पीछैं तीन दर्शन मोहकी प्रकृतिनिविषैं एक कोईका उदय नियमतैं होइ उपशम सम्यक्त्वके ऊपरि ताका उदय है ॥ १०२ ॥

उवसमसम्मत्तुवरिं दंसणमोहं तुरंत पूरेदि ।
उदयिल्लस्सुदयादो सेसाणं उदयबाहिरदो ॥१०३॥

उपशमसम्यक्त्वोपरि दर्शनमोहं त्वरितं पूरयति ।
उदीयमानस्योदयतः शेषाणामुदयबाह्यतः ॥ १०३ ॥

सं० टी०— प्रथमोपशमसम्यक्त्वस्योपरि तत्कालचरमसमयस्योपर्यनंतरसमये दर्शनमोहस्य द्वितीयस्थितिद्रव्यमपकृष्य उदयवतोऽन्तरमुदयावलिप्रथमनिषेकादारभ्य उदयहीनस्य उदयावलिबाह्यप्रथमनिषेकादारभ्य निक्षिप्य पूरयति ॥

स० चं०— उपशम सम्यक्त्वके ऊपरि ताका अंतसमयके अनंतरि दर्शन मोहकी अंत-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रायामके ऊपरिवर्ती जो द्वितीय स्थिति ताके निषेकनिका द्रव्यकौं अपकर्षण करि अंतरकौं पूरै है। भावार्थ यहु—उपशम सम्यक्त्वका कालतैं संख्यातगुणा जो अंतरायामके ऊपरिवर्ती जो द्वितीय अन्तरायाम तीहिविषैं उपशम सम्यक्त्वका काल प्रमाण निषेक रूप तौ अभावरूप रहे ते उपशम सम्यक्त्वकालविषैं व्यतीत भए। बहुरि अवशेष अंतरायामके निषेक रहे ते अभावरूप थे तिनिविषैं द्वितीय स्थितिका द्रव्य निक्षेपण करि बहुरि तिनिका सद्भाव करै हैं। तहां जिस प्रकृतिका उदय पाइए ताका तौ उदयावलीके प्रथम निषेकतैं लगाय अर उदय हीन प्रकृतिनिका उदयावलीतैं वाह्य निषेकतैं लगाय तिस अपकर्षण कीया द्रव्यकौं अंतरायामविषैं वा द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण करै है ॥ १०३ ॥

उक्कट्टिदइगिभागं समपट्टीए विसेसहीणकमं।
सेसासंखाभागे विसेसहीणेण खिवदि सव्वत्थ १०४

अपकर्षितैकभागं समपट्ट्या विशेषहीनक्रमम्।
शेषासंख्यभागे विशेषहीनेन क्षिपाति सर्वत्र ॥ १०४ ॥

सं० टी०—प्रथमोपशमसम्यक्त्वकालं परिसमाप्यानंतरसमये तिसृणां दर्शनमोहप्रकृतीनां मध्ये या प्रकृतिरुदययोग्या भवति तत्प्रति द्रव्यं द्वितीयस्थितौ स्थितमपकृष्य उदयावल्यां तद्बाह्यांतरायामे द्वितीयस्थितौ च निक्षिपति। उदयायोग्ययोः शेषप्रकृत्योर्द्रव्यमपकृष्य उदयावलिबाह्यांतरायामद्वितीयस्थित्योरेव निक्षिपति। तद्यथा—

तत्र उदययोग्यं सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यं स ३ । १२ -- इदमपकर्षणभागहारेण खण्डयित्वा एकभागं स ३ । १२—
७ । ख १७ गु   ७ । ख । १७ । गु ओ

गृहीत्वा असंख्येयलोकेन खण्डयित्वा तदेकभागं स ३ । १२ -   उदयावल्यां 'उदयावलिस्स दव्वं आव-
७ । ख । १७ । गु । ओ । ≡ ३

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिभजिदे दु, इत्यादि पूर्वोक्तविधानेन विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत् । अवशिष्टासंख्यातलोकखंडितबहुभागं—

१ ८

स २ । १२ — ≡ २ गुणकारस्यैकरूपहीनतामविवक्षित्वा अपवर्तितं स २ । १२ अस्मादपकृ-

७ । ख । १७ । गु । ओ । ≡ २   १ ८ ७ । ख । १७ । गु । ओ

ष्टबहुभागमात्रं नानागुणहानिमात्रद्वितीयस्थितिद्रव्यमिदं स २ । १२ — ओ गुणकारस्यैकरूपहीनत्वमविवक्षित्वा अप-

७ । ख । १७ । गु ओ

वर्त्य ' दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा ' इत्यनेनानीतं तत्प्रथमनिषेकद्रव्यमिदं स २ । १२ — ' पदहतमुखमादिधनमि '

७ । ख । १७ । गु १२

त्यनेन संख्यातावलिमात्रेणांतरायामेन गुणितं समपट्टिकाद्रव्यं स २ । १२–२ ११ पुनर्द्वितीयस्थितिप्रथमगुणहानिप्रथम-

७ । ख । १७ । गु । १२

निषेकद्रव्यं द्विगुणितं तदधस्तनगुणहानिप्रथमनिषेकद्रव्यं भवति स । २ । १२ — । २ अस्मिन् द्विगुणगुणहान्या भक्ते प्रचयो

७ । ख । १७ । गु । १२   १—

भवति–स २ । १२ — २ सैकपदाहतपददलचयहतमुत्तरधनमित्यनेनानीतं स २ । १२ – २ । २ ११ । २ ११ चय-

७ । ख । १७ । गु १२ । १६   ।   ७ । ख । १७ । गु । १२ — १६ । २

धनं पूर्वानीतादिधने साधिकं कृत्वा स २ । १२ — २ ११ एतावद्द्रव्यं स २ । १२— अपकृष्टावशिष्टद्र-

७ । ख । १७ । गु । १२   ७ । ख । १७ । गु । ओ

व्यात् गृहीत्वांतरायामप्रथमसमये गच्छमात्रचयैरधिकं द्वितीयस्थितिप्रथमनिषेकमात्रं द्रव्यं निक्षिप्य द्वितीयादिसमयेषु

विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत् । अंतरायामचरमसमये एकचयाधिकं निक्षिपेत् । अपकृष्टावशिष्टद्रव्यं किंचिदूनमपवर्तितं—

।

स । २ । १२ — अस्मात्पुनरपि सविशेषसमपट्टिकाद्रव्यमिदं, गृहीत्वा स २ । १२ – २ ११ पूर्ववदंतरा-

७ । ख १७ । गु । ओ   ७ । ख । १७ । गु । ओ । १२

यामे निक्षिप्य अवशिष्टापकृष्टद्रव्यमिदं स २ । १२ — दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा, इत्यनेन द्वितीयस्थितिप्रथ-

७ । ख । १७ । गु ओ

मनिषेकादारभ्य सर्वत्र विशेषहीनक्रमेण उपर्यतिस्थापनावलिं मुक्त्वा निक्षिपेत् । उदयायोग्ययोर्मिश्रमिथ्यात्वप्रकृत्योर्द्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष्यमपकृष्टैकभागमुदयावलिवाह्यांतरायामे द्वितीयस्थितौ च पूर्ववन्निक्षिपेत् । मिश्रस्यांतरायामाधस्तनावल्यां कुतो न दीयते ? इति चेत् न तत्र प्रागपि निषेकसद्भावात् मिथ्यात्वोदयावद्द्रव्यमुदयावलिप्रथमसमयादारभ्य निक्षिपेत् । अनुदययोः शेषयोर्द्रव्यमुदयावल्यां न निक्षिपेत् । सर्वत्र एकगोपुच्छाकारेण विशेषहीननिक्षेपाभ्युपगमात् ॥ १०४ ॥ अथ सम्यक्त्वप्रकृत्युदयकार्यं प्ररूपयति—

स० चं०— तहां उदयवान सम्यक्त्व मोहनी होइ तौ ताका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां बहुभाग तौ जैसैं थे तैसैं रहे। बहुरि एक भागकौं असंख्यात लोकका भाग देइ तहां एक भाग तौ उदयावलीविषैं देना सो 'उदयावलिस्स दव्वं' इत्यादि सूत्रकरि जैसैं पूर्वैं विधान कह्या है तैसैं उदयावलीके निषेकनिविषैं चय घटता क्रमकरि निक्षेपण करना। बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्यविषैं अवशेष बहुभागमात्र रह्या ताका नाम अपकृष्टावशिष्ट द्रव्य है। सो तिसविषैं अंतरायामके निषेकनिका अभाव था तिनिका सद्भाव करनेकौं कितना इक द्रव्य तौ तहां देना। सो कितना देना ताका जाननेकौं विधान कहिए है— नाना गुणहानिविषैं तिष्ठता ऐसा जो सम्यक्त्व मोहनीकी द्वितीय स्थितिका द्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भाग जुदा कीएं अवशेष बहुभागमात्र जो द्रव्य रह्या ताकौं 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा' इस सूत्रकरि साधिक ड्योढ गुणहानिप्रमाणका भाग दीएं तिस द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेक होइ सो याके समान अंतरायामके सर्व निषेक चय रहित स्थापि जोडैं आदि धन होइ सो 'पदहतमुखमादिधनं' इस सूत्र करि अंतरायाम प्रमाण गच्छकरि तिस प्रथम निषेककौं गुणैं अंतरायामके निषेकनिका आदि धन भया। बहुरि द्वितीय स्थितिके नीचैं अंतरायामके निषेक हैं तातैं द्वितीय स्थितिका आदि निषेकतैं चय बंधता क्रम रूप अंतरायामकौं निषेक कहिए सो चयका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४३ प्रमाण ल्याइए है—द्वितीय स्थितिकी प्रथम गुणहानि ताका प्रथम निषेक ताके नीचैवर्ती जो अंतरायाम सम्बन्धी गुणहानि ताका प्रथम निषेक दूणा प्रमाण लीएं चय कहिए । याकौं दो गुणहानिका भाग दीएं अंतरायामविषैं चयका प्रमाण आवै है । सो 'सैकपदाहतपददल-चयहतमुत्तरधनं, इस सूत्रकरि इहां गच्छ अंतरायाममात्र सो एक अधिक गच्छकरि आदि गच्छका आधाकौं गुणि बहुरि चयकरि गुणैं उत्तरधन हो है । सो ऐसैं आदि धन उत्तर-धनकौं मिलाएं जो प्रमाण भया तितना द्रव्य तिस अपकृष्टावशिष्ट द्रव्यतैं ग्रहिकरि अंतरा-यामविषैं देना । तहां द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेकतैं गच्छमात्र चयनिकरि अधिक द्रव्य तौ अंतरायामका प्रथम निषेकविषैं देना । इहां गच्छका प्रमाण अंतरायाम अर चयका प्र-माण पूर्वोक्त जानना । बहुरि द्वितीयादि निषेकनिविषैं एक एक चय घटता क्रम लीएं देना । अंत निषेकनिविषैं एक एक चय अधिक देना । ऐसैं दीएं जैसैं क्रम लीएं चहिए तैसैं अंत-रायामके निषेकनिका अभाव भया था तिनिका सद्भाव भया । अब अपकृष्टावशिष्ट द्रव्य-विषैं इतना द्रव्य दीएं किंचित् ऊन भया तिस अवशेष द्रव्यकौं अंतरायाम वा द्वितीय स्थि-तिविषैं देना । तहां अंतरायामविषै तौ पूर्वैं जैसैं आदि धन उत्तरधन मिलाइ द्रव्य प्रमाण ल्यावनेका विधान कह्या था तैसैं प्रमाण ल्याइ तितने द्रव्यकौं अंतरायामके निषेकनिविषैं देना । याकौं दीए पीछैं जो अवशेष रह्या ताकौं 'दिवड्ढ गुणहाणिभाजिदे पढमा' इत्यादि विधानकरि द्वितीयस्थितिके नाना गुणहानि सम्बन्धी जे निषेक तिनविषैं अंतके अतिस्था-पनावलीमात्र निषेक छोडि सर्वत्र देना । ऐसैं तौ उदय योग्य सम्यक्त्व मोहनीका विधान कह्या । बहुरि उदयकौं अयोग्य जे मिश्र मिथ्यात्व प्रकृतिनिका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहा- १४३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रका भाग देइ तहां एक भाग उदयावलीतैं वाह्य जो अंतरायाम तीहिंविषैं अर द्वितीय स्थितिविषैं पूर्ववत् निक्षेपण करना । उदयावलीविषैं निक्षेपण न करना । ऐसैं ही जो मिश्र मोहनी अथवा मिथ्यात्व मोहनी उदय योग्य होइ अवशेष दोय उदय योग न होंइ तौ तहां यथासम्भव विधान जानना । सर्वत्र जैसैं गायका पूंछ क्रमतैं मोटाई करि हीन हो है तैसैं चय घटता क्रम पाइए है तातैं तहां एक गोपुच्छाकार कहिए ॥ १०४ ॥

सम्मुदये चलमलिणमगाढं सद्दहादि तच्चयं अत्थं ।
सद्दहादि असब्भावं अजाणमाणो गुरुणियोगा ॥
सुत्तादो तं सम्मं दरसिज्जंतं जदा ण सद्दहादि ।
सो चेव हवदि मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदी ॥

सम्यक्त्वोदये चलमलिनमगाढं श्रद्दधाति तत्त्वमर्थम् ।
श्रद्धाति असद्भावमजानन् गुरुनियोगात् ॥ १०५ ॥
सूत्रतस्तं सम्यक् दर्शयंतं यदा न श्रद्दधाति ।
स चैव भवति मिथ्यादृष्टिर्जीवः ततः प्रभृति ॥ १०६ ॥

सं० टी०—सम्यक्त्वप्रकृतेरुदये सति जीवस्तत्त्वार्थं चलनमलिनमगाढं च यथा भवति तथा श्रद्दधाति तत्त्वार्थश्रद्धानस्य चलत्वमलिनत्वागाढत्वानि सम्यक्त्वप्रकृत्युदयकार्याणीत्यर्थः । अयं वेदकसम्यग्दृष्टिः स्वयं विशेषमजानानो गुरोर्वच-नाकौशलदुष्टाभिप्रायगृहीतविस्मरणादिनिबंधनान्नियोगादन्यथा व्याख्यानासद्भावं तत्त्वार्थेष्वसद्रूपमपि श्रद्दधाति तथापि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वज्ञाज्ञाश्रद्धानात्सम्यग्दृष्टिरेवासौ । पुनः कदाचिदाचार्यांतरेण गणधरादिसूत्रं प्रदर्श्य व्याख्यायमानं सम्यग्रूपं यदा न श्रद्दधाति ततः प्रभृति स एव जीवो मिथ्यादृष्टिर्भवति, आप्तसूत्रार्थाश्रद्धानात् ॥ १०५-१०६ ॥ अथ प्रकृत्युदयकार्यं व्याचष्टे-

स० चं०— उपशम सम्यक्त्वका काल पूर्ण भएं पीछैं नियमतैं तीनोंविषैं एक दर्शन मोहकी प्रकृतिका उदय होइ तहां सम्यक्त्व मोहनीका उदय होतैं जीव वेदक सम्यग्दृष्टी हो है । सो चल मलिन अगाढरूप तत्वार्थकौं श्रद्दहै है । सम्यक्त्व मोहनीके उदयतैं श्रद्धानविषैं चलपनौं हो है वा मल लागै है वा शिथिल भाव हो है बहुरि सो जीव आप विशेष न जानता अज्ञात गुरुके निमित्ततैं असत् श्रद्धान भी करै है । परंतु यहु सर्वज्ञ आज्ञा ऐसैं ही है ऐसैं जानि श्रद्धान करै है तातैं सम्यग्दृष्टी है । अर जो कदाचित कोई ज्ञात गुरु सूत्रतैं सम्यक् स्वरूप दिखावै अर हठादिकतैं श्रद्धान न करै तो तिस कालतैं लगाय सो मिथ्यादृष्टी हो है ॥ १०५-१०६ ॥

मिस्सुदये सम्मिस्सं दहिगुडमिस्सं व तच्चमियरेण ।
सद्दहदि एक्कसमये मरणे मिच्छो व अयदो वा ॥

मिश्रोदये संमिश्रं दधिगुडमिश्रं वा तत्त्वमितरेण ।
श्रद्दधात्येकसमये मरणे मिथ्यो वा असंयतो वा ॥ १०७ ॥

सं० टी०—मिश्रस्य सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतेरुदये सति जीवस्तत्त्वमितरेणातत्त्वेन संमिश्रमेकस्मिन् समये पूर्वगृहीतमिथ्यादेवतादिश्रद्धानमत्यजन् अर्हन् देवतेत्यपि श्रद्दधाति । मिश्रं परस्परप्रदेशानुप्रविष्टं दधिगुडं यथा रसांतरपरिणामं लोके दृश्यते तथा मरणे सोंतर्मुहूर्तमात्रे अवशिष्ट मिथ्यादृष्टिर्वा भवत्यसंयतसम्यग्दृष्टिर्वा भवति ॥ १०७॥ अथ मिथ्यात्वप्रकृत्युदयकार्यं कथयति—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०—मिश्र जो सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति ताका उदय होतैं जीव मिश्र गुणस्थानवर्ती होइ सो एक समयविषैं तत्व अर इतर अतत्व इनिकौं मिश्ररूप श्रद्दहै है। जैसैं दही गुड मिल्या हूवा और ही रसांतरकौं प्राप्त हो है तैसैं इहां सत्य असत्य श्रद्धान मिल्या हूवा जानना। इहां मरण होनेतैं अंतर्मुहूर्त पहिलैं ही नियमतैं मिथ्यादृष्टी वा असंयत हो है। मिश्र विषैं मरण नाहीं है ॥ १०७ ॥

मिच्छत्तं वेदंतो जीवो विवरीयदंसणं होदि।
ण य धम्मं रोचेदि हु महुरं खु रसं जहा जुरिदो॥

मिथ्यात्वं वेदयन् जीवो विपरीतदर्शनो भवति।
न च धर्मं रोचते हि मधुरं खलु रसं यथा ज्वरितः॥ १०८॥

सं० टी०—मिथ्यात्वप्रकृतेरुदयमनुभवन् जीवो विपरीतदर्शनः अतत्त्वश्रद्धानो मिथ्यादृष्टिर्भवति। स च धर्मं वस्तुस्वभावमनेकांतं दयामूलं वा रत्नत्रयात्मकं मोक्षमार्गं न रोचते नेच्छति। अस्मिन्नर्थे उपमानमाह—यथा ज्वरितः पित्तज्वराक्रांतो मधुररसंस्फुटं न रोचते॥ १०८॥

स० चं०— मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयकौं जीव अनुभवता मिथ्यादृष्टी होइ सो विपरीत श्रद्धानी होइ जैसैं ज्वरवालेकौं मीठा न रुचै तैसैं ताकौं धर्म जो अनेकांत वस्तुका स्वभाव वा रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग सो रुचै नाहीं ऐसैं जानना॥ १०८॥

मिच्छाइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि।
सद्दहदि असब्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं॥ १०९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यादृष्टिर्जीवः उपदिष्टं प्रवचनं न श्रद्दधाति ।
श्रद्दधात्यसद्भावमुपदिष्टं वा अनुपदिष्टम् ॥ १०९ ॥

सं० टी०—यो मिथ्यादृष्टिर्जीवः उपदिष्टं प्रवचनं परमागमं न श्रद्दधाति नाभ्युपगच्छति किंतूपदिष्टमनुपदिष्टं वा असद्भावमतत्त्वार्थं श्रद्दधाति ॥ १०९ ॥

एवं प्रथमोपशमसम्यक्त्वप्ररूपणः प्रथमोऽधिकारः ॥

स० चं०— मिथ्यादृष्टी जीव जिनेश्वर करि उपदेश्या वचनकौं नाही श्रद्धान करै है। बहुरि अन्यकरि उपदेश्या वा न उपदेश्या असद्भाव जो अतत्त्व ताकौं श्रद्धान करै है ॥१०९॥

इति प्रथमोपशमसम्यक्त्वप्ररूपण
समाप्त भया ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

क्षायिकसम्यक्त्वप्ररूपणा-अधिकारः ॥ २ ॥

जयंत्यर्हद्विधूतांगसूर्युपाध्यायसाधवः ।
लोकेऽस्मिन् भव्यलोकानां शरणोत्तममंगलं ॥ १ ॥

अथ क्षायिकसम्यग्दर्शनोत्पत्तिसामग्रीं प्ररूपयति—

अथ क्षायिक सम्यक्त्व प्ररूपणा लिखिए है—

दंसणमोहक्खवणापट्ठवगो कम्मभूमिजो मणुसो ।
तित्थयरपायमूले केवलिसुदकेवलीमूले ॥ ११० ॥

दर्शनमोहक्षपणाप्रस्थापकः कर्मभूमिजो मनुष्यः ।
तीर्थकरपादमूले केवलिश्रुतिकेवलिमूले ॥ ११० ॥

सं० टी०—यो मनुष्यः पंचदशकर्मभूमिसमुत्पन्नः पर्याप्तः तीर्थकरपादमूले इतरकेवलिश्रुतकेवलिनोः पादमूले वा सन्निहितः स एव दर्शनमोहस्य क्षपणप्रस्थापको भवति । प्रस्थापकः प्रारंभक इत्यर्थः । अन्यत्र दर्शनमोहक्षपणाकारण-विशुद्धिविशेषाघटनात् । अधःप्रवृत्तकरणप्रथमसमयादारभ्य मिथ्यात्वमिश्रप्रकृत्योः द्रव्यमपवर्त्य सम्यक्त्वप्रकृतौ संक्रम्यते यावत्तावदंतर्मुहूर्तकालं दर्शनमोहक्षपणाप्रस्थापक इत्युच्यते ॥ ११० ॥

स० चं०—जो मनुष्य कर्मभूमिविषैं उपज्या तीर्थंकर वा अन्यकेवली वा श्रुतकेवलीके पाद मूलविषैं तिष्ठता होइ सोई दर्शन मोहकी क्षपणाका प्रस्थापक कहिए प्रारंभक हो है जातैं अन्यत्र ऐसा विशुद्ध ज्ञान न हो है । अधःकरणका प्रथम समयस्यों लगाय यावत् मिथ्यात्व मिश्रमोहनीका द्रव्य सम्यक्त्व प्रकृति रूप होइ संक्रमण करै तावत् अंतर्मुहूर्त

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काल पर्यंत दर्शन मोहकी क्षपणाका प्रारंभक कहिए ॥ ११० ॥

णिट्ठवगो तट्ठाणे विमाणभोगावणीसु धम्मे य ।
किदकरणिज्जो चदुसुवि गदीसु उप्पज्जदे जम्हा ॥

निष्ठापकः तत्स्थाने विमानभोगावनिषु धर्मे च ।
कृतकृत्यः चतुर्ष्वपि गतिषु उत्पद्यते यस्मात् ॥ १११ ॥

सं० टी०— दर्शनमोहक्षपणाया निष्ठापकः मिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्वद्रव्यस्य सम्यक्त्वप्रकृतिरूपेण संक्रमणानंतरसमयादारभ्य क्षायिकसम्यक्त्वग्रहणप्रथमसमयात्प्राक् निष्ठापको भवतीत्यर्थः । स च तत्स्थाने दर्शनमोहक्षपणाप्रारंभभवे विमानेषु सौधर्मादिषु कल्पेषु कल्पातीतेषु च भोगभूमितिर्यग्मनुष्येषु च धर्मायां नरकपृथिव्यां च भवति । कुतः ? यस्मात् कारणात् कृतकृत्यवेदकः पूर्वं बद्धायुष्कश्चतसृष्वपि गतिषु उत्पद्यते तस्मात्कारणात्तत्रोत्पन्नो दर्शनमोहक्षपणां निष्ठापयतीत्यर्थः ॥ १११ ॥ अथ पूर्वमनंतानुबंधिविसंयोजनां प्ररूपयति—

स० चं०—तिस प्रारंभक कालके अनंतर समयवर्ती समयतैं लगाय क्षायिक सम्यक्त्व ग्रहण समयतैं पहिले निष्ठापक हो है । सो जहां प्रारंभ कीया था तहां ही वा सौधर्मादिक कल्प वा कल्पातीतविषैं वा भोगभूमिया मनुष्य तिर्यंचविषैं वा धर्मा नाम नरक पृथ्वीविषैं भी निष्ठापक हो है जातैं बद्धायु कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि मरि च्यार्यो गतिविषैं उपजै है तहां निष्ठापन करै सो कथन आगैं होयगा ॥ १११ ॥

पुव्वं तियरणविहिणा अणं खु अणियट्टिकरणचरिमम्हि
उदयावलिबाहिरगं ठिदिं विसंजोजदे णियमा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वं त्रिकरणविधिना अनंतं खलु अनिवृत्तिकरणचरमे ।
उदयावलिबाह्यं स्थितिं विसंयोजयति नियमात् ॥ ११२ ॥

सं० टी०— पूर्वमादौ त्रिकरणविधिना अनंतानुबंधिनः क्रोधमानमायालोभान् उदयावलिं मुक्त्वा तद्बाह्योपरितनस्थितिस्थितान् सर्वान् विसंयोजयन् अनिवृत्तिकरणचरमसमये निरवशेषं विसंयोजयति। द्वादशकषायनोकषायस्वरूपेण संक्रामयति । तथाहि—

असंयतसम्यग्दृष्टिर्देशसंयतः प्रमत्तसंयतः अप्रमत्तसंयतो वा वेदकसम्यक्त्वः अधःप्रवृत्तकरणकालं प्रथमोपशमसम्यक्त्वग्रहणकालोक्तविधिना प्रतिसमयमनंतगुणविशुद्ध्या वर्धमानः परिसमाप्य तदनंतरसमये गुणश्रेणिगुणसंक्रमस्थितिकांडकानुभागकांडकघातानपूर्वकरणपरिणामैः प्रवर्तयति । तत्र प्रथमसम्यक्त्वोत्पत्तौ गुणश्रेणिद्रव्याद्देशसंयतगुणश्रेणिद्रव्यमसंख्येयगुणं । तस्मात्सकलसंयतगुणश्रेणिद्रव्यमसंख्येयगुणं । तस्मादसंख्येयगुणद्रव्यमपकृष्यायमनंतानुबंधी विसंयोजको गुणश्रेणिं करोति । गुणश्रेण्यायामः पूर्ववदेवापूर्वानिवृत्तिकरणकालद्वयात्साधिकोऽपि संयतगुणश्रेण्यायामात् संख्येयगुणहीनः, समयं प्रति गलितावशेषश्च । अनुभागकांडकायामः पूर्वस्मादनंतगुणः । स्थितिकांडकायामश्च पूर्वस्मात्संख्येयगुणः, गुणसंक्रमद्रव्यं च पूर्वस्मादसंख्येयगुणं । गुणसंक्रमस्तु अनंतानुबंधिनामेव नान्येषां कर्मणां । एवं संख्यातसहस्रैः स्थितिखंडैः स्थितिबंधैरनुभागखंडैश्चापूर्वकरणकालं परिसमाप्य तदनंतरसमये अनिवृत्तिकरणं प्रविश्यति ॥ ११२ ॥ अथानिवृत्तिकरणकाले क्रियमाणं कार्यविशेषमाह—

स० चं०—दर्शन मोह क्षपणाके पहलैं तीन करण विधान करि अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभनिके उदयावलीतैं बाह्य जे सर्व निषेक तिनकौं विसंयोजन करता अनिवृत्तिकरणका अंत समयविषैं नियमतैं विसंयोजन करै है, बारह कषाय नव नोकषाय रूप परिणमावै है । सोई कहिए है—

असंयत वा देश संयत वा प्रमत्त वा अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती वेदक सम्यग्दृष्टि जीव सो पहलैं अधःकरण करै ताका विधान प्रथमोपशम सम्यक्त्व ग्रहणविषैं कह्या तैसैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानना। तहां समय समय अनंतगुणी विशुद्धताकरि बधता ताकौं समाप्त करि अपूर्वकरण कौं प्राप्त होइ तहां गुणश्रेणि गुणसंक्रमण स्थिति कांडकघात अनुभाग कांडकघात ए च्यारि कार्य होंइ तहां प्रथम सम्यक्त्वकी उत्पत्ति संबंधी गुण श्रेणिका द्रव्यतैं देश संयतका अर तातैं सकलसंयतका अर तातैं इस अनंतानुबंधी विसंयोजनका गुणश्रेणिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य क्रमतैं असंख्यातगुणा है अर तिनके गुणश्रेणि आयामका प्रमाण क्रमतैं संख्यात गुणा घाटि है। सो अपूर्व करण अनिवृत्ति करणके कालतैं साधिक गलितावशेष रूप जानना। बहुरि इहां अनुभाग कांडक आयाम पूर्वतैं अनंत गुणा है। बहुरि स्थिति कांडक आयाम पूर्वतैं संख्यात गुणा है। बहुरि गुण संक्रमण द्रव्य है सो पूर्वतैं असंख्यात गुणा है। इहां गुण संक्रमण अनंतानुबंधीनिका ही है औरनिका नाहीं है ऐसा जानना। ऐसैं संख्यात हजार स्थिति खंड वा स्थितिबंध वा अनुभाग खंडनिकरि अपूर्व करणकौं समाप्तकरि अनिवृत्ति करणकौं प्राप्त हो है ॥ ११२ ॥

अणियट्टीअद्धाए अणस्स चत्तारि होंति पव्वाणि।
सायरलक्खपुधत्तं पल्लं दूरावकिट्टि उच्छिट्ठं ॥ ११३ ॥

अनिवृत्त्यद्धायां अनंतस्य चत्वारि भवंति पर्वाणि।
सागरलक्षपृथक्त्वं पल्यं दूरापकृष्टिरुच्छिष्टम् ॥ ११३ ॥

सं० टी०— अनिवृत्तिकरणप्रथमसमये अनंतानुबंधिनां स्थितिसत्त्वं सागरोपमलक्षपृथक्त्वं जातं। अपूर्वकरणाकृतस्थितिखंडबाहुल्येनांतःकोटीकोटिसागरोपमसत्त्वस्य संख्यातगुणहान्या तदा तत्प्रमाणसंभवात्। शेषकर्मणां स्थिति- १५२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सत्त्वमंतःकोटीकोटिसागरोपमप्रमाणमेव । इदमनंतानुबंधिनां प्रथमं स्थितिसत्त्वस्य पर्व । पुनः स्थितिखंडसहस्रेषु पल्यसंख्यातैकभागमात्रायामेषु गतेषु अनिवृत्तिकरणकालस्य संख्यातैकभागेऽवशिष्टे अनंतानुबंधिनां स्थितिसत्त्वमसंज्ञिस्थितिबंधसमं सागरोपमसहस्रप्रमितं भवति । पुनः पल्यसंख्यातैकभागमात्रायामेषु स्थितिखंडसहस्रेषु गतेषु चतुरिंद्रियस्थितिबन्धसमं सागरोपमशतमात्रं भवति । पुनस्तावदायामेषु स्थितिखंडसहस्रेषु गतेषु त्रींद्रियस्थितिबन्धसमं पंचाशत्सागरोपमप्रमितं तेषां स्थितिसत्त्वं भवति । पुनस्तावदायामेषु स्थितिखंडसहस्रेषु गतेषु द्वींद्रियस्थितिबन्धसमं पंचविंशतिसागरोपममात्रं तेषां स्थितिसत्त्वं भवति । पुनस्तावदायामेषु स्थितिखंडसहस्रेषु गतेषु एकेंद्रियस्थितिबन्धसममेकसागरोपमप्रमितं तेषां स्थितिसत्त्वं भवति । पुनस्तावदायामेषु स्थितिखंडसहस्रेषु गतेषु पल्यमात्रमनंतानुबंधिनां स्थितिसत्त्वं भवति । इदं द्वितीयं पर्व । पुनः पल्यसंख्यातबहुभागमात्रायामेषु स्थितिखंडसहस्रेषु गतेषु दूरापकृष्टिसंज्ञं तेषां स्थितिसत्त्वं भवति तच्च पल्यसंख्यातैकभागमात्रं प इदं तृतीयं पर्व । पुनः पल्यासंख्यातबहुभागमात्रायामेषु स्थितिखंडसहस्रेषु गतेषु अनन्तानुबंधिनां स्थितिसत्त्वमावलिमात्रमवशिष्यते तदुच्छिष्टावलिसंज्ञं । इदं चतुर्थं पर्व । एवमनंतानुबन्धिनां स्थितिसत्त्वे सागरोपमलक्षपृथक्त्वं पल्यं दूरापकृष्टिरुच्छिष्टावलिरिति चत्वारि पर्वाणि भवंति ॥ ११३ ॥

५ । ५ । ५ । ५

स० चं–अनिवृत्ति करणका कालविषैं अनंतानुबंधीका जो स्थितिसत्व ताके च्यारि पर्व हो हैं । स्थिति घटनेकी मर्यादा करि च्यारि विभाग हो हैं । तहां पहले समय पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण स्थिति सत्व हो है जातैं अंतःकोटाकोटी स्थिति सत्व था सो अपूर्व करण विषैं स्थिति खंडनिकरि घटाएं इतना अवशेष रहै है । अनंतानुबंधी विना अन्य कर्मनिका स्थिति सत्व इहां अंतः कोटाकोटी सागर ही जानना । यहु प्रथम पर्व भया । बहुरि पीछैं संख्यात हजार स्थिति खंड भए क्रमतैं असंज्ञी पंचेंद्री चौंद्री तेंद्री वेंद्री एकेंद्री बंध समान हजार सागर अर सौ सागर अर पचास सागर अर पचीस सागर अर एक सागर स्थिति सत्व हो है । बहुरि संख्यात हजार स्थिति खंड भएं पल्यमात्र स्थिति सत्व हो है । इहां इन स्थिति खंडनिका आयाम जो एक एक स्थिति खंडविषैं स्थिति सत्व घटनेका प्रमाण सो १५३

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पल्यका संख्यातवां भागमात्र जानना। यहु दूसरा पर्व भया। बहुरि पल्यकौं संख्यातका भाग दीजिए तहां एक भाग बिना बहुभागमात्र आयाम करि युक्त ऐसा हजारौं स्थिति खंड भएं दूरापकृष्टि है नाम जाका ऐसा पल्यका (अ) संख्यातवां भागमात्र स्थिति सत्व हो है। यहु तीसरा पर्व भया। बहुरि पल्यकौं असंख्यातका भाग दीएं तहां एक भाग विना बहुभाग मात्र आयाम धरें ऐसैं हजारौं स्थिति खंड भएं उच्छिष्टावली है नाम जाका ऐसा आवली मात्र स्थिति सत्व अवशेष रहै है। यहु चौथा पर्व भया। ऐसैं ए च्यारि पर्व जानने ॥११३॥

पल्लस्स संखभागो संखा भागा असंखगा भागा।
ठिदिखंडा होंति कमे अणस्स पव्वादु पव्वोत्ति ॥

पल्यस्य संख्यभागः संख्या भागा असंख्यका भागाः।
स्थितिखंडा भवंति क्रमेण अनंतस्य पर्वात् पर्वान्तं ॥ ११४ ॥

सं० टी०— अनंतानुबंधिनां स्थितिसत्त्वस्य प्रथमपर्वणः आरभ्य द्वितीयपर्वपर्यंतं पल्यसंख्यातैकभागः स्थितिखंडायामो भवति। द्वितीयपर्वणः आरभ्य तृतीयपर्वपर्यंतं पल्यसंख्यातबहुभागमात्रः स्थितिखंडायामः। तृतीयपर्वणः आरभ्य चतुर्थपर्वपर्यंतं पल्यासंख्यातबहुभागमात्रः स्थितिखंडायामः ॥ ११४ ॥

स० चं—अनंतानुबंधीका स्थिति सत्त्वके पहले पर्वतैं दूसरे पर्व पर्यंत अर दूसरेतैं तीसरे पर्यंत अर तीसरेतैं चौथे पर्यंत जे स्थिति कांडक हो हैं तिनिका आयाम क्रमतैं पल्यका संख्यातवां भाग अर पल्यका संख्यात बहुभाग अर पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र है सो कथन कीया ही है ॥ ११४ ॥ १५४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणियट्टीसंखेज्जाभागेसु गदेसु अणगठिदिसत्तो ।
उदधिसहस्सं तत्तो वियले य समं तु पल्लादी ॥ ११५

अनिवृत्तिसंख्यातभागेषु गतेषु अनंतगस्थितिसत्वं ।
उदधिसहस्रं ततो विकले च समं तु पल्यादि ॥ ११५ ॥

सं० टी०— अनिवृत्तिकरणकालस्य प्रथमसमयादारभ्य संख्यातबहुभागेषु गतेषु अनंतानुबंधिनां स्थितिसत्त्वं कचित्सागरोपमसहस्रं । ततो विकलत्रयैकेंद्रियस्थितिबंधसमं । ततः पल्यादि भवति । आदिशब्दात् दूरापकृष्टिरुच्छिष्टावलिश्च गृह्यते प्रतिपर्वं संख्यातसहस्रस्थितिखंडवशात् तत्स्थितिहानिसंभवात् ॥ ११५ ॥

स० चं–अनिवृत्ति करणके कालकौं संख्यातका भाग दीजिए तहां बहुभाग द्रव्य व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहैं अनंतानुबंधीका स्थितिसत्व कहीं हजार सागरमात्र, पीछैं विकलेंद्रीका बंध समान, पीछैं पल्य अर आदि शब्दतैं दूरापकृष्टि अर आवलीमात्र हो है॥

उवहिसहस्सं तु सयं पण्णं पणवीसमेक्कयं चेव ।
वियलचउक्के एगे मिच्छुक्कस्सट्ठिदी होदि ॥११६॥

उदधिसहस्रं तु शतं पंचाशत् पंचविंशातिरेकं चैव ।
विकलचतुष्के एकस्मिन् मिथ्योत्कृष्टस्थितिर्भवति ॥ ११६ ॥

सं० टी०— असंज्ञिपंचेंद्रियश्चतुरिंद्रियस्त्रींद्रियो द्वींद्रियश्च विकलचतुष्कं, तस्मिन्नेकेंद्रिये च यथाक्रमं सहस्रशतपंचाशत्पंचविंशत्येकसागरोपममितो मिथ्यात्वोत्कृष्टो स्थितिबंधो भवति । एवमनंतानुबंधिनां द्रव्यं स a । १२ — ७ । ख । १७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणश्रेण्या अपकृष्टमधोनिक्षिप्य स्थितिकांडकद्रव्यं गुणसंक्रमभागहारेण भक्त्वा लब्धफाली: प्रतिसमयमसंख्येयगुणा: द्वादशकषायनोकषायेषु संक्रमय्य अनिवृत्तिकरणचरमसमये चरमकांडकफालिद्रव्यमुच्छिष्टावलिमात्रनिषेकवर्जितं विसंयोजयति । उच्छिष्टावलिद्रव्यं च प्रतिसमयमेकैकनिषेकरूपेणावलिकाले विसंयोज्यते ॥ ११६ ॥ अथ विसंयोजितानंतानुबंधिकषायचतुष्टयस्योत्तरकालकर्तव्यमाह—

स० चं०—विकल चतुष्क कहिए असंज्ञी पंचेंद्री चौंद्री तेंद्री बेंद्री अर एकेंद्री इनिकैं मिथ्यात्वका उत्कृष्ट स्थितिबंध क्रमतैं हजार अर सौ अर पचास अर पचीस अर एक सागर प्रमाण हो है। इन समान स्थिति सत्त्व अनंतानुबंधीका ही हो है। सो कथन कीया ही है। बहुरि अनंतानुबंधीका द्रव्य ताकौं गुणश्रेणिकरि जो नीचले निषेकनिविषैं प्राप्त कीया अर स्थिति कांडककरि घटाई हुई स्थितिके निषेक अवशेष स्थितिके निषेकनिविषैं प्राप्त कीए बहुरि गुणसंक्रमकरि तिस द्रव्यकौं गुणसंक्रमण भागहारका भाग दीएं जो प्रमाण तिस प्रमाणमात्र द्रव्यका समूह रूप प्रथम फालि है अर तातैं समय समय प्रति असंख्यात गुणा द्रव्य रूप द्वितीयादि फालि है तिनकौं विसंयोजन करै ऐसैं अनिवृत्ति करणका अंत समयविषैं उच्छिष्टावलीमात्र निषेक रहित अंत कांडकका अंत फालिका द्रव्यकौं विसंयोजन करै है। बहुरि उच्छिष्टावलीमात्र निषेकनिका द्रव्यकौं एक एक समयविषैं एक एक निषेकनिकौं विसंयोजन करै है। इनिके परमाणूनिकौं बारह कषाय नव नोकषाय रूप परिणमाय अभाव करने का नाम विसंयोजन है। ऐसैं अनंतानुबंधीके विसंयोजनका विधान कह्या ॥ ११६ ॥

स्थितिकांडकद्रव्यं ।

(१) प फ इ / प कां प ७ृ / ७ृ १ — लब्ध कां ७ृ — प / कां / १ — फ स ७ १२ – / ७ । ख १७ — इ कां ७ृ — ल स ७ । १२ – / ७ । ख । १७ । ७ृ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतोमुहुत्तकालं विस्समिय पुणोवि तिकरणं किरिय
अणियट्टीए मिच्छं मिस्सं सम्मं कमेण णासेइ॥११७॥

अंतर्मुहूर्तकालं विश्राम्य पुनरपि त्रिकरणं कृत्वा।
अनिवृत्तौ मिथ्यं मिश्रं सम्यक्त्वं क्रमेण नाशयति॥ ११७॥

सं० टी०— पूर्वोक्तक्रमेण विसंयोजितानंतानुबंधिक्रोधमानमायालोभकषायो जीवोऽतर्मुहूर्तकालं विश्रम्य क्रियां-तरमकृत्वा स्वस्थानस्थितो भूत्वेत्यर्थः, पुनरपि त्रिकरणान् कृत्वा अनिवृत्तिकरणकाले मिथ्यात्वप्रकृतिं मिश्रप्रकृतिं सम्यक्त्वप्रकृतिं च क्रमेण नाशयति, वक्ष्यमाणप्रकारेण क्षपयतीत्यर्थः। तथाहि—

अनंतानुबंधिविसंयोजनानंतरमन्तर्मुहूर्तकालपर्यंतं विशुद्ध्यतिशयाभावादसंयतसम्यग्दृष्टिर्वा देशसंयतो वा प्रमत्त-संयतो वा अप्रमत्तसंयतो वा स्वस्थानस्थितो भूत्वा पुनर्दर्शनमोहक्षपणाभिमुखः सन् प्रतिसमयमनंतगुणवृद्ध्या विशुद्धि-मापूर्य दर्शनमोहोपशमनोक्तप्रकारेणाधःप्रवृत्तकरणं कृत्वा अपूर्वकरणप्रथमसमये गुणश्रेणिनिर्जरां कर्तुं प्रारभते। अनंता-नुबंधिविसंयोजकस्य गुणश्रेणिकरणार्थमपकृष्टद्रव्यादसंख्येयगुणं द्रव्यमपकृष्य तद्गुणश्रेण्यायामात्संख्येयगुणहीनगुण-श्रेण्यायामे तात्कालिकापूर्वानिवृत्तिकरणकालद्वयात्साधिके निक्षिपति। सम्यक्त्वोत्पत्त्यादिकरणत्रयकालादुत्तरोत्तरकरण-त्रयकालस्य संख्यातगुणहीनत्वात् तदा अन्यदेव स्थितिखंडमन्यदेव स्थितिबंधनं पल्यसंख्यातैकभागहीनं प्रारभते मिथ्यात्वमिश्रद्रव्ययोर्गुणसंक्रमं च करोति। अपूर्वकरणप्रथमसमये जघन्यं स्थितिसत्त्वमंतःकोटीकोटिसागरोपमप्रमितं पूर्व-स्मात् संख्येयगुणहीनं। तत्रैवोत्कृष्टं स्थितिसत्त्वं जघन्यात्संख्येयगुणं। तथाहि—

एको जीवः पूर्वमुपशमश्रेणिमारुह्य तत्र कर्मणां स्थितिसत्त्वं बहुशः खंडयित्वा ततोऽवतीर्याविलंबितमेव दर्शनमोह-क्षपणायां प्रवृत्तस्तस्य कर्मस्थितिसत्त्वं जघन्यं भवति। तस्तूपशमश्रेणिमनारुह्य दर्शनमोहक्षपणायां प्रवृत्तस्तस्य कर्मस्थि-तिसत्त्वं तस्मात्संख्येयगुणं भवति। तत्र जघन्यस्थितिसत्त्वस्य स्थितिकांडकायामः पल्यसंख्यातभागमात्रः। उत्कृष्टस्थि-तिसत्त्वस्य स्थितिकांडकायामः सागरोपमपृथक्त्वमात्रः। स्थितिकांडकानां स्थित्यनुसारित्वेन प्रवृत्तेः। एवंविधैः सं-ख्यातसहस्रस्थितिकांडकघातैः ततः संख्येयगुणानुभागकांडकघातैः प्रतिसमयमसंख्येयगुणद्रव्यगुणश्रेणिनिर्जरया गुण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्रमविधानेन वापूर्वकरणचरमसमयं प्राप्तः, तत्र कर्मणां स्थितिसत्त्वं तत्प्रथमसमयस्थितिसत्त्वात् संख्येयगुणहीनं भवति। दर्शनमोहोपशमने प्रतिपादितो विशेषः सर्वोऽप्यत्रानुक्तोऽपि द्रष्टव्यः ॥११७॥ अथानिवृत्तिकरणं प्रविष्टस्य कार्यविशेषमाह—

स० चं०—अनंतानुबंधीका विसंयोजन कीएं पीछैं अंतर्मुहूर्तकाल विश्रामकरि अन्य क्रिया न करि तहां पीछैं बहुरि तीन करणनि करि अनिवृत्तिकरणका कालविषैं मिथ्यात्व मिश्र सम्यक्त्व मोहनीकौं क्रमतैं नष्ट करै है। सोई कहिए है—

दर्शन मोहकी क्षपणाके सन्मुख होत संता जीव समय समय अनंतगुणी विशुद्धता युक्त होइ। दर्शन मोहका उपशमनविषैं जैसैं विधान कह्या तैसैं अधःप्रवृत्त करणकरि पीछैं अपूर्व करणकौं प्राप्त भया। तहां प्रथम समय ही गुणश्रेणिका प्रारंभ भया। याके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य है सो अनंतानुबंधी विसंयोजनवालेका गुणश्रेणि द्रव्यतैं असंख्यात गुणा है अर गुणश्रेणि आयाम इहां ताके गुणश्रेणि आयामतैं संख्यात गुणा घाटि है अपूर्व अनिवृत्ति करण कालतैं साधिक जानना। जातैं सम्यक्त्वोत्पत्तिविषैं जे तीन करण हो हैं तिनतैं उत्तरोत्तर तीन करणनिका काल संख्यातगुणा घाटि है। तहां पर्व स्थिति खंडादिकतैं घटता अन्य ही स्थिति खंड वा अनुभाग खंडका प्रारंभ हो है अर अन्य ही स्थितिबंध पल्यका संख्यातवां भाग घटता प्रारंभ हो है। बहुरि मिथ्यात्व अर मिश्रमोहनीके द्रव्यका गुणसंक्रमण करै है। सम्यक्त्व मोहनी रूप परिणमावै है। बहुरि अपूर्व करणका समयविषैं पूर्वतैं संख्यात गुणा घाटि ऐसा अंतः कोटाकोटी सागर प्रमाण जघन्य स्थिति सत्व है। यातैं उत्कृष्ट स्थिति सत्व संख्यात गुणा है। जातैं कोई जीव उपशम श्रेणि चढि तहां बहुत स्थिति खंडनकरि तहांतैं ऊपरि पीछैं शीघ्र ही दर्शन मोहकी क्षपणाका प्रारंभ करै है ताकैं जघन्य स्थिति सत्व हो है। अन्य कोई जीव श्रेणी न चढ्या होइ ताकैं उत्कृष्ट स्थिति सत्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। तहां जघन्य स्थिति सत्वका स्थिति कांडकायाम पल्यके संख्यातवें भागमात्र है। उत्कृष्ट स्थिति सत्वका पृथक्त्व सागर प्रमाण है। जातैं स्थितिके अनुसारि स्थितिकांडक हो है। ऐसैं संख्यात हजार स्थिति कांडक घातनिकरि अर तातैं संख्यात गुणे अनुभाग कांडक घातनिकरि अर समय समय असंख्यात गुणा द्रव्यकी गुण श्रेणी निर्जरा करि अर गुणसंक्रम विधानकरि अपूर्व करणके अंत समयकौं प्राप्त भया तहां कर्मनिका स्थिति अनुभाग सत्व प्रथम समयके तिस स्थिति सत्वतैं (अ) संख्यात गुणा घाटि हो है। और भी दर्शन मोहका उपशम विधानविषैं जो प्ररूपण कीया है सो इहां भी यथासंभव जानना ॥ ११७ ॥

अणियट्टिकरणपढमे दंसणमोहस्स सेसगाण ठिदी।
सायरलक्खपुधत्तं कोडीलक्खगपुधत्तं च ॥ ११८ ॥

अनिवृत्तिकरणप्रथमे दर्शनमोहस्य शेषकानां स्थितिः।
सागरलक्षपृथक्त्वं कोटिलक्षकपृथक्त्वं च ॥ ११८ ॥

सं० टी०— अनिवृत्तिकरणप्रथमसमये दर्शनमोहस्य स्थितिसत्त्वं सागरोपमलक्षपृथक्त्वं। इदं प्रथमं पर्व। पृथक्त्वशब्दोऽत्र बहुत्ववाची, अंतःकोटीत्यर्थः। शेषाणां कर्मणां स्थितिसत्त्वं कोटीलक्षपृथक्त्वं अंतःकोटीकोटीत्यर्थः। अपूर्वकरणकृतसंख्यातसहस्रस्थितिकांडकघातवशादेवंविधस्थितिसत्त्वसंभवात्। अत्र सर्वेषां जीवानां विशुद्धिपरिणामसादृश्येन जघन्योत्कृष्टविकल्पं विना स्थितिसत्त्वमेकादशमेव भवति। अतः परं दर्शनमोहस्य पल्यस्थितिपर्यंतं पल्यसंख्यातैकभागमात्रं स्थितिकांडकं भवति ॥ ११८ ॥ अथानिवृत्तिकरणकाले क्रियमाणं कार्यविशेषमाह—

स० चं०—अनिवृत्ति करणका प्रथम समयविषैं दर्शन मोहका तौ स्थिति सत्व पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण है। इहां पृथक्त्व नाम बहुतका है सो कोटिके नीचैं ऐसा अंतःकोटी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमाण जानना। बहुरि अवशेष कर्मनिका स्थिति सत्व पृथक्त्व लक्ष कोटि सागर प्रमाण है सो कोडाकोडीके नीचैं ऐसा अंतः कोटाकोटी जानना। अपूर्व करणविषैं संख्यात हजार स्थिति कांडक घात कीएं पीछैं इतना अवशेष स्थिति सत्व रहै है। इहां सर्व जीवनिके परिणाम समान हैं तातैं स्थिति सत्वविषैं जघन्य उत्कृष्ट भेद नाही है। बहुरि यातैं परैं दर्शन मोहकी स्थिति पल्य प्रमाण रहै तहां पर्यंत स्थिति कांडकायामका प्रमाण पल्यके संख्यातवे भाग मात्र जानना ॥ ११८ ॥

अमणंठिदिसत्तादो पुधत्तमेत्ते पुधत्तमेत्ते य।
ठिदिखंडेय हवंति हु चउ ति वि एयक्ख पल्लठिदी

अमनःस्थितिसत्त्वतः पृथक्त्वमात्रं पृथक्त्वमात्रं च।
स्थितिकांडके भवंति हि चतुस्त्रि द्वि एकाक्षे पल्यस्थितिः ॥ ११९ ॥

सं० टी०— सागरोपमलक्षपृथक्त्वमात्राद्दर्शनमोहस्य अनिवृत्तिकरणप्रथमसमयभाविनः स्थितिसत्त्वात् संख्यातसहस्रस्थितिकांडकघातवशेनासंज्ञिस्थितिबंधसमं सागरोपमसहस्रमात्रं स्थितिसत्त्वं भवति। ततो बहुषु स्थितिकांडकेषु गतेषु चतुरिंद्रियस्थितिबन्धसमं सागरोपमशतमात्रं स्थितिसत्त्वं भवति। ततो बहुषु स्थितिखंडेषु पतितेषु त्रींद्रियस्थितिबंधसमं पंचाशत्सागरोपमप्रमितं स्थितिसत्त्वं भवति। ततो बहुषु स्थितिखण्डेषु गतेषु द्वींद्रियस्थितिबन्धसमं पंचविंशतिसागरोपममात्रं स्थितिसत्त्वं भवति। ततो बहुषु स्थितिखंडेषु पतितेषु एकेंद्रियस्थितिबंधसमं एकसागरोपमप्रमितं स्थितिसत्त्वं भवति। ततो बहुषु स्थितिखंडेषु पतितेषु पल्यमात्रं स्थितिसत्त्वं भवति। इदं द्वितीयं पर्व ॥ ११९ ॥

स० चं०— दर्शन मोहकी पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण स्थिति प्रथम समयविषैं संभवै है तातैं परैं संख्यात हजार कांडक भएं असंज्ञीका बंध समान हजार सागर स्थिति सत्व रहै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। ताके पीछैं बहुत २ स्थिति कांडक भएं क्रमतैं चौंद्री तेंद्री वेंद्री एकेंद्रीका स्थिति बंधके समान सौ सागर पचास सागर पचीस सागर एक सागर स्थिति सत्व हो है। पीछैं बहुत स्थिति खंड भएं पल्य प्रमाण स्थिति सत्व हो है। ऐसैं यहु दूसरा पर्व भया॥ ११९॥

पल्लट्ठिदिदो उवरिं संखेज्जसहस्समेत्ताठिदिखंडे।
दूरावकिट्ठिसण्णिद ठिदिसत्तं होदि णियमेण॥१२०॥

पल्यस्थितित उपरि संख्येयसहस्रमात्रस्थितिखंडे।
दूरापकृष्टिसंज्ञितं स्थितिसत्त्वं भवति नियमेन॥ १२०॥

सं० टी०— तस्मात्पल्यमात्रस्थितिसत्त्वादुपर्युपरि पल्यसंख्यातबहुभागमात्रायामेषु संख्यातसहस्रस्थितिकांडकेषु निपतितेषु दूरापकृष्टिसंज्ञं स्थितिसत्त्वं नियमेन भवति। का दूरापकृष्टिर्नामेति चेदुच्यते—पल्ये उत्कृष्टसंख्यातेन भक्ते यल्लब्धं तस्मादेकैकहान्या जघन्यपरिमितासंख्यातेन भक्ते पल्ये यल्लब्धं तस्मादेकोत्तरवृद्ध्या यावंतो विकल्पास्तावन्तो दूरापकृष्टिभेदा:, तेषु कश्चिदेव विकल्पो जिनदृष्टभावोऽस्मिन्नवसरे दूरापकृष्टिसंज्ञितो वेदितव्यः। इदं तृतीयं पर्व॥१२०॥

स० चं० – तातैं ऊपरि पल्यकौं संख्यातका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र आयाम धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थिति खंड भएं दूरापकृष्टिनामा स्थिति सत्व नियमकरि हो है। पल्यकौं उत्कृष्ट संख्यातका भाग दीएं जो प्रमाण आवै तातैं एक एक घटता क्रमकरि पल्यकौं जघन्य परीतासंख्यातका भाग दीएं जो प्रमाण आवै तहां पर्यंत दूरापकृष्टिके सर्व भेद जानने। तिनिविषैं इहां कोई संभवता भेद जानना। यहु तीसरा पर्व भया॥ १२०॥

पल्लस्स संखभागं तस्स पमाणं तदो असंखेज्ज। १६१

२१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागपमाणे खंडे संखेज्जसहस्सगेसु तीदेसु ॥१२१॥
सम्मस्स असंखाणं समयपवद्धाणुदीरणा होदि ।
तत्तो उवरिं तु पुणो बहुखंडे मिच्छउच्छिट्ठं ॥१२२॥

पल्यस्य संख्यभागं तस्य प्रमाणं ततः असंख्येयं ।
भागप्रमाणे खंडे संख्येयसहस्रकेषु अतीतेषु ॥ १२१ ॥
सम्यक्त्वस्यासंख्यानां समयप्रबद्धानामुदीरणा भवति ।
तत उपरि तु पुनः बहुखंडे मिथ्योच्छिष्टम् ॥ १२२ ॥

सं० टी०— तस्य दूरापकृष्टिस्थितिसत्त्वस्य प्रमाणं पल्यसंख्यातैकभागमात्रं भवति प ततो दूरापकृष्टि-
५।५।५।५
स्थितिसत्त्वात्पल्यासंख्यातबहुभागमात्रायामेषु स्थितिकांडेषु संख्यातसहस्रेष्वतीतेषु सम्यक्त्वप्रकृतेरपकृष्टद्रव्यस्य असंख्या-तसमयप्रबद्धमात्रमुदीरणाद्रव्यमुदयावल्यां निक्षिप्यते । तथाहि—

सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यमिदं स a। १२ – अस्मादपकृष्टं पल्यासंख्यातभागेन खण्डयित्वा तद्बहुभागद्रव्यं उपरितन-
७। ख। १७। गु

१ ^
स्थितौ देयं स a। १२ – प
a
७। ख। १७। गु ओ प
शेषैकभागं पुनः पल्यासंख्यातभागेन भक्त्वा तद्बहुभागद्रव्यं गुणश्रेण्यां देयं-

१ ^ १ ^ a
स a। १२ – प प
a a
७। ख। १७। गु। ओ प। प
a a

१ ^
प १
शेषैकभागद्रव्यमुदयावल्यां देयं स a। १२ – a पल्यभागहारभूतासं-
७। ख। १७। गु ओ प प
a a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख्यातस्य बाहुल्येन पल्यद्वये अपकर्षणभागहारे वा अपवर्तितेप्यसंख्यातगुणकारसंभवात्, इतः परं सर्वत्र पल्यासंख्यात-भागखंडितमेव उदयावल्यां दीयते । ततो मिथ्यात्वप्रकृतेः पल्यासंख्यातबहुभागमात्रायामेषु बहुषु गतेषु स्थितिकांडकेषु चरमकांडकचरमफालिपतनसमये मिथ्यात्वस्य उच्छिष्टावलिमात्रा निषेका अवशिष्यंते । अन्यत्कांडकद्रव्यं सर्वं सम्यग्मिथ्यात्वसम्यक्त्वप्रकृतिरूपेण परिणतमित्यर्थः । आवलिमात्रनिषेकाश्च समयं प्रति द्विसमयोना गलंति॥१२१–१२२॥

स० चं०— तिस दूरापकृष्टि नामा स्थिति सत्वका प्रमाण पल्यके संख्यातवे भागमात्र जानना । तातैं परैं पल्यकौं असंख्यातका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र आयाम धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यकौं अपकर्षण कीया तिसविषैं असंख्यात समयप्रबद्धमात्र उदीरणा द्रव्यकौं उदयावलीविषैं दीजिए है । सोई कहिए है—

सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां बहुभाग तौ जैसैं थे तैसैं ही रहैं अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं देना । अवशेष एक भागकौं बहुरि पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषैं देना अर एक भाग उदयावलीविषैं देना । सो इहां उदयावलीविषैं दीया द्रव्यकौं उदीरणा द्रव्य जानना सो पूर्वैं तौ उदयावलीविषैं द्रव्य देनेकै अर्थि असंख्यात लोकका भाग देनेतैं द्रव्यका प्रमाण स्तोक आवै था, इहांतैं लगाय परैं सर्वत्र पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देना सो भागहार घटता होनेतैं द्रव्यका प्रमाण एक भागविषैं भी असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है ऐसा जानना । बहुरि तातैं मिथ्यात्व प्रकृतिके पल्यकौं असंख्यातका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र आयाम धरैं ऐसे बहुत स्थिति खंड भएं इस मिथ्यात्व प्रकृतिके अन्त कांडककी अन्त फालि पतनका समयविषैं मिथ्यात्वके उच्छिष्टावलीमात्र निषेक अवशेष रहैं हैं । अन्य सर्व मिथ्यात्व प्रकृतिका द्रव्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

है सो मिश्रमोहनी वा सम्यक्त्व मोहनी रूप परिणमै है। जे आवलीमात्र निषेक रहैं है ते समय समय प्रति एक एक निषेक रूप होइ यावत् दो समय अवशेष रहैं तावत् क्रमतैं निर्जरै हैं॥ १२१–१२२

जत्थ असंखेज्जाणं समयपबद्धाणुदीरणा तत्तो।
पल्लासंखेज्जदिमो हारो णासंखलोगमिदो॥ १२३॥

यत्रासंख्येयानां समयप्रबद्धानामुदीरणा ततः।
पल्यासंख्येयः हारो नासंख्यलोकमितः॥ १२३॥

सं॰ टी॰—यस्मिन्नवसरे असंख्येयानां समयप्रबद्धानां उदीरणा उपरितनस्थितिस्थितानामुदयावलिप्रवेशो भवति तत्समयादारभ्य उत्तरकाले पल्यासंख्यातभागमात्र एव उदयावलिनिक्षेपार्थः भागहारो नासंख्यातलोकप्रमितः॥१२३॥

स॰ चं॰—जिस अवसर विषैं असंख्यात समयप्रबद्धकी उदीरणा होइ ऊपरिके निषेकानिका द्रव्य उदयावलीविषै प्राप्त होइ तिस समयतैं लगाय उत्तर कालविषैं उदयावलीविषैं द्रव्य देनेके अर्थि भागहार पल्यका असंख्यातवां भागमात्र ही जानना। पूर्ववत् असंख्यात लोक मात्र (न) जानना॥ १२३॥

मिच्छुच्छिट्ठादुवरिं पल्लासंखेज्जभागिगे खंडे।
संखेज्जे समतीदे मिस्सुच्छिट्ठं हवे णियमा॥१२४॥

मिथ्योच्छिष्टादुपरि पल्यासंख्येयभागगे खंडे।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्येये समतीते मिश्रोच्छिष्टं भवेत् नियमात् ॥ १२४ ॥

सं० टी०— यस्मिन् समये मिथ्यात्वप्रकृतेरुच्छिष्टावलिमात्रमवशिष्यते शेषा सर्वापि स्थितिर्बहुभिः स्थितिकांडकैः खंडिता भवति, तस्मात्समयादारभ्य सम्यग्मिथ्यात्वसम्यक्त्वप्रकृत्योः स्थितौ पल्यासंख्यातभागबहुभागायामेषु संख्यातसहस्रस्थितिकांडकेषु गतेषु चरमकांडकचरमफालिपतनसमये मिश्रप्रकृतेरुच्छिष्टावलिमात्रमवशिष्यते ॥ १२४ ॥

स० चं०— मिथ्यात्वकी उच्छिष्टावलीमात्र स्थिति अवशेष रहनेके समयतैं लगाय मिश्रमोहनीकी स्थितिविषैं पल्यकौं असंख्यातका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र आयाम धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं तहां अंत कांडककी अंतफालिका पतनविषैं मिश्र मोहनीके निषेक उच्छिष्टावलीमात्र अवशेष रहै हैं ॥ १२४ ॥

मिस्सुच्छिट्ठे समये पल्लासंखेज्जभागिगे खंडे ।
चरिमे पडिदे चेट्ठदि सम्मस्सडवस्सठिदिसत्तो ॥ १२५ ॥

मिश्रोच्छिष्टे समये पल्यासंख्येयभागगे खंडे ।
चरमे पतिते चेष्टते सम्यक्त्वस्याष्टवर्षास्थितिसत्त्वम् ॥ १२५ ॥

सं० टी०— यस्मिन् समये मिश्रप्रकृतेश्चरमकांडकचरमफालिपतने आवलिमात्रस्थितिरवशिष्यते तस्मिन्नेव समये सम्यक्त्वप्रकृतिस्थितौ पल्यासंख्यातभागबहुभागमात्रायामेषु संख्यातसहस्रस्थितिकांडकेषु गतेषु चरमकांडकचरमफालिपतने अष्टवर्षमात्रस्थितिसत्त्वमवशिष्य तिष्ठति ॥ १२५ ॥

स० चं०— जिस समय मिश्रमोहनीकी उच्छिष्टावलीमात्र स्थिति रहै है तिसही समय विषैं सम्यक्त्व मोहनीकी स्थितिविषैं पल्यकौं असंख्यातका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र आयाम धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थिति खंड व्यतीत होनेतैं इहां तिस सम्यक्त्व मोहनी-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का अष्टवर्ष प्रमाण स्थिति सत्व अवशेष रहै है । भावार्थ यहु–मिश्रमोहनीकी उच्छिष्टावली मात्र स्थिति रहनेका अर सम्यक्त्व मोहनीकी आठ वर्ष मात्र स्थिति रहनेका एक ही काल है ॥ १२५ ॥

मिच्छस्स चरमफालिं मिस्से मिस्सस्स चरिमफालिं तु
संछुहदि हु सम्मत्ते ताहे तेसिं च वरदव्वं ॥ १२६ ॥

मिथ्यस्य चरमफालिं मिश्रे मिश्रस्य चरमफालिं तु ।
संक्रामति हि सम्यक्त्वे तस्मिन् तेषां च वरद्रव्यं ॥ १२६ ॥

सं० टी०— मिथ्यात्वप्रकृतिस्थितौ पल्यसंख्यातभागबहुभागमात्रायामेषु संख्यातसहस्रस्थितिकांडकेषु गतेषु चरमकांडकचरमफालिं सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतौ निक्षिपति । सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतिस्थितौ पल्यसंख्यातभागबहुभागमात्रायामेषु संख्यातसहस्रस्थितिकांडकेषु गतेषु चरमकांडकचरमफालिं सम्यक्त्वप्रकृतौ निक्षिपति । तस्मिन् चरमफालिपतनसमये तयोर्मिश्रसम्यक्त्वप्रकृत्योर्द्रव्यमुत्कृष्टं भवति ॥ १२६ ॥

स० चं०–मिथ्यात्व प्रकृतिका अंतकांडककी अन्तफालि है सो जिससमयविषैं मिश्रमोहनीविषैं संक्रमण होइ तिससमयविषैं मिश्रमोहनीका द्रव्य उत्कृष्ट हो है। अर मिश्रमोहनी अंतकांडककी अंतफालिका द्रव्य जिससमय सम्यक्त्व मोहनीविषैं संक्रमण होइ तिस समयविषैं सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्य उत्कृष्ट हो है ॥ १२६ ॥

जदि होदि गुणिदकम्मो दव्वमणुक्कस्समण्णहा तेसिं
अवरठिदी मिच्छदुगे उच्छिट्ठे समयदुगसेसे ॥१२७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि भवति गुणितकर्मा द्रव्यमनुत्कृष्टमन्यथा तेषाम् ।
अवरास्थितिर्मिथ्यद्विके उच्छिष्टसमयद्विकशेषे ॥ १२७ ॥

सं० टी०— अयं दर्शनमोहक्षपक आत्मा यदि गुणितकर्मांशः उत्कृष्टयोगादिसामग्रीवशेन उत्कृष्टकर्मसंचयवान् भवति तदा तयोर्द्रव्यमुत्कृष्टं भवतीति संबंधः, अन्यथा यद्युत्कृष्टसंचयवान्न भवति तदा तयोर्द्रव्यमनुत्कृष्टं भवति । मिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्वप्रकृत्योरुच्छिष्टावल्यां समयद्विके शेषे सति जघन्यस्थितिर्भवति । उदयावलिचरमनिषेको भवतीत्यर्थः ॥

स० चं०— यहु दर्शन मोहका क्षय करनेवाला जीव जो गुणितकर्मांश कहिए उत्कृष्ट कर्मसंचय युक्त होइ तौ ताकै तिनि दोऊ प्रकृतिनिका द्रव्य तिस समयविषैं उत्कृष्ट हो है अर जो वह जीव उत्कृष्ट कर्मका संचययुक्त न होइ तौ ताकैं तिनिका द्रव्य तहां अनुत्कृष्ट हो है । बहुरि मिथ्यात्व अर मिश्रमोहनीकी स्थिति उच्छिष्टावलीमात्र रही सो क्रमतैं एक एक समय विषैं एक एक निषेक गलि तहां दोय समय अवशेष रहैं जघन्य स्थिति हो है । भावार्थ यहु—तहां उदयावलीका अंत निषेक मात्र स्थिति सत्व हो है ॥ १२७ ॥

मिस्सदुगचरिमफाली किंचूणदिवड्ढसमयपबद्धपमा ।
गुणसेढिं करिय तदो असंखभागेण पुव्वं व ॥ १२८ ॥

मिश्रद्विकचरमफालिः किंचिदूनद्व्यर्धसमयप्रबद्धप्रमा ।
गुणश्रेणिं कृत्वा ततः असंख्यभागेन पूर्वं वा ॥ १२८ ॥

सं० टी०—मिश्रसम्यक्त्वप्रकृत्योश्चरमफालिद्वयद्रव्यं किंचिन्न्यूनद्व्यर्धगुणहानिमात्रसमयप्रबद्धप्रमाणं वा । तथाहि सम्यग्मिथ्यात्वद्रव्यमिदं स a । १२ – a / ७ । ख । १७ । गु अस्मिन् मिथ्यात्वद्रव्ये स a । १२ – गु १ / ७ । ख । १७ । गु a १– a संख्यातसहस्रस्थि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिकांडकगुणसंक्रमविधानेनोच्छिष्टावलिमात्रनिषेकान् वर्जयित्वा निक्षिप्ते सम्यग्मिथ्यात्वद्रव्यमियद्भवति—
स ३ । १२ – अत्रापि संख्यातसहस्रस्थितिकांडकगुणसंक्रमविधानेन चरमकांडकचरमफालिं विहाय इतरकांडकद्रव्यं
७ । ख । १७
सर्वं सर्वद्रव्यासंख्यातैकभागमात्रं स । ३ १२ – ७ । ख । १७ । ३ सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्ये स ३ । १२– ७ । ख । १७ । गु स्वस्याष्टवर्षस्थितेरुपरि
चरमकांडकचरमफालिद्रव्यं मुक्त्वा इतरसर्वकांडकद्रव्यमपि गुणसंक्रमकालद्विचरमसमयपर्यंतं निक्षिप्य तच्चरमसमये मिश्र·
चरमफालिद्रव्यं स ३ । १२ – ३ १ ७ । ख १७ ३ सम्यक्त्वचरमफालिद्रव्यं स ३ । १२ – ३ १ ७ । ख । १७ गु ३ एतद्द्रव्यद्वये मिलिते एवं स ३ १२– ७ । ख । १७
इदं सर्वं मनस्यवधार्याचार्यैः "मिस्सदुगचरिमफाली किंचूणदिवड्ढसमयपबद्धपमा" इत्युक्तं । अस्माच्चरमफालिद्वयद्रव्या-
त्पल्यसंख्यातैकभागं स ३ । १२ – ७ । ख १७ प ३ गृहीत्वा सम्यक्त्वप्रकृतेरवशिष्टाष्टवर्षमात्रस्थितौ उदयावलिप्रथमसमयादारभ्य
प्रागारब्धगलितावशेषगुणश्रेणिशीर्षपर्यंतं प्रतिनिषेकमसंख्यातगुणितक्रमेण निक्षिप्य तदनंतरोपरितनैकसमयेऽप्यसंख्या-
तगुणं । इतः प्रभृत्यवस्थितगुणश्रेणिप्रतिज्ञानात्पुनस्तद्बहुभागद्रव्यमिदं स ३ । १२ – प ३ १ ७ । ख । १७ । प ३ ॥ १२८ ॥

स० चं– मिश्र मोहनी अर सम्यक्त्व मोहनीकी जे अंतकी दोय फालि तिनिका द्रव्य किंचित् ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है सोई कहिए है—

मिश्रमोहनीका जो द्रव्य ताविषैं उच्छिष्टावली विना अन्य सर्व मिथ्यात्व प्रकृतिके द्रव्यकौं संख्यात हजार स्थिति कांडक अर गुणसंक्रम विधान करि निक्षेपण कीया तहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो मिथ्या मिश्रमोहनीका द्रव्य भया तहां भी संख्यात हजार स्थिति कांडक अर गुणसंक्रमण विधान करि जो अंत कांडककी अन्तफालिका द्रव्य भया सो तौ जुदा राख्या अर इसके अन्य कांडक द्रव्य सर्व द्रव्यके असंख्यातवें भागमात्र हैं ताका सम्यक्त्व मोहनीविषैं निक्षेपण कीया अर सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्य अपना आठ वर्षकी स्थितिके उपरिवर्ती जो अन्त कांडककी अंतफालिका द्रव्य ताकौं छोडि और सर्व कांडकनिका द्रव्यकौं भी संक्रमणकाल का द्विचरम समय पर्यंत तहां अष्टवर्षमात्र अवशेष स्थितिविषैं निक्षेपण करि तिस संक्रमण कालका अंतसमयविषैं मिश्र मोहनकी अर सम्यक्त्व मोहनीकी अंतकी जे दोय फालि तिनिका द्रव्य मिलाएं किंचित् ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण द्रव्य हो है। भावार्थ यहु-मिश्रमोहनीका गुणसंक्रम करि यावत् सम्यक्त्व मोहनी रूप परिणमै तावत् गुणसंक्रम काल कहिए ताका अंतसमयविषैं मिश्रमोहनीका उच्छिष्टावलीमात्र सम्यक्त्व मोहनीका अष्टवर्षमात्र निषेक विना अन्य सर्व द्रव्य तिनिकी अंत दोय फालिनिका जानना सो किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है। सो अष्टवर्ष स्थिति अवशेष करणके समयविषैं इनि दोय फालिनिके पतन करनेके अर्थि तिनिके द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां एक भागकौं उदयादि अवस्थित गुणश्रेणि आयामविषैं देना सो उदयावलीका प्रथम समयतैं लगाय पूर्वैं जो गलितावशेष गुणश्रेणि आयामका प्रारंभ कीया था तामैं व्यतीत भएं पीछैं जो अवशेष गुणश्रेणि आयाम रह्या ताका अंत पर्यंत अर एक समय उपरितन स्थितिका तिनिविषैं देना।

भावार्थ—इहांतैं पहलैं तौ उदयावलीतैं वाह्य गुणश्रेणि आयाम था अब इहांतैं लगाय उदय १६९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रूप वर्तमान समयतैं लगाय ही गुण श्रेण्यायाम भया तातैं याकौं उदयादि कहिए है। अर पूर्वैं तो समय व्यतीत होतैं गुणश्रेणि आयाम घटता होता जाता था अब एक समय व्यतीत होतैं उपरितन स्थितिका एक समय मिलाय गुणश्रेणि आयामका प्रमाण समय व्यतीत होतैं भी जेताका तेता रहै। तातैं अवस्थित कहिए तातैं याका नाम उदयादि अवस्थिति गुणश्रेण्यायाम है ताके निषेकनिविषैं सो द्रव्य असंख्यातगुणा क्रम लीएं दीजिए है ऐसैं तिन दोऊ फालिनिके द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग तो गुणश्रेणिविषैं दीया।

सेसं विसेसहीणं अडवस्सुवरिमठिदीए संखुद्धे।
चरमाउलिं व सरिसी रयणा संजायदे एत्तो॥ १२९॥

शेषं विशेषहीनमष्टवर्षस्योपरिस्थित्यां संक्षुब्धे।
चरमावलिरिव सदृशी रचना संजायतेऽतः॥ १२९॥

सं० टी०— सेसं विसेसहीणक्रममित्यादि गुणश्रेण्यायामांतर्मुहूर्तकालन्यूनाष्टवर्षमात्रोपरितनस्थितौ 'अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे इत्यादि' विधानेनानीतं प्रथमनिषेकद्रव्यं स ∂ । १२ –१६   १ ∩ इदमुपरितनप्रथमस्थितिप्रथ-
७ । ख । १७ । व ८–१६–व ८
२
मसमये निक्षिपेत्। पुनर्द्वितीयादिसमयेष्वष्टवर्षचरमसमयपर्यंतं एकादश विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत। एवं निक्षिप्ते गुणश्रेणिचरमसमयद्रव्यात्तदनंतरोपरितनस्थितिप्रथमसमयद्रव्यमसंख्यातगुणितं भवति पल्यासंख्यातबहुभागद्रव्यस्य तत्र निक्षेपात्।

स०चं०—अवशेष बहुभागनिके द्रव्यकौं गुणश्रेणि आयाममात्र अंतर्मुहूर्त घाटि अष्ट वर्ष प्रमाण जो उपरितन स्थिति ताके निषेकनिविषैं 'अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे' इत्यादि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधानकरि प्रथम निषेकनिविषैं द्रव्य निक्षेपण करै अर तातैं द्वितीयादि निषेकनिविषैं समान प्रमाण रूप चय घटता क्रमकरि निक्षेपण करै है ऐसैं ही दीएं गुणश्रेणिके अंत निषेकका द्रव्यतैं उपरितन स्थितिके प्रथम निषेकका द्रव्य असंख्यात गुणा हो है। जातैं इहां बहुभाग का निक्षेपणकरै है अर स्थितिका प्रमाण स्तोक है ॥ १२९ ॥

अडवस्सादो उवरिं उदयादिअवट्ठिदं च गुणसेढी।
अंतोमुहुत्तियं ठिदिखंडं च य होदि सम्मस्स ॥

अष्टवर्षादुपरि उदयाद्यवस्थितं च गुणश्रेणी ।
अंतर्मुहूर्तिकं स्थितिखंडं च च भवति सम्यस्य ॥ १३० ॥

सं० टी०— सम्यक्त्वप्रकृतेरष्टवर्षमात्रस्थितिकरणसमयादूर्ध्वमपि न केवलमष्टवर्षमात्रस्थितिकरणसमय एवोदयाद्यवस्थितिगुणश्रेणिरित्यर्थः, सम्यक्त्वप्रकृतेरन्तर्मुहूर्तायामं स्थितिखंडं भवति ॥ १३० ॥

स० चं०—सम्यक्त्व मोहनीकी अष्ट वर्ष स्थिति करनेके समयतैं लगाय उपरि सर्व समयनिविषैं उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणिआयाम है। बहुरि सम्यक्त्व मोहनीकी स्थितिविषैं स्थिति खंड अंतर्मुहूर्तमात्र आयाम धरै है । इहांतैं अब एक एक स्थिति कांडककरि अंतर्मुहूर्त अंतर्मुहूर्त स्थिति घटाइए है ॥ १३० ॥

बिदियावलिस्स पढमे पढमस्संते च आदिमणिसेये।
तिट्ठाणेणंतगुणेणूणकमोवट्टणं चरमे ॥ १३१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीयावलेः प्रथमे प्रथमस्यांते चादिमनिषेके ।
त्रिस्थानेनंतगुणेनोनक्रमापवर्तनं चरमे ॥ १३१ ॥

सं० टी०— यस्मिन् समये सम्यक्त्वप्रकृतेरष्टवर्षमात्रस्थितिमवशेषयन् चरमकांडकचरमफालिद्वयं पातयति तस्मिन्नेव समये सम्यक्त्वप्रकृत्यनुभागसत्त्वमतीतानंतरसमयनिषेकानुभागसत्त्वादनंतगुणहीनमवशिष्यते । तद्यथा—

सम्यक्त्वप्रकृतेश्चरमकांडकद्विचरमफालिद्वयपतनपर्यंतं लतादारुसमस्थानानुभागसत्त्वं कांडकघातवशेनानंतगुणहीनमायातं । पुनश्चरमफालिद्वयपतनसमये अनंतगुणहान्यापकृष्टा लतासमानैकस्थानं सम्यक्त्वप्रकृत्यनुभागसत्त्वमपजनिष्ट इतः प्रभृत्यंतर्मुहूर्तकालसाध्योऽनुभागकांडकघातो नास्ति किंतु प्रतिसमयमनंतगुणहान्यानुभागापवर्तनं प्रवर्तते । अतीतानंतरसमयनिषेकानुभागसत्त्वा ९ ना दिदानीमष्टवर्षावशेषकरणप्रथमसमये उदयावल्युपरितनावलिप्रथमनिषेकानुभागस-

१ ‿

त्त्वमनंतगुणहीनं ९ ना इदमवशिष्टं शेषा बहुभागाः ९ ना ख अपवर्तिताः खंडिताः । तदानींतनशुद्धिविशेषमाहात्म्या-

ख ख

द्विनाशिता इत्यर्थः । तथा तस्मिन्नेव समये द्वितीयावलिप्रथमनिषेकानुभागसत्त्वादुदयावलिचरमनिषेकानुभागसत्त्वमनं-

१ ___ ‿

तगुणहीनमवशिष्यते ९ । ना शेषास्तद्बहुभागाः अपवर्तिताः ९ ना ख ख तथा तस्मिन्नेव समये उदयावलिचरमनिषे-

ख ख ख ख

कानुभागसत्त्वात्तत्प्रथमनिषेकानुभागसत्त्वमनंतगुणहीनमवशिष्यते ९ ना शेषास्तद्बहुभागा अपवर्तिता—

१ ___ ‿ ___ ख ख ख

९ ना ख ख ख एवमनंतगुणहीनमनुभागापवर्तनमष्टवर्षद्वितीयादिसमयेष्वपि प्रतिसमयमनंतगुणक्रमेणाष्टवर्षस्थितौ

ख ख ख

चरमे यथाधिकावलिं यावन्न प्राप्नोति तावज्ज्ञातव्यं । उच्छिष्टचरमावल्यां तु अतीतानंतरसमयनिषेकानुभागसत्त्वादुदयावलिप्रथमनिषेकानुभागसत्त्वमनंतगुणहीनं तस्मात्तदनंतरसमये उदयनिषेकानुभागसत्त्वमनंतगुणहीनं । एवं प्रतिसमयमनंतगुणहीनक्रमेणोच्छिष्टावलिचरमसमयपर्यंतमनुभागापवर्तनं ज्ञातव्यं ॥ १३१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं—जिस समयविषैं सम्यक्त्व मोहनकी अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष राखी अर मिश्रमोहनी सम्यक्त्व मोहनीका अंतकांडककी दोय फालिका पतन भया तिस ही समयविषैं सम्यक्त्व मोहनीका अनुभाग पूर्व समयके अनुभागतैं अनंत गुणा घटता अनुभाग अवशेष रहै है। सोई कहिए है—

सम्यक्त्व मोहनीका अंतकांडककी द्विचरम फालिपतन समय जो अष्ट वर्ष स्थिति करनेका समयतैं पूर्व समय तहां पर्यंत तो लता दारु रूप द्विस्थानगत अनुभाग है सो अनुभाग कांडक घाततैं अनंतगुणा घटता भया। बहुरि यहु चरम फालि पतन समय जो अष्ट वर्ष स्थिति करनेका समय तिस विषैं अनंतगुणा घटता होइ लता समान एक स्थानकौं प्राप्त अनुभाग भया। इहांतैं लगाय जो पूर्वैं अंतर्मुहूर्त कालकरि अनुभाग कांडकाघात होता था ताका अभाव भया अर समय समय प्रति अनंतगुणा घटता क्रम लीएं अनुभागका अपवर्तन होने लगा तहां अनंतरवर्ती अष्ट वर्ष करनेके समयतैं जो पूर्व समय तीहिविषैं निषेकनिका जो अनुभाग सत्व था तातैं अनंतगुणा घटता अष्ट वर्ष स्थिति करनेका समयविषैं उदयावलीके उपरिवर्ती जो उपरितनावली ताके प्रथम निषेकनिका अनुभाग सत्व अवशेष रहै है। अवशेष अनंत बहुभागरूप अनुभागका विशुद्धता विशेषतैं अपवर्तन भया, नाश भया। बहुरि तिस ही समयविषैं उदयावलीके अंतानिषेकका अनुभागसत्व तिस अपने उपरिवर्ती उपरितनावलीका प्रथम निषेकका अनुभाग सत्त्वतैं अनंतगुणा घटता रहै है। अवशेषका नाश हो है। बहुरि तातैं अनंतगुणा घटता उदयावलीके प्रथम निषेकका अनुभाग सत्व रहै है। अवशेषका नाश हो है। बहुरि तातैं अनंतगुणा घटता अष्ट वर्ष करनेके सम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यतैं लगाय अनंतरवर्ती आगामी समयविषैं अनंतगुणा घटता अनुभाग सत्व हो है ऐसैं समय समय प्रति अनंतगुणा घटता अनुक्रमकरि उच्छिष्टावलीका अंतसमय पर्यंत अनुभागका अपवर्तन जानना ॥ १३१ ॥

अडवस्से उवरिम्मि वि दुचरिमखंडस्स चरिमफालित्ति।
संखातीदगुणक्कम विसेसहीणक्कमं देदि ॥ १३२ ॥

अष्टवर्षात् उपरि अपि द्विचरमखंडस्य चरमफालीति।
संख्यातीतगुणक्रमं विशेषहीनक्रमं ददाति ॥ १३२ ॥

सं० टी०— मिश्रद्विकचरमफालिद्रव्यं सम्यक्त्वप्रकृतिस्थितेरष्टवर्षमात्रावशेषकरणसमये उदयसमयाद्यवस्थितिगुणश्रेण्यायामे प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेणांतर्मुहूर्तोनाष्टवर्षमात्रोपरितनस्थितौ च विशेषहीनक्रमेण निक्षिप्तं तथोपर्यपि प्रथमकांडकप्रथमफालिपतनसमयात्प्रभृति द्विचरमकांडकचरमफालिपतनसमयपर्यंतं उदयाद्यवस्थितिगुणश्रेण्यायामे प्रतिनिषेकमसंख्यातगुणितक्रमेणांतर्मुहूर्त्तोनाष्टवर्षमात्रोपरितनस्थितौ विशेषोनक्रमेणापकृष्टद्रव्यं फालिद्रव्यं च निक्षेप्तव्यं ॥ १३२ ॥

स० चं०—जैसैं अष्टवर्ष स्थिति करनेके समयविषैं मिश्र मोहनी सम्यक्त्व मोहनीकी अंत दोय फालिनिके द्रव्यकौं उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणि आयामविषैं अर तातैं उपरिवर्ती उपरितन स्थितिविषैं देनेका विधान पूर्वै कह्या तैसैं ही तिस अष्टवर्ष स्थिति करनेके समयतैं ऊपर भी जे समय तिनिविषैं अंतर्मुहूर्त आयाम धरैं कांडक प्रारंभ भएं तिनिविषैं प्रथम कांडककी प्रथम फालिका पतन रूप जो प्रथम समय तातैं लगाय द्विचरम कांडककी अंत फालिका पतन समय पर्यंत गुणश्रेणि आदिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य ताका अर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थिति घटावनेका अर्थि ग्रह्या स्थिति कांडककी फालिका द्रव्य ताकी उदयादि अवस्थित गुणश्रेणि आयामविषैं असंख्यातगुणा क्रमलीएं अर अंतर्मुहूर्त घाटि अष्टवर्ष प्रमाण उपरितन स्थितिविषैं चय घटता क्रमलीएं निक्षेपण हो है ॥ १३२ ॥ अब इहां स्पष्ट अर्थ जाननेके अर्थि अष्ट वर्ष करनेका समयतैं पहले समयविषैं वा अष्टवर्ष करनेके समयविषैं आगामी समयनिविषैं संभवता विधान कहिए है—

अडवस्से संपाहियं पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं ।
उवरिं पुण संपाहियं असंखसंखं च भागं तु ॥ १३३ ॥

अष्टवर्षे संप्रहितं पूर्वस्मात् असंख्यसंगुणितं ।
उपरि पुनः संप्रहितं असंख्यसंख्यं च भागं तु ॥ १३३ ॥

सं० टी०— सम्यक्त्वप्रकृतेरष्टवर्षावशेषकरणसमयात्प्राक्तनानंतरसमये मिश्रसम्यक्त्वप्रकृतिद्विचरमफालिपतनयोग्ये सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यमिदं स ∂ । १२ – ७ । ख । १७ । गु यद्यपि गुणसंक्रमकालप्रथमसमयादारभ्य तत्कालचरमसमयपर्यंतं प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेण गुणसंक्रमद्रव्यमायाति स ∂ । १२ – ∂ ७ । ख । १७ गु तथापि गुणसंक्रमसामान्यविवक्षया सम्यक्त्वप्रकृतिसत्त्वद्रव्यं लिखितं स ∂ । १२ – ७ । ख । १७ गु इदं ' दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा ' इत्यनेन विधानेन उदयप्रथमनिषेकादारभ्य विशेषहीनक्रमेण नानागुणहानिषु विद्यते इति तथान्यासीकुर्यात्—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नानागुणहानि

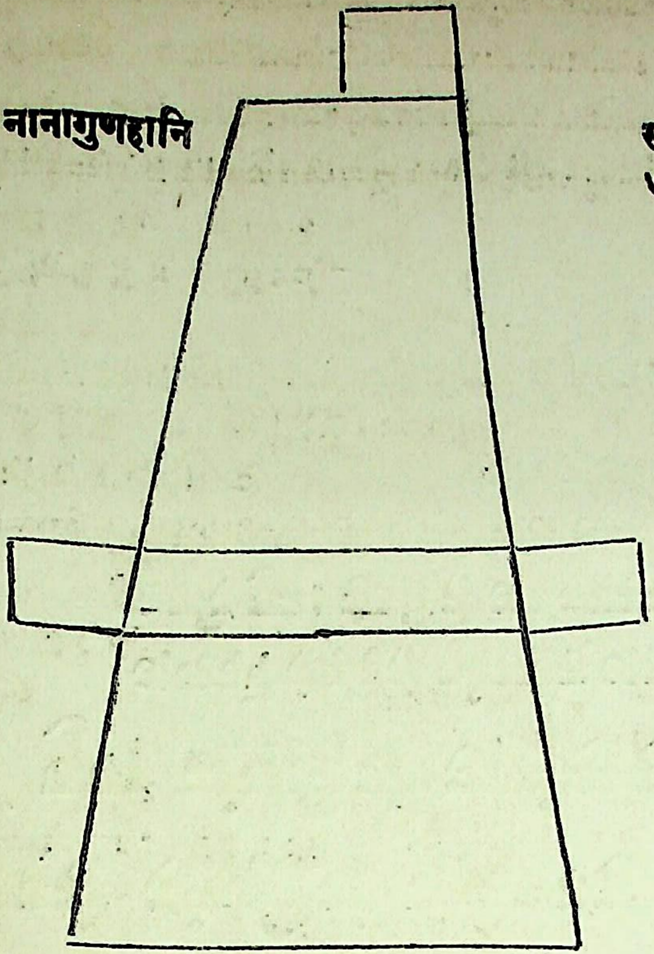

चरमफालि

1
स a । १२– १६ । व ८
७ । ख १७ । गु । १२ । १६

०
०
०

स a । १२– १६– २ गृ
७ । ख । १७ । गु । १२ १६

१
स a । १२– १६– २ गृ
७ । ख । १७ । गु । १२ १६

०
०
०

स a । १२– १६– १
७ । ख । १७ । गु १२ १६

स a । १२– १६
७ । ख । १७ । गु १२ । १६

अस्मिन् सत्त्वद्रव्ये तत्कालापकृष्टद्रव्यमिदं स a । १२ – (७ ख १७ गु ओ / a) पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा तद्बहुभागं स a । १२ – प (१ / a) (७ ख १७ गु ओ प / a a)

उपरितनस्थितौ ' दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे ' इत्यादिविधानेनापकृष्टस्याधोऽतिस्थापनावलिं मुक्त्वा विशेषहीनक्रमेण द-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

द्यात्। पुनस्तदेकभागं स ੭ । १२ — / ७ ख १७ गु ओ प / ੭ ੭ पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा बहुभागं स ੭ । १२ — प / ੭ (१ ―) / ७ ख १७ गु ओ प प / ੭ ੭ ੭

गुणश्रेण्यां दद्यात्। अवशिष्टैकभागं स ੭ । १२ — / ७ ख १७ गु ओ प प / ੭ ੭ ੭ (१ ―) उदयावल्यां दद्यात्। तन्निक्षेपन्यासोयं—

स ੭ । १२–१६–व ८
७ । ख । १७ । गु । ओ । १२ । १६
० ੭
०

स ੭ । १२–६४
७ । ख । १७ । गु । ओ । प ८५ गुणश्रेणि
० ੭ ੭
०

स ੭ । १२–१६
७ । ख । १७ । गु । ओ । १२–१६
੭

उपरितनस्थिति

स ੭ । १२—
स । ख । १७ । गु । ओ प ८५
੭ ੭

स ੭ । १२–१६–४ (१ ―)
७ ख १७ गु ओ प प ४ १६–४ (१ ―)
० ੭ ੭ ੭ २ उदयावलि
०

ख ੭ । १२–१६ (१ ―)
७ । ख १७ गु ओ प प ४ । १६–४
੭ ੭ ੭ २

अनेन गुणश्रेणिद्रव्येण सहितं सम्यक्त्वप्रकृतिसत्त्वद्रव्यं दृश्यमित्युच्यते। सर्वत्र तत्कालापकृष्टद्रव्यमुदयप्रथमसमयात्प्रभृति निक्षिप्यमाणं दीयमानं तेन सहितं सर्वसत्त्वद्रव्यं दृश्यमानमिति राद्धांतवचनात्। एवं निक्षिप्ते दृश्यमानन्यासोऽयं। तद्यथा—
उदयावल्यां दत्तद्रव्यं प्राक्तनसत्त्वद्रव्यस्यासंख्यातैकभागमात्रमिति तेन सत्त्वद्रव्यं साधिकं भवति इदानीं गुण- १७७
श्रेण्यां दत्तद्रव्यं प्राक्तनसत्त्वद्रव्यासंख्यातगुणं गुणश्रेणिद्रव्यस्यापकर्षणभागहारसद्भावात् सत्त्वद्रव्यस्यासंख्यातैकभाग-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मात्रत्वदर्शनात् कथं ततोऽसंख्यातगुणितं गुणश्रेणिद्रव्यमिति चेत् पल्ये प्रविष्टासंख्यातभागहारबाहुल्यसामर्थ्यादिति ब्रूमः, अतः कारणात् गुणश्रेण्यायाममात्रसत्त्वनिषेकानिदानीं गुणश्रेण्यां निक्षिप्यमाननिषेकेष्वधिकं कुर्यात् । पुनरुपरितनस्थितौ गुणश्रेणिकरणेन निक्षिप्तं द्रव्यं तत्स्थितौ प्राक्तनसत्त्वद्रव्यस्यासंख्यातैकभागमिति सत्त्वद्रव्ये इदानीं निक्षिप्तद्रव्यमधिकं कुर्यात् । सत्त्वद्रव्यमपेक्ष्यापकृष्टद्रव्यस्यापकर्षणभागहारसद्भावात् । इदानीं निक्षिप्तद्रव्यं तदसंख्यातभागमात्रं सिद्धं । अत्र ऋणधनयोर्विवरणमुच्यते—

उपरितनस्थितौ प्राक्तनसत्त्वप्रथमनिषेक ऋणमिदं स ३ । १२ – २ ग्
७ । ख १७ गु १२ । १६ तदा निक्षिप्य द्रव्यमात्रं धनमिदं—

स ३ । १२–१६
७ । ख १७ गु ओ १२ । १६
३
तत्कालापकर्षणभागहारेण ऋणद्रव्यं समच्छेदीकृत्य द्व्यर्धगुणहानिमात्रसमयप्रबद्धस्य गुणकारभूतासंख्यातरूपाणि धनद्रव्यस्य गुणकारभूतद्विगुणगुणहान्यामपनयेत् । अत्रशिष्टधनमिदं—

स ३ । १२ – १६ – ३
७ । ख १७ गु ओ १२ १६
३ ।
प्राक्तनोपरितनस्थितिसत्त्वप्रथमनिषेकेऽधिकं कुर्यात्, एवं कृते उपरितनस्थितिदृश्यप्रथमनिषेक ईदृक् भवति स ३ । १२ – १६
७ । ख । १७ । गु । १२ । १६ एवमुपरितनस्थितौ द्वितीयादिसत्त्वनिषेकेषु तत्कालापकृष्टनिक्षेपद्वितीयादिनिषेकान् ऋणधनविवरणावशिष्टान् प्रतिक्षिपेत् एवं प्रक्षिप्ते द्वितीयादिदृश्यनिषेकाः प्रथमादिदृश्यनिषेकेभ्य एकैकचयहीना अवतिष्ठन्ते एवं कृते मिश्रद्विकचरमफालिपतनयोग्ये गुणसंक्रमकालचरमसमये सम्यक्त्वप्रकृतिसर्वदृश्यद्रव्यन्यासोयं-

।　　　　१
स ३ । १२ – १६ – व ८ –
७ । ख । १७ । गु । १२ । १६　उपरितन
•
•
।　•
स ३ । १२ – १६
७ ख १७ गु १२ १६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

। स ३ । १२ - ६४ ७ ख १७ गु ओ प ८५ ३ ३ गुणश्रेणि	। १ स ३ १२ - १६ - ४ ७ ख १७ गु १२ १६ उदयावलि
। स ३ । १२ - १ ७ । ख १७ गु ओ प ८५ ३ ३	। स ३ । १२ - १६ ७ ख १७ गु १२ १६

तदनंतरसमये मिश्रसम्यक्त्वप्रकृतिचरमफालिद्रव्य द्रव्यमष्टवर्षसमयावस्थितिनिषेकप्रमाणेन प्रागुक्तसम्यक्त्वप्रकृतिसत्त्वेन— स ३ । १२ - / ७ । ख १७ गु एतावता न्यूनद्व्यर्धगुणहानिमात्रप्रथमसमयप्रबद्धप्रमाणं, मिस्सग इत्यादिगाथाव्याख्यानोक्तवि-धानेन उदयाद्यवस्थितिगुणश्रेण्यायामुपरितनस्थितौ चांतर्मुहूर्तोनाष्टवर्षप्रमितायां निक्षिपेत् । पुनस्तदनंतरसमये सर्वस्मात्सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यादस्मादपकृष्टैकभागं स ३ १२ - १ / ७ । ख १७ गु ओ पल्यासंख्यातैकभागेन खंडयित्वा तदेकभागमुदयप्रथमसमयादारभ्यातीतानंतचरमफालिगुणश्रेणिशीर्षपर्यंतं प्रति निषेकमसंख्यातगुणितक्रमेण निक्षिप्य तदुपरितनस्थितिप्रथमनिषेकेप्यसंख्यातगुणितमेव निक्षिपेत् । मिश्रद्विचरम फालिपतनसमयादारभ्य सम्यक्त्वप्रकृतिद्विचरमकांडकचरमफालिपतनपर्यंतमुदयाद्यवस्थितिगुणश्रेणिप्रतिज्ञानात्, शेषबहुभागं स ३ । १२ - प १ / ३ / ७ ख १७ गु ओ प / ३ उपरितनस्थितौ अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे इत्यादिविधानेन विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत् । तस्मिन्नेव समये प्रथमकांडकप्रथमफालिद्रव्यस्याधःप्रवृत्तभागहारभक्तस्यैकभागहारमात्रं स ३ । १२ - / ७ । ख १७ गु छे / ३ ३ इदमपकृष्टद्रव्यस्या स ३ । १२ - / ७ । ख १७ गु छे / ३ ३ ३ संख्यातैकभागमात्रमिति मत्वापकृ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष्टद्रव्येऽधिकं कृत्वा निक्षिप्तमिति न पृथग्लिखितं । एवं सम्यक्त्वप्रकृत्यष्टवर्षमात्रावशेषतृतीयादिसमयेष्वपि प्रथमकांडक-द्विचरमफालिपतनसमयपर्यंतं प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेणापकृष्टद्रव्यं फालिद्रव्यं च तत्कालोदयसमयादारभ्य प्राक्तना-नंतरोपरितनस्थितिप्रथमनिषेकपर्यंतमवस्थितिगुणश्रेणिविधानेन तदुपरितनस्थितौ च विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत् ।

१ ८

पुनः प्रथमकांडकचरमफालिद्रव्यमिदं स a । १२ – a / ७ । ख १७ ॄ a अस्योत्पत्तिक्रमोयं–अंतर्मुहूर्तमात्रायामेन यद्येकं स्थितिकांड-कमाकार्यते लांछ्यते तदाष्टवर्षमात्रायामे कियंति स्थितिकांडकानि लांछ्यंत इति प्र २ ॄ । फ १ । इ व ८ । त्रैराशि-केन स्थितिकांडकानि ॄ एतावद्भिः कांडकैः यद्येतावद्द्रव्यं निक्षिप्यते तदा एककांडकेन कियन्निक्षिप्यते इति—

प ॄ कां ७ ख १७ — फ स a १२ – कां — इ १ लब्धैककांडकद्रव्यं स a । १२ – / ७ । ख १७ । ॄ अस्मात्प्रथमादिद्विचरमफालिपर्यंतमधःप्रवृत्तहारेण प्रतिस-मयमसंख्यातगुणितक्रमेण गृहीत्वा निक्षिप्तद्रव्यं कांडकद्रव्यस्यासंख्यातैकभागमात्रं स a । १२ – / ७ । ख १७ ॄ a अस्मिन् कांडक-द्रव्यादपनीते अवशिष्टबहुभागमात्रं चरमफालिद्रव्यमुत्पद्यते । एवं सर्वकांडकेषु चरमफालिद्रव्यानयनं ज्ञातव्यं । तच्च प्र-थमकांडकचरमफालिद्रव्यं पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा तदेकभागमुदयप्रथमसमयादारभ्य द्विचरमफालिपतनसमय-निक्षिप्तद्रव्योपरितनस्थितिप्रथमनिषेकपर्यंतमसंख्यातगुणितक्रमेण निक्षिप्य शेषबहुभागद्रव्यं तदुपरितनस्थितिनिषेकेषु वि-शेषहीनक्रमेण निक्षिपेत्, एवं भवति, अडवस्से संपहियमित्यादि सम्यक्त्वप्रकृतिस्थितेरष्टवर्षावशेषकरणसमये पतित-मिश्रद्विकचरमफालिद्रव्यं स a १२ – / ७ । ख १७ इदं पुव्विल्लादोऽसंखसंगुणियं प्राक्तनानंतरसमये द्विचरमफालिपर्यंतमागतगुण-संक्रमद्रव्येण स a । १२ — / ७ । ख १७ गु a सहितात्सम्यक्त्वप्रकृतिसत्त्वद्रव्यात् स a । १२ – / ७ । ख १७ गु असंख्यातगुणितं यथायोग्य-गुणसंक्रमभागहारभक्तात्तद्भागहाररहितस्यासंख्यातगुणितत्वसंभवात् । 'उवरिं पुण संपहियं' अष्टवर्षद्वितीयसमया-दारभ्य प्रथमकांडकद्विचरमफालिपतनपर्यंतमपकृष्टद्रव्यमष्टवर्षप्रथमसमयद्रव्यादसंख्यातगुणहीनं तत्रापकर्षणभागहारसंभ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वात् । चरमफालिद्रव्यं तु अष्टवर्षप्रथमसमयद्रव्यात्संख्यातैकभागमात्रं कांडकसंख्यया संख्यातप्रमितसर्वद्रव्यस्य विभक्तत्वात् ॥ १३३ ॥

स० चं०—अष्टवर्ष स्थिति करनेके समयतैं पहिले समय विषैं अनंतरवर्ती पूर्व समयविषैं मिश्रमोहनी अर सम्यक्त्व मोहनीकी द्विचरम फालिका पतन हो है। तिस समयविषैं गुणसंक्रमकालका प्रथम समयतैं लगाय असंख्यात गुणा क्रम लीएं गुणसंक्रमण द्रव्य होतैं जो सम्यक्त्व मोहनीका सत्व द्रव्य पाइये है सो 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिद पढमा' इत्यादि विधान करि तहां स्थितिविषैं संभवती जो नानागुणहानि तिनके निषेकनिविषैं पाइए है। तिस समयविषैं जो तिस द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भागमात्र द्रव्य अपकर्षण कीया ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग तौ उपरितन स्थितिविषैं निक्षेपण करिए है तहां जिसका द्रव्य अपकर्षण कीया तिस निषेकका द्रव्यकौं तिस निषेकके नीचैं अतिस्थापनावली छोडि 'दिवड्ढ गुणहाणि भाजिदे पढमा' इत्यादि विधानकरि देना। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषैं देना अर एक भाग उदयावलीविषैं देना । इहां अपकर्षणादि भए पीछैं जो विवक्षितविषैं सत्ता रूप पूर्वै द्रव्य पाइए सो तौ सत्व द्रव्य कहिए। अर अपकर्षणादि कीया हूवा जो नवीन द्रव्य तहां मिलाया सो दीयमान द्रव्य कहिए इन दोऊनिकौं मिलैं जो देखनेमैं आया द्रव्य का प्रमाण सो दृश्यमान द्रव्य कहिए। सो यहां उदयावलीविषैं तौ दीयमान द्रव्य पूर्व सत्व द्रव्यके असंख्यातवें भागमात्र है ताकरि साधिक सत्व द्रव्यमात्र दृश्यमान द्रव्य तहां जानना अर गुणश्रेण्यायामविषैं दीयमान द्रव्य पूर्व सत्व द्रव्यतैं असंख्यात गुणा है। यद्यपि इहां गुणश्रेणिविषैं दीया द्रव्य सर्व सत्व द्रव्यके असंख्यातवे भागमात्र है तथापि निषेक इहां थोरे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं तातैं असंख्यात गुणा पाइए है तिस विषैं पूर्व सत्व द्रव्य साधिक कीएं तहां दृश्यमान द्रव्य होइ अर उपरितन स्थितिविषैं दीयमान द्रव्य पूर्व सत्व द्रव्यके असंख्यातवे भागमात्र है। ताकरि अधिक सत्व द्रव्य कीएं तहां दृश्यमान द्रव्य हो है । तहां उपरितन स्थितिके जे प्रथमादि निषेक तिनिविषैं अपकर्षण करि जेता द्रव्य घटाया सो तौ ऋण जानना । बहुरि जो इहां निक्षेपण कीया द्रव्य सो धन जानना सो धनविषैं ऋण घटाइ अवशेषकौं पूर्व सत्व विषैं मिलाएं द्वितीयादि निषेक हैं ते प्रथमादि निषेकनितैं एक एक चय करि घटता क्रमतैं होंइ ऐसैं करतैं मिश्र सम्यक्त्व मोहनीकी द्विचरम फालिका जाविषैं पतन होइ तिस गुण संक्रम कालका अंत समयविषैं सम्यक्त्व मोहनीके दृश्य द्रव्यका प्रमाण आवै है । बहुरि ताके अनंतरवर्ती अष्टवर्ष स्थिति करनेका समय तिसविषै मिश्रमोहनी सम्यक्त्व मोहनी की अंत दोय फालिका द्रव्य सो अष्टवर्षके जेते समय तितने सम्यक्त्व मोहनीके निषेकनिका द्रव्य प्रमाणकरि हीन ऐसे किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानिमात्र हैं ताकौं 'मिस्स दुगे' इत्यादि गाथा व्याख्यानविषैं जैसैं पूर्वं वर्णन कीया है तैसैं उदयादि अवस्थित गुणश्रेणि आयाम वा उपरितन स्थितिविषैं द्रव्य देनेका विधान जानना। बहुरि ताके अनंतरवर्ती जो अष्ट वर्ष स्थिति करनेका द्वितीय समय तिसविषैं सर्व सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यकौं अपकर्षण भाग हारका भाग देइ तहां एक भाग ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भाग तौ उदय रूप प्रथम समयतैं लगाय अष्ट वर्ष करनेके समय जो गुणश्रेणि आयाम था ताका शीर्ष पर्यंत अर एक समय व्यतीत भया सो एक समय उपरितन स्थितिका मिलाएं जो उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणि आयाम ताके निषेकनिविषैं असंख्यात गुणा क्रमकरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निक्षेपण करना। अर अवशेष बहुभागनिका द्रव्यकौं ताके उपरिवर्ती अवशेष रहा जो उपरितन स्थिति ताके निषेकनिविषैं 'अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे' इत्यादि विधानतैं चय घटता क्रमकरि निक्षेपण करना। बहुरि इस ही समयविषैं अंतर्मुहूर्तमात्र जो स्थितिकांडकायाम ताके निषेकनिका जो द्रव्य ताकौं पीठ बंधविषैं उक्त प्रमाण लीएं जो अधः प्रवृत्त भागहार ताका भाग देइ एक भागका प्रमाणमात्र जो प्रथम फालिका द्रव्य सो अपकृष्टका द्रव्यके असंख्यातवे भागमात्र है ताकौं अपकृष्ट द्रव्यविषैं अधिक जानना। पूर्वैं अपकृष्ट द्रव्य दीया ताकी साथि फालि द्रव्य भी दीया सो सर्व द्रव्यकौं अपकर्षण भागहार दीएं प्रमाण आया था ताका नाम अपकृष्ट द्रव्य जानना। अर स्थिति कांडकायाममात्र निषेकनिका जो द्रव्य ताकौं कांडक द्रव्य कहिए ताकौं इहां अधः प्रवृत्तका भाग दीएं जो प्रमाण आया ताका नाम फालि द्रव्य है। बहुरि ऐसैं ही सम्यक्त्व मोहनीकी अष्ट वर्ष स्थिति करनेका तीसरा समयतैं लगाय प्रथम कांडककी द्विचरम फालिका पतन समय पर्यंत समय समय असंख्यात गुणा क्रम लीएं जो अपकृष्ट द्रव्य वा फालि द्रव्य ताकौं एक समय व्यतीत भएं एक एक समय उपरितन स्थितिका मिलाएं भया जो उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणि आयाम ताविषैं असंख्यात गुणा क्रमकरि अर तातैं उपरितन स्थितिविषै चय घटता क्रमकरि देना। बहुरि कांडककालका अंत समयविषै अंत फालिका पतन हो है। ताके द्रव्यका प्रमाण ल्याइए है-जो अंतर्मुहूर्त आयाम लीएं एक कांडक होइ तौ अष्टवर्ष स्थितिविषै केते कांडक होंइ ? ऐसै त्रैराशिक कीएं कांडकनिका प्रमाण संख्यात आया बहुरि जो इन सर्व कांडकनि करि सम्यक्त्व मोहनीका सर्व द्रव्य निक्षेपण करिए तौ एक कांडकविषै केता करिए ऐसैं त्रैराशिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि कांडक द्रव्यका प्रमाण सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यके संख्यातवे भागमात्र आवै है। बहुरि याकौं अधःप्रवृत्त भागहारका भाग दीएं प्रथम फालि का द्रव्य होइ तातैं असंख्यात भाग गुणा क्रम लीएं द्विचरम फालि पर्यंत फालिनिका द्रव्य होइ। सो इन सर्व फालिनिका द्रव्य कांडक द्रव्यके असंख्यातवे भागमात्र भया। ताकौं तिस कांडक द्रव्यविषैं घटाएं अवशेष अंत फालिका द्रव्य जानना। ऐसैं सर्व कांडकनिविषैं अंत फालिके द्रव्यका प्रमाण ल्यावनेका विधान जानना। सो याका उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणि आयामविषैं असंख्यात गुणा क्रमकरि अर उपरितन स्थितिविषैं चय घटता क्रमकरि निक्षेपण करना ऐसैं विधान जानि इस गाथाका अर्थ ऐसैं जानना। जो 'अडवस्से संपाहियं' कहिए अष्टवर्ष स्थिति अवशेष करनेका समयविषैं जो मिश्र सम्यक्त्व मोहनीकी अंत दोय फालिनिका द्रव्य है सो 'पुव्विल्लादो असंख संगुणियं' कहिए यातैं पूर्व समय संबंधी द्विचरम फालिका अंत पर्यंत जो गुण संक्रम द्रव्य सहित जो सम्यक्त्व मोहनीका सत्व द्रव्य तातैं असंख्यात गुणा है। जातैं तहां यथा योग्य गुण संक्रम का भागहार संभवै है। इहां अंत दोय फालिनिका द्रव्यविषैं सो नाही है तातैं असंख्यात गुणापना जानना। बहुरि 'उवरिं पुण संपहियं' कहिए उपरि अष्टवर्ष करनेका द्वितीय समयतैं लगाय अष्टवर्ष करनेका प्रथम समयसंबंधी जो दोय फालिनिका द्रव्य तातैं 'असंख संखं च भागं तु' कहिए प्रथम कांडककी द्विचरम फालि पर्यंत तौ असंख्यातवे भागमात्र ही दीयमान द्रव्य है। जातैं तहां अपकर्षण भागहार सर्व द्रव्यकौं दीएं अपकृष्ट द्रव्य हो है। अर अंत फालिका द्रव्य संख्यातवे भागमात्र है। जातैं सर्व द्रव्यकौं कांडक प्रमाणमात्र संख्यात का भाग देइ किंचिदून कीएं अंतफालिका द्रव्य हो है॥ १३३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठिदिखंडाणुक्कीरण दुचरिमसमओत्ति चरिमसमये च
उक्कट्टिदफालीगददव्वाणि णिसिंचदे जम्हा ॥१३४॥

स्थितिखंडानुत्करणं द्विचरमसमय इति चरमसमये च ।
अपकर्षितफालिगतद्रव्याणि निषिंचति यस्मात् ॥ १३४ ॥

सं० टी०— अष्टवर्षप्रथमसमयद्रव्याचद्द्वितीयादिसमयेषु स्थितिकांडकोत्करणकालद्विचरमसमयपर्यंतेषु अपकृष्टद्रव्यस्यासंख्यातगुणहीनत्वे प्रथमकांडकचरमफालिद्रव्यस्य संख्यातगुणहीनत्वे च कारणोपन्यासार्थं सूत्रमिदमागतं । तथाहि—

सम्यक्त्वप्रकृतेरष्टवर्षमात्रस्थितेरंतर्मुहूर्तमात्रायामस्थितिकांडकानि अष्टवर्षकरणद्वितीयसमये प्रारब्धानि, तेषां प्रथमादिद्विचरमकांडकपर्यंतानां स्थितिकांडकानां प्रत्येकमुत्करणकालः यथायोग्यांतर्मुहूर्तमात्रः, तत्प्रथमसमयादारभ्य तद्द्विचरमसमयपर्यंतं फालिद्रव्यसहितमपकृष्टद्रव्यं निक्षिप्यते । तच्च सम्यक्त्वप्रकृतिसत्त्वद्रव्यादपकर्षणभागहारवशात् असंख्यातगुणहीनं जातं । स्थितिकांडकोत्करणकालचरमसमये चरमफालिद्रव्यं सर्वद्रव्यस्य संख्यातैकभागमात्रं दीयते इति हेतोः 'उवरिं पुण संपहियं असंखसंखं च भागं तु' इत्यनंतरातीतगाथापश्चार्द्धकथितोर्थः सिद्धः ॥ १३४ ॥

स० चं०— सम्यक्त्वमोहनीकी अष्टवर्ष प्रमाण स्थितिके अंतर्मुहूर्तमात्र आयाम लीएं स्थितिकांडक अष्टवर्ष करनेके दूसरे समयविषैं प्रारंभ कीए तिनिका स्थितिकांडकोत्करण काल यथासम्भव अंतर्मुहूर्तमात्र है। तिस कालके प्रथम समयतैं लगाय द्विचरम समय पर्यंत जे फालि द्रव्य सहित अपकृष्ट द्रव्य निक्षेपण करिए है सो सम्यक्त्वमोहनीके सत्त्व द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घटता है, जातैं तहां अपकर्षण भागहार संभवै है। बहुरि ताका अंत समयविषैं जो अंतफालिका द्रव्य दीजिए है सो सर्व द्रव्यके संख्यातवे भागमात्र है। यातैं पूर्व कहा 'उवरिं पुण संपहियं असंखसंखं च भागं तु' ताका अर्थ सिद्ध भया ॥१३४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अडवस्से संपहियं गुणसेढीसीसयं असंखगुणं ।
पुव्विल्लादो णियमा उवरि विसेसाहियं दिस्सं १३५

अष्टवर्षे संप्रहितं गुणश्रेणीशीर्षकं असंख्यगुणम् ।
पूर्वस्मात् नियमात् उपरि विशेषाधिकं दृश्यम् ॥ १३५ ॥

सं० टी०—अष्टवर्षकरणप्रथमसमये निक्षिप्तमिश्रद्विकचरमफालिद्रव्यस्योपरितनस्थितिप्रथमनिषेकद्रव्यं दृश्यं—

स a । १२–१६ / ७ । ख । १७ । व ८—१६–व ८– / २ इदमस्मिन् प्रस्तावे गुणश्रेणिशीर्षमित्युच्यते । तस्याधस्तनाद् गुणश्रेणिचरमनिषेकाद् रू-

पोनपल्यासंख्यातगुणकारेण गुणितत्वात्, गुणस्य गुणकारस्य श्रेणिः पंक्तिः गुणश्रेणिस्तस्याः शीर्षमग्रमवसानमिति व्युत्पत्त्याश्रयेणोपरितनस्थितिप्रथमनिषेकस्य गुणश्रेणिशीर्षत्वसिद्धेः । इदं पूर्वस्मान्मिश्रद्रव्यद्विचरमफालिपतनसमयगुण-श्रेणिशीर्षदृश्यद्रव्यात् स a । १२– ६४ / ७ । ख । १७ प ८५ / a असंख्यातगुणमेव नान्यथा । उपर्यष्टवर्षसमयगुणश्रेणिशीर्षदृश्यद्रव्यं पू-र्वस्मादष्टवर्षप्रथमसमयगुणश्रेणिशीर्षदृश्यद्रव्याद् विशेषाधिकमेव नासंख्यातगुणं । तथाहि—

अष्टवर्षप्रथमसमयगुणश्रेणिशीर्षदृश्यद्रव्यमिदं स a । १२–१६ / ७ । ख । १७ । व ८–१६–व ८– अस्य द्वितीयसमये आगतं धनमिदं स a । १२– ६४ / ७ । ख १७ ओ प ८५ / a अष्टवर्षोपरितनस्थितिद्वितीयनिषेकदृश्यद्रव्यमिदं स a । १२–१६—१ / ७ । ख । १७ । व ८-१६–व ८– / २ तस्य ऋण- १८६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेकविशेषमात्रमिदं स ∂ १२–१   १ – द्वितीयसमये गुणश्रेणिशीर्षद्रव्यधनमिदं—
७ । ख । १७ । व ८–१६- व ८
२

स ∂ । १२–१६   १ – अस्मात् प्राक्तनाचयमात्र ऋणमसंख्यातगुणहीनं द्विगुणगुणहानिमात्र-
७ । ख । १७ । ओ व ८-१६-व-८
२

गुणकाराभावात् । द्वितीयसमयगुणश्रेणिचरमनिषेकद्रव्यं स ∂ । १२–६४   इदं वासंख्यातगुणहीनं रू-
७ । ख । १७ ओ प ८५
∂

पोनपल्यासंख्यातमात्रगुणकाराभावात् । एतदेकचयमात्र ऋणद्रव्यं द्वितीयसमयगुणश्रेणिचरमनिषेकद्रव्यं च तद्गुणश्रेणि-शीर्षद्रव्ये किंचिन्न्यूनं कृत्वा द्विगुणगुणहान्या अपकर्षणभागहारमपवर्त्य अवशिष्टासंख्यातरूपाणि—
स ∂ । १२--∂   १ – अष्टवर्षप्रथमसमयगुणश्रेणिशीर्षसमाने तदनंतरोपरितननिषेके निक्षिपेत् । एवं
७ । ख । १७ । व ८–१६--व ८—
२

कृते अष्टवर्षप्रथमसमयगुणश्रेणिशीर्षद्वयद्रव्यात् तद्द्वितीयसमयगुणश्रेणिशीर्षद्वयद्रव्यं साधिकमेव भवति—
स ∂ १२--१६   १ – एवं तृतीयादिसमयेषु गुणश्रेणिशीर्षद्रव्याणि पूर्वपूर्वगुणश्रेणिशीर्षद्रव्यात्साधिकमेव
७ । ख १७ व ८--१६--व ८--
२

नान्यथा ॥ १३५ ॥

स० चं०– गुणश्रेणि आयामका अंतका निषेक ताकौं इहां गुणश्रेणि शीर्ष कहिए जातैं गुण जो असंख्यातका गुणकार ताकी श्रेणी कहिए पंक्ति ताका शीर्ष कहिए अग्रभाग सो गुणश्रेणिशीर्ष कहिए । तहां अष्टवर्ष करनेके समयविषैं गुणश्रेणिका शीर्ष जो अवस्थित गुणश्रेण्यायामविषैं उपरितन स्थितिका एक निषेक मिलाया था सो जानना । १८७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताके पूर्व सत्व द्रव्यकौं अर निक्षेपण कीया द्रव्यकौं मिलाएं दृश्यमान द्रव्यका जो प्रमाण है सो याके अनंतर पूर्व समय सम्बन्धी गुणश्रेणि शीर्षका जो दृश्यमान द्रव्य तातैं असंख्यातगुणा है। बहुरि अष्ट वर्ष करनेका समय सम्बन्धी गुणश्रेणि शीर्षका दृश्यमान द्रव्य तौ उपरि अष्ट वर्ष करनेका द्वितीयादि समय सम्बन्धी गुणश्रेणि शीर्षका द्रव्य क्रमतैं पूर्व २ गुणश्रेणि शीर्षका द्रव्यतैं विशेषकरि अधिक है असंख्यातगुणा नाहीं है। ताका स्वरूप संदृष्टयादिककरि संस्कृत टीकातैं वा संदृष्टि वर्णनविषैं जानना ॥ १३५ ॥

अडवस्से य ठिदीदो चरिमेदरफालिपडिददव्वं खु।
संखासंखगुणूणं तेणुवरिमदिस्समाणमहियं सीसे ॥

अष्टवर्षे च स्थितितः चरमेतरफालिपतितद्रव्यं खलु।
संख्यासंख्यगुणोनं तेनोपरिमदृश्यमानमधिकं शीर्षे ॥ १३६ ॥

सं० टी०—पूर्वपूर्वगुणश्रेणिशीर्षदृश्यद्रव्यादुत्तरोत्तरसमयगुणश्रेणिशीर्षदृश्यद्रव्यं विशेषाधिकमित्यत्रोपपत्तिदर्शनार्थमिदमाह। तद्यथा—

अष्टवर्षप्रथमसमये उदयादिचरमस्थितिपर्यंतं ये निषेकाः संति तेष्वेकैकनिषेकं प्रेक्ष्य प्रथमकांडकचरमफालिद्रव्यस्योदयादिचरमस्थितिपर्यंतं निक्षेप्यनिषेकाः प्रत्येकं संख्यातगुणहीना दीयंते। अष्टवर्षद्वितीयसमयादिप्रथमकांडकद्विचरमफालिपतनसमयपर्यंतमपकृष्टद्रव्यस्य ये निषेकास्ते पुनः प्रत्येकमसंख्यातगुणहीना निक्षिप्यंते। ततः कारणात्तत्र तत्र विवक्षितसमये अपकृष्टद्रव्यस्य गुणश्रेणिशीर्षद्रव्यं तदधस्तननिषेकद्रव्यादसंख्येयगुणं धनमागच्छति इति गुणश्रेणिशीर्षनिषेके दृश्यं विशेषाधिकमिति भावः ॥ १३६ ॥

स० चं०— अष्ट वर्ष करनेका प्रथम समयविषैं मिश्र सम्यक्त्व मोहनीकी अंत दोय १८८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फालिनिका द्रव्य दीया संता उदयरूप प्रथम समयतैं लगाय स्थितिका अंतसमय पर्यंत संबंधी निषेक जे सत्तारूप पाइए है तिनिविषैं प्रथम कांडककी अंत फालिका द्रव्यकौं कांडक कालका अंतसमयविषैं जो निक्षेपण कीया तिसका प्रमाण एक एक निषेकविषैं पूर्व सत्तारूप द्रव्यका प्रमाणतैं संख्यात गुणा घटता जानना। अर अष्ट वर्ष स्थिति करनेका द्वितीय समयतैं लगाय प्रथम कांडककी द्विचरम फालिका पतन समय पर्यंत समयनिविषैं जो अपकर्षण कीया द्रव्यकौं तिनि निषेकनिविषैं निक्षेपण कीया तिसका प्रमाण एक एक निषेकनिविषैं पूर्व सत्तारूप द्रव्यका प्रमाणतैं असंख्यात गुणा घटता जानना। जातैं विवक्षित समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्य जो गुणश्रेणिशीर्षविषैं दीया सो ताके नीचेके निषेकविषैं दीया अपकृष्ट द्रव्यतैं असंख्यात गुणा धन आवै है। बहुरि सर्व सत्तारूप द्रव्य अर निक्षेपण कीया द्रव्यकौं मिलाएं जो दृश्यमान द्रव्य भया सो पूर्व २ समय सम्बन्धी गुणश्रेणि शीर्षका द्रव्यतैं उत्तर उत्तर समय सम्बन्धी गुणश्रेणि शीर्षका द्रव्य किछू विशेष करि ही अधिक है, गुणकाररूप नाही है॥ १३६ ॥

जदि गोउच्छविसेसं रिणं हवे तोवि धणपमाणादो।
जस्सि असंखगुणूणं ण गणिज्जादि तं तदो एत्थ॥

यदि गोपुच्छविशेषं ऋणं भवेत् तथापि धनप्रमाणात्।
यस्मात् असंख्यगुणोनं न गण्यते तत्ततोत्र॥ १३७॥

सं० टी०— अनंतरोक्तविधानेन विवक्षितगुणश्रेणिशीर्षनिषेके दृश्यद्रव्यं तदधस्तनगुणश्रेणिशीर्षद्रव्याद्विशेषा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धिकमित्यत्र एकचयमात्रं ऋणमस्तीत्याशंक्य तत्परिहारार्थमिदं सूत्रमाह । यद्यप्यष्टवर्षद्वितीयसमये अपकृष्टद्रव्यस्य गुणश्रेणिशीर्षनिक्षिप्तनिषेकद्रव्यादष्टवर्षप्रथमसमयगुणश्रेणिशीर्षस्योपरितनानंतरनिषेकगतऋणमसंख्येयगुणहीनं यस्मात्कारणात्तेन कारणेनोपरितनगुणश्रेणिशीर्षदृश्यमानं साधिकमेवेति निर्णेतव्यं । धनादृणस्यासंख्यातगुणहीनत्वेनागणनात् । यावच्च य एकादशो वर्तते तावद्गोपुच्छविशेष इत्युच्यते, क्रमहान्यपेक्षया गोपुच्छ इव गोपुच्छ इति गौणशब्दाश्रयणात् ॥ १३७ ॥

स० चं०— जैसैं गौका पूंछ क्रमतैं घटता हो है तैसैं चय घटता क्रम जहां होइ तहां गोपुच्छ कहिए । अर यावत् समान चय होइ तावत् गोपुच्छ विशेष कहिए । सो नीचले गुणश्रेणि निषेकका सत्व द्रव्यतैं ऊपरिके गुणश्रेणि शीर्षका सत्व द्रव्यविषैं गोपुच्छ विशेषमात्र यद्यपि ऋण है । भावार्थ – यहु निषेकनिविषैं चय घटता क्रमतैं है तातैं पूर्व समय सम्बन्धी गुणश्रेणि शीर्षका सत्व द्रव्यतैं उत्तर समय सम्बन्धी गुणश्रेणि शीर्षका सत्व द्रव्यविषैं चय प्रमाण द्रव्य घटता चहिए ताकौं न घटाया अर विशेष अधिक अधिक कह्या सो कारण कहा ? ऐसैं प्रश्न कीएं उत्तर कहै हैं – जु यद्यपि ऐसैं है तथापि यहु मिलाया हूवा जो अपकृष्ट द्रव्य तातैं यहु चय प्रमाण घटता द्रव्य है सो असंख्यातगुणा घटता है । सो इहां घटावने योग्य ऋणकौं मिलावने योग्य धनतैं असंख्यातवे भागि जानि स्तोकपनेतैं गिण्या नाहीं । पूर्व गुणश्रेणि शीर्षका दृश्य द्रव्यतैं उत्तर गुणश्रेणि शीर्षका द्रव्य विशेष अधिक ही कह्या ॥ १३७ ॥

तत्तक्काले दिस्सं वज्जिय गुणसेढिसीसयं एक्कं ।
उवरिमठिदीसु वड्ढदि विसेसहीणक्कमेणेव ॥१३८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्तत्काले दृश्यं वर्जयित्वा गुणश्रेणिशीर्षकमेकम् ।
उपरिमस्थितिषु वर्तते विशेषहीनक्रमेणैव ॥ १३८ ॥

सं० टी०—एवमुक्तप्रकारेण सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यं यदा यदा अपकृष्टचा उदयादिस्वस्थितिचरमसमयपर्यंतनिषेकेषु निक्षिप्यते तस्मिन् तस्मिन् समये गुणश्रेणिशीर्षद्रव्यं दृश्यमेकैकं वर्जयित्वा तदुपरितनसर्वनिषेकेषु तत्तत्कालभाविदृश्यं विशेषहीनक्रमेणैव वर्तते तत्र प्रकारांतरासंभवात् । एवमष्टवर्षमात्रसम्यक्त्वप्रकृतिस्थितेः प्रथमकांडकविधानेनैव द्विचरम-कांडकचरमफालिपर्यंतं अपकृष्टफालिद्रव्ययोर्निक्षेपक्रमो दृश्यक्रमश्चाव्यामोहेन ज्ञातव्यः ॥ १३८ ॥

स० चं०— ऐसैं कहे विधानतैं जिस जिस विवक्षित समयविषैं सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यकौं अपकर्षण करि उदयादि स्थितिका अंत पर्यंत निषेकनिविषैं निक्षेपण करै है तिस तिस समयविषैं गुणश्रेणिशीर्ष रूप भया जो एक एक निषेक ताकौं छोडि ताके उपरिवर्ती जे उपरितन स्थितिके सर्व निषेक तिनिविषैं तत्काल संभवता जो दृश्यमान द्रव्य सो विशेष घटता अनुक्रम लीएं ही जानना । जातैं तहां दीया द्रव्य वा पूर्व द्रव्य चय घटता क्रम लीएं हो है । या प्रकार अष्ट वर्षमात्र सम्यक्त्व मोहनीकी स्थितिविषैं जैसैं प्रथम कांडकका विधान कह्या तैसैं ही द्वितीय कांडकादि द्विचरम कांडककी अंतफालिपर्यंत अपकृष्टि द्रव्य अर फालि द्रव्य तिनके निक्षेपण करनेका अनुक्रम अर भया जो दृश्यमान द्रव्य ताका अनुक्रम जानना । ऐसैं अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष करनेका समयतैं लगाय सम्यक्त्व मोहनीका अंत-कांडकतैं पहिला जो द्विचरम कांडक ताकी अंतफालिका पतन समय पर्यंत क्षपणाविधान कहि अब अंतकांडकका विधान कहिए है—

गुणसेढिसंखभागा तत्तो संखगुण उवरिमठिदीओ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मत्तचरिमखंडो दुचरिमखंडादु संखगुणो ॥१३९

गुणश्रेणिसंख्यभागाः ततः संख्यगुणं उपरितनस्थितयः।
सम्यक्त्वचरमखंडो द्विचरमखंडात् संख्यगुणः ॥ १३९ ॥

सं० टी०—अष्टवर्षप्रथमसमयादारभ्य सम्यक्त्वप्रकृतेर्द्विचरमकांडकचरमफालिपतनसमयपर्यंतं क्षपणविधानमभिधाय इदानीं तच्चरमकांडकप्रमाणमल्पबहुत्वपुरस्सरं प्रतिपादयितुमिदमाह । या अष्टवर्षप्रथमसमयादारभ्योदयाद्यवस्थितायामा अद्य यावद्गुणश्रेणिकृता तस्यासंख्यातबहुभागैः २ ७ृ । ३ अपूर्वकरणप्रथमसमयादारभ्याष्टवर्षातीतानंतरसमय-
४
पर्यंतं या गलितावशेषायामा गुणश्रेणिः कृता तस्या अपूर्वानिवृत्तिकरणकालद्वयादधिकशीर्षस्य २ ७ृ संख्यातैकभागेन
४
२ ७ अवस्थितिगुणश्रेणिशीर्षस्योपरितनस्थितौ द्विचरमकांडकस्याधः यावंतो निषेका अवशिष्टास्तैश्चावस्थितिगुण-
४।४
श्रेणिबहुभागसंख्यातगुणैः २ ७ृ ४ ४ ४ परिमितं सम्यक्त्वप्रकृतिचरमकांडकमिदानीं लांछितं । पुरातनगलिताव-शेषगुणश्रेण्यधिकशीर्षसंख्यातैकभागादारभ्योपरितनस्थित्यवशिष्टचरमनिषेकपर्यंतं चरमकांडकप्रमाणमित्यर्थः । इदं द्विचरमकांडकायामप्रमाणात् २ ७ृ४। ४ संख्यातगुणितं सदपि तद्योग्यांतर्मुहूर्तप्रमाणमेवेति ग्राह्यं तथा सति तच्चरमकां-
१
डकप्रमाणमियद् भवति २ ७ृ । ४ । ४ । ४ चरमकांडकस्याधः अवशिष्टप्रमाणं च २ ७ृ । ४ इदमवस्थितिगुण-
४
श्रेण्यायामसंख्यातैकभागमात्रं भवदपि गलितावशेषगुणश्रेण्यधिकशीर्षसंख्यातबहुभागमात्रेण कृतकृत्यवेदककालेन कांडकोत्करणकालप्रमितेनानिवृत्तिकरणकालगलितावशेषेण च २ ७ृ । निष्पन्नप्रमाणं २ ७ृ । ४ अपवर्तिते एवं
४।४ ४।४
२ ७ृ ॥ १३९ ॥

स० चं०— अष्ट वर्ष स्थिति करनेका प्रथम समयतैं लगाय इहां द्विचरम कांडकका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंत पर्यंत जो अवस्थिति गुणश्रेणि आयाम है ताकौं संख्यातका भाग दीएं तहां बहुभागनिका जो प्रमाण अर अपूर्व करणका प्रथम समयतैं लगाय आठ वर्ष स्थिति करनेका समयतैं पूर्व समय पर्यंत जो गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम था ताविषैं जो अनिवृत्ति करण कालका संख्यातवां भागमात्र जो गुणश्रेणि शीर्ष कह्या ताकौं संख्यातका भाग दीएं एक भागका जो प्रमाण अर अवस्थिति गुणश्रेणिका अंत निषेक रूप जो शीर्ष ताके ऊपरिवर्ती निषेक रूप जो उपरितन स्थिति तीहिंविषैं द्विचरम कांडककेविषैं जिनि निषेकनिका अभाव कीया तिनिके नीचैं जे निषेक अवस्थिति गुणश्रेणि आयामका बहुभागतैं संख्यात गुणे अवशेष रहे। ऐसे अवस्थिति गुणश्रेणि आयामका संख्यातवां बहुभाग अर गलितावशेष गुणश्रेणिका संख्यातवां भाग अर उपरितन स्थितिके अवशेष निषेक इन तीनोंकौं जोडैं जो प्रमाण होइ सोई अंतकांडकायामका प्रमाण है। भावार्थ यहु— गलितावशेष गुणश्रेणि आयामका संख्यातवां भागतैं लगाय उपरितन स्थितिके जे निषेक अवशेष रहे तिनिका अंत पर्यंत अंतकांडकायामका प्रमाण है। सो यहु द्विचरम कांडकायामका प्रमाण तौ संख्यात गुणा है तौ भी यथायोग्य अंतर्मुहूर्तमात्र हो है। बहुरि तिस अंतकांडक करि घात कीएं पीछैं जो नीचैं अवशेष स्थिति रहै ताका प्रमाण अवस्थिति गुणश्रेणि आयामके संख्यातवे भागमात्र है सो पूर्वैं जो गलितावशेष गुणश्रेणि आयामविषैं अनिवृत्ति करण कालका संख्यातवे भागमात्र जो गुणश्रेणि शीर्ष कह्या था ताकौं संख्यातका भाग दीएं बहुभागमात्र तौ कृतकृत्यवेदक काल अर व्यतीत भए पीछैं अवशेष रह्या जो अनिवृत्ति करणका काल तीहिं प्रमाण अंतकांडकोत्करण काल इनि दोऊनिकौं मिलाएं तिस अवशेष स्थितिका प्रमाण हो है॥ १९३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मत्तचरिमखंडे दुचरिमफालित्ति तिण्णि पव्वाओ
संपहियपुव्वगुणसेढीसीसे सीसे य चरिमम्हि॥१४०॥

सम्यक्त्वचरमखंडे द्विचरमफालीति त्रीणि पर्वाणि।
संप्राप्तपूर्वगुणश्रेणीशीर्षे शीर्षे च चरमे ॥ १४० ॥

सं० टी०—सम्यक्त्वप्रकृतिचरमखण्डप्रथमफालिपतनसमयादारभ्य तद्द्विचरमफालिपतनसमयपर्यंतं तत्कांडकोत्करणकाले फालिद्रव्यस्यापकृष्टद्रव्यस्य च निक्षेपविशेषविधानार्थमिदं सूत्रमाह नेमिचंद्रसिद्धांतचक्रवर्ती। तद्यथा—

तत्र सम्यक्त्वप्रकृतिचरमकांडकप्रथमफालिपतनसमये या उदयाद्यवशिष्टस्थितिचरमनिषेकपर्यंतायामा गलितावशेषमात्री गुणश्रेण्यारब्धा तच्छीर्षपर्यंतमेकं पर्व। ततः परं पूर्वावस्थितगुणश्रेणिशीर्षपर्यंतमेकं पर्व। ततः परमुपरितनस्थितिचरमनिषेकपर्यंतमेकं पर्व इति द्रव्यनिक्षेपे पर्वत्रयं रचयितव्यं। अत्रायं विशेषः– फालिद्रव्यनिक्षेपे प्रथममेकमेव पर्व। अपकृष्टद्रव्यनिक्षेपे तु त्रीण्यपि पर्वाणि भवंतीति ज्ञातव्यं ॥ १४० ॥

स० चं०– सम्यक्त्व मोहनीका अंतका कांडक ताकी प्रथम फालिका पतन समयतैं लगाय द्विचरमफालिका पतन समय पर्यंत द्रव्य निक्षेपण करनेविषैं तीन पर्व जानने। पर्व नाम विभागका है। सो विभागकरि तीन जायगा द्रव्य देना। तहां अंतकोत्करण कालका प्रथम समयविषैं जाका आरंभ भया ऐसा जो उदयरूप प्रथम समयतैं लगाय अवशेष स्थिति का अंतनिषेक पर्यंत इहां जाका प्रारंभ भया ऐसा जो गुणश्रेणि आयाम ताका शीर्षपर्यंत तौ एक पर्व जानना। बहुरि तातैं ऊपरि पूर्वैं जो अवस्थित गुणश्रेणि आयाम ताका शीर्षपर्यंत दूसरा पर्व जानना। बहुरि तातैं उपरिवर्ती जो उपरितन स्थिति ताका प्रथम समयतैं लगाय अंतसमय पर्यंत तीसरा पर्व जानना। तहां कांडक द्रव्यविषैं ग्रहण कीया जो फालि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्य ताका निक्षेपण तौ पहले ही पर्वविषैं हो है। अर सर्व द्रव्यविषैं अपकर्षण कीया जो अपकृष्ट द्रव्य ताका निक्षेपण तीनों पर्वविषैं हो है ऐसा जानना ॥ १४० ॥

तत्थ असंखेज्जगुणं असंखगुणहीणयं विसेसूणं ।
संखातीदगुणूणं विसेसहीणं च दत्तिकमो ॥ १४१ ॥
उक्कट्ठिदबहुभागे पढमे सेसेक्कभागबहुभागे ।
बिदिए पव्वेवि सेसिगभागं तदिये जहो देदि ॥

तत्रासंख्येयगुणं असंख्यगुणहीनकं विशेषोनम्।
संख्यातीतगुणोनं विशेषहीनं च दत्तिक्रमः ॥ १४१ ॥
अपकर्षितबहुभागे प्रथमे शेषैकभागबहुभागे ।
द्वितीये पर्वेपि शेषैकभागं तृतीये यथा ददाति ॥ १४२ ॥

सं० टी०— प्राग्रचितपर्वत्रये द्रव्यनिक्षेपक्रमविशेषप्रतिपादनार्थं गाथाद्वयमाह—तत्र सांप्रतिकगुणश्रेणिशीर्षपर्यंते प्रथमे पर्वणि द्रव्यमसंख्येयगुणं दीयते। तथाहि—

सम्यक्त्वप्रकृतिचरमकांडकद्रव्यं किंचिन्न्यूनद्व्यर्धगुणहानिगुणितसमयप्रबद्धमात्रं स a । १२ – प्राग्गलितनि-
७ । ख १७

षेकैः सर्वद्रव्यासंख्यातैकभागमात्रैर्न्यूनत्वात् स a । १२ – तत्कालोचितापकर्षभागहारेण विभक्तादेकभागं—
७ । ख । १७ १

स a । १२ – पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा तद्बहुभागं स a । १२ – प प्रथमे पर्वणि उदयनिषेकादारभ्य गुण-
७ । ख । १७ ओ
a
a
७ । ख । १७ ओ प
a a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रेणिशीर्षपर्यंतमसंख्यातक्रमेण प्रक्षेपकरणविधिना निक्षिपेत् । पुनरपकृष्टद्रव्यासंख्यातैकभागं पुनरपि पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा तद्बहुभागं द्वितीये पर्वणि प्रथमपर्वायामात् संख्यातगुणितायामे 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादिविधानेन स्वचरमनिषेकपर्यंतं विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत् । पुनरवशिष्टैकभागं तृतीयस्मिन् पर्वणि उपरितनस्थितिसमयादारभ्य तच्चरमनिषेकपर्यंतं द्वितीयपर्वायामसंख्यातगुणाद् द्विचरमकांडकायामात् २ ७ृ । ४ । ४ संख्यातगुणितायामे—२७ृ । ४ । ४ । ४ 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादिविधानेन विशेषहीनक्रमेण तत्तदपकृष्टनिषेकस्याधस्तादतिस्थापनावलिं मुक्त्वा निक्षिपेत् । अत्र सांप्रतगुणश्रेणिशीर्षनिक्षिप्तद्रव्यात् कांडकप्रथमनिषेके निक्षिप्तद्रव्यमसंख्यातगुणहीनं तदपकृष्टद्रव्यासंख्यातबहुभागस्य प्रथमपर्वणि निक्षेपात्तदेकभागस्य च द्वितीयपर्वणि निक्षेपात् । तथा द्वितीयपर्वचरमनिषेके निक्षिप्तद्रव्यात् तृतीयपर्वनिषेके निक्षिप्तद्रव्यमसंख्यातगुणहीनं एकभागासंख्यातबहुभागस्य द्वितीयपर्वणि निक्षेपात्, शेषैकभागस्य च तृतीयपर्वणि निक्षेपात् । एवं चरमकांडकप्रथमफालिपतनसमयादारभ्य तद्द्विचरमफालिपतनसमयपर्यंतं द्रव्यनिक्षेपक्रमो विशेषेण ज्ञातव्यः ॥ १४१—१४२ ॥

स० चं०— तहां प्रथम पर्वविषैं द्रव्य असंख्यातगुणा दीजिए है सो कहिए है— सम्यक्त्व मोहनीका सर्व द्रव्यविषैं पूर्व निषेकनिकरि सर्व द्रव्यके असंख्यातवे भागमात्र द्रव्य घटाएं अवशेष किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्धमात्र अंतकांडकका द्रव्य है। ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भाग ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग तौ प्रथम पर्वविषैं 'प्रक्षेपयोगोद्धृत' इत्यादि विधानतैं असंख्यातगुणा क्रमकरि देना। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग दूसरा पर्वविषैं 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादि विधानतैं चय घटता क्रमकरि देना। प्रथम पर्वतैं दूसरा पर्वका आयाम संख्यातगुणा जानना। बहुरि अवशेष एकभाग तीसरा पर्वविषैं 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादि विधानतैं चय घटता क्रमकरि अपकर्षण कीया निषेकनिके नीचे अतिस्थापनावली छोडि नीचे निक्षेपण करना। द्वितीय पर्वतैं संख्यातगुणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरिमे फालिं दिण्णे कदकरणिज्जेत्ति वेदगो होदि।
सो वा मरणं पावइ चउगइगमणं च तट्ठाणे ॥ १४५
देवेसु देवमणुए सुरणरतिरिए चउग्गईसुंपि ।
कदकरणिज्जोपत्ती कमेण अंतोमुहुत्तेण ॥ १४६ ॥

चरमे फालिं दत्ते कृतकरणीयेति वेदको भवति ।
स वा मरणं प्राप्नोति चतुर्गतिगमनं च तत्स्थाने ॥ १४५ ॥
देवेषु देवमनुष्ये सुरनरातिरश्चि चतुर्गतिष्वपि ।
कृतकरणीयोत्पत्तिः क्रमेण अन्तर्मुहूर्तेन ॥ १४६ ॥

सं० टी०— कृतकृत्यवेदकसम्यक्त्वप्रारंभसमयनिर्देशपूर्वकं तदवस्थाविशेषप्ररूपणार्थमिदं सूत्रद्वयमाह—

प्रागुक्तविधानेन अनिवृत्तिकरणचरमसमये सम्यक्त्वप्रकृतिचरमकांडकचरमफालिद्रव्ये अधोनिक्षिप्ते सति तदनंतरोपरितनसमयात्प्रभृति पुरातनगलितावशेषगुणश्रेण्यधिकशीर्षसंख्यातभागमात्रेंतर्मुहूर्तकाले २ ७ृ । ३ / ४ ४ कृतकृत्यवेदकसम्यग्दृष्टिरिति जीवः संज्ञायते दर्शनमोहक्षपणायोग्यस्थितिकांडकादिकरणीयस्यानिवृत्तिकरणकालचरमसमये एव निष्ठितत्वात् । कृतं निष्ठितं कृत्यं करणीयं यस्य स कृतकृत्यः, इति निरुक्तिसंभवात् । स एव कृतकृत्यवेदकसम्यग्दृष्टिर्भुज्यमानायुषः क्षयवशाद्यदि मरणं प्राप्नोति तदा सम्यक्त्वग्रहणात्पूर्वं बद्धनारकाद्यायुर्वशवर्तित्वेन चतसृषु गतिषु गच्छति । तथाहि—

तस्मिन्नेव कृतकृत्यवेदकसम्यक्त्वकाले चतुर्भागीकृते प्रथमसमयादारभ्यांतर्मुहूर्तमात्रे प्रथमे भागे २ ७ृ । ३ / ४ । ४ । ४ मृतो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

श्रेणिशीर्षपर्यंतमसंख्यातक्रमेण प्रक्षेपकरणविधिना निक्षिपेत्। पुनरपकृष्टद्रव्यासंख्यातैकभागं पुनरपि पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा तद्बहुभागं द्वितीये पर्वणि प्रथमपर्वायामात् संख्यातगुणितायामे 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादिविधानेन स्वचरमनिषेकपर्यंतं विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत्। पुनरवशिष्टैकभागं तृतीयस्मिन् पर्वणि उपरितनस्थितिसमयादारभ्य तच्चरमनिषेकपर्यंतं द्वितीयपर्वायामसंख्यातगुणाद् द्विचरमकांडकायामात् २ ꣴ। ४। ४ संख्यातगुणितायामे— २ ꣴ। ४। ४। ४ 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादिविधानेन विशेषहीनक्रमेण तत्तदपकृष्टनिषेकस्याधस्तादतिस्थापनावलिं मुक्त्वा निक्षिपेत्। अत्र सांप्रतगुणश्रेणिशीर्षनिक्षिप्तद्रव्यात् कांडकप्रथमनिषेके निक्षिप्तद्रव्यमसंख्यातगुणहीनं तदपकृष्टद्रव्यासंख्यातबहुभागस्य प्रथमपर्वणि निक्षेपात्तदेकभागस्य च द्वितीयपर्वणि निक्षेपात्। तथा द्वितीयपर्वचरमनिषेके निक्षिप्तद्रव्यात् तृतीयपर्वनिषेके निक्षिप्तद्रव्यमसंख्यातगुणहीनं एकभागासंख्यातबहुभागस्य द्वितीयपर्वणि निक्षेपात्, शेषैकभागस्य च तृतीयपर्वणि निक्षेपात्। एवं चरमकांडकप्रथमफालिपतनसमयादारभ्य तद्द्विचरमफालिपतनसमयपर्यंतं द्रव्यनिक्षेपक्रमो विशेषेण ज्ञातव्यः ॥ १४१—१४२ ॥

स० चं०— तहां प्रथम पर्वविषैं द्रव्य असंख्यातगुणा दीजिए है सो कहिए है— सम्यक्त्व मोहनीका सर्व द्रव्यविषैं पूर्व निषेकनिकरि सर्व द्रव्यके असंख्यातवे भागमात्र द्रव्य घटाएं अवशेष किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्धमात्र अंतकांडकका द्रव्य है। ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भाग ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग तौ प्रथम पर्वविषैं 'प्रक्षेपयोगोद्धत' इत्यादि विधानतैं असंख्यातगुणा क्रमकरि देना। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग दूसरा पर्वविषैं 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादि विधानतैं चय घटता क्रमकरि देना। प्रथम पर्वतैं दूसरा पर्वका आयाम संख्यातगुणा जानना। बहुरि अवशेष एकभाग तीसरा पर्वविषैं 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादि विधानतैं चय घटता क्रमकरि अपकर्षण कीया निषेकनिके नीचै अतिस्थापनावली छोडि नीचै निक्षेपण करना। द्वितीय पर्वतैं संख्यातगुणा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्विचरमकांडकका आयाम है तातैं भी तीसरे पर्वका आयाम संख्यात गुणा है । निषेकानिके प्रमाणका नाम इहां आयाम जानना । इहां अब जाका प्रारंभ भया ऐसा जो गुणश्रेणिका आयाम रूप प्रथम पर्व ताका शीर्ष जो अंत निषेक ताविषैं जो द्रव्य निक्षेपण कीया तातैं कांडकका प्रथम निषेकतैं जो दूसरे पर्वका प्रथम निषेक तीहिंविषैं निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा घाटि है । बहुरि द्वितीय पर्वका अंत निषेकविषैं जो द्रव्य निक्षेपण कीया तातैं तृतीय पर्वका प्रथम निषेकविषैं निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा घाटि है । जातैं पूर्व कथनके अनुसारि ऐसैं ही संभवै है । ऐसैं ही अंत कांडककी प्रथम फालिका पतनरूप जो अन्त कांडकोत्करण कालका प्रथम समयतैं लगाय द्विचरम फालिका पतन रूप जो अन्त कांडकोत्करण कालका उपांत समय तहां पर्यंत द्रव्य निक्षेपण करनेका विधान जानना ॥ १४१-१४२ ॥

उदयादिगलिदसेसा चरिमे खंडे हवेज्ज गुणसेढी ।
फाडेदि चरिमफालिं अणियट्टीकरणचरिमम्हि ॥

उदयादिगलितशेषा चरमे खंडे भवेत् गुणश्रेणी ।
पातयाति चरमफालिमनिवृत्तिकरणचरमे ॥ १४३ ॥

सं० टी०— सांप्रतगुणश्रेणिस्वरूपनिर्देशपूर्वकं चरमफालिपातनकालनिर्देशार्थमिदं सूत्रमाह—सम्यक्त्वचरमकांडकप्रथमफालिपातनसमयादारभ्य विधीयमाना गुणश्रेणी तच्चरमफालिपातनपर्यंतं उदयसमयादिगलितावशेषायामा वेदितव्या । पूर्वोक्तविधानेन द्विचरमफालिपातने एकसमयावशेषः कांडकोत्करणकालः, अनिवृत्तिकरणकालश्च परिसमाप्तः । पुनरवशिष्टेऽनिवृत्तिकरणकालचरमसमये सम्यक्त्वप्रकृतिचरमकांडकचरमफालिं पातयति ॥ १४३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— सम्यक्त्वमोहनीका अंतकांडककी प्रथम फालिका पतन समयतैं लगाय द्विचरम फालिका पतन समय पर्यंत उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम जानना। उदयादि वर्तमान समयतैं लगाय इहां गुणश्रेणि आयाम पाइए है तातैं उदयादि कहिए अर एक एक समय व्यतीत होतैं एक एक समय गुणश्रेणि आयामविषैं घटता जाय है तातैं गलितावशेष कह्या है। ऐसैं उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम जानना। बहुरि पूर्वोक्त विधानकरि अंत कांडककी द्विचरम फालिका पतन होतैं कांडकोत्करण कालका अनिवृत्तिकरण कालविषैं एक समय अवशेष रहै। बहुरि अवशेष रह्या अनिवृत्तिकरणका अंतसमयविषैं अंत कांडककी अंतिमफालिका पतन हो है॥ १४३॥

चरिमं फालिं देदि दु पढमे पव्वे असंखगुणियकमा।
अंतिमसमयम्हि पुणो पल्लासंखेज्जमूलाणि॥ १४४

चरमं फालिं ददाति तु प्रथमे पर्वे असंख्यगुणितक्रमाणि।
अंतिमसमये पुनः पल्यासंख्येयमूलानि॥ १४४॥

सं० टी०—सम्यक्त्वप्रकृतिचरमकांडकचरमफालिनिक्षेपक्रमप्रदर्शनार्थमाह—गलितावशिष्टे कृतकृत्यवेदककालप्रमिते सांप्रतगुणश्रेण्यायामे अनिवृत्तिकरणकालचरमसमये सम्यक्त्वप्रकृतिचरमकांडकचरमफालिद्रव्यमुत्कीर्य निक्षिपति-तथाहि। तच्चरमफालिद्रव्यं किंचिन्न्यूनद्व्यर्धगुणहानिगुणितसमयप्रबद्धमात्रं स ∂ । १२ — सर्वद्रव्यस्याधोगलितनिषेकैः
७ । ख । १७
कृतकृत्यकालांतर्मुहूर्तमात्रनिषेकैश्च न्यूनत्वात्। तच्चरमफालिद्रव्यमसंख्यातगुणितपल्यप्रथममूलभागहारेण मू ∂ अनेन खंडयित्वा तदेकभागं स ∂ । १२ — उदयसमयात्प्रभृति सांप्रतगुणश्रेणिद्विचरमसमयपर्यंतं प्रक्षेपविधिना प्रति-
७ । ख । १७ मू ∂

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निषेकमसंख्यातगुणितक्रमेण निक्षिपेत् । अत्रायं विशेषः—

द्वितीयनिषेके निक्षेपगुणकारात् तृतीयनिषेकनिक्षेपगुणकारः असंख्यातगुणितगुणकारगुणितः । एवं द्विचरमनिषेकपर्यंतं गुणकारक्रमो ज्ञातव्यः । अवशिष्टबहुभागद्रव्यं $\frac{१ \frown}{}$ स a । १२ - मू a / ७ । ख । १७ मू a इदं सांप्रतगुणश्रेणिचरमनिषेके निक्षिपेत् । इदं सर्वं मनसिकृत्य सांप्रतगुणश्रेण्या उदयनिषेकात्प्रभृति द्विचरमनिषेकपर्यंतं प्रथमपर्वेत्युक्तं । चरमनिषेके द्वितीयं पर्वेत्युक्तं ॥ १४४ ॥

स० चं–इहां अनिवृत्तिकरणका अंत समयविषैं व्यतीत भए पीछैं अवशेष रह्या सो ऐसा गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम सो कृतकृत्य वेदक कालका प्रमाण है। ताका द्विचरम समय पर्यंत तौ प्रथम पर्व अर ताका अंत समय सो दूसरा पर्व जानना । तहां सम्यक्त्व मोहनीका सर्व द्रव्यविषैं व्यतीत भए निषेक अर अवशेष रहे कृतकृत्य कालमात्र निषेक तिनिका द्रव्य घटाएं अवशेष किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण अंत कांडकका अंत फालिका द्रव्य है। ताकौं असंख्यात गुणा जो पल्यका प्रथम वर्गमूल ताका भाग देइ तहां एक भाग तौ प्रथम पर्वविषैं 'प्रक्षेपयोगोद्धृत' इत्यादि विधानतैं असंख्यात गुणा क्रमकरि देना । इतना विशेष– जो इहां असंख्यातका गुणकार समान रूप नाहीं । प्रथम निषेकतैं जिस असंख्यात करि गुणें दूसरा निषेक पर्यंत क्रमतैं गुणकार होइ तिसतैं असंख्यात गुणा असंख्यातकरि दूसरा निषेककौं गुणें तीसरा निषेक होइ ऐसैं द्विचरम निषेक पर्यंत क्रमतैं गुणकार असंख्यात गुणा जानना । बहुरि एक भाग ऐसैं दीएं अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य गुणश्रेणिका अंत निषेकनिविषैं निक्षेपण करै है ॥ १४५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरिमे फालिं दिण्णे कदकरणिज्जेत्ति वेदगो होदि।
सो वा मरणं पावइ चउगइगमणं च तट्ठाणे ॥ १४५
देवेसु देवमणुए सुरणरतिरिए चउग्गईसुंपि ।
कदकरणिज्जोपत्ती कमेण अंतोमुहुत्तेण ॥ १४६ ॥

चरमे फालिं दत्ते कृतकरणीयेति वेदको भवति ।
स वा मरणं प्राप्नोति चतुर्गतिगमनं च तत्स्थाने ॥ १४५ ॥
देवेषु देवमनुष्ये सुरनरातिराश्चि चतुर्गतिष्वपि ।
कृतकरणीयोत्पत्तिः क्रमेण अन्तर्मुहूर्तेन ॥ १४६ ॥

सं० टी०— कृतकृत्यवेदकसम्यक्त्वप्रारंभसमयनिर्देशपूर्वकं तदवस्थाविशेषप्ररूपणार्थमिदं सूत्रद्वयमाह—

प्रागुक्तविधानेन अनिवृत्तिकरणचरमसमये सम्यक्त्वप्रकृतिचरमकांडकचरमफालिद्रव्ये अधोनिक्षिप्ते सति तदनंतरोपरितनसमयात्प्रभृति पुरातनगलितावशेषगुणश्रेण्यधिकशीर्षसंख्यातभागमात्रेंतर्मुहूर्तकाले २ ७ । ३
४ ४
कृतकृत्यवेदकसम्यग्दृष्टिरिति जीवः संज्ञायते दर्शनमोहक्षपणायोग्यस्थितिकांडकादिकरणीयस्यानिवृत्तिकरणकालचरमसमये एव निष्ठितत्वात् । कृतं निष्ठितं कृत्यं करणीयं यस्य स कृतकृत्यः, इति निरुक्तिसंभवात् । स एव कृतकृत्यवेदकसम्यग्दृष्टिर्भुज्यमानायुषः क्षयवशाद्यदि मरणं प्राप्नोति तदा सम्यक्त्वग्रहणात्पूर्वं बद्धनारकाद्यायुर्वशवर्तित्वेन चतसृषु गतिषु गच्छति । तथाहि—

तस्मिन्नेव कृतकृत्यवेदकसम्यक्त्वकाले चतुर्भागीकृते प्रथमसमयादारभ्यांतर्मुहूर्तमात्रे प्रथमे भागे २ ७ । ३ मृतो
४ । ४ । ४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवेष्वेवोत्पद्यते नान्यगतिजेषु तत्काले इतरगतित्रयगमनकारणसंक्लेशपरिणामाभावात् । तदनंतरद्वितीये चतुर्थे भागे अंतर्मुहूर्तमात्रे २ ७ । ३ मृतो देवमनुष्यगत्योरेवोत्पद्यते नान्यगतिद्वये, तत्काले तद्गतिद्वयगमननिबंधनसंक्लेशपरिणामानुपपत्तेः । तदनंतरतृतीये चतुर्थभागेऽतर्मुहूर्तमात्रे २ ७ ३ मृतो देवमनुष्यतिर्यग्गतिष्वेवोत्पद्यते न नारकगतौ तत्काले नारकगतिगमनहेतुसंक्लेशपरिणामासंभवात् । तदनंतरचरमचतुर्थभागे मृतः कृतकृत्यवेदकसम्यग्दृष्टिश्चतसृष्वपि देवमनुष्यतिर्यग्नारकगतिषूत्पद्यते तत्काले तद्गतिगमननिबन्धनसंक्लेशपरिणामोपलंभात् ॥ १४५-१४६ ॥

४।४।४ ४।४।४

स० चं०—ऐसैं अनिवृत्ति करणके अंत समयविषैं सम्यक्त्व मोहनीका अंत कांडककी अंत फालिका द्रव्यकौं नीचले निषेकनिविषैं निक्षेपण कीए पीछैं अनंतर समयतैं लगाय अनिवृत्ति करण कालका संख्यातवां भागमात्र अंतर्मुहूर्त्त काल पर्यंत जो पुरातन गलितावशेष गुणश्रेणि आयामका शीर्ष ताकौं संख्यातका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टी हो है जातैं दर्शन मोहकी क्षपणा योग्य स्थिति कांडकादि कार्य सो अनिवृत्तिकरणका अंत समय विषै ही समाप्त भया, तातैं कीया है करने योग्य कार्य जाने ऐसा कृतकृत्य नाम पावै है सो जीव भुज्यमान आयुके नाशतैं मरण पावै तौ सम्यक्त्व ग्रहणतैं पहलैं जो बांध्या था आयु ताके वशतैं च्यारयो गतिनिविषैं उपजै है। तहां कृतकृत्य वेदकके कालका च्यारि भाग एक एक अंतर्मुहूर्तमात्र करिए । तहां प्रथमभागविषैं मूवा तौ देव ही विषैं, दूसरा भागविषैं मूवा देव वा मनुष्यविषैं, तीसरा भागविषैं मूवा देव मनुष्य तिर्यंचविषैं चौथा भाग विषैं मूवा च्यारयो गति विषैं उपजै है । जातैं तहां तिनही विषैं उपजने योग्य परिणाम हो हैं ऐसैं क्रमकरि कृतकृत्य वेदककी उत्पत्ति जाननी ॥१४६॥

करणपढमादु जावय किदुकिच्चुवरिं मुहुत्तअंतोत्ति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ण सुहाण परावत्ती सा घि कओदावरं तु वरिं ॥

करणप्रथमात् यावत् कृतकृत्योपरि मुहूर्तांत इति ।

न शुभानां परावृत्तिः सा हि कपोतावरं तु उपरि ॥ १४७ ॥

सं० टी०— अधःप्रवृत्तकरणप्रथमसमयादारभ्य कृतकृत्यवेदककालचरमसमयपर्यंतं लेश्यापरावृत्तिसंभवासंभवप्ररूपणार्थमिदं सूत्रमाह । अधःप्रवृत्तकरणप्रथमसमये दर्शनमोहक्षपणाप्रारंभकस्य तेजःपद्मशुक्ललेश्यानां शुभानां मध्ये यया लेश्यया क्षपणा प्रारब्धा तल्लेश्योत्कृष्टांशः प्रतिसमयमनंतगुणविशुद्धिक्रमेणानिवृत्तिकरणचरमसमये परिपूर्णो भवति । पुनस्तदनंतरकृतकृत्यवेदककालस्याभ्यंतरे प्रथमभागे यदि म्रियते तदा तत्रापि तल्लेश्यापरावृत्तिर्नास्ति तस्य देवेष्वेवोत्पादात् । यदि द्वितीयभागे म्रियते तदा तस्य भोगभूमिजमनुष्यगतावुत्पत्तिसंभवात् प्रागारब्धशुभलेश्याया उत्कृष्टमध्यमजघन्यांशानां संक्रमक्रमेण हान्या मरणकाले कपोतलेश्याजघन्यांशो भवति । अथ पुनस्तृतीयभागे यदि म्रियते तदा तस्यापि भोगभूमिजमनुष्यतिर्यग्गत्योरेव जन्मसंभवात् प्रागुक्तप्रकारेण कपोतलेश्याजघन्यांशो भवति । अथ पुनश्चतुर्थभागे यदि म्रियते तदा तस्यापि बद्धनरकायुषः प्रथमपृथिव्यामेवोत्पत्तिघटनात् पूर्ववत्कपोतलेश्याजघन्यांशो भवति । तद्भागमृतमनुष्यतिरश्चोः पूर्ववद्देवगत्यामुत्पद्यमानस्य सर्वेषु भागेषु मृतस्य लेश्यापरावृत्तिर्नास्ति । इदं कृतकृत्यवेदककाले मरणापेक्षया भणितं तत्काले मरणरहितस्य पुनः प्रादुर्भूतक्षायिकसम्यक्त्वस्य पूर्वं चतुर्गतिषु बद्धायुषः मरणकाले गत्यनुसारेण लेश्यापरावृत्तिरुक्तप्रकारेण ज्ञातव्या ॥ १४७ ॥

स० चं०— अधःकरणका प्रथम समयविषैं दर्शनमोहक्षपणाका प्रारंभक जीवकैं पीत पद्म शुक्ल लेश्या जो होइ सो समय समय अनंतगुणी विशुद्धताका क्रमकरि अनिवृत्तिकरणका अंतसमयविषैं तिस लेश्याका उत्कृष्ट अंश संपूर्ण होइ । बहुरि ताके अनंतरि कृतकृत्य वेदक कालविषैं प्रथम भागविषैं मरै तौ लेश्या पलटै ही नाहीं जातैं इहां मरि देवहीविषैं उपजना है । बहुरि जो दूसरा तीसरा चौथा भागविषैं मरै तौ शुभलेश्याकी क्रमतैं हानि होइकरि मरण समय कपोत लेश्याका जघन्य अंश होइ । जातैं द्वितीय भागविषैं मरि भोगभूमिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनुष्य भी हो है। तीसरा भागविषैं मरि भोगभूमिया मनुष्य वा तिर्यंच भी हो है। चौथा भागविषैं मरि जाकैं नरकायु बंध्या सो जीव प्रथम नारक पृथ्वीविषैं भी उपजै है। बहुरि जो देव गतिविषैं ही उपजना होइ तौ ताकैं च्यारयो ही भागनिविषैं लेश्याकी पलटनि न हो है। ऐसैं वेदक कालविषैं मरण होइ तीहिं अपेक्षा कथन कीया। बहुरि जो तहां मरण न होइ अर पूर्वैं च्यारयो गतिविषैं कोई गति सम्बन्धी आयु बांध्या है ताकैं क्षायिक सम्यक्त्व भए पीछैं मरण समय गतिके अनुसारि लेश्यानिकी पलटन जाननी ॥ १४७ ॥

अणुसमओ वट्टणयं कदकिज्जंतोत्ति पुव्वकिरियादो।
वट्टदि उदीरणं वा असंखसमयप्पबद्धाणं ॥ १४८॥

अनुसमयोपवर्तनं कृतकरणीय इति पूर्वक्रियातः।
वर्तते उदीरणा वा असंख्यसमयप्रबद्धानाम् ॥ १४८ ॥

सं० टी०— कृतकृत्यवेदककाले संभवत्क्रियाविशेषप्रतिपादनार्थमाह—दर्शनमोहनीयानुभागस्यानिवृत्तिकरणकालसंख्यातैकभागे यथा कांडकघातं संहृत्य अनंतगुणहान्या प्रतिसमयमपवर्तनं प्रारब्धं तथात्रापि कृतकृत्यवेदककालचरमसमयपर्यंतमप्रतिघातं वर्तत एव। पूर्वस्य करणपरिणामविशुद्धिविशेषस्य संस्कारशेषसंभवात्। तथा तत्रैव कृतकृत्यवेदककाले असंख्यातसमयप्रबद्धानामुदीरणापि तत्काले यावत्समयाधिका उच्छिष्टावलिरवशिष्यते तावत्प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेण वर्तते ॥ १४८ ॥

स० चं०— अनिवृत्तिकरण कालका संख्यातवां भाग अवशेष रहें जैसैं दर्शन मोहके अनुभागका कांडक घातकौं मेटि समय समय अनंतगुणा घटता क्रम लीएं अनुभागका अपवर्तन कह्या था सो ही इस कृतकृत्य वेदक कालका अंतसमय पर्यंत पाइए है जातैं क-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रण परिणामनिकी विशुद्धताका संस्कारका अवशेष इहां संभवै है । बहुरि तिस कृतकृत्य वेदकका कालविषैं यावत् एक समय अधिक उच्छिष्टावली अवशेष रहै तावत् समय समय असंख्यातगुणा क्रम लीएं असंख्यात समयप्रबद्धनिकी उदीरणा पाइए है ॥ १४८ ॥ ताका विधान कहै हैं—

उदयवहिं उक्कड्डिय असयगुणमुदयआवलिम्हि खिवे
उवरिं विसेसहीणं कदकिज्जो जाव अइत्थवणं ॥ १४९ ॥
जादि संकिलेसजुत्तो विसुद्धिसाहिदो वतोपि पडिसमयं ।
दव्वमसंखेज्जगुणं उक्कट्टादि णित्थ गुणसेढी ॥ १५० ॥
जादि वि असंखेज्जाणं समयपवद्धाणुदीरणातोवि ।
उदयगुणसेढिठिदिए असंखभागो हु पडिसमयं ॥

उदयबाहिरपकर्षितं असंख्यगुणं उदयावलौ क्षिपेत् ।
उपरि विशेषहीनं कृतकृत्यो यावदतिस्थापनम् ॥ १४९ ॥
यदि संक्लेशयुक्तो विशुद्धिसहितो अतोपि प्रतिसमयम् ।
द्रव्यमसंख्येयगुणमपकर्षति नास्ति गुणश्रेणी ॥ १५० ॥
यद्यपि असंख्येयानां समयप्रबद्धानामुदीरणा तथापि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदयगुणश्रेणिस्थितेरसंख्यभागो हि प्रतिसमयं ॥ १५१ ॥

सं० टी०—उदीरणाद्रव्यस्य प्रमाणं तन्निक्षेपविधानं च प्रदर्शयितुं सूत्रत्रयमाह– अत्र कृतकृत्यवेदककालमात्रस्थितिषु प्रविष्टस्य किंचिन्न्यूनद्व्यर्धगुणहानिगुणितसमयप्रबद्धमात्रस्यापकर्षणभागहारेण खण्डितस्यैकभागमुदयावलिबाह्यनिषेकेभ्यो गृहीत्वा पुनः पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा तदेकभागमुदयावल्यामुदयप्रथमसमयादारभ्य तच्चरमसमयपर्यंतं प्रतिनिषेकमसंख्यातगुणितक्रमेण प्रक्षेपयोगेत्यादिना विधिना निक्षिपेत्। पुनस्तद्बहुभागद्रव्यमुदयावलिन्यूनोपरितनस्थितावंतर्मुहूर्तप्रमाणायामुपरि समयाधिकामतिस्थापनावलिं वर्जयित्वा 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादिविधिना विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत्। एवं द्वितीयादिसमयेष्वपि। यद्यपि विशुद्धिसंक्लेशपरावृत्तिवशेन कृतकृत्यवेदकस्य शुभाशुभलेश्यापरिणामसंक्रमो भवति तथापि प्राक्तनकरणत्रयविशुद्धिसंस्कारवशात् प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेण द्रव्यमपकृष्य उदीरणां कुरुते कृतकृत्यवेदकसम्यग्दृष्टिः। गुणश्रेण्यायामं विना केवलमुदयावल्यामेव किंचिद्द्रव्यं प्रवेश्यावशिष्टस्योपरितनस्थितौ निक्षेपणमुदीरणा, इदमेव मनस्यवधार्याचार्यैः णत्थिगुणसेढी इत्युदीरणालक्षणमुदीरितं। एवं प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेण द्रव्यमपकृष्य निक्षेपे समयाधिकावल्युपरितननिषेकादपकृष्टद्रव्यस्य बहुवारमसंख्यातगुणितस्य तदानींतनोदयनिषेकाद्धीनाधिकभावशंकायां परिहार उच्यते—यद्यप्यसंख्येयसमयप्रबद्धानामुदीरणा चरमपूर्वपूर्वोदीरणाद्रव्यादसंख्यातगुणितद्रव्या तथापि चरमफालिगुणश्रेण्यायातोदयनिषेकद्रव्यादसंख्यातैकभागमात्रमेवोदीरणाद्रव्यमुदयनिषेके दीयमानमपकर्षणभागहारेण खंडितसर्वद्रव्यस्य पल्यासंख्यातभागेन भक्तस्यैकभागमात्रत्वात् उदयनिषेकस्य च सर्वद्रव्यस्यासंख्यातपल्यप्रथममूलभक्तस्यैकभागमात्रत्वात्। किं पुनः कृतकृत्यवेदकप्रथमादिसमयेषु उदीरणाद्रव्यं तत्र तत्रोदयावलिनिषेकेषु दीयमानं तत्तदुदयावलिनिषेकसत्त्वद्रव्यादसंख्यातगुणहीनमित्युच्यते। कृतकृत्यवेदककालस्य समयाधिकावलिमात्रेऽवशिष्टे सर्वाग्रनिषेकात्पूर्वपूर्वापकृष्टद्रव्यादसंख्यातगुणितद्रव्यमपकृष्य समयोनावल्याः द्वित्रिभागमपि संस्थाप्य तदधस्तने तत्त्रिभागे रूपाधिके उदयसमयात्प्रभृति इदानीमपकृष्टद्रव्यस्य पल्यासंख्यातभागभक्तस्यैकभागं तद्योग्यासंख्यातसमयपर्यंतमसंख्यातगुणितक्रमेण दत्त्वावशिष्टबहुभागद्रव्यं तथावलित्रिभागसमयेषु अतिस्थापनारूपस्तनसमयं मुक्त्वा सर्वत्र विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत्। एषैवोत्कृष्टोदीरणा। एवमनुभागस्यानुसमयमनंतगुणितापवर्तनेन कर्मप्रदेशानां प्रतिसमयमसंख्यातगुणितोदीरणया च कृतकृत्यवेदकसम्यग्दृष्टिः सम्यक्त्वप्रकृतिस्थितिमंतर्मुहूर्तायामामुच्छिष्टावलिं मुक्त्वा सर्वां प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशविनाशपूर्वकं उदयमुखेन गालयित्वा तदनंतरसमये उदीरणारहितं केवल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनुभागसमयापवर्तनेनैव प्राक्तनापवर्तनक्रमविलक्षणेनोदयप्रथमसमयात्प्रभृति प्रतिसमयमनंतगुणितक्रमेण प्रवर्तमानेन प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशविनाशपूर्वकं प्रतिसमयमेकैकनिषेकं गालयित्वा तदनंतरसमये क्षायिकसम्यग्दृष्टिर्जायते जीवः ॥

स० चं०— कृतकृत्य वेदक कालमात्र सम्यक्त्व मोहनीके निषेक रहैं तिनिका द्रव्य किंचिदून द्व्यर्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भाग प्रमाण द्रव्यकौं जे उदयावलीतैं बाह्य उपरिवर्ती निषेक हैं सो तिनतैं ग्रहिकरि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागतौ उदयावलीविषैं 'प्रक्षेपयोगोद्धृत' इत्यादि विधान करि प्रथम समयतैं लगाय अंत निषेकपर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं दीजिए है। बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य तिस उदयावलीतैं उपरिवर्ती जो अवशेष अंतर्मुहूर्तमात्र उपरितन स्थिति तहां अंतविषै समय अधिक अतिस्थापनावली छोडि सर्व निषेकनिविषैं 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादि विधानकरि विशेष हीन क्रम लीएं निक्षेपण करै। ऐसैं उपरितन स्थितिका द्रव्य जो उदयावलीविषैं दीजिए है ताका नाम उदीरणा है॥१४९

स० चं०— यद्यपि कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टी लेश्याकी पलटनितैं संक्लेश संयुक्त होइ वा विशुद्धता सहित होइ तथापि पूर्व भए थे करण रूप परिणाम तिनिकी विशुद्धताका जो संस्कार ताके वशतैं समय समय प्रति असंख्यातगुणा द्रव्यकौं अपकर्षणकरि उदीरणा करै है। गुणश्रेणी आयाम विना किंचित् द्रव्यकौं उदयावलीविषैं देइ अवशेषकौं उपरितन स्थितिविषैं दीया तातैं इहां गुणश्रेणि नाही है ॥ १५० ॥

स० चं०— यद्यपि असंख्यात समयप्रबद्धनिकी उदीरणा पूर्व पूर्व समय सम्बन्धी उदीरणा द्रव्यतैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं है तथापि अंतकांडककी अंतफालिका द्रव्यकौं गुणें गुणश्रेणि आयामविषैं दीया था तिस गुणश्रेणिरूप जो उदय आया निषेक ताका द्रव्यतैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यहु उदीरणा द्रव्य असंख्यातवां भागमात्र ही है। जातैं यहु उदीरणा द्रव्य तौ सर्व द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र है अर जो तिस गुणश्रेणिका निषेक उदयरूप है ताका द्रव्य सर्व द्रव्यकौं असंख्यातगुणा पल्यवर्ग मूलका भाग दीएं एक भागमात्र है तातैं कृतकृत्य वेदकका प्रथमादि समय सम्बन्धी निषेकनिविषैं इहां उदयावलीविषैं दीया द्रव्य उदीरणा द्रव्य सो पूर्वै पाइए है जो सत्तारूप द्रव्य तातैं असंख्यातगुणा घाटि है। बहुरि कृतकृत्य वेदक कालविषैं एक समय अधिक आवली अवशेष रहैं पूर्वै अपकर्षण कीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा द्रव्यकौं स्थितिका अंतनिषेक जो उदयावलीतैं उपरिवर्ती एक निषेक तातैं अपकर्षणकरि ताके नीचैं एक समय घाटि आवलीका दोय तीसरा भाग प्रमाण निषेकनिकौं अतिस्थापनरूप राखि ताके नीचैं एक समय अधिक आवलीका त्रिभागमात्र निषेकनिविषैं द्रव्य दीजिए है तहां तिस अपकर्षण कीया हूवा द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्यकौं उदय समयतैं लगाय यथायोग्य असंख्यात समय सम्बन्धी निषेकनिविषैं असंख्यातगुणा क्रमकरि दीजिए है। तहां तिस अपकर्षण कीया हूवा द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्य तौ उदय समयतैं लगाय यथायोग्य असंख्यात समय सम्बन्धी निषेकनिविषैं असंख्यातगुणा क्रमकरि दीजिए है अर अवशेष बहुभागमात्र द्रव्यकौं अतिस्थापना ताका जो नीचेका समय ताकौं छोडि ताके नीचैं अवशेष आवलीका त्रिभागमात्र निषेकनिविषैं विशेष घटता क्रमकरि निक्षेपण करिए है। हुइ ही उत्कृष्ट उदीरणा है। यातैं अधिक उदीरणाका द्रव्य नाहीं। ऐसैं अनुभागका तौ अनु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय अपवर्तनकरि अर कर्म परमाणूनिकी उदीरणा करि यहु कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टी, रही थी जो सम्यक्त्व मोहनीकी अंतर्मुहूर्त स्थिति तामैं उच्छिष्टावली विना सर्व स्थिति है सो प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेशनिका सर्वथा नाश लीएं जो एक एक निषेकका एक एक समयविषैं उदय रूप होइ निर्जरना ताकरि नष्ट हो है, बहुरि ताका अनंतर समयविषैं उच्छिष्टावलीमात्र स्थिति अवशेष रहैं उदीरणाका भी अभाव भया, केवल अनुभागका अपवर्तन है सो पूर्वैं अनुभाग अपवर्तन कह्या था तातैं याका अन्य लक्षण है, उदय रूप प्रथम समयतैं लगाय समय समय अनंतगुणा क्रमकरि वर्तै है ताकरि प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेशनिका सर्वथा नाश पूर्वक समय समय प्रति उच्छिष्टावलीके एक एक निषेककौं गालि निर्जरा रूप करि ताका अनंतर समयविषैं जीव क्षायिक सम्यग्दृष्टी हो है ॥ १५१ ॥

विदियकरणादिमादो कदकरणिज्जस्स पढमसमओत्ति
वोच्छं रसखंडुक्कीरणकालादीणमप्पबहु ॥ १५२ ॥

द्वितीयकरणादिमात् कृतकृत्यस्य प्रथमसमय इति ।
वक्ष्ये रसखंडोत्करणकालादीनामल्पबहुत्वम् ॥ १५२ ॥

सं० टी०— अपूर्वकरणप्रथमसमयादारभ्य कृतकृत्यवेदकप्रथमसमयपर्यंतमनुभागखंडोत्करणकालादीनां उत्कृष्टस्थितिसत्त्वपर्यंतानां त्रयस्त्रिंशतामल्पबहुत्वपदानि वक्ष्यामीति प्रतिज्ञासूत्रमिदं ॥ १५२ ॥

स० चं०— दूसरा जो अपूर्वकरण ताका प्रथम समयतैं लगाय कृतकृत्य वेदकका प्रथम समय पर्यंत अनुभाग कांडकोत्करण कालादिक तिनिका अल्प बहुत्वके तेतीस स्थान कहौंगा ॥ १५२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रसठिदिखंडुक्कीरणअद्धा अवरं वरं च अवरवरं ।
सव्वत्थोवं अहियं संखेज्जगुणं विसेसहियं ॥ १५३

रसस्थितिखंडोत्करणाद्धा अवरं वरं च अवरवरं ।
सर्वस्तोकं अधिकं संख्येयगुणं विशेषाधिकम् ॥ १५३ ॥

कदकरणसम्मखवणाणियट्टिअपुव्वद्ध संखगुणिदकमं
तत्तो गुणसेढिस्स य णिक्खेओ साहियो होदि ॥१५४

कृतकरणसम्यक्क्षपणानिवृत्यपूर्वाद्धा संख्यगुणितक्रमं ।
ततो गुणश्रेण्याश्च निक्षेपः साधिको भवति॥ १५४॥

सम्मदुचरिमे चरिमे अडवस्सस्सादिमे च ठिदिखंडा
अवरवराबाहावि य अडवस्सं संखगुणियकमा ॥१५५

सम्यग्द्विचरमे चरमे अष्टवर्षस्यादिमे च स्थितिखंडानि ।
अवरवराबाधापि च अष्टवर्षं संख्यातगुणितक्रमाणि ॥ १५५ ॥

सम्मे असंखवस्सिय चरिमट्ठिदिखंडओ असंखगुणो
मिस्से चरिमे खंडियमहियं अडवस्समेत्तेण॥१५६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्येऽसंख्यवर्षे चरमस्थितिखंडकोऽसंख्यगुणः ।
मिश्रे चरमे खंडितमधिकमष्टवर्षमात्रेण ॥ १५६ ॥

मिच्छे खवदे सम्मदुगाणं ताणं च मिच्छसंतंहि ।
पढमंतिमठिदिखंडा असंखगुणिदा हु दुट्ठाणे १५७

मिथ्ये क्षपिते सम्यग्द्विकानां तेषां च मिथ्यसत्त्वं हि ।
प्रथमांतिमस्थितिखंडान्यसंख्यगुणितानि हि द्विस्थाने ॥ १५७ ॥

मिच्छंतिमठिदिखंडो पल्लासंखेज्जभागमेत्तेण ।
हेट्ठिमठिदिप्पमाणेणब्भहियो होदि णियमेण १५८

मिथ्यांतिमस्थितिखंडं पल्यासंख्येयभागमात्रेण ।
अधस्तनस्थितिप्रमाणेनाभ्यधिकं भवति नियमेन ॥ १५८ ॥

दूरावकिट्टिपढमं ठिदिखंडं संखसंगुणं तिण्णं ।
दूरावकिट्टिहेदूठिदिखंडं संखसंगुणियं ॥ १५९ ॥

दूरापकृष्टिप्रथमं स्थितिखंडं संखसंगुणं त्रयं ।
दूरापकृष्टिहेतुः स्थितिखंडः संख्यसंगुणितः ॥ १५९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पलिदोवमसंतादो विदियो पल्लस्स हेदुगो जादु ।
अवरो अपुव्वपढमे ठिदिखंडो संखगुणिदकमा ॥

पलितोपमसत्त्वतो द्वितीयं पल्यस्य हेतुकं यत्तु ।
अवरमपूर्वप्रथमे स्थितिखंडं संख्यगुणितक्रमं ॥ १६० ॥

पलिदोवमसंतादो पढमो ठिदिखंडओ दु संखगुणो
पलिदोवमठिदिसंतं होदि विसेसाहियं तत्तो ॥ १६१

पल्योपमसत्त्वतः प्रथमं स्थितिखंडकं तु संख्यगुणं ।
पल्योपमस्थितिसत्त्वं भवति विशेषाधिकं ततः ॥ १६१ ॥

विदियकरणस्स पढमे ठिदिखंडविसेसयं तु तदियस्स
करणस्स पढमसमये दंसणमोहस्स ठिदिसंतं ॥१६२॥

द्वितीयकरणस्य प्रथमे स्थितिखंडविशेषकं तु तृतीयस्य ।
करणस्य प्रथमसमये दर्शनमोहस्य स्थितिसत्त्वम् ॥ १६२ ॥

दंसणमोहूणाणं बंधो संतो य अवर वरगो य ।
संखेये गुणयकमा तेत्तीसा एत्थ पदसंखा ॥ १६३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शनमोहोनानां बंधः सत्त्वं च अवरं वरकं च।
संख्येयगुणितक्रमं त्रायस्त्रिंशदत्र पदसंख्या ॥ १६२ ॥

सं० टी०— एकादशगाथासूत्रैः तान्येवाल्पबहुत्वपदानि प्रतिपाद्यन्ते। तद्यथा—दर्शनमोहस्य जघन्यानुभागखंडोत्करणकालः सम्यक्त्वप्रकृत्यष्टवर्षस्थितिकरणसमयात्प्राक्तनानंतरावस्थायां संभवन् वक्ष्यमाणद्वात्रिंशत्पदेभ्यः स्तोकोऽल्प इत्यर्थः। ज्ञानावरणाद्यायुर्वर्जितशेषकर्मणां जघन्यानुभागखंडोत्करणकालोऽनिवृत्तिकरणचरमभागे संभवन् सर्वतः स्तोकमिति सामान्येन जघन्यानुभागखंडोत्करणकालः संख्यातावलिमात्रोऽपि उत्तरपदापेक्षयाल्प इत्युच्यते। एकं पदं १। तस्मादपूर्वकरणप्रथमसमये प्रारभ्यमाणोत्कृष्टानुभागखंडोत्करणकालो विशेषाधिकः २ ७ ५, विशेषप्रमाणं जघन्यानु-
४
भागखंडोत्करणकालसंख्यातैकभागमात्रं द्वितीयं पदं २। तस्मादनिवृत्तिकरणचरमभागे संभवन् जघन्यस्थितिकांडकोत्करणकालः संख्यातगुणः २ ७ । ५ । ४ तृतीयं पदं ३। तस्मादपूर्वकरणप्रथमसमये घटमानः उत्कृष्टस्थितिखंडोत्करण-
४
कालो विशेषाधिकः २ ७ ५ ४ ५ चतुर्थं पदं ४। तस्मात्कृतकृत्यवेदककालः संख्यातगुणः २ ७ । ५ । ४ । ५ । ४
४ ४
इदमपवर्त्य लिखिते एवं २ ७ृ ७ृ पंचमं पदं ५। अस्मात्सम्यक्त्वप्रकृतिक्षपणाकालः अष्टवर्षकरणप्रथमसमयादारभ्य कृतकृत्यवेदकचरमसमयपर्यंतमुपपद्यमानः संख्यातगुणः २ ७ृ ७ । ४ षष्ठं पदं ६। अस्मादनिवृत्तिकरणकालः संख्यातगुणः २ ७ृ ७ृ । ४ । ४ सप्तमं पदं ७। तस्मादपूर्वकरणकालः संख्यातगुणः २ ७ ७ृ । ४ । ४ । ४ अष्टमं पदं ८। अमुष्मादपूर्वकरणप्रथमसमये प्रारब्धगुणश्रेण्यायामो विशेषाधिकः २ ७ ७ृ । ४ । ४ । ४ । ४ विशेषप्रमाणमनिवृत्तिकरणकालस्तत्संख्यातभागश्च ९। तस्मात्सम्यक्त्वप्रकृतेर्द्विचरमस्थितिकांडकायामः संख्यातगुणः २ ७ृ ७ृ । ४ । ४ । ४ । ४ गुणिते एवं २ ७ृ दशमं पदं १०। अस्मात्सम्यक्त्वप्रकृतिचरमस्थितिकांडकायामः संख्यातगुणः २ ७ृ ४ एकादशं पदं ११। एतस्मादष्टवर्षप्रथमसमये सम्यक्त्वप्रकृतिस्थितिकांडकायामः संख्यातगुणः २ ७ृ ४ । ४ द्वादशं पदं १२। तस्मात्कृतकृत्यवेदकप्रथमसमये संभवज्ज्ञानावरणादिकर्मस्थितिबंधस्य जघन्याबाधाकालः संख्यातगुणः २ ७ृ ४ । ४ । ४ त्रयोदशं पदं १३। अस्मादपूर्वकरणप्रथमसमयसंभवज्ज्ञानावरणादिकर्मस्थितिबन्धस्योत्कृष्टाबाधाकालः संख्यातगुणः— २ ७ृ । ४ । ४ । ४ । ४ एतावत्पर्यंतं प्रागुक्तसर्वायामाः प्रत्येकमंतर्मुहूर्तमात्रा एव। चतुर्दशं पदं १४। अमुष्मात्सम्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्त्वप्रकृतेः खंडितस्थित्यवशेषोऽष्टवर्षायामः संख्यातगुणः व ८। अंतर्मुहूर्तादिदिनमासवर्षप्रमितसंख्यातगुणकारस्य दर्शनात्
पंचदशं पदं १५ । अमुष्मात्सम्यक्त्वप्रकृतेरष्टवर्षावशेषकरणनिमित्तपल्यासंख्यातैकभागमात्रचरमस्थितिकांडकायामोऽ-
संख्यातगुणः प — व ८ षोडशं पदं १६ । तस्मात्सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतेश्चरमकांडकायामो विशेषाधिकः प विशे-
a a a a a a
षप्रमाणं चोच्छिष्टावल्योनाष्टवर्षमात्रं, सप्तदशं पदं १७। तस्मान्मिथ्यात्वे चरमस्थितिकांडकफालिद्रव्यं मिश्रप्रकृतौ संक्रम्य
१–
क्षपिते तदनंतरसमये प्रारब्धे मिश्रसम्यक्त्वप्रकृत्योः प्रथमस्थितिकांडकायामोऽसंख्यातगुणः प a अष्टादशं पदं
a a a
१८। तस्मान्मिथ्यात्वद्रव्यसत्त्वे चरमकांडकावशेषमात्रे सति तत्काललांछितमिश्रसम्यक्त्वप्रकृतिचरमस्थितिकांडकायामोऽ-
१–
संख्यातगुणः प a। एकान्नविंशं पदं १९। एतस्मान्मिथ्यात्वद्रव्यचरमकांडकायामो विशेषाधिकः प विशेषप्रमाणं च
a a a
मिथ्यात्वसत्त्वकाले मिश्रसम्यक्त्वप्रकृत्योश्चरमकांडकावशिष्टाधस्तनस्थितिमात्रं विंशं पदं २० । तस्माद्दर्शनमोहत्रयस्य
१–
दूरापकृष्टिमात्रावशेषस्थितौ प्रविष्टपल्यासंख्यातबहुभागमात्रप्रथमस्थितिकांडकायामोऽसंख्यातगुणः प a
५।५।५।५। a

एकविंशं पदं २१ ।
अमुष्माद्दूरापकृष्टिस्थित्यवशेषहेतुभूतपल्यसंख्यातबहुभागमात्रस्थितिकांडकायामः संख्यातगुणः प ४ द्वाविंशं
५।५।५।
पदं २२ । तस्मात्पल्यमात्रावशिष्टस्थितौ प्रविष्टद्वितीयस्थितिकांडकायामः संख्यातगुणः प ४ त्रयोविंशपदं २३ ।
५ ५
तस्मात्पल्यमात्रावशेषकरणनिमित्तपल्यसंख्यातैकभागमात्रस्थितिकांडकायामः संख्यातगुणः प पल्यप्रविष्टकांडकभा-
ॢ ॢ
गहारात्पल्यहेतुकांडकभागहारस्य संख्यातगुणहीनत्वात्। चतुर्विंशं पदं २४। एतस्मादपूर्वकरणप्रथमसमये प्रारब्धजघन्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

स्थितिकांडकायामः संख्यातगुणः प पंचविंशं पदं । २५ । अस्मात्पल्यमात्रावशेषस्थितौ प्रविष्टपल्यसंख्यातबहुभाग-
१ृ
मात्रप्रथमकांडकायामः संख्यातगुणः प ४ षड्विंशं पदं । २६ । अमुष्मात्पल्यमात्रावशेषस्थितिसत्त्वं विशेषाधिकं प
५
विशेषप्रमाणं च पल्यसंख्यातैकभागमात्रं । सप्तविंशंपदं २७ । तस्मादपूर्वकरणप्रथमसमये जघन्योत्कृष्टकांडकयोर्विशेषः पल्यसंख्यातभागन्यूनसागरोपमपृथक्त्वमात्रः संख्यातगुणः सा ७ – प अष्टाविंशं पदं । २८ । एतस्मादनिवृत्तिकरण
८ १ृ
प्रथमसमये दर्शनमोहस्य स्थितिसत्त्वं संख्यातगुणं स ७ ल एकान्नत्रिंशं पदं । २९ । तस्माद्दर्शनमोहवर्जितानां ज्ञा-
८
नावरणादिशेषकर्मणां जघन्यस्थितिबंधः कृतकृत्यवेदकप्रथमसमयसंभवी संख्यातगुणः सा अं को २ त्रिंशं पदं । ३० ।
४।४।४
तस्मादपूर्वकरणप्रथमसमये तेषामेव कर्मणामुत्कृष्टस्थितिबंधः संख्यातगुणः सा अं को २ एकत्रिंशं पदं ३१ । तस्मात्तेषा-
४ । ४
मेव कर्मणामनिवृत्तिकरणचरमभागे संभवि जघन्यस्थितिसत्त्वं संख्यातगुणं सा अं को २ द्वात्रिंशं पदं । ३२ । तस्मात्ते-
४
षामेव कर्मणामपूर्वकरणप्रथमसमये संभवदुत्कृष्टस्थितिसत्त्वं संख्येयगुणं सा अं को २ त्रयस्त्रिंशं पदं । ३३ । एवं दर्श-नमोहक्षपणावसरे संभवदल्पबहुत्वपदानि त्रयस्त्रिंशत्संख्यानि प्रवचनानुसारेण व्याख्यातानि ॥ १५३ ॥

स० चं०—सम्यक्त्व मोहनीका तौ अष्टवर्ष स्थिति करनेके समयतैं पहले समयनिविषैं संभवता अर आयु विना अन्य कर्मनिका अनिवृत्ति करण कालका अंत भागविषैं संभवता ऐसा जो जघन्य अनुभाग खंडोत्करण काल सो संख्यात आवलीमात्र है तौ भी वक्ष्यमाण सर्व स्थाननितैं स्तोक है ॥ १ ॥ तातैं याका संख्यातवां भागमात्र विशेषकरि अधिक अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं जाका प्रारंभ भया ऐसा उत्कृष्ट अनुभाग खंडोत्करणका काल है ॥ २ ॥ तातैं संख्यातगुणा अनिवृत्तिकरणका अंत भागविषैं संभवता ऐसा जघन्य स्थिति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांडकोत्करण काल है ॥ ३ ॥ तातैं याका संख्यातवां भागमात्र विशेषकरि अधिक अपूर्व करणका आदिविषैं संभवता ऐसा उत्कृष्ट स्थिति कांडकोत्करणका काल है ॥ १५३ ॥

स० चं०—तातैं संख्यातगुणा कृतकृत्यवेदकका काल है ॥ ५ ॥ तातैं संख्यातगुणा अष्ट वर्ष करनेका समयतैं लगाय कृतकृत्य वेदकका अंत समय पर्यंत सम्यक्त्व मोहनीका क्षपणाका काल है । ६ । तातैं संख्यातगुणा आनिवृत्ति करणका काल है । ७ । तातैं संख्यातगुणा अपूर्वकरणका काल है । ८ । तातैं अनिवृत्ति करणकाल अर याका संख्यातवां भागमात्र विशेषकरि अधिक अपूर्वकरणका प्रथम समयविषैं जाका प्रारंभ भया ऐसा गुणश्रेणि आयाम है ॥ १५४ ॥

स० चं०—तातैं संख्यातगुणा सम्यक्त्व मोहनीका द्विचरम स्थिति कांडकका आयाम है । १० । तातैं संख्यातगुणा सम्यक्त्व मोहनीकी अंत स्थितिकांडकका आयाम है । ११ । तातैं संख्यात गुणा सम्यक्त्व मोहनीका अष्टवर्ष स्थितिका प्रथम स्थिति कांडक आयाम है । १२ । तातैं संख्यातगुणा कृतकृत्यवेदकका प्रथम समयविषैं संभवता जो ज्ञानावरणादिक कर्मनिका स्थितिबंध ताका जघन्य आबाधा काल है । १३ । तातैं संख्यातगुणा अपूर्वकरणका प्रथम समयविषैं संभवता स्थितिबंधका उत्कृष्ट आबाधा काल है । १४ । इहां पर्यंत ए सर्व काल प्रत्येक यथासंभव अंतर्मुहूर्तमात्र ही जानने । तातैं संख्यातगुणी सम्यक्त्व मोहनीकी अष्टवर्ष प्रमाण स्थिति है ॥ १५५ ॥

स० चं०—तातैं असंख्यात गुणा सम्यक्त्व मोहनीकी आठवर्षमात्र स्थिति करनेके अर्थि पल्यका असंख्यातवां भागमात्र अंतका स्थितिकांडक आयाम है ॥ १६ ॥ तातैं उच्छि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष्टावली घाटि अष्टवर्षमात्र विशेषकरि अधिक मिश्रमोहनीका अंतका स्थिति कांडक आयाम है ॥ १७ ॥ तातैं असंख्यातगुणा अंत स्थिति कांडककी अंतफालिका द्रव्यकौं मिश्र मोहनीविषैं संक्रमणकरि मिथ्यात्वका क्षय करनेका समयतैं अनंतरवर्ती समयविषैं संभवता मिश्रमोहनी वा सम्यक्त्व मोहनीका प्रथम स्थिति कांडक आयाम है। १८। तातैं असंख्यात गुणा मिथ्यात्वका सत्व द्रव्य अंतकांडक प्रमाण अवशेष जहां रहैं तिस कालविषैं संभवता मिश्रमोहनी वा सम्यक्त्व मोहनीका अंतकांडकका आयाम है १९। ॥ १५६–१५७

सं० च–तातैं मिथ्यात्वका सत्त्व जिस कालविषैं पाइये तिस विषैं मिश्र सम्यक्त्व मोहनीका अंत कांडकका घात भए पीछें अवशेष रही जो तिन दोऊनिकी नीचेकी स्थिति पल्यका असंख्यातवां भागमात्र ताकरि अधिक मिथ्यात्वका अंत कांडकका आयाम है २०॥ १५८॥

सं० च०– तातैं असंख्यात गुणा दर्शन मोहत्रिककी दूरापकृष्टि नामा स्थितिविषैं प्राप्तभया ऐसा पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र स्थिति कांडक आयाम है २१। तातैं संख्यातगुणा दूरापकृष्टि स्थितिकौं कारण ऐसा पल्यका संख्यात बहुभागमात्र स्थिति कांडक आयाम संख्यात गुणा है। २२ ॥ १५९ ॥

सं० च०–तातैं संख्यातगुणा पल्यमात्र अवशेष स्थिति होतैं पाइए ऐसा द्वितीय स्थिति कांडकका आयाम है। २३। तातैं संख्यातगुणा पल्यमात्र स्थितिकौं कारणभूत ऐसा पल्यका संख्यातवां भागमात्र स्थिति कांडक आयाम है। २४। तातैं संख्यातगुणा अपूर्वकरणका प्रथम समयविषैं जाका प्रारंभ भया जो जघन्य स्थिति कांडक ताका आयाम है २५।

सं० चं०– तातैं संख्यातगुणा पल्यमात्र अवशेष स्थितिविषैं प्राप्त ऐसा पल्यका सं- २१६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख्यात बहुभागमात्र प्रथम कांडकका आयाम है। २६। तातैं पल्यका संख्यातवां भागमात्र विशेषकरि अधिक पल्यमात्र स्थिति सत्व है। २७॥ १६१॥

स० चं०– तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं जघन्य अर उत्कृष्ट कांडकनिविषैं वीचिके विशेषका प्रमाण पल्यका संख्यातवां भागकरि हीन पृथक्त्व सागर प्रमाण है। २८। तातैं संख्यातगुणा अनिवृत्ति करणका प्रथम समयविषैं संभवता दर्शन मोहका स्थिति सत्व है। २९। तातैं संख्यातगुणा कृतकृत्य वेदकका प्रथम समयविषैं संभवता दर्शन मोह विना अन्य कर्मनिका जघन्य स्थितिबंध है। ३०। तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता तिनही कर्मनिका उत्कृष्ट स्थिति बंध है। ३१। तातैं संख्यातगुणा अनिवृत्ति करणका अंत भागविषै संभवता तिनही कर्मनिका जघन्य स्थिति सत्व है। ३२। तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता तिनही कर्मनिका उत्कृष्ट स्थिति सत्व है। ३३। ऐसैं दर्शन मोहकी क्षपणाका अवसरविषैं संभवते अल्पबहुत्वके तेतीस स्थान हैं॥ १६२–१६३॥

सत्तण्हं पयडीणं खयादु खइयं तु होदि सम्मत्तं।
मेरु व णिप्पकंपं सुणिम्मलं अक्खयमणंतं॥ १६४॥

सप्तानां प्रकृतीनां क्षयात् क्षायिकं तु भवति सम्यक्त्वम्।
मेरुरिव निष्प्रकंपं सुनिर्मलमक्षयमनंतम्॥ १६४॥

दंसणमोहे खविदे सिज्झदि तत्थेव तदियतुरियभवे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णादिक्कति तुरियभवे ण विणस्सति सेससम्मे व ॥

दर्शनमोहे क्षपिते सिद्ध्यति तत्रैव तृतीयतुर्यभवे ।
नातिक्रामति तुर्यभवं न विनश्यति शेषसम्यगिव ॥ १६५ ॥

सत्तण्हं पयडीणं खयादु अवरं तु खइयलद्धी दु ।
उक्कस्सखइयलद्धी घाइचउक्कखएण हवे ॥ १६६ ॥

सप्तानां प्रकृतीनां क्षयादवरा तु क्षायिकलब्धिस्तु ।
उत्कृष्टक्षायिकलब्धिर्घातिचतुष्कक्षयेण भवेत् ॥ १६६ ॥

उवणेउ मंगलं वो भवियजणा जिणवरस्स कमकमलजुयं
जसकुलिसकलससत्थियससंकसंखंकुसादिलक्खणभरियं

उपनयतु मंगलं वो भविकजनान् जिनवरस्य क्रमकमलयुगं ।
झषकुलिशकलशशक्थिकशशांकशंखांकुशादिलक्षणभारितं ॥ १६७ ॥

सं० टी०—सत्तह्नमित्यादिगाथात्रयस्यार्थः सुगमः, किंतु निष्प्रकंपं निश्चलं सुनिर्मलं अतिशयेन शंकादिमलरहितं अक्षयं गाढं अहीनशक्तिकत्वेन शिथिलत्वाभावात् । अनंतं—अपर्यवसानं । तुर्यभवं भोगभूमिभवापेक्षया । जघन्यक्षायिकलब्धिरसंयतसम्यग्दृष्टौ उत्कृष्टक्षायिकलब्धिः परमात्मनि भवति ॥ १६४–१६७ ॥ एवं दर्शनमोहक्षपणाटिप्पणं ।

---

१ रायचंद्रजैनशास्त्रमालीयमुद्रितपुस्तके तथा सम्यग्ज्ञानचंद्रिकायां च टीकायां सम्मे असंखवस्सिय, इत्यादिषट्पंचाशदधिकशततमा 'उवणेउ मंगलं वो' इत्यादि सप्तषष्ट्यधिकशततमा च गाथा नोपलब्धे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— अनंतानुबंधी चतुष्क दर्शन मोहात्रिक इन सात प्रकृतिनिका क्षयतैं क्षायिक सम्यक्त्व हो है सो निष्कंप कहिए निश्चल है । सुनिर्मल कहिए शंकादि मलकरि राहित है । अक्षय काहिए शिथिलताके अभावतैं गाढा है । अनंत कहिए अंत राहित है ॥ १६४॥

स० चं०— दर्शन मोहका क्षय होतैं तिस ही भवविषैं वा तीसरा भवविषैं वा मनुष्य तिर्यंचका पूर्वैं आयु बांध्या होइ तौ भोगभूमि अपेक्षा चौथा भवविषैं सिद्ध पद पावै । चौथा भवकौं उलंघै नाही । बहुरि औपशमिक क्षायोपशमिक सम्यक्त्ववत् यहु नाशकौं प्राप्त न हो है ॥ १६५ ॥

स० चं०— सात प्रकृतिनिके क्षयतैं असंयत सम्यग्दृष्टीकैं क्षायिक सम्यक्त्वरूप जघन्य क्षायिक लब्धि हो है । बहुरि च्यारि घातिया कर्मानिके क्षयतैं परमात्माकैं केवलज्ञानादिरूप उत्कृष्ट क्षायिक लब्धि हो है ॥ १६६ ॥

विशेष— १६७ नंबरकी गाथा भाषाटीकामें नहीं है । उसका अर्थ यह है कि—मत्स्य वज्र कलश शंख आदि नाना शुभलक्षणोंसे सुशोभित जिनेंद्र भगवानके चरण कमल भव्य लोगोंको मंगल प्रदान करें ॥

इति क्षायिकसम्यक्त्वप्ररूपणं समाप्तं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ चारित्रलब्धि–अधिकारः ॥

अथ दर्शनमोहक्षपणाविधानप्ररूपणानंतरं देशसकलसंयमलब्धिप्ररूपणार्थमिदं सूत्रमाह—

दुबिहा चरित्तलद्धी देसे सयले य देसचारित्तं।
मिच्छो अयदो सयलं तेवि व देसो य लब्भेई ॥

द्विधा चारित्रलब्धिः देशे सकले च देशचारित्रम्।
मिथ्योऽयतः सकलं तावपि च देशश्च लभते ॥ १६८ ॥

सं॰ टी॰— चारित्रस्य लब्धिः प्राप्तिः चारित्रमेव वा लब्धिः, सा द्विविधा देशेन साकल्येन च। तत्र देशचारित्रं मिथ्यादृष्टिरसंयतसम्यग्दृष्टिश्च लभते। सकलचारित्रं तौ च देशसंयतश्च लभंते ॥ १६८ ॥ तत्र मिथ्यादृष्टेर्देशसंयमलब्धौ सामग्रीमाह—

स॰ चं॰—चारित्रकी लब्धि कहिए प्राप्ति सो चारित्र देश सकल भेदतैं दोय प्रकार है। तहां देश चारित्रकौं मिथ्यादृष्टी वा असंयत सम्यग्दृष्टि प्राप्त हो है। अर सकल चारित्रकौं ते दोऊ अर देशसंयत प्राप्त हो है ॥ १६८ ॥

अंतोमुहुत्तकाले देसवदी होहिदित्ति मिच्छो हु।
सोसरणो सुज्झंतो करणंपि करेदि सगजोग्गं ॥

अंतर्मुहूर्तकाले देशव्रती भविष्यतीति मिथ्यो हि।
सापसरणः शुध्यन् करणान्यपि करोति स्वकयोग्यम् ॥ १६९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०— यस्मात्परमंतर्मुहूर्तकालं नीत्वा मिथ्यादृष्टिर्देशव्रती भविष्यति तस्मिन् काले सुविशुद्धमिथ्यादृष्टिः प्रतिसमयमनंतगुणविशुद्ध्या वर्धमानः आयुर्वर्जितकर्मणां बन्धसत्त्वयोरन्तःकोटीकोटिमात्रावशेषकरणेन स्थित्यपसरणमशुभकर्मणामनंतैकभागमात्रावशेषकरणेनानुभागापसरणं च कुर्वन् स्वयोग्यं करणपरिणामं कुरुते। तत्र मिथ्यादृष्टेर्देशसंयमलब्धौ सम्यक्त्वविभागेन करणपरिणामविभागप्रदर्शनार्थमिदमाह ॥ १६९ ॥

स० चं०—अंतर्मुहूर्त काल पीछैं जो देशव्रती होसी सो मिथ्यादृष्टि जीव समय समय अनंत गुणी विशुद्धताकरि वर्धमान हो तौ आयु विना सात कर्मनिका बंध वा सत्व अंतःकोटाकोटीमात्र अवशेष करनेकरि तौ स्थिति बंधापसरणकौं करता अपने योग्य अर अशुभ कर्मनिका अनुभाग अनंतवां भागमात्र करनेकरि अनुभागबंधापसरणकौं करता अपने करण योग्य परिणामकौं करै है ॥ १६९ ॥

मिच्छो देसचरित्तं उवसमसम्मेण गिण्हमाणो हु।
सम्मत्तुप्पत्तिं वा तिकरणचरिमम्हि गेण्हदि हु ॥

मिथ्यो देशचारित्रं उपशमसम्येन गृह्णन् हि।
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव त्रिकरणचरमे गृह्णाति हि ॥ १७० ॥

सं० टी०—यद्यनादिमिथ्यादृष्टिर्वा सादिमिथ्यादृष्टिर्वा जीवः औपशमिकसम्यक्त्वेन सह देशचारित्रं गृह्णानः दर्शनमोहोपशमविधानेन प्रागुक्तप्रकारेण सम्यक्त्वोत्पत्तौ त्रिकरणचरमसमये देशचारित्रं गृह्णाति। यथा दर्शनमोहोपशमने प्रकृतिबन्धापसरणं स्थितिबंधापसरणं प्रतिसमयमनंतगुणविशुद्धिवृद्धिः अप्रशस्तप्रकृतीनां प्रतिसमयमनंतगुणहान्यानुभागबन्धः अधःप्रवृत्तादिकरणपरिणामाः स्थितिकांडकघातादयश्च ये कार्यविशेषाः ते सर्वेऽपि औपशमिकसम्यक्त्वचारित्रयोर्युगपद्ग्रहणेऽप्यनूनं वक्तव्या विशेषाभावादित्यभिप्रायः ॥ १७० ॥ अथ सादिमिथ्यादृष्टेर्वेदकसम्यक्त्वेन सह देशचारित्रग्रहणे संभवद्विशेषप्रतिपादनार्थमिदं गाथाद्वयमाह —

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०—अनादि वा सादि मिथ्यादृष्टी जीव उपशम सम्यक्त्व सहित देश चारित्रकौं ग्रहै है सो दर्शन मोहका उपशम विधान जैसैं पूर्वैं वर्णन कीया है तैसैं ही विधान करि तीन करणनिका अंत समयविषैं देश चारित्रकौं ग्रहै है । प्रकृतिबंधापसरण स्थितिबंधापसरण आदि जे कार्य विशेष तहां कहे हैं ते सर्व हो हैं विशेष किछू नाही ॥ १७० ॥

मिच्छो देसचारित्तं वेदगसम्मेण गेण्हमाणो हु ।
दुकरणचरिमे गेण्हादि गुणसेढी णत्थि तक्करणे ॥
सम्मत्तुप्पात्तिं वा थोवबहूत्तं च होदि करणाणं ।
ठिदिखंडसहस्सगदे अपुव्वकरणं समप्पदि हु ॥

मिथ्यो देशचारित्रं वेदकसम्येन गृह्णन् हि ।
द्विकरणचरमे गृह्णाति गुणश्रेणी नास्ति तत्करणे ॥ १७१ ॥
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव स्तोकबहुत्वं च भवति करणानाम् ।
स्थितिखंडसहस्रगतं अपूर्वकरणं समाप्यते हि ॥ १७२ ॥

सं० टी०— वेदकसम्यक्त्वयोग्यः सादिमिथ्यादृष्टिर्जीवो वेदकसम्यक्त्वेन सह देशचारित्रं गृह्णानः अधःप्रवृत्ता-पूर्वकरणपरिणामद्वयं प्रतिपद्यमानो गुणश्रेणिवर्जितानि स्थितिखंडादीनि सर्वाण्यपि कार्याणि कुर्वन् अपूर्वकरणचरम-समये वेदकसम्यक्त्वं देशचारित्रं च युगपद् गृह्णाति तत्रानिवृत्तिकरणपरिणामं विनापि वेदकसम्यक्त्वदेशचारित्रप्राप्ति-संभवात् । अधःप्रवृत्तकरणकालात् संख्यातगुणहीनोऽपूर्वकरणकाल इत्यनयोः करणपरिणामयोः कालः स्तोकबहुत्व-मन्यान्यपि कार्याणि यथा सम्यक्त्वोत्पत्तौ प्रतिपादितानि तथात्रापि वेदितव्यानीत्यर्थः । एवमपूर्वकरणकालाभ्यंतरे सं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख्यातसहस्रेषु स्थितिखंडेषु गतेषु अपूर्वकरणकालः परिसमाप्यते एवमसंयतसम्यग्दृष्टिरप्यधःप्रवृत्तापूर्वकरणद्वयकालचरमसमये देशचारित्रं प्रतिपद्यते तस्य गुणश्रेणिविनावशिष्टसर्वकार्याणि अपूर्वकरणचरमसमयपर्यंतमविशेषेण ज्ञातव्यानि। मिथ्यादृष्टिग्रहणमुपलक्षणं तेन व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिरिति न्यायबलेनासंयतवेदकसम्यग्दृष्टेरपि देशचारित्रग्रहणक्रमो दर्शितः सिद्धांतेऽपि तथैव व्याख्यानात्। अत्रापूर्वकरणकाले कुतो गुणश्रेण्यभावः? इति चेत्-उपशमसम्यक्त्वाभावात्तन्निबन्धनगुणश्रेण्यभावः। देशसंयमस्याद्याप्यग्रहणात् तन्निमित्तकगुणश्रेणेरप्यभावः वेदकसम्यक्त्वस्य च गुणश्रेणिहेतुत्वाभावात् इति ब्रूमहे। अनिवृत्तिकरणपरिणामं विना कथं देशचारित्रप्राप्तिरित्यपि नाशंकनीयं कर्मणां सर्वोपशमनविधाने निर्मूलक्षयविधाने चानिवृत्तिकरणपरिणामस्य व्यापारो न क्षयोपशमविधाने इति प्रवचने प्रतिपादितत्वात् ॥ १७१-१७२ ॥ अथ देशसंयमकालप्राप्तितदानींतनगुणश्रेणिकरणप्रतिपादनार्थमाह—

स० चं०—सादि मिथ्यादृष्टी जीव वेदक सम्यक्त्व सहित देश चारित्रकौं ग्रहण करै ताकैं अधःकरण अपूर्वकरण ए दोय ही करण होंइ तिनविषैं गुणश्रेणि निर्जरा न हो है, अन्य स्थिति खंडादिक सर्व कार्य हो हैं सो अपूर्व करणका अंत समयविषैं युगपत् वेदक सम्यक्त्व अर देश चारित्रकौं ग्रहै है। जातैं अनिवृत्तिकरण विना ही इनकी प्राप्ति संभवै है। तहां प्रथमोपशम सम्यक्त्वका उत्पत्तिवत् करणनिका अल्प बहुत्व है तातैं इहां अधःकरण कालतैं अपूर्वकरणका काल संख्यातवे भाग प्रमाण है। बहुरि अपूर्वकरणका कालविषैं संख्यात हजार स्थिति खंड भएं अपूर्व करणका काल समाप्त हो है। ऐसैं ही असंयत वेदक सम्यग्दृष्टि भी दोय करणका अंत समयविषैं देश चारित्रकौं प्राप्त हो है। मिथ्यादृष्टिहीका व्याख्यानतैं सिद्धांतके अनुसारि असंयतका भी ग्रहण करना। इहां उपशम सम्यक्त्वका तौ अभाव तातैं तिस संबंधी गुणश्रेणि नाहीं अर देश संयतका अब ताईं ग्रहण भया नाहीं तातैं तिस संबंधी गुणश्रेणि नाहीं अर वेदक सम्यक्त्व गुणश्रेणिका कारण है नाहीं तातैं इहां अपूर्व करणविषैं गुणश्रेणिका अभाव कह्या है। बहुरि कर्मनिका उपशम वा क्षय विधान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही विषै अनिवृत्ति करण हो है। क्षयोपशमविषै होता नाहीं तातैं अनिवृत्ति करण न कह्या ऐसा जानना ॥ १७१—१७२ ॥

से काले देसवदी असंखसमयप्पबद्धमाहरियं।
उदयावलिस्स वाहिं गुणसेढीमवट्ठिदं कुणदि ॥

तस्मिन् काले देशव्रती असंख्यसमयप्रबद्धमाहृत्य।
उदयावलेर्बाह्यं गुणश्रेणीमवस्थितां करोति ॥ १७३ ॥

सं० टी०— अपूर्वकरणचरमसमयादनंतरसमये जीवो देशव्रती भूत्वा आयुर्वर्जितकर्मणां सत्त्वद्रव्यात्— स ａ। १२ – असंख्यातैकभागमपकृष्य स ａ। १२ – इदं पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा बहुभागद्रव्यमुपरितन- ७ ७ ओ स्थितौ निक्षिपेत्। पुनस्तदेकभागमसंख्यातलोकेन भक्त्वा तदेकभागमुदयावल्यां दत्त्वा तद्बहुभागमसंख्यातसमयप्रबद्ध- मात्रं गुणश्रेण्यायामे निक्षिपेत्। अयं च गुणश्रेण्यायामः देशसंयमप्रथमसमयादारभ्य द्वितीयादिसमयेष्ववस्थित एव न गलितावशेषमात्रः। एतद्गुणश्रेण्यायाममप्रमाणं प्रथमोपशमसम्यक्त्वोत्पत्तिगुणश्रेण्यायामात् संख्यातगुणहीनं २ ११ ४ ॥ १७३ ॥ अथ देशसंयमस्यावस्थाविशेषतत्कार्यविभागप्रदर्शनार्थमाह—

स० चं०—अपूर्व करणका अंत समयके अनंतरवर्ती समयविषैं जीव देश व्रती होइ करि अपने देशव्रतका कालविषैं आयु विना अन्य कर्मनिका सर्व सत्त्व द्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहारमात्र असंख्यातका भाग देइ एक भागविषैं असंख्यात समय प्रबद्ध प्रमाण द्रव्यकौं ग्रहि करि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थितिविषै देना २२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवशेष एक भागकौं असंख्यात लोकका भाग देइ एक भाग उदयावलीविषै देना अरु बहुभाग असंख्यात समय प्रबद्धमात्र है सो गुणश्रेणि आयामविषै देना। सो यहु गुणश्रेणि आयाम अवस्थित है गलितावशेष नाहीं है अर प्रथमोपशम सम्यक्त्व संबंधी गुणश्रेणि आयाम तैं संख्यातगुणा घटता है। ऐसैं देशव्रती होइ उदयावलीतैं बाह्य अवस्थिति गुणश्रेणि करै है॥ १७३॥

दव्वं असंखगुणियक्कमेण एयंतवड्ढिकालोत्ति।
बहुठिदिखंडे तीदे अधापवत्तो हवे देसो॥ १७४॥

द्रव्यमसंख्यगुणितक्रमेण एकांतवृद्धिकाल इति।
बहुस्थितिखंडेऽतीते अधाप्रवृत्तो भवेद्देशः॥ १७४॥

सं० टी०— अयं देशसंयतः प्रतिसमयमनंतगुणविशुद्धिवृद्ध्या वर्धमानोऽन्तर्मुहूर्तपर्यंतं द्रव्यमसंख्यातगुणितक्रमेणापकृष्यावस्थितिगुणश्रेण्यायामे निक्षिपन् स्थितिकांडकादिकार्यं कुर्वन् एकांतवृद्धिदेशसंयत इत्युच्यते। एकांतवृद्धिकालादंतर्मुहूर्तमात्रात्परं वृद्धिं विना अवस्थितया विशुद्ध्या परिणतः स्वस्थानदेशसंयतः अथाप्रवृत्तदेशसंयतः इत्युच्यते। तस्याथाप्रवृत्तदेशसंयतस्य कालो जघन्येनांतर्मुहूर्तः। उत्कर्षेण देशोनपूर्वकोटिवर्षाणि॥ १७४॥ तस्मिन्नथाप्रवृत्तदेशसंयतकाले संभवत्कार्यविशेषप्रतिपादनार्थमिदमाह—

स० चं०—देशसंयतका प्रथम समयतैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत समय समय अनंतगुणा विशुद्धताकरि बधै है सो याकौं एकांत वृद्धि कहिए सो याका कालविषैं समय समय असंख्यातगुणा क्रमकरि द्रव्यकौं अपकर्षण करि अवस्थिति गुणश्रेणि आयामविषै निक्षेपण करै है। तहां एकांतवृद्धिका कालविषैं स्थिति कांडकादि कार्य हो है। बहुरि बहुत स्थिति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खंड भएं एकांत वृद्धिका काल समाप्त होनेके अनंतरि विशुद्धताकी वृद्धि रहित होइ स्वस्थान देशसंयत होइ याकौं अथाप्रवृत्त देश संयत भी कहिए । ताका काल जघन्य अंतर्मुहूर्त अर उत्कृष्ट देशोन कोडि पूर्ववर्ष प्रमाण है ॥ १७४ ॥

ठिदिरसघादो णत्थि हु अधापवत्ताभिधाणदेसस्स ।
पडिउद्दे मुहुत्तं संतेण हि तस्स करणदुगा ॥ १७५ ॥

स्थितिरसघातो नास्ति हि अधाप्रवृत्ताभिधानदेशस्य ।
प्रतिपातिते मुहूर्तं संयतेन हि तस्य करणाद्विकम् ॥ १७५ ॥

सं० टी०—अथाप्रवृत्तदेशसंयतकाले स्थितिखंडनमनुभागखण्डनं वा नास्ति । एकांतवृद्धिदेशसंयतचरमसमये खंडितावशेषयावन्मात्रस्थित्यनुभागानि कर्माणि तावन्मात्राण्येव अथाप्रवृत्तदेशसंयतकाले अवतिष्ठंत इत्यर्थः । यः पुनस्तीव्रसंक्लेशकारणबहिरंगद्रव्यादिनिरपेक्षः केवलांतरंगकर्मोदयजनितसंक्लेशपरिणामवशेन देशसंयमात्प्रच्युत्यासंयतसम्यग्दृष्टिगुणस्थानं प्राप्यात्यल्पांतर्मुहूर्तं तत्र स्थित्वा शीघ्रमेव देशसंयमं गृह्णाति तस्यापि स्थित्यनुभागकांडकघातो नास्ति करणद्वयपरिणामं विनैव देशसंयमग्रहणात् । यः पुनस्तीव्रविराधनाकारणबहिरंगद्रव्यादिसन्निधाने देशसंयमं सम्यक्त्वं च विराध्य मिथ्यात्वं गत्वा दीर्घमंतर्मुहूर्तं संख्यातासंख्यातवर्षाणि वा वेदकयोग्यकालप्रमितानि स्थित्वा पुनरपि लब्धिवशेन वेदकसम्यक्त्वं संयमासंयमं च युगपत्प्रतिपद्यते तस्याधःप्रवृत्तापूर्वकरणद्वयपरिणामसंभवात् स्थित्यनुभागकांडकघातोऽस्ति ॥ १७५ ॥ अथाप्रवृत्तदेशसंयतस्य गुणश्रेणिद्रव्यप्रमाणार्थमिदमाह—

स० चं०— अथाप्रवृत्त देशसंयतका कालविषैं स्थिति खंडन वा अनुभाग खंडन न हो है । जो एकांत वृद्धि देशसंयतका अंतसमयविषैं घात कीए पीछैं अवशेष स्थिति अनुभाग रह्या सोई तहां रहै है । बहुरि जो जीव तीव्र संक्लेशका कारण वाह्य निमित्त विना केवल २२७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतरंग कर्मका उदयकरि निपज्या संक्लेश करि देशसंयततैं भ्रष्ट होइ करि असंयत सम्यग्दृष्टी होइ तहां स्तोक अंतर्मुहूर्त कालमात्र रहि शीघ्र ही देश संयमकौं ग्रहै ताकैं भी स्थिति अनुभाग कांडकका घात न हो है जातैं दोय करण कीएं विना ही यहु देशसंयमकौं ग्रहै है। बहुरि जो जीव बाह्य कारणतैं सम्यक्त्व वा देशसंयमतैं भ्रष्ट होइ करि मिथ्यादृष्टी होइ तहां बडा अंतर्मुहूर्त वा संख्यात असंख्यातवर्ष पर्यंत रहि बहुरि वेदक सम्यक्त्व सहित देशसंयमकौं ग्रहै ताकैं अधःप्रवृत्त अपूर्व करण हो है। तातैं स्थिति अनुभागकांडक घात भी हो है ॥ १७५ ॥

देसो समये समये सुज्झंतो संकिलिस्समाणो य।
चउवड्ढिहाणिदव्वादवट्ठिदं कुणदि गुणसेढिं ॥ १७६ ॥

देशः समये समये शुध्यन् संक्लिश्यन् च।
चतुर्वृद्धिहानिद्रव्यादवस्थितां करोति गुणश्रेणीम् ॥ १७६ ॥

सं० टी०— अधःप्रवृत्तदेशसंयतः समयं समयं प्रति विशुद्धयन् वा संक्लिश्यमानो वा चतुर्वृद्धिहानिद्रव्यादवस्थितिगुणश्रेणिं करोत्येव। तथाहि—

विवक्षितस्य यस्य कस्यापि कर्मणः सत्त्वद्रव्यं स ∂/७ । १२- अस्मादयमथाप्रवृत्तदेशसंयतो यदा संक्लेशपरिणामं गत्वा पुनर्विशुद्धिमापूरयति तदा तद्विशुद्धिपरिणामानुसारेण कदाचिदसंख्यातभागाधिकं स ∂/७ । १२ १—/∂ । ओ ∂ कदाचित्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्यातभागाधिकं स ३ । १२ – १ कदाचित्संख्यातगुणितं स ३ । १२ – १ कदाचिदसंख्यातगुणं च—
७ । ओ १ ७ ओ

स ३ । १२ – ३ द्रव्यपकृष्य गुणश्रेण्यां, यदा तु विशुद्धिहान्या संक्लेशपरिणामं गच्छति तदा तत्संक्लेशपरिणामानुसा-
७ । ओ

रेण कदाचिदसंख्यातभागहीनं स ३ । १२ – ३ कदाचित्संख्यातभागहीनं स ३ । १२ – १ कदाचित्संख्यात-
७ । ओ ३ ७ । ओ १

गुणहीनं स ३ । १२ – कदाचिदसंख्यातगुणहीनं स ३ । १२ – वा द्रव्यमपकृष्य गुणश्रेणिनिक्षेपं करोति । वि-
७ ओ १ ७ । ओ ३

शुद्धिसंक्लेशपरिणामपरावृत्तिवशेनैवंविधद्रव्यापकर्षणसंभवात् । एवं स्वस्थानदेशसंयतो जघन्येनांतर्मुहूर्तपर्यंतमुत्कर्षेण देशोनपूर्वकोटिपर्यंतं च गुणश्रेण्यायामे द्रव्यं निक्षिपतीत्यर्थः ॥ १७६ ॥ देशसंयतस्यानुभागखंडोत्करणकालादीनामल्पबहुत्वप्रतिपादनप्रतिज्ञाप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०— अथाप्रवृत्त देश संयत जीव सो कदाचित् विशुद्ध होइ कदाचित् संक्लेशी होइ तहां विवक्षित कर्मका पूर्व समयविषैं जो द्रव्य अपकर्षण कीया तातैं अनंतर समयविषैं विशुद्धताकी वृद्धिके अनुसारि कदाचित् असंख्यातवे भाग बधता कदाचित् संख्यातवां भाग बधता, कदाचित् संख्यातगुणा कदाचित् असंख्यातगुणा द्रव्यकौं अपकर्षण करि गुणश्रेणिविषैं निक्षेपण करै है। बहुरि विशुद्धताकी हानिके अनुसारि कदाचित् असंख्यातवे भाग घटता, कदाचित् संख्यातवे भाग घटता, कदाचित् संख्यातगुणा घटता कदाचित् असंख्यातगुणा घटता द्रव्यकौं अपकर्षणकरि गुणश्रेणिविषैं निक्षेपण करै है । ऐसैं अधाप्रवृत्त देश संयतका सर्व कालविषैं समय समय यथासम्भव चतुःस्थान पतित वृद्धि हानि लीएं गुणश्रेणि विधान पाइए है ॥ १७६ ॥

विदियकरणादु जावय देसस्सेयंतवड्ढिचरिमेत्ति । २२९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्पावहुगं वोच्छं रसखंडद्धाण पहुदीणं ॥ १७७ ॥

द्वितीयकरणात् यावत् देशस्यैकांतवृद्धिचरमे इति ।

अल्पबहुत्वं वक्ष्ये रसखंडाद्धानां प्रभृतीनाम् ॥ १७७ ॥

सं० टी०— अपूर्वकरणप्रथमसमयादारभ्य एकांतवृद्धिदेशसंयतपर्यंतं संभवतां जघन्यानुभागखण्डोत्करणकालादीनामष्टादशपदानामल्पबहुत्वं प्रवक्ष्यामीति प्रतिज्ञार्थः ॥ १७७ ॥ अथ तान्येवाल्पबहुत्वपदानि प्ररूपयितुं गाथाषट्कमाह—

स० चं०—अपूर्व करणतैं लगाय एकांत वृद्धि देश संयतका अंत पर्यंत सम्भवते जे जघन्य अनुभागखंडोत्करण कालादिक रूप अठारह स्थान तिनिका अल्पबहुत्व कहौंगा ॥

अंतिमरसखंडुक्कीरणकालादो दु पढमओ अहिओ।
चरिमट्ठिदिखंडुक्कीरणकालो संखगुणिदो हु ॥

अंतिमरसखंडोत्करणकालतस्तु प्रथमोऽधिकः ।
चरमस्थितिखंडोत्करणकालः संख्यगुणितो हि ॥ १७८

पढमट्ठिदिखंडुक्कीरणकालो साहियो हवे तत्तो।
एयंतवड्ढिकालो अपुव्वकालो य संखगुणियकमा ॥

प्रथमस्थितिखंडोत्करणकालः साधिको भवेत् ततः ।
एकांतवृद्धिकाले अपूर्वकालश्च संख्यगुणितक्रमः ॥ १७९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवरा मिच्छतियद्धा अविरद तह देससंजमद्धा य।
छप्पि समा संखगुणा तत्तो देसस्स गुणसेढी १८०

अवरा मिथ्यात्रिकाद्धा अविरता तथा देशसंयमाद्धा च।
षडपि समाः संख्यगुणा ततो देशस्य गुणश्रेणी ॥ १८० ॥

चरिमाबाहा तत्तो पढमाबाहा य संख्यगुणियकमा।
तत्तो असंखगुणियो चरिमट्ठिदिखंडओ णियमा ॥

चरमाबाधा ततः प्रथमाबाधा च संख्यगुणितक्रमा।
ततः असंख्यगुणितः चरमास्थितिखंडको नियमात् ॥ १८१ ॥

पल्लस्स संखभागं चरिमट्ठिदिखंडयं हवे जम्हा।
तम्हा असंखगुणियं चरिमट्ठिदिखंडयं होई॥१८२॥

पल्यस्य संख्यभागं चरमस्थितिखंडकं भवेत् यस्मात्।
तस्मादसंख्यगुणितं चरमं स्थितिखंडकं भवति ॥ १८२ ॥

पढमे अवरो पल्लो पढमुक्कस्सं च चरिमठिदिबंधो।
पढमो चरिमं पढमट्ठिदिसंतं संखगुणियकमा १८३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमे अवरः पल्यः प्रथमोत्कृष्टं च चरमस्थितिबंधः ।
प्रथमः चरमं प्रथमस्थितिसत्त्वं संख्यगुणितक्रमाणि ॥ १८३ ॥

सं० टी०—सर्वतः स्तोको देशसंयतस्य एकान्तवृद्धिचरमसमये संभवज्जघन्यानुभागखंडोत्करणकालः २ १। १ तस्मादपूर्वकरणप्रथमसमये संभव्युत्कृष्टानुभागखंडोत्करणकालो विशेषाधिकः २ १। ५ ॥ २। एतस्माद्देशसंयतस्यैकांत-
४
वृद्धिचरमसमयसंभविजघन्यस्थितिखण्डोत्करणकालः संख्येयगुणः २ १५। ४ ॥ ३ तस्मादपूर्वकरणप्रथमसमयसंभवदु-
४
त्कृष्टस्थितिखण्डोत्करणकालो विशेषाधिकः २ १। ५। ४।५॥४ अस्माद्देशसंयमग्रहणप्रथमसमयादारभ्य तद्विशुद्धेरे-
४। ४
कान्तवृद्धिकालः संख्येयगुणः २ १ १ ॥ ५ एतस्माद्देशसंयतस्यापूर्वकरणकालः संख्येयगुणः २ ११। ४ ॥ ६। अस्मान्मिथ्यात्वस्य सम्यग्मिथ्यात्वस्य सम्यक्त्वप्रकृतिपरिणामस्यासंयमस्य देशसंयमस्य सकलसंयमस्य च जघन्यकालः संख्येयगुणः, परस्परं तु षण्णां समानः २ १ १। ४। ४ ॥७। अस्मादपूर्वकरणप्रथमसमये प्रारब्धो देशसंयतस्य गुणश्रेण्यायामः संख्यातगुणः २ १ १। ४। ४। ४ ॥ ८ एतस्मादेकांतवृद्धिचरमसमयसंभविजघन्यस्थितिबंधाबाधाकालः संख्येयगुणः २ १ १ १ ॥ ९। एतस्मादपूर्वकरणप्रथमसमयसंभव्युत्कृष्टस्थितिबंधाबाधाकालः संख्येयगुणः—
२ १ १ १ ४ ॥ १०। एते प्रागुक्ताः सर्वेऽपि कालाः अंतर्मुहूर्तमात्राः। तस्मादेकांतवृद्धिचरमसमयसंभव्यजघन्यस्थितिखंडायामोऽसंख्यातगुणः प ॥ ११। प्राक्तनकालस्यांतर्मुहूर्तमात्रत्वेन चरमस्थितिखंडायामस्य च पल्यसंख्यातभागमात्र-
१ १
त्वेन तस्मादसंख्यातगुणितत्वसंभवात्। तस्मादपूर्वकरणप्रथमसमयसंभविजघन्यस्थितिखंडायामः संख्येयगुणः प॥ १२।
१
अस्मात्पल्यं संख्येयगुणं प ॥ १३। अस्मादपूर्वकरणप्रथमसमयसंभव्युत्कृष्टस्थितिखंडायामः संख्यातगुणः सा ७॥ १४।
८
तस्मादेकांतवृद्धिचरमसमयसंभविजघन्यस्थितिबंधः संख्येयगुणः सा अं को २॥ १५। तस्मादपूर्वकरणप्रथमसमयसंभव्यु-
४। ४। ४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्कृष्टस्थितिबंधः संख्येयगुणः सा अं को २ ॥ १६ । अस्मादेकांतवृद्धिचरमसमयसंभविजघन्यस्थितिसत्त्वं संख्येयगुणं
४ । ४

सा अं को २ ॥ १७ । एस्मादपूर्वकरणप्रथमसमयसंभवदुत्कृष्टस्थितिसत्त्वं संख्येयगुणं सा अं को २ ॥ १८ ।
४

१७८–१८३ ॥ एवमपल्बहुत्वपदानि व्याख्याय देशसंयमस्य जघन्योत्कृष्टलब्ध्यवसरं तदल्पबहुत्वं च प्रतिपादयितुमाह–

स० चं०– सर्वतैं स्तोक तौ देश संयतका एकांतवृद्धि कालका अंतविषैं संभवता जघन्य अनुभाग खंडोत्करण काल है । १ । तातैं किछू विशेषकरि अधिक अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता उत्कृष्ट अनुभाग खंडोत्करण काल है । २ । तातैं संख्यातगुणा देश संयतका एकांत वृद्धि कालका अंतसमयविषैं संभवता जघन्य स्थिति कांडकोत्करण काल है । ३ ॥ १७८ ॥

स० चं०– तातैं किछू विशेषकरि अधिक अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता उत्कृष्ट स्थिति खंडोत्करण काल है । ४ । तातैं संख्यातगुणा एकांतवृद्धिका काल है । ५ । तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका काल है ६ ॥ १७९ ॥

स० चं०– तातैं संख्यातगुणा मिथ्यात्व अर सम्यग्मिथ्यात्व अर सम्यक्त्व मोहनी इन तीनोंका उदय काल अर असंयम अर देशसंयम अर सकल संयम इन छहोंका जघन्य काल परस्पर समान है ७ । तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं जाका आरंभ भया ऐसा देश संयम सम्बन्धी गुणश्रेणि आयाम है ८ ॥ १८० ॥

स० चं०– तातैं संख्यातगुणा एकांतवृद्धिका अंतसमयविषैं संभवते स्थिति बंधका जघन्य आबाधा काल है । ९ । तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थितिबंधका उत्कृष्ट आबाधा काल है ।१०। इहां पर्यंत ए कहे सर्व काल ते प्रत्येक अंतर्मुहूर्तमात्र ही जानने। तातैं असंख्यातगुणा एकांतवृद्धिका अंतसमयविषैं संभवता जघन्य स्थिति कांडक आयाम है ११ ॥ १८१ ॥

स० चं०— यहु कह्या अंतविषैं संभवता जघन्य स्थिति कांडकायाम सो पल्यका संख्यातवां भाग मात्र है। तातैं पूर्वोक्त अंतर्मुहूर्त कालतैं यहु अन्त खण्ड असंख्यातगुणा कह्या है ॥ १८२ ॥

स० चं०— तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता जघन्य स्थिति कांडक आयाम है १२ । तातैं संख्यातगुणा पल्य है । १३ । तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषै संभवता पृथक्त्व सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति कांडकायाम है ।१४। तातैं संख्यातगुणा एकांत वृद्धिका अंतसमयविषैं संभवता ऐसा जघन्य स्थितिबंध है १५। तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता ऐसा उत्कृष्ट स्थितिबंध है १६। तातैं संख्यातगुणा एकांतवृद्धिका अंतसमयविषैं संभवता ऐसा जघन्य स्थिति सत्त्व है।१७। तातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता ऐसा उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व है १८। ॥१८३॥ ऐसैं कालका अल्प बहुत्वके स्थिति कहि देश संयमविषैं परिणामनिकी विशुद्धता रूप लब्धि ताका अल्प बहुत्व कहिए है—

अवरवरदेसलद्धी सेकाले मिच्छसंजमुववण्णे ।
अवरादु अणंतगुणा उक्कस्सा देसलद्धी दु ॥ १८४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवरवरदेशलब्धिः स्वकाले मिथ्यसंयममुपपन्ने ।
अवरादनंतगुणा उत्कृष्टा देशलब्धिस्तु ॥ १८४ ॥

सं० टी०—यो जीवः देशसंयमघातिकर्मोदयवशाद्देशसंयमात्प्रतिपतन् तत्कालचरमसमये मिथ्यात्वाभिमुखो वर्तते तस्य तत्कालचरमसमयवर्तिनो मनुष्यस्य सर्वजघन्या देशसंयमलब्धिर्भवति । यः पुनरनंतगुणविशुद्धिवृद्धया देशसंयमपरमप्रकर्षं प्राप्य तदनंतरसमये सकलसंयमं प्राप्स्यति तस्य मनुष्यस्योत्कृष्टदेशसंयमलब्धिर्भवति । एवमुक्तजघन्यदेशसंयमाविभागप्रतिच्छेदेभ्यः उत्कृष्टदेशसंयमाविभागप्रतिच्छेदा अनंतानंतगुणाः । तद्गुणकारः अनंतानंतगुणितसर्वजीवराशिप्रमाणः १६ ख ॥ १८४ ॥ अथ जघन्यदेशसंयमाविभागप्रतिच्छेदप्रमाणप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०– जो जीव देशसंयमका घाती जो कर्म ताके उदयके वशतैं देशसंयमतैं पडता जो मिथ्यात्वके सन्मुख भया मनुष्य ताके तिस देशसंयमका अंतसमयविषैं जघन्य देशसंयम लब्धि है। बहुरि अनंतगुणी विशुद्धताकरि देशसंयमके उत्कृष्टपनाकौं पाइ अनंतर समयविषैं सकल संयमकौं प्राप्त होसी ऐसा मनुष्यकैं उत्कृष्ट देशसंयम लब्धि हो है । बहुरि जघन्य देशसंयमके अविभाग प्रतिच्छेदनितैं अनंतानंतगुणा जीवराशि प्रमाणमात्र गुणकार करि गुणित उत्कृष्ट देशसंयमके अविभाग प्रतिच्छेद हैं ॥ १८४ ॥

अवरे देसट्ठाणे होंति अणंताणि फड्ढयाणि तदो ।
छट्ठाणगदा सव्वे लोयाणमसंखछट्ठाणा ॥ १८५ ॥

अवरे देशस्थाने भवंत्यनन्तानि स्पर्धकानि ततः ।
षट्स्थानगतानि सर्वाणि लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ॥ १८५ ॥ २३५

सं० टी०— सर्वजघन्ये प्रागुक्ते देशसंयमस्थाने अनंतानंतानि स्पर्धकान्यविभागप्रतिच्छेदाः सर्वोत्कृष्टदेशसंयमा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभागप्रतिच्छेदेभ्योऽनंतगुणहीनाः संति । ते च जघन्यदेशसंयमाविभागप्रतिच्छेदाः अनंतानंतगुणितसर्वजीवराशिप्रमाणा इति सिद्धांतप्रतिपादिता द्रष्टव्याः । तस्मात्सर्वजघन्यदेशसंयमस्थानात्सर्वाणि सर्वोत्कृष्टपर्यंतदेशसंयमलब्धिस्थानानि षट्स्थानपतितविशुद्धिवृद्ध्या वर्धमानानि असंख्यातलोकगुणितानि भवंति एकवारषट्स्थानपतितानि देशसंयमलब्धिस्थानानि यद्येतावंति १– १– १– १– १–तदा असंख्यातलोकमात्र ≡ a वारेषु कियंति इति त्रैराशिकेन सि-

२ २ २ २ २

a a a a a

द्धानि प्रतिपर्वासंख्यातलोकभागमात्राणि । सर्वेषु पर्वसु मिलित्वाप्यसंख्यातलोकमात्राण्येव षट्स्थानपतितानि देशसंयमलब्धिस्थानानीत्यर्थः ॥ १८५ ॥ अथ देशसंयमप्रकारस्वरूपं पर्वांतरप्रमाणं च प्ररूपयितुमिदमाह—

स० चं०—सर्वतैं जघन्य पूर्वोक्त देशसंयमका स्थान ताविषै स्पर्धक कहिए अविभाग प्रतिच्छेद अनंतानंत पाइए हैं । ते उत्कृष्ट देश संयमके अविभाग प्रतिच्छेदनितैं अनंतानंत गुणे घाटि हैं तौ भी सर्व जीवराशितैं अनंत गुणे है । बहुरि इस जघन्य स्थानतैं लगाय असंख्यात लोकमात्र देश संयम लब्धिके स्थान हैं । एक जीवकैं एक कालविषैं संभवै ताका नाम स्थान जानना । ते षट्स्थानपतित वृद्धि लीएं हैं सो इनिका अनुक्रम गोम्मट्टसारका ज्ञान मार्गणा अधिकारविषैं पर्याप्त समास श्रुतज्ञानका स्थान वर्णनविषैं जैसैं कीया है तैसैं जानना सो एक अधिक सूच्यंगुलकौं पांचवार मांडि परस्पर गुणैं जो प्रमाण होइ तितने स्थाननिविषैं जो एकवार षट्स्थानपतित वृद्धि पूर्ण होइ तौ देशसंयतके असंख्यात लोक प्रमाण सर्व स्थाननिविषैं केती वार होइ ऐसैं त्रैराशिक कीएं देशसंयतके स्थाननिविषैं प्रतिपातादि पर्व कहे तिनिविषैं वा मिलिकरि सर्व स्थाननिविषैं असंख्यात लोकमात्रवार षट्स्थानपतित वृद्धि संभवै है ॥ १८५ ॥

तत्थ य पडिवायगया पडिवज्जगयात्ति अणुभयगयात्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवरुवरिलद्धिठाणा लोयाणमसंखछट्ठाणा ॥ १८६ ॥

तत्र च प्रतिपातगता प्रतिपद्यगता इति अनुभयगता इति ॥

उपर्युपरि लब्धिस्थानानि लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ॥ १८६ ॥

सं० टी०— तत्र तेषु संयमलब्धिस्थानेषु मध्ये कानिचित्प्रतिपातगतानि कतिचित् प्रतिपद्यमानगतानि किंयतिचिदनुभयगतानीति त्रिप्रकाराणि सर्वाण्यपि देशसंयमलब्धिस्थानानि भवंति । प्रतिपातस्थानानामुपर्यसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानपतितानि देशसंयमलब्धिस्थानानि अन्तरयित्वा प्रतिपद्यमानस्थानानि भवंति । तेषामुपर्यसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानानि अंतरयित्वा अनुभयस्थानानि भवंति तत्र प्रतिपातस्थानान्यसंख्यातलोकमात्राण्यपि सर्वतः स्तोकानि ≡ ə तेभ्योऽसंख्येयलोकगुणानि प्रतिपद्यमानस्थानानि ≡ ə ≡ ə तेभ्योऽसंख्यातलोकगुणान्यनुभयस्थानानि ≡ ə ≡ ə ≡ ə इति विशेषो ज्ञातव्यः ॥ १८६ ॥ अथ मनुष्यतिर्यग्जीवदेशसंयमलब्धिस्थानानां प्रतिपातादिभेदभिन्नानां जघन्योत्कृष्टस्थानावसरं प्ररूपयितुमिदमाह—

स० चं०—तहां देश संयमके स्थान तीन प्रकार हैं–प्रतिपातगत १ प्रतिपद्यमानगत १ अनुभयगत १ तहां देशसंयमतैं भ्रष्ट होतैं अंत समयविषैं संभवते जे स्थान ते प्रतिपातगत हैं बहुरि देशसंयमके प्राप्त होतैं प्रथम समयविषैं संभवते जे स्थान ते प्रतिपद्यमानगत हैं। इन विना अन्य समयनिविषैं संभवते जे स्थान ते अनुभय गत हैं। ते उपरि उपरि हैं। सोई कहिए है–

देशसंयमका जो जघन्य स्थान संभवते थोरी विशुद्धतायुक्त सो तौ नीचै ही नीचै लिख्या। ताके ऊपरि तातैं अनंतवां भागमात्र अधिक विशुद्धतायुक्त द्वितीय स्थान लिख्या ऐसैं क्रमतैं उपरि उपरि उत्कृष्ट स्थानपर्यंत रचना भई। तहां जघन्य स्थान आदि केते इक नीचेके स्थान ते तौ प्रतिपात रूप जानने। बहुरि तिनके ऊपरि जिनका कोई स्वामी नाहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे असंख्यात लोकमात्र स्थान षट्स्थानपतित वृद्धि लीएं अंतरालविषै होंइ तिनके ऊपरि प्रतिपद्यमान स्थान पाइए है। बहुरि तिनके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र स्थान षट्स्थान पतित वृद्धि लीएं अंतरालविषै होंइ तब तिनके ऊपरि अनुभय गतस्थान पाइए है। तहां प्रतिपातस्थान थोरे हैं तेऊ असंख्यात लोकमात्र हैं अर तिनतैं असंख्यात लोकगुणे प्रतिपद्यमान स्थान हैं। अर तिनतैं असंख्यात लोक गुणे अनुभय स्थान हैं॥ १८६॥

णरातिरिये तिरियणरे अवरं अवरं वरं वरं तिसुवि।
लोयाणमसंखेज्जा छट्ठाणा होंति तम्मज्झे॥ १८७॥

नरातिराश्चि तिर्यग्नरे अवरं अवरं वरं वरं त्रिष्वपि।
लोकानामसंख्येयानि षट्स्थानानि भवंति तन्मध्ये॥ १८७॥

सं० टी०—देशसंयमस्य सर्वजघन्यं प्रतिपातस्थानं मनुष्ये संभवति। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानपतितानि मनुष्यसंबन्धीन्येव देशसंयमलब्धिस्थानान्युल्लंघ्य तिर्यग्जीवसंबंधिजघन्यप्रतिपातस्थानं भवति। ततः परं नरतिर्यग्जीवसाधारणान्यसंख्यातलोकमात्राणि देशसंयमलब्धिस्थानान्यतिक्रम्य तिर्यग्जीवस्योत्कृष्टप्रतिपातस्थानं जायते। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि देशसंयमलब्धिस्थानानि नीत्वा मनुष्यस्योत्कृष्टं प्रतिपातस्थानमुत्पद्यते। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि देशसंयमलब्धिस्थानानि तत्परिणामयोग्यस्वामिनामभावादंतरयित्वा मनुष्यस्य जघन्यं प्रतिपद्यमानस्थानं भवति। ततः परं मनुष्यसंभवीन्येवासंख्यातलोकमात्राणि देशसंयमलब्धिस्थानानि नीत्वा तिर्यग्जीवस्य जघन्यं प्रतिपद्यमानस्थानं भवति। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि नरतिर्यग्जीवसाधारणानि देशसंयमलब्धिस्थानानि गमयित्वा तिर्यग्जीवस्योत्कृष्टं प्रतिपद्यमानस्थानं जायते। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि मनुष्यसंबन्धीन्येव देशसंयमलब्धिस्थानान्युल्लंघ्य मनुष्यस्योत्कृष्टं प्रतिपद्यमानस्थानं भवति। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानपतितानि देशसंयमलब्धिस्थानानि पूर्ववदन्तरयित्वा मनुष्यस्य जघन्यमनुभयस्थानं जायते। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि मनुष्यसंबन्धीन्येव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देशसंयमलब्धिस्थानानि नीत्वा तिर्यग्जीवस्य जघन्यमनुभयस्थानमुत्पद्यते । ततः परं नरतिर्यग्जीवसाधारणान्यसंख्येयलोकमात्राणि देशसंयमलब्धिस्थानानि नीत्वा तिर्यग्जीवस्योत्कृष्टमनुभयस्थानमुत्पद्यते । ततः परं नरसंबन्धीन्येवासंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानपतितानि देशसंयमलब्धिस्थानान्यतिस्थाप्य मनुष्यस्योत्कृष्टमनुभयस्थानमुत्पद्यते । यथासंख्येन नरतिरश्चोस्तिर्यग्नरयोश्च जघन्यं जघन्यमुत्कृष्टमुत्कृष्टं च त्रिष्वपि प्रतिपातप्रतिपद्यमानानुभयस्थानेषु संभवति तेषां नरजघन्यतिर्यग्जघन्यादीनां मध्येंऽतराले षट्स्थानपतितान्यसंख्यातलोकमात्राणि देशसंयमलब्धिस्थाननि भवंतीति गाथासूत्रव्याख्यानं निरवद्यं ॥ १८७ ॥ अथ प्रतिपातादीनां लक्षणं तत्स्वामिभेदं च प्रदर्शयितुमिदमाह—

स० चं०—देश संयमका सर्वतैं जघन्य प्रतिपात स्थान मनुष्यकैं हो है। तातैं ऊपरि षट्स्थानपतित वृद्धि लीएं असंख्यात लोकमात्र प्रतिपातस्थान ऐसे हैं जे मनुष्य ही कैं होंइ तातैं परैं तिर्यचकैं संभवता जघन्य प्रतिपातस्थान होइ। तातैं ऊपरि मनुष्य वा तिर्यंच दोऊनिकैं संभवैं ऐसे असंख्यात लोक प्रमाण स्थान होइ उपरि तिर्यंचका उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान है। तातैं परैं मनुष्य ही कैं संभवै ऐसे असंख्यात लोकमात्र स्थान होंइ उपरितन स्थित मनुष्यका उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान है। ताके ऊपरि असंख्यात लोकमात्र स्थान ऐसे हैं जिनका कोऊ स्वामी नाहीं ते किसी जीवकैं न होंइ तिनका अंतराल करि तातैं परै मनुष्यका जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान है तातैं पैर मनुष्यकै होइ ऐसे असंख्यात लोकमात्र स्थान होइ परैं तिर्यंचका जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान है । तातैं परैं मनुष्य वा तिर्यंचकैं संभवते ऐसे असंख्यात लोकमात्र स्थान होंइ ऊपरि तिर्यंचका उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान है तातैं उपरि मनुष्यहीकैं संभवते असंख्यातलोकमात्र स्थान होइ उपरि मनुष्यका उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान है तातैं परै असंख्यातलोकमात्र स्थान ऐसे हैं जिनका कोऊ स्वामी नाहीं तिनिका अंतरालकरि परै मनुष्यका जघन्य अनुभय स्थान हो है। तातैं परै मनुष्यहींकै संभवते अ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्यातलोकमात्र स्थान होंइ उपरि तिर्यंचका जघन्य अनुभय स्थान है। तातैं परैं मनुष्य वा तिर्यंचकैं संभवते असंख्यातलोकमात्र स्थान होंइ उपरि तिर्यंचका उत्कृष्ट अनुभय स्थान है। तातैं परैं मनुष्यहीकैं संभवते असंख्यातलोकमात्र स्थान होंइ उपरि मनुष्यका उत्कृष्ट अनुभय स्थान हो है। ऐसैं क्रमतैं मनुष्य तिर्यंचका जघन्य अर जघन्य उत्कृष्ट अर उत्कृष्ट प्रत्येक प्रतिपात प्रतिपद्यमान अनुभय स्थानविषै संभवै हैं ते जानने। अर बीचिमैं अंतराल स्थान जानने ते स्थान असंख्यातलोकमात्र षट्स्थानपतित वृद्धि युक्त हैं। ऐसैं गाथाका अर्थ समझना ॥ १८७ ॥

पडिवाददुगवरवरं मिच्छे अयदे अणुभयगजहण्णं।
मिच्छवरविदियसमये तत्तिरियवरं तु सठाणे ॥

प्रतिपातद्विकावरवरं मिथ्ये अयते अनुभयगजघन्यं।
मिथ्यावरद्वितीयसमये तात्तिर्यग्वरं तु स्वस्थाने ॥ १८८ ॥

सं० टी०—प्रतिपातो बहिरन्तरंगकारणवशेन संयमात्प्रच्यवः। स च संक्लिष्टस्य तत्कालचरमसमये विशुद्धिहान्या सर्वजघन्यदेशसंयमशक्तिकस्य मनुष्यस्य तदनंतरसमये मिथ्यात्वं प्रतिपत्स्यमानस्य भवति। तत्र सम्यक्त्वदेशसंयमयोर्विनाशसंभवात्। तथा तिर्यग्जीवस्य जघन्यं प्रतिपातस्थानं सम्यक्त्वदेशसंयमाभ्यां प्रच्युत्य मिथ्यात्वं गमिष्यतो देशसंयमकालचरमसमये संभवति। एतच्च मनुष्यजघन्यप्रतिपातस्थानादनंतगुणविशुद्धिकं ज्ञेयं। असंख्यातलोकवारषट्स्थानपतितविशुद्धिवृद्ध्या वर्धमानत्वात्। तथा तिर्यग्जीवस्य स्वयोग्यसंक्लेशवशेन देशसंयमात्प्रच्यवमानस्य तत्कालचरमसमये उत्कृष्टं प्रतिपातस्थानमसंयतसम्यग्दृष्टिगुणस्थानं प्राप्स्यतो भवति। इदमपि तिर्यग्जघन्यप्रतिपातस्थानादनंतगुणविशुद्धिकं प्राग्वज्ज्ञेयं। तथा मनुष्यस्य देशसंयमात्प्रच्युत्य स्वयोग्यसंक्लेशवशेनानंतरं वेदकासंयतगुणस्थानं गमिष्यतः उत्कृष्टं प्रतिपातस्थानं भवति। इदमपि तिर्यगुत्कृष्ट-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिपातस्थानादनंतगुणविशुद्धिकं प्राग्वद् ज्ञेयं । मनुष्यजघन्यप्रतिपातस्थानादारभ्य तिर्यग्जीवस्यानुत्कृष्टप्रतिपातस्थानपर्यंतं संभवंति प्रतिपातस्थानानि मिथ्यात्वाभिमुखस्यैव देशसंयमकालचरमसमये द्रष्टव्यानि तिर्यगुत्कृष्टप्रतिपातस्थानादारभ्य मनुष्योत्कृष्टप्रतिपातस्थानपर्यंतं संति प्रतिपातस्थानानि असंयतसम्यक्त्वाभिमुखस्य स्वकालचरमसमये घटन्त इत्यर्थविशेषो ग्राह्यः । तिर्यगुत्कृष्टप्रतिपातस्थानान्मनुष्योत्कृष्टप्रतिपातस्थानं पूर्ववदनंतगुणविशुद्धिकं ज्ञातव्यं । तथा मनुष्यस्य पूर्वं मिथ्यादृष्टिर्भूत्वा पश्चात्सम्यक्त्वेन सह देशसंयमं प्रतिपद्यमानस्य तत्प्रथमसमये संभवज्जघन्यप्रतिपद्यमानस्थानं मनुष्योत्कृष्टप्रतिपातस्थानादनंतगुणविशुद्धिकं अंतरेऽसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानान्युल्लंघ्य समुत्पादात् तथा तिर्यग्जीवस्य मिथ्यादृष्टिचरस्य सम्यक्त्वदेशसंयमौ युगपद् प्रतिपद्यमानस्य तत्प्रथमसमये वर्तमानं जघन्यं प्रतिपद्यमानस्थानं मनुष्यजघन्यप्रतिपद्यमानादनंतगुणविशुद्धिकं प्रतिपत्तव्यं । तथा तिर्यग्जीवस्य प्रागसंयतसम्यग्दृष्टिर्भूत्वा पश्चाद्देशसंयमं प्रतिपद्यमानस्य तत्प्रथमसमये संभवदुत्कृष्टप्रतिपद्यमानस्थानं तिर्यग्जघन्यं प्रतिपद्यमानस्य स्थानात्प्राग्वदनंतगुणविशुद्धिकं बोद्धव्यं । तथा मनुष्यस्यासंयतसम्यग्दृष्टिचरस्य देशसंयमं प्रतिपद्यमानस्य तत्प्रथमसमये घटमानमुत्कृष्टं प्रतिपद्यमानस्थानं तिर्यगुत्कृष्टप्रतिपद्यमानस्थानात् पूर्ववदनन्तगुणविशुद्धिकं निश्चेतव्यं । मनुष्यजघन्यप्रतिपद्यमानात्प्रभृति तिर्यगनुत्कृष्टप्रतिपद्यमानस्थानपर्यंतं संभवंति प्रतिपद्यमानस्थानानि मिथ्यादृष्टिचरस्येति ग्राह्यं । तिर्यगुत्कृष्टप्रतिपद्यमानस्थानादारभ्य मनुष्योत्कृष्टप्रतिपद्यमानस्थानपर्यंतं विद्यमानानि स्थानानि असंयतसम्यग्दृष्टिचरस्य भवंतीति ज्ञातव्यं । तथा मनुष्यस्य मिथ्यादृष्टिचरस्य सम्यक्त्वेन सह देशसंयतं प्रतिपद्य द्वितीयसमये वर्तमानस्य जघन्यमनुभयस्थानं मनुष्योत्कृष्टप्रतिपद्यमानस्थानादनंतगुणविशुद्धिकं अन्तरेऽसंख्यातलोकमात्रषट्स्थानपतितविशुद्धिवृद्ध्या वर्धमानत्वात् । तथा तिर्यग्जीवस्य मिथ्यादृष्टिचरस्य सम्यक्त्वेन सार्धं देशसंयमं प्रतिपद्य द्वितीयसमये वर्तमानस्य जघन्यमनुभयस्थानं मनुष्यजघन्यानुभयस्थानात्पूर्ववदनंतगुणविशुद्धिकं । तथा तिर्यग्जीवस्यासंयतसम्यग्दृष्टिचरस्य देशसंयमं प्रतिपद्य एकांतवृद्धिचरमसमये स्वगतियोग्यसर्वविशुद्धिविशिष्टस्योत्कृष्टमनुभयस्थानं तिर्यग्जघन्यानुभयस्थानात्प्राग्वदनंतगुणं तथा मनुष्यस्यासंयतसम्यग्दृष्टिचरस्य देशसंयमं प्रतिपद्य एकांतवृद्धिचरमसमये सर्वविशुद्धिविशिष्टस्य सकलसंयमाभिमुखस्योत्कृष्टमनुभयस्थानं तिर्यगुत्कृष्टानुभयस्थानात्प्राग्वदनन्तगुणविशुद्धिकं ग्राह्यं । मनुष्यजघन्यानुभयस्थानादारभ्य तिर्यगनुत्कृष्टानुभयस्थानपर्यंतं संभवन्ति स्थानानि मिथ्यादृष्टिचरस्येति ग्राह्यं । तिर्यगुत्कृष्टानुभयस्थानादारभ्य मनुष्योत्कृष्टानुभयस्थानपर्यंतं दृश्यमानानि स्थानानि असंयतसम्यग्दृष्टिचरस्येति संभावनीयं । प्रतिपातद्विकस्य प्रतिपातप्रतिपद्यमानयोः अवरं मिथ्यात्वे पततः मिथ्यादृष्टिचरस्य संभवति वरमुत्कृष्टं देशसंयमलब्धिस्थानसंयमे पतिष्यतः असंयत-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरस्य च संभवति। अनुभयजघन्यं मिथ्यादृष्टिचरस्य देशसंयमग्रहणद्वितीयसमये वर्तमानस्य भवति । अनुभयोत्कृष्टं तु असंयतचरस्य एकांतवृद्धिचरमसमये मनुष्यस्य सकलसंयमाभिमुखस्य तिर्यग्जीवस्य च एकांतवृद्धिचरमसमयस्वरूपस्व-कीयस्थाने एव स्थितस्य संभवतीति सूच्यते। एवं गाथासूत्रव्याख्यानमुक्तं ॥ १९८ ॥

इति देशसंयमलब्धिविधानाधिकारः समाप्तः ॥

स० चं०—प्रतिपात नाम संयमतैं भ्रष्ट होनेका है सो संक्लेश परिणामनितैं संयमतैं भ्रष्ट होतैं देश संयतका अंतसमयविषैं प्रतिपात स्थान हो है। अर प्राप्त भयाका नाम प्रतिपद्यमान स्थान है। सो देश संयतका प्रथम समयविषै प्रतिपद्यमान स्थान हो है । अर दोऊ रहितका नाम अनुभय है। सो देश संयतके इनि बिना अन्य समयनिविषैं अनुभयस्थान हो है । तहां मिथ्यात्वकौं सन्मुख मनुष्यकैं जघन्य प्रतिपात स्थानहो है अर मिथ्यात्वकौं सन्मुख तिर्यंचकैं जघन्य प्रतिपात स्थान हो है। अर असंयतकौं सन्मुख तिर्यंचकैं उत्कृष्ट प्रतिपातस्थान हो है। अर असंयतकौं सन्मुख मनुष्यकैं उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान हो है। अर मिथ्यात्वतैं चढ्या तिर्यंचकैं जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर मिथ्यादृष्टितैं भया देशसंयतका दूसरा समयविषैं मनुष्यकैं जघन्य अनुभय स्थान हो है। अर मिथ्यादृष्टितैं भया देश संयतका दूसरा समयविषैं तिर्यंचकैं जघन्य अनुभय स्थान हो है। अर असंयततैं भया देश संयतकैं एकांत वृद्धिका अंतसमयविषैं तिर्यंचकैं उत्कृष्ट अनुभय स्थान हो है। अर असंयततैं भया देश संयतकैं एकांत वृद्धिका अंत-समय विषैं सकल संयमकौं सन्मुख मनुष्यकैं उत्कृष्ट स्थान हो है।

ए बारह स्थानक कहे तिनविषै पूर्व २ स्थानकी विशुद्धतातैं उत्तर उत्तर स्थान-विषै असंख्यातलोकबार भई जो षट्स्थानपतितवृद्धि ताकरि वर्धमान ऐसी अनंतगुणी विशुद्धता क्रमतैं जाननी। बहुरि इतना जानना—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिपात स्थाननिविषैं मनुष्यका जघन्यतैं लगाय तिर्यंचका अनुत्कृष्ट स्थान पर्यंत जे स्थान हैं ते तौ मिथ्यात्वकौं संमुख जीवहीकैं होंइ। अर तिर्यंचका उत्कृष्टतैं लगाय मनुष्यका उत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान हैं ते असंयतका सन्मुख जीवकैं ही हो हैं। बहुरि प्रतिपद्यमान स्थाननिविषै मनुष्यका जघन्यतैं लगाय तिर्यंचका अनुत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान हैं ते तौ मिथ्यादृष्टितैं देशसंयत भया ताहीकैं होंइ अर तिर्यंचका उत्कृष्टतैं लगाय मनुष्यका उत्कृष्टपर्यंत जे स्थान हैं ते असंयततैं देशसंयत भया ताकैं होंइ। बहुरि अनुभय स्थाननिविषैं मनुष्यका जघन्यतैं लगाय तिर्यंचका अनुत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान है ते तौ मिथ्यादृष्टितैं भया देश संयतहीकैं होंइ। अर तिर्यंचका उत्कृष्ट तैं लगाय मनुष्यका उत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान हैं ते असंयततैं भया देश संयतहीकैं होंइ॥ १८८॥

इति देशचारित्राभिधानप्ररूपणं समाप्तं॥

अथ सकलचारित्रप्ररूपणमुपक्रममाण इदं सूत्रमाह—

अथ सकल चारित्रकौं प्ररूपैं हैं—

सयलचरित्तं तिविहं खयउवसमि उवसमं च खइयं च।
सम्मत्तुप्पत्तिं वा उवसमसम्मेण गिण्हदो पढमं॥

सकलचारित्रं त्रिविधं क्षायोपशमिकं औपशमिकं च क्षायिकं च।
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव उपशमसम्येन गृह्णन् प्रथमम्॥ १८९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०—सकलचारित्रं त्रिविधं क्षायोपशमिकमुपशमजं क्षायिकं चेति। तत्र प्रथमं क्षायोपशमिकचारित्रमुपशमज-सम्यक्त्वेन सह गृह्णतो जीवस्य प्रथमोपशमसम्यक्त्वोत्पत्तौ यथा प्रक्रिया प्रागुक्ता तथा अत्रापि निरवशेषं वक्तव्या॥ १८९॥ अथ वेदकयोग्यमिथ्यादृष्ट्यादीनां सकलसंयमं गृह्णतां प्रक्रियाविशेषप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०—सकल चारित्र तीन प्रकार है—क्षायोपशमिक १ औपशमिक २ क्षायिक ३। तहां पहला क्षायोपशमिक चारित्र सातवें वा छठे गुणस्थानविषैं पाइए है ताकौं जो जीव उपशम सम्यक्त्व सहित ग्रहण करै है सो मिथ्यात्वतैं ग्रहण करै है ताका तौ सर्व विधान प्रथमोपशम सम्यक्त्वकी उत्पत्तिविषैं कह्या है सो जानना। क्षायोपशम चारित्रकौं ग्रहता जीव पहलैं अप्रमत्त गुणस्थानकौं प्राप्त हो है॥ १८९॥

वेदगजोगो मिच्छो अविरददेसो य दोण्णिकरणेण।
देसवदं वा गिण्हदि गुणसेढी णत्थि तक्करणे॥

वेदकयोगो मिथ्यो अविरतदेशश्च द्विकरणेन।
देशव्रतमिव गृह्णाति गुणश्रेणी नास्ति तत्करणे॥ १९०॥

सं० टी०—वेदकसम्यक्त्वग्रहणयोग्यो मिथ्यादृष्टिर्वा वेदकसम्यग्दृष्टिरविरतो वा देशव्रती वा देशव्रतग्रहण-वदधःप्रवृत्तापूर्वकरणद्वयपरिणामैरेव सकलसंयमं गृह्णाति। तत्करणद्वयेऽपि गुणश्रेणी नास्ति सकलसंयमग्रहणप्रथमस-मयादारभ्य गुणश्रेण्यस्ति॥ १९०॥ इतः परं देशसंयमवदेवात्रापि प्रक्रिया भवतीत्यतिदेशार्थमिदमाह—

स० चं०—वेदक सम्यक्त्व सहित क्षायोपशम चारित्रकौ मिथ्यादृष्टि वा अविरत वा देश संयत जीव है सो देशव्रत ग्रहणवत् अधःप्रवृत्त वा अपूर्व करण इन दोय ही करणकरि ग्रहै है। तहां करणविषै गुणश्रेणि नाहीं है। सकल संयमका ग्रहण समयतैं लगाय गुणश्रेणि हो है॥ १९०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एत्तो उवरिं विरदे देसो वा होदि अप्पबहुगोत्ति ।
देसोत्ति य तट्ठाणे विरदो त्ति य होदि वत्तव्वं ॥

अत उपरि विरते देश इव भवति अल्पबहुकत्वमिति ।
देश इति तत्स्थाने विरत इति च भवति वक्तव्यम् ॥ १९१ ॥

सं० टी०— इतः परमल्पबहुत्वपर्यंतं देशसंयते यादृशी प्रक्रिया तादृश्येवात्रापि सकलसंयते भवतीति ग्राह्यं । अयं तु विशेषः— यत्र यत्र देशसंयत इत्युच्यते तत्र तत्र स्थाने विरत इति वक्तव्यं भवति । तद्यथा—

अधःप्रवृत्तकरणादीनां कालाल्पबहुत्वं सम्यक्त्वोत्पत्तिवत् स्थितिखंडसहस्रेषु गतेष्वपूर्वकरणकालः समाप्यते तदनंतरसमये सकलसंयतः सन् असंख्यातसमयप्रबद्धद्रव्यमपकृष्यावस्थितिगुणश्रेणिं पूर्ववत्करोति । एवं प्रतिसमयमसंख्यातगुणक्रमेण द्रव्यमपकृष्य एकांतवृद्धिचरमसमयपर्यंतमवस्थितगुणश्रेणिं करोति । तत्काले बहुषु स्थितिकांडकसहस्रेषु गतेषु तदनंतरसमयादारभ्य स्वस्थानसकलसंयतो भवति । तत्र स्वस्थानसकलसंयतकाले स्थित्यनुभागकांडकघातो नास्ति गुणश्रेणी पुनरवस्थितायामा सकलसंयमनिबंधना प्रवर्तत एव । तदा संक्लेशस्तोकवशेन सकलसंयमात्प्रच्युत्यासंयतगुणस्थानं गत्वा तत्र कर्मस्थितिमवर्धयित्वा शीघ्रांतर्मुहूर्तेन पुनः संयमं प्रतिपद्यमानस्याधःप्रवृत्तापूर्वकरणपरिणामः स्थित्यनुभागखंडनं च नास्ति । यस्तीव्रसंक्लेशेन सकलसंयमात्प्रच्युत्य मिथ्यात्वं गत्वा तत्र दीर्घमंतर्मुहूर्तं वा चिरकालं वा स्थित्वा स्थित्यनुभागौ वर्धयित्वा पुनर्वेदकसम्यक्त्वेन सह सकलसंयमं गृह्णाति तस्याधःप्रवृत्तापूर्वकरणद्वयं स्थित्यनुभागखंडनं च विद्यत एव । तदा विशुद्धिसंक्लेशपरावृत्तिवशेन स्वस्थानसकलसंयतः असंख्यातभागाधिकं संख्यातभागाधिकं संख्यातगुणमसंख्यातगुणं वा असंख्यातभागहीनं संख्यातभागहीनं संख्यातगुणहीनमसंख्यातगुणहीनं वा द्रव्यमपकृष्यावस्थितायामां गुणश्रेणिं करोत्येव । जघन्यानुभागखंडोत्करणकालः सर्वतः स्तोकमित्यादिषु देशपदस्थाने विरतपदं निक्षिप्याल्पबहुत्वपदान्यष्टादशापि पूर्ववद् व्याख्येयानि ॥ १९१ ॥ अथ सर्वजघन्यसकलसंयमविशुद्ध्यविभागप्रतिच्छेदप्रमाणप्रदर्शनपूर्वकं तत्सर्वस्थानसंख्यानं प्ररूपयितुमिदमाह—

स० चं०—इहांतैं ऊपरि अल्प बहुत्व पर्यंत जैसैं पूर्वैं देश विरताविषै व्याख्यान किया है २३७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तैसें सर्व व्याख्यान इहां जानि। विशेष इतना—वहां जहां देश विरत कह्या है इहां तहां सकल विरत कहना सो कहिए है। अधःप्रवृत्त करणादिकके कालका अल्पबहुत्व अर प्रथमोपशम सम्यक्त्ववत् जो हजारों स्थितिखंड भएं अपूर्व करणकौं समाप्तकरि अनंतर समयविषैं सकल संयमविषै संयमकौं ग्रहै तहां प्रथम समयतैं लगाय एकांत वृद्धिका अंतसमय पर्यंत समय समय असंख्यातगुणा ऐसा असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण द्रव्यकौं ग्रहि अवस्थिति गुणश्रेणि करै है। तहां बहुत स्थितिकांडक भएं एकांत वृद्धिका अंतसमय पीछैं अनंतर समयतैं लगाय स्वस्थान सकल संयमी हो है। तहां स्थिति अनुभाग कांडकका घात नाहीं है। गुणश्रेणि है ही। जो जीव सकल संयमतैं भ्रष्ट होइ शीघ्र ही सकल संयमकौं प्राप्त होइ ताकैं करण वा स्थिति कांडकादि न हो है। अर जो सकल संयमतैं भ्रष्ट होइ मिथ्यात्वकौं प्राप्त होइ तहां बडा अंतर्मुहूर्त वा बहुत काल रहि स्थिति अनुभाग बधाय बहुरि वेदक सम्यक्त्व सहित सकल संयमकौं ग्रहै है ताकैं दोय करण वा स्थितिकांडक घातादि हो हैं। बहुरि स्वस्थान सकल संयम विशुद्धताकी वृद्धि हानितैं चतुःस्थान पतित वृद्धि हानि लीएं द्रव्यकौं अपकर्षण करि समय समय गुणश्रेणि करै है। बहुरि जघन्य अनुभाग खंडोत्करण कालादिक अठारह स्थाननिविषैं पूर्वोक्तवत् तहां अल्प बहुत्व जानना ॥ १९१ ॥

अवरे विरदट्ठाणे होंति अणंताणि फड्ढयाणि तदो ।
छट्ठाणगया सव्वे लोयाणमसंख छट्ठाणा ॥ १९२ ॥

अवरे विरतस्थाने भवंत्यनंतानि स्पर्धकानि ततः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षट्स्थानगतानि सर्वाणि लोकानामसंख्यं षट्स्थानानि ॥ १९२ ॥

सं० टी०— सकलसंयमस्य सर्वजघन्यस्थाने अनंतानंतानि स्पर्धकान्यविभागप्रतिच्छेदाः जीवराश्यनंतगुणप्रमिताः संति। ततः परं सर्वोत्कृष्टस्थानपर्यंतं षट्स्थानपतितवृद्धीनि सकलसंयमलब्धिस्थानानि सर्वाण्यपि असंख्यातलोकमात्राणि भवंति ॥ १९२ ॥ सकलसंयमस्य प्रतिपातादिभेदं दर्शयितुमिदमाह—

स० चं०— सकल संयमका जघन्य स्थाननिविषैं अनंतानंत स्पर्धक कहिए अविभाग प्रतिच्छेद हैं ते जीवराशितैं अनंत गुणे जानने। तातैं गोम्मटसारका ज्ञानाधिकारविषैं पर्याय समासके स्थाननिका अनुक्रम जैसैं कह्या है तैसै षट्स्थानपतित वृद्धि लीएं असंख्यात लोकमात्र स्थान हैं तिनविषैं असंख्यात लोकमात्रबार षट्स्थानपातित वृद्धि संभवै है ॥१९२॥

तत्थ य पडिवादगया पडिवज्जगयात्ति अणुभयगयात्ति
उवरुवरि लद्धिठाणा लोयाणमसंखछट्ठाणा ॥१९३॥

तत्र च प्रतिपातगता प्रातिपद्यगता इति अनुभयगता इति।
उपर्युपरि लब्धिस्थानानि लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ॥

सं० टी०— तत्र प्रतिपातगतानि प्रतिपद्यमानगतान्यनुभयगतानीति त्रिविधानि सकलसंयमलब्धिस्थानानि प्रत्येकमसंख्यातलोकमात्राण्युपर्युपरि तिष्ठंति ॥ १९३ ॥ तेषु प्रतिपातस्थानभेदं प्रदर्शयितुमिदमाह—

स० चं०—तहां प्रतिपातगत १ प्रतिपद्यमानगत २ अनुभयगत ३ ऐसैं उपरि तीन प्रकार स्थान हैं। भावार्थ यहु—नीचैं ही नीचै तौ जघन्य स्थान लिख्या ताकै ऊपरि अनंतभागवृद्धि रूप द्वितीय स्थान लिख्या ताके ऊपरि अनंत भाग वृद्धिरूप तृतीय स्थान लिख्या। ऐसैं पर्याय समास श्रुत ज्ञानके स्थानवत् स्थाननिकी अनुक्रमतैं ऊपरि ऊपरि रचना करनी। इहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंत भागादिक वृद्धि विशुद्धताकी अपेक्षा जाननी तहां नीचेके स्थान प्रतिपातगत हैं। प्रतिपद्यमान तिनके ऊपरि हैं। अनुभय गत तिनके भी ऊपरिवर्ती हैं। ते प्रत्येक असंख्यातलोकमात्र हैं। तहां असंख्यातलोकमात्रबार षट्स्थानपतित वृद्धि संभवै है॥ १९३॥

पडिवादगया मिच्छं अयदे देसे य होंति उवरुवरिं।
पत्तेयमसंखमिदा लोयाणमसंखछट्ठाणा॥ १९४॥

प्रतिपातगतानि मिथ्ये अयते देशे च भवंति उपर्युपरि।
प्रत्येकमसंख्यमितानि लोकानामसंख्यषट्स्थानानि॥ १९४॥

सं॰ टी॰— मिथ्यात्वे प्रतिपाताभिमुखं सकलसंयमलब्धिस्थानं चरमसमये तीव्रसंक्लेशवशात्सर्वजघन्यं भवति। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानानि गत्वा तद्योग्यसंक्लेशवशेन मिथ्यात्वप्रतिपाताभिमुखं सकलसंयमलब्धिस्थानमुत्कृष्टं तच्चरमसमये भवति ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानान्यंतरयित्वाऽसंयमप्रतिपाताभिमुखं जघन्यं सकलसंयमलब्धिस्थानं चरमसमये तद्योग्यसंक्लेशवशेन भवति। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानानि गत्वा असंयमप्रतिपाताभिमुखसकलसंयमलब्धिस्थानमुत्कृष्टं तच्चरमसमये तद्योग्यसंक्लेशवशाद् भवति। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानान्यतीत्य तद्योग्यसंक्लेशाद्देशसंयमप्रतिपाताभिमुखं जघन्यं सकलसंयमलब्धिस्थानं तच्चरमसमये भवति। ततः परमसंख्यातलोकमात्राणि षट्स्थानानि गत्वा तद्योग्यसंक्लेशवशेन देशसंयमप्रतिपाताभिमुखमुत्कृष्टं सकलसंयमलब्धिस्थानं तच्चरमसमये भवति। एवं प्रतिपातस्थानानि तद्विषयस्वामिभेदात्त्रिविधानि। तत्र त्रीणि जघन्यानि तीव्रसंक्लेशाविष्टस्य भवंति। त्रीण्युत्कृष्टानि तद्योग्यमंदसंक्लेशाविष्टस्य भवंति॥ १९४॥ अथ प्रतिपद्यमानसकलसंयमलब्धिस्थानस्वामिभेदावधारणार्थमिदमाह—

स॰ चं॰—तहां प्रतिपात गत स्थान सकल संयमतैं भ्रष्ट होतैं ताका अंतसमयविषैं पाइए हैं। तहां जघन्यतैं लगाय असंख्यातलोकमात्र स्थान तौ मिथ्यात्वकौं जो सन्मुख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होइ तिनकैं होइ। तिनके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र स्थान जे जीव असंयतकौं सन्मुख होंइ तिनकैं हो हैं। तिनके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र स्थान जे जीव देशसंयतकौं सन्मुख होंइ तिनके हो हैं। ऐसैं प्रतिपात स्थान तीन प्रकार हैं। तहां तीनों जायगा जघन्य स्थान तौ यथायोग्य तीव्र संक्लेशवालाकैं अर उत्कृष्ट स्थान मंद संक्लेशवालाकैं हो हैं। बहुरि एक एक विषैं असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान संभवै हैं॥ १९४॥

तत्तो पडिवज्जगया अज्जमिलेच्छे मिलेच्छअज्जे य।
कमसो अवरं अवरं वरं वरं होदि संखं वा॥ १९५॥

ततः प्रतिपद्यगता आर्यम्लेच्छे म्लेच्छार्ये च।
क्रमशोऽवरमवरं वरं वरं भवति संख्यं वा॥ १९५॥

सं॰ टी॰— तस्माद्देशसंयमप्रतिपाताभिमुखोत्कृष्टप्रतिपातस्थानादसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानान्यंतरयित्वा मिथ्यादृष्टिचरस्यार्यखंडजमनुष्यस्य सकलसंयमग्रहणप्रथमसमये वर्तमानं जघन्यं सकलसंयमलब्धिस्थानं भवति। ततः परमसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानान्यतिक्रम्य म्लेच्छभूमिजमनुष्यस्य मिथ्यादृष्टिचरस्य संयम ग्रहणप्रथमसमये वर्तमानं जघन्यं संयमलब्धिस्थानं भवति। ततः परमसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानानि गत्वा म्लेच्छभूमिजमनुष्यस्य देशसंयतचरस्य संयमग्रहणप्रथमसमये उत्कृष्टं संयमलब्धिस्थानं भवति। ततः परमसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानानि गत्वा आर्यखण्डजमनुष्यस्य देशसंयतचरस्य संयमग्रहणप्रथमसमये वर्तमानमुत्कृष्टं सकलसंयमलब्धिस्थानं भवति। एतान्यार्यम्लेच्छमनुष्यविषयाणि सकलसंयमग्रहणप्रथमसमये वर्तमानानि संयमलब्धिस्थानानि प्रतिपद्यमानस्थानानीत्युच्यन्ते। अत्रार्यम्लेच्छमध्यमस्थानानि मिथ्यादृष्टिचरस्य वा असंयतसम्यग्दृष्टिचरस्य वा देशसंयतचरस्य वा तदनुरूपविशुद्ध्या सकलसंयमं प्रतिपद्यमानस्य संभवंति। विधिनिषेधयोर्नियमावचने संभवप्रतिपत्तिरिति न्यायसिद्धत्वात्। अत्र जघन्यद्वयं यथायोग्यतीव्रसंक्लेशाविष्टस्य, उत्कृष्टद्वयं तु मन्दसंक्लेशाविष्टस्येति ग्राह्यं। म्लेच्छभूमिजमनुष्याणां सकलसंयमग्रहणं कथं सं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवतीति नाशंकितव्यं दिग्विजयकाले चक्रवर्तिना सह आर्यखण्डमागतानां म्लेच्छराजानां चक्रवर्त्यादिभिः सह जातवैवाहिकसंबन्धानां संयमप्रतिपत्तेरविरोधात् । अथवा तत्कान्यकानां चक्रवर्त्यादिपरिणीतानां गर्भेषूत्पन्नस्य मातृपक्षापेक्षया म्लेच्छव्यपदेशभाजः संयमसंभवात् तथाजातीयकानां दीक्षार्हत्वे प्रतिषेधाभावात् ॥ १९५ ॥ अनुभयस्थानप्रतिपादनार्थमाह—

स० चं०—प्रतिपात स्थाननिके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र स्थान ऐसे हो हैं जिनिका कोऊ स्वामी नाहीं तिनिका अंतरालकरि प्रतिपद्यमान स्थान हो हैं। सो सकल संयमकी प्राप्तिका प्रथम समयविषैं जे संभवैं ते प्रतिपद्यमान स्थान जानना। तहां प्रथम आर्यखंडका मनुष्य मिथ्यादृष्टितैं सकल संयमी भया ताकैं जघन्य स्थान हो है। बहुरि ताके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र षट्स्थान जाय म्लेच्छ खंडका मनुष्य मिथ्यादृष्टितैं सकल संयमी भया ताका जघन्य स्थान हो है। ताके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र षट्स्थान जाइ म्लेच्छ खंडका मनुष्य देश संयततैं सकल संयमी भया ताका उत्कृष्ट स्थान हो है। बहुरि तातैं असंख्यातलोकमात्र षट्स्थान जाइ आर्य खंडका मनुष्य देश संयततैं सकल संयमी भया ताका उत्कृष्ट स्थान हो है। इहां असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान जाइ कह्या तहां असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान पतित वृद्धि जाननी। बहुरि इहां आर्य म्लेच्छके जघन्य अर मध्यके बीचिके जे स्थान हैं ते मिथ्यादृष्टितैं वा असंयततैं वा देशसंयततैं सकल संयमी भए तिनके यथासंभव जानने। जातैं किछू नियम कह्या नाहीं।

बहुरि इहां कोऊ कहै कि म्लेच्छ खंडका उपज्या मनुष्यकैं सकल संयम इहां कह्या सो कैसे संभवै? ताका समाधान—जो म्लेच्छ मनुष्य चक्रवर्तीका साथि आर्यखंडविषैं आवै अर तिनसेती चक्रवर्ती आदिककैं विवाहादि संबंध पाइए है तिनकैं दीक्षाका ग्रहण संभवै है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथवा म्लेच्छकी कन्या जे चक्रवर्ती आदि परणैं तिनके जे पुत्र होंइ तिनकौं माता पक्षकरि म्लेच्छ कहिए, तिनके दीक्षा ग्रहण संभवै है ॥ १९५ ॥

तत्तोणुभयट्ठाणे सामाइयछेदजुगलपरिहारे ।
पडिबद्धा परिणामा असंखलोगप्पमा होंति १९६

ततोनुभयस्थाने सामायिकछेदयुगलपरिहारे ।
प्रतिबद्धाः परिणामा असंख्यलोकप्रमा भवंति ॥ १९६ ॥

सं० टी०— तस्मादार्यखण्डमनुष्यस्य प्रतिपद्यमानोत्कृष्टसंयमलब्धिस्थानादसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानान्यंतरयित्वा सामायिकछेदोपस्थापनसंयमद्वयसंबंधिजघन्यमनुभयस्थानं मिथ्यादृष्टिचरस्य संयमग्रहणाद्द्वितीयसमये भवति । ततः परमसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानानि गत्वा परिहारविशुद्धिसंयमसंबंधि जघन्यसंयमलब्धिस्थानं, परिहारविशुद्धिसंयमात्प्रच्युत्य तच्चरमसमये वर्तमानस्य सामायिकछेदोपस्थापनसंयमयोः पतिष्यतो भवति । ततः परमसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानानि गत्वा परिहारविशुद्धिसंयमस्योत्कृष्टं संयमलब्धिस्थानं सर्वविशुद्धस्य भवति । ततः परमसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानानि गत्वा सामायिकछेदोपस्थापनसंयमयोरुत्कृष्टमनुभयस्थानमनिवृत्तिकरणक्षपकस्य चरमसमये भवति एवं मिथ्यात्वप्रतिपाताभिमुखसर्वजघन्यस्थानादारभ्यानुभयोत्कृष्टसंयमलब्धिस्थानपर्यंतं यावंति संयमलब्धिस्थानानि तावंति सर्वाण्यपि सामायिकछेदोपस्थापनसंयमद्वयसंबन्धीनीति ज्ञातव्यं । तानि चोत्तरमनन्तगुणविशुद्धीनि । तत्र प्रतिपातस्थानान्यसंख्यातलोकमात्राणि सर्वतः स्तोकानि ≡ ३ (६।९) तेभ्यः प्रतिपद्यमानस्थानान्यसंख्येयलोकगुणितानि ≡ ३ ८ (९।९) तेभ्योऽनुभयस्थानान्यसंख्यातलोकगुणितानि ≡ ३ ८ (६) सर्वाण्यपि संयमलब्धिस्थानानि मिलित्वासंख्येयलोकमात्राणि ≡ ३ भागहारभूतासंख्यातलोकस्य संदृष्टिः ९ ॥ १९६ ॥ अथ सूक्ष्मसांपराययथाख्यातचारित्रप्ररूपणार्थमिदमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०—तिस उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थानके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र स्थान ऐसें हैं जिनिका कोऊ स्वामी नाहीं तिनका अंतरालकरि उपरि अनुभय स्थान है सो पूर्वोक्त दोऊ विना अन्य समयनिविषैं जे संभवैं ते अनुभय स्थान हैं। तहां प्रथम मिथ्यादृष्टितैं सकल संयमी भया ताकैं दूसरा समयविषैं सामायिक छेदोपस्थापन संबंधी जघन्य स्थान हो है। ताके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र षट्स्थान जाइ परिहार विशुद्धिका जघन्य स्थान हो है। सो यहु स्थान तिस परिहार विशुद्धि संयमतैं छूटि सामायिक छेदोपस्थापनकौं सन्मुख होतैं ताका अंत समयविषैं हो है । इहां इस संयमतैं छूटि सकल संयमी ही रह्या तातैं याकौं सकल संयमकी अपेक्षा अनुभय स्थान कह्या, प्रतिपात स्थान न कह्या । बहुरि ताके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र षट्स्थान जाइ परिहार विशुद्धिका उत्कृष्ट स्थान हो है बहुरि ताके ऊपरि असंख्यातलोकमात्र षट्स्थान जाइ सामायिक छेदोपस्थापनका उत्कृट स्थान हो है। सो यहु क्षपक अनिवृत्ति करणका अंत समयविषैं संभवै है ऐसा जानना। ऐसैं जघन्यतैं लगाय उत्कृष्ट पर्यंत कहे जे अनुभय स्थान ते सर्व सामायिक छेदोपस्थापनसंबंधी संभवै हैं। परिहारविशुद्धिसंबंधी स्थान कहे ते सामायिक छेदोपस्थापनविषैं भी अर तहां भी संभवै हैं। ऐसा जानना। बहुरि ऐसे ए स्थान कहे तिनिविषैं प्रतिपात स्थान थोरे हैं तेऊ असंख्यात लोक मात्र हैं। तिनितैं असंख्यात लोक गुणे प्रतिपद्यमान स्थान है। तिनतैं असंख्यात लोक गुणें अनुभय स्थान हैं। इनि सबनिकौं मिलाएं भी असंख्यातलोक प्रमाण ही सकल संमयके स्थान हो हैं जातैं असंख्यातके भेद बहुत हैं॥ १९६॥

तत्तो य सुहुमसंजम पडिवज्जय संखसमयमेत्ता हु। २४४

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्तो दु जहाखादं एयविहं संजमे होदि॥ १९७॥

ततश्च सूक्ष्मसंयमं प्रतिवर्ज्य संख्यसमयमात्रा हि।
ततस्तु यथाख्यातमेकविधं संयमे भवति ॥ १९७ ॥

सं० टी०— तस्मादनिवृत्तकरणक्षपणचरमसमयसंभविसामायिकछेदोपस्थापनद्वयोत्कृष्टस्थानादसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानान्यंतरयित्वा उपशमश्रेण्यामवरोहतो अनिवृत्तिकरणाभिमुखं सूक्ष्मसांपरायसंयमस्य जघन्यं स्थानं तच्चरमसमये भवति। ततः परमसंख्यातसमयमात्रस्थानानि गत्वा सूक्ष्मसांपरायक्षपकचरमसमये सूक्ष्मसांपरायसंयमस्योत्कृष्टं स्थानं भवति। तस्मादसंख्येयलोकमात्राणि षट्स्थानान्यंतरयित्वा यथाख्यातचारित्रमेकमिदं सर्वस्थानेभ्योऽनंतविशुद्धिकं सकलसंयमोत्कृष्टमुपशांतकषायक्षीणकषायसयोगकेवल्ययोगकेवलिस्वामिकं भवति सकलचारित्रमोहनीयप्रकृतीनां प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशरूपाणां सर्वोपशमात्सर्वक्षयाच्च समुद्भूतत्वात्तस्य जघन्यमध्यमोत्कृष्टस्थानविकल्पा न संतीत्येकविधत्वं प्रवचने प्रतिपादितं ॥ १९७ ॥ अथ सामायिकादिसंयमानां प्रतिपातस्थानादिलक्षणस्थानसंख्यांतरस्थानसंख्यास्वामिविषयविभागप्रदर्शनार्थं गाथासप्तकमाह—

स० चं०—तिस सामायिक छेदोपस्थापनका उत्कृष्ट स्थानतैं उपरि असंख्यतालोकमात्र स्थाननिका अंतरालकरि उपशम श्रेणितैं उतरतैं अनिवृत्तिकरणके सन्मुख जीवकै अपना अंत समयविषैं संभवता ऐसा सूक्ष्मसांपरायका जघन्य स्थान हो है। ताके ऊपरि असंख्यात समयमात्र स्थान जाइ क्षपक सूक्ष्म सांपरायका अंत समयविषैं संभवता सूक्ष्मसांपरायका उत्कृष्ट स्थान हो है। तातैं उपरि असंख्यातलोकमात्र स्थाननिका अंतरालकरि यथाख्यात चारित्रका एक स्थान हो है। सो यहु सवनितैं अनंतगुणी विशुद्धता लीएं उपशांतकषाय क्षीणकषाय सयोगी अयोगीकैं हो है। यामैं सर्व कषायनिका सर्वथा उपशम वा क्षय है तातैं जघन्य मध्य उत्कृष्ट भेद ही नाही ॥ १९७ ॥ २४५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडचरिमे गहणादीसमये पडिवाददुगमणुभयं तु।
तम्मज्झे उवरिमगुणगहणाहिमुहे य देसं वा १९८

पतनचरमे ग्रहणादिसमये प्रतिपातद्विकमनुभयं तु।
तन्मध्ये उपरिगुणग्रहणाभिमुखे च देशमिव ॥१९८॥

पडिवादादीतिदयं उवरुवरिमसंखलोगगुणिदकमा।
अंतरछक्कपमाणं असंखलोगा हु देसं वा ॥१९९॥

प्रतिपातादित्रितयं उपर्युपरितनमसंख्यलोकगुणितक्रमं।
अंतरषट्कप्रमाणमसंख्यलोका हि देशमिव ॥ १९९ ॥

मिच्छयददेसभिण्णे पडिवादट्ठाणगे वरं अवरं।
तप्पाउग्गकिलिट्ठे तिव्वकिलिट्ठे कमे चरिमे २००

मिथ्यायतदेशाभिन्ने प्रतिपातस्थानके वरमवरम्।
तत्प्रायोग्यक्लिष्टे तीव्रक्लिष्टे क्रमेण चरमे ॥ २००॥

पडिवज्जजहण्णदुगं मिच्छे उक्कस्सजुगलमविदेसे।
उवरिं सामइयदुगं तम्मज्झे होंति परिहारा ॥२०१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिपद्यजघन्यद्विकं मिथ्ये उत्कृष्टयुगलमपि देशे ।
उपरि सामायिकद्विकं तन्मध्ये भवंति परिहाराणि ॥ २०१ ॥

परिहारस्स जहण्णं सामायियदुगे पडंत चरिमम्हि ।
तज्जेट्ठं सट्ठाणे सव्वविसुद्धस्स तस्सेव ॥२०२॥

पारिहारस्य जघन्यं सामायिकद्विके पततः चरमे ।
तज्ज्येष्ठं स्वस्थाने सर्वविशुद्धस्य तस्यैव ॥ २०२ ॥

सामायियदुगजहण्णं ओघं अणियट्टिखवगचरिमम्हि ।
चरिमाणियट्टिस्सुवरिं पडंत सुहुमस्स सुहुमवरं ॥

सामायिकद्विकजघन्यमोघं अनिवृत्तिक्षपकचरमे ।
चरमानिवृत्तेरुपरि पततः सूक्ष्मस्य सूक्ष्मवरम् ॥

खवगसुहुमस्स चरिमे वरं जहाखादमोघजेट्ठं तं ।
पडिवाददुगा सव्वे सामाइयछेदपडिबद्धा ॥२०४॥

क्षपकसूक्ष्मस्य चरमे वरं यथाख्यातमोघज्येष्ठं तत् ।
प्रतिपातद्विकं सर्वाणि सामायिकच्छेदप्रतिबद्धानि ॥ २०४ ॥

सं० टी०— प्रतिपातप्रतिपद्यमानस्थानद्विकं यथासंख्यं पतच्चरमसमये संयमग्रहणप्रथमसमये च भवति । अनुभय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थानं तयोः प्रतिपातस्थानप्रतिपद्यमानस्थानयोर्मध्ये उपरितनगुणस्थानाभिमुखे च भवति । एतत्सर्वं यथा देशसंयमे सविस्तरं प्रतिपादितं तथात्रापि ग्राह्यं । प्रतिपातादित्रितयं स्वस्वजघन्यस्थानात् स्वस्वोत्कृष्टस्थानपर्यंतमुपर्युपर्यसंख्यातलोकगुणितकषाययंतरेषु षट्स्वपि प्रत्येकमसंख्याततलोकमात्राणि षट्स्थानानि देशसंयमवज्ज्ञातव्यानि । तत्र प्रतिपातस्थानेषु मिथ्यात्वासंयमदेशसंयमाभिमुखभेदभिन्नेषु जघन्यानि तीव्रसंक्लिष्टस्य चरमसमये भवंति । उत्कृष्टानि तत्प्रायोग्यमन्दसंक्लिष्टस्य भवंति । तथा प्रतिपद्यमानजघन्यस्थानद्वयमार्यम्लेच्छस्वामिकं मिथ्यादृष्टिचरस्य भवति, तदुत्कृष्टस्थानयुगलमपि देशसंयतचरस्य भवति प्रतिपद्यमानस्थानानामुपर्यनुभयस्थानानि सामायिकच्छेदोपस्थापनसंयमद्वयसंबंधीनि भवंति । तत्संयमद्वयस्य जघन्योत्कृष्टस्थानयोर्द्वयोर्मध्ये परिहारविशुद्धिसंयमस्थानानि भवंति । परिहारविशुद्धिसंयमस्य जघन्यस्थानं संक्लेशवशात्सामायिकच्छेदोपस्थापनद्वये पतिष्यतस्तच्चरमसमये भवति । तस्य परिहारविशुद्धिसंयमस्योत्कृष्टस्थानं तस्मिन्नेव सर्वविशुद्धस्याप्रमत्तस्यैकांतवृद्धिचरमसमये भवति । सामायिकच्छेदोपस्थापनद्वयस्य मिथ्यात्वाभिमुखं जघन्यस्थानमोघजघन्यस्थानं सर्वसंयमसामान्यजघन्यस्थानं भवतीत्यर्थः । तयोरुत्कृष्टस्थानमनिवृत्तिकरणक्षपकचरमसमये भवति । सूक्ष्मसांपरायसंयमस्य जघन्यस्थानमुपशमश्रेण्यामवरोहतोऽनिवृत्तिकरणस्योपरि पतिष्यतः सूक्ष्मसांपरायोपशमकस्य चरमसमये भवति । तस्योत्कृष्टस्थानं क्षीणकषायगुणस्थानाभिमुखस्य सूक्ष्मसांपरायक्षपकस्य चरमसमये भवति । यथाख्यातचारित्रं सर्वसंयमसामान्योत्कृष्टं तस्य जघन्यादिविकल्पाभावात् । प्रतिपातप्रतिपद्यमानस्थानानि सर्वाण्यपि सामायिकच्छेदोपस्थापनसंयमद्वयप्रतिबद्धान्येव नेतरसंयमसंबन्धीनि पुनः सामायिकादिसर्वसंयमसम्बन्धीनि संभवंति । मिथ्यादृष्ट्यसंयतदेशसंयतानां सकलसंयमग्रहणकाले सामायिकच्छेदोपस्थापनसंयमयोरेव प्रथमतः प्रतिपत्तिनियमात् । संयमसामान्यापेक्षया प्रतिपद्यमानस्थानानि संयमग्रहणप्रथमसमयवर्तीनि सामायिकच्छेदोपस्थापनप्रतिबद्धान्येव । तथा सामायिकच्छेदोपस्थापनसंयमाभ्यां प्रच्यवमानस्यैव मिथ्यात्वासंयमदेशसंयमेषु प्रतिपातः संभवति, न परिहारविशुद्ध्यादिसंयमेभ्यः प्रच्यवमानस्य तत्प्रतिपातः परिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपरायसंयमाभ्यां प्रच्यवमानस्य सामायिकद्विके यथाख्यातचारित्रात्प्रच्यवमानस्य सूक्ष्मसांपरायसंयमेपि च प्रतिपातस्य सिद्धांते प्रतिपादितत्वात् ।

ननु भवक्षयादुपशमश्रेण्यां मृतस्य सूक्ष्मसांपराययथाख्यातचारित्रयोर्देवासंयते प्रतिपातोऽस्ति, अतः कथमसंयतप्रतिपाताभावः ? इति चेत् वयमिमे ब्रूमहे— संयमघातिकषायोदयवशोत्पन्नसंक्लेशवशेन गुणस्थानाद्वा क्षयेण वाधस्तनगुणस्थानेषु प्रतिपातस्यात्र विवक्षितत्वात् । भवक्षयहेतुकः प्रतिपातः पुनरत्राविवक्षितः । तत्प्रतिपातविवक्षायां पुनर्देशसंयमा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भिमुखतैव न मिथ्यात्वदेशसंयमाभिमुखता बद्धदेवायुष एव सकलसंयमिनः संयमकाले मृतस्य देवगतिं मुक्त्वान्यत्र गताव-नुत्पादात् । देवगतौ च मिथ्यादृष्टिष्वनुत्पादात् देशसंयमस्य तत्राभावाच्च । तदेवं सामायिकादिपंचप्रकारसकलसंयम-लब्धिस्वरूपं प्रासंगिकं मुख्यतस्तु प्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानवर्तिक्षायोपशमिकसकलसंयमलब्धिस्वरूपं च सविस्तरं प्ररूपितं ॥ १९९–२०४ ॥

स० चं०–संयमतैं पडतैं अर अंत समयविषैं असंयमकौं ग्रहतैं प्रथम समयविषैं क्रमतैं प्रतिपात अर प्रतिपद्यमान ए दोय स्थान हैं। बहुरि इनके बीचि वा ऊपरिके गुणस्थानकौं सन्मुख होतैं अनुभय स्थान हो है सो देश संयतवत् इहां भी जानना॥ १९८ ॥

स० चं०–प्रतिपात आदि तीन प्रकार स्थान अपने अपने जघन्यतैं उत्कृष्ट पर्यंत उपरि उपरि असंख्यातलोक गुणा क्रम लीएं हैं। तिन छहों विषैं प्रत्येक असंख्यात लोकमात्र वार षट्स्थानवृद्धि देशसंयतवत् जाननी ॥ १९९ ॥

स० चं०–तहां प्रतिपातस्थान मिथ्यात्व असंयत देशसंयतकौं सन्मुख होनेकी अपेक्षा तीन भेद लीए है। तहां जघन्य स्थान तौ तीव्र संक्लेशवालाकैं संयमका अंत समयविषैं हो है अर उत्कृष्ट स्थान यथायोग्य मदंसंक्लेशवालेकैं हो है ॥ २०० ॥

स० चं०–प्रतिपद्यमानस्थान आर्य म्लेच्छकी अपेक्षा दोय प्रकार, सो तिनका जघन्य तौ मिथ्यादृष्टितैं संयमी भया ताकैं हो है। उत्कृष्ट देशसंयततैं संयमी भया ताकैं हो है।।तिनके ऊपरि अनुभय स्थान हैं ते सामायिक छेदोपस्थापना संबंधी हैं। तिनिका जघन्य उत्कृष्टके बीचि परिहारविशुद्धिके स्थान हैं ॥ २०१ ॥

स० चं०–परिहारविशुद्धिका जघन्य स्थान तौ सामायिक छेदोपस्थापनविषैं पडता जीवकैं ताका अंत समयविषैं हो है। अर ताका उत्कृष्ट स्थान सर्वतैं विशुद्ध अप्रमत्त गुण २४९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थानवर्ती तिस ही जीवकै एकांत वृद्धिका अंत समयविषैं हो है ॥ २०२ ॥

स० चं०—सामायिक छेदोपस्थापनाका जघन्य स्थान मिथ्यात्वकौं सन्मुख जीवकैं संयमका अंतसमयविषैं हो है बहुरि जो जघन्य संयमका स्थान सो ही है। ताका उत्कृष्ट स्थान अनिवृत्तिकरण क्षपकश्रेणिवाला ताका अंत समयविषैं हो है । बहुरि उपशमश्रेणिविषैं पडतैं सूक्ष्मसांपरायका अंत समयविषैं अनिवृत्तिकरणकौं सन्मुख होतैं सूक्ष्मसांपरायका अंतसमयविषै जघन्य स्थान हो है ॥ २०३ ॥

स० चं०—क्षपक सूक्ष्मसांपरायका क्षीणकषायके सन्मुख भया ताका अंत समयविषैं सूक्ष्मसांपरायका उत्कृष्ट स्थान हो है। बहुरि यथाख्यात चारित्र सर्व सामान्य चारित्रका उत्कृष्ट स्थान अभेद रूप है। बहुरि प्रतिपात प्रतिपद्यमानके जे स्थान कहे ते सर्व ही सामायिक छेदोपस्थापन संबंधी ही जानने। जातैं सकल संयमतैं भ्रष्ट होतैं अंत समयविषैं अर सकल संयमकौं ग्रहतैं प्रथम समयविषै सामायिक छेदोपस्थापन संयम ही हो है। अन्य परिहार विशुद्धि आदि न हो है। इहां कोऊ कहै—

उपशमश्रेणिविषैं मरणकी अपेक्षा सूक्ष्मसांपराय यथाख्याततैं पडि देव पर्याय संबंधी असंयतविषैं पडना हो है तहां प्रतिपातका अभाव कैसैं कहिए ? ताका समाधान—इहां संयमका घात कषायनिके उदयतैं वा गुणस्थानके कालका क्षय होनेतैं जो पडना होइ ताहीकी विवक्षा है। पर्याय नाशतैं पडना होइ ताकी विवक्षा नाहीं। जो यहु विवक्षा होइ तौ ताका प्रतिपातविषैं देवसंबंधी असंयतहीके सन्मुखपना संभवै है जातैं सकल संयमहीविषैं जो मूवा ताकैं अन्य गति वा मिथ्यात्व देश संयतपना संभवै नाहीं है। ऐसैं प्रसंग पाइ सामायिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदि पंचप्रकार सकलचारित्रके स्थान कहे। मुख्यपने प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थानविषै संभवता जो क्षायोपशमिक सकल चारित्र ताका प्ररूपण कीया ॥ २०४ ॥

इति क्षायोपशमिकसकलचारित्रप्ररूपणं समाप्तं ॥

अथ चारित्रमोहोपशमनं परममंगलपूर्वकं प्रतिजानीते—

उवसमियसकलः उपशमितसकलदोषानुपशांतकषायवीतरागांतानुपशमकान् प्रणम्य कषायोपशमनं वक्ष्यामीति ।

अथ चारित्रमोहोपशमनाभिमुखस्य स्वरूपमाह—

अथ उपशांत कीएं हैं सकल दोष जिनि ऐसे उपशांत कषाय वीतराग तिनहि प्रणाम करि उपशम चारित्रका विधान कहिए है—

उवसमचरियाहिमुहो वेदगसम्मो अणं विजोयित्ता ।
अंतोमुहुत्तकालं अधापवत्तोऽपमत्तो य ॥ २०५ ॥

उपशमचरित्रामुखो वेदकसम्यक् अनं वियोज्यं ।
अंतर्मुहूर्तकालं अधाप्रवृत्तोऽप्रमत्तश्च ॥ २०५ ॥

सं० टी०—उपशमचारित्राभिमुखो वेदकसम्यग्दृष्टिर्जीवः प्रथममनंतानुबंधिचतुष्टयं प्रागुक्तविधिना विसंयोज्यांतर्मुहूर्तकाल-पर्यंतमथाप्रवृत्ताप्रमत्ताभिधानः स्वस्थानाप्रमत्तः प्रमत्ताप्रमत्तपरावृत्तिसहस्राणि कुर्वन् विश्राम्यति । ततः परं दर्शनमोहत्रयं क्षपयित्वा क्षायिकसम्यग्दृष्टिः सन् कश्चिज्जीवश्चारित्रमोहमुपशमयितुं प्रारभते । तस्य दर्शनमोहक्षपणा विधिना प्रागुक्ते-नेति नेह पुनरुच्यते । यः पुनर्द्वितीयोपशमसम्यक्त्वेनोपशमश्रेणिमारोहति तस्य दर्शनमोहोपशमविधानप्रतिपादनार्थमिद-माह ॥ २०५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०—उपशम चारित्रके सन्मुख भया वेदक सम्यग्दृष्टि जीव सो पहिलैं पूर्वोक्त विधानतैं अनंतानुबंधीका विसंयोजन करि अंतर्मुहूर्तकाल पर्यंत अधःप्रवृत्त अप्रमत्त कहिए स्वस्थान अप्रमत्त हो है। तहां प्रमत्त अप्रमत्तविषै हजारोंवार गमनागमन करि पीछैं अप्रमत्तविषै विश्राम करै है। तहां पीछैं कोई जीव तीन दर्शन मोहकौं खिपाइ क्षायिक सम्यग्दृष्टी होइ चारित्र मोहके उपशमनका प्रारंभ करै ताकैं तौ क्षायिक सम्यक्त्व होनेका विधान पूर्वैं कह्या है सो जानना। बहुरि कोई जीव द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सहित उपशम श्रेणि चढै ताके दर्शन मोहके उपशमनका विधान कहिए है ॥२०५॥

तत्तो तियरणविहिणा दंसणमोहं समं खु उवसमदि।
सम्मत्तुप्पत्तिं वा अण्णं च गुणसेढिकरण विही ॥

ततः त्रिकरणविधिना दर्शनमोहं समं खलु उपशमयाति।
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव अन्यं च गुणश्रेणिकरणं विधिः ॥ २०६ ॥

सं० टी०— ततः स्वस्थानाप्रमत्तोऽन्तर्मुहूर्तमात्रं विश्रम्य पुनर्विशुद्धिमापूरयन् करणत्रयं विधाय दर्शनमोहं युगपदेवोपशमयति। तत्रापूर्वकरणप्रथमसमयादारभ्य स्थित्यनुभागकांडकघातो गुणश्रेणिनिर्जरा च गुणसंक्रमणं विना अन्यत्सर्वं विधानकं प्रथमोपशमसम्यक्त्वोत्पत्तौ यथा प्ररूपितं तथात्रापि द्रष्टव्यं। अनंतानुबंधिविसंयोजनेऽपि पूर्ववदेव स्थितिखण्डनादिविधानं ज्ञातव्यं ॥ २०७ ॥ उक्तार्थमनूद्य तद्विशेषणार्थमिदमाह—

स० चं०—स्वस्थान अप्रमत्तविषै अंतर्मुहूर्त विश्रामकरि तहां पीछैं तीन करणविधिकरि युगपत् दर्शन मोहकौं उपशमावै है। तहां अपूर्वकरणका प्रथम समयतैं लगाय प्रथमोपशम सम्यक्त्ववत् गुण संक्रमण विना अन्य स्थिति अनुभाग कांडकका घात वा गुण श्रेणि नि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जरा आदि सर्व विधान जानना। अनंतानुबंधीका विसंयोजन याकै हो है ताविषैं भी सर्व स्थिति खंडनादि पूर्वोक्तवत् जानना ॥ २०६ ॥

दंसणमोहुवसमणं तक्खवणं वा हु होदि णवरिं तु।
गुणसंकमो ण विज्जादि विज्झद वाधापवत्तं च ॥

दर्शनमोहोपशमनं तत्क्षपणं वा हि भवति नवरि तु ।
गुणसंक्रमो न विद्यते विध्यातं वा अधःप्रवृत्तं च ॥ २०७ ॥

सं० टी०— चारित्रमोहोपशमाभिमुखस्य दर्शनमोहोपशमनं वा तत्क्षपणं वा भवति नियमाभावात्। अयं तु विशेषः— दर्शनमोहोपशमनविधाने गुणसंक्रमो नास्ति केवलं विध्यातसंक्रमो वा अथाप्रवृत्तसंक्रमो वा संभवति ॥ २०७ ॥ तत्र तदानींतनस्थितिसत्त्वविशेषनिर्ज्ञानार्थमिदमाह—

स० चं०— चारित्र मोहके उपशमावनेकौं सन्मुख भया जीवकैं दर्शनमोहका उपशम होइ वा ताकी क्षपणा होइ। तहां उपशमविधानविषैं केवल गुणसंक्रमण नाहीं है। विध्यात संक्रमण है अथवा अधःप्रवृत्त संक्रम है सो विशेष आगें कहेंगे ॥ २०७ ॥

ठिदिसत्तमपुव्वदुगे संखगुणूणं तु पढमदो चरिमं।
उवसामण अणियट्टीसंखाभागासु तीदासु ॥ २०८ ॥

स्थितिसत्त्वमपूर्वद्विके संख्यगुणोनं तु प्रथमतः चरमम्।
उपशामनमनिवृत्तिसंख्यभागेष्वतीतेषु ॥ २०८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०— अपूर्वकरणस्य प्रथमसमयकर्मस्थितिसत्त्वात्कांडकघातमाहात्म्येन तच्चरमसमये कर्मस्थितिसत्त्वं संख्यातगुणहीनं भवति । एवमनिवृत्तिकरणेऽपि स्थितिसत्त्वं ज्ञातव्यं ॥ २०८ ॥ अथानिवृत्तिकरणकालस्य संख्येयबहुभागेषु गतेषु अवशिष्टैकभागे विधीयमानं क्रियांतरं प्रदर्शयितुमिदमाह—

स० चं०— अपूर्वकरण वा अनिवृत्ति करणका प्रथम समय सम्बन्धी स्थिति सत्वतैं अंतसमयविषैं स्थिति सत्व है सो कांडक घात करनेतैं संख्यातगुणा घाटि हो है ॥ २०८ ॥ बहुरि अनिवृत्ति करण कालकौं संख्यातका भाग दीजिए तहां बहुभाग व्यतीत भएं अवशेष एक भाग रहैं है तहां कार्य हो है सो कहैं है—

सम्मस्स असंखेज्जा समयपबद्धाणुदीरणा होदि ।
तत्तो मुहुत्तअंते दंसणमोहंतरं कुणई ॥ २०९ ॥

सम्यस्य असंख्येयानां समयप्रबद्धानामुदीरणा भवति ।
ततो मुहूर्तांतः दर्शनमोहांतरं करोति ॥ २०९ ॥

सं० टी० — अपूर्वकरणप्रथमसमय आरब्धा या गुणश्रेणिः साधिकापूर्वानिवृत्तिकरणकालायामा गलितावशेषप्रमाणानिवृत्तिकरणकालबहुभागपर्यंतं प्रवर्तते तत्रापकृष्टद्रव्यस्य पल्यासंख्यातभागखंडितस्य बहुभागद्रव्यमुपरितनस्थितौ निक्षिप्तं तदेकभागस्य पुनरसंख्यातलोकखंडितस्य बहुभागद्रव्यं गुणश्रेण्यायामे निक्षिप्तं । तदेकभागद्रव्यमुदयावल्यां निक्षिप्तं । एवं निक्षिप्ते उदये समयप्रबद्धस्यासंख्यातैकभागमात्रमेव द्रव्यं पतति । इदानीं पुनरनिवृत्तिकरणकालसंख्यातैकभागमात्रेऽवशिष्टे सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यादपकृष्टद्रव्यस्य पल्यासंख्यातभागखंडितस्य बहुभागमुपरितनस्थितौ निक्षिप्य तदेकभागं पुनरपि पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा बहुभागं गुणश्रेण्यायामे निक्षिप्य तदेकभागं पुनरुदयावल्यां निक्षिपति । अतः कारणात्सम्यक्त्वप्रकृतिद्रव्यस्यासंख्येयाः समयप्रबद्धा उदयनिषेके निक्षिप्योदीर्यंते । पल्यस्य भागहारभूतासंख्येयरूपबाहुल्यमाहात्म्यात् यत्रासंख्येयसमयप्रबद्धोदीरणाकरणं कथ्यते तत्र पल्यासंख्यातभाग एवापकृष्टद्रव्यस्य २५९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागहारो नासंख्यातलोक इति वचनात् । अतः परमन्तर्मुहूर्तकाले गते दर्शनमोहस्यांतरं करोति ॥ २०९ ॥ अथांतर-करणप्रदर्शनार्थमाह—

स० चं० — अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं जो साधिक अपूर्व अनिवृत्तिका कालमात्र आयाम धरैं गलितावशेष गुणश्रेणिका आरंभ कीया था सो अनिवृत्तिकरणका बहुभाग पर्यंत प्रवर्तै है। तहां अपकर्षण कीया द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं दीजिए है। अवशेष एक भागकौं असंख्यात लोकका भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषैं एक भाग उदयावलीविषैं दीजिए है। सो इहां उदयावलीविषैं दीया द्रव्य समयप्रबद्धके असंख्यातवे भागमात्र आवै है। अनिवृत्ति करण कालका संख्यातवां भाग अवशेष रहैं सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यकौं अपकर्षण करि याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं देना। अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषैं दीजिए है। एक भाग उदयावलीविषैं दीजिए है। सो इहां उदयावलीविषैं दीया जो उदीरणा द्रव्य सो असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है जातैं ऐसा कह्या है जहां असंख्यात समयप्रबद्धकी उदीरणा होइ तहां भागहार पल्यका असंख्यातवां भागमात्र है। असंख्यात लोकप्रमाण नाही है। बहुरि यातैं परैं अंतर्मुहूर्तकाल व्यतीत भएं दर्शन मोहका अंतर करै है ॥२०९॥

अंतोमुहुत्तमेत्तं आवलिमेत्तं च सम्मातियठाणं ।
मोत्तूण य पढमाट्ठिदिं दंसणमोहंतरं कुणइ ॥ २१० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतर्मुहूर्तमात्रं आवलिमात्रं च सम्यक्त्वत्रयस्थानम् ।
मुक्त्वा च प्रथमस्थितिं दर्शनमोहांतरं करोति ॥ २१० ॥

सं० टी०— उदयवत्याः सम्यक्त्वप्रकृतेरन्तर्मुहूर्तमात्रीमनुदययोरितरयोर्मिथ्यात्वमिश्रप्रकृत्योश्च आवलीमात्रीं प्रथमस्थितिं मुक्त्वा उपर्यंतर्मुहूर्तनिषेकाणामंतरभावमंतर्मुहूर्तेन कालेन करोति । सम्यक्त्वप्रकृतेर्गुणश्रेणिशीर्षं ततः संख्यातगुणितानुपरितनस्थितिनिषेकांश्च गृहीत्वा अंतरं करोति, मिथ्यात्वमिश्रयोर्गलितावशेषगुणश्रेण्यायामं सर्वं, ततः संख्यातगुणितानुपरितनस्थितिनिषेकांश्च गृहीत्वा अन्तरं करोतीत्यर्थः । उपरि तिसृणां प्रकृतीनां द्वितीयस्थितिप्रथमनिषेकाः सदृशा एव । अधःप्रथमस्थित्यग्रनिषेकाः विसदृशा इति ग्राह्यं ॥ २१० ॥ अथांतरद्रव्यस्य निक्षेपप्रकारप्रदर्शनार्थं गाथाचतुष्टयमाह—

स० चं०— नीचेके वा ऊपरिके निषेक छोडि बीचिके केते इक निषेकनिका द्रव्यकौं अन्य निषेकनिविषैं निक्षेपण करि तिनि निषेकनिका अभाव करना सो अंतर करना कहिए है सो जाका उदय पाइए ऐसी जो सम्यक्त्व मोहनी ताकी तौ अंतर्मुहूर्तमात्र अर उदय रहित मिश्र वा मिथ्यात्व तिनिकी आवलीमात्र जो प्रथम स्थिति तीहिं प्रमाण नीचैं निषेकनिकौं छोडि ताके ऊपरि जे अंतर्मुहूर्त काल प्रमाण निषेक तिनिका अंतर कहिए अभाव करै है । तहां सम्यक्त्व मोहनीका अनिवृत्ति करण कालका संख्यातवां भागमात्र है गुणश्रेणि शीर्ष अर तातैं संख्यातगुणे तातैं उपरिवर्ती उपरितन स्थितिके निषेक तिनिका अंतर करै है । अर मिथ्यात्व मिश्र मोहनीका गले पीछे अवशेष रह्या जो सर्व गुण श्रेणी आयाम अर तातैं संख्यात गुणे उपरितन स्थितिके निषेक तिनका अंतर करै है । सो जितने निषेकनिका अंतर कीया ताके प्रमाणका नाम अंतरायाम है । तिस अंतरायामके नीचैं जे निषेक छोडे तिस प्रमाण प्रथम स्थिति है अर अंतरायामके उपरिवर्ती जे निषेक तिसका नाम द्वितीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थिति है। तहां द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेक तौ तीनों ही प्रकृतिनिके समान हैं जातैं सो प्रथम निषेक अंतरायामके अंतरि पाइए। अर प्रथम स्थितिका अंत निषेक समान नाहीं है जातैं प्रथम स्थितिका प्रमाण हीनाधिक है ॥ २१० ॥

सम्मत्तपयडिपढमट्ठिदिम्मि संछुहदि दंसणतियाणं।
उक्कीरयं तु दव्वं बंधाभावादु मिच्छस्स ॥ २११ ॥

सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितौ संपातयति दर्शनत्रयाणाम्।
उत्कीर्णं तु द्रव्यं बंधाभावात् मिथ्यस्य ॥ २११ ॥

सं॰ टी॰— दर्शनमोहत्रयस्यांतरे उत्कीर्णं द्रव्यमुदयावल्यां सम्यक्त्वप्रकृतेः प्रथमस्थितावेव निक्षिपति न द्वितीयस्थितौ यत्र नूतनबन्धोऽस्ति तत्र उत्कृष्य द्वितीयस्थितावपि निक्षिपति। अत्र पुनरप्रमत्तगुणस्थाने दर्शनमोहस्य बंधाभावात् द्वितीयस्थितौ न निक्षिपतीत्यर्थः ॥ २११ ॥

स॰ चं— तहां जिनि निषेकनिका अभाव कीजिए है तिन तीनों दर्शन मोहकी प्रकृतिके निषेकनिके द्रव्यकौं उदय रूप जो सम्यक्त्व मोहनी ताकी प्रथम ही स्थितिविषैं निक्षेपण करै है। जातैं जहां नवीन बंध हो है तहां उत्कर्षण करि द्वितीय स्थितिविषैं भी निक्षेपण हो है। सो इहां सातवे गुणस्थानविषैं दर्शन मोहका बंध है नाहीं, तातैं द्वितीय स्थितिविषैं निक्षेपण नाहीं करै है ॥ २११ ॥

बिदियट्ठिदिस्स दव्वं उक्कट्टिय देदि सम्मपढमम्मि। २५७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिदियट्ठिदिम्हि तस्स अणुक्कीरिज्जंतमाणम्हि॥ २१२

द्वितीयस्थितेर्द्रव्यमपकर्ष्य ददाति सम्यक्त्वप्रथमे।
द्वितीयस्थितौ तस्यानुत्कीर्यमाणे ॥ २१२ ॥

सं० टी०— गुणश्रेणिनिर्जरार्थमुदयावलिवाह्यप्रथमसमयादारभ्य सर्वत्रापकृष्टद्रव्यं पल्यासंख्यातभागेन खण्डयित्वा बहुभागमंतरायामं मुक्त्वा स्वस्वोपरितनद्वितीयस्थितौ निक्षिप्य शेषैकभागं पल्यासंख्यातैकभागेन खंडयित्वा बहुभागं सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितौ गुणश्रेण्यायामे निक्षिप्य तदेकभागमुदयावल्यां निक्षिपति। एवमन्तरस्य द्वितीयादिफालिद्रव्यं दर्शनमोहत्रयसंबंधि प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेण गृहीत्वा सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितावेव निक्षिपति। अंते उपरि चापकृष्टद्रव्यमपि प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेण गृहीत्वा सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितौ अन्तरस्योपरिस्वस्वद्वितीयस्थितौ चाग्रेऽतिस्थापनावलिं मुक्त्वा निक्षिपति ॥ २१२ ॥

स० चं०— इहां अंतरकरण कालका प्रथमादि समयनिविषैं गुणश्रेणि निर्जराके अर्थि उदयावलीतैं बाह्य निषेकनिका अपकर्षण कीया जो द्रव्य ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग तौ अंतरायामकौं छांडि ताके उपरिवर्ती जो उपरितन द्वितीय स्थिति ताविषैं निक्षेपणकरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभागकौं सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थिति रूप इहां गुणश्रेणि आयाम ताविषैं निक्षेपण करै है। अवशेष एक भाग उदयावलीविषैं निक्षेपण करै है। ऐसैं अंतर करनेका कालका प्रथम समयविषैं फालिद्रव्यका अर अपकृष्ट द्रव्यका निक्षेपण करिए है। तहां जिन निषेकनिका अंतर कीजिए है तिनका द्रव्य अन्य निषेकनिविषैं अंतर करनेका काल अंतर्मुहूर्त है। ताकरि निक्षेपण करिए है। तहां तिनिका द्रव्य तिस कालके प्रथम समयविषै जेता निक्षेपण कीजिए सो प्रथम फालिका द्रव्य, दूसरे समय जेता निक्षेपण करिए सो दूसरी फा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिका द्रव्य ऐसैं क्रमतैं अंतसमयविषै अवशेष रह्या तिनका द्रव्यकौं निक्षेपण करिए है सो अंतफालिका द्रव्य जानना। बहुरि जो गुणश्रेणिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य सो अपकृष्ट द्रव्य कहिए है। सो प्रथम समय सम्बन्धी फालिद्रव्य वा अपकृष्ट द्रव्यतैं द्वितीयादि समय सम्बन्धी फालि द्रव्यका वा अपकृष्ट द्रव्यका प्रमाण समय समय प्रति असंख्यातगुणा है। ताके निक्षेपण करनेका विधान जैसैं प्रथम समयविषैं कह्या तैसैं ही जानना ॥ २१२ ॥

सम्मत्तपयडिपढमट्ठिदीसु सारिसाण मिच्छमिस्साणं ।
ठिदिदव्वं सम्मस्स य सरिसणिसेयम्हि संकमदि ॥

सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितिषु सदृशानां मिथ्यमिश्राणाम् ।
स्थितिद्रव्यं सम्यस्य च सदृशनिषेके संक्रामति ॥ २१३ ॥

सं० टी०— मिथ्यात्वमिश्रयोरुदयावलिबाह्यांतरायामे सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितिसदृशस्थितयो ये निषेकास्तानुत्कीर्य स्वसमानस्थितिषु सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितिनिषेकेष्वेव निक्षिपति न तेषां निक्षेपविभागोऽस्ति यदुपरिस्थितांतरायामा निषेकाः फालिगताः सर्वेऽपि पूर्वोक्तविधानेनैव सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितौ गुणश्रेण्यामुदयावल्यां च विभज्य निक्षिपतीत्यर्थः ॥ २१३ ॥

स० चं०— मिथ्यात्व अर मिश्रमोहनीकी प्रथम स्थितिके ऊपरि जो अंतरायामके निषेक सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थितिके समानवर्ती पर्यंत पाइए है तिनिका द्रव्यकौं अपने अपने समानवर्ती जे सम्यक्त्व मोहनीके निषेक तिनविषैही निक्षेपण करै है । तहां द्रव्य देनेका विधान नाहीं है। भावार्थ ऐसा— जो मिथ्यात्व मिश्रमोहनीकी प्रथम स्थिति तौ आवलीमात्र है अर सम्यक्त्व मोहनीकी अंतर्मुहूर्तमात्र है ताकौं छोडि ऊपरिके निषेकनि- २५१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का अंतर करिए है। तहां मिथ्यात्व मिश्रमोहनीकी प्रथम स्थितिके ऊपरि जो अंतरायामका पहिला निषेक था ताका द्रव्यकौं सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थितिविषै जो आवलीतैं ऊपरि पहिला निषेक है तीहिंविषै निक्षेपण कीया। ऐसैं ही ताके अंतरायामके दूसरा निषेकका द्रव्यकौं सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थितिविषै आवलीतैं ऊपरि दूसरा निषेक है तीहिविषै निक्षेपण कीया ऐसैं सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थितिका अंतनिषेकके समान जो मिथ्यात्व मिश्रके अंतरायामका निषेक तीहिं पर्यंत जे निषेक तिनिका निक्षेपण अपने सम्यक्त्वमोहनीकी प्रथम स्थितिके निषेकनिविषै जानना तहां द्रव्य विभाग नाही है। बहुरि तिसके ऊपरि तीनों ही दर्शनमोहके अंतरायामके निषेकनिका द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार फालि रूपकरि सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थितिविषै गुणश्रेणिविषै उदयावलीविषै विभाग करि निक्षेपण करिए है ॥ २१३ ॥

जावंतरस्स दुचरिमफालिं पावे इमो कमो ताव।
चरिमातिदंसणदव्वं छुहेदि सम्मस्स पढमम्हि ॥

यावदंतरस्य द्विचरमफालिं प्राप्ते अयं क्रमस्तावत्।
चरमत्रिदर्शनद्रव्यं क्षेपयाति सम्यस्य प्रथमे ॥ २१४ ॥

सं० टी०— एवं फालिद्रव्यदयापकृष्टद्रव्यस्य च यावदन्तरद्विचरमफालिं प्राप्नोति तावदयमेव निक्षेपक्रमः। पुनर्दर्शनमोहत्रयस्य चरमफालिद्रव्यं तत्रापकृष्टद्रव्यं च सर्वं सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितावेव निक्षिपति न पूर्ववदंतरापकृष्टबहुभागस्य द्वितीयस्थितौ निक्षेपः कर्तव्य इति भावः ॥ २१४ ॥ अथ दर्शनमोहगुणश्रेण्यवसानकथनार्थमिदमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०—यावत् अंतर करणकालका द्विचरम समयवर्ती जो अंतकी द्विचरम फालि सो प्राप्त होइ तहां पर्यंत फालि द्रव्य अर अपकृष्ट द्रव्य ताके निक्षेपण करनेका यहु ही पूर्वोक्त अनुक्रम जानना। बहुरि अंतर करणकालका अंत समय संबंधी जो दर्शनमोहत्रिककी अंत फालिका द्रव्य है सो अर तहां अपकृष्ट द्रव्य है सो भी सर्व सम्यक्त्वमोहनीकी प्रथम स्थिति ही विषैं निक्षेपण करिए है। भावार्थ यहु—पूर्वैं जैसैं अपकर्षण कीया द्रव्यविषै बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं देने कहे थे तैसैं इहां अपकर्षण कीया द्रव्यका बहुभाग द्वितीय स्थितिविषैं निक्षेपण करना ॥ २१४ ॥

बिदियट्ठिदिस्स दव्वं पढमट्ठिदिमेदि जाव आवलिया।
पडिआवलिया चिट्ठदि सम्मत्तादिमाठिदी ताव ॥

द्वितीयस्थितेर्द्रव्यं प्रथमस्थितिमेति यावदावलिका।
प्रत्यावलिका तिष्ठति सम्यक्त्वादिमास्थितिः तावत् ॥ २१५ ॥

सं० टी०— यावत्सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितिः आवलिप्रत्यावलिमात्रावशेषा भवति तावद्द्वितीयस्थितिद्रव्यमपकर्षणावशेन प्रथमस्थितिमागच्छति तावत्पर्यंतं दर्शनमोहस्य गुणश्रेणिः प्रवर्तते। सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितौ द्व्यावलिमात्रावशिष्टायां तस्य गुणश्रेणिर्नास्तीत्यर्थः। ज्ञानावरणादिशेषकर्मणां चारित्रपरिणामनिबंधना गुणश्रेणी प्रवर्तत इति ग्राह्यं। प्रथमस्थितेः समयाधिकावल्यवशेषपर्यंतं सम्यक्त्वप्रकृतेरुदीरणा वर्तते ततः सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितेश्चरमसमयेऽनिवृत्तिकरणकालः समाप्तो भवति। तदनंतरमन्तरप्रथमसमये द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिर्भवति जीवः ॥ २१५ ॥ अथ दर्शनमोहद्रव्यस्य संक्रमप्रतिपादनार्थमाह—

स० चं०—सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थितिविषैं उदय आवली अर प्रति आवली ए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोय आवली अवशेष रहैं तहां पर्यंत द्वितीय स्थितिका द्रव्यकौं अपकर्षणका वशतैं प्रथम स्थितिविषैं निक्षेपण करिए है। तहां ही पर्यंत दर्शन मोहकी गुणश्रेणि प्रवर्तैं है। सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थितिविषैं दोय आवली अवशेष रहैं दर्शन मोहकी गुणश्रेणि नाहीं हो है अन्य कर्मनिकी सकल चारित्र संबंधी गुणश्रेणि तहां भी प्रवर्तैं है। बहुरि सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थितिविषैं एक समय अधिक आवली अवशेष रहैं तहां पर्यंत सम्यक्त्व मोहनीकी उदीरणा प्रवर्तैं है। ऊपरिके निषेकनिका द्रव्यकौं उदयावलीविषैं दीजिए है। बहुरि तिस प्रथम स्थितिका अंत समयविषै अनिवृत्तिकरण काल समाप्त हो है॥ २१५॥

सम्मादिठिदिज्झीणे मिच्छद्दव्वादु सम्मसंमिस्से।
गुणसंकमो ण णियमा विज्झादो संकमो होदि॥

सम्यगादिस्थितिक्षीणे मिथ्यद्रव्यात् सम्यसंमिश्रे।
गुणसंक्रमो न नियमात् विध्यातः संक्रमो भवति॥ २१६॥

सं० टी०— सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितौ निरवशेषं गलितायां संजातद्वितीयोपशमसम्यक्त्वस्य जीवस्य मिथ्यात्वद्रव्यात् गुणसंक्रमेण विनांगुलासंख्यातभागमात्रविध्यातसंक्रमेण भक्तैकभागमात्रं द्रव्यं गृहीत्वा सम्यक्त्वसम्यग्मिथ्यात्वप्रकृत्योः प्रतिसमयं विशेषहीनक्रमेण निक्षिपति॥ २१६॥ अथ द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिविशुद्धेरेकांतवृद्धिकालप्रमाणं दर्शयितुमिदमाह—

स० चं०—सम्यक्त्व मोहनीकी प्रथम स्थितिका क्षय होतैं ताके अनंतरि अंतरायामका प्रथम समय प्राप्त होइ तीहिंविषै द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी हो है। तहां गुणसंक्रमण तौ नियमतैं इहां है नाहीं तातैं मिथ्यात्वके द्रव्यकौं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र जो विध्यात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्रमण भागहार ताका भाग देइ तहां एक भागमात्र मिथ्यात्वके द्रव्यकौं मिश्रसम्यक्त्व मोहनीविषैं निक्षेपण करै है। बहुरि तातैं द्वितीयादि समयनिविषैं विशेष घटता क्रम लीएं निक्षेपण करै है॥ २१६॥

सम्मत्तुप्पत्तीए गुणसंकमपूरणस्स कालादो।
संखेज्जगुणं कालं विसोहिवड्ढीहिं वड्ढदि हु २१७

सम्यक्त्वोत्पत्तौ गुणसंक्रमपूरणस्य कालात्।
संख्येयगुणं कालं विशुद्धिवृद्धिभिः वर्धते हि॥ १७॥

सं० टी०— प्रथमोपशमसम्यक्त्वोत्पत्तौ गुणसंक्रमपूरणकालो यावदंतर्मुहूर्तमात्रः पूर्वं प्ररूपितः तत्संख्येयभागगुणं कालमयं द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिः प्रतिसमयमनंतगुणितक्रमेण विशुद्ध्या वर्धते। अयं च विशुद्ध्येकांतवृद्धिकालोऽतर्मुहूर्तमात्र एव॥ २१७॥ एकांतवृद्धिकालात्परं तस्यामवस्थाविशेषं प्ररूपयितुमिदमाह—

स० चं०— प्रथमोपशम सम्यक्त्वकी उत्पत्तिविषै पूर्वै गुणसंक्रम पूरण काल अंतर्मुहूर्तमात्र कह्या था तातैं संख्यातगुणा काल पर्यंत यहु द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी प्रथम समयतैं लगाय समय समय प्रति अनंतगुणी विशुद्धताकरि बधै है। ऐसैं इहां एकांतविशुद्धताकी वृद्धिका काल अंतर्मुहूर्तमात्र जानना॥ २१७॥

तेण परं हायदि वा वड्ढदि तव्वड्ढिदो विसुद्धीहिं।
उवसंतदंसणातियो होदि पमत्तापमत्तेसु॥ २१८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेन परं हीयते वा बर्धते तद्वृद्धितो विशुद्धिभिः ।
उपशांतदर्शनत्रिकः भवति प्रमत्ताप्रमत्तयोः ॥ २१८ ॥

सं० टी०— तस्मादेकांतवृद्धिकालात्परं द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिः संक्लेशपरिणामवशात् विशुद्धया हीयते वा संक्लेशहान्या विशुद्धया वर्धते वा अयं च व्यवस्थाया कियन्तमपि कालं हानिवृद्धि विना अवस्थितो वा भवति । एवमुपशमितदर्शनमोहत्रयो जीवः संक्लेशविशुद्धिपरावृत्तिवशेन बहुवारं प्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानयोः परावर्तते ॥ २१८ ॥ अथ द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टेरुपशमश्रेण्यारोहणावसरं प्रदर्शयितुमिदमाह—

स० चं०— तिस एकांत वृद्धि कालतैं पीछैं विशुद्धताकरि घटै वा बधै वा हानि वृद्धि विना जैसाका तैसा रहै किछू नियम नाहीं । ऐसैं उपशमाए हैं तीन दर्शन मोह जानैं ऐसा जीव बहुतबार प्रमत्त अप्रमत्तनिविषै उलटनिकरि प्राप्त हो है ॥ २१८ ॥

एवंपमत्तमियर परावत्तिसहस्सयं तु कादूण ।
इगवीसमोहणीयं उवसमदि ण अण्णपयडीसु २१९

एवंप्रमत्तमितरं परावृत्तिसहस्रकं तु कृत्वा ।
एकविंशमोहनीयं उपशमयति न अन्यप्रकृतिषु ॥ २१९ ॥

सं० टी०— एवं पूर्वोक्तप्रकारेणायं द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिर्वा क्षायिकसम्यग्दृष्टिर्वा प्रमत्ताप्रमत्तपरावृत्तिसहस्राणि कृत्वा द्वादशकषायनवनोकषायभेदभिन्नमेकविंशतिप्रकृतिकं चारित्रमोहनीयमेवोपशमयितुमुपक्रमते नान्यकर्मप्रकृतीस्तासामुपशमकरणाभावात् ॥ २१९ ॥ एवं कृतपरिकरस्याप्रमत्तसंयतस्योपशमश्रेण्यारोहणे क्रियाविशेषविषयानधिकारानुद्देष्टुमिदमाह—

स० चं०— ऐसैं अप्रमत्ततैं प्रमत्तविषै प्रमत्ततैं अप्रमत्तविषै हजारों बार पलटनिकरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंतानुबंधी चतुष्क विना अवशेष इकईस चारित्रमोहकी प्रकृतिके उपशमावनेका उद्यम करै है। अन्य प्रकृतिनिका उपशम होता नाहीं जातैं तिनकैं उपशम करना ही है ॥ २१९॥

तिकरणबंधोसरणं कमकरणं देसघादिकरणं च ।
अंतरकरणं उवसमकरणं उवसामणे हौंति ॥ २२० ॥

त्रिकरणं बंधापसरणं क्रमकरणं देशघातिकरणं च ।
अंतरकरणमुपशमकरणं उपशामने भवंति ॥ २२० ॥

सं० टी०— चारित्रमोहोपशमने कर्तव्ये अधःप्रवृत्तकरणमपूर्वकरणमनिवृत्तिकरणं स्थितिबन्धापसरणं क्रमकरणं देशघातिकरणमन्तरकरणमुपशमकरणं चेत्यष्टाधिकारा भवंति। तेष्वधःप्रवृत्तकरणं सातिशयाप्रमत्तसंयतः कुरुते तत्करणस्य लक्षणं तत्र क्रियमाणकार्याणि च यथा प्रथमोपशमसम्यक्त्वाभिमुखसातिशयमिथ्यादृष्टेर्भणितानि तथैवात्रापि भणितव्यानि। अयं तु विशेषः—संयमयोग्यप्रकृतिबन्धोदयौ, अनंतानुबंधिचतुष्कनरकतिर्यगायुर्वर्जितसर्वप्रकृतिसत्त्वं चावसरे वक्तव्यं ॥ २२० ॥ अथापूर्वकरणकार्यविशेषप्रतिपादनार्थमिदं गाथाद्वयमाह—

स० चं०— अधःकरण १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिकरण ३ ए तीन करण अर स्थितिबंधापसरण ४ क्रमकरण ५ देशघातिकरण ६ अंतरकरण ७ उपशम करण ८ ऐसैं आठ अधिकार चारित्रमोहके उपशम विधानविषै पाइए है। तहां अधःकरणकौं सातिशय अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती मुनि करै है। ताका लक्षण वा ताका कीया कार्य जैसे प्रथमोपशम सम्यक्त्वकौं सन्मुख होतैं कहे हैं तैसैं इहां भी जानना। विशेष इतना— इहां संयमीकैं संभवै ऐसी प्रकृतिनिका बंधउदय कहना। अर अनंतानुबंधी चतुष्क नरक तिर्यंच आयु विना अन्य प्रकृतिनिका सत्त्व कहना ॥ २२० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विदियकरणादिसमये उवसंततिदंसणे जहण्णेण ।
पल्लस्स संखभागं उक्कस्स सायरपुधत्तं ॥ २२१ ॥

द्वितीयकरणादिसमये उपशांतात्रिदर्शने जघन्येन ।
पल्यस्य संख्यभागं उत्कृष्टं सागरपृथक्त्वम् ॥ २२१ ॥

सं० टी०— अपूर्वकरणस्य प्रथमसमये वर्तमानस्य द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टेर्जघन्यं स्थितिकांडकं पल्यसंख्यातभागमात्रं, उत्कृष्टं सागरोपमपृथक्त्वप्रमाणं ॥ २२१ ॥

स० चं० —दूसरा अपूर्वकरणका प्रथम समयविषे द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टीकैं जघन्य स्थिति कांडक आयाम पल्यका संख्यातवां भागमात्र है । उत्कृष्ट पृथक्त्व सागर प्रमाण है ॥ २२१ ॥

ठिदिखंडयं तु खइये वरावरं पल्लसंखभागो दु ।
ठिदिबंधोसरणं पुण वरावरं तत्तियं होदि ॥ २२२ ॥

स्थितिखंडकं तु क्षायिके वरावरं पल्यसंख्यभागस्तु ।
स्थितिबंधापसरणं पुनः वरावरं तावत्कं भवति ॥ २२२ ॥

सं० टी०— तस्मिन्नेवापूर्वकरणप्रथमसमये वर्तमानस्य चारित्रमोहोपशमकस्य क्षायिकसम्यग्दृष्टेर्जघन्यमुत्कृष्टं च स्थितिकांडकं पल्यसंख्यातभागमात्रमेव तथापि जघन्यादुत्कृष्टं संख्यातगुणितं दर्शनमोहक्षपणकाले विशुद्धिविशेषेण कर्मस्थितेर्बहुशः खंडितत्वात्, स्थित्यनुसारेण च कांडकाल्पबहुत्वस्य न्याय्यत्वात् । स्थितिबंधापसरणं पुनरुपशमसम्यग्दृष्टेः क्षायिकसम्यग्दृष्टेश्च पल्यसंख्यातभागमात्रमेव । तत्रापि जघन्यादुत्कृष्टं संख्यातगुणितमपि पल्यसंख्यातभागमात्रमेव ॥ २२२ ॥ अथानुभागकांडकादिनिर्देशार्थमिदमाह— २६६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०—तहां ही अपूर्व करणका प्रथम समयविषै क्षायिक सम्यग्दृष्टिकैं जघन्य वा उत्कृष्ट स्थिति कांडक आयाम पल्यके संख्यातवे भागमात्र है। जातैं दर्शन मोहकी क्षपणाका कालविषै बहुत स्थिति घटाई है। अर स्थितिके अनुसारि कांडक हो हैं तथापि जघन्य तैं उत्कृष्ट संख्यातगुणा है। बहुरि उपशम वा क्षायिक सम्यग्दृष्टीकैं स्थितिबंधापसरण पल्यका संख्यातवां भागमात्र है तथापि जघन्यतैं उत्कृष्ट संख्यात गुणा है॥ २२२ ॥

असुहाणं रसखंडमणंतभागाण खंडमियराणं।
अंतोकोडाकोडी सत्तं बंधं च तट्ठाणे॥

अशुभानां रसखंडमनंतभागानां खंडमितरेषाम्।
अन्तःकोटीकोटिः सत्त्वं बन्धश्च तत्स्थाने ॥ २२३ ॥

सं० टी०— अशुभानां प्रकृतीनामनुभागस्यानंतबहुभागमात्रमनुभागकांडकमपूर्वकरणप्रथमसमये प्रारभ्यते न पुनः शुभानां प्रकृतीनां विशुद्धया शुभप्रकृत्यनुभागस्य खंडनायोगात् तत्र प्रथमादिनिषेकाणामनुभागविभागः किंचित्प्रदर्श्यते तद्यथा—

आयुर्वर्जितसप्तकर्मणां मध्ये विवक्षितकर्मणः सत्त्वद्रव्यमिदं स ७ । १२ – अस्मिन्नानागुणहानिगतसर्वनिषेकेषु
७

विभज्य दीयमाने 'साहिय दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा' इत्यायातं प्रथमनिषेकद्रव्यमिदं—
स ७ । १२ – अस्मिन्ननुभागविषयानंतनानागुणहानिगतवर्गणासु विभज्य दीयमाने 'साहियदिवड्ढगुणहाणिभा-
।
७ । १२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिदे पढमा ' इत्यनंतात्मकसाधिकद्व्यर्धगुणहान्या भक्ते आयातं प्रथमवर्गणाद्रव्यमिदं स ७ । १२- इतो द्वितीया-

| |

७ । १२ । ख ३

२

दिवर्गणासु द्रव्यं विशेषहीनक्रमेण दीयते एवं द्वितीयादिगुणहानिष्वर्धार्धक्रमेण प्रथमादिवर्गणाद्रव्यमवतिष्ठते । तत्र चरमगुणहानिचरमस्पर्धकचरमवर्गणाद्रव्यमानीयते । तद्यथा—

प्रथमगुणहानिप्रथमवर्गणाद्रव्ये अन्योन्याभ्यस्तराश्यर्धेन भक्ते चरमगुणहानिप्रथमवर्गणाद्रव्यमागच्छति रूपोननानागुणहानिमात्रद्विकानां भागहारत्वेनान्योन्याभ्यस्तराश्यर्धोत्पत्तेः स ७ । १२ - अस्मिन् रूपोनगुणहानिमा-

| |

७ । १२ । ख । ३ अ

१- २ २

त्रचयेष्वपनीतेषु चरमगुणहानिचरमवर्गणाद्रव्यमायाति स ७ । १२ - गु एवं द्वितीयादिनिषेकद्रव्येष्वप्यनुभा-

| |

७ । १२ ख ३ अ गु २

२ २

गविभागेन तिर्यग्रचनायां प्रथमगुणहानिप्रथमवर्गणाप्रभृतिचरमगुणहानिचरमवर्गणापर्यंतं वर्गणाद्रव्यमानेतव्यं । क-

१-

र्मस्थितिचरमगुणहानिचरमनिषेकद्रव्यमिदं स ७ १२ - गु अस्मिन्ननुभागसंबंध्यनंतनानागुणहानिवर्गणासु वि-

|

७ । १२ । प गु २

व २

भज्य दीयमाने ' साहियदिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा ' इत्यनुभागस्यानंतात्मकद्व्यर्धगुणहान्या भक्ते अनुभागस्य प्रथमगुणहानिप्रथमवर्गणाद्रव्यमागच्छति स ७ । १२ - एवं द्वितीयादिगुणहानिष्वनुभागसंबंधिनीषु तिर्यग्रचि-

| |

७ । १२ । ख । ३ प

२ व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तासु वर्गणाद्रव्यमर्धार्धक्रमेणागच्छति । अनुभागस्य प्रथमगुणहानिप्रथमवर्गणाद्रव्ये अनंतात्मकान्योन्याभ्यस्तराशिनैव भक्ते अनुभागस्य चरमगुणहानिप्रथमवर्गणाद्रव्यमागच्छति पूर्ववत् स ७ । १२ – अस्मिन् रूपोनगुणहानि-

७ । १२ । प । ख । ३ अ
व २ २
१–

मात्रचयेष्वपनीतेषु अनुभागस्य चरमगुणहानिचरमवर्गणाद्रव्यं भवति स ७ । १२ – गु इत्थं सर्वनिषेक-

७ । १२ प ख ३ अ गु २
व २ २

सत्त्वानुभागावस्थितिर्ज्ञातव्या । अत्र तात्कालिकानुभागसत्त्वं ६ ना अनंतेन खंडयित्वा तद्बहुभागमात्रमनुभागकांडकं

१– ९ ना ख पुनस्तदेकभागमनंतेन खंडयित्वा एकभागमात्रमतिस्थाप्य ६ ना / ख ख बहुभागमात्रानुभाग ६ ना ख १– / ख ख पूर्वखं-
ख

डितानुभागकर्मपरमाणुद्रव्यं निक्षिपति, अवशिष्टानुभागरूपेण तद्द्रव्यं परिणामयतीत्यर्थः। अपूर्वकरणप्रथमसमये आयुर्व-र्जितकर्मणां स्थितिसत्त्वं स्थितिबन्धश्च अंतःकोटीकोटिसागरोपमप्रमित एव सा अं को २ । स्थितिबन्धात् स्थितिसत्त्वं
४
संख्यातगुणं सा अं को २ अयमेव विशेषः ॥ २२३ ॥ अथापूर्वकरणप्रथमसमये गुणश्रेणिनिर्जरार्थनिरूपणार्थमि-दमाह—

स० चं०—अशुभ प्रकृतिनिका जो पूर्वें अनुभाग था ताकौं अनंतका भाग दीएं तहां एक अनुभाग कांडकविषै बहुभागमात्र अनुभागका खंडन हो है, एक भागमात्र अवशेष रहै है। विशुद्धताकरि शुभ प्रकृतिनिका अनुभाग खंडन न हो है ऐसा जानना। इहां प्रथमादि निषेकनिका अनुभाग दिखाइए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहां द्रव्य स्थिति गुणहानि नाना गुणहानि दोगुणहानि अन्योन्याभ्यस्तका प्रमाण पहले जानना। सो इनिका कर्मनिकी स्थिति अपेक्षा तौ गोम्मटसारका योगमार्गणा अधिकारविषै वा कर्म स्थिति रचना अधिकारविषै वर्णन कीया है सो जानना। अर अनुभाग अपेक्षा तिन सब द्रव्यादिकनिका प्रत्येक प्रमाण यथायोग्य अनंत है। सो आयु विना सात कर्मनिविषै विवक्षित कर्मके परमाणूका प्रमाण रूप जो द्रव्य ताकौं स्थिति संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेकका प्रमाण आवै है। याकौं अनुभाग संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम निषेकनिविषैं प्रथम गुणहानिका जो प्रथम स्पर्धक ताकी प्रथम वर्गणाके परमाणूनिका प्रमाण आवै है। सबतैं थोरे जिस परमाणूविषै अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेद पाइए ताका नाम जघन्य वर्ग है सो ऐसी जेती परमाणू होंइ तिनके समूहका नाम प्रथम वर्गणा है। बहुरि यातैं द्वितीयादि वर्गणानिविषै एक एक चय घटता क्रमकरि परमाणूनिका प्रमाण है। बहुरि द्वितीयादि गुणहानिनिविषै पूर्व गुणहानि संबंधी वर्गणातैं आधा आधा क्रम लीएं वर्गणाद्रव्यका प्रमाण है। ऐसैं प्रथम गुणहानिका प्रथम वर्गणा द्रव्यकौं अनुभाग संबंधी अन्योन्याभ्यस्त राशितैं आधा प्रमाणका भाग दीएं अंत गुणहानिकी प्रथम वर्गणाका द्रव्य हो है। यामैं क्रमतैं एक एक चय घटनेतैं एक घाटि गुणहानि मात्र चय घटैं अंत गुणहानिकी अंत वर्गणाका द्रव्य हो है। इहां ऐसा जानना—

प्रथम गुणहानिकी प्रथम वर्गणातैं लगाय यावत् वर्गनिविषै एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधनेका क्रम होइ तहां पर्यंत तिनि वर्गणानिके समूहका नाम प्रथम स्पर्धक है तातैं ऊपरि २७०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम स्पर्धककी वर्गणाके वर्गनितैं द्वितीय तृतीय चतुर्थादिक स्पर्धककी प्रथम वर्गणानिका वर्गनिविषैं क्रमतैं दूणे तिगुणे चौगुणे अविभाग प्रतिच्छेद होंइ। उपरि द्वितीयादि वर्ग एक २ अविभाग प्रतिच्छेद बंधता क्रम लीएं जानने। ऐसा अनुक्रम अंत गुणहानिका अंत स्पर्धककी अंत वर्गणा पर्यंत जानना। ऐसैं प्रथम निषेकविषै विभाग दीया। बहुरि स्थितिके द्वितीयादि निषेक क्रमतैं चय घटता क्रम लीएं हैं। गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा क्रम लीएं हैं तिन सबनिविषै ऐसा ही अनुभाग अपेक्षा क्रम जानना। इहां स्थितिकी अंत गुणहानिका अंत निषेकविषै जो द्रव्यका प्रमाण तहां भी पूर्वोक्त प्रकार प्रथम गुणहानिका प्रथम वर्गणाके द्रव्यका प्रमाण ल्यावना। बहुरि क्रमतैं पूर्वोक्त प्रकार अंत गुणहानिकी अंत वर्गणाका द्रव्य ल्यावना ऐसैं जो अनुभाग पाइए है ताकौं अनंतका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र अनुभाग कांडक है। अवशेष जो एक भागमात्र रह्या ताकौं अनंतका भाग देइ तहां एक भागकौं अति स्थापन रूप राखि अवशेष बहुभाग रूप जिनि परमाणूनिका अनुभाग खंडन किया था तिन परमाणूनिकौं परिणमावै है। इहां ऐसा जानना—

अनुभागके स्पर्धक कहे थे तिनकौं अनंतका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र स्पर्धकनिके परमाणू हैं तिनकौं अवशेष रहैं एक भागमात्र स्पर्धक तिनिका अनंतवां भागमात्र स्पर्धक ऊपरिके छोडि नीचेके जे बहुभागमात्र स्पर्धक तिनि विषै निक्षेपण करैं है। ऐसी क्रिया एक अनुभाग कांडकका कालविषै हो है बहुरि तिसही अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं स्थितिबंध अर स्थिति सत्व अंतःकोटाकोटी सागर प्रमाण है तहां विशेष इतना स्थितिबंधतैं स्थिति सत्व संख्यातगुणा है॥ २२३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदयावलिस्स वाहिं गलिदवसेसा अपुव्वअणियट्टी ।
सुहुमद्धादो अहिया गुणसेढी होदि तट्ठाणे ॥

उदयावलेर्बाह्यं गलितावशेषा अपूर्वानिवृत्तेः ।
सूक्ष्माद्धातो अधिका गुणश्रेणी भवति तत्स्थाने ॥ २२४ ॥

सं० टी०— उदयावलिवाह्यप्रथमसमयादारभ्य अपूर्वानिवृत्तिकरणसूक्ष्मसांपरायगुणस्थानकालेभ्य उपशांतकषायकालसंख्यातैकभागमात्रेणाभ्यधिकायामा गुणश्रेणय (अ) पूर्वकरणप्रथमसमये गलितावशेषप्रमाणा प्रारब्धा सा च आयुर्वर्जितसप्तकर्मणामुदयावलिवाह्यद्रव्यमपकृष्य प्रागुक्तविधानेन निक्षेप्तव्या नपुंसकवेदादिप्रकृतीनां गुणसंक्रमोऽप्यत्रैव प्रारब्धः । बन्धवत्प्रकृतीनां गुणसंक्रमो नास्ति । एवं द्वितीयादिसमयेष्वपि स्थितिकांडकादिविधानं पूर्वोक्तक्रमेणैव ज्ञातव्यं ॥ २२४ ॥ अथापूर्वकरणे वंधोदयव्युच्छित्तिविभागप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०–तिस अपूर्व करणका प्रथम समयविषै उदयावलीतैं बाह्य गलितावशेष गुणश्रेणिका आरंभ भया । तिस गुणश्रेणि आयामका प्रमाण अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसांपराय इनके मिलाये कालतैं उपशांत कषायके कालका संख्यातवां भागमात्र अधिक जानना । तहां आयु विना सातकर्मानिके उदयावलीतैं बाह्य निषेकानिका द्रव्यकौं अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार उदयावलीविषै अर तातैं ऊपरि गुणश्रेणि आयामविषै अर तातैं उपरितन स्थितिविषै दीजिए है । बहुरि नपुंसक वेदादिकका गुणसंक्रम लीएं भी इहां ही प्रारंभ भया । जिनिका बंध पाइए है तिनिका गुणसंक्रम है नाहीं । बहुरि ऐसैं ही अपूर्वकरणके द्वितीयादि समयनिविषै भी स्थिति कांडकादि विधान जानना ॥ २२२ ॥

पढमे छट्ठे चरिमे बंधे दुग तीस चदुर वोच्छिण्णा । २७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छण्णोकसायउदयो अपुव्वचरिमम्हि वोच्छिण्णा ॥

प्रथमे षट्के चरमे बंधे द्विकं त्रिंशत् चतस्रो व्युच्छिन्नाः ।
षण्णोकषायोदया अपूर्वचरमे व्युच्छिन्नाः ॥ २२५ ॥

सं॰ टी॰— अपूर्वकरणकालस्य सप्तभागेषु प्रथमभागे द्वयोर्निद्राप्रचलयोर्बंधो व्युच्छिन्नः । षष्ठे भागे तीर्थकरत्वादीनां त्रिंशत्प्रकृतीनां बंधो व्युच्छिन्नः । सप्तमभागचरमसमये हास्यादिचतुःप्रकृतीनां बंधो व्युच्छिन्नः । हास्यादिषण्णोकषायाणामुदयः अपूर्वकरणचरमसमये व्युच्छिन्नः ॥ २२५ ॥ अथानिवृत्तिकरणे क्रियमाणव्यापारांतरप्ररूपणार्थमिदमाह—

स॰ चं॰—अपूर्वकरणके कालका सात भाग तहां प्रथम भागविषै निद्रा प्रचला दोय अर छठा भागविषै तीर्थंकर आदि तीस अर सातवां भागविषै हास्यादि च्यारि ऐसैं छत्तीस प्रकृत्ति बंधतैं व्युच्छित्ति भई । बहुरि अपूर्व करणका अंतसमयविषै छह हास्यादि नोकषाय उदयतैं व्युच्छित्ति भई ॥ २२५ ॥

अणियट्टिस्स य पढमे अण्णट्ठिदिखंडपहुदिमारवइ ।
उवसामणा णिधत्ती णिकाचणा तत्थ वोच्छिण्णा ॥

अनिवृत्तेः च प्रथमे अन्यस्थितिखंडप्रभृतिमारभते ।
उपशमनं निधत्तिः निकाचना तत्र व्युच्छिन्ना ॥ २२६ ॥

सं॰ टी॰—अनिवृत्तिकरणप्रथमसमये अन्यान्येव स्थितिखंडस्थितिबन्धापसरणानुभागखंडान्यपूर्वकरणचरमसमयसंभवविलक्षणानि प्रारभते चारित्रमोहोपशमकस्तत्रैव सर्वकर्मणामुपशमनिधत्तिनिकाचनकरणानि विनष्टानि । अपुव्वकरणोत्ति दसकरणा इति व्युच्छित्तिनियमकथनादनिवृत्तिकरणप्रथमसमयादारभ्य सर्वकर्मणामुदये संक्रमोदययोरु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्कर्षणापकर्षणसंक्रमोदयेषु च निक्षेप्तुं शक्यानि जातानीत्यर्थः ॥ २२६ ॥ अथ तस्मिन्नेवानिवृत्तिकरणप्रथमसमये कर्मणां स्थितिसत्त्वबन्धप्रमाणनिर्देशार्थमिदमाह—

स० चं०—अनिवृत्ति करणका प्रथम समयविषै अपूर्वकरणका अंत समय सम्बन्धीतैं और ही प्रमाण धरैं स्थितिखंड स्थितिबंधापसरण अनुभाग खंड प्रारंभिए है । बहुरि तहां ही सर्व कर्मनिका उपशम निधत्ति निकाचन इनि तीनि करणानिकी व्युच्छित्ति भई । उदयविषै प्राप्त करनेकौं अयोग्य सो उपशम कहिए । अर संक्रमण उदयविषै प्राप्त करनेकौं अयोग्य सो निधत्ति कहिए । उत्कर्षण अपकर्षण संक्रमण उदयविषै प्राप्त करनेकौं अयोग्य सो निकाचना कहिए सो इहां सर्व कर्मनिकौं उदयादिविषै निक्षेपण करनेकौं समर्थपना पाइए है ऐसा जानना ॥ २२६ ॥

अंतोकोडाकोडी अंतोकोडी य सत्त बंधं च ।
सत्तण्हं पयडीणं अणियट्टीकरणपढमम्हि ॥

अंतःकोटीकोटिः अंतःकोटिश्च सत्त्वं बंधश्च ।
सप्तानां प्रकृतीनां अनिवृत्तिकरणप्रथमे ॥ २२७ ॥

सं० टी०— अनिवृत्तिकरणप्रथमसमये आयुर्वर्जितसप्तकर्मणां स्थितिसत्त्वमंतःकोटीकोटिप्रमितं सा अं को २
४
स्थितिबंधश्चांतःकोटिप्रमितः सा अं को १ अपूर्वकरणकालकृतस्थितिखंडस्थितिबंधापसरणसंख्यातसहस्रमाहात्म्यात् ॥ २२७ ॥ अथ तस्मिन्नेवानिवृत्तिकरणकाले स्थितिबन्धापसरणक्रमेण स्थितिबंधक्रमं प्रदर्शयितुं गाथात्रयमाह—

स० चं०— अनिवृत्ति करणका प्रथम समयविषै आयु विना सात प्रकृतिनिका स्थिति २७४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्त्व यथायोग्य अंतःकोटाकोटी सागरमात्र है। अर स्थितिबंध अंतःकोटी मात्र है। अपूर्व करणविषै घटाएं इतना अवशेष रहै है॥ २२७॥

ठिदिबंधसहस्सगदे संखेज्जा वादरे गदा भागा।
तत्थ असण्णिस्स ठिदीसरिस ट्ठिदिबंधणं होदि॥

स्थितिबंधसहस्रगते संख्येया बादरे गता भागाः।
तत्र असंज्ञिनः स्थितिसदृशं स्थितिबंधनं भवति॥ २२८॥

सं० टी०— अनिवृत्तिकरणप्रथमसमयादारभ्यांतर्मुहूर्तमंतर्मुहूर्तं प्रति पल्यसंख्यातभागमात्रस्थितिबन्धापसरणक्रमेण संख्यातसहस्रस्थितिबंधेषु गतेषु तत्करणकालस्य संख्यातबहुभागा यदा गच्छंति तदा असंज्ञिस्थितिबंधसदृशस्थितिबंधो भवति। सहस्रसागरोपमप्रतिभागेन नामगोत्रयोर्द्विसप्तमभागप्रमितः ज्ञानदर्शनावरणांतरायसातवेदनीयानां स्थितिबंधः सागरोपमसहस्रत्रिसप्तमभागप्रमितः। चारित्रमोहस्य स्थितिबंधः सागरोपमसहस्रचतुःसप्तमभागप्रमितो भवतीत्यर्थः। एवं वैंशतिकत्रैंशत्कचत्वारिंशत्ककर्मणां प्रतिभागक्रम उपरत्रापि ज्ञातव्यः॥ २२८॥

स० चं०— अनिवृत्ति करणका प्रथम समयतैं लगाय एक एक अंतर्मुहूर्तविषै पल्यका संख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध घटै ऐसैं स्थितिबंधापसरणका क्रमकरि हजारों स्थिति बंध भएं अनिवृत्तिकरण कालका संख्यात भागनिविषै बहुभाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहै असंज्ञीका स्थितिबंध समान स्थितिबंध हो है। सो असंज्ञीकैं सत्तर कोडाकोडी सागर उत्कृष्ट स्थितिका धारक दर्शनमोहका हजार सागर स्थितिबंध है तिसका प्रतिभाग करि हजार सागरकौं सातका भाग देइ तहां एक भागतैं दूणा बीसियानिका तिगुणा तीसियनिका चौगुणा चारित्रमोहका स्थितिबंध हो है। जिनकी बीस कोडाकोडीकी उत्कृष्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थिति ऐसे नामगोत्र तिनकौं बीसिय कहिए। जिनकी तीस कोडाकोडीकी उत्कृष्ट स्थिति ऐसे ज्ञानावरण दर्शनावरण अंतराय वेदनीय तिनकौं तीसीय कहिए। जाकी चालीस कोडाकोडी सागरकी उत्कृष्ट स्थिति ऐसा चारित्रमोह ताकौं चालीसिय कहिए। ऐसी संज्ञा आगैं भी जानि लेनी ॥ २२८ ॥

ठिदिबंधपुधत्तगदे पत्तेयं चदुर तिय वि एएदि।
ठिदिबंधसमं होदि हु ठिदिबंधमणुक्कमेणेव॥

स्थितिबंधपृथक्त्वगते प्रत्येकं चतुस्त्रिद्विएकेति।
स्थितिबंधसमो भवति हि स्थितिबंधोऽनुक्रमेणैव ॥ २२९ ॥

सं० टी०—ततः परं संख्यातसहस्रस्थितिबंधेषु गतेषु चतुरिंद्रियस्थितिबन्धसदृशस्थितिबंधो भवति नामगोत्रादिकर्मणां सागरोपमशतस्य द्विसप्तमत्रिसप्तमचतुःसप्तमभागप्रमितस्थितिबंधो भवतीत्यर्थः। ततः परं संख्यातसहस्रस्थितिबंधेषु गतेषु त्रींद्रियस्थितिबंधसदृशस्थितिबंधो भवति। प्रागुक्तवैंशतिकादीनां कर्मणां पंचाशत्सागरोपमद्विसप्तमत्रिसप्तमचतुःसप्तमभागप्रमितः। इतः परं संख्यातसहस्रस्थितिबन्धेषु गतेषु द्वींद्रियस्थितिबंधसदृशस्थितिबंधो भवति। पूर्वोक्तत्रिस्थानकर्मणां पंचविंशतिसागरोपमद्विसप्तमत्रिसप्तमचतुःसप्तमभागप्रमितः स्थितिबंधो भवतीत्यभिप्रायः। ततः परं संख्यातसहस्रस्थितिबंधेषु गतेषु एकेंद्रियस्थितिबन्धसदृशः स्थितिबन्धो भवति। वीसियतीसियचालिसीयसंकेतितानां कर्मणामेकसागरोपमद्विसप्तमत्रिसप्तमचतुःसप्तमभागप्रमितः स्थितिबन्धो भवतीति निर्णयः। पृथक्त्वशब्दस्य बहुत्ववाचित्वेन प्रत्येकं संख्यातसहस्रस्थितिबंधेषु गतेष्विति व्याख्यायते ॥ २२९ ॥

स० चं०—तातैं परैं पृथक्त्व कहिए संख्यात हजार स्थितिबंध भएं सौ सागरकौं सातका भाग देइ तहां एक भागतैं दूणा बीसियका तिगुणा तीसियका चौगुणा चालीसि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यका ऐसा चौंद्री समान स्थितिबंध हो है। बहुरि तातैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं पचास सागरकौं सातका भाग देइ तहां एक भागतैं दूणा बीसियका तिगुणा तीसियका चौगुणा चालीसियका ऐसा तेंद्री समान स्थितिबंध हो है। बहुरि तातैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं पचीस सागरकौं सातका भाग देइ तहां एक भागतैं दूणा वीसियका तिगुणा तीसियका चौगुणा चालीसियका ऐसा बेंद्रीका समान स्थितिबंध हो है। तातैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं एक सागरकौं सातका भाग देइ तहां एक भागतैं दूणा बीसियका तिगुणा तीसियका चौगुणा चालीसियका ऐसा एकेंद्रीका समान स्थितिबंध हो है॥ २२९

एइंदियट्ठिदीदो संखसहस्से गदे दु ठिदिबंधो।
पल्लेक्कदिवड्ढदुगे ठिदिबंधो वीसियतियाणं॥ २३०॥

एकेंद्रियस्थितितः संख्यसहस्रे गते तु स्थितिबंधः।
पल्यैकद्व्यर्धद्विके स्थितिबंधो विंशतित्रिकरणम्॥ २३०॥

सं० टी०— ततः परं संख्यातसहस्रस्थितिबंधेषु गतेषु नामगोत्रयोः पल्यमात्रः, त्रिघातिवेदनीयानां सार्धपल्यमात्रः चारित्रमोहस्य पल्यद्वयप्रमितः स्थितिबन्धो भवति। असंज्ञ्यादिषु सर्वत्र सप्ततिकोटीकोटिसागरोपमस्थितिबंधस्य मिथ्यात्वस्य यदि सहस्रसागरोपमस्थितिं बध्नाति जीवस्तदा विंशतिसागरोपमकोटीकोटिस्थितिबंधयोर्नामगोत्रयोः कियतीं स्थितिं बध्नातीति त्रैराशिकेन फलगुणितेच्छाप्रमाणेन भक्त्वा अपवर्तितसहस्रसागरोपमद्विसप्तभागप्रमितो नामगोत्रयोः स्थितिबन्धो लभ्यते। एवं त्रिंशत्कोटीकोटिसागरोपमस्थितिबंधानां त्रिघातिसातवेदनीयानां सहस्रसागरोपमत्रिसप्तभागप्रमितश्चत्वारिंशत्कोटीकोटिसागरोपमस्थितिबंधस्य चारित्रमोहस्य सहस्रसागरोपमचतुःसप्तभागप्रमितश्च स्थितिबंधः असंज्ञिजीवे आनेतव्यः। अतः उपरत्रापि चतुरिंद्रियादिषु अनेनैव त्रैराशिकविधानेन तत्र तत्र स्थितिबंधप्रमाणा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानेतव्यं ॥ २३१ ॥ अथ पल्यमात्रपल्यसंख्यातभागमात्रसंख्यातवर्षसहस्रमात्रस्थितिबन्धानां अथायाम्युत्पत्तेः प्राक् स्थितिबन्धापसरणप्रमाणनिर्देशार्थमिदमाह—

स० चं०—तिस एकेंद्री समान स्थिति बंधतैं परैं संख्यात हजार स्थिति बंध भएं वीसियका एक पल्य तीसियका ड्योढ पल्य चालीसियका दोय पल्य प्रमाण स्थिति बंध हो है। इहां असंज्ञीकैं सत्तर कोडाकोडी सागर स्थितिका धारक दर्शन मोहका हजार सागर बंध होइ तौ बीस कोडाकोडी स्थिति धारक नाम गोत्रनिका केता होइ। ऐसैं त्रैराशिक कीएं हजार सागरका दोय सातवां भाग आवै है। ऐसैं औरनिविषै भी त्रैराशिक विधान जानना।

पल्लस्स संखभागं संखगुणूणं असंखगुणहीणं।
बंधोसरणं पल्लं पल्लासंखंति संखवस्संति ॥ २३१ ॥

पल्यस्य संख्यभागं संख्यगुणोनमसंख्यगुणहीनम्।
बंधापसरणं पल्यं पल्यासंख्यमिति संख्यवर्षमिति ॥ २३१ ॥

सं० टी०—अंतःकोटीकोटिमात्रस्थितिबंधात्प्रभृतिपल्योत्पत्तिपर्यंतं पल्यसंख्यातैकभागमात्रं स्थितिबंधापसरणं भवति, पल्यमात्रस्थितिबंधात्प्रभृति पल्यसंख्यातबहुभागमात्रं स्थितिबंधापसरणं भवति। पल्यस्थितेरनंतरं दूरापकृष्टिस्थितिपर्यंतं संख्यातगुणहीनां पल्यसंख्यातैकभागमात्रीं स्थितिं बध्नातीत्यर्थः। दूरापकृष्टिस्थितेः प्रभृति संख्यातवर्षसहस्रमात्रस्थितिबंधोत्पत्तिपर्यंतं पल्यासंख्यातबहुभागमात्रं स्थितिबन्धापसरणं भवति। दूरापकृष्टेरनंतरं संख्यातसहस्रमात्रस्थितिबन्धपर्यंतं असंख्यातगुणहीनां पल्यासंख्यातैकभागमात्रीं स्थितिं बध्नातीत्यर्थः। संखगुणूणमसंखगुणहीणमित्यत्र गुणशब्दस्य बहुभागवाचित्वात् ॥ २३२ ॥ अथ स्थितिबन्धक्रमकरणकाले स्थितिबन्धानां प्रमाणप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०—अंतः कोटाकोटी स्थिति बंधतैं लगाय यावत् पल्यमात्र स्थिति बंध भया तावत् स्थिति बंधापसरणका प्रमाण पल्यके संख्यातवे भागमात्र है। बहुरि पल्यमात्र स्थिति बंधतैं २७९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लगाय दूरापकृष्टि स्थिति होइ तहां पल्यकौं संख्यातका भाग देइ बहुभागमात्र स्थिति बंधापसरण हो है। पल्यस्थितिके अनंतरि दूरापकृष्टि स्थिति पर्यंत क्रमतैं संख्यात गुणा घाटि ऐसा पल्यका संख्यातवां भागमात्र स्थिति बंध हो है। ऐसा अर्थ जानना। बहुरि दूरापकृष्टि स्थितितैं लगाय यावत् संख्यात हजार वर्षमात्र स्थिति बंध होइ तहां पल्यकौं असंख्यातका भाग दीजिए बहुभागमात्र स्थिति बंधापसरण है। दूरापकृष्टितैं लगाय संख्यात हजार वर्षमात्र स्थिति पर्यंत क्रमतैं असंख्यात गुणी घाटि ऐसे पल्यके असंख्यातवे भाग मात्र स्थिति बंध हो है। ऐसा जानना। एक स्थितिबंधापसरणकालविषै जितना स्थिति बंध घट्या सो तौ स्थिति बंधापसरण जानना अर ताकौं घटतैं जितना स्थितिबंध होइ सो तहां स्थितिबंध जानना ॥ २३१ ॥

एवं पल्ला जादा बीसीया तीसिया य मोहो य।
पल्लासंखं च कमे बंधेण य वीसियातियाओ २३२

एवं पल्ये जाते वीसिया तीसिया च मोहश्च।
पल्यासंख्यं च क्रमे बंधेन च वीसियात्रिकाः ॥ २३२ ॥

सं० टी०—एवमुक्तप्रकारेण वीसियतीसियमोहनीयपल्यजातस्थितिबंधात्परं क्रमेण संख्यातसहस्रस्थितिबंधापसरणैः क्रमकरणकालावसाने पल्यासंख्यातैकभागमात्रः स्थितिबंधो भवति। तद्यथा—

वीसियतीसियमोहानां पल्यद्व्यर्धपल्यपल्यद्वयमात्रस्थितिबंधेभ्यः परं संख्यातसहस्रेषु नामगोत्रयोः पल्यसंख्यातबहुभागमात्रेषु तीसियमोहयोः पल्यसंख्यातैकभागमात्रेषु च स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु वीसियादीनां यथासंख्यं पल्यसंख्यातैकभागमात्रपल्यपात्रत्रिभागाधिकपल्यमात्राः स्थितिबंधा एकस्मिन् काले जायंते ततः संख्यातसहस्रेषु वीसियती-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सियथोः पल्यसंख्यातबहुभागमात्रेषु मोहस्य पल्यसंख्यातैकभागमात्रेषु च स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु वीसियादीनां यथासंख्यं पल्यसंख्यातैकभागमात्रपल्यमात्रस्थितिबंधा जायंते। वीसियस्थितिबंधात् तीसियस्थितिबंधः संख्येयगुण इति विशेषो ज्ञेयः। ततः परं संख्यातसहस्रेषु त्रयाणामपि पल्यसंख्यातबहुभागमात्रेषु स्थितिबन्धापसरणेषु गतेषु नामगोत्रयोः दूरापकृष्टिसंज्ञश्चरमः पल्यसंख्यातैकभागमात्रः, तीसियमोहयोः यथायोग्यपल्यसंख्यातैकभागमात्रावस्थितिबंधा जायंते। तीसियस्थितिबन्धात् चालीसियस्थितिबन्धः संख्यातगुणः इत्ययं विशेषो द्रष्टव्यः। ततः परं संख्यातसहस्रेषु वीसियस्य पल्यासंख्यातबहुभागमात्रेषु तीसियमोहयोः पल्यसंख्यातबहुभागमात्रेषु च स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु नामगोत्रयोः पल्यासंख्यातैकभागमात्रः तीसियस्य दूरापकृष्टिसंज्ञश्चरमः पल्यसंख्यातैकभागमात्रः मोहस्य यथायोग्यपल्यसंख्यातैकभागमात्रः स्थितिबंधा जायंते। तीसियबन्धात् चालीसियबंधः संख्यातगुण इत्ययं विशेषो ज्ञातव्यः। ततः परं संख्यातसहस्रेषु वीसियतीसिययोः पल्यासंख्यातबहुभागमात्रेषु मोहस्य पल्यसंख्यातबहुभागमात्रेषु च स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु वीसियतीसिययोः पल्यासंख्यातैकभागमात्रौ मोहस्य दूरापकृष्टिसंज्ञश्चरमः पल्यसंख्यातैकभागमात्रश्च स्थितिबंधा युगपज्जायंते। वीसियबंधात्तीसियबन्धोऽसंख्यातगुण इति विशेषः। ततः परं संख्यातसहस्रेषु त्रयाणामपि पल्यासंख्यातबहुभागमात्रेषु स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु वीसियादीनां त्रयाणामपि पल्यासंख्यातैकभागमात्राः स्थितिबंधा संभवंति। वीसियबंधात्तीसियबंधोऽसंख्येयगुणः। ततः मोहस्थितिबंधोऽसंख्यातगुण इत्ययं विशेषो ज्ञेयः ॥ २३२ ॥ अथातःपरं वीसियादीनां क्रमव्यत्यासप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०—तिस पल्य स्थितितैं परैं वीसीय तीसिय मोहनीयका स्थिति बंध है सो क्रमकरणकालका अंतविषै पल्यका असंख्यातवां भागमात्र है। सोई कहिए है—

बीसियादिकनिका पल्य ड्योढ पल्य दोय पल्य स्थितिबंधकै परैं वीसयनिका तौ पल्यका संख्यात बहुभागमात्र अर तीसीय मोहका पल्यका संख्यातवां भागमात्र आयाम धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं वीसीयनिका पल्यके संख्यातवे भागमात्र तीसीयनिका पल्यमात्र मोहका त्रिभाग अधिक पल्यमात्र स्थितिबंध एक कालविषै हो है। बहुरि तातैं परै वीसीय तीसीयनिका पल्यका संख्यात बहुभागमात्र मोहका पल्यका संख्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तवां भागमात्र आयाम धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं वीसीय तीसीयानिका
पल्यके संख्यातवे भागमात्र मोहका पल्यमात्र स्थिति बंध हो है। इहां विशेष इतना वीसि-
यकैं तैं तीसियका स्थितिबंध संख्यात गुणा हो है। बहुरि तातैं परे तीनोंहीकैं पल्यका संख्यात
बहुभागमात्र आयाम धरे ऐसे संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण गएं नाम गोत्रका दूराप-
कृष्टि है नाम जाका ऐसा पल्यका संख्यातवां भागमात्र अर तीसीय मोहका यथा योग्य
पल्यका संख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध भया। इहां विशेष इतना तीसीयकेतैं मोहका
स्थितिबंध संख्यात गुणा है। बहुरि तातैं परे वीसीयका पल्यका असंख्यातबहुभागमात्र
अर तीसीय मोहका पल्यका संख्यातबहुभागमात्र प्रमाण धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थिति
बंधापसरण गएं वीसियनिका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र तीसयनिका दूरापकृष्टि है
नाम जाका ऐसा पल्यका संख्यातवां भागमात्र अर मोहका यथा योग्य पल्यका संख्यातवां
भागमात्र स्थितिबंध युगपत् हो है। इहां तीसीयकेतैं चालीसियका स्थितिबंध संख्यातगुणा
जानना। बहुरि तातैं परैं वीसीय तीसीयनिका पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र मोहका
पल्यका संख्यात बहुभागमात्र प्रमाण धरे ऐसे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं वी-
सीय तीसीयानिका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र मोहका दूरापकृष्टि है नाम जाका ऐसा अंत-
का पल्यका संख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध हो है। इहां वीसीयकेतैं तीसीयका स्थितिबंध अ-
संख्यातगुणा जानना। बहुरि तातैं परे तीन्योहीका पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र प्रमाण
लीएं ऐसे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं तीनोंहींका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र
स्थितिबंध हो है। इहां वीसीयकेतैं तीसीयका तीसीयकेतैं मोहका स्थितिबंध असंख्यात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणा जानना। इहां पर्यंत तौ ऐसैं अनुक्रमतै बंध हो है। आगें अन्य अनुक्रम हो है सो दिखाइए है॥ २३२॥

मोहगपल्लासंखट्ठिदिबंधसहस्सगेसु तीदेसु।
मोहो तीसिय हेट्ठा असंखगुणहीणयं होदि २३३

मोहगपल्यासंख्यास्थितिबन्धसहस्रेकष्वतीतेषु।
मोहः तीसियं अधस्तना असंख्यगुणहीनकं भवति॥ २३३॥

सं० टी०—वीसियादीनां त्रयाणामपि पल्यासंख्यातैकभागमात्रस्थितिबंधात्परं संख्यातसहस्रेषु पल्यासंख्यातबहुभागमात्रेषु स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु वीसियमोहतीसियानां स्वस्वमाक्तनानंतरस्थितिबंधेभ्य असंख्येयगुणहीनाः पल्यासंख्यातैकभागमात्राः स्थितिबंधा जायंते। तत्र सर्वतः स्तोकं वीसियस्थितिबंधः। ततोऽसंख्येयगुणो मोहस्थितिबंधस्तस्मादसंख्येयगुणस्तीसियस्थितिबंधः। इदानींतनविशुद्धिविशेषकृतस्थितिबन्धापसरणमाहात्म्यात् पूर्वक्रमं परित्यज्य तीसियस्थितिबंधस्याधो मोहस्थितिबंधोऽसंख्येयगुणहीनो जात इति क्रमव्यत्ययोऽत्र ज्ञातव्यः॥ २३३॥ अथ क्रमांतरज्ञापनार्थमिदमाह—

स० चं०— तिस पल्यके असंख्यातवे भागमात्र स्थितिबंधतैं परैं पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र आयाम धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थितिबंध गएं पूर्व स्थितिबंधतैं असंख्यातगुणा घटता ऐसा पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध तीनोंका हो है। तहां स्तोक तौ वीसीयनिका तातैं असंख्यातगुणा मोहका तातैं असंख्यातगुणा तीसीयनिका स्थितिबंध जानना। इहां विशुद्धताविशेषतैं तीसीयनितैं मोहका घटता स्थितिबंधरूप क्रम भया॥

तेत्तियमेत्ते बंधे समतीदे वीसियाण हेट्ठावि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक्कसराहो मोहो असंखगुणहीणयं होदि ॥

तावन्मात्रे बंधे समतीते वीसियानां अधस्तनापि ।
एकसदृशः मोहोऽसंख्यगुणहीनको भवति ॥ २३४ ॥

सं० टी०— ततः परं संख्यातसहस्रेषु पल्यासंख्यातबहुभागमात्रेषु स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु मोहवीसियतीसियानां स्थितिबंधाः पल्यासंख्यातैकभागमात्रा जयंते । तत्र सर्वतः स्तोकं मोहस्थितिबन्धः । ततोऽसंख्येयगुणो वीसियस्थितिबन्धः । ततोऽसंख्येयगुणस्तीसियस्थितिबन्धः । अद्यतनविशुद्धिविशेषजनितस्थितिबंधापसरणमाहात्म्याद्वीसियस्थितिबन्धस्याधोऽसंख्येयगुणहीनो मोहस्थितिबन्धो जायत इति पूर्वक्रमादयमन्य एव क्रमो जात इति ज्ञेयं ॥ २३४ ॥

पुनरपि क्रमांतरज्ञापनार्थमिदमाह—

स० चं०— तातैं परैं पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र आयाम धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थितिबंध गएं तीनोंका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध हो है । इहां स्तोक मोहका तातैं असंख्यातगुणा वीसियनिका तातैं असंख्यातगुणा तीसियनिका स्थितिबंध जानना । इहां विशुद्धता विशेषतैं वीसियानिकातैं भी मोहका घटता स्थितिबंध रूप क्रम भया ॥ २३४ ॥

तेत्तियमेत्ते बंधे समतीदे वेयणीयहेट्ठादु ।
तीसियघादितियाओ असंखगुणहीणया होंति ॥

तावन्मात्रे बंधे समतीते वेदनीयाधस्तनात् ।
तीसियघातित्रिका असंख्यगुणहीनका भवंति ॥ २३५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०— ततः संख्यातसहस्रेषु पल्यासंख्यातबहुभागमात्रेषु स्थितिबन्धापसरणेषु गतेषु मोहतीसियबीसियवेदनीयानां पल्यासंख्यातैकभागमात्राः स्थितिबन्धा जायंते । तत्र सर्वतः स्तोकं मोहस्थितिबन्धः ततोऽसंख्येयगुणो बीसियस्थितिबन्धः, ततोऽसंख्येयगुणो घातित्रयस्थितिबन्धः ततोऽसंख्येयगुणो वेदनीयस्थितिबन्धः । अत्रापि विशुद्धिमाहात्म्यात्सातवेदनीयस्थितिबन्धस्याधोऽसंख्येयगुणहीनो घातित्रयस्थितिबन्धो ज्ञातव्य इति क्रमांतरं ज्ञेयं ॥ २३५ ॥ पुनरपि क्रमभेदप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०— तातैं परैं पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र आयाम धरैं ऐसे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं तीनोंका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध हो है । तहां स्तोक मोहका तातैं असंख्यातगुणा बीसीयनिका तातैं असंख्यातगुणा तीसीयनिविषै तीन घातियानिका तातैं असंख्यातगुणा वेदनीयका स्थितिबंध हो है । इहां विशुद्धता विशेषतैं सातावेदनीयतैं तीन घातिया कर्मनिका स्थितिबंध घटता भया ॥ २३५ ॥

तेत्तियमेत्ते बंधे समतीदे वीसियाण हेट्ठादु ।
तीसियघादितियाओ असंखगुणहीणया होंति ॥

तावन्मात्रे बंधे समतीते वीसियानामधस्तनात् ।
तीसियघातित्रिका असंख्यगुणहीनका भवंति ॥ २३६ ॥

सं० टी०—ततः परं संख्यातसहस्रेषु पल्यासंख्यातबहुभागमात्रेषु स्थितिबन्धापसरणेषु गतेषु मोहतीसियबीसियवेदनीयानां स्थितिबन्धा पल्यासंख्यातैकभागमात्रा जायंते । तत्र सर्वतः स्तोकं मोहस्थितिबन्धः, ततोऽसंख्येयगुणस्तीसियस्थितिबंधः । ततोऽसंख्येयगुणो वीसियस्थितिबंधः ततः स्वर्धेनाधिको वेदनीयस्थितिबन्धः । वीसियस्थितीनामीदृशे स्थितिबन्धे प तीसियस्थितीनां कीदृश इति त्रैराशिकसिद्धोयं प ३ वेदनीयस्थितिबन्धः, अत्रापि विशुद्धिविशेष-
a ५ a।५ २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थितिबन्धनस्थितिबन्धापसरणवशाद्वेदनीयस्थितिबंधस्याधः संख्यातभागहीनो वीसियस्थितिबन्धो जातः । तस्या-
धोऽसंख्येयगुणहीनो घातित्रयस्थितिबंधो जातस्तस्याप्यधोऽसंख्येयगुणहीनो मोहस्थितिबंधो जात इतीदृशः क्रमभेदो
ज्ञातव्यः ॥ २३६ ॥ अथ इदमेव क्रमकरणमुपसंहरन्निदमाह—

स० चं०— तातैं परैं पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र आयाम धरैं संख्यात हजार स्थितिबंध गएं मोहादिकका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध हो है । तहां स्तोक मोहका तातैं असंख्यातगुणा तीसियनिका तातैं असंख्यात गुणा बीसीयनिका तातैं ड्योढा वेदनीयका स्थितिबंध जानना इहां विशुद्धताविशेषतैं ऐसा क्रम भया ॥ २३६ ॥

तक्काले वेयणियं णामागोदादु साहियं होदि ।
इदि मोहतीसवीसियवेयणियाणं कमो जादो ॥

तत्काले वेदनीयं नामगोत्रतः साधिकं भवति ।
इति मोहतीसवीसियवेदनीयानां क्रमो जातः ॥ २३७ ॥

सं० टी०— तस्मिन् मोहतीसियवीसियवेदनीयानां स्थितिबंधक्रमकरणकाले वेदनीयस्थितिबन्धो नामगोत्रस्थितिबन्धात्साधिको भवति । अतः परमनेनैव क्रमेणांतर्मुहूर्तपर्यंतं संख्यातसहस्रेषु पल्यासंख्यातबहुभागमात्रेषु स्थितिबन्धापसरणेषु गतेषु मोहतीसियवीसियवेदनीयानां स्वस्वयोग्यपल्यासंख्यातैकभागमात्राः स्थितिबंधाः क्रमकरणावसाने जायंते । पूर्वसूचितसंख्यातवर्षसहस्रमात्रस्थितिबन्धोऽत्रावसरे न संभवति । अन्तरकरणात्परमेव तस्य संभव इति क्रमकरणावसाने प्रतिपादितः । सर्वेषां कर्मणां स्थितिसत्त्वं संख्यातसहस्रमात्रस्थितिकांडकघातसद्भावेऽप्यंतःकोटीकोटिप्रमाणमेवोपशमश्रेण्यां दीर्घस्थितिकांडकघातसंभवात् । एवमनुभागकांडकघातागुणश्रेणिनिर्जरादिविधानमप्यस्मिन्नवसरे प्रवर्तत एवेति ज्ञातव्यं ॥ २३७ ॥ अथ क्रमकरणावसाने संभवक्रियांतरप्रदर्शनार्थमाह—

स० चं०— तीहिं क्रम करण कालविषैं नाम गोत्रकेतैं वेदनीयका साधिक बंध भया सो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस ही अनुक्रम लीएं अंतर्मुहूर्त पर्यंत पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र आयाम धरैं संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण भएं क्रम करण कालका अंतसमयविषै अपने अपने योग्य पल्यका असंख्यातवां भागमात्र बंध हो है। संख्यात हजार वर्षमात्र स्थितिबंध इहां न हो है। अंतरकरणतैं परैं होगा। बहुरि सर्व कर्मनिका स्थितिसत्त्व इहां संख्यात हजार स्थिति कांडक घात होतैं भी अंतःकोटाकोटी सागर प्रमाण ही रहै है जातैं उपशम श्रेणिविषै स्थितिकांडक आयाम दीर्घ नाही है। स्तोक प्रमाण लीएं हैं ॥ २३७ ॥

तीदे बंधसहस्से पल्लासंखेज्जयं तु ठिदिबंधो।
तत्थ असंखेज्जाणं उदीरणा समयपबद्धाणं ॥ २३८ ॥

अतीते बंधसहस्रे पल्यासंख्येयं तु स्थितिबंधः।
तत्र असंख्येयानां उदीरणा समयप्रबद्धानाम् ॥ २३८ ॥

सं० टी०— मोहतीसियवीसियवेदनीयानां स्थितिबंधक्रमप्रारम्भात्परं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबन्धापसरणेषु अतीतेषु यदा क्रमकरणावसाने मोहादीनां पल्यासंख्यातैकभागमात्राः स्थितिबंधा जाता तदाऽसंख्येयसमयप्रबद्धानामुदीरणा भवति। इतः पूर्वमपकृष्टद्रव्यस्य पल्यासंख्यातभागखंडितस्य बहुभागद्रव्यमुपरितनस्थितौ निक्षिप्य तदेकभागं पुनरसंख्यातलोकेन खंडयित्वा तद्बहुभागद्रव्यं गुणश्रेण्यायामे निक्षिप्य तद्वदेकभागमुदयावल्यांनि क्षिपतीति समयप्रबद्धासंख्यातैकभागमात्रमेवोदीरणाद्रव्यं। इदानीं पुनरसंख्यातलोकभागहारं त्यक्त्वा पल्यासंख्यातभागेन खंडितैकभागमुदयावल्यां निक्षिपतीति असंख्येयसमयप्रबद्धमात्रमुदीरणाद्रव्यमित्यर्थः ॥ २३८ ॥ अथ देशघातिकरणनिरूपणार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं— क्रमकरण प्रारंभका समयतैं लगाय संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहां क्रम करणका अंतविषैं मोहादिकनिका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध भया तहां असंख्यात समयप्रबद्धनिकी उदीरणा हो है। इहांतैं पहिले गुणश्रेणिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग उपरितन स्थितिविषै निक्षेपण करि अवशेष एक भागकौं असंख्यातलोकका भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषै एक भाग उदयावलीविषै निक्षेपण होतैं तहां उदयावलीविषै दीया ऐसा जो उदीरणा द्रव्य सो समयप्रबद्धके असंख्यातवे भागमात्र आवै है। बहुरि इहांतैं लगाय अपकर्षण कीया द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग उपरितन स्थितिविषै निक्षेपणकरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषै एक भाग उदयावलीविषै दीजिए है। सो इहां उदयावलीविषै दीया ऐसा जो उदीरणा द्रव्य सो असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है॥ २३८॥

ठिदिबंधसहस्सगदे मणदाणा तत्तियोवि ओहिदुगं।
लाभं व पुणो वि सुदं अचक्खु भोगं पुणोचक्खु॥
पुणरवि मदिपरिभोगं पुणरवि विरियं कमेण अणुभागो।
बंधेण देसघादी पल्लासंखं तु ठिदिबंधे॥ २४०॥

स्थितिबंधसहस्रगते मनोदाने तावन्मात्रेपि अवधिद्विकं।
लाभो वा पुनरपि श्रुतं अचक्षुर्भोगं पुनश्चक्षुः॥ २३९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुनरपि मतिपरिभागं पुनरपि वीर्यं क्रमेण अनुभोगं।
बंधेन देशघातिः पल्यासंख्यं तु स्थितिबंधे ॥ २४० ॥

सं० टी०— असंख्यातसमयप्रबद्धोदीरणाप्रारम्भात्परं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबन्धापसरणेषु गतेषु मनःपर्ययज्ञानावरणीयदानांतराययोः सर्वघातिस्थानानुभागबंधं परित्यज्य देशघातिस्पर्धकरूपद्विस्थानानुभागं बध्नाति। ततः परं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु अवधिज्ञानावरणावधिदर्शनावरणलाभांतरायाणां देशघातिस्पर्धकद्विस्थानानुभागं बध्नाति। ततः परं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबन्धापसरणेषु श्रुतज्ञानावरणाचक्षुर्दर्शनावरणभोगांतरायाणां देशघातिस्पर्धकद्विस्थानानुभागं बध्नाति ततः परं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबन्धापसरणेषु गतेषु चक्षुर्दर्शनावरणस्य देशघातिस्पर्धकद्विस्थानानुभागं बध्नाति। ततः परं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु मतिज्ञानावरणोपभोगांतराययोर्देशघातिस्पर्धकद्विस्थानानुभागं बध्नाति। ततः परं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबंधापसरणेषु गतेषु वीर्यांतरायस्य देशघातिस्पर्धकद्विस्थानानुभागं बध्नाति। अस्माद्देशघातिकरणप्रारम्भात्प्रागवस्थायां संसारावस्थायां च सर्वघातिस्पर्धकानुभागमेव बध्नातीत्यर्थः। चतुःसंज्वलनपुंवेदानां देशघातिस्पर्धकानुभागबंधः कुतो न कथित इति नाशंकितव्यं संयमासंयमग्रहणात्प्रभृति तेषां देशघातिस्पर्धकद्विस्थानानुभागबंधस्यैव प्रतिसमयमनंतगुणहान्या वर्तमानत्वात् सत्कर्मानुभागः पुनः सर्वघातिस्पर्धकद्विस्थानरूप एव प्रवर्तते तस्य देशघातिकरणाभावात्। एवं देशघातिकरणपर्यवसानेऽपि मोहतीसियवीसियवेदनीयानां स्थितिबन्धः स्वस्वयोग्यपल्यासंख्यातभागमात्रो भवति ॥ २३९–२४० ॥ अर्थांतरकरणनिरूपणार्थं गाथाचतुष्टयमाह—

स० चं०—क्रम करण कहिए अब देशघाती करण कहैं हैं सो पूर्वै प्रकृतिनिका सर्वघाती स्पर्धकरूप अनुभाग बांध्या था अब देश घाती करणतैं लगाय दारु लता समान द्विस्थानगत देशघाती स्पर्धकरूप ही अनुभागकौं बांधै है। तहां असंख्यात समयप्रबद्ध उदीरणाका प्रारंभतैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं मनःपर्यय ज्ञानावरण दानांतरायका देशघाती बंध हो है। तातैं परैं तितने तितने ही स्थितिबंधापसरण गएं क्रमतैं अवधिज्ञानावरण अवधिदर्शनावरण लाभांतरायनिका अर श्रुतज्ञानावरण अचक्षुदर्शनावरण भोगांतरायका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्षुर्दर्शनावरणका अर मतिज्ञानावरण उपभोगांतरायका अर वीर्यांतरायका देशघाती बंध हो है। इहां प्रश्न—

जो संज्वलन चतुष्क पुरुषवेदनिका देशघाति करण इहां क्यों न कह्या ? ताका समाधान—जो तिनिका अनुभाग बंध संयमासंयमका ग्रहण समयतैं लगाय समय २ अनंतगुणा घटता क्रम लीएं द्विस्थान गत हो है तातैं इहां कीया न कह्या। बहुरि तिनिका सत्तारूप अनुभाग सर्व घाती वर्तैं ही है। बहुरि देशघाती करणका अंतविषै भी मोहादिकनिका स्थितिबंध अपने योग्य पल्यका असंख्यातवां भागमात्र ही है ॥ २३९—२४० ॥

तो देसघातिकरणादुवरिं तु गदेसु तत्तियपदेसु।
इगिवीसमोहणीयाणंतरकरणं करेदीदि ॥ २४१ ॥

अतो देशघातिकरणादुपरि तु गतेषु तावत्कपदेषु।
एकविंशमोहनीयानामंतरकरणं करोतीति ॥ २४१

सं० टी०— ततो देशघातिकरणस्योपरि संख्यातसहस्रेषु स्थितिबन्धापसरणेषु गतेष्वनंतानुबंधिवर्जितद्वादशकषायाणां नवनोकषायाणां च चारित्रमोहप्रकृतीनां मिलित्वैकविंशतिरंतरकरणं करोत्यनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्त्युपशमकः ॥

स० चं०—तिस देशघाति करणतैं उपरि संख्यात हजार स्थितिबंध गएं इकईस मोहनीयकी प्रकृतितिनिका अंतरकरण करै है। ऊपरिके वा नीचेके निषेक छोडि बीचिके विवक्षित केते इकनिका अभाव करना सो अंतर करण जानना ॥ २४१ ॥

संजलणाणं एक्कं वेदाणेक्कं उदेदि तं दोण्हं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेसाणं पढमट्ठिदि ठवेदि अंतोमुहुत्त आवलियं ॥

संज्वलनानामेकं वेदानामेकं उदेति तत् द्वयोः ।
शेषाणां प्रथमस्थितिं स्थापयति अंतर्मुहूर्तमावलिकां ॥ २४२ ॥

सं० टी०—संज्वलनक्रोधमानमायालोभानां मध्ये एकतमः कषायः स्त्रीपुंनपुंसकवेदानां चैकतमो वेद उदेति । एकतमकषायवेदोदयेन श्रेणिमारोहति संयत इत्यर्थः । ततस्तयोरुदयमानयोः कषायवेदयोः प्रथमस्थितिमन्तर्मुहूर्तमात्रीं शेषाणामुदयरहितानां कषायवेदानां प्रथमस्थितिमावलीमात्रीं स्थापयत्यंतरकरणमारम्भकः । तावन्मात्रनिषेकान् मुक्त्वा तदुपरितननिषेकाणामन्तरं करोतीत्यर्थः ॥ २४२ ॥

स० चं०—संज्वलन क्रोध मान माया लोभविषै कोई एकका अर स्त्री पुरुष नपुंसक वेदनिविषै कोई एकका उदय सहित श्रेणी चढै तिन उदय रूप दोय प्रकृतिनिकी तौ प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्त्त स्थापै है । अर अवशेष उगणीस प्रकृतिनिकी प्रथम स्थिति आवलीमात्र स्थापै है । इस प्रथम स्थिति प्रमाण निषेकनिकौं नीचैं छोडि ऊपरिके निषेकनिका अंतर करै है ऐसा अर्थ जानना ॥ २४२ ॥

उवरि समं उक्कीरइ हेट्ठावि समं तु मज्झिमपमाणं ।
तदुपरि पढमठिदीदो संखेज्जगुणं हवे णियमा ॥

उपरि समं उत्कीर्यंते अधस्तनापि समं तु मध्यमप्रमाणं ।
तदुपरि प्रथमस्थितितः संख्येयगुणं भवेत् नियमात् ॥ २४३ ॥

सं० टी०— अंतरायामस्याग्रनिषेका उदयानुदयप्रकृतीनां सदृशा एवोत्कीर्यंते, अन्तरोपरितनद्वितीयस्थितिप्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यमनिषेकाणां सदृशत्वात् । अंतरायामस्याधस्तनचरमनिषेका उदयरहितप्रकृतीनामन्योन्यं सदृशा एव । उदयवत्प्रकृत्योश्च परस्परं सदृशा एव । उदयमानानुदयप्रकृत्योस्तु विसदृशा अंतर्मुहूर्तावलिमात्रप्रथमस्थितिवैषम्यवशात् । एवं विधांतरायामप्रमाणं च ताभ्यां द्वाभ्यामंतर्मुहूर्तावलिमात्रीभ्यां प्रथमस्थितिभ्यां संख्यातगुणितमेव भवति । उदयमानप्रकृत्योर्गुणश्रेणिशीर्षनिषेकान् ततः संख्येयगुणोपरितनस्थितिनिषेकांश्चांतर्मुहूर्तमात्रान् गृहीत्वांतरं करोतीत्यर्थः ॥ २४३ ॥

स० चं०—अंतरायामका अंत निषेकतैं उपरिवर्ती जे निषेक ते उदय रूप वा अनुदय रूप सर्व प्रकृतिनिका समान हैं तातैं अंतरायामके उपरि द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेक सब प्रकृतिनिका तहां एक कालवर्ती होनेतैं समान हैं । बहुरि अंतरायामका प्रथम निषेक के नीचैं जो निषेक सो उदय प्रकृतिनिका परस्पर समान है । वा अनुदय प्रकृतिनिका परस्पर समान है अर उदय अनुदय प्रकृतिनिका समान नाहीं । जातैं इनके प्रथम स्थितिविषै समान नाहीं । जो प्रथम स्थितिका अंतका निषेक सोई अंतरायामका नीचेका निषेक है । बहुरि अंतर्मुहूर्त वा आवलीमात्र जो उदय अनुदय प्रकृतिनिका प्रथम स्थिति तातैं संख्यात गुणा ऐसा अंतर्मुहूर्तमात्र अंतरायाम है । इतने निषेकनिका अभाव करिए है तहां उदयमान प्रकृतिनिकैं तौ गुणश्रेणि शीर्षके निषेक अर तिनतैं संख्यात गुणे उपरितन स्थितिके निषेक तिनकौं ग्रहि अंतर करै है । अर अनुदय प्रकृतिनिका अवशेष इहां पाइए जो गुणश्रेणी आयाम अर तिनतैं संख्यातगुणे उपरितन स्थितिके निषेक तिनकौं ग्रहकरि अंतर करै है ॥ २४३ ॥

अंतरपढमे अण्णो ठिदिबंधो ठिदिरसाण खंडो य ।
एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरसमत्ती ॥ २४४ ॥ २९९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतरप्रथमे अन्यः स्थितिबंधः स्थितिरसयोः खंडश्च ।
एकस्थितिखंडोत्करणकाले अंतरसमाप्तिः ॥ २४४ ॥

सं० टी०— अंतरकरणप्रथमसमये अन्य एव स्थितिबन्धः प्राक्तनस्थितिबंधादसंख्यातगुणहीनः, स्थितिखंडं चान्यदेव प्राक्तनस्थितिखण्डाद्विशेषहीनं अन्यदेवानुभागखण्डं च प्राक्तनानुभागखण्डादनंतगुणहीनं प्रारभ्यते । एवंविधैकस्थितिखण्डोत्करणकालसमेनांतर्मुहूर्तेनांतरसमाप्तिर्भवति । तत्समाप्तौ च प्रकृतसमस्थितिखण्डोत्करणं संख्यातसहस्रानुभागखंडोत्करणानि च युगपत् समाप्यंत इत्यर्थः ॥ २४४ ॥ अथांतरोत्कीर्णद्रव्यनिक्षेपनिरूपणार्थं गाथात्रयमाह—

स०चं०—अंतर करणका प्रथम समयविषै पूर्व स्थितिबंधतैं असंख्यात गुणा घटता ऐसा और ही स्थितिबंध अर पूर्व स्थिति कांडकतैं किछू घटता ऐसा और ही स्थिति कांडक अर पूर्व अनुभाग कांडकतैं अनंत गुणा घटता ऐसा और ही अनुभाग कांडकका प्रारंभ हो है। तहां एक स्थिति कांडकोत्करणका जेता काल तितने कालकरि अंतर करण करिए है। ताकी समाप्ति होतैं एक स्थिति कांडक घात भया। तीहिंविषै संख्यात हजार अनुभाग कांडकनिका घात भया ऐसा अर्थ जानना ॥ २४४ ॥

अंतरहेदुक्कीरिददव्वं तं अंतरम्हि ण य देदि ।
बंधं ताणंतरजं बंधाणं बिदियगे देदि ॥ २४५ ॥

अंतरहेतूत्कीरितद्रव्यं तदंतरे न च ददाति ।
बंधं तेषामंतरजं बंधानां द्वितीयके ददाति ॥ २४५ ॥

सं० टी०— अंतरनिमित्तमंतरायामे उत्कीर्णं द्रव्यमंतरायामस्थितिषु नैव निक्षिपति । पुनः केवलबध्यमानप्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृतीनां स्त्रीनपुंसकवेदयोरन्यतरोदयेन संज्वलनकषायाणामन्यतमोदयेन च श्रेणिमारूढस्य पुंवेदशेषत्रिसंज्वलनानामंतरायामे उत्कीर्णं द्रव्यं तात्कालिके स्वबन्धे आबाधां मुक्त्वा द्वितीयस्थितिप्रथमनिषेकादारभ्य चरमपर्यंतं यथायोग्यमुत्कर्षणवशेन निक्षिपति । उदयमानेतरकषाययोः प्रथमस्थितौ चापकर्षणवशेन निक्षिपतीत्ययं विशेषः सिद्धांतानुसारेण ज्ञातव्यः ॥ २४५ ॥

स०चं०—अंतरके निमित्त उत्कीर्ण कीया द्रव्यकौं अंतरायामविषै न दे है । भावार्थ—अंतरायामके निषेकनिका द्रव्यकौं तहां अभावकरि कोई अंतरायाम रूप निषेकनिविषै ही न मिलाइए है । तौ कहां मिलाइए है सो कहै हैं—

जिनका उदय न पाइए केवल बंध ही पाइए है ऐसी जे स्त्री वा नपुंसक वेद अर एक कोई कषाय सहित श्रेणी चढनेवालेकैं पुरुषवेद अर तीन संज्वलन कषाय ए च्यारि प्रकृति तिनका द्रव्यकौं उत्कर्षणकरि तौ तत्काल जो अपना तिसही प्रकृतिका जो बंध भया ताकी आबाधाकौं छोडि ताहीका द्वितीय स्थितिकौं प्रथम निषेकतैं लगाय यथायोग्य अंत पर्यंत निक्षेपण करै है अर अपकर्षणकरि उदय रूप जो अन्य कषाय ताकी प्रथमस्थितिविषै निक्षेपण करै है ॥ २४५ ॥

उदयिल्लाणंतरजं सगपढमे देदि बंधविदिये च ।
उभयाणंतरदव्वं पढमे विदिये च संछुहदि २४६

औदयिकानामंतरजं स्वकप्रथमे ददाति बंधद्वितीये च ।
उभयानामंतरद्रव्यं प्रथमे द्वितीये च संक्षिपति ॥ २४६ ॥

सं० टी०— केवलमुदयमानयोः स्त्रीनपुंसकवेदयोरंतरायामे उत्कीर्णं द्रव्यं स्वस्वप्रथमस्थितावाकृष्य निक्षिपति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बध्यमानेतरकषायाणां द्वितीयस्थितौ चोत्कृष्य संक्रामयतीत्ययं विशेषोऽपि राद्धांतोक्तः संप्रधार्यः पुनर्बंधोदयवतोः पुंवेदान्यतमकषाययोरंतरायामे उत्कीर्णं द्रव्यमपकृष्योदयमानप्रकृतिप्रथमस्थितौ निक्षिपति बध्यमानप्रकृतिद्वितीयस्थितौ चोत्कृष्य निक्षिपति । अत्रापि परप्रकृतिप्रथमद्वितीययोः स्थित्योरपकर्षणोत्कर्षणावशेन संक्रमयतीत्ययमपि विशेषः कृतांतसिद्धो बोद्धव्यः ॥ २४६ ॥

स० चं०– । जिनका बंध न पाइए केवल उदय ही पाइए ऐसा स्त्रीवेद वा नपुंसकवेद तिनका अतर संबंधी द्रव्यकौं अपकर्षण करि अपनी प्रथम स्थितिविषै निक्षेपण करै है। अर उत्कर्षण करि तहां बंधै हैं जे अन्य कषाय तिनकी द्वितीय स्थितिविषै निक्षेपण करै है। बहुरि अपकर्षण करि उदय रूप अन्य क्रोधादि कषायकी प्रथम स्थितिविषै संक्रमण हो है। तिस उदय प्रकृति रूप परिणमै है इतना भी सिद्धांतोक्त विशेष जानना। बहुरि जिनिका बंध भी अर उदय भी पाइये ऐसा पुरुषवेद वा कोई एक कषाय तिनके अंतर संबंधी द्रव्यकौं अपकर्षण करि उदयरूप प्रकृतिनिकी प्रथम स्थितिविषै निक्षेपण करै है। अर उत्कर्षण करि तहां बंधै हैं जे प्रकृति तिनकी द्वितीय स्थितिविषै निक्षेपण करै हैं। इहां भी अन्य प्रकृतिकी प्रथम द्वितीय स्थितिविषै उत्कर्षण अपकर्षणका वशकरि अन्य प्रकृति परिणमनेरूप संक्रमण हो है ऐसा विशेष जानना।

अणुभयगाणंतरजं बंधं ताणं च विदियगे देदि ।
एवं अंतरकरणं सिज्झदि अंतोमुहुत्तेण ॥ २४७ ॥

अनुभयकानामंतरजं बंधं तेषां च द्वितीयके ददाति ।
एवमंतरकरणं सिद्ध्यति अंतर्मुहूर्तेन ॥ २४७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०— बंधोदयरहितानां मध्यमाष्टकषायहास्यादिषण्णोकषायाणामंतरायामे उत्कीर्णं द्रव्यं तात्कालिकोदयमात्रप्रकृतिप्रथमस्थितावपकृष्य संक्रमयति । बध्यमानप्रकृतिद्वितीयस्थितौ चोत्कृष्य संक्रमयति । सर्वत्र बन्धरहितानामंतरद्रव्यं स्वद्वितीयस्थितौ न निक्षिपति। उदयरहितानामंतरद्रव्यं स्वप्रथमस्थितौ न निक्षिपति इति विशेषो निर्धातव्यः। एवमंतर्मुहूर्तकालेनांतरकरणं सिध्यति। अत्रांतरकरणप्रारंभसमयादारभ्य प्रथमस्थित्यंतरायामौ व्यवस्थितप्रमाणौ द्रष्टव्यौ। उदयावल्यां एकस्मिन् समये गलिते गुणश्रेणिसमयस्यैकस्योदयावल्यां प्रवेशात्। तदैवांतरायामसमयस्यैकस्य गुणश्रेण्यायामे प्रवेशात्। तदैव च द्वितीयस्थितिनिषेकस्यैकस्यांतरायामे प्रवेशात्। एवं द्वितीयस्थितिरेव हीयते प्रथमस्थित्यंतरायामौ तदवस्थावेवेति निश्चेतव्यं ॥ २४७ ॥ अथांतरकरणनिष्पत्त्यंतरसमये संभवक्रियाविशेषप्रदर्शनार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं०—बंध उदय रहित जे अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान कषाय अर हास्यादि छह नोकषाय तिनका अंतर संबंधी द्रव्यका अपकर्षण करि तिस काल उदयरूप जे अन्य प्रकृति तिनकी प्रथम स्थितिविषै संक्रमण हो है तद्रूप परिणमैं हैं। अर उत्कर्षण करि तिस काल विषै बधै हैं जे अन्य प्रकृति तिनकी द्वितीय स्थितिविषै संक्रमण हो है तद्रूप परिणमै है ऐसैं प्रकृतिनिका जिन निषेकनिका अभावकरि अंतर कीया तिनके द्रव्यकौं निक्षेपण करै हैं। इहां इतना जानना— बंध रहित प्रकृतिनिका द्रव्यकौं तौ अपनी द्वितीय स्थितिविषै अर उदय रहित प्रकृतिनिका द्रव्यकौं अपनी प्रथम स्थितिविषै नाही निक्षेपण करै है। बहुरि प्रथम स्थिति तौ अंतरायामके नीचै है तातैं तहां देनेविषै स्थिति घटै है। तातैं तहां अपकर्षण कह्या। अर द्वितीय स्थिति अंतरायामके उपरिवर्ती है तातै तहां द्रव्य दीएं स्थिति बधै है तहां उत्कर्षण कह्या। ऐसैं अंतर्मुहूर्त कालकरि अंतर करनेकी समाप्तता हो है। इहां अंतर करणका प्रथम समयतैं लगाय प्रथम स्थिति अर अंतरायामका प्रमाण जेताका तेता रहै है। जब उदयावलीका एक समय व्यतीत होइ तब गुणश्रेणिका एक समय उद-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यावलीविषै मिलै। अर तब ही गुणश्रेणिविषै अंतरायामका एक समय मिलै अर तब ही अंतरायामविषै द्वितीय स्थितिका एक निषेक मिलै द्वितीय स्थिति घटै है। प्रथम स्थिति अर अंतरायाम जेताका तेता रहै है ऐसा जानना ॥ २४७॥

सत्तकरणाणि यंतरकदपढमे हौंति मोहणियस्स।
इगिठाणिय बंधुदओ ठिदिबंधे संखवस्सं च ॥
अणुपुव्वीसंकमणं लोहस्स असंकमं च संढस्स।
पढमोवसामकरणं छावलितीदेसुदीरणदा ॥ २४९ ॥

सप्तकरणानि अंतरकृतप्रथमे भवंति मोहनीयस्य।
एकस्थानको बंधोदयः स्थितिबंधः संख्यवर्षं च ॥ २४८ ॥
आनुपूर्वीसंक्रमणं लोभस्यासंक्रमं च षंढस्य।
प्रथमोपशमकरणं षडावल्यतीतेषूदीरणता ॥ २४९ ॥

सं० टी०— अंतरकृतस्य निष्ठितांतरकरणस्य प्रथमे अनन्तरसमये सप्त करणानि युगपदेव प्रारभ्यंते। तत्र पूर्वमंतरसमाप्तिपर्यंतं चारित्रमोहस्य द्विस्थानानुभागबंधः प्रवृत्तः, इदानीं लतासमानैकस्थानानुभागबंधस्तस्य प्रवर्तते इत्येकं करणं। १। तथा मोहनीयस्य द्विस्थानानुभागोदयः पूर्वमन्तरकरणचरमसमयपर्यंतमायातः इदानीं पुनस्तस्य लतासमानैकस्थानानुभागोदय एव प्रवर्तत इत्यपरं करणं। २। तथा पूर्वमंतरकरणकालसमाप्तिपर्यंतमसंख्येयवर्षमात्रो मोहस्य स्थितिबंधः प्रवृत्तः, इदानीं पुनरपसरणमाहात्म्यात्संख्येयवर्षमात्रस्तस्य स्थितिबन्धः प्रारब्ध इत्यन्यत्करणं। ३। तथा पूर्वमंतरकरणकालपरिसमाप्तिपर्यंतं चारित्रमोहस्य नपुंसकवेदादिप्रकृतीनां यत्र यत्रापि द्रव्यसंक्रमः प्रवृत्त इदानीं पुनर्वक्ष्यमाणयात्प्रतिनियतानुपूर्व्या तद्द्रव्यं संक्रामति। तद्यथा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीनपुंसकवेदप्रकृत्योर्द्रव्यं नियमेन पुंवेद एव संक्रामति। पुंवेदहास्यादिषट्शोकषायाप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानक्रोधद्वयद्रव्यं नियमेन संज्वलनक्रोधे एव संक्रामति। संज्वलनक्रोधाप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानमानद्वयद्रव्यं नियमेन संज्वलनमाने एव संक्रामति। संज्वलनमानाप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानमायाद्वयद्रव्यं नियमेन संज्वलनमायाद्रव्ये एव संक्रामति। संज्वलनमायाप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानलोभद्वयद्रव्यं संज्वलनलोभे एव नियमतः संक्रामति इत्यानुपूर्व्या संक्रमो नामैकं करणं। ४। तथा पूर्वमंतरकरणसमाप्तिपर्यंतं संज्वलनलोभस्य शेषसंज्वलनपुंवेदेषु यथासंभवं संक्रमः प्रवृत्तः, इदानीं पुनः संज्वलनलोभस्य कुत्रापि संक्रमो नास्त्येवेत्यपरं करणं। ५। तथा इदानीं प्रथमं नपुंसकवेदस्यैवोपशमनक्रिया प्रारभ्यते तदुपशमनानंतरमेवेतरप्रकृतीनामुपशमनविधानात् इत्येतदेकं करणं। ६। तथा पूर्वमंतरकरणसमाप्तिपर्यंतं प्रतिसमयबध्यमानसमयप्रबद्धो अचलावल्यतिक्रमे उदीरयितुं शक्यः प्रवृत्तः इदानीं पुनर्बध्यमानानां मोहस्य वा ज्ञानावरणादिकर्मणां वा समयप्रबद्धो बंधप्रथमसमयादारभ्य षट्स्वावलीषु गतास्वेवोदीरयितुं शक्यो नैकसमयोनास्वपीत्यन्यत्करणं। ७। अधुनातननूतनबंधस्य तथाविधस्वभावसंभवात् ॥ २४८–२४९ ॥ अथ चारित्रमोहोपशमनप्रक्रमप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०—अंतर कीए पीछैं ताके अनंतरि प्रथम समयविषै सात करणनिका युगपत् प्रारंभ हो है। तहां पूर्वै अंतरकरनेकी समाप्ति पर्यंत मोहका दारुलता समान द्विस्थानगत बंध अर उदय था अर अब लता समान एक स्थानगत बंध उदय होने लागे सो दोय करण तौए भए। बहुरि पूर्वैं मोहका स्थिति बंध असंख्यात वर्षका होता था अब संख्यात वर्षमात्र होने लगा सो एक करण यहु भया। बहुरि पूर्वैं चारित्र मोहका परस्पर प्रकृतिनिका जहां तहां संक्रमण होता था अब आनुपूर्वी संक्रमण होने लगा सो इसविषै ऐसा नियम भया—जो स्त्री नपुंसक वेदका तौ पुरुष वेद ही विषै अर पुरुषवेद छह हास्यादिक अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान क्रोधका संज्वलन क्रोध ही विषै अर संज्वलन क्रोध अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान मानका संज्वलन मान ही विषै अर संज्वलन मान अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान मायाका संज्वलन माया ही विषै अर संज्वलन माया अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान लोभका संज्वलन लोभ ही विषै संक्रमण हो

३९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है अन्यथा न होइ सो एक करण यहु भया। बहुरि पूर्वैं संज्वलन लोभका संज्वलन क्रोधादिविषै वा पुरुषवेदविषै संक्रमण होता था अब याका संक्रमण कहीं न होइ सो एक करण यहु भया। बहुरि अब नपुंसक वेदकी उपशमक्रियाका प्रारंभ भया सो एक करण यहु भया। बहुरि पूर्वैं बंध भएं पीछैं एक आवली काल व्यतीत भएं उदीरणा करनेकी समर्थता थी अब जो बंध हो है ताकी बंध समयतैं छह आवली व्यतीत भएं ही उदीरणा करनेकी समर्थता हो है। सो एक करण यहु भया ॥ २४८ २४९ ॥

अंतरपढमादु कमे एक्केक्कं सत्त चदुसु तिय पयडिं।
सममुच सामदि णवकं समऊणावलिदुगं वज्जं ॥

अंतरप्रथमात् क्रमेण एकैकं सप्त चतुर्षु त्रयीं प्रकृतिं।
समुच्य शमयति नवकं समयोनावलिद्विकं वर्ज्यम् ॥ २५० ॥

सं० टी०— अंतरकरणसमाप्त्यनंतरसमयादारभ्य क्रमेणांतर्मुहूर्तेनांतर्मुहूर्तेन कालेन एकामेकां सप्त चतुर्ष्वंतर्मुहूर्तेषु त्रयीं त्रयीं प्रकृतिं समयोनद्व्यावलिमात्रनवकबंधसमयप्रबद्धान् वर्जयित्वाऽयमनिवृत्तिकरणविशुद्धसंयत उपशमयति कषायत्रयं वा परेणांतर्मुहूर्तेन युगपदुपशमयतीति विशेषो ग्राह्यः। ता एवोपशम्यमानाः प्रकृतीरुद्दिशति ॥ २५० ॥

स० चं – अंतर कीएं पीछैं प्रथम समयतैं लगाय क्रमतैं एक एक अंतर्मुहूर्तकाल करि तौ एक एक सात प्रकृतिनिकौं अर च्यारि अंतर्मुहूर्तविषै क्रमतैं तीन २ प्रकृतिनिकौं उपशमावै है। तहां समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्धकौं नाहीं उपशमावै है सो याका स्वरूप आगै कहेंगे सो जानना ॥ २५० ॥ ३०६

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एय णउंसयवेदं इत्थिवेदं तहेव एयं च ।
सत्तेव णोकसाया कोहादितियं तु पयडीओ ॥२५१ ॥

एको नपुंसकवेदः स्त्रीवेदः तथैव एकः च ।
सप्तैव नोकषायाः क्रोधादित्रयं तु प्रकृतयः ॥ २५१ ॥

सं० टी०— एको नपुंसकवेदस्तथैवैकः स्त्रीवेदः सप्त नोकषाया हास्यादयः षट् पुंवेदश्चेति क्रोधत्रयं मायात्रयं मानत्रयं लोभत्रयं चेत्युपशम्यमानाः प्रकृतयः क्रमेण ज्ञातव्याः ॥ २५२ ॥ अथ प्रथमोद्दिष्टस्य नपुंसकवेदस्योपशमनविधानं प्रदर्शयितुमिदमाह—

स० चं०— एक नपुंसक वेद एक स्त्रीवेद तैसैं ही सात नोकषाय अर तीन क्रोध तीन मान तीन माया तीन लोभ ऐसैं क्रमतैं उपशम होनेरूप इकईस प्रकृति हैं ॥ २५१ ॥

अंतरकदपढमादो पडिसमयमसंखगुणविहाणकमे- ।
णुवसामेदि हु संडं उवसंतं जाण ण च अण्णं ॥

अंतरकृतप्रथमतः प्रतिसमयमसंख्यगुणविधानक्रमे- ।
णोपशाम्यति हि षंढं उपशांतं जानीहि न चान्यम् ॥ २५२ ॥

सं० टी०— अन्तरनिष्ठापनानंतरसमयात्प्रभृति प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेण नपुंसकवेदद्रव्यं गुणसंक्रमभागहारासंख्यातभागेन खण्डयित्वा एकं खण्डमुपशमयति यावन्नपुंसकवेदोपशमसमाप्तिर्भवति तावदन्तर्मुहूर्तकालपर्यंतं कामप्यन्यां प्रकृतिं नोपशमयति । कर्मणः प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशानामुदीरणाशक्तेरप्युदयायोग्यतया सदवस्थाकारणमुपशमनं सर्वत्र ज्ञेयं । तत्र नपुंसकवेदस्य प्रथमसमये उपशमनफालिद्रव्यमिदं स ग्र। १२–। ४२ द्वितीयसमये ततोऽसंख्येय-
७। १०। ४८। गु
ग्र

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणमुपशमनफालिद्रव्यमिदं स ३ । १२-। ४२ / ७ । १० । ४८ । गु / ३ ३ तृतीयसमये ततोऽसंख्येयगुणमुपशमनफालिद्रव्यमिदं स ३ । १२-। ४२ / ७ । १० । ४८ गु / ३ ३ ३

एवमंतर्मुहूर्तमात्रोपशमनकालचरमसमयमसंख्यातगुणितक्रमेण नपुंसकवेदमुपशमयतीत्यर्थः ॥ २५२ ॥ अथोदीरणादिद्रव्याल्पबहुत्वप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०— अंतर करनेके अनंतरि प्रथम समयतैं लगाय समय समय प्रति नपुंसक वेदका उपशम हो है। तहां नपुंसक वेदके द्रव्यकौं गुणसंक्रम भागहारका असंख्यातवां भागमात्र भागहारका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्यकौं प्रथम समयविषै उपशमावै है। ऐसैं नपुंसक वेदका उपशम कालकी समाप्ति पर्यंत असंख्यातगुणा क्रमलीएं द्रव्य उपशमावै है। सो समय समय प्रति जो द्रव्य उपशमाया ताहीका नाम उपशमन फालिका द्रव्य जानना ॥ २५२ ॥

संढादिमउवसमगे इट्ठस्स उदीरणा य उदओ य।
संढादो संकामिदं उवसमियमसंखगुणियकमा ॥

पंढादिमोपशामके इष्टस्योदीरणा च उदयश्च।
पंढात् संक्रमितमुपशामितमसंख्यगुणितक्रमः ॥ २५३ ॥

सं० टी०— नपुंसकवेदोपशमकस्य प्रथमसमये विवक्षितस्योदयप्राप्तस्य पुंवेदस्योदीरणा द्रव्यमिदं— स ३ । १२-। २ / ७ १० । ४८ । ओ प प / ३ ३ ३ तत्कालापकृष्टस्य पल्यासंख्यातैकभागेन भक्तस्य बहुभागमुपरितनस्थितौ दत्वा तदेक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागं पुनः पल्यासंख्यातभागेन खण्डयित्वा बहुभागं गुणश्रेण्यां निक्षिप्य तदेकभागस्यैवोदयनिक्षेपणात्। तस्मादुदीरणाद्रव्यात्तदात्वे पुंवेदस्यैवोदयमानं द्रव्यमसंख्यातगुणं स a । १२– । २ / ७ । १० । ४८ । ओ प ८५ / a a गुणश्रेण्यां प्राग्निक्षिप्तपल्यासंख्यातबहुभागमात्रत्वात्। तस्मादुदयद्रव्यान्नपुंसकवेदस्य संक्रमणद्रव्यमसंख्यातगुणं स a । १२– । ४२ / ७ । १० । ४८ गु तद्भागहारादसंख्यातगुणहीनेन गुणसंक्रमभागहारेण खंडतैकभागमात्रत्वात् तदात्वे नपुंसकवेदस्योपशमनफालिद्रव्यमसंख्यातगुणं— स a । १२– । ४२ / ७ । १० । ४८ । गु / a तद्भागहारादसंख्यातगुणहीनेन भागहारेण खंडितैकभागमात्रत्वात्। एवं द्वितीयादिसमयेषु चरमसमयपर्यंतेषुदीरणाद्रव्यचतुष्टयाल्पबहुत्वं नेतव्यं ॥ २५३ ॥ अस्मिन्नवसरे स्थितिखण्डादिसंभवासंभवप्रदर्शनार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं०— नपुंसक वेदके उपशमकका प्रथम समयविषै विवक्षित उदयकौं प्राप्त भया जो पुरुषवेद ताका सर्व द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थितिविषै दीया। अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणिविषै एक भाग उदयावलीविषै दीया सो उदयावलीविषै जो दीया सो यहु उदीरणा द्रव्य जेता है तातैं तिसही पुरुषवेदका उदय द्रव्य असंख्यातगुणा है। जातैं पूर्वै गुणश्रेणिका द्रव्य इस निषेकनिविषै दीया था सो पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभागमात्र है। बहुरि तिसतैं नपुंसक वेदका द्रव्य संक्रमण करि पुरुष वेदरूप भया सो असंख्यातगुणा है जातैं तिस भागहारतैं गुणसंक्रम भागहारका प्रमाण असंख्यातगुणा घटता है। बहुरि तातैं नपुंसक वेदकी उपशम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फालिका द्रव्य असंख्यातगुणा है जातैं तहां भागहार तिस भागहारके असंख्यातवे भागमात्र है। ऐसैं हीं द्वितीयादि समयनिविषै भी अल्पबहुत्व जानना ॥ २५३ ॥

अंतरकरणादुवरिं ठिदिरसखंडाण मोहणीयस्स ।
ठिदिबंधोसरणं पुण संखेज्जगुणेण हीणकमं २५४

अंतरकरणादुपरि स्थितिरसखंडानां मोहनीयस्य ।
स्थितिबंधापसरणं पुनः संख्यगुणेन हीनक्रमं ॥ २५४ ॥

सं० टी०— अंतरकरणस्योपरि नपुंसकवेदोपशमनप्रथमसमयादारभ्य मोहनीयस्य स्थितिखंडनमनुभागखंडनं च नास्ति उपशम्यमानकर्मस्थितेः कांडकघातो नास्तीति परमगुरूपदेशात्। तर्ह्यनुपशम्यमानमोहप्रकृतीनां स्थितिकांडकघातो भवेदिति नाशंकितव्यं उपशमनकाले मोहप्रकृतीनां सर्वासामपि स्थितिः सदृश्येवेति च परमागमसंप्रदायस्य परमगुरुपर्वक्रमायातस्य सद्भावात् स्थित्यनुसारित्वादनुभागस्यापि खण्डनं विना तादृगवस्थं सिद्धमेव । मोहनीयस्य स्थितिबंधापसरणं पुनः संख्यातगुणहीनक्रमेण वर्तते । अंतरकरणसमाप्त्यनंतरं संख्यातसहस्रवर्षमात्रस्थितिबंधसंभवात् तदनुसारेण स्थितिबंधापसरणस्य तत्संख्यातबहुभागमात्रस्थितिबंधं प्रति संख्यातगुणहीनत्वोपपत्तेः ॥ २५४ ॥

स० चं०— अंतरकरणतैं उपरि नपुंसक वेद उपशमावनेका प्रथम समयतैं लगाय मोहनीयका स्थिति कांडकघात अर अनुभाग कांडकघात नाहीं है जातैं उपशम रूप होती जो कर्मकी स्थिति ताकैं कांडकघात न हो है। इहां कोऊ कहैगा कि–उपशम रूप न होतीं नपुंसक वेद विना अन्य प्रकृतिनिका तौ कांडक घात होता होयगा सो न हो है जातैं इहां सर्व मोह प्रकृतिनिकी स्थिति समान है अर स्थिति अनुसारि अनुभागका भी कांडक घात विना अवस्थितपना ही है। बहुरि मोहनीयका स्थितिबंधापसरणका आयाम असंख्यातगुणा घटता क्रम लीएं वर्तै है ॥ २५४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जत्तोपाये होदि हु ठिदिबंधो संखवस्समेत्तं तु।
तत्तो संखगुणूणं बंधोसरणं तु पयडीणं ॥ २५५ ॥

यत उपायेन भवति हि स्थितिबंधः संख्यवर्षमात्रः तु।
ततः संख्यगुणोनं बंधापसरणं तु प्रकृतीनाम् ॥ २५५ ॥

सं० टी०—यतः कारणात्संख्यातसहस्रवर्षमात्रः स्थितिबंधः प्रायेण भवति ततः कारणात् संख्यातगुणोनं स्थिति-बंधापसरणं वध्यमानप्रकृतीनां भवतीति सूत्रोक्तत्वात्—

स्थितिबन्धः	व १००० ७	व ००० ७ / ५	व १००० ७ / ५ ५
स्थितिबन्धाप-सरणप्रमाणं	व १००० ७ ४ / ५	व १००० ७ ४ / ५ ! ५	व १००० ७ ४ / ५ । ५ । ५

मोहनीयवर्ज्यानां ज्ञानावरणादिशेषकर्मणां स्थितिबंधः अंतरकरणचरमसमयस्थितिबंधादसंख्यातगुणहीनः पल्यासंख्या-तबहुभागमात्रस्यापसरणात्। तत्र तीसियानां स्थितिबन्धः पल्यासंख्यातैकभागमात्रोऽपि सर्वतः स्तोकः प / a a अस्मा-दसंख्येयगुणो वीसियानां स्थितिबंधः प / a अस्मादर्धेनाधिको वेदनीयस्य स्थितिबंधः प ३ / a २ ॥ २५५ ॥ अथोपरि प्र-विष्यदिस्थितिबन्धापसरणप्रमाणावधारणार्थमाह—

स० चं०— जातैं इहां मोहका स्थितिबंध संख्यात हजार वर्षमात्र हो है तातैं पूर्व स्थि-तिबंधापसरणतैं इहां स्थिति बंधापसरण संख्यातगुणा घटता संभवै है। बहुरि ज्ञानावरणा-दिकनिका स्थितिबंध अंतर करनेका अंत समय सम्बन्धी स्थितिबंधतैं असंख्यातगुणा घटता है जातैं इनके स्थितिबंधापसरणका प्रमाण पल्यकौं असंख्यातका भाग दीएं बहु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागमात्र है। तहां तीसीयनिका स्थितिबंध पल्यका असंख्यातवां भागमात्र है। औरनितैं स्तोक है। तातैं असंख्यातगुणा वीसीयनिका है। तातैं ड्योढा वेदनीयका है ॥ २५५ ॥

वस्साणं वत्तीसादुवरिं अंतोमुहुत्तपरिमाणं ।
ठिदिबंधाणोसरणं अवरट्ठिदिबंधणं जाव ॥ २५६ ॥

वर्षाणां द्वात्रिंशदुपरि अन्तर्मुहूर्तपरिमाणम् ।
स्थितिबंधानामपसरणमवरास्थितिबंधनं यावत् ॥ २५६ ॥

सं० टी०— द्वात्रिंशद्वर्षमात्रस्थितिबंधस्योपरि अंतर्मुहूर्तपरिमाणं स्थितिबन्धापसरणं सर्वजघन्यस्थितिबंधपर्यंतं भवतीति ज्ञातव्यं ॥ २५६ ॥ अथ स्थितिबंधापसरणविषयनिर्देशार्थमिदमाह—

स० चं– बत्तीसवर्षका स्थितिबंध जहां होइ तहांतैं लगाय जहां जघन्य स्थितिबंध होइ तहां पर्यंत तिस बंधापसरणका प्रमाण अंतर्मुहूर्तमात्र जानना ॥ २५६ ॥

ठिदिबंधाणोसरणं एयं समयप्पबद्धमहिकिच्चा ।
उत्तं णाणादो पुण ण च उत्तं अणुववत्तीदो ॥ २५७ ॥

स्थितिबंधानामपसरणमेकं समयप्रबद्धमाधिकृत्य ।
उक्तं नानातः पुनः न च उक्तमनुपपत्तितः ॥ २५७ ॥

सं० टी०—विवक्षितापसरणोनापसृत्य विवक्षितबंधप्रथमसमये बध्यमानमेकं समयप्रबद्धमधिकृत्य विवक्षितं स्थितिबंधापसरणमुक्तं न पुनरंतर्मुहूर्तकाले द्वितीयादिसमयेषु बध्यमानसमयप्रबद्धानां प्रत्येकं स्थितिबंधापसरणमंतर्मुहूर्तकालपर्यंतं समस्थितिबंधाभ्युपगमने नानासमयप्रबद्धानधिकृत्य स्थितिबंधापसरणानुपपत्तेः। अनेनांतर्मुहूर्तकालपर्यंतमेकैकस्थिति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधापसरणेन प्राक्तनस्थितिबंधादपसृत्य समस्थितीनेव समयप्रबद्धान् बध्नातीत्ययमर्थो ज्ञाप्यते ॥ २५७ ॥ अथ नपुंसक-वेदोपशमनानंतरकालभाविक्रियांतरप्रदर्शनार्थमाह—

स० चं– स्थितिबंधापसरण है सो विवक्षित स्थितिबंधका प्रथम समयविषै जेता स्थितिबंधका प्रमाण हो है तितनाही अंतर्मुहूर्त कालपर्यंत बंधते समयप्रबद्धानिके स्थितिबंधका प्रमाण हो है। समय समय प्रति नाना समयप्रबद्धानिके स्थितिबंधापसरण होनेकरि समय समय स्थितिबंध घटनेकी अनुपपत्ति कहिए अप्राप्ति है ॥ २५७ ॥

एवं संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सगेसु तीदेसु।
संढुवसमदे तत्तो इत्थिं च तहेव उवसमादि॥२५८॥

एवं संख्येयेषु स्थितिबंधसहस्रकेषु अतीतेषु।
षढोपशांते ततः स्त्रीं च तथैव उपशमयाति ॥ २५८ ॥

सं० टी०— एवं पूर्वोक्तप्रकारेण संख्यातसहस्रेषु स्थितिबंधेषु गतेषु अंतर्मुहूर्तकालेन नपुंसकवेदे उपशमिते ततः परं स्त्रीवेदमपि नपुंकवेदोपशमनप्रकारेणैवांतर्मुहूर्तकालेनोपशमयति। अत्र स्त्रीवेदद्रव्यं संस्थाप्य ततः संक्रमफालिद्रव्यमुपशमनफालिद्रव्यं च गृहीत्वा उदयमानप्रकृतेरुदीरणाद्रव्यमुदयद्रव्यं च संस्थाप्य पूर्ववदल्पबहुत्वं वक्तव्यं। प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमश्च ज्ञातव्य इत्यर्थः। मोहवर्जितानां ज्ञानावरणादिकर्मणां स्थित्यनुभागखंडनं नपुंसकवेदोपशमनकालचरमसमयस्थित्यनुभागखण्डनादन्यदेव स्त्रीवेदोपशमनकालप्रथमसमये प्रारभ्यते। स्थितिबंधस्त्वायुर्वर्जितसर्वकर्मणां प्राक्तनस्थितिबन्धादन्य एव प्रारभ्यते ॥ २५८ ॥ अथ स्त्रीवेदोपशमनकाले कार्यविशेषप्रतिपादनार्थमिदमाह-

स० चं– ऐसैं संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं अंतर्मुहूर्त कालकरि नपुंसक वेदका उपशम हो है। तहां पीछैं तैसैं ही नपुंसक वेद उपशमवत् अंतर्मुहूर्त कालकरि स्त्री वेदकौं उपशमावै है। इहां स्त्रीवेदका द्रव्यकौं स्थापि संक्रमण फाली द्रव्यादिकका वा अल्प

४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CÇ0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुत्वका वा समय समय असंख्यातगुणा क्रमका वर्णन पूर्वोक्तवत् जानना बहुरि इहां इतना जानना ज्ञानावरणादिकनिका स्थिति अनुभाग कांडकघात अर आयु विना सात कर्मनिका स्थितिबंध पूर्व प्रमाणतैं अन्य प्रमाण घटै हो है ॥ २५८ ॥

थीयद्धा संखेज्जादिभागेपगदे तिघादिठिदिबंधो।
संखतुवं रसबंधो केवलणाणेगठाणं तु ॥२५९॥

स्त्री अद्धा संख्येयभागेपगते त्रिघातिस्थितिबंधः।
संख्यातं रसबंधः केवलज्ञानैकस्थानं तु ॥ २५९ ॥

सं० टी०— स्त्रीवेदोपशमनकालस्य संख्यातैकभागे गते सति मोहनीयस्य स्थितिबन्धः सर्वतः स्तोकः संख्यातसहस्रवर्षमात्रः। ततः संख्येयगुणः संख्यातसहस्रवर्षमात्रो घातित्रयस्थितिबंधः। ततोऽसंख्येयगुणः पल्यासंख्यातैकभागमात्रो नामगोत्रस्थितिबंधः। ततः साधिकः सातवेदनीयस्थितिबंधः। तदैव केवलज्ञानदर्शनावरणद्वयरहितस्य घातित्रयस्य लतासमानैकस्थानानुभागबन्धश्च भवति। एवं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबंधेषु गतेषु अंतर्मुहूर्तकालेन स्त्रीवेदोऽप्युपशमितो भवति ॥ २६० ॥ स्त्रीवेदोपशमनानंतरकालभाविक्रियाविशेषप्ररूपणार्थमिदमाह—

स० चं०— स्त्रीवेद उपशमावनेके कालका संख्यातवां भाग गएं मोहका स्थितिबंध संख्यात हजार वर्षमात्र औरनितैं स्तोक हो है। तातैं संख्यातगुणा संख्यात हजार वर्षमात्र तीन घातियानिका तातैं असंख्यातगुणा पल्यका असंख्यातवां भागमात्र नाम गोत्रका तातैं किछू अधिक साता वेदनीयका स्थितिबंध हो है। बहुरि इसही कालविषै केवल ज्ञानावरण केवल दर्शनावरण बिना तीन घातियनिका लता समान एक स्थान गत ही अनुभाग बंध हो है ॥ २५९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थीउवसमिदाणंतरसमयादो सत्त णोकसायाणं ।
उवसमगो तस्सद्धा संखज्जादिमे गदे तत्तो ॥२६०॥

स्त्रीउपशमितानंतरसमयात् सप्तनोकषायाणाम् ।
उपशामकः तस्याद्धा संख्याते गते ततः ॥ २६० ॥

सं० टी०— स्त्रीवेदोपशमनानंतरसमयादारभ्य पुंवेदषण्णोकषायप्रकृतीरुपशमयति । तदुपशमनकालस्यांतर्मुहू-र्तस्य संख्यातैकभागे गते ततः परं संभविकार्यविशेषप्रतिपादनार्थमिदमाह—

स० चं०— ऐसैं स्त्रीवेद उपशमावनेके अनंतर समयतैं लगाय पुरुष वेद छह हास्यादिक इन सात प्रकृतिनिकौं उपशमावै है। तिनके उपशमावनेका काल अंतर्मुहूर्तमात्र है । ताका संख्यातवां भाग गएं कहा ? सो कहैं हैं ॥ २६० ॥

णामदुग वेयणियट्ठिदिबंधो संखवस्सयं होदि ।
एवं सत्तकसाया उवसंता सेसभागंते॥ २६१ ॥

नामद्विके वेदनीयास्थितिबन्धः संख्यवर्षको भवति ।
एवं सप्तकषाया उपशांताः शेषभागांते ॥ २६१ ॥

सं० टी०— सप्तनोकषायोपशमनकालसंख्यातबहुभागावशेषावसरे सर्वतः स्तोकः संख्यातसहस्रवर्षमात्रो मोहस्थितिबंधः । ततः संख्येयगुणः संख्यातसहस्रवर्षमात्रो घातित्रयस्थितिबन्धः । ततः संख्यातगुणः संख्यातसहस्रवर्षमात्रो नामगोत्रस्थितिबन्धः । ततः साधिकः संख्यातसहस्रवर्षमात्रो वेदनीयस्थितिबंधश्च भवति । एवं नपुंसकवेदोपशमनप्रकारेणैव सप्त नोकषायाः संख्यातसहस्र स्थितिबंधेषु गतेषु अवशेषबहुभागचरमसमये उपशमिता भवंति ॥ २६१ ॥ अत्र संभवद्विशेषप्रदर्शनार्थमिदमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— सर्व ही कर्मनिका स्थितिबंध संख्यात हजार वर्ष प्रमाण हो है। तहां स्तोक मोहका तातैं संख्यातगुणा तीन घातियानिका तातैं संख्यातगुणा नाम गोत्रका तातैं किछू अधिक वेदनीयका जानना। ऐसैं नपुंसक वेदका उपशमवत् सात नोकषाय हैं ते उपशमनका अवशेष बहुभाग रहे थे तिनिका अंत समयविषै उपशमाना हो है ॥२६१॥

णवरि य पुंवेदस्स य णवकं समऊणदोण्णिआवलियं।
मुच्चा सेसं सव्वं उवसंते होदि तच्चरिमे ॥ २६२ ॥

नवरि च पुंवेदस्य च नवकं समयोनद्व्यावलिकाम्।
मुक्त्वा शेषं सर्वमुपशांते भवति तच्चरमे ॥ २६२ ॥

सं० टी०— पुंवेदनवकबन्धस्य समयोनद्व्यावलिमात्रसमयप्रबद्धान् वर्जयित्वा शेषं पुंवेदद्रव्यं सर्वमपि तदुपशमनकालचरमसमये उपशमितं भवतीत्ययं विशेषो द्रष्टव्यः । पुंवेदसत्त्वद्रव्योपशमनकालचरमसमये समयोनद्व्यावलिमात्रनवकबंधसमयप्रबद्धानामुपशमनवर्जितमवस्थानं कथमिति चेदुच्यते, तद्यथा—

पुंवेदोपशमनकालाभ्यंतरे आवलिद्वयेऽवशिष्टे द्विचरमावलिप्रथमसमये बद्धस्य समयप्रबद्धस्य बंधप्रथमसमयादारभ्य बंधावलिचरमसमयपर्यंतमुपशमनं नास्ति। सर्वत्र नवकबंधस्याचलावलिव्यतिक्रमे सत्येवोपशमनाकर्षणादिक्रियासंभवो न बंधावल्यामिति परागमसंप्रदायाद्बंधावल्यां व्यतिक्रांतायां तदनंतरचरमोपशमनावल्यां प्रथमसमयादारभ्य समयं समयं प्रत्येकैकफाल्युपशमनविधानेन उपशमनावलिचरमसमये चरमफालिद्रव्यं सर्वसंक्रमेणोपशमितं द्विचरमफालिद्विचरमसमये बद्धसमयप्रबद्धस्योपशमनकालचरमावलिप्रथमसमयपर्यंतमुपशमनं नास्ति। ततः परं समयं प्रत्येकैकफालिद्रव्योपशमनविधानेनोपशमनावलिचरमसमये चरमफालिद्रव्यं वर्जयित्वा शेषं सर्वमुपशमितं। पुनर्द्विचरमावलितृतीयसमये बद्धसमयप्रबद्धस्योपशमनचरमावलिद्वितीयसमयपर्यंतमुपशमनं नास्ति। ततः परं समयं प्रत्येकैकफाल्युपशमनविधानेन चरमफालिद्विचरमफालिद्रव्यं वर्जयित्वा शेषसर्वमुपशमितं। एवमनेन क्रमेण गत्वा द्विचरमावलिचरमसमये बद्धसमयप्रबद्धस्योपशम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नचरमावलिद्विचरमसमयपर्यंतमुपशमनं नास्ति। ततः परं चरमसमये एकफालिद्रव्यमुपशमितं, अवशिष्टं सर्वद्रव्यमनुपशमितमास्ते तत उपशमनकालचरमावल्यां बद्धसमयप्रबद्धानामावलिमात्राणामुपशमनचरमावलिचरमसमये किंचिदपि द्रव्यं नोपशमितं तेषामद्यापि बंधावलिव्यतिक्रमाभावात्। पुनरुपरितनोच्छिष्टावल्यां पुंवेदस्य बंध एव नास्ति, उदयोऽपि नास्ति। एवं पुंवेदोपशमनकालचरमसमये द्विचरमावलिद्वितीयादिसमयबद्धसमयप्रबद्धाः समयोनावलिमात्राश्चरमावलिबद्धसमयप्रबद्धाः संपूर्णावलिमात्रास्ते सर्वेऽपि मिलित्वा समयोनद्वयावलिमात्राः समयप्रबद्धा अनुपशमिता अवतिष्ठन्ते द्विचरमावलिप्रथमसमयबद्धसमयप्रबद्धस्य पुंवेदोपशमनकालचरमावलिचरमसमये सर्वात्मनोपशमितत्वात्। द्वितीयादिसमयबद्धसमयप्रबद्धानां किंचिन्न्यूनत्वेऽपि एकदेशविकृतमनन्यवद्भवतीति, न्यायेन सर्वेऽपि पुंवेदनवकबंधसमयप्रबद्धाः समयोनद्वयावलिमात्राः पुंवेदोपशमनकालचरमसमये उपशमनवर्जिताः संतीति श्रीमन्माधवचंद्रत्रैविद्यदेवानां तात्पर्यव्याख्यानं।

उच्छिष्टावलिः

०

० १

० १ २

० १ २ ३

० १ २ ३ ४

० १ २ ३ ४ ४

० १ २ ३ ४ ४ ४

उपशमनावलिः

० १ २ ३ ४ ४ ४ ४

१ २ ३ ४ ४ ४ ४

२ ३ ४ ४ ४ ४

३ ४ ४ ४ ४

बंधावलिः

४ ४ ४ ४

४ ४ ४

४ ४

४

॥ २६२ ॥ अथ पुंवेदोपशमनकालचरमसमये स्थितिबंधप्रमाणप्ररूपणार्थमिदमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– इतना विशेष है जो तिस अंतसमयविषै पुरुष वेदका एक समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्धनिकौं छोडि अवशेष सर्व उपशमावै है। नवीन जे समय प्रबद्ध बंधे ते नवक समय प्रबद्ध कहिए सो बंध समयतैं लगाय आवलीकालकौं बंधावली कहिए तिस बंधावलीविषै सो बंध्या द्रव्य उपशम होने योग्य नाहीं। अर एक समय प्रबद्धके उपशमावनेकी समय समय संबंधी आवलीमात्र फालि इहां हो है तातैं समय घाटि दोय आवलीमात्र समयप्रबद्ध उपशमै नाहीं। कैसैं? सो कहिए है–

उपशमकालका अंतविषै दोय आवली तिनका नाम इहां द्विचरमावली अर चरमावली है। सो द्विचरमावलीका प्रथम समयविषै जो समय प्रबद्ध बंध्या था सो बंधावली व्यतीत भएं चरमावलीका प्रथम समयतैं लगाय समय समय प्रति एक एक फालिका उपशमन करि चरमावलीका अंत समयविषै सर्व उपशम्या बहुरि द्विचरमावलीका द्वितीय समयविषै जो समय प्रबद्ध बंध्या था सो बंधावली व्यतीत भएं चरमावलीका द्वितीय समयतैं लगाय चरम आवलीका अंत समय पर्यंत अन्य फाली तौ उपशमै अर एक अंत फाली नाही उपशमी बहुरि ऐसैं ही द्विचरमावलीका तृतीयादि समयनिविषै बंधे समय प्रबद्ध ते बंधावली व्यतीत भएं चरमावलीका तृतीयादि समयतैं लगाय अंत समय पर्यंत समयनिविषै अन्य फाली तौ उपशमै अर क्रमतैं दोय तीन च्यारि आदि फाली उपशमी नाही। तहां ऐसैं क्रमतैं द्विचरमावलीका अंत समयविषै बंध्या समय प्रबद्धकी चरमावलीका अंत समयविषै एक फाली उपशमी अवशेष उपशमी नाहीं ऐसैं तौ द्विचरमावलीविषै बंधे समय प्रबद्धनिकी फाली न उपशमी। बहुरि चरमावलीके प्रथमादि सर्व समयनिविषै बंधे समय प्रबद्धनिके किछू भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यका उपशम भया नाहीं। जातैं तिनकी बंधावली व्यतीत नाहीं भई। बहुरि तातैं उपरिवर्ती उच्छिष्टावलीविषै पुरुषवेदका बंध भी अर उदय भी है नाहीं। ऐसैं पुरुष वेदकौं उपशम कालका अंत समयविषै द्विचमावरलीके तौ एक समय घाटि आवलीमात्र अर चरमाववलीके संपूर्ण आवलीमात्र मिलि एक समय घाटि दोय आवलीमात्र समय प्रबद्ध उपशमे नाहीं। इहां अंशकौं अंशीवत् कहिए इस न्यायकरि उपशमी नाहीं जे समय प्रबद्धकी फाली तिनका भी नाम समय प्रबद्ध ही कह्या है ऐसा जानना ॥ २६२ ॥

तच्चरिमे पुंबंधो सोलसवस्साणि संजलणगाण।
तदुगाणं सेसाणं संखेज्जसहस्सवस्साणि ॥ २६३ ॥

तच्चरमे पुंबंधः षोडशवर्षाणि संज्वलनकानाम्।
तद्द्विकानां शेषाणां संख्यसहस्रवर्षाणि ॥ २६३ ॥

सं० टी०— तस्य पुंवेदोपशमनकालस्य सवेदानिवृत्तिकरणस्य चरमसमये षोडशवर्षमात्रः पुंवेदस्थितिबंधः। संज्वलनचतुष्टयस्य स्थितिबंधो द्वात्रिंशद्वर्षप्रमितः। घातिचतुष्टयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः स्थितिबंधः। ततः संख्येयगुणो नामगोत्रयोः संख्यातसहस्रवर्षमात्रः स्थितिबंधः। ततः साधिको वेदनीयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः स्थितिबंधः ॥२६३॥

अथ पुंवेदस्य प्रथमस्थितौ आवलिद्वयावशेषायां संभवत्क्रियांतरप्रतिपादनार्थमिदमाह—

स० चं०—तिस पुरुषवेदका उपशमन काल पर्यंत सवेद अनिवृत्ति करण है ताका अंत समयविषै पुरुषवेदका सोलह वर्षमात्र संज्वलन चतुष्कका बत्तीस वर्षमात्र औरनिका संख्यात हजार वर्षमात्र तहां स्तोक तीन घातियानिका तातैं संख्यातगुणा नाम गोत्रका तातैं साधिक वेदनीयका स्थिति बंध हो है ॥ २६३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरिसस्स य पढमठिदी आवलिदोसुवरिदासु आगाला पडिआगाला छिण्णा पडियावलियादुदीरणदा ॥

पुरुषस्य च प्रथमस्थितिः आवलिद्वयोरुपरतयोरागालाः ।
प्रत्यागालाः छिन्नाः प्रत्यावलिकात उदीरणता ॥ २६४ ॥

सं० टी०— पुंवेदस्य प्रथमस्थितिः क्रमेण गलित्वा यदा द्व्यावलिमात्रावशेषा भवति तदा आगालप्रत्यागालौ व्युच्छिन्नौ । आवलिद्वयावशेषप्रथमसमयात्प्रभृति गुणश्रेणिनिर्जरापि व्युच्छिन्ना किंतु तदैवोदयावलिबाह्योपरितनावलिद्रव्यस्योदयावल्यामुदीरणापि पूर्वोक्तलक्षणा प्रारब्धा ॥ २६४ ॥ अंतरकरणसमाप्त्यनंतरसमयादारभ्य संक्रमविशेषप्ररूपणार्थमिदमाह—

स० चं०—पुरुषवेदकी अंतरायामके नीचैं कही थी जो प्रथम स्थिति तीहिंविषै दोय आवली अवशेष रहैं आगाल प्रत्यागालका व्युच्छेद भया । बहुरि दोय आवली अवशेष रहैं तहां प्रथम समयतैं लगाय पुरुषवेदकी गुणश्रेणि निर्जराका व्युच्छेद भया । तहां उदयावलीतैं बाह्य ऊपरि निषेकनिविषै तिष्ठता द्रव्यकौं उदयावलीविषै दीजिए है । ऐसी उदीरणा ही पाइए है । इनिका लक्षण पूर्वोक्त जानने ॥ २६४ ॥

**अंतरकदादु छण्णोकसायदव्वं ण पुरिसगे देदि ।
एदि हु संजलणस्स य कोधे अणुपुव्विसंकमदो ॥**

अंतरकृतात् षण्णोकषायद्रव्यं न पुरुषके ददाति ।
एति हि संज्वलनस्य च क्रोधे आनुपूर्विसंक्रमतः ॥ २६५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०— अंतरकृतादंतरकरणसमाप्तिसमयात्परं हास्यादिषण्णोकषायद्रव्यं पुंवेदे न संक्रमत्येव अपि तु संज्वलन क्रोधे एव संक्रमति पूर्वोदिष्टानुपूर्वीसंक्रमानतिक्रमात् ॥ २६५ ॥ अथ पुंवेदनवकबंधद्रव्यस्योपशमनविधानप्ररूपणार्थमिदमाह—

स० चं०—अंतर करनेतैं पीछैं हास्यादि छह नोकषायनिका द्रव्य है सो पुरुषवेदविषै संक्रमण नाहीं करै है संज्वलन क्रोधविषै ही संक्रमण करै हैं जातैं इहां आनुपूर्वी संक्रमण पाइए है ॥ २६५ ॥

पुरिसस्स उत्तणवकं असंखगुणियक्कमेण उवसमादि ।
संकमदि हु हीणकमेणधापवत्तेण हारेण ॥ २६६ ॥

पुरुषस्य उक्तनवकं असंख्यगुणितक्रमेण उपशमयति ।
संक्रमति हि हीनक्रमेणाधःप्रवृत्तेन हारेण ॥ २६६ ॥

सं० टी०— पुंवेदस्य प्रागुक्त नवकद्रव्यं समयोनद्व्यावलिमात्रसमयप्रबद्धप्रमितं स $\frac{ꝺ \mid ४२}{७ \mid २}$ पुंवेदनानिवृत्तिचरम-समये अनुपशमितं सदवतिष्ठते। पुनरपगतवेदप्रथमसमये पुंवेदोपशमनकालद्विचरमावलिद्वितीयसमयबद्धसमयप्रबद्धस्य सर्वात्मनोपशमितत्वात् द्विसमयोनद्व्यावलिमात्रसमयप्रबद्धरूपं पुंवेदनवकबंधसत्त्वमनुपशमितमास्ते। तस्मिन्नपगतवेदप्रथम-समये व्यतिक्रांतबंधावलिकसमयप्रबद्धस्य यावदुपशमितं द्रव्यं स $\frac{ꝺ}{७ \mid २ \mid गु}$ तदनंतरद्वितीयसमये ततोऽसंख्येयगुणं द्र-व्यमुपशमयति स $\frac{ꝺ}{७ \mid २ \mid गु}$ ꝺ एवं चरमफालिपर्यंतमसंख्यातगुणितक्रमेणोपशमनद्रव्यं ज्ञातव्यं। एवमितरेषामपि समयप्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बद्धानां स्वस्वबंधावलिन्यतिक्रांतसमयादारभ्य प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेणोपशमनफालिद्रव्यं नेतव्यं। एवमपगतवेद-प्रथमसमयादारभ्य समयोनद्व्यावलिमात्रकाले सर्वं पुंवेदनवकबंधमुपशमितं भवतीति ज्ञातव्यं। एको नवकबंधसमयप्रबद्धः एकावलिमात्रकाले उपशमितो भवति। अत एवावलिसमयमात्राणि एकसमयफालिद्रव्याणि कृतानि तान्यंकसंदृष्ट्या तावंति। ४। तथा पुंवेदनवकबंधस्यैकसमयप्रबद्धद्रव्यं स ३ अपगतवेदप्रथमसमये अथाप्रवृत्तभागहारेण खण्डयित्वा

७। २

तदेकभागद्रव्यं संज्वलनक्रोधद्रव्ये संक्रमयति स ३ अवशिष्टबहुभागद्रव्यं पुनरप्यथाप्रवृत्तभागहारेण खंडयित्वा

७। २। अ

१ ‸

तदेकभागद्रव्यं द्वितीयसमये संक्रमयति स ३ अ अवशिष्टं तद्बहुभागद्रव्यं पुनरप्यथाभागहारेण खंडयित्वा तदेकभागं तृ-

७। २। अ अ

१ ‸ १

तीयसमये संक्रमयति स ३। अ अ एवमनेन क्रमेण समयोनद्व्यावलिचरमसमयपर्यंतं विशेषहीनं द्रव्यं संक्रम-

७। २। अ अ अ

यति। तथा पुनः पुंवेदनवकबंधस्यापरं समयप्रबद्धद्रव्यं प्रतिसमयमसंख्यातभागहीनक्रमेण संक्रमयति, पुनरन्यत्समयप्रबद्ध-द्रव्यं प्रतिसमयं संख्यातभागहीनक्रमेण, पुनरन्यत्समयप्रबद्धद्रव्यं संख्यातगुणहीनक्रमेण संक्रमयति, पुनरपरं समयप्र-बद्धद्रव्यं प्रतिसमयमसंख्यातगुणहीनक्रमेण संक्रमयति। तथा पुनरन्यत्समयप्रबद्धद्रव्यं प्रतिसमयमसंख्यातभागवृद्धि-क्रमेण, पुनरन्यत्समयप्रबद्धद्रव्यं संख्यातभागवृद्धिक्रमेण, पुनरन्यत्समयप्रबद्धं संख्यातगुणवृद्धिक्रमेण, पुनरेकं समयप्र-बद्धद्रव्यमसंख्यातगुणवृद्धिक्रमेण संक्रमयति। चतुःस्थानपतितहानिवृद्धिपरिणतयोगसंचितसमयप्रबद्धानां द्रव्यहीना-धिकभावमाश्रित्य तत्संक्रमणद्रव्यस्यापि चतुःस्थानहानिवृद्धिक्रमस्य प्रवचनयुक्त्या प्रवृत्तिर्दर्शिता॥ २६६॥ अथापग-तवेदस्य प्रथमसमये स्थितिबंधप्रमाणप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०—पुरुषवेदके पूर्वोक्त समय प्रबद्ध जे नाहीं उपशमाए थे ते वेदरहित जो अ-पगत वेद अनिवृत्तिकरण ताके प्रथमादि समयनिविषै ऐसैं उपशमाइए है। जो पुरुषवेदका उपशम कालकी द्विचरमावलीका द्वितीय समयविषै बंध्या समय प्रबद्धकी एक फालि अव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शेष रही थी ताका अपगत वेदका प्रथम समयविषै उपशम हो है। ताकौं होतैं समयप्रबद्ध सर्व उपशम्या अवशेष दोय समय घाटि दोय आवलीमात्र समय प्रबद्ध रहैं तहां जाकी बंधावली व्यतीत भई ऐसा जो समयप्रबद्ध ताका द्रव्य अपगत वेदका प्रथम समयविषै जितना उपशमा तातैं द्वितीयादि समयनिविषै अंत फालि पर्यंत क्रमतैं असंख्यातगुणा द्रव्य उपशमाइए है और अन्य समय प्रबद्धनिका द्रव्यविषै बंधावली व्यतीत होतैं समय समय असंख्यात गुणा क्रम लीएं उपशम फालिनिका द्रव्य जानना। एक नवक समय प्रबद्ध एक आवलीकालविषै उपशमै तातैं तहां एक समय प्रबद्धकी आवली प्रमाण फाली जानना। ऐसैं अपगत वेदका प्रथम समयतैं लगाय समय घाटि दोय आवलीमात्र कालविषै पुरुषवेदके सर्व नवक समय प्रबद्ध उपशमाइए है। ऐसैं तौ उपशम विधान जानना।

बहुरि पुरुषवेदका कोई एक नवक समय प्रबद्धकौं अधः प्रवृत्त भागहारका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्य है सो अपगत वेदका प्रथम समयविषै संज्वलन क्रोध रूप होइ संक्रमण करै है। बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्यकौं अधः प्रवृत्त भागहारका भाग देइ तहां एक भाग द्वितीय समयविषै संक्रमण करै है। बहुरि अवशेष बहुभागकौं तैसैं ही भाग दीएं एकभाग तृतीय समयविषै संक्रमण करै। ऐसैं समय घाटि दोय आवलीका अंतपर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं संक्रमण करै है। बहुरि अन्य कोई नवक बंधका समय प्रबद्ध समय समय प्रति असंख्यात भाग घटता क्रमकरि कोई संख्यात भाग घटता क्रमकरि कोई संख्यात गुणा घटता क्रमकरि कोई असंख्यात गुणा घटता क्रमकरि कोई संख्यात भागवृद्धि क्रमकरि कोई असंख्यात भागवृद्धि क्रमकरि कोई संख्यात गुणा वृद्धि क्रमकरि कोई असंख्यात गुणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वृद्धि क्रमकरि संज्वलन क्रोधविषै संक्रमण करै है। जातैं चतुः स्थान पतित हानिवृद्धि रूप योगनिकरि बंधे समय प्रबद्धनिकी द्रव्य हीनाधिक संभवै है। तातैं संक्रमण द्रव्यकैं भी चतुः-स्थान पतित हानि वृद्धिका अनुक्रम संभवै है ॥२६६॥

पढमावेदे संजलणाणं अंत्तोमुहुत्तपरिहीणं।
बस्साणं बत्तीसं संखसहस्सियरगाणठिदिबंधो ॥

प्रथमावेदे संज्वलनानां अंतर्मुहूर्तपरिहीनम्।
वर्षाणां द्वात्रिंशत् संख्यसहस्रमितरेषां स्थितिबंधः ॥ २६७ ॥

सं० टी०— प्रथमसमयवर्तिन्यपगतवेदे संज्वलनक्रोधादिचतुष्टयस्य स्थितिबंधोऽतर्मुहूर्तहीनो द्वात्रिंशद्वर्षप्रमितः। सवेदचरमसमयवर्तिनः प्राक्तनस्थितिबंधात्संपूर्णद्वात्रिंशद्वर्षमात्रादंतर्मुहूर्तस्थितिबंधापसरणांशेनापगतवेदप्रथमसमये एवं-विधस्थितिबंधस्य युक्तत्वात्। शेषकर्मणां तीसियवीसियवेदनीयानां प्राक्तनस्थितिबंधात्संख्यातगुणहीनः स्थितिबन्धः संख्यातसहस्रवर्षमात्र एव पूर्वोक्ताल्पबहुत्वविधानेन ज्ञातव्यः ॥ २६७ ॥ अथापगतवेदस्य संभवत्क्रियांतरप्रदर्शनार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं०—अपगत वेदका प्रथम समयविषै संज्वलन चतुष्कका तौ अंतर्मुहूर्त घाटि बत्तीस वर्षमात्र स्थिति बंध है जातैं बत्तीस वर्ष स्थिति थी तामैं एकवार स्थितिबंधापसरण करि अंतर्मुहूर्त घट्या। बहुरि अन्य कर्मनिका पूर्व स्थिति बंधतैं संख्यात गुणा घटता पूर्वोक्त प्रकार हीनाधिक क्रम लीएं संख्यात हजार वर्षमात्र स्थिति बंध हो है ॥ २६७ ॥

पढमावेदो तिविहं काहं उवसमदि पुव्वपढमठिदी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समयाहियआवलियं जाव य तक्कालठिदिबंधो ॥

प्रथमावेदस्त्रिविधं क्रोधं उपशमयाति पूर्वंप्रथमस्थितिः ।
समयाधिकावलिकां यावच्च तत्कालस्थितिबन्धः ॥

सं० टी०— प्रथमसमयवर्त्यपगतवेदानिवृत्तिकरणविशुद्धिसंयतः तत्कालप्रथमसमयादारभ्य पुंवेदनवकबंधेन सहाप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनक्रोधत्रयमुपशमयति । तत्र संज्वलनक्रोधस्योदयमानस्य पूर्वमंतरकरणप्रारंभे स्थापितांतर्मुहूर्तमात्री प्रथमस्थितिः पुंवेदप्रथमस्थितौ विशेषाधिका सैवेदानीमपि गलितावशेषप्रमाणा समयाधिकावलिमात्रावशेषा यावत्तावत्प्रवर्तते । उच्छिष्टावल्याः प्रथमस्थितिव्यपदेशासंभवात् । उपरि मानादीनां यथाभिनवा प्रथमस्थितिः करिष्यति तथा संज्वलनक्रोधस्य नूतनप्रथमस्थितिकरणानुपपत्तेश्च । संज्वलनक्रोधस्य प्रथमस्थितौ यदा आवलिप्रत्यावलिद्वयमवशिष्यते तदा आगालप्रत्यागालौ व्युच्छिन्नौ । तदैव संज्वलनक्रोधस्य गुणश्रेणिनिर्जरापि व्युच्छिन्ना केवलं प्रागुक्तक्रमेण प्रत्यावलिद्रव्यस्योदीरणा भवति । तस्य क्रोधत्रयस्योपशमनकालचरमसमये संज्वलनक्रोधप्रथमस्थितौ समयाधिकावलिमात्रावशेषकर्मणां स्थितिबंध ईदृशो भवतीति वक्ष्यते ॥ २६८ ॥

स० चं०— प्रथम समयवर्ती अपगतवेदी संयमी सो अपगतवेदका प्रथम समयतैं लगाय पुरुषवेदका नवक समयप्रबद्ध सहित अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान संज्वलन इनि तीनों क्रोधनिकौं उपशमावै है । तहां उदय रूप जो संज्वलन क्रोध ताकी प्रथम स्थिति पूर्वै जो अंतर करणका प्रारंभविषै अंतर्मुहूर्तमात्र प्रथम स्थिति स्थापी थी ताका प्रमाण पुरुषवेदकी प्रथम स्थितितैं साधिक था तिसविषै व्यतीत भएं पीछैं जो अवशेष रह्या तामैं एक समय अधिक आवलीमात्र अवशेष रहैं तहांतैं पहिलैं इहां संज्वलन क्रोधकी प्रथम स्थिति जाननी । जातैं उच्छिष्टावली अवशेष रहैं प्रथम स्थिति नाम न पावै है । बहुरि जैसैं मानादिककी नवीन प्रथम स्थितिका स्थापन करैंगे तैसैं क्रोधकी प्रथम स्थिति नवीन न हो है ३२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जातैं संज्वलन क्रोधका ही उदय चल्या आवै है तातैं अंतर करणविषै स्थापी जो प्रथम स्थिति ताका ही इहां ग्रहण किया सो इस प्रथम स्थितिविषै आवली प्रत्यावली ए दोय अवशेष रहैं आगाल प्रत्यागालका अर संज्वलन क्रोधकी गुणश्रेणि निर्जराका व्युच्छेद हो है। द्वितीयावलीका द्रव्यकौं उदयावलीविषै देनेरूप केवल उदीरणा ही पाइए है।२६८॥

संजलणचउक्काणं मासचउक्कं तु सेसपयडीणं।

वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति णियमेण॥२६९॥

संज्वलनचतुष्काणां मासचतुष्कं तु शेषप्रकृतीनाम्।

वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति नियमेन॥ २६९॥

सं० टी०— संज्वलनक्रोधादिचतुष्टयस्यापगतवेदप्रथमसमयादारभ्यांतर्मुहूर्तमात्रस्थितिबन्धापसरणेषु संख्यातसहस्रेषु गतेषु क्रोधत्रयोपशमनकालचरमसमये स्थितिबंधश्चतुर्मासमात्रः। शेषकर्मणां तीसियवीसियवेदनीयानां प्राक्तनस्थितिबंधात्संख्यातगुणहीनोऽपि संख्यातसहस्रवर्षमात्र एव पूर्वोक्तालपबहुत्वक्रमेण प्रवर्तते॥ २६९॥ अथ क्रोधद्रव्यस्य संक्रमविशेषप्रदर्शनार्थमिदमाह—

स० चं०— अपगतका प्रथम समयतैं लगाय अंतर्मुहूर्तमात्र आयाम धरें ऐसे संख्यात हजार स्थितिबंध भएं क्रोधत्रिकका उपशम कालका अंतसमयविषै संज्वलन चतुष्कका स्थितिबंध च्यारि मासमात्र हो है। बहुरि तिस ही अंतसमयविषै और कर्मनिका पूर्वस्थितिबंधतैं संख्यातगुणा घट्या ऐसा संख्यात हजार वर्षमात्र पूर्वोक्त प्रकार हीनाधिकपना लीएं स्थितिबंध हो है॥ २६९॥

कोहदुगं संजलणगकोहे संछुहदि जाव पढमठिदी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवलितियं तु उवरिं संछुहदि हु माणसंजलणे ॥

क्रोधद्विकं संज्वलनक्रोधे संक्रामति यावत् प्रथमस्थितिः ।
आवलित्रिकं तु उपरि संक्रामति हि मानसंज्वलने ॥ २७० ॥

सं० टी०– अपगतवेदे प्रथमसमयादारभ्य संज्वलनक्रोधप्रथमस्थितिरावलित्रयावशेषा यावत्तावद्भवति । तावद-प्रत्याख्यानप्रत्याख्यानक्रोधद्वयद्रव्यं गुणसंक्रमेण गृहीत्वा संज्वलनक्रोधे संक्रमयति । तत्र प्रथमा संक्रमावलिः, द्वितीया उपशमनावलिः, तृतीया उच्छिष्टावलिरिति व्यपदिश्यते । ततः परं तद्द्रव्यं संक्रमणावलिचरमसमयपर्यंतं संज्वलनमाने संक्रमयति ॥ २७० ॥ अथ उपशमनावलिचरमसमये संभवत्क्रियाविशेषप्ररूपणार्थमिदमाह—

स० चं – अपगत वेदका प्रथम समयतैं लगाय संज्वलन क्रोधकी प्रथम स्थितिविषै तीन आवली अवशेष रहैं तावत् अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान क्रोधादिकका द्रव्यकौं गुणसंक्रम भागहार करि ग्रहि संज्वलन क्रोधविषै संक्रम कराइए है। बहुरि संक्रमावली १ उपशमावली २ उच्छिष्टावली ३ ए तीन आवलीं रहीं तिनविषै संक्रमावलीका अंतसमय पर्यंत तिन दोऊनिका द्रव्य संज्वलन मानविषै संक्रमण हो है ॥ २७० ॥

कोहस्स पढमठिदी आवलिसेसे तिकोहमुवसंतं ।
ण य णवकं तत्थंतिमबंधुदया होंति कोहस्स २७१

क्रोधस्य प्रथमस्थितिः आवलिशेषं त्रिक्रोधमुपशांतं ।
न च नवकं तत्रांतिमबंधोदया भवंति क्रोधस्य ॥ २७१ ॥

सं० टी० -संज्वलनक्रोधस्य प्रथमस्थितौ उच्छिष्टावलिमात्रावशेषायामुपशमनावलिचरमसमये क्रोधत्रयद्रव्यं समयो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नद्वयावलिमात्रसमयप्रबद्धनवकबंधं मुक्त्वा पूर्वोक्तविधानेन चरमफालिरूपेण निरवशेषं स्वस्थाने एवोपशमयति । तस्मिन्नेवोपशमनावलिचरमसमये संज्वलनक्रोधस्य बंधोदयौ युगपदेव व्युच्छिन्नौ । तस्मिन्नेव समये संज्वलनक्रोधस्योच्छिष्टावलिप्रथमनिषेकः संज्वलमाने थिउक्कक्रमेण संक्रम्योदयमागमिष्यति अतः कारणात् संज्वलनक्रोधप्रथमस्थितौ समयोनोच्छिष्टावलिरवशिष्टेति ग्राह्यं । एवं क्रोधत्रयमुपशमितं ॥ २७१ ॥ अथ मानत्रयोपशमनविधानप्रदर्शनार्थं गाथापंचकमाह—

स० चं०— संज्वलन क्रोधकी प्रथम स्थितिविषै उच्छिष्टावली अवशेष रहैं उपशमनावलीका अंतसमयविषै समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्ध विना पूर्वोक्त प्रकार चरमफालिरूप करि समस्त संज्वलन क्रोधका द्रव्य अपने रूप ही रहता उपशम भया । तहां ही संज्वलन क्रोधका बंध वा उदयका व्युच्छेद भया । तिस ही समयविषै उच्छिष्टावलीका प्रथम निषेक है सो संज्वलन मानविषै वक्ष्यमाण लक्षण रूप जो थिउक्क संक्रमण ताकरि संक्रमण रूप होइ उदयकौं प्राप्त होसी। यातैं संज्वलन क्रोधकी प्रथम स्थिति विषै समय घाटि उच्छिष्टावली अवशेष रही कहिए है। ऐसैं कोधात्रिकका उपशम भया ॥

से काले माणस्स य पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि ।
पढमट्ठिदिम्मि दव्वं असंखगुणियक्कमे देदि ॥

तस्मिन् काले मानस्य च प्रथमस्थितिकारवेदको भवति ।
प्रथमस्थितौ द्रव्यं असंख्यगुणितक्रमेण ददाति ॥ २७२ ॥

सं० टी०—क्रोधत्रयोपशमनानंतरसमये अयमनिवृत्तिकरणसंयतः संज्वलनमानस्यांतर्मुहूर्तमात्रप्रथमस्थितेः कारको वेदकश्च भवति तद्यथा—संज्वलनमानस्य द्वितीयस्थितौ स्थितिसत्त्वद्रव्यादस्मात् स ३ । १२— अपकर्षणभागहारखंडि-
७ । ८

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तैकभागं गृहीत्वा पुनः पल्यासंख्यातभागेन खं डयित्वा तदेकभागमुदयावलिप्रथमसमयादारभ्य इदानीं क्रियमाणप्रथमस्थितिचरमसमयपर्यंतं प्रक्षेपयोगेत्यादिना प्रतिनिषेकमसंख्यातगुणितक्रमेण निक्षिपति । पुनः पल्यासंख्यातबहुभागं द्वितीयस्थितौ 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा' इत्यनेन विशेषहीनक्रमेण उपर्यतिस्थापनावलिं मुक्त्वा निक्षिपति । पुनर्द्वितीयादिसमयेष्वपि प्रथमसमयादपकृष्टद्रव्यादसंख्येयगुणितक्रमेण द्रव्यमपकृष्य प्रागुक्तप्रकारेण प्रथमद्वितीयस्थित्योर्निक्षिपति । प्रतिसमयं प्रथमस्थितिप्रथमनिषेकमेकैकमुदयमानमनुभवति च ॥ २७२ ॥

स० चं०– तीनों क्रोधका उपशम होनेके अनंतरि समयविषै यहु संयमी संज्वलन मानकी अंतर्मुहूर्तमात्र प्रथम स्थितिका कारक कहिए कर्ता अर वेदक कहिए उदयका भोक्ता हो है सो कहिए है—

संज्वलन मानकी प्रथम स्थितिके ऊपरिवर्ती जो द्वितीय स्थितिका द्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागकौं ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भागकौं उदयावलीका प्रथम समयतैं लगाय इहां करी जो प्रथम स्थिति ताका अंतसमय पर्यंत सम्बन्धी जे निषेक तिनविषै 'प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंड' इत्यादि विधानतैं असंख्यातगुणा क्रम लीएं निक्षेपण करिए है । अवशेष बहुभागकौं द्वितीय स्थितिविषै अंतके अतिस्थापनावलीमात्र निषेक छोडि अन्य सर्व निषेकनिविषै 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा' इत्यादि विधानतैं विशेष घटता क्रम लीएं निक्षेपण करिए है । बहुरि द्वितीयादि समयनिविषै प्रथम समयविषै अपकर्षण कीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा क्रम लीएं द्रव्यकौं ग्रहि पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है । बहुरि समय समय उदय आया प्रथम स्थितिका एक एक निषेककौं भोगवै है ॥ २७२ ॥

पढमट्ठिदिसीसादो बिदियादिम्हि य असंखगुणहीणं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्तो विसेसहीणं जाव अइच्छावणमपत्तं ॥ २७३ ॥

प्रथमस्थितिशीर्षतः द्वितीयादौ च असंख्यगुणहीनम् ।
ततो विशेषहीनं यावत् अतिस्थापनमप्राप्तम् ॥ २७३ ॥

सं० टी०—प्रथमस्थितिचरमसमयनिक्षिप्तद्रव्यात् द्वितीयस्थितिप्रथमनिषेके निक्षिप्तद्रव्यमसंख्यातगुणहीनं, प्रथमस्थितिशीर्षद्रव्यस्य पल्यभागहारभूतासंख्यातरूपबाहुल्यविशेषादसंख्यातसमयप्रबद्धमात्रत्वात् । द्वितीयस्थितिप्रथमनिषेकनिक्षिप्तद्रव्यस्य च द्व्यर्धगुणहान्यपकर्षणभागहारभक्तत्वेनैकसमयप्रबद्धासंख्येयभागमात्रत्वात् । ततो द्वितीयस्थितेः प्रथमनिषेकद्रव्यादुपरितननिषेकेषु विशेषहीनक्रमेणातिस्थापनावलेरधोनिक्षिप्तद्रव्यं विशेषतोऽसंख्येयगुणहीनमेव । संज्वलनमानस्य प्रथमस्थितिकरणवेदनप्रथमसमयादारभ्य मानत्रयस्य द्वितीयस्थितिद्रव्यं प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेणोपशमयति तदैव संज्वलनक्रोधस्य समयोनोच्छिष्टावलिमात्रनिषेकद्रव्यमपि संज्वलनमानस्योदयावल्यां समस्थितिनिषेकेषु प्रतिसमयमेकैकनिषेकक्रमेण संक्रम्य उदयमागमिष्यति । संज्वलनक्रोधोच्छिष्टावलिनिषेकाः मानोदयावलिनिषेकेषु संक्रम्य अनंतरसमयेषूदयमागच्छंतीति तात्पर्यं । अयमेव थिउक्कसंक्रम इति भण्यते ॥ २७३ ॥

स० चं०— प्रथम स्थितिका शीर्ष जो अंतसमय तीहिंविषै निक्षेपण कीया जो द्रव्य तातैं द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकविषै निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यातगुणा घटता है । तातैं प्रथम स्थितिका शीर्षविषै तौ भागहार पल्य ताका भागहार असंख्यात है । तातैं असंख्यात समयप्रबद्धमात्र द्रव्य निक्षेपण करै है । अर द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकविषै भागहार द्व्यर्ध गुणहानि है । तातैं समयप्रबद्धका असंख्यातवां भागमात्र द्रव्य निक्षेपण हो है । बहुरि द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकतैं उपरि निषेकनिविषै विशेष घटता क्रम लीएं यावत् अतिस्थापनावली प्राप्त न होइ तावत् द्रव्यका निक्षेपण हो है । बहुरि संज्वलन मानकी प्रथम स्थितिका प्रथम समयतैं लगाय तीन मानका द्वितीय स्थितिविषै तिष्ठता द्रव्य- ३३०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कौं समय समय असंख्यातगुणा क्रम लीएं उपशमावै है। तहां ही संज्वलन क्रोधके समय घाटि उच्छिष्टावलीमात्र निषेक ते अपनी समान स्थिति लीएं जे संज्वलन मानकी उदयावलीके निषेक तिनविषै समय समय एक एक निषेकका अनुक्रम करि संक्रमण रूप होइ ताके अनंतरवर्ती समयविषै उदय हो हैं। इस प्रकार संक्रम होइ ताहीका नाम थिउक संक्रम कहिए है ॥ २७३ ॥

माणस्स य पढमठिदी सेसे समयाहिया तु आवलियं।
तियसंजलणगबंधो दुमास सेसाण कोह आलावो ॥

मानस्य च प्रथमस्थितिः शेषे समयाधिकां तु आवलिकाम्।
त्रिकसंज्वलनकबंधो द्विमासं शेषाणां क्रोध आलापः ॥ २७४ ॥

सं० टी०—संज्वलनमानस्य प्रथमस्थितौ समयाधिकावल्यामवशिष्टायां उपशमनादिविधानैः संख्यातसहस्रस्थितिबंधापसरणेषु गतेषु मानोपशमनकालचरमसमये संज्वलनमानमायालोभानां स्थितिबंधो मासद्वयप्रतिमितो भवति। शेषकर्मणां स्थितिबंधः संख्यातगुणहीनोऽपि क्रोधालापवत्त्रीसियादीनां पूर्वोक्ताल्पबहुत्वयुक्तः संख्यातसहस्रवर्षमात्र एव ॥२७४॥

स० चं०— संज्वलन मानकी प्रथम स्थितिविषै समय अधिक आवली अवशेष रहैं संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण होनेतैं मानके उपशम कालका अंतसमयविषै संज्वल मान माया लोभका स्थिति बंध दोय मास हो हैं। अर और कर्मनिका पूर्व स्थिति बंधतैं संख्यात गुणा घटता है तथापि पूर्वोक्तवत् अल्प बहुत्व लिये संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति बंध हो है ॥ २७४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माणदुगं संजलणगमाणे संछुहदि जाव पढमठिदी।
आवलितियं तु उवरिं मायासंजलणगे य संछुहदि॥

मानद्विकं संज्वलनकमाने संक्रामति यावत् प्रथमस्थितिः।
आवलित्रयं तु उपरि मायासंज्वलनके च संक्रामति ॥ २७५ ॥

सं० टी०—संज्वलनमानप्रथमस्थितौ यावदावलित्रयमवशिष्यते तावदप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानमानद्वयद्रव्यं संज्वलनमाने एव पूर्वोक्तविधानेन संक्रामति ततः परं संक्रमणावलिचरमसमयपर्यंतं तद्द्वयद्रव्यं संज्वलनमायाद्रव्ये एव संक्रामति। संज्वलनमानद्रव्यं तु नियमेन संज्वलनमायायामेव संक्रामति ॥ २७५ ॥

स० चं०—संज्वलन मानकी प्रथम स्थितिविषै तीन आवली अवशेष रहैं तहांतैं पहलैं अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान मानद्विक है सो संज्वलन मानहीविषै पूर्वोक्त विधानकरि संक्रमण करै है। तातैं परै संक्रमणावलिके अंत समय पर्यंत तिन मानद्विकका द्रव्य संज्वलन माया विषै संक्रमण करै है। बहुरि संज्वलन मानका द्रव्य है सो पहलैं वा इहां नियम करि संज्वलन माया ही विषै संक्रमण करै है॥ २७५॥

माणस्स य पढमठिदी आवलिसेसे तिमाणमुवसंतं
ण य णवकं तत्थंतिमबंधुदया होंति माणस्स २७६

मानस्य च प्रथमस्थितौ आवलिशेषे त्रिमानमुपशांतं।
न च नवकं तत्रांतिमबंधोदयौ भवतः मानस्य ॥ २७६ ॥ ३३२

सं० टी०—एवं मानत्रयद्रव्यं संज्वलनमानप्रथमस्थितावावलिमात्रावशेषायामुपशमनावलिचरमसमये समयोनद्व्यावलिमात्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संज्वलनमाननवकबंधसमयप्रबद्धान् मुक्त्वा सर्वमुपशमितं भवति। तस्मिन्नेवोपशमनावलिचरमसमये संज्वलनमानस्य बंधोदयौ युगपद् व्युच्छिन्नौ। पूर्ववन्मानत्रयस्योच्छिष्टावलिप्रथमनिषेको मायायां थिउक्कसंक्रमेण संक्रम्योदेष्यतीति विशेषो ज्ञातव्यः ॥ २७६ ॥ अथ मायात्रयोपशमनविधानार्थं गाथाचतुष्टयमाह—

स० चं०—संज्वलन मानकी प्रथम स्थितिविषै आवली अवशेष रहै उपशमनावलीका अंत समयविषै समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समय प्रबद्ध बिना अन्य समस्त तीन मानका द्रव्य उपशम्या तब ही उपशमावलीका अंत समयविषै संज्वलन मानका बंध वा उदयकी व्युच्छित्ति भई। पूर्ववत् मानात्रिककी उच्छिष्टावलीका प्रथम निषेक मायाविषै थिउक्क संक्रमण करि संक्रमण रूप होइ उदय होसी ॥ २७६ ॥

से काले मायाए पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि।
माणस्स य आलावो दव्वस्स विभंजणं तत्थ ॥

तस्मिन् काले मायायाः प्रथमस्थितिकारवेदको भवति।
मानस्य च आलापो द्रव्यस्य विभजनं तत्र ॥ २७७ ॥

सं० टी०—मानत्रयोपशमनानंतरसमये मायासंज्वलनस्य प्रथमस्थितेः कारको वेदकश्च भवति। तत्र संज्वलनमायाद्रव्यस्यापकर्षणनिक्षेपविभागो मानद्रव्यवदालाप्यतां विशेषाभावात्। तदैव संज्वलनमानोच्छिष्टावलिनिषेकाः थिउक्कसंक्रमेण संज्वलनमायोदयावलिनिषेकेषु समस्थितिकेषु संक्रम्योदेष्यंति। संज्वलनमानस्य समयोनद्व्यावलिमात्रा नवकबंधसमयप्रबद्धाश्च तदैव समयोनद्व्यावलिमात्रकालेनोपशाम्यंते ॥ २७७ ॥

स० चं०—तीन मानका उपशमके अनंतरि संज्वलन मायाकी प्रथम स्थितिका कारक अर वेदक हो है तहां संज्वलन माया द्रव्यका अपकर्षण निक्षेपणका विभाग मान द्रव्यवत् ३३६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहना। तब ही संज्वलन मानकी उच्छिष्टावलीके निषेक थिउक संक्रमण करि संज्वलन मायाकी उदयावलीके अपने समान स्थिति रूप निषेकनिविषै संक्रमकरि उदय होसी। बहुरि संज्वलन मानके समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समय प्रबद्ध ते तब ही समय घाटि दोय आवलीमात्र कालकरि उपशमै हैं ॥ २७७ ॥

मायाए पढमठिदी सेसे समयाहियं तु आवलियं।
मायालोहगबंधो मासं सेसाण कोह आलाओ ॥

मायायाः प्रथमस्थितौ शेषे समयाधिकां तु आवलिकां।
मायालोभगबन्धः मासं शेषाणां क्रोधे आलापः ॥ २७८ ॥

सं० टी०— मायासंज्वलनस्य प्रथमस्थितौ समयाधिकावल्यामवशिष्टायां संज्वलनमायालोभयोः स्थितिबंधो मासमात्रः शेषकर्मणां क्रोधवदालापः कर्तव्यः पूर्वोक्तालपबहुत्वेन संख्यातवर्षसहस्रमात्रस्थितिबंध इत्यर्थः ॥ २७८ ॥

स० चं०—मायाकी प्रथम स्थितिविषै समय अधिक आवली अवशेष रहैं संज्वलन माया अर लोभका तौ मासमात्र स्थितिबंध हो है और कर्मनिका क्रोधवत् आलाप करना पूर्वोक्त प्रकार हीनाधिकपना लीएं संख्यात हजार वर्षमात्र स्थितिबंध है ॥ २७८ ॥

मायदुगं संजलणगमायाए छुहदि जाव पढमठिदी।
आवलितियं तु उवरिं संछुहदि हु लोहसंजलणे ॥

मायाद्विकं संज्वलनगमायायां संक्रामति यावत् प्रथमस्थितिः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवलित्रिकं तु उपरि संक्रामति हि लोभसंज्वलनं ॥ २७९ ॥

सं० टी०— मायासंज्वलनप्रथमस्थितौ आवलित्रयं यावदवशिष्यते तावदप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानमाया-द्वयद्रव्यं मायासंज्वलने एव संक्रामति । ततः परं संक्रमणावल्यां संज्वलनलोभे संक्रामति ॥ २७९ ॥

स० चं०—संज्वलन मायाका प्रथम स्थितिविषै यावत् तीन आवली अवशेष रहैं तावत् अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान मायाद्विकका द्रव्य संज्वलन मायाविषै ही संक्रमण करै है। तातैं परैं संक्रमणावलीविषै तिनिका द्रव्य संज्वलन लोभविषै संक्रमण करै है ॥ २७९ ॥

मायाए पढमठिदी आवलिसेसेत्ति मायमुवसंतं।
ण य णवकं तत्थंतिम बंधुदया होंति मायाए ॥

मायायाः प्रथमस्थितौ आवलिशेषे इति मायमुपशांतं।
न च नवकं तत्रांतिमे बंधोदयौ भवतः मायायाः ॥२८० ॥

सं० टी०— संज्वलनमायाप्रथमस्थितौ आवलिमात्रावशिष्टायामुपशमनावलिचरमसमये मायात्रयं समयोनद्व्या-वलिमात्रनवकबंधसमयप्रबद्धान् मुक्त्वा अन्यत्सर्वं सर्वात्मनोपशमितं भवति । तस्मिन्नेव समये उच्छिष्टावलिप्रथमनि-षेकः संज्वलनलोभोदयावलिप्रथमनिषेके थिउक्कसंक्रमेण संक्रामति । तस्मिन्नेव समये मायासंज्वलनस्य बंधोद-यौ व्युच्छिन्नौ ॥ २८० ॥ अथ लोभत्रयोपशमनविधानप्ररूपणार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं०—मायाकी प्रथम स्थितिविषै आवली अवशेष रहैं उपशमनावलीका अंत समयविषै समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समय प्रबद्ध बिना अन्य सर्व मायाका द्रव्य उपशम्या। ताही समयविषै उच्छिष्टावलीका प्रथम निषेक है सो संज्वलन लोभका उदयावलीका प्रथम निषेकविषै थिउक्क संक्रमणकरि संक्रमै है। तिस ही समयविषै संज्वलन मायाका बंध वा उदयकी व्युच्छित्ति भई ॥ २८० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से काले लोहस्स य पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि ।
ते पुण वादरलोहो माणं वा होदि णिक्खेओ ॥

स्वे काले लोभस्य च प्रथमस्थितिकारवेदको भवति ।
तत् पुनः वादरलोभः मानो वा भवति निक्षेपः ॥ २८१ ॥

सं० टी०— मायात्रयोपशमनानंतरसमये लोभत्रयोपशमनं प्रारभमाणः संज्वलनलोभस्य प्रथमस्थितेः कारको-वेदकश्च भवति । स पुनरनिवृत्तिकरणो (बादर) वादरलोभोदयमनुभवन् वादरसांपराय इत्युच्यते । अत्र संज्वलनलो-भद्रव्यादपकृष्य प्रथमस्थितौ निक्षेपः संज्वलनमानप्रथमस्थितिनिक्षेपवत्कर्तव्यः । तस्मिन्नेव समये मायासंज्वल-नस्य समयोनद्व्यावलिमात्रनवकबंधसमयप्रबद्धान् पूर्वोक्तविधानेनोपशमयति समयोनोच्छिष्टावलिमात्रनिषेकांश्च प्राग्व-त्स्थितोक्तसंक्रमेण संज्वलनलोभे संक्रमयति ॥ २८१ ॥

स० चं०—मायाका उपशमनेके अनंतरि संज्वलन लोभकी प्रथम स्थितिका कारक अर वेदक हो है । सो अनिवृत्ति करण जीव है सो वादर कहिए स्थूल जो लोभ ताकौं अनुभवता वादर सांपराय कहिए है । इहां संज्वलन लोभका द्रव्यका अपकर्षण करि प्रथम स्थितिविषै निक्षेपण कीजिए है । ताका विधान मानका प्रथम स्थितिविषै जैसैं निक्षेपण कीया था तैसैं जानना । तिसही समय संज्वलन मायाके समय घाटि दोय आवलीमात्र न-वक समय प्रबद्धनिकौं पूर्वोक्त प्रकारकरि उपशमावै है । अर समय घाटि उच्छिष्टावलीमात्र मायाके निषेकनिका संज्वलन लोभविषै थिउक्क संक्रमण हो है ॥ २८१ ॥

पढमट्ठिदिअद्धंते लोहस्स य होदि दिणुपुधत्तं तु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वस्ससहस्सपुधत्तं सेसाणं होदि ठिदिबंधो ॥ २८२ ॥

प्रथमस्थित्यर्धांते लोभस्य च भवति दिनपृथक्त्वं तु ।
वर्षसहस्रपृथक्त्वं शेषाणां भवति स्थितिबंधः ॥ २८२ ॥

सं० टी०— मायात्रयोपशमनानन्तरसमयादारभ्य संज्वलनबादरलोभवेदककालोऽनिवृत्तिकरणचरमसमयपर्यंतो भवति । ततः परं सूक्ष्मसांपरायचरमसमयपर्यंतः संज्वलनसूक्ष्मलोभवेदककालो भवति । उभयोऽपि मिलित्वा लोभवेदकाद्धेति उच्यते । स च लोभवेदककालोंऽतर्मुहूर्तमात्रः तस्य संदृष्टिः २ १ इदं संख्यातेन खण्डयित्वा तद्बहुभागं २ १ १ / १ त्रिषु स्थानेषु विभज्य स्थापयेत्— २ १ १ / १ ३   २ १ १ / १ ३   २ १ १ / १ ३

पुनस्तदेकभागं संख्यातेन खण्डयित्वा बहुभागं प्रथमस्थाने दद्यात् २ १ १ पुनरवशिष्टैकभागं अपरेण संख्यातेन खंडयित्वा तद्बहुभागं द्वितीयस्थाने दद्यात् २ १ १ / १ १ तदेकभागं तृतीयस्थाने दद्यात् २ १ १ / १ १ १ स्थानत्रयसंदृष्टिः—

२ १ १ / १ । ३   २ १ १ / १ । ३   २ १ १ / १ । ३

२ १ १ / १ १   २ १ १ / १ १ १   २ १ / १ १ १

अत्र प्रथमभागसंज्वलनबादरलोभवेदकाद्धा प्रथमार्धः । द्वितीयो भागः सूक्ष्मकृष्टिकरणकालः । तृतीयो भागः सूक्ष्मकृष्टिवेदककालः । स एव सूक्ष्मसांपरायकालः । अत्र प्रथमद्वितीयभागयोर्मेलने लोभवेदकाद्धा द्वित्रिभागमात्रं साधिकं प्रथमस्थितिप्रमाणं भवति २ १ २ / २ तद्यथा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमद्वितीयभागयोः तावद्बहुभागं मिलितमिदं २७१ ७ २ अत्रैतावद्दणं २ ७।७। २ प्रक्षिप्यापवर्तिते एवं २ ७। २ द्वितीयभागविशेषघने २ ७ ७ एतावद्दणं २ ७। प्रक्षिप्यापवर्त्य २ ७ प्रथमभागविशेषघने प्रक्षिप्यापवर्तिते एवं २ ७ अस्मिन् त्रिभिः समच्छेदीकृते २ ७। ३ द्वितीयऋणेन साधिकं प्रथमऋणं २ ७। ७। २ विशोध्यावशिष्टं घनं पूर्वानीतप्रथमद्वितीयभागद्वयबहुभागद्रव्ये लोभवेदकाद्धा द्वित्रिभागमात्रे प्रक्षिपेत् २ ७। २ इयमावल्यधिकसंज्वलनबादरलोभप्रथमस्थितिर्भवति। एतस्याः प्रथमार्धो लोभवेदककालस्य साधिकत्रिभागमात्रो भवति। तथाहि—

प्रथमभागबहुभागद्रव्ये २ ७ ७ एतावद्दणं २ ७। ७ प्रक्षिप्यापवर्तिते लोभवेदकाद्धात्रिभागो भवति २ ७ पुनः प्रथमभागविशेषघने २ ७ ७ एतावद्दणं २ ७। १ प्रक्षिप्यावर्तिते २ ७ अस्मिन् त्रिभिः समच्छेदीकृते द्वितीयऋणेन साधिकं प्रथमऋणं २ ७। ७ विशोध्यावशिष्टं २ ७। २ — प्रागानीतलोभवेदकाद्धात्रिभागे प्रक्षिपेत् २ ७। १ एवंकृते लोभवेदकाद्धा साधिकत्रिभागमात्रः बादरसंज्वलनलोभप्रथमस्थितिप्रथमार्धो भवति तच्चरमसमये संज्वलनलोभस्य स्थितिबंधो दिनपृथक्त्वं शेषकर्मणां स्थितिबंधः पूर्वोक्तात्पबहुत्वेन वर्षसहस्रपृथक्त्वमात्रः ॥ २८२ ॥ अथ संज्वलनलोभानुभागसत्त्वस्य कृष्टिकरणप्ररूपणार्थमिदमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०—माया उपशमनका अनंतर समयतैं लगाय अनिवृत्ति करणका अंत समय पर्यंत वादर लोभका वेदक काल है। तातैं परैं सूक्ष्मसांपरायका अंत समय पर्यंत सूक्ष्मलोभका वेदक काल है। दोऊ मिलाएं लोभका वेदक काल हो है सो लोभ वेदककाल अंतर्मुहूर्त मात्र है। ताकौं संख्यातका भाग देइ तहां एक भाग बिना बहुभागकौं तीनका भाग देइ एक एक समान भाग तीन स्थाननिविषै स्थापना। बहुरि अवशेष एक भागकौं संख्यातका भाग देइ तहां बहुभागकौं प्रथम समान भागविषै मिलाएं वादर लोभ वेदक कालका प्रथम अर्ध हो है बहुरि अवशेष एक भागकौं संख्यातका भाग देइ तहां बहुभाग दूसरा समान भागमैं मिलाएं वादर लोभ वेदक कालका द्वितीय अर्ध हो है सो यहु सूक्ष्म कृष्टि करनेका काल है। इनि दोउनिकौं मिलाएं लोभ वेदक कालका दोय तीसरा भाग किछू अधिक प्रमाण वादर लोभ वेदक काल है। यातैं आवली अधिक वादर लोभकी प्रथम स्थिति है। बहुरि लोभ वेदक कालका तीसरा भाग किछू अधिकप्रमाण वादर लोभ वेदक कालका प्रथम अर्ध है सो अर्थ संदृष्टिकरि प्रगट जानिए है। बहुरि जो एक भाग अवशेष रह्या था ताकौं तीसरा समान भागविषै मिलाएं सूक्ष्म कृष्टिका वेदक काल है सोई सूक्ष्म सांपराय गुण स्थानका काल जानना। इहां वादर लोभ वेदक कालका प्रथम अर्धका अंत समयविषै स्थितिबंध संज्वलन लोभका तौ पृथक्त्व दिन प्रमाण अर औरनिका पूर्वोक्त क्रम लीएं पृथक्त्व हजार वर्ष प्रमाण है॥ २८२॥

विदियद्धे लोभावरफड्डयहेट्ठा करेदि रसकिट्टिं।
इगिफड्डयवग्गणगद संखाणमणंतभागमिदं ॥२८३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीयार्धे लोभावरस्पर्धकाधस्तनां करोति रसकृष्टिम्।
एकस्पर्धकवर्गणागतं संख्यानामनंतभागमिदम्॥ २८३॥

सं० टी०— संज्वलनलोभप्रथमस्थितेः प्रथमार्धं पूर्वोक्तविधानेन गालयित्वा तद्द्वितीयार्धप्रथमसमये संज्वलनलोभानुभागसत्त्वस्य जघन्यस्पर्धकादिवर्गणाविभागप्रतिच्छेदाः प्रतिपरमाणु जीवराशेरनंतगुणाः संति १६ ख। एतेषां वर्ग इति संज्ञा व। एवंविधसर्वजघन्यशक्तियुक्तानां सदृशधनानां कार्माणपरमाणूनां प्रथमपुंजः आदिवर्गणा भवति। तद्यथा—

लोभसंज्वलनसर्वसत्त्वद्रव्यमिदं स ə १२ – अस्मिन्ननुभागसंबंधिसाधिकद्व्यर्धगुणहान्या भक्ते आदिवर्गणा भ-
७।८
वति स ə १२ – तस्यां द्विगुणगुणहान्या भक्तायां विशेषो भवति स ə १२ – अयं लघुसंदृष्टिनिमित्तं
७।८।ख ख ३/२ ७।८।ख ख ३ ख ख २/२

व वि इति स्थाप्यते। अस्मिन्ननुभागसंबंधिद्विगुणगुणहान्या गुणिते आदिवर्गणा जायते व वि ख ख २। अत्र लघुसंदृष्ट्यर्थं गुणहानेरष्टांकं संस्थाप्य ८ द्वाभ्यां गुणयित्वा ८।२ तेन षोडशांकेन विशेषे गुणिते आदिवर्गणान्यास एवंविधो भवति व वि १६। इदं लघुसंदृष्टिनिमित्तं व इति स्थापयित्वा पुनरनुभागसंबंधिसाधिकद्व्यर्धगुणहान्या गुणिते संज्वलनलोभसर्वसत्त्वमागच्छति व १२ अस्माद् द्वितीयार्धप्रथमसमये द्रव्यमपकृष्य संज्वलनलोभजघन्यस्पर्धकलतासमानादिवर्गणाविभागप्रतिच्छेदेभ्यः अधस्तादनंतगुणहीनाविभागप्रतिच्छेदतया एकस्पर्धकवर्गणाशलाकानंतैकभागप्रमिताः ४/ख अनुभागसूक्ष्मकृष्टीः करोति उपशमश्रेण्यां बादरकृष्टिविधानासंभवात्। अंतर्मुहूर्तकालनिर्वर्त्यमानानुभागकांडकघातं विना इदानीं प्रतिसमयं सर्वजघन्यशक्त्यनंतैकभागप्रमितत्वेन कृष्टिघातं कर्तुं प्रारभत इत्यर्थः॥ २८३॥ अथ द्वितीयार्धप्रथमसमये कृष्ट्यर्थमपकृष्टद्रव्यस्य निक्षेपविधानार्थमिदमाह—

स० चं०–संज्वलन लोभकी प्रथम स्थितिका प्रथम अर्धकौं पूर्वोक्त प्रकार व्यतीतकरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीयार्धका प्रथम समयविषै संज्वलन लोभका अनुभाग सत्वविषै अपकर्षण करि सूक्ष्म कृष्टि करिए है। सो विधान कहिए है—

संज्वलन लोभका अनुभागका सत्वविषै जघन्य अनुभाग शक्ति सहित जो परमाणू ताविषै अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेद जीवराशितैं अनंत गुणे हैं। सो याकौं जघन्य वर्ग कहिए। इतने इतने अविभाग प्रतिच्छेद सहित जेते कर्म परमाणू रूप वर्ग पाइए तिनके समूहका नाम प्रथम वर्गणा है सो संज्वलन लोभके सत्ता रूप सर्व परमाणू तिनकौं अनुभाग संबंधी किछू अधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं जो प्रमाण आवै तितने प्रथम वर्गणाविषै परमाणू हैं। याकौं अनुभाग संबंधी दो गुणहानिका भाग दीएं विशेषका प्रमाण आवै है। विशेषकौं दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम वर्गणाविषै परमाणूनिका प्रमाण आवै है। इस प्रथम वर्गणाकौं साधिक ड्योढ गुणहानिकरि गुणें संज्वलन लोभका सर्व सत्व द्रव्यका प्रमाण हो है। सो यातैं द्रव्यकौं अपकर्षणकरि अनुभागकी सूक्ष्म कृष्टि करै है। सो जघन्य स्पर्धककी लता समान प्रथम वर्गणाविषै अविभाग प्रतिच्छेद हैं तिनकौं नीचैं तितने भी अनंत गुणा घाटि अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेद रूप सूक्ष्म कृष्टि हो है। तिन सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाण जो एक स्पर्धकविषै वर्गणानिका प्रमाण ताके अनंतवे भागमात्र जानना। पहलैं अंतर्मुहूर्तकालकरि निपजै ऐसा अनुभाग कांडक घात होता था तीहिंविना अब समय समय कृष्टि घात करनेका प्रारंभ करै है ऐसा अर्थ जानना ॥ २८३ ॥

उक्कड्डिदइगिभागं पल्लासंखेज्जखंडदिगिभागं।
देदि सुहुमासु किट्टिसु फड्डयगे सेसबहुभागं २८४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपकर्षितैकभागं पल्यासंख्येयखंडितैकभागं ।
दादाति सूक्ष्मासु कृष्टिषु स्पर्धके शेषे बहुभागं ॥ २८४ ॥

सं० टी०— संज्वलनलोभसर्वसत्वमिदं व १२ अपकर्षणभागहारेण खंडयित्वा तदेकभागं गृहीत्वा पुनः
। १ —
पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा बहुभागं पृथक् संस्थाप्य व १२ प तदेकभागं अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदेत्यादि
ओ प
सूत्राभिप्रायेण एकस्पर्धकवर्गणानंतैकभागमात्रकृष्ट्यायामेन खंडयित्वा पुना रूपोनकृष्ट्यायामार्धन्यूनद्विगुणगुण-
हान्या विभज्य द्विगुणगुणहान्या गुणिते आदिवर्गणाप्रमाणं द्रव्यं प्रथमकृष्टौ निक्षिपति व १२ । १६ इय-
१ —
ओ प ४ । १६ — ४
ख ख २
मेव प्रथमसमये क्रियमाणकृष्टीनां जघन्या कृष्टिः । तच्छक्तिप्रमाणं पुनः पूर्वस्पर्धकसर्वजघन्यवर्गस्य प्रथमसम-
यकृष्ट्यायाममात्रवारानंतरूपखंडितस्यैकभागमात्रं व पुनः प्रथमकृष्टिद्रव्ये एकचयेन व १२ १ —
ख ४ ओ प ४ । १६ — ४
ख ख ख २
अनेन हीने द्वितीयकृष्टिद्रव्यं भवति व १२ । १६ — १ एवं तच्छक्तिप्रमाणं पुनः प्रथमकृष्टिशक्तेरनंतगुणं भवति
१ —
ओ प ४ १६ — ४
ख ख २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व ख १ एवं तृतीयादिकृष्टिषु निक्षिप्यमाणद्रव्यं एकैकचयहीनं सद्गत्वा रूपोनकृष्ट्यायाममात्रचयन्यूनप्रथम-
ख ४
ख

कृष्टिद्रव्यप्रमितं चरमकृष्टिद्रव्यं भवति व १२ १६—४ तृतीयादिकृष्टिद्रव्याणामविभागप्रतिच्छेदाः रूपोनकृष्टि-
१ —

ओ प ४ १६—४ ख
ख ख २

गच्छसंख्यातवारानंतगुणितजघन्यकृष्ट्यनुभागप्रतिच्छेदप्रमिताः गच्छंति एवं गत्वा चरमकृष्ट्यविभागप्रतिच्छे-
१ —

दाः रूपोनकृष्ट्यायाममात्रवारानंतगुणितप्रथमकृष्ट्यविभागप्रतिच्छेदमात्रा भवंति व ख ४ अपवर्तिते पूर्वस्प-
ख ४ ख
ख

र्धकसर्वजघन्यवर्गानंतैकभागप्रमिताः व एताः संज्वलनलोभद्रव्यस्य प्रथमसमयसूक्ष्मकृष्टयः पुनः पृथक्संस्थापितब-
। १ — ख

हुभागद्रव्यं व १२ प पूर्वस्पर्धकनानागुणहानिषु निक्षिप्यते । तद्यथा—
a
ओ प
a

तद्बहुभागद्रव्यमनुभागसंबंधिद्व्यर्धगुणहान्या विभज्य एकभागं प्रथमगुणहानिजघन्यस्पर्धकादिवर्गणायां निक्षिप्यते-
। १ —
व १२ प १६ पुनर्द्वितीयादिवर्गणासु द्वितीयगुणहानिप्रथमवर्गणापर्यंतासु एकैकोत्तरचयहीनं द्रव्यं निक्षिप्यते । पु-
a
।
ओ प १२।१६
a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नर्द्वितीयादिगुणहानीनां द्वितीयवर्गणास्वपि पूर्वगुणहानिचयार्द्धार्द्धमात्रैः एकाद्येकोत्तरचयैर्हीनं द्रव्यं निक्षिप्य चरमगुणहानिचरमस्पर्धकचरमवर्गणायां तद्गुणहानिचयैः रूपोनगुणहानिमात्रैर्हीनं द्रव्यं निक्षिप्यते । एवं निक्षिप्ते अपकृष्टद्रव्यस्य पल्यासंख्यातभागभक्तस्य बहुभागद्रव्यं समाप्तं भवति । सूक्ष्मचरमकृष्टिनिक्षिप्तद्रव्यात् पूर्वस्पर्धकरूपसत्त्वद्रव्यस्य प्रथमगुणहानिजघन्यस्पर्धकादिवर्गणायां निक्षिप्तद्रव्यमनंतगुणहीनं । अनुभागसंबंधि द्व्यर्धगुणहानिभागहारमाहात्म्यात् । कृष्टिशब्दस्यार्थ उच्यते—कर्शनं कृष्टिः कर्मपरमाणुशक्तेस्तनूकरणमित्यर्थः । कृश तनूकरणे इति धात्वर्थमाश्रित्य प्रतिपादनात् । अथवा कृष्यते तनूक्रियते इति कृष्टिः प्रतिसमयं पूर्वस्पर्धकजघन्यवर्गणाशक्तेरनंतगुणहीनशक्तिवर्गणाकृष्टिरिति भावार्थः ॥ २८४ ॥ अथ कृष्टिकरणकालद्वितीयादिसमयेषु अपकृष्टद्रव्यप्रमाणादिविधानार्थमिदमाह—

स० चं०—संज्वलन लोभका सर्व सत्व रूप द्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्यकौं बहुरि पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभागकौं जुदा राखि एक भागमात्र द्रव्यकौं सूक्ष्म कृष्टि रूप परिणमावै है तहां "अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे" इत्यादि विधानतैं तिस एक भागमात्र द्रव्यकौं कृष्टिनिका प्रमाणरूप जो कृष्ट्यायाम ताका भाग दीएं मध्यधन आवै है। याकौं एक घाटि कृष्ट्यायामका आधाकरि हीन जो दो गुणहानि ताका भाग दीएं चयका प्रमाण आवै है । याकौं दो गुणहानिकरि गुणें आदि वर्गणाका द्रव्य हो है । सो इतने द्रव्यकौं तौ प्रथम कृष्टिविषै निक्षेपण करै है याकरि प्रथम कृष्टि निपजाइए है। यहु ही प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिविषै जघन्य कृष्टि है। बहुरि यातैं द्वितीयादि कृष्टिनिविषै एक एक चय प्रमाण घटता द्रव्य निक्षेपण करै है। ऐसैं एक घाटि कृष्ट्यायाममात्र चयकरि हीन प्रथम कृष्टिमात्र द्रव्यकौं अंत कृष्टिविषै निक्षेपण करै है। अब इनिविषै शक्तिका प्रमाण कहिए है—

पूर्व स्पर्धकनिका जघन्य वर्गविषै जो अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण है ताकौं कृष्ट्यायामका जो प्रमाण तितनीवार अनंतका भाग दीएं जो प्रमाण आवै तितने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम कृष्टिविषै अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेद हैं। बहुरि द्वितीयादि कृष्टिविषै क्रमतैं अनंत गुणे हैं। सो एक घाटि कृष्टयायाममात्र वार अनंतकरि गुणें अंत कृष्टिविषै ते अविभाग प्रतिच्छेद पूर्व स्पर्धकका जघन्य वर्गके अनंतवां भागमात्र हैं। ऐसैं प्रथम समयविषै कीनी सूक्ष्म कृष्टि हो है। बहुरि जे अपकर्षण कीए द्रव्यविषै बहुभाग जुदे स्थापे थे तिनके द्रव्यकौं पूर्वैं सत्तारूप पाइए ऐसे जे पूर्व स्पर्धक तिन संबंधी नानागुणहानिविषै निक्षेपण करै है। तहां "दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा' इत्यादि विधानतैं तिस बहुभाग द्रव्यकौं अनुभाग संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं जो द्रव्य आवै ताकौं प्रथम गुणहानिका प्रथम वर्गणाविषै निक्षेपण करै है। बहुरि द्वितीयादि वर्गणानिविषै एक चय घटता क्रम लीएं निक्षेपण करै है द्वितीयादि गुणहानिनिकी वर्गणानिविषै क्रमतैं पूर्व गुणहानितैं आधा आधा द्रव्य निक्षेपण करै है ऐसैं सूक्ष्मकृष्टि करण कालका प्रथम समयविषै अपकर्षण कीया द्रव्यका निक्षेपण करै है। इहां अंतकृष्टिविषैं निक्षेपण कीया द्रव्य तातैं पूर्व स्पर्धककी जघन्य वर्गणाविषै निक्षेपण कीया द्रव्य अनंत गुणा घाटि जानना। अब कृष्टि शब्दका अर्थकहिए है—

कृश तनू करणे इस धातुकरि 'कर्षणं कृष्टिः' जो कर्म परमाणूनिकी अनुभागशक्तिका घटावना ताका नाम कृष्टि है। अथवा 'कृश्यत इति कृष्टिः' समय समय प्रति पूर्व स्पर्धककी जघन्य वर्गणातैं भी अनंतगुणा घटता अनुभागरूप जो वर्गणा ताका नाम कृष्टि है॥ २८४॥

पडिसमयमसंखगुणा दव्वादु असंखगुणविहीणकमे ३४५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुव्वगहेट्ठा हेट्ठा करेदि किट्टिं स चरिमोत्ति ॥

प्रतिसमयमसंख्यगुणा द्रव्यात् असंख्यगुणविहीनक्रमेण ।
पूर्वगाधस्तनां अधस्तनां करोति कृष्टिं स चरमे इति ॥ २८५ ॥

सं० टी०— कृष्टिकरणकाले द्वितीयसमयादारभ्य तच्चरमसमयपर्यंतं प्रतिसमयं पूर्वपूर्वसमयापकृष्टद्रव्यादसंख्यातगुणं द्रव्यं संज्वलनलोभपूर्वस्पर्धकसर्वसत्त्वद्रव्यादपकृष्य प्रथमादिसमयकृतकृष्ट्यायामादसंख्येयगुणहीनायामक्रमेण द्वितीयादिसमयेषु पूर्वपूर्वकृष्ट्यनुभागादधोऽनंतगुणहीनशक्त्यात्मिकाः अपूर्वाः कृष्टीः करोति । तत्र कृष्टिकरणकालस्य द्वितीयसमये प्रथमसमयापकृष्टद्रव्यात् व १२ / ओ अस्मादसंख्येयगुणं द्रव्यं व १२ a / ओ संज्वलनलोभपूर्वस्पर्धकसर्वसत्त्वद्रव्यादपकृष्य पुनः पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा तद्बहुभागं व १२ a प / ओ प a पूर्वस्पर्धकनिक्षेपसंबंधीति पृथक् संस्थाप्य तदेकभागद्रव्यमिदं व १२ a / ओ प a गृहीत्वा, अत्र किंचिद्द्रव्यं प्रथमसमयकृतजघन्यकृष्टेरधोऽनंतगुणहीनशक्तिकापूर्वकृष्टिरूपेण निक्षिपति अवशिष्टं च द्रव्यं प्रथमसमयकृतपूर्वकृष्टिशक्तिसमानशक्तिककृष्टिरूपेण निक्षिपति ॥ २८५ ॥ अथ द्वितीयसमयापकृष्टद्रव्यस्य चतुर्द्रव्यविभागादिप्रदर्शनार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं०—कृष्टि करण कालका द्वितीयसमयतैं लगाय अंत समय पर्यंत पूर्व समयविषैं जितना द्रव्य अपकर्षण कीया तातैं असंख्यात गुणा द्रव्यकौं संज्वलन लोभका पूर्व स्पर्धक रूप सर्व सत्व द्रव्यतैं ग्रहिकरि अपूर्व कृष्टि करै है सो पूर्व समयनिविषै भई ते पूर्व कृष्टि क-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिए। विवक्षित समयविषैं नवीन कृष्टि भई ते अपूर्व कृष्टि कहिए। सो पूर्व पूर्व समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाणतैं उत्तर उत्तर समयविषैं करी कृष्टिनिका प्रमाण क्रमतैं असंख्यात गुणा घटता है। अर अनुभाग अनंत गुणा घटता है। तहां कृष्टि करण कालका दूसरा समयनिविषै जो प्रथम समयविषै जो द्रव्य अपकर्षण कीया था तातैं असंख्यात गुणा द्रव्यकौं संज्वलन लोभका सर्व सत्त्व द्रव्यतैं अपकर्षण करि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग तौ पूर्व स्पर्धकनिविषैं निक्षेपण करने। अवशेष एक भागविषै कितना एक द्रव्यकौं प्रथम समयविषै करी जो जघन्य कृष्टि ताके नीचैं अनंतगुणा घटता अनुभाग लीएं अपूर्वकृष्टिनिरूप परिणमावै है। अवशेष द्रव्यकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि तिनिरूप परिणमावै है ॥ २८५ ॥

हेट्ठासीसे उभयगदव्वाविसेसे य हेट्ठाकिट्टिम्मि।
मज्झिमखंडे दव्वं विभज्ज विदियादिसमयेसु ॥

अधस्तनशीर्षे उभयगद्रव्यविशेषे च अधस्तनकृष्टौ।
मध्यमखंडे द्रव्यं विभज्य द्वितीयादिसमयेषु ॥ २८६ ॥

सं० टी०— कृष्टिकरणकालस्य द्वितीयसमये अपकृष्टकृष्टिद्रव्यं अधस्तनशीर्षविशेषेषु उभयद्रव्यविशेषेष्वधस्तनकृष्टिषु मध्यमखंडेषु चतुर्धा विभज्य निक्षिपति। तद्यथा—

प्रथमसमयादपकृतकृष्टिद्रव्यविशेषोऽयं व १२ । ओ प ४ १६ – ४ / ३ ख ख२ १ ^ इममेवादिं चोत्तरं च कृत्वा रूपोनप्रथमसमयकृष्टचायामं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गच्छं कृत्वा पदमेगेण विहीणमित्यादिना संकलनसूत्रेणानीतं चयधनमिदं व १२ । १ ८ ४ ४ एतदधस्तनशी-
ओ प ४ १६ – ४ ख २ ख
a ख ख२

र्षविशेषेषु निक्षिप्यमाणं द्वितीयसमयापकृष्टद्रव्याद् गृहीत्वा संस्थाप्यं । प्रथमसमयकृतपूर्वकृष्टिषु जघन्यकृष्टिद्रव्यमिदं–
व १२ १६ । १ ८ एतत्प्रमाणं द्रव्यं द्वितीयसमयकृतापूर्वकृष्टिषु प्रतिकृष्टि निक्षिप्यमाणं समपट्टिकारूपापूर्वकृष्टया-
ओ प ४ १६ – ४
a ख ख२

यामेनासंख्यातापकर्षणभागहारखंडितपूर्वकृष्टयायामैकभागमात्रेण त्रैराशिकयुक्त्या गुणितमधस्तनापूर्वकृष्टिसर्वद्रव्य-
मिदं व १२ १६ । ४ ८ अत्रैकस्यां कृष्टौ प्र १ एतावति द्रव्ये निक्षिप्ते फ व १२ १६ । एतावतीष्वपूर्वकृष्टिषु
ओ प ४ १६ – ४ ख ओ a ओ प ४ १६ – ४ १ ८
a ख ख२ a ख ख२

इ ४ निक्षिप्यमाणं कियदिति त्रैराशिकमिदं, एवमानीताधस्तनापूर्वकृष्टिद्रव्यं द्वितीयसमयापकृष्टकृष्टिद्रव्याद् गृ-
ख ओ a

हीत्वा पृथक् संस्थाप्यं पुनः प्रथमद्वितीयसमययोरपकृष्टद्रव्ये द्वे व १२ । व १२ a । मेलयित्वा व १२ a । १ ८ प्रथमद्वितीयसम-
ओ प ओ प ओ प
a a a

यकृतकृष्टयायामद्वयेन मिलितेनानेन ४ । अद्धाशेण सव्वधणे खंडिदेत्यादिविधानेनोभयसमयद्रव्यं खंडयित्वा रूपोनपूर्वा-
ख

पूर्वकृष्टयायामार्धन्यूनद्विगुणगुणहान्या भक्ते उभयद्रव्यविशेषो भवति व १२ a । १ ८ इममेवादिमुत्तरं च कृत्वा पूर्वा-
ओ प ४ १६ – ४ । १ ८
a ख ख२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वकृष्टयायामद्वयमात्रं गच्छं कृत्वा पदमेगेण विहीणमित्यादिसूत्रेणानीतमुभयद्रव्यविशेषसमस्तधनं—

व १२ ‍ओ प ४ १६ - ४ ख २ ख (१ ‍, १ ‍ ४, ४; ‍ख, ख२) द्वितीयसमयापकृष्टद्रव्याद् गृहीत्वा पृथक्संस्थाप्यं । एतैरधस्तनशीर्षविशेषाधस्तन-

कृष्टयुभयविशेषद्रव्यैस्त्रिभिर्हीनं द्वितीयसमयापकृष्टकृष्टिद्रव्यमिदं व १२ ≡ / ओ प मध्यमखंडसमपट्टिकाद्रव्यं भवति । अ-

स्मिन् द्रव्ये पूर्वापूर्वकृष्टयायामद्वयमात्रेषु ४/ख मध्यमखंडेषु एतावति द्रव्येऽपि निक्षिप्ते व १२ ≡ / ओ प एकस्मिन् खंडे किय-

दिति त्रैराशिकसिद्धेन पूर्वापूर्वकृष्टिद्वयायामेन भक्ते एकखंडसंबंधिद्रव्यमागच्छति व १२ ≡ / ओ प ४ ख अस्मिन् सर्वेषां

मध्यमखंडानां सदृशत्वात् पूर्वापूर्वकृष्टिद्वयायामेन गुणिते समस्तमध्यमखंडद्रव्यद्वयं भवति व १२ ≡ ४/ख / ओ प ४ ख इदमन्यत्र

संस्थाप्यं ॥ २८६ ॥

स० चं०— कृष्टि करण कालका दूसरा समयविषै अपकर्षण कीया द्रव्य ताकौं अध-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तन शीर्ष विशेषनिविषै उभय द्रव्य विशेषनिविषै अधस्तन कृष्टिनिविषै मध्यम खंडनिविषै च्यारि प्रकार विभागकरि निक्षेपण करै है। सोई कहिए है—

पूर्व समयविषै कीनी जे कृष्टि तिनिविषैं प्रथम कृष्टिविषै तौ बहुत परमाणू है। अर द्वितीयादिकृष्टिनिविषैं एक एक चय घटता क्रम लीए है तहां पूर्व कृष्टिविषै संभवता चयका प्रमाण ल्याय द्वितीय कृष्टिविषैं एक चय अर तृतीय कृष्टिविषै दोय चय ऐसैं क्रमतैं एक एक बंधता चय प्रमाण परमाणू तिन द्वितीयादि कृष्टिनिविषैं मिलाएं सर्व कृष्टि हैं ते प्रथम कृष्टिके समान होंइ सो ऐसैं जेता द्रव्य दीया ताका नाम अधस्तन कृष्टि द्रव्य है। याकौं दीएं सर्व पूर्व कृष्टि प्रथम कृष्टिके समान हो है। सो इस द्रव्यका प्रमाण ल्याइए है—

पूर्व समयविषै जो कृष्टिविषै द्रव्य दीया ताकौं पूर्व समयविषै कीनी जे कृष्टि तिनका प्रमाणमात्र जो गच्छ ताका भाग दीएं मध्यधन आवै है। ताकौं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाण करि हीन जो दोगुणहानि ताका भाग दीएं चय जो एक विशेष ताका प्रमाण आवै है। तहां एक चयकौं आदि विषै स्थापना जातैं द्वितीय कृष्टिविषै एक चय देना है। बहुरि एक चय उत्तर स्थापना जातैं तृतीयादि कृष्टिनिविषै एक एक चय बंधता देना है। बहुरि एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छ स्थापना जातैं प्रथम कृष्टिविषै चय नाहीं मिलावना है। ऐसैं स्थापि "पदमेगेण विहीणं" इत्यादि श्रेणि व्यवहार रूप गणित सूत्रकरि एक घाटि गच्छकौं दोयका भाग देइ ताकौं उत्तर जो एक चय ताकरि गुणि तामैं प्रभव जो आदि एक चय ताकौं मिलाय बहुरि गच्छकरि गुणैं चय धन आवै है। अंक संदृष्टिकरि जैसैं एक घाटि कृष्टि प्रमाण गच्छ सात तामैं एक घटाएं छह ताकौं दोयका भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीएं तीन ताकौं चयका प्रमाण सोलह करि गुणें अठतालीस यामैं प्रभव जो एक चय सोलह ताकौं मिलाएं चौसठि याकौं गच्छ सातकरि गुणैं च्यारिसै अठतालीस चय धन होइ। तैसैं विधानतैं जो प्रमाण आवै तितना अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य जानना। बहुरि जो पूर्व कृष्टिनिविषै प्रथम कृष्टि ताका प्रमाण था ताहीके समान प्रमाण लीएं जे विवक्षित समयविषै अपूर्व कृष्टि करी तिनिविषै जो समान प्रमाण लीएं समपट्टिका रूप द्रव्य देना। ताका नाम अधस्तन कृष्टि द्रव्य है। इस द्रव्यकौं दीएं अपूर्व कृष्टि हैं ते प्रथम पूर्व कृष्टिके समान हो हैं याका प्रमाण ल्याइए है—

पूर्वोक्त पूर्वकृष्टि संबंधी चय ताकौं दो गुणहानिकरि गुणें पूर्व कृष्टिनिविषै प्रथम कृष्टिके द्रव्यका प्रमाण आवै है। सो एक कृष्टिका इतना द्रव्य होइ तौ सर्व पूर्व कृष्टिनिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिककरि तिस प्रथम पूर्व कृष्टिका द्रव्यकौं सर्व अपूर्व कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणें अधस्तन कृष्टि द्रव्यका प्रमाण हो है। इहां प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाणकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं द्वितीय समयविषै कीनीं कृष्टिनिका प्रमाण हो है ऐसा जानना। बहुरि पूर्वोक्त अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य अर अधस्तन कृष्टि द्रव्य दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि समान प्रमाण लीएं भई तहां अपूर्व कृष्टिकी प्रथम कृष्टितैं लगाय उपरि उपरि अपूर्व कृष्टि स्थापि तिनके ऊपरि प्रथमादि पूर्व कृष्टि स्थापनी ऐसैं स्थापि तिनका चय घटता क्रमरूप एक गोपुच्छ करनेके अर्थि सर्वकृष्टिसंबंधी संभवता चयका प्रमाण ल्याइ अंतकी पूर्व कृष्टिविषै एक चय ताके नीचैं उपांत पूर्व कृष्टि विषै दोय चय ऐसैं क्रमतैं एक एक चय बंधता प्रथम अपूर्व कृष्टि पर्यंत द्रव्य देना। याका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। याकौं दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका चय घटता क्रम रूप एक गोपुच्छ हो है याका प्रमाण ल्याइए है—

पूर्व समयनिविषै जो कृष्टिनिविषै दीया द्रव्य था अर इस विवक्षित समयविषै जो कृष्टिनिविषै देने योग्य द्रव्य है इन दोऊनिकौं मिलाएं जो द्रव्यका प्रमाण भया ताकौं पूर्व कृष्टिनिका अर अपूर्व कृष्टिनिका प्रमाण मिलाएं जो गच्छ होइ ताका भाग दीएं मध्यधन आवै है। ताकौं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाण करि हीन जो दोगुणहानि ताका भाग दीएं इहां चय जो एक विशेष ताका प्रमाण हो है। सो एक चय आदि स्थापि अर एक चय उत्तर स्थापि अर अपूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छ स्थापि 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि सूत्रके अनुसारि एक घाटि गच्छका आधाकौं चयकरि गुणि तामैं चय मिलाय ताकौं गच्छकरि गुणैं सर्व उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि जो विवक्षित समयविषै कृष्टि रूप परिणमावने योग्य द्रव्य अपकर्षण कीया तीहिंविषै पूर्वोक्त अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य अर अधस्तन कृष्टि द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेष द्रव्य घटाएं अवशेष द्रव्य रह्या ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषै समान भागकरि देना। याका नाम मध्यम खंड द्रव्य है। बहुरि याकौं दीएं तिस अपकर्षण द्रव्यकी तौ समाप्तता हो है अर सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषै चय घटता क्रम रूप ज्यूंका त्यूं रहै है। याका प्रमाण ल्याइए है—

विवक्षित समयविषै अपकर्षण कीया द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एकभागमात्र द्रव्य कृष्टिनिविषै देने योग्य है। तीहिंविषै पूर्वोक्त तीन प्रकार द्रव्य घटाएं किंचिदून भया सो इतना द्रव्य सर्व कृष्टिनिविषै दीजिए तौ एक कृष्टिविषै केता दीजिए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसैं त्रैराशिककरि तिस द्रव्यकौं पूर्व अपूर्वकृष्टिनिके प्रमाणका भाग दीएं एक कृष्टिविषै देने योग्य एक खंडका प्रमाण हो है। याकौं सर्वकृष्टि प्रमाणकरि गुणैं सर्व मध्यमखंड द्रव्यका प्रमाण हो है । याप्रकार इहां विवक्षित द्वितीय समयविषैं कृष्टिरूप होने योग्य द्रव्यविषैं बुद्धिकल्पनातैं ते अधस्तनशीर्ष विशेष आदि च्यारि प्रकार द्रव्य जुदे स्थापे। ऐसैं ही इहां तृतीयादि समयनिविषै कृष्टिरूप होने योग्य द्रव्यविषैं विधान जानना । वा आगैं क्षपक श्रेणीका वर्णनविषैं अपूर्व स्पर्धकनिका बादरकृष्टिनिका वा सूक्ष्मकृष्टिनिका वर्णन करतैं ऐसैं विधान कहेंगे तहां ऐसा ही अर्थ समझना। विशेष होइ सो विशेष जानि लेना। इहां संदृष्टिकरि चय घटता क्रमलीएं पूर्वकृष्टिनिकी रचना ऐसी—

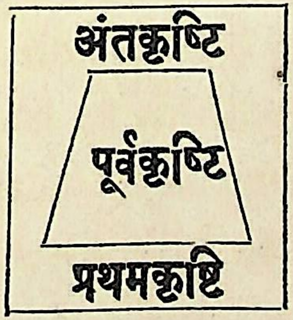

बहुरि यामैं अधस्तनशीर्ष द्रव्य मिलाएं समानरूप पूर्वकृष्टिनिकी रचना ऐसी—

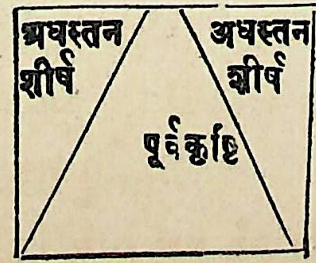

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि इनके नीचैं अधस्तन कृष्टि द्रव्यकरि अपूर्वकृष्टिकी समपट्टिका रचना कीएं ऐसी—

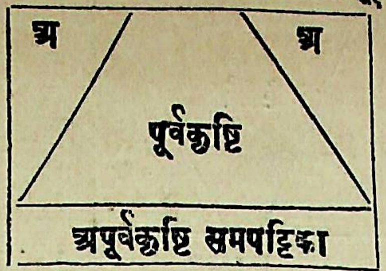

इहां उभय द्रव्य विशेष द्रव्य निक्षेपण कीएं एक गोपुच्छकी ऐसी हो है ।

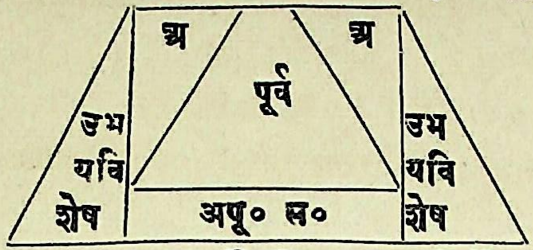

यामैं मध्यम खंड द्रव्य मिलाएं ऐसी रचना हो है ।

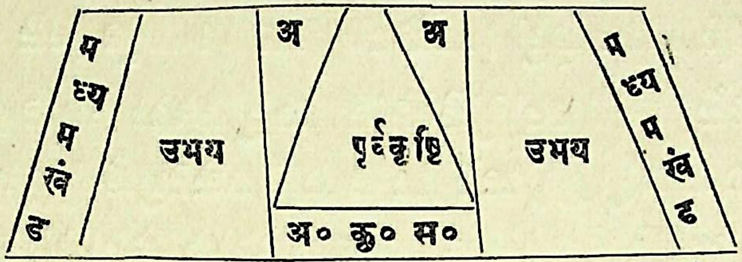

या प्रकार द्रव्य देनेका विधान जानना । यद्यपि द्रव्य तौ युगपत् जेता देने योग्य है तितना दीजिए है तथापि समझनेके अर्थि जुदा जुदा विभाग करि वर्णन किया है ॥२८६॥

हेट्ठासीसं थोवं उभयविसेसे तदो असंखगुणं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लब्धि सार सटीक

३५५

हेट्ठा अणंतगुणिदं मज्झिमखंडं असंखगुणं ॥ २८७॥

अधस्तनशीर्षं स्तोकं उभयाविशेषे ततोऽसंख्यगुणं ।
अधस्तनमनंतगुणितं मध्यमखंडं असंख्यगुणं ॥ २८७ ॥

सं० टी०—एतेषु चतुर्षु द्रव्येषु मध्ये सर्वतः स्तोकमधस्तनशीर्षविशेषसमस्तधनं व । १२ / ओ प ख ख ४ / ८ गुणकारभागहारभूतयोः पूर्वकृष्ट्यायामयोः सदृशापवर्तनात् रूपोनपूर्वकृष्ट्यायामचतुर्गुणगुणहान्योश्च यथासंभवमपवर्तितत्वात् । एवमन्यत्राप्यपवर्तनं यथायोग्यं ज्ञातव्यं। एतस्मादधस्तनशीर्षद्रव्यादुभयद्रव्यविशेषसमस्तधनमसंख्येयगुणं व । १२ ८ १_ / ओ प ख ख ४ / ८

अस्मादधस्तनापूर्वकृष्टिसमस्तद्रव्यमनंतगुणं व । १२ / ओ प ओ ८ / ८ अस्मान्मध्यमखंडसमस्तधनमसंख्येयगुणं व । १२ ८ ≡ / ओ प / ८ यथोक्तचतुर्द्रव्याणां पूर्वापूर्वकृष्टिषु निक्षेपप्रदर्शनार्थमिदमाह ॥ २८७ ॥

स० चं०– ए कहे च्यारि द्रव्य तिनविषै अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य सर्वतैं स्तोक है । यातैं उभय द्रव्य विशेष असंख्यातगुणा है । यातैं अधस्तन कृष्टि द्रव्य अनंतगुणा है । यातैं मध्यम खंड द्रव्य असंख्यातगुणा है ऐसा जानना ॥ २८७ ॥

अवरे बहुगं देदि हु विसेसहीणक्कमेण चरिमोत्ति । ३५५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्तो णंतगुणूणं विसेसहीणं तु फड्डयगे ॥ २८८ ॥

अवरास्मिन् बहुकं ददाति हि विशेषहीनक्रमेण चरमे इति ।
ततोऽनंतगुणोनं विशेषहीनं तु स्पर्धके ॥ २८८ ॥

सं॰ टी॰—द्वितीयसमयकृतापूर्वकृष्टीनां मध्ये जघन्यकृष्टौ बहुद्रव्यं ददाति । पुनर्द्वितीयापूर्वकृष्ट्यादिषु पूर्वकृष्टि-चरमकृष्टिपर्यंतासु कृष्टिषु विशेषहीनक्रमेण द्रव्यं निक्षिपति । तस्मात्पूर्वचरमकृष्टिनिक्षिप्तद्रव्यात्पूर्वस्पर्धकादिवर्गणायां निक्षिप्तद्रव्यमनंतगुणहीनं । ततः परं द्वितीयादिवर्गणासु नानागुणहानिसंबंधिनीषु चरमगुणहानिचरमवर्गणापर्यंतासु तत्तद्गुणहानिगतविशेषहीनक्रमेण द्रव्यं ददाति । अत्र द्वितीयसमयापकृष्टकृष्टिसंबंधिद्रव्यस्य

```
 |
व १२ a
ओ प
 a
```

प्रथमद्वितीयसमयकृतपूर्वापूर्वकृष्टिषु निक्षेपविधानविशेषोऽस्ति । तं श्रीमाधवचंद्रत्रैविद्यदेवपरमोपदेशानुसारेण वयं व्याख्यास्यामः । तद्यथा—

द्वितीयसमयकृतापूर्वकृष्टीनां मध्ये जघन्यकृष्टावधस्तनशीर्षविशेषद्रव्यं मुक्त्वा अवशिष्टद्रव्यत्रये अधस्तनकृष्टिद्रव्यात्

```
 |                                              |
व १२ १६  ४          अस्मादेककृष्टिद्रव्यं व १२ १६ ४          मध्यमखंडद्रव्यात्—
          १                                          १
ओ प ४ १६—४ ख ओ a                      ओ प ४ १६—४ ख ओ a ४
  a ख       ख २                          a ख       ख २     ख ओ a

 |       |               |                     | १—       १—
व १२  a ≡  ४ अस्मादेकखंडद्रव्यं व १२ a ≡ उभयद्रव्यविशेषादस्मात् व १२ a      | |
   |     ख                 |                      |       १ ४ ४
ओ प ४                    ओ प ४                 ओ प ४ १६ —४ ख ख २
  a ख                      a ख                    a ख     ख२
```


Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वापूर्वकृष्ट्यायामद्रव्यमात्रविशेषांश्च गृहीत्वा व १२ ७ १ ० / ख १ ४ / ओ प ४ १६ – ४ ख / ७ ख ख २ निक्षिपति अत एव जघन्यकृष्टौ निक्षिप्तं द्रव्यं बहुकमित्युक्तं । पुनरधस्तनकृष्टिद्रव्यादेककृष्टिद्रव्यं मध्यमखंडद्रव्यादेकखण्डद्रव्यमुभयद्रव्यविशेषद्रव्याद्रूपोन पूर्वापूर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषांश्च गृहीत्वा द्वितीयसमयकृतापूर्वकृष्टीनां द्वितीयकृष्टौ निक्षिपति । अत एव जघन्यकृष्टिनिक्षिप्तद्रव्यादिदमेकेनोभयद्रव्यविशेषेण हीनमित्युक्तं । पुनरधस्तनकृष्टिद्रव्यादेककृष्टिद्रव्यं मध्यमखण्डद्रव्यादेकखण्डद्रव्यमुभयद्रव्यविशेषद्रव्याद्द्विरूपोनपूर्वापूर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषांश्च गृहीत्वा द्वितीयसमयकृतापूर्वकृष्टीनां तृतीयकृष्टौ निक्षिपति । इदमपि द्वितीयकृष्टिनिक्षिप्तद्रव्याद्विशेषहीनं भवति । एवं चतुर्थादिषु द्वितीयसमयकृतापूर्वकृष्टिचरमकृष्टिपर्यंतास्वपूर्वकृष्टिष्वधस्तनकृष्टिद्रव्यादेकैककृष्टिद्रव्यं मध्यमखण्डद्रव्यादेकैकखण्डद्रव्यमुभयद्रव्यविशेषद्रव्यादधोऽतीतकृष्ट्यायामन्यूनपूर्वापूर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषांश्च गृहीत्वा तत्र तत्र निक्षिपति । तत्राधस्तनकृष्टिद्रव्यादेककृष्टिद्रव्यं मध्यमखण्डद्रव्यादेकखंडद्रव्यमुभयद्रव्यविशेषद्रव्याद्रूपोनापूर्वकृष्ट्यायामन्यूनपूर्वापूर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषांश्च गृहीत्वा द्वितीयसमयकृतापूर्वकृष्टीनां चरमकृष्टौ निक्षिपति । एवं निक्षिप्तेऽधस्तनकृष्टिद्रव्यं सर्वं समाप्तं । एवं त्रिद्रव्यन्यासः कथितः । पुनर्मध्यमखण्डद्रव्यादेकखंडद्रव्यमुभयद्रव्यविशेषद्रव्यादपूर्वकृष्ट्यायाममात्रन्यूनपूर्वापूर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषांश्च गृहीत्वा प्रथमसमयकृतपूर्वकृष्टीनां जघन्यकृष्टौ निक्षिपति । इदमपूर्वकृष्टीनां चरमकृष्टिनिक्षिप्तद्रव्यादसंख्येयभागेनानंतभागेन च हीनं द्वितीयसमयापकृष्टकृष्टिद्रव्यादसंख्येयभागमात्रेणाधस्तनकृष्ट्येककृष्टिद्रव्येण सर्वद्रव्यादनंतैकभागमात्रेणैकेनोभयद्रव्यविशेषेण च हीनत्वात् । एवं पूर्वकृष्टिप्रथमकृष्टौ द्विद्रव्यन्यासो जातः । पुनरधस्तनशीर्षविशेषद्रव्यादेक विशेषं मध्यमखंडद्रव्यादेकखण्डद्रव्यमुभयद्रव्यविशेषद्रव्यादतीतकृष्ट्यायामन्यूनपूर्वापूर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषांश्च गृहीत्वा प्रथमसमयकृतपूर्वकृष्टीनां द्वितीयकृष्टौ निक्षिपति । इदं पूर्वकृष्टिप्रथमकृष्टिनिक्षिप्तद्रव्यात्कियता न्यूनमिति चेत् उभयद्रव्यविशेषस्यासंख्येयभागमात्रेणाधस्तनशीर्षविशेषेण व १२ / १ ० / ओ प ४ १६ – ४ / ७ ख ख २ न्यूनोभयद्रव्यविशेषेणैकेन व १२ ७ ४ १ – १ ० / ख १ ० / ओ प ४ १६ – ४ / ७ ख ख २ हीनं पूर्वकृष्टिद्वितीयादि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिष्वधस्तनशीर्षविशेषद्रव्यस्य निक्षेपसंभवात् । पुनरधस्तनशीर्षविशेषद्रव्याद् द्वौ विशेषौ मध्यमखण्डद्रव्यादेकखंडद्रव्यमुभयद्रव्यविशेषद्रव्यादतीतकृष्ट्यायामन्यूनपूर्वापूर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषांश्च गृहीत्वा प्रथमसमयकृतपूर्वकृष्टीनां तृतीयकृष्टौ निक्षिपति । अत्रापि पूर्ववद्धनर्णविवरणं ज्ञातव्यं । एवं पूर्वकृष्टीनां चतुर्थकृष्ट्यादिषु चरमकृष्टिपर्यंतासु पूर्वकृष्टिषु प्रतिकृष्ट्यधस्तनशीर्षविशेषद्रव्यादतीतपूर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषान् मध्यमखण्डद्रव्यादेकैकखंडद्रव्यमुभयद्रव्यविशेषद्रव्यादतीतकृष्ट्यायामन्यूनसर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषांश्च गृहीत्वा निक्षिपति । पूर्वकृष्टीनां चरमकृष्टौ अधस्तनशीर्षविशेषद्रव्यादवशिष्टान् रूपोनपूर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषान् मध्यमखण्डद्रव्यादवशिष्टमेकखण्डद्रव्यं उभयद्रव्यविशेषद्रव्यादवशिष्टमेकविशेषं च गृहीत्वा निक्षिपति । एवं निक्षिप्तद्रव्यत्रयं समाप्तं भवति । इति द्रव्यन्यासो जातः । एवं निक्षिप्ते सति प्रथमसमयकृतपूर्वकृष्टिद्रव्येण सह द्रव्यमेकगोपुच्छाकारेण‍ावतिष्ठते तद्यथा—

प्रथमसमयकृतपूर्वकृष्टिद्रव्ये अस्मिन्नधस्तनशीर्षविशेषद्रव्ये अधस्तनकृष्टिद्रव्ये च युक्ते पूर्वापूर्वकृष्टिमात्रायामं समपट्टिकाधनमित्थं भवति

| |
व १२ १६ ४
१ ख
ओ प ४ १६ – ४
३ ख ख २

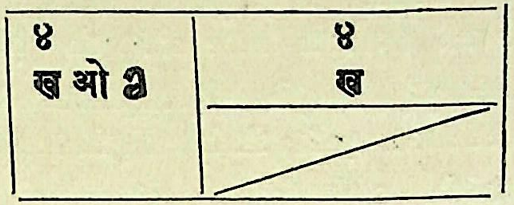

पुनरुभयद्रव्यविशेषद्रव्यादस्मात्

। १– १– ।
व १२ ३ ४ ४
। ख ख २ १
ओ प ४ १६ – ४
३ ख ख२

गुणकारभूतासंख्यातोपरिस्थिताधिकरूपप्रमाणं प्रथमसमयकृतकृष्टिद्रव्यसंबंधिविशेषद्रव्यमात्रं गृहीत्वा

१–
। ।।
व १२ ४ ४
। ख ख २ १
ओ प ४ । १६ – ४
३ ख ख२

पूर्वापूर्वकृष्ट्यायामद्वयाधस्तनसर्वजघन्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टौ सर्वकृष्टयायाममात्रविशेषान्निक्षिपति व १२ ४ द्वितीयादिकृष्टिष्वेकैकविशेषहीनक्रमेण निक्षिप्य

१ _

ओ प ४ ख १६ – ४

७ ख ख २

सर्वचरमकृष्टावेकविशेषमात्रं व १२ निक्षिपति । एवं निक्षिप्ते अधस्तनशीर्षविशेषमात्रद्रव्याधस्तनकृष्टिद्रव्यो-

१ _

ओ प ४ १६ – ४

७ ख ख २

भयविशेषद्रव्यगुणकारभूतासंख्यातोपरिस्थैकरूपसंबंधिविशेषद्रव्यैस्त्रिभिः साधिकप्रथमसमयकृतकृष्टिद्रव्यमितं पूर्वापूर्वकृ-ष्टयायामसहितमेकगोपुच्छद्रव्यं भवति—

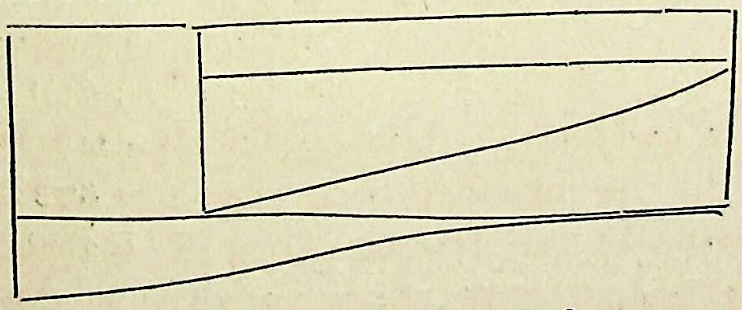

प्रथमकृष्टिः

व १२ १ । १६ १ _

ओ प ४ १६ – ४

७ ख ख २

० ० ० ० ०

चरमकृष्टिः

१ _

व १२ १ १६ – ४

। ख

१ _

ओ प ४ १६–४

७ ख ख २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुनर्मध्यमखंडसर्वद्रव्यमात्रे समपट्टिकाद्रव्ये व १२ ａ ≡ ४ द्वितीयसमयकृतकृष्टिद्रव्यसंबंधिविशेषद्रव्यं —

ओ प ४ ख
ａ ख

व १२ ａ ४ ४
ओ प । ख ख २ १ —
ａ ४ । १६ – ४
ख ख २

सर्वजघन्यकृष्टौ सर्वकृष्ट्यायाममात्रविशेषान्निक्षिप्य द्वितीयादिकृष्टिष्वेकैकविशेषहीनक्रमेण निक्षिप्य सर्वचरमकृष्टाववशिष्टैकविशेषमात्रं व १२ ａ निक्षिपति । एवं निक्षिप्ते द्वितीयसमयकृ-

ओ प ४ १६ – ४
ａ ख ख २

तकृष्टिद्रव्यं अधस्तनशीर्षाधस्तनकृष्ट्युभयविशेषगुणाकारभूतासंख्यातोपरिस्थैकरूपसंबंधिविशेषद्रव्यैस्त्रिभिर्न्यूनं पूर्वापूर्वकृष्टयामसहितैकगोपुच्छाकारं भवति

व १२ ａ ≡ १६ ओ प ४ १६ – ४ ａ ख ख २	० ० ० ० ०	व १२ ａ ≡ १६ – ४ ओ प ४ १६ – ४ ख ａ ख ख २

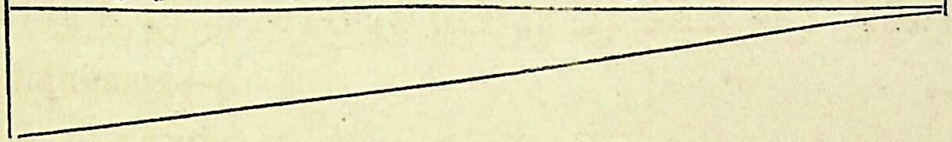

अस्मिन् प्राक्तनगोपुच्छद्रव्यस्योपरि स्थापिते प्रथमद्वितीयसमयकृतकृष्टिद्रव्यं सर्वमप्येकगोपुच्छाकारं दृश्यं भवति । पूर्वा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार्यैः सर्वत्र तथैव सम्मतत्वात् । तन्न्यासः— 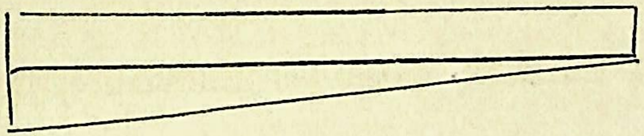 ॥ २८८ ॥ अथ

निक्षेपद्रव्यस्य पूर्वापूर्वकृष्टिसंधिगतविशेषं प्ररूपयति—

स० चं०— दूसरे समयविषै कीनी जे अपूर्वकृष्टि तिनविषै जो जघन्य कृष्टि है तिसविषै तौ बहुत द्रव्य दीजिए है। बहुरि द्वितीय अपूर्व कृष्टितैं लगाय अपूर्व कृष्टिकी अंतकृष्टि पर्यंत क्रमतैं चय घटता क्रमकरि निक्षेपण करै है। बहुरि तातैं पूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषै निक्षेपण कीया द्रव्य अनंतगुणा घटता है। तातैं परैं ताकी द्वितीयादि वर्गणा जे नाना गुणहानि सम्बन्धी अंतगुणहानिकी अंतवर्गणा पर्यंत हैं तिनविषै अपनी अपनी गुणहानिविषै सम्भवता चय घटता क्रमकरि निक्षेपण करै है। सो इहां याकौं विशेष करि दिखाइए है—

तहां द्वितीय समयविषै अपकर्षण कीया द्रव्यविषै जो कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य है। ताकौं पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषै निक्षेपण करनेका विधान श्रीमाधवचंद्र गुरुके अनुसारतैं कहैं हैं— द्वितीय समयविषै कीनी जे अपूर्वकृष्टि तिनविषै अधस्तन शीर्ष विशेषका द्रव्य तौ न दीजिए है अर अवशेष तीन द्रव्य निक्षेपण करिए है। तहां अधस्तन कृष्टि द्रव्यतैं एक कृष्टिका द्रव्यकौं अर मध्यम खंडका द्रव्यतैं एक खंडका द्रव्यकौं अर उभय विशेष द्रव्यतैं पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका प्रमाणकौं मिलाएं जो प्रमाण होइ तितने मात्र चयनिका द्रव्यकौं ग्रहि करि जघन्य कृष्टिविषै निक्षेपण करै है। तातैं जघन्य कृष्टिविषै दीया द्रव्य बहुत जानना। बहुरि तातैं ऊपरि अधस्तन कृष्टि द्रव्यतैं एक एक कृष्टि द्रव्यकौं अर मध्यम खंड द्रव्यतैं एक एक खंड द्रव्यकौं उभय विशेष द्रव्यतैं पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका प्रमाणतैं ३६१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रमकरि एक एक घटता प्रमाणमात्र चयनिके द्रव्यकौं ग्रहि करि अनुक्रमतैं द्वितीयादि अपूर्व कृष्टिनिविषै निक्षेपण करे है। तहां अंतकृष्टिविषै एक कृष्टि द्रव्यकौं अर एक मध्यम खंड द्रव्यकौं अर एक अधिक पूर्व कृष्टिका प्रमाणमात्र चयनिके द्रव्यकौं निक्षेपण कीजिए है। इहां प्रथमादि कृष्टितैं द्वितीयादि कृष्टिविषै दीया द्रव्य एक एक उभय द्रव्य विशेषमात्र घटता जानना। इहां अधस्तन कृष्टिका द्रव्य समाप्त भया। ऐसैं तीन द्रव्यका स्थापन कह्या। या प्रकार इतने इतने द्रव्यकरि इहां अपूर्व कृष्टि निपजी।

बहुरि प्रथम समयविषै करी ऐसी अपूर्व कृष्टि तिनिविषै जो जघन्य कृष्टि तीहिंविषै दोय ही द्रव्यका निक्षेपण हो है। तहां मध्यम खंड द्रव्यतैं एक खंडके द्रव्यकौं उभय विशेष द्रव्यतैं पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र चयनिके द्रव्यकौं ग्रहि निक्षेपण कीजिए है। यहु अपूर्व कृष्टिनिका अंत कृष्टिविषै निक्षेपण कीया जो द्रव्य तातैं असंख्यातवां भाग अर अनंतवां भाग करि हीन जानना जातैं द्वितीय समयविषै अपकर्षण कीया द्रव्यतैं असंख्यातवे भागमात्र तौ अधस्तन कृष्टिके एक कृष्टिका द्रव्य अर सर्व द्रव्यके अनंतवे भागमात्र जो उभय विशेषका एक चय इनकरि घटता द्रव्य इहां निक्षेपण कीया है। बहुरि द्वितीयादि पूर्व कृष्टिनिविषै अधस्तन शीर्ष विशेष सहित तीन द्रव्यका निक्षेपण हो है। तहां द्वितीय पूर्व कृष्टिविषै अधस्तन शीर्ष विशेषतैं एक चयके द्रव्यकौं मध्यम खंड द्रव्यतैं एक खंडके द्रव्यकौं उभय विशेष द्रव्यतैं एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाणमात्र चयनिके द्रव्यकौं ग्रहि निक्षेपण करे है। बहुरि तृतीयादि पूर्व कृष्टिनिविषै अधस्तन शीर्ष विशेषतैं दोय तीन आदि क्रमतैं एक एक बंधता चयनिके द्रव्यकौं अर मध्यम खंडतैं एक एक खंडके द्रव्यकौं उभय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष द्रव्यतैं दोय तीन आदि घटता पूर्व कृष्टि प्रमाणमात्र चयनिके द्रव्यकौं ग्रहि करि क्रमतैं निक्षेपण करै है। तहां पूर्व कृष्टिनिकी अंत कृष्टिविषै अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्यतैं एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाणमात्र चयनिके द्रव्यकौं मध्यम खंड द्रव्यतैं एक खण्ड द्रव्यकौं उभय विशेष द्रव्यतैं एक चयके द्रव्यकौं ग्रहि करि निक्षेपण करै है। इहां प्रथमादि कृष्टि-विषै दीया द्रव्यतैं द्वितीयादि कृष्टिविषै दीया द्रव्य क्रमतैं उभय द्रव्य विशेषके अनंतवे भागमात्र जो अधस्तन शीर्ष विशेष ताकरि हीन उभय द्रव्य विशेषमात्र जानना ऐसैं पूर्व कृष्टि थी तिनविषै इतना द्रव्य और मिलाया या प्रकार दीया द्रव्यका निक्षेपण कीएं प्रथम द्वितीय समयविषै कीनी जे कृष्टि तिनिका द्रव्य सर्व ही एक गो पुच्छाकार हो है। जैसैं गायका पूंछ क्रमतैं घटता हो है तैसैं क्रमतैं घटता द्रव्य प्रमाण लीएं हो है। सो अर्थ संदृष्टि आदि करि विचारैं यहु प्रकट जानिए है। सो संस्कृतटीकातैं जानना। बहुरि बहु-भागमात्र जो पूर्व स्पर्धक तिनिविषै देने योग्य द्रव्य था ताकौं 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा' इत्यादि विधानतैं प्रथमादि वर्गणानिविषै चय घटता क्रमकरि दीजिए है। इहां अंत कृष्टिविषै दीया द्रव्य क्रमतैं प्रथम वर्गणा द्रव्य अनंतवे भागमात्र है जातैं इहां भागहार द्व्यर्ध गुणहानि है। या प्रकार इस गाथाका अर्थ जानना॥ २८८॥

णवरि असंखाणंतिमभागूणं पुव्वकिट्टिसंधीसु।
हेट्ठिमखंडपमाणेणेव विसेसेण हीणादो॥ २८९॥

नवरि असंख्यानामंतिमभागोनं पूर्वकृष्टिसंधिषु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधस्तनखंडप्रमाणेनैव विशेषेण हीनात्॥ २८९ ॥

सं० टी०— अयं तु विशेषः द्वितीयादिसमयेषु कृष्टिद्रव्यनिक्षेपे पूर्वापूर्वकृष्टिसंधिषु अपूर्वकृष्टीनां चरमकृष्टिनिक्षिप्तद्रव्यात् पूर्वकृष्टिप्रथमकृष्टिनिक्षिप्तद्रव्यमसंख्येयभागेनानंतभागेन च न्यूनं—

१ ^
। १– । १– ।
व १२ ۵ । १६ ००० व १२ ۵ १६ – ४ एकाधस्तनकृष्टिद्रव्येणैकोभयद्रव्यविशेषेण च हीनत्वात्। अयमर्थः
। १_^ । १_^ख
ओ प ४ १६ – ४ ओ प ४ १६–४
۵ ख खर ۵ ख खर

प्राक् सप्रपंचं व्याख्यात इति नेह प्रतन्यते ॥ २८९ ॥ अथ कृष्टीनां शक्त्यल्पबहुत्वप्रदर्शनार्थमाह—

स० चं०—इतना विशेष जो पूर्व अपूर्व कृष्टिकी बंधानिविषै अपूर्वकृष्टिकी अंतकृष्टिविषै निक्षेपण कीया द्रव्यतैं पूर्व कृष्टिकी प्रथमकृष्टिविषै निक्षेपण कीया द्रव्य है सो असंख्यातवां भागकरि वा अनंतवां भागकरि घटता है। जातैं एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य अर एक उभय द्रव्यका विशेष ताकरि हीन हो है। सो कथन पूर्वैं किया ही है ॥ २८९ ॥

अवरादो चरिमोत्ति य अणंतगुणिदक्कमादु सत्तीदो।
इदि किट्टीकरणद्धा बादरलोहस्स बिदियद्धं ॥ २९० ॥

अवरस्मात् चरम इति च अनंतगुणितक्रमात् शक्तितः।
इति कृष्टिकरणाद्धा वादरलोभस्य द्वितीयार्धम् ॥ २९० ॥

।
सं० टी०— अपूर्वकृष्टिजघन्यकृष्ट्यविभागप्रतिच्छेदेभ्यः व ख ४ द्वितीयादिकृष्टयः पूर्वकृष्टिचरमकृष्टिपर्यंता
ख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अनंतानंतगुणितशक्तयो गच्छंति । तत्र तच्चरमकृष्टौ रूपोनपूर्वापूर्वकृष्ट्यायाममात्रवारानंतगुणकारैर्गुणितयविभाग प्रति-

१ –

।

च्छेदप्रमाणं व ख ४ अपवर्तिते एवं भवति व एवं तृतीयादिसमयेषु कृष्टिकरणकालचरमसमयपर्यंतेषु असंख्यातगु-

। ख   ख

ख ४

ख

णितक्रमेण द्रव्यमपकृष्य पूर्वापूर्वकृष्टिषु प्रागुक्तविधानेन द्रव्यनिक्षेपं करोति इत्युक्तप्रकारेण सूक्ष्मकृष्टिकरणे सति बादर-लोभवेदककालस्य द्वितीयार्धमात्रसूक्ष्मकृष्टिकरणकालो गच्छति यथा क्षपकश्रेण्यां पूर्वापूर्वस्पर्धकद्रव्यं सर्वमपि गृहीत्वा कृष्टीः करोति तथोपशमश्रेण्यां, किंतु पूर्वस्पर्धकद्रव्यात् कृष्टिकरणकालयोग्यपल्यासंख्यातैकभागमात्रं द्रव्यमपकृष्य सूक्ष्म-कृष्टीः करोति । शेषबहुभागमात्रस्पर्धकद्रव्यं स्वस्थाने एवोपशमयतीत्यर्थविशेषो ज्ञातव्यः ॥ २९० ॥ अथ कृष्टीकरण-काले स्थितिबंधप्रमाणप्ररूपणार्थं गाथात्रयमाह—

स० चं०— अपूर्व कृष्टिकी जघन्य कृष्टिके अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेद हैं । तिनतैं द्वितीयादि पूर्व कृष्टिकी अंत कृष्टि पर्यंतके अविभाग प्रतिच्छेद क्रमतैं अनंत अनंत गुणे हैं । तहां पूर्व कृष्टिकी अंतकृष्टिविषै एक घाटि पूर्व अपूर्वकृष्टिका जो प्रमाण तितनीबार अनंतका गुणकार हो है । ऐसैं द्वितीय समयविषै विधान कीया । बहुरि जैसैं द्वितीय समयविषै विधान कह्या तैसैं ही कृष्टि करण कालके तृतीयादि अंतसमयपर्यंतनिविषै क्रमतैं असंख्यातगुणा द्रव्यकौं अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है । इस प्रकार बादर लोभ वेदक कालका द्वितीय अर्धमात्र रूप सूक्ष्म कृष्टि करनेका काल व्यतीत हो है । जैसैं क्षपक श्रेणीविषै पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिका सर्व ही द्रव्यकौं अपकर्षण करि कृष्टि करै है । तैसैं उपशम श्रेणिविषै भी कृष्टि करै है । विशेष इतना—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां पूर्व स्पर्धकके द्रव्यतैं असंख्यातवां भागमात्र ही द्रव्यकौं ग्रहि सूक्ष्म कृष्टि करै है। अवशेष द्रव्य अपने स्वरूप रूप ही रहता संता उपशमै है ॥ २९० ॥

विदियद्धा संखेज्जाभागेसु गदेसु लोभठिदिबंधो।
अंतोमुहुत्तमेत्तं दिवसपुधत्तं तिघादीणं ॥ २९१ ॥

द्वितीयाद्धा संख्येयभागेषु गतेषु लोभस्थितिबंधः।
अंतर्मुहूर्तमात्रं दिवसपृथक्त्वं त्रिघातिनाम् ॥ २९१ ॥

सं० टी०— संज्वलनलोभप्रथमस्थितेर्द्वितीयार्धमात्रकृष्टिकरणकालस्य संख्यातबहुभागेषु गतेषु तद्बहुभागचरमसमये संज्वलनलोभस्यांतर्मुहूर्तमात्रस्थितिबंधः २ ७ ७ घातित्रयस्य स्थितिबंधो दिवसपृथक्त्वमात्रः दि ७ ॥ २९१ ॥
८

स० चं०— संज्वलन लोभकी प्रथम स्थितिका द्वितीय अर्धमात्र जो कृष्टि करण काल ताकौं संख्यातका भाग दीएं तहां बहुभाग व्यतीत होतैं अंतसमयविषै संज्वलन लोभका अंतर्मुहूर्तमात्र अर तीन घातियानिका पृथक्त्व दिनमात्र स्थिति बंध हो है ॥ २९१ ॥

किट्टीकरणद्धाए जाव दुचरिमं तु होदि ठिदिबंधो।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि अघादिठिदिबंधो ॥

कृष्टिकरणाद्धाया यावत् द्विचरमं तु भवति स्थितिबंधः।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि अघातिस्थितिबंधः ॥ २९२ ॥

सं० टी०— कृष्टिकरणकालस्य द्विचरमसमयं यावदघातित्रयस्य पूर्ववत्संख्यातसहस्रवर्षमात्र एव स्थितिबंधः। एवमुक्ताः संज्वलनलोभादीनां स्थितिबंधाः कृष्टिकरणकालद्विचरमसमयपर्यंतं समबंधा एव गच्छंति ॥ २९२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— कृष्टि करण कालका यावत् द्विचरम समय प्राप्त होइ तावत् तीन अघातिया कर्मनिका स्थितिबंध यथासम्भव संख्यात हजार वर्षमात्र है। बहुरि संज्वलन लोभादिकनिका भी स्थिति बंध है सो तिस द्विचरम समय पर्यंत पूर्वोक्त प्रमाण लीएं समान रूप ही जानना ॥ २९२ ॥

किट्टीयद्धाचरिमे लोभस्संतो मुहुत्तियं बंधो।
दिवसंतो घादीणं वेवस्संतो अघादीणं ॥ २९३ ॥

कृष्ट्यद्धाचरमे लोभस्यांतर्मुहूर्तकं बंधः।
दिवसांतः घातिनां द्विवर्षांतोऽघातिनाम् ॥ २९३ ॥

सं० टी०— कृष्टिकरणकालस्य चरमसमये संज्वलनलोभस्य स्थितिबंधः, अनंतरातीतस्थितिबंधात्संख्यातगुणहीनोऽप्यंतर्मुहूर्तमात्र एव २ ७ृ घातित्रयस्यानंतरातीतस्थितिबंधात्संख्यातगुणहीनोप्येकदिवसस्यांतरे एव न समो नाप्याधिक इत्यर्थः। ती दि १ –। अघातित्रयस्यानंतरातीतस्थितिबंधात्संख्यातगुणहीनोऽपि वर्षद्वयस्यांतरे एव न समो नाप्याधिक इत्यर्थः वी व २ – वे व २ – $\frac{3}{2}$ एते उपशमकानिवृत्तिकरणचरमसमयस्थितिबंधाः क्षपकानिवृत्तिकरणचरमसमयलोभादिस्थितिबंधेभ्यो द्विगुणप्रमाणा इति ग्राह्यं ॥ २९३ ॥ अथ संक्रमकालावधिनिर्देशार्थमाह—

स० चं०— कृष्टि करण कालका अंतसमयविषैं पूर्व स्थिति बंधतैं संख्यातगुणा घाटि संज्वलन लोभका अंतर्मुहूर्तमात्र अर तीन घातियानिका दिवसांत कहिए एक दिन किछू घाटि अर तीन अघातियानिका द्विवर्षांत कहिए दोय वर्ष किछू घाटि स्थिति बंध हो है। ए उपशमक अनिवृत्ति करणके अंतसमयविषै स्थिति बंध कहे ते क्षपक आनिवृत्ति करणके अंत समयके स्थिति बंधतैं दूणे हैं ॥ २९३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विदियद्धा परिसेसे समऊणावलितियेसु लोभदुगं।
सट्ठाणे उवसमादि हु ण देदि संजलणलोहम्मि॥

द्वितीयार्धे परिशेषे समयोनावलित्रिकेषु लोभद्विकम्।
स्वस्थाने उपशाम्यति हि न ददाति संज्वलनलोभे॥ २९४॥

सं० टी०— संज्वलनलोभप्रथमस्थितिद्वितीयार्द्धे समयोनावलित्रयेऽवशिष्टे अप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानलोभद्वयद्रव्यं संज्वलनलोभे न संक्रामति। संक्रमणावलिप्रथमसमये एतत्संक्रमणस्य विश्रांतत्वात् किंतु तल्लोभद्वयद्रव्यं स्वस्वस्थाने एवोपशाम्यति। संक्रमणावलौ गतायां प्रथमस्थित्यावलिद्वयेऽवशिष्टे आगालप्रत्यागालौ व्युच्छिन्नौ प्रत्यावलिचरमसमयपर्यंतमुदीरणा वर्तते॥ २९४॥ अथ लोभत्रयोपशमनावधिनिर्ज्ञानार्थमाह—

स० चं०— संज्वलन लोभकी प्रथम स्थितिका द्वितीयार्धविषै समय घाटि तीन आवली अवशेष रहैं अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान लोभ है सो संज्वलन लोभविषै संक्रमण नाहीं करै है जातैं संक्रमणावलीका प्रथम समयविषै ही इस संक्रमणका विधान भया। तौ कहा है? तिनि दोऊ लोभनिका द्रव्य है सो स्वस्थाने कहिए अपने रूपहीविषै होता संता उपशमै है। बहुरि संक्रमणावली व्यतीत भएं तहां दोय आवली अवशेष रहैं आगाल प्रत्यागालकी भी व्युच्छित्ति भई। बहुरि प्रत्यावली जो द्वितीयावली ताका अंतसमय पर्यंत उदीरणा वर्तै है। इनिका स्वरूप पूर्वैं कह्या है तैसैं जानना॥ २९४॥

बादरलोभादिठिदी आवलिसेसे तिलोहमुवसंतं।
णवकं किट्टिं मुच्चा सो चरिमो थूलसंपराओ य॥ ३६९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरलोभादिस्थितौ आवलिशेषे त्रिलोभमुपशांतं।
नवकं कृष्टिं मुक्त्वा स चरमः स्थूलसांपरायो यः ॥ २९५ ॥

सं० टी०— संज्वलनबादरलोभस्य प्रथमस्थितौ उच्छिष्टावलिमात्रेऽवशिष्टे उपशमनावलिचरमसमये लोभत्रयद्रव्यं सर्वमप्युपशमितं भवति तत्र सूक्ष्मकृष्टिगतद्रव्यं समयोनद्व्यावलिमात्रसमयप्रबद्धनवकबंधद्रव्यं उच्छिष्टावलिमात्रनिषेकद्रव्यं च नोपशमयति । एतद्द्रव्यत्रयं मुक्त्वा लोभत्रयस्य सर्वमपि सत्त्वद्रव्यमुपशमितमित्यर्थः । स एव कृष्टिकरणकालचरमसमये वर्तमानोऽनिवृत्तिकरणश्चरमसमयबादरसांपराय इत्युच्यते ॥ २९५ ॥ अथ सूक्ष्मसांपरायगुणस्थाने क्रियमाणकार्यविशेषप्रतिपादनार्थमाह—

स० चं०— बादर लोभकी प्रथम स्थितिविषै उच्छिष्टावलीमात्र अवशेष रहैं उपशमनावलीका अंतसमयविषै तीनों लोभका सर्व द्रव्य उपशम रूप भया है। तहां विशेष जो सूक्ष्म कृष्टिकौं प्राप्त भया द्रव्य अर समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्धनिका द्रव्य अर उच्छिष्टावलीमात्र निषेकनिका द्रव्य नाही उपशम्या है, अवशेष उपशम्या है । ऐसैं कृष्टि करण कालका अंत समयवर्ती जीवकौं चरम समयवर्ती अनिवृत्ति बादर सांपराय कहिए। या प्रकार अनिवृत्ति करणका स्वरूप कह्या ॥ २९५ ॥

से काले किट्टिस्स य पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि ।
लोहगपढमाठिदीदो अद्धं किंचूणयं गत्थ ॥ २९६ ॥

स्वे काले कृष्टेश्च प्रथमस्थितिकारवेदको भवति ।
लोभगप्रथमस्थितितः, अर्धं किंचिदूनकं गत्वा ॥ २९६ ॥

सं० टी०— अनिवृत्तिकरकालसमाप्त्यनंतरसमये प्रथमसमयवर्तिसूक्ष्मसांपरायः अंतर्मुहूर्तमात्रस्थितिस्थितसकल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

| | १‸
सूक्ष्मकृष्टिद्रव्यादस्मात् स a १२-a २ ९ अपकर्षणभागहारखंडितैकभागमात्रद्रव्यं गृहीत्वा स a १२ - a २ ९
७।८।ओप ७।८ ओ प ओ
a
| | १‸ १‸ a
इदं पुनः पल्यासंख्यातैकभागेन खंडयित्वा तद्बहुभागमुपरितनस्थितौ निक्षिपेत् स a १२-a २ ९ प पुनस्तदेकभागमिमं
७।८ ओ प ओ प a
a a

| | १‸
स a १२ - a २ ९ गृहीत्वा बादरलोभवेदककालात्किंचिन्न्यूनतृतीयभागमात्री २ ९। १ - मंतर्मुहूर्तायामां प्रथम-
७।८ ओ प ओ प ३
a a

स्थितिं कुर्वाणः प्रक्षेपयोगेत्यादिना प्रथमनिषेकादारभ्य प्रतिनिषेकमसंख्यातगुणितक्रमेणोदयाद्यवस्थितिगुणश्रेण्यायामे निक्षिपति पुनः पल्यासंख्यातबहुभागमंतर्मुहूर्तायामायामुपरितनस्थितौ अद्धाणेण सव्वधणेत्यादिना विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत् तन्न्यासोयं—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

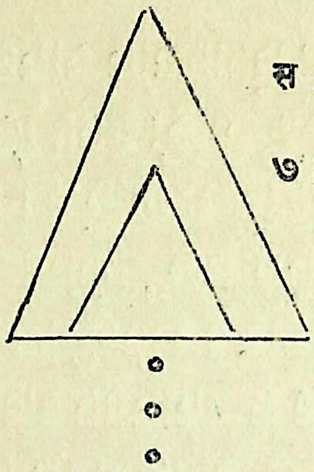

। १ ^ १ ^
स ə १२ – ə २ गृ १६ – २ गृ – ४

१ ^
७ । ८ । ओ प ओ २ गृ – ४ । १६ – २ गृ – ४
ə ० २

। १ ^
स ə १२ – ə २ गृ १६
७ । ८ । ओ प ओ २ गृ – ४ । १६ – २ गृ – ४
ə २

। १ ^
स ə १२ – ə २ गृ ६४
७ । ८ । ओ प ओ प ८५
ə ə

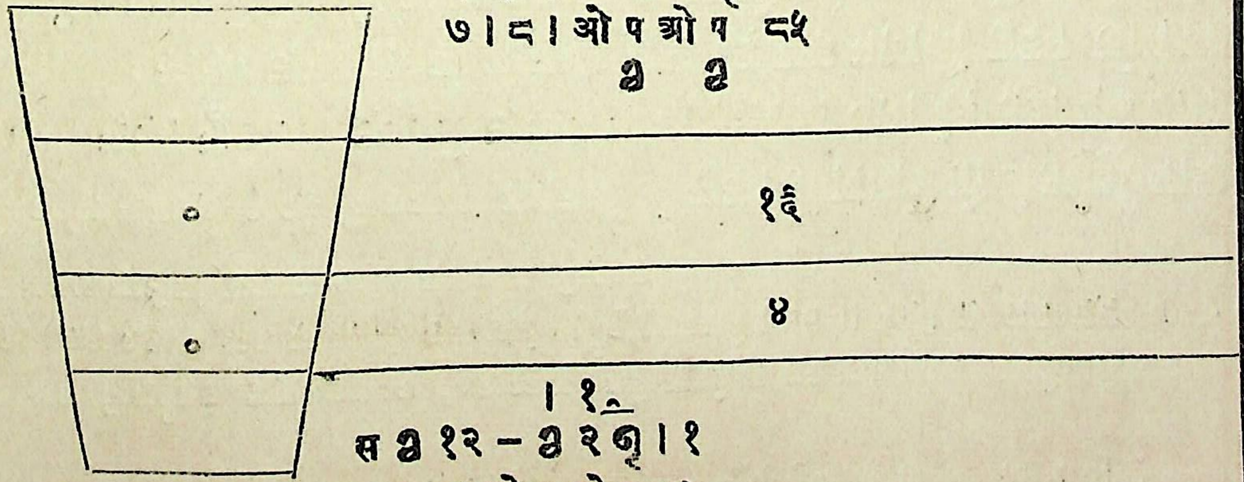

। १ ^
स ə १२ – ə २ गृ । १
७ । ८ । ओ प ओ प ८५
ə ə

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीयादिसमयेष्वपि सूक्ष्मसांपरायचरमसमयपर्यंतमसंख्यातगुणितकृष्टिद्रव्यमपकृष्य उक्तविधाने प्रथमस्थितौ द्वितीयस्थितौ च निक्षिपति। एवं वादरलोभप्रथमस्थितेः किंचिन्न्यूनद्वितीयार्धमात्रीं सूक्ष्मकृष्टीनां प्रथमस्थितिं २ ७ १ — ३ करोतीत्यर्थः। ज्ञानावरणादिकर्मणां अपूर्वकरणप्रथमसमयारब्धा गलितावशेषा सूक्ष्मसांपरायकालाद्विशेषाधिकायामा पूर्ववदेव प्रवर्तते। तस्मिन्नेव सूक्ष्मसांपरायप्रथमसमये उदयागतं सूक्ष्मकृष्टिद्रव्यं वेदयति ॥ २९६ ॥ अथ सूक्ष्मसांपरायप्रथमसमये निषेकगतसूक्ष्मकृष्टीनां उदयानुदयविभागप्रदर्शनार्थमिदमाह —

स चं०—अनिवृत्ति करणके अनंतरि प्रथम समयवर्ती जो सूक्ष्म सांपराय है सो अंतर्मुहूर्तमात्र स्थिति लिएं समस्त सूक्ष्म कृष्टिका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भागकौं सूक्ष्म लोभकी प्रथम स्थितिविषै निक्षेपण करै है। सो याका प्रमाण वादर लोभ वेदक कालतैं किछू घाटि तीसरा भागमात्र है। सो सूक्ष्म सांपरायका काल सोई सूक्ष्म कृष्टिका प्रथम स्थितिका प्रमाण जानना। सो यहु (होय) उदयादि अवस्थित गुणश्रेणि आयाम है। याके निषेकनिविषै 'प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंड' इत्यादि विधानतैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्यकौं द्वितीय स्थितिविषै निक्षेपण करै है। सो यहु तिस प्रथम स्थितिके उपरिवर्ती है। याका प्रमाण अंतर्मुहूर्त्तमात्र है। यहु ही इहां उपरितन स्थिति है। याके निषेकनिविषै "अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे" इत्यादि विधानतैं चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ऐसैं वादर लोभकी प्रथम स्थितिका द्वितीय अर्धतैं किंचित् न्यूनमात्र सूक्ष्म कृष्टिनिकी प्रथम स्थिति करै है। बहुरि ज्ञानावरण आदि कर्मनिकी अपूर्व करणका प्रथम समयतैं लगाय गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम पूर्ववत् प्रवर्तै है। सो ताका इहां प्रमा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ण किंचित् अधिक सूक्ष्म सांपराय कालमात्र है। बहुरि तिस ही सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषै सूक्ष्म कृष्टिका उदयकौं वेदै है—भोगवै है ॥ २१६ ॥

पढमे चरिमे समये कदकिट्टीणग्गदो दु आदीदो ।
मुच्चा असंखभागं उदेदि सुहुमादिमे सव्वे ॥ २१७ ॥

प्रथमे चरमे समये कृतकृष्टीनामग्रतस्तु आदितः ।
मुक्त्वा असंख्यभागं उदेति सूक्ष्मादिमे सर्वे ॥ २१७ ॥

सं० टी०— सूक्ष्मकृटिकरणकालस्य प्रथमसमये कृतानां सूक्ष्मकृष्टीनां पल्यासंख्यातैकभागमात्रकृष्टयः स्वस्वरूपेण नोदयमागच्छंति शेषास्ते बहुभागाः द्वितीयादिद्विचरमपर्यंतेषु समयेषु कृतकृष्टयः चरमसमयकृतकृष्टीनां पल्यासंख्यातबहुभागमात्रकृष्टयश्च स्वस्वशक्तियुक्ता एवोदयमागच्छंति । चरमसमयकृतकृष्टीनां पल्यासंख्यातैकभागमात्रकृष्टयस्तु स्वस्वशक्तिरूपेण नोदयमागच्छंति । या उदयमनागताः प्रथमसमयकृतकृष्टीनां चरमकृष्टेरारभ्य पल्यासंख्यातैकभागप्रमिताः कृष्टयस्ताः स्वस्वरूपं परित्यज्य स्वस्वशक्तेरनंतगुणहीनशक्तिरूपतया परिणम्योदयमागच्छंति । याश्चानुदयप्राप्ताश्चरमसमयकृतकृष्टीनां जघन्यकृष्टेरारभ्य पल्यासंख्यातैकभागप्रमाणाः कृष्टयः ताश्च स्वस्वरूपं परित्यज्य स्वस्वशक्तेरनंतगुणशक्त्यात्मतया परिणम्य मध्यमकृष्टिस्वरूपेणोदयमागच्छंतीति तात्पर्यं । तत्र सकलकृष्टिप्रमाणमिदं $\frac{४ \mid}{ख}$ पल्यासंख्यातैकभागेन खण्डयित्वा तद्बहुभागमात्रः सूक्ष्मकृष्टयः $\frac{४}{ख} \; \frac{१\text{–}\;प\;\text{a}}{प\;\text{a}}$ स्वस्वशक्तिरूपेणैवोदयमागच्छंति। शेषैकभागं पुनः पल्यासंख्यातैकभागेन खंडयित्वा तदेकभागं पृथक् संस्थाप्य $\frac{४ \mid}{ख\;प\;प \atop \text{a}\;\text{a}}$ तद्बहुभागं $\frac{४ \mid}{ख\;प \atop \text{a}} \; \frac{१\text{–}\;प\;\text{a}}{प\;\text{a}}$ द्वाभ्यां खं-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डयित्वा एकार्धप्रमिताः ४ । ख प प ३ ३ ३ १ प २ चरमसमयकृतानुदयकृष्टयो भवंति । पुनरवशिष्टार्धे प्राक्पृथक्संस्थापितपल्यासंख्यातैकभागे प्रक्षिप्ते प्रथमसमयकृतानुदयकृष्टिप्रमाणं भवत्तत्र सर्वतः स्तोकाश्चरमसमयकृतानुदयकृष्टयः ४ । ख प ३ २ ५ ततो विशेषाधिकाः प्रथमसमयकृतानुदयकृष्टयः ४ । ख प ३ २ ५ ततोऽसंख्येयगुणाः प्रथमसमयोदयागतकृष्टयः ४ ख प ३ १ प ३

प्रथमचरमसमयकृतानुदयकृष्टीनामधिकागमननिमित्तपल्यासंख्यातभागहारस्य लघुसंदृष्ट्यर्थं पंचांकः स्थापितः । तत्र प्रथमचरमसमयकृतानुदयकृष्टिषु विभंजनक्रमोऽर्थसंदृष्ट्युक्तप्रकारेण कर्तव्यः ॥२९७॥ अथ सूक्ष्मसांपरायस्य द्वितीयादिसमयेषु उदयानुदयकृष्टिविभागप्रदर्शनार्थमाह—

स० चं०— सूक्ष्म कृष्टि करनेके कालका प्रथम समयविषै अर अंतसमयविषै कीनी जे कृष्टि तिनकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि हैं ते अपने स्वरूप करि उदय न हो हैं। अन्य कृष्टिरूप परिणमि उदय हो है। बहुरि अवशेष पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहु भागमात्र प्रथम समय अंतसमयविषै कीनी कृष्टि अर द्वितीयादि चरम समयविषै कीनी सर्व कृष्टि ते अपने स्वरूप ही करि उदय हो हैं। प्रथम समयविषै जे कीनी कृष्टि तिनिविषै तौ अंत कृष्टितैं लगाय पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि उदयकौं प्राप्त नाहीं ते अपने स्वरूपकौं छोडि अपनी अनुभाग शक्तितैं अनंत गुणी घाटि शक्तिरूप परिणमि उदय आवै हैं। बहुरि अंत समयविषै कीनी जे कृष्टि तिनविषै जघन्य कृष्टितैं लगाय पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक भागमात्र कृष्टि उदय हो हैं। ते अपने स्वरूपकौं छोडि अपनी शक्तितैं अनंत गुणी शक्तिरूप परिणमि मध्यम कृष्टि रूप होइ उदय आवै हैं। ऐसा तात्पर्य है। तहां समस्त कृष्टिनिका जो प्रमाण ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभागमात्र कृष्टि तौ अपने स्वरूप ही करि उदय हो हैं। अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागकौं जुदा स्थापि बहुभागके दोय खंड करने। तहां एक खंड प्रमाण तौ अंतसमय सम्बन्धी अनुदय कृष्टि है। अर एक खंडविषै जुदा राख्या एक भाग मिलाएं जो प्रमाण होइ तितनी प्रथम समय सम्बन्धी अनुदय कृष्टि है ऐसैं कृष्टि करण कालका अंत समयविषै कीनी अनुदय कृष्टि स्तोक हैं तातैं ताका प्रथम समयविषै कीनी अनुदय कृष्टि किछू अधिक हैं। तातैं सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषै उदय आई कृष्टि असंख्यात गुणी है। इहां ऐसा अर्थ जानना– कृष्टि करणका प्रथम समयविषै कीनी कृष्टि ऊपरि लिखी तहां ऊपरि अंत कृष्टि लिखि ताके नीचैं उपांत आदि कृष्टि क्रमतैं लिखि नीचैं नीचैं जघन्य कृष्टि लिखनी। बहुरि ताके नीचैं नीचैं द्वितीयादि समयनिविषै कीनी कृष्टि भी याही प्रकार लिखनी। बहुरि लिखि नीचैं ही नीचैं अंत समयविषै कीनी कृष्टि लिखि तहां भी अंत कृष्टि ऊपरि लिखि नीचैं उपांत आदि कृष्टि लिखि नीचैं ही नीचैं जघन्य कृष्टि लिखनी। ऐसैं अंत समयविषै कीनी कृष्टिकी जघन्य कृष्टितैं लगाय प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिकी अंत कृष्टि पर्यंत कृष्टि लिखी। तिनिविषै ऊपरि ऊपरि क्रमतैं द्रव्य तौ एक एक चय प्रमाण घटता है। अर अनुभाग अनंतगुणा है। सो सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषै ऐसैं कृष्टिरूप परमाणू थीं तिनविषै इहां जेता प्रमाण कह्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तितनी ऊपरली वा नीचली कृष्टीनिके परमाणूनिकौं बीचिकी कृष्टिरूप परिणमावै है। अंक संदृष्टिकरि जैसैं सर्व कृष्टिनिका प्रमाण एक हजार ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका प्रमाण पांच ताका भाग दीएं बहुभागमात्र आठसै बीचिकी कृष्टि हैं ते तौ अपने रूप ही उदय हो हैं। एक भाग दोयसै ताकौं पांचका भाग दीएं चालीस जुदा स्थापि अवशेष एकसौ साठिके दोय भाग कीएं एक भागमात्र असी तौ अंतसमयविषै कीनी कृष्टिकी जघन्य कृष्टितैं लगाय जे नीचेकी कृष्टि हैं ते अनुदयरूप हैं। इनके परमाणू अनुभाग बंधनेतैं बीचकी कृष्टि रूप परिणामि उदय हो हैं। बहुरि एक भागविषै जुदा राख्या चालीस मिलाएं एकसौ बीस सो इतनी प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिकी अंतकृष्टितैं लगाय उपरि कृष्टि हैं ते अनुदय रूप हैं। इनके परमाणू अनुभाग घटनेतैं बीचिकी कृष्टिरूप परिणामि उदय हो हैं। ऐसैं ही यथार्थ कथन समझना॥ २९७॥

विदियादिसु समयेसु हि छंडदि पल्लाअसंखभागं तु।
आकुंददि हु अपुव्वा हेट्ठा तु असंखभागं तु॥

द्वितीयादिषु समयेषु हि त्यजति पल्यासंख्यभागं तु।
आक्रामति हि अपूर्वा अधस्तनास्तु असंख्यभागं तु॥ २९८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०-सूक्ष्म सांपरायस्य द्वितीयसमये प्रथमसमयोदयकृष्टीनामग्र-

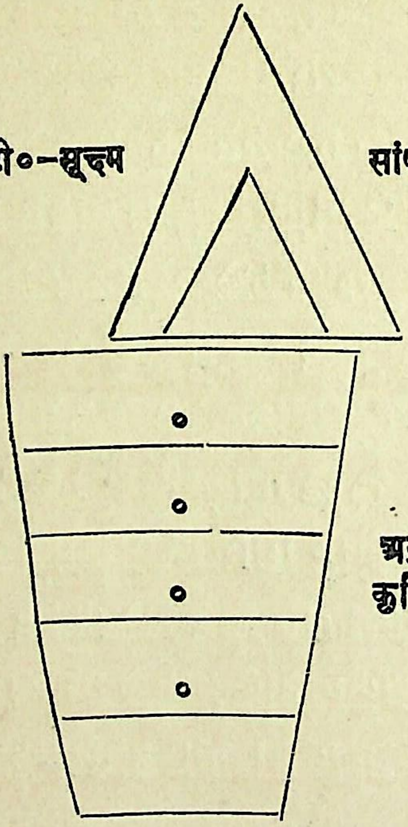

अनुदय कृष्टि ४ २ / ख प ५ / २ (।)	उदय कृष्टि ४ प / ख प २ / २ (। १ –)	अनुदय कृष्टि ४ ३ / ख प ५ / २ (।)	उदय कृष्टि ४ प / ख प २ / २ (। १ –)

कृष्टेरारभ्य प्रथमसमयोपरितनानुदयकृष्टिपल्यासंख्यातैकभागमात्रीः कृष्टीः ४ ३ / ख प ५ प / २ २ (।) मुंचति तावत्यः कृष्टयो नोदयमागं॰च्छतीत्यर्थः । प्रतिसमयमुदयकृष्टीनामनंतगुणहीनशक्तिकत्वान्यथानुपपत्तेः । पुनः प्रतिसमयाधस्तनानुदयकृष्टिपल्यासंख्यातैकभागमात्रापूर्वकृष्टीः ४ २ / ख प ५ प / २ २ (।) आस्पृशति अवष्टभ्य गृह्णातीत्यर्थः, तावन्मात्र्यः कृष्टयः उदयमागच्छंती-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्युक्तं भवति। एवं द्वितीयसमये उदयकृष्टयः प्रथमसमयोदयकृष्टिभ्यो विशेषहीनाः, अत्रष्टभ्य गृहीताः कृष्टीरेताः—
| ४ २ मुक्तकृष्टिष्वेतासु | ४ ३ विशोध्यावशिष्टेन प्रथमसमयानुदयकृष्टिपल्यासंख्यातैकभागमात्रेण | ४ १
ख प ५ प ख प ५ प ख प ५ प
a a a a a a
विशेषेण हीना द्वितीयसमयोदयकृष्टय इत्यर्थः। एवं तृतीयादिसमयेषु सूक्ष्मसांपरायचरमसमयपर्यंतेषु पूर्वपूर्वहानिविशेषपल्यासंख्यातैकभागमात्रविशेषेण हीनाः कृष्टयः प्रतिसमयमुदयमागच्छंतीति ज्ञातव्यं ॥ २९८ ॥ अथ सूक्ष्मकृष्टिद्रव्योपशमनविधानप्ररूपणार्थमाह—

स० चं—सूक्ष्म सांपरायका द्वितीय समयविषै जे प्रथम समयविषै उदय रूप कृष्टि हैं तिनकी अंत कृष्टितैं लगाय कृष्टिनिकौं छोडे है। उदयकौं प्राप्त न करै है। तिनका प्रमाण प्रथम समयविषै हीन शक्ति रूप होने योग्य जे ऊपरिकी कृष्टि अनुदय रूप कहीं थी तिनके प्रमाणकौं पल्यका असंख्यातकां भाग दीएं एक भागमात्र जानना। इतनी नवीन ऊपरिकी कृष्टि इहां उदय रूप न हो हैं। ए कृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभाग रूप परिणमि अन्य नीचली कृष्टि रूप परिणमि उदय आवै हैं। और प्रकार समय समय उदय कृष्टिनिका अनंत गुणी शक्तिनिका घटना न बनै है। बहुरि प्रथम समयविषै अनंतगुणां शक्ति रूप परिणमने योग्य जे अधस्तन अनुदय रूप कृष्टि हैं तिनकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां एक भाग प्रमाण नीचैंकी नवीन कृष्टि जे प्रथम समयविषै उदय न थीं ते उदय रूप हो हैं। ऐसैं होतैं प्रथम समयविषै उदय रूप कृष्टिनिका प्रमाणतैं द्वितीय समयविषै उदय रूप कृष्टिनिका प्रमाण किछू विशेषकरि घटता जानना। इहां नवीन उदय रूप करी कृष्टिनिका प्रमाणकौं नवीन अनुदय रूप करी कृष्टिनिका प्रमाणविषै घटाएं अवशेष प्रमाण प्रथम समयविषै अ- ५७८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुकृष्टिकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र हैं। सो इतना प्रथम समयकी उदय कृष्टिका प्रमाणतैं द्वितीय समयकी उदय कृष्टिका प्रमाण घटता जानना। इहां ऐसा अर्थ जानना—

इस सूक्ष्म सांपरायका द्वितीय समयविषै जे प्रथम समयविषै अनुदय रूप कृष्टि कहीं थीं तिनविषै अंत कृष्टितैं लगाय इहां जेता प्रमाण कह्या तितनी कृष्टि उदय रूप न हो हैं। ते अनंत गुणी घटतीं जे मध्यम कृष्टि तिनरूप परिणमि उदय हो हैं। बहुरि तिस प्रथम समयविषै जे नीचेकी अनुदय कृष्टि कहीं थीं तिनविषै अंत कृष्टितैं लगाय इहां जेता प्रमाण कह्या तितनी कृष्टि उदय रूप हो हैं। अंकसंदृष्टिकरि जैसैं प्रथम समयविषै उदय कृष्टि आठसै थी तिनविषै प्रथम समयविषैं ऊपरिकी अनुदय कृष्टिका प्रमाण एकसौ बीस था ताकौं पांचका भाग दीएं चौईस पाये सो अवशेष रही कृष्टिकी अंत कृष्टितैं लगाय इतनी कृष्टि तौ इहां नवीन उदय रूप न हो हैं। अर तिस प्रथम समयविषै नीचेकी असी कृष्टि उदय रूप न थीं तिनकौं पांचका भाग दीएं सोलह पाए सो इतनी नीचेकी अनुदय कृष्टि की अंत कृष्टितैं लगाय इहां उदय रूप भई ऐसैं चौईसमें सोलह घटाएं आठ रहे सो इतनी कृष्टि प्रथम समयतैं दूसरा समयविषै घाटि उदय हो हैं तातैं दूसरे समय सातसै बाणवै कृष्टिका उदय जानना। ऐसैं ही यथार्थ कथन समझना। इहां बहुत अनुभाग युक्त जे ऊपरिकी कृष्टि तिनिका अभाव करनेतैं अर स्तोक अनुभाग युक्त जे नीचेकी कृष्टि तिनका सद्भाव करनेतैं प्रथम समयविषै उदय आया अनुभागतैं द्वितीय समयविषै उदय आया अनुभाग का घटना हो है ऐसा जानना। ऐसैं ही सूक्ष्म सांपरायका तृतीय आदि अंतसमय पर्यंत ३७९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष घटता क्रम लीएं कृष्टिनिका उदय क्रमतैं जानना । विशेषका प्रमाण जेती पूर्व समयविषै घटी थी ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र जानना ॥

किट्टिं सुहुमादीदो चरिमोत्ति असंखगुणिदसेढीए ।
उवसमदि हु तच्चरिमे अवरट्ठिदिबंधणं छण्हं २९९

कृष्टिं सूक्ष्मादितः चरम इति असंख्यगुणितश्रेण्या ः ।
उपशमयाति हि तच्चरमे अवरास्थितिबंधनं षण्णाम् ॥ २९९ ॥

सं० टी०— सूक्ष्मसांपरायस्य प्रथमसमये सकलसूक्ष्मकृष्टिद्रव्यस्य पल्यासंख्यातैकभागमात्रं—

| | १ ^
स a १२–a २१ृ
७।८।ओ प प
a a

उपशमयति । द्वितीयसमये ततोऽसंख्येयगुणां द्रव्यमुपशमयति

| | १ ^
स a १२–a २१ृ a एवं
७।८ओ प प
a a

तृतीयादिसमयेष्वसंख्यातगुणितक्रमेणोपशमय्य चरमसमये चरमफालिद्रव्यं

| १ ^ १ ^
स a १२ a २१ृ प
७।८।ओ प प a
a a

उपशमयति । ये च समयोनद्व्यावलिमात्रसंज्वलनलोभनवकबंधसमयप्रबद्धास्ते च सूक्ष्मसांपरायप्रथमसमयादारभ्य समयं समयंप्रत्यसंख्यातगुणितक्रमेणोपशाम्यंते । सूक्ष्मसांपरायचरमसमये षण्णामायुर्मोहवर्ज्यानां कर्मणां जघन्यस्थितिबंधो भवति ॥ २९९ ॥ अथ तत्स्थितिबंधविशेषनिर्णयार्थमाह—

स० चं०— सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषै समस्त सूक्ष्म कृष्टिनिका द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र जो द्रव्य ताकौं उपशमावे है । दूसरे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय तातैं असंख्यातगुणा द्रव्यकौं उपशमावै है। ऐसैं तृतीयादि अंत पर्यंत समयनिविषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्यकौं उपशमावै है। तहां अंत समयविषै एक घाटि सूक्ष्म सांपराय कालका समय प्रमाण मात्रवार असंख्यातका गुणकार कीएं जो अंत फालिका द्रव्य भया ताकौं उपशमावै है। बहुरि समय घाटि दोय आवलीमात्र संज्वलन लोभके नवक समयप्रबद्ध न उपशमे थे तिनिका द्रव्यकौं सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयतैं लगाय समय समय प्रति असंख्यातगुणा क्रम लीएं उपशमावै है। बहुरि सूक्ष्म सांपरायका अंतसमयविषै आयु मोह विना छह कर्मनिका जघन्य स्थितिबंध हो है॥ २९९॥

अंतोमुहुत्तमेत्तं घादितियाणं जहण्णठिदिबंधो।
णामदुग बेयणीये सोलस चउवीस य मुहुत्ता ३००

अंतर्मुहूर्तमात्रं घातित्रयाणां जघन्यस्थितिबंधः।
नामद्विकवेदनीये षोडश चतुर्विंशश्च मुहूर्ताः॥ ३००॥

सं० टी०—सूक्ष्मसांपरायचरमसमये त्रयाणां घातिकर्मणां ज्ञानदर्शनावरणांतरायाणां जघन्यस्थितिबन्धोऽतर्मुहूर्तमात्रः, नामगोत्रयोः षोडशमुहूर्तप्रमितः, सातवेदनीयस्य चतुर्विंशतिमुहूर्तमात्रः स्थितिबंधो भवति। ये पूर्वमुच्छिष्टावलिमात्रनिषेकाः वादरसंज्वलनलोभस्य स्पर्धकगतास्त्यक्तास्ते च पूर्वोक्तस्थितोक्तसंक्रमविधानेन कृष्टिरूपतया परिणम्योदयमागच्छंति॥ ३००॥ अथ पूर्वोक्तार्थोपसंहारं गाथाद्वयेनाह—

स० चं०—तहां तीनि घातियानिका अंतर्मुहूर्त, नाम गोत्रका सोलह मुहूर्त, साता वेदनीयका चौबीस मुहूर्तमात्र जघन्य स्थितिबंध हो है। इहां उपशम श्रेणी अपेक्षा जघन्य स्थितिबंध कह्या है। बहुरि जे पूर्वै वादरलोभके उच्छिष्टावलीमात्र निषेक रहे थे ते पूर्वोक्त थिउक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्रम विधान करि कृष्टि रूप परिणामि उदय आवै हैं ॥ ३०० ॥ आगें पूर्वोक्त अर्थका उपसंहार करैं हैं—

पुरिसादीणुच्छिट्ठं समऊणावलिगदं तु पच्चिाहिदि ।
सोदयपढमाट्ठिदिणा कोहादीकिट्टियंताणं ॥ ३०१ ॥

पुरुषादीनामुच्छिष्टं समयोनावलिगतं तु प्रत्याहंति ।
सोदयप्रथमस्थितिना क्रोधादिकृष्टयंतानां ॥ ३०१ ॥

(सं० टी०— पुंवेदादीनां समयोनावलिमात्रनिषेकद्रव्यमुच्छिष्टावलिसंज्ञं क्रोधादिसूक्ष्मकृष्टिपर्यंतानां स्वोदयप्रथमस्थितिनिषेकैः सह तद्रूपेण परिणम्य पक्ष्यति—उदेष्यतीत्यर्थः ॥ ३०१ ॥

स० चं०— पुरुष वेदादिकनिका समय घाटि आवलीमात्र निषेकनिका द्रव्य उच्छिष्टावलीरूप है सो क्रोधादि सूक्ष्म कृष्टि पर्यंतनिके जे उदयरूप निषेकतैं लगाय प्रथम स्थितिके निषेकनिकी साथि तद्रूप परिणामिकरि पक्ष्याति कहिए उदयरूप होसी। पुरुषवेदके उच्छिष्टमात्र निषेक रहे ते तौ संज्वलन क्रोधकी प्रथम स्थितिविषै तद्रूप परिणमि उदय हो हैं। तैसैं ही संज्वलन क्रोधकीका संज्वलन मानविषै इत्यादि क्रमतैं बादर लोभका उच्छिष्टावलीके निषेक सूक्ष्म कृष्टिविषै तद्रूप परिणामि उदय हो हैं। सो पूर्वैं वर्णन कीया ही है ३०१

पुरिसादो लोहगयं णवकं समऊण दोण्णि आवलियं ।
वसमादि हु कोहादीकिट्टीअंतेसु ठाणेसु ॥ ३०२ ॥

पुरुषात् लोभगतं नवकं समयोने द्वे आवलिके ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लब्धि सार ३८३

उपशाम्यंति हि क्रोधादिकृष्ट्यंतेषु स्थानेषु ॥ ३०२ ॥

सं० टी०— पुंवेदादीनां लोभपर्यंतानां समयोनद्व्यावलिमात्रनवकबंधसमयप्रबद्धद्रव्यं क्रोधादिकृष्टिपर्यंतोपशमन-कालेषु प्रतिसमयमसंख्यातगुणितक्रमेणोपशमयति । सूक्ष्मकृष्टिप्रथमस्थितौ आवलिद्वये अवशिष्टे आगालप्रत्यागाल-व्युच्छेदो भवति । समयाधिकावलिमात्रेऽवशिष्टे पूर्ववज्जघन्योदीरणा भवति उच्छिष्टावलिमात्रनिषेकाश्च स्वस्थाने एव कर्मरूपतया परिणम्य गलंति ॥ ३०२ ॥ एवं सूक्ष्मसांपरायचरमसमये सर्वकृष्टिद्रव्यमुपशमय्य तदनंतरसमये उपशांतक-षायो भवतीत्याह—

स० चं०— पुरुषवेद आदि लोभ पर्यंतनिका समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्धनिका द्रव्य है सो क्रोधादिक कृष्टिपर्यंतके प्रथम स्थितिके कालनिविषै समय समय असंख्यातगुणा क्रम लीएं उपशमै है। सो भी पुरुषवेदका नवक समयप्रबद्ध संज्वलन क्रोधकी प्रथम स्थितिका कालविषैं उपशमै है इत्यादि पूर्वैं वर्णन कीया ही है। बहुरि सूक्ष्म कृष्टिका प्रथम स्थितिविषै दोय आवली अवशेष रहैं ताकी आगाल प्रत्यागाल क्रियाका व्युच्छेद हो है। अर समय अधिक आवलीमात्र अवशेष रहैं पूर्वोक्तवत् जघन्य उदीरणा हो है। अर उच्छिष्टावलीमात्र निषेक अवशेष रहे ते अपने रूप ही विषै उदयरूप परिणमि निर्जरै हैं ऐसैं सूक्ष्म सांपरायका अंत समयविषैं सर्व कृष्टि द्रव्यकौं उपशमाय अनंतर समयविषै उपशांत कषाय हो है ॥ ३०२॥

उवसंतपढमसमये उवसंतं सयलमोहणीयं तु।
मोहस्सुदयाभावा सव्वत्थ समाणपरिणामो ॥

उपशांतप्रथमसमये उपशांतं सकलमोहनीयं तु।

सटीक ३८३

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहस्योदयाभावात् सर्वत्र समानपरिणामः ॥ ३०३ ॥

सं॰ टी॰— उपशांतकषायस्य प्रथमसमये सकलं चारित्रमोहनीयं बंधोदयसंक्रमोदीरणोत्कर्षणापकर्षणादिसर्वेषां करणानामनुद्भूतिवशेन सर्वात्मनोपशमितं, उदयादिषु निक्षेप्तुमशक्यमित्यर्थः। तस्योपशांतकषायस्य प्रथमसमयादारभ्य स्वचरमसमयपर्यंते अंतर्मुहूर्तमात्रे गुणस्थानकाले समान एव प्रतिसमयमवस्थितः एव विशुद्धिपरिणामो भवति। विशुद्धिविकल्पकरणस्य कषायोदयस्य तस्मिन्नत्यंताभावात् तत एव प्रतिसमयमेकाहत्यविशुद्धिरूपं यथाख्यातचारित्रमुपशांतकषाये भवतीति प्रवचने प्रतिपादितं ॥ ३०३ ॥ अथोपशांतकषायकालप्रमाणप्रदर्शनार्थमाह—

स॰ चं॰—उपशांतकषायका प्रथम समयविषै सकल चारित्र मोहनीय कर्म है सो बंध उदय संक्रम उदीरणा उत्कर्षण अपकर्षण आदि सर्व करणनिका न उपजनेतैं सर्वप्रकार उपशम्या। उदयादिविषै निक्षेपण करनेकौं समर्थरूप न रह्या, तिस उपशांत कषायका प्रथम समयतैं अंत समय पर्यंत अंतर्मुहूर्तमात्र अपने गुणस्थानका कालविषै समान रूप विशुद्धि परिणाम है जातैं इहां हीनाधिक विशुद्धताकौं कारण कषायनिके उदयका अभाव है। ऐसा यथाख्यात चारित्र है ॥ ३०३ ॥

अंतोमुहुत्तमेत्तं उवसंतकसायवीयरायद्धा।
गुणसेढीदीहत्तं तस्सद्धा संखभागो दु ॥ ३०४ ॥

अंतर्मुहूर्तमात्रं उपशांतकषायवीतरागाद्धा।
गुणश्रेणीदीर्घत्वं तस्याद्धा संख्यभागस्तु ॥ ३०४ ॥

सं॰ टी॰—उपशांता अनुद्भूताः कषायाः यस्यासौ उपशांतकषायः। वीतोऽपगतो रागः संक्लेशपरिणामो यस्मादसौ वीतरागः, उपशांतकषायश्चासौ वीतरागश्च उपशांतकषायवीतरागस्तस्याद्धा गुणस्थानकालोऽन्तर्मुहूर्तमात्र एव ततः परं कषायाणां नियमेनोदयासंभवात्। द्रव्यकर्मोदये सति संक्लेशपरिणामलक्षणभावकर्मणः संभवेन तयोः कार्यकारणभाव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसिद्धेः । सोऽयमुपशांतकषायः प्रथमसमये आयुर्मोहनीयवर्जितानां ज्ञानावरणादिकर्मणां द्रव्यं सूक्ष्मसांपरायचरमसमयापकृष्टगुणश्रेणिद्रव्यादसंख्यातगुणितमपकृष्य स्वगुणस्थानकालस्य संख्यातैकभागमात्रे आयामे उदयावलिप्रथमसमयादारभ्य प्रक्षेपयोगेत्यादिगुणश्रेणिविधानेन निक्षिपति ॥ ३०४ ॥ अमुमेवार्थमभिव्यक्तुमाह—

स० चं०— उपशांत कषाय वीतराग ग्यारहां गुणस्थानका काल अंतर्मुहूर्तमात्र है तातैं परैं नियमकरि द्रव्यकर्मके उदयके निमित्ततैं संक्लेशरूप भावकर्म प्रकट हो है। बहुरि इस कालके संख्यातवे भागमात्र इहां उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणि आयाम है। इसविषै सूक्ष्मसांपरायका अंत समयविषै जेता द्रव्य अपकर्षण कीया तातैं असंख्यातगुणा आयु मोह विना अन्य कर्मनिका द्रव्यकौं अपकर्षण करि "प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंड" इत्यादि विधानतैं असंख्यातगुणा क्रम लीएं निक्षेपण करै है ॥ ३०४ ॥

उदयादिअवट्ठिदगा गुणसेढी दव्वमवि अवट्ठिदगं ।
पढमगुणसेढिसीसे उदये जेट्ठं पदेसुदयं ॥ ३०५ ॥

उदयाद्यवस्थितका गुणश्रेणी द्रव्यमपि अवस्थितकं ।
प्रथमगुणश्रेणिशीर्षे उदये ज्येष्ठं प्रदेशोदयम् ॥ ३०५ ॥

सं० टी०— उपशांतकषायेण प्रथमसमये उदयावलिप्रथमसमयादारभ्य यावन्मात्रायामा गुणश्रेणी विहिता द्वितीयादिसमयेष्वपि तावन्मात्रायामा एव गुणश्रेणिर्विधीयते । उदयावल्यामेकस्मिन् समये गलिते उपरितनस्थितावेकस्मिन् समये गुणश्रेणिद्रव्यनिक्षेपप्रतिज्ञानात् । अत एवोदयाद्यवस्थितगुणश्रेणिः प्रतिसमयं प्रवर्तत इत्युक्तं । उपशांतकषायेण प्रथमसमये ज्ञानावरणादिकर्मद्रव्यं यावन्मात्रमपकृष्य गुणश्रेण्यायामे निक्षिप्तं तावन्मात्रमेव प्रतिसमयं द्रव्यमपकृष्य निक्षिपति नोनाधिकं प्रतिसमयमवस्थितविशुद्धिपरिणामनिबंधनस्य द्रव्यापकर्षणस्य प्रतिसमयं हानिवृद्ध्यभावात् । अत एव द्रव्यमप्यवस्थितमित्युक्तं । यदा उपशांतकषायेण प्रथमसमयकृतगुणश्रेणिशीर्षसमयः उदयमागच्छति तदा त- ३८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्मिन् समये उत्कृष्टप्रदेशोदयो भवति। तद्यथा—

प्रथमसमयापकृष्टगुणश्रेणिद्रव्यस्य चरमनिषेकः स a १२ – ६४ / ७। ओ प ८५ a द्वितीयसमयापकृष्टद्रव्यस्य द्विचरमनिषेकः— स a १२ – १६ / ७ ओ प ८५ a एवं तृतीयादिसांप्रतिकगुणश्रेण्यायामचरमसमयपर्यंतापकृष्टगुणश्रेणिद्रव्याणां त्रिचरमादिप्रथमनिषेकपर्यंताश्च सर्वे निषेकाः सांप्रतिकगुणश्रेण्यायामसमयप्रतिमिताः पुंजीकृताः एकसमयापकृष्टगुणश्रेणिद्रव्यमात्रं द्रव्यं स a १२ – / ७ ओ प a एतच्च तत्कालावस्थितिसत्त्वगोपुच्छद्रव्येण स a १२ – ७ृ १ १६ – २७ / ७ ृ। ओ १२। १६। ४ अनेन साधिकमुदेतीति।

ननु प्रथमसमयकृतगुणश्रेणिशीर्षस्य उपरितनसमयेऽपि तत्र तत्रोदयमानं द्रव्यं एकसमयापकृष्टद्रव्यमात्रमेव संभवति ततः कारणात्कथं प्रथमसमयकृतगुणश्रेणिशीर्षसमये एवोत्कृष्टप्रदेशोदयः संभवतीति नाशंकितव्यं, उपरितनसमयेषूदयमागतेष्वेकसमयापकृष्टद्रव्यमात्रस्य समानत्वेऽपि प्रथमसमयकृष्टिद्रव्यमात्रस्य समानत्वेऽपि प्रथमसमयकृतगुणश्रेणीशीर्षसमयसत्त्वगोपुच्छद्रव्यात् उत्तरोत्तरसमयसत्त्वगोपुच्छद्रव्याणामेकैकचयहीनत्वेन तत्र तत्रोदयद्रव्यस्य किंचिन्न्यूनत्वा ० ० ० दथापूर्वकरणप्रथमादिसमयकृतगलितावशेषगुणश्रेणीशीर्षसमये सांप्रतिकगुणश्रेण्यायामाभ्यंतरवर्तिन्युदयागते तदा बहुभिः प्राक्तनगुणश्रेणीनिषेकैः तात्कालिकसत्त्वगोपुच्छद्रव्येण चाभ्यधिकं बहुतरद्रव्यमुदयमागमिष्यतीत्यपि न मंतव्यं सूक्ष्मसांपरायचरमसमयपर्यंतनिक्षिप्तप्राक्तनगुणश्रेणिद्रव्यात्सर्वस्मादपि उपशांतकषायविशुद्धिमाहात्म्येन सांप्रतापकृष्टगुणश्रेणिद्रव्यजघन्यनिषेकस्याप्यसंख्येयगुणत्वसंभवात्। अतः कारणादधस्तनोपरितनसमयोदयनिषेकेभ्यः प्रथमसमयकृतगुणश्रेणीशीर्षसमयोदयनिषेकद्रव्यं बहुतरमिति सूक्तं ॥ ३०५ ॥ अथोपशांतकषायेण एकान्नषष्ट्युदयप्रकृत्यनुभागविभागप्रदर्शनार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं०— उपशांत कषायका प्रथम समयविषै उदयावलीका प्रथम समयतैं लगाय गुणश्रेणि आयाम जेता प्रमाण लीएं आरम्भ कीया तितना प्रमाण लीएं ही द्वितीयादि स-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मयनिविषे भी गुणश्रोणि आयाम है। जातैं उदयावलीविषै एक समय व्यतीत होतैं उपरितन स्थितिका एक समय गुणश्रोणि आयामविषै मिलै है । याहीतैं उदयादि अवस्थिति गुणश्रोणि आयाम है। बहुरि उपशांत कषायका प्रथम समयविषै जेता द्रव्य अपकर्षणकरि गुणश्रोणिविषै दीया तितना ही समय समय प्रति दीजिए है जातैं इहां परिणाम अवस्थित है, ताके निमित्ततैं अपकर्षणरूप द्रव्यका भी प्रमाण अवस्थित है। बहुरि प्रथम समयविषै कीनी जे गुणश्रोणि ताका शीर्ष कहिए अंत निषेक सो जिससमय उदय आवै तिस समय उत्कृष्ट कर्म परमाणूनिका उदय जानना जातैं तिस समयविषैं प्रथम समयविषै करी गुणश्रेणिका तौ अंत निषेक अर दूसरा समयविषै करी गुणश्रेणिका द्विचरम निषेक आदि इस समयविषैं करी गुणश्रेणिका प्रथम निषेक पर्यंत सर्वनिषेक मिलि गुणश्रेणिमात्र द्रव्य भया सो तिस समय सम्बन्धी निषेकविषै एकट्ठा हूवा सो तिस निषेकविषै पूर्वैं सत्तारूप तिष्ठै था जो गोपुच्छ द्रव्य तिस करि सहित उदय हो है। बहुरि यातैं ऊपरिके समयनिविषै भी मिलिकरि गुणश्रेणिमात्र द्रव्य एकठा हो है परन्तु गोपुच्छ द्रव्यविषै एक एक चयमात्र घटता द्रव्य पाइए तातैं तहां ही उत्कृष्ट प्रदेशनिका उदय रूप कह्या है। कोऊ कहैगा कि पूर्वैं गलितावशेष गुणश्रोणि आयाम था ताका शीर्षरूप समय है सो अब करी गुणश्रोणि आयामके अभ्यंतरवर्ती है बीचि आय गया है तिस समय बहुत गुणश्रोणिनिके निषेक अर तिस समय सम्बन्धी गोपुच्छ द्रव्य मिलि बहुत घणा द्रव्य उदय रूप हो है तहां उत्कृष्ट द्रव्यका उदय क्यों न कहौ ? ताकौं कहिए है—— पूर्व गुणश्रोणिविषै निक्षेपण कीया सर्व द्रव्यतैं भी इहां गुणश्रेणिका जघन्य निषेकविषैं भी निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यातगुणा है तातैं ऊपरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीचेके सर्व निषेकनितैं इहां प्रथम समयविषै करी गुणश्रेणिका शीर्ष जिससमयविषै उदय होइ तिस समयविषै ही उत्कृष्ट द्रव्यका उदय है ॥ ३०५ ॥

णामधुवोदयबारस सुभगति गोदेक्क विग्घपणगं च।
केवल णिद्दाजुयलं चेदे परिणामपच्चया होंति ॥

नामध्रुवोदयद्वादश सुभगात्रि गोत्रकं विघ्नपंचकं च।
केवलं निद्रायुगलं चैते पारिणामप्रत्यया भवंति ॥ ३०६ ॥

सं० टी०—उपशांतकषाये नामकर्मणो ध्रुवोदयप्रकृतयस्तैजसकार्मणशरीरवर्णगंधरसस्पर्शस्थिरास्थिरशुभाशुभागुरुलघुनिर्माणनामानो द्वादश, सुभगादेययशस्कीर्तयः उच्चैर्गोत्रं पंचांतरायप्रकृतयः केवलज्ञानावरणीयं केवलदर्शनावरणीयं निद्रा प्रचला चेति पंचविंशतिप्रकृतयः परिणामप्रत्ययाः, आत्मनो विशुद्धिसंक्लेशपरिणामहानिवृद्धयनुसारेण एतत्प्रकृत्यनुभागस्य हानिवृद्धिसद्भावात् ॥ ३०६ ॥

स० चं०— उपशांत कषायविषै जे उदय प्रकृति गुणसठि पाइए है तिसविषै तैजस कार्माण शरीर २ वर्णादि ४ स्थिर १ अस्थिर १ शुभ १ अशुभ १ अगुरु लघु निर्माण २ ए नाम कर्मकी ध्रुवोदयी बारह प्रकृति अर सुभग आदेय यशस्कीर्ति ए तीन अर उच्चगोत्र अर पांच अंतराय अर केवल ज्ञानावरण केवल दर्शनावरण अर निद्रा प्रचला ए पचीस प्रकृति परिणाम प्रत्यय हैं। इनका उदय होनेके समयविषै आत्माके विशुद्धि संक्लेश परिणाम हानि वृद्धि लीएं जैसैं पाइए तैसैं ही हानि वृद्धि लीएं इनके अनुभागका तहां उदय होइ। वर्तमान परिणामके निमित्ततैं इनका अनुभाग उत्कर्षण अपकर्षणादिरूप होइ उदय हो है ॥ ३०६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेसिं रसवेदमवट्ठाणं भवपच्चया हु सेसाओ ।
चोत्तीसा उवसंते तेसिं तिट्ठाण रसवेदं ॥ ३०७॥

तेषां रसवेदमवस्थानं भवप्रत्यया हि शेषाः ।
चतुस्त्रिंशत् उपशांते तेषां त्रिस्थानं रसवेदं ॥ ३०७ ॥

सं० टी०— तासां पंचविंशतिप्रकृतीनामनुभागोदयः उपशांतकषाये प्रथमसमयादारभ्य तत्कालचरमसमयपर्यंतमवस्थित एव तत्र यथाख्यातविशुद्धिचारित्रस्य प्रतिसमयं हानिवृद्धिभ्यां विनावस्थितत्वेन तत्कर्मप्रकृत्यनुभागोदयस्यापि हानिवृद्धिभ्यां विना अवस्थितत्वसिद्धेः । शेषा मतिश्रुतावधिमनःपर्ययज्ञानावरणचतुष्टयं चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनावरणत्रयं सातासातवेदनीयद्वयं मनुष्यायुर्मनुष्यगतिपंचेंद्रियजात्यौदारिकशरीरतदंगोपांगाद्यसंहननत्रयषट्संस्थानोपघातपरघातोच्छ्वासविहायोगतिद्वयप्रत्येकत्रसबादरपर्याप्तस्वरद्वयनामप्रकृतयश्चतुर्विंशतिरिति चतुस्त्रिंशत्प्रकृतयो भवप्रत्ययाः ३४ । एतासामनुभागस्य विशुद्धिसंक्लेशपरिणामहानिवृद्धिनिरपेक्षतया विवक्षितभवाश्रयेणैव षट्स्थानपतितहानिवृद्धिसंभवात् । अतः कारणादवस्थितविशुद्धिपरिणामेप्युपशांतकषाये एतच्चतुस्त्रिंशत्प्रकृतीनां अनुभागोदयस्त्रिस्थानसंभवी भवति कदाचिद्धीयते कदाचिद्वर्धते कदाचिद्धानिवृद्धिभ्यां विना एकादश एवावतिष्ठते इत्यर्थः । एवं चारित्रमोहनीयस्यैकविंशतिप्रकृतीनामुपशमनविधानमुपशांतकषायगुणस्थानचरमसमयपर्यंतं समाप्तं ॥ ३०७ ॥ अथेदानीमुपशांतकषायस्य प्रतिपातविधिं प्ररूपयन् गाथाद्वयमाह —

स० चं०— तिन पचीस प्रकृतिनिके अनुभागका उदय उपशांत कषायका प्रथम समयतैं लगाय अंत समय पर्यंत अवस्थित समान रूप है जातैं तहां परिणाम समान हैं अर इन प्रकृतिनिके अनुभागका उदय परिणामनिके अनुसारि है तातैं इनके अनुभागका उदयविषै हानि वृद्धि नाही है । बहुरि अवशेष ज्ञानावरणकी च्यारि दर्शनावरणकी तीन वेदनीयकी दोय मनुष्य आयु मनुष्य गति पंचेंद्री जाति औदारिक शरीर औदारिक अंगो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांग आदिके तीन संहनन संस्थान छह उपघात परघात उच्छ्वास विहायोगति दोय प्रत्येक त्रस वादर पर्याप्त स्वरकी दोय ऐसैं चौंतीस प्रकृति भवप्रत्यय हैं। आत्माके परिणाम जैसैं होंइ तैसैं होंइ। तिनकी अपेक्षा रहित पर्यायहीका आश्रयकरि इनके अनुभागविषै षट्स्थान रूप हानि वृद्धि पाइए है तातैं इनका अनुभागका उदय इहां तीन अवस्था लीएं हैं। कदाचित् हानिरूप हो है कदाचित् वृद्धि रूप हो है कदाचित् अवस्थित जैसाका तैसा रहै है। ऐसैं उपशांत कषाय गुणस्थानका अंत समय पर्यंत इकईस चारित्र मोहकी प्रकृतिनिका उपशमन विधान समाप्त भया॥ ३०७ ॥ अथ उपशांत कषायतैं पडनेका विधान कहैं हैं—

उवसंते पडिवडिदे भवक्खये देवपढमसमयम्हि।
उग्घाडिदाणि सव्ववि करणाणि हवंति णियमेण॥

उपशांते प्रतिपतिते भवक्षये देवप्रथमसमये।
उद्घाटितानि सर्वाण्यपि करणानि भवंति नियमेन॥ ३०८॥

सं० टी०— उपशांतकषायपरिणामस्य द्विविधः प्रतिपातः भवक्षयहेतुः उपशमनकालक्षयनिमित्तकश्चेति। तत्र भवक्षये उपशांतकषायगुणस्थानकाले प्रथमसमयादारभ्य चरमसमयपर्यंते यत्र वा तत्र वा आयुःक्षये सति उपशांतकषायकाले मृत्वा देवासंयतगुणस्थाने प्रतिपतति। एवं प्रतिपतिते तस्मिन्नेवासंयतप्रथमसमये सर्वाण्यपि बंधनोदीरणासंक्रमणादीनि कारणानि नियमेनोद्घाटितानि स्वस्वरूपेण प्रवृत्तानि भवंति। यथाख्यातचारित्रविशुद्धिबलेनोपशांतकषाये उपशमितानां तेषां पुनर्देवासंयते संक्लेशवशेनानुपशमनरूपोद्घाटनसंभवात्॥ ३०८॥

स० चं०— उपशांत कषायतैं पडना दोय प्रकार है भव क्षय हेतु १ उपशमका-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लक्षयानिमित्तक २ तहां मरण होतैं पर्यायका नाशके निमित्ततैं पडना होइ सो भवक्षयहेतु कहिए। अर उपशम कालके क्षयके निमित्ततैं पडना होइ सो उपशमकालक्षयनिमित्तक कहिए। तहां भव क्षय हेतुविषै कहिए है—

उपशांत कषायके कालविषैं प्रथमादि अंत पर्यंत समयनिविषैं जहां तहां आयुके नाशतैं मरिकरि देव पर्याय सम्बन्धी असंयत गुणस्थानविषै पडै तहां असंयतका प्रथम समयविषै बंध उदीरणा संक्रमण आदि समस्त करण उघाडै है। अपने अपने स्वरूपकरि प्रगट वर्तै हैं। जातैं जे उपशांत कषायविषै उपशमे थे ते सर्व असंयतविषै उपशम रहित भए हैं॥ ३०८॥

सोदीरणाण दव्वं देदि हु उदयावलिम्हि इयरं तु।
उदयावलिबाहिरगे उंछाये देदि सेढीये॥ ३०९॥

सोदीरणानां द्रव्यं ददाति हि उदयावलौ इतरत्तु।
उदयावलिवाह्यके अन्तरे ददाति श्रेण्याम्॥ ३०९॥

सं० टी०—भवक्षयादुपशांतकषायगुणस्थानात्प्रतिपतितदेवासंयतः प्रथमसमये उदयवतामप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनक्रोधमानमायालोभानामन्यतमस्य कषायस्य पुंवेदहास्यरतीनां भयजुगुप्सयोर्यथासंभवमन्यतरस्य च द्रव्यमपकृष्य स ३ १२—इदं पुनरसंख्याततलोकेन खण्डयित्वा एकभागमुदयावल्यां दत्वा स ३ १२—तद्बहुभागमुदयावलीवाह्य
७ ओ ७ ओ ≡ ३
प्रथमसमयादारभ्यांतरायामे द्वितीयस्थितौ च 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे' इत्यादिविधानेन विशेषहीनक्रमेण ददाति उदयरहितानां नपुंसकवेदादीनां मोहप्रकृतीनां द्रव्यमपकृष्य स ३ १२— उदयावलिवाह्यनिषेकेषु अंतरायामे द्वितीय-
७ ओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थितौ च पूर्वोक्तविधानेन विशेषहीनक्रमेण प्रतिनिषेकं ददाति । अनेन विधानेन चारित्रमोहस्यांतरं पूरयतीत्यर्थः ॥ ३०९ ॥ अथोपशमनाद्धाक्षयनिबंधनं प्रतिपातं प्रारभमाण इदमाह —

स० चं०— सो देव असंयत जीव प्रथम समयविषै उदयरूप जो अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान संज्वलन रूप जे क्रोधादि च्यारि कषाय तिनविषै कोई एक कषाय अर पुरुषवेद १ हास्य रति २ अर भय जुगुप्साविषै यथासम्भव प्रकृति जे उदयरूप पाइए हैं तिनिके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागकौं ग्रहण करि ताकौं असंख्यातलोकका भाग देइ एक भागकौं उदयावलीविषै दीजिए है अर अवशेष बहुभागकौं उदयावलीतैं बाह्य प्रथम निषेकतैं लगाय अवशेष अंतरायामविषै वा अंतरायामके उपरिवर्ती द्वितीय स्थितिविषै 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा' इत्यादि विधानतैं चय घटता क्रमकरि दीजिए है। बहुरि उदय रहित जे नपुंसकवेदादिक मोहकी प्रकृति तिनके द्रव्यकौं अपकर्षणकरि उदयावलीविषै न दीजिए है उदयावलीतैं बाह्य अंतरायाम वा उपरितन स्थितिहीविषै चय घटता क्रमकरि दीजिए है। इस विधानकरि चारित्र मोहका अंतरकौं पूरै है। अंतर करनेविषै निषेकनिका अभाव कीया था तिनविषै उपशम काल व्यतीत भएं पीछैं जे अवशेष अंतररूप निषेक रहैं तिनविषै इहां द्रव्यका निक्षेपण करि तिनका सद्भाव करै है। इहां गुणश्रेणिका असंयतविषै अभाव जानना ॥ ३०९ ॥

अद्धाखए पडंतो अधापवत्तोत्ति पडदि हु कमेण।
सुज्झंतो आरोहदि पडदि हु सो संकिलिस्संतो ३१०

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अद्धाक्षये पतन् अधःप्रवृत्त इति पतति हि क्रमेण ।
शुद्धयन् आरोहति पतति स संक्लिश्यन् ॥ ३१० ॥

सं० टी०— आयुषि सत्यद्धाक्षयेंतर्मुहूर्तमात्रोपशांतकषायगुणस्थानकालावसाने सति प्रतिपतन् स उपशांतकषायः प्रथमं नियमेन सूक्ष्मसांपरायगुणस्थाने प्रतिपतति। ततोऽनंतरमनिवृत्तिकरणगुणस्थाने प्रतिपतति । तदनंतरपूर्वकरणगुणस्थाने प्रतिपतति । ततः पश्चादप्रमत्तगुणस्थाने अधःप्रमत्तकरणपरिणामे प्रतिपतति। एवमधःप्रवृत्तकरणपर्यंतमनेनैव क्रमेण प्रतिपातो नान्यथेति निश्चेतव्यं । यः पुनः शुद्धयन् वर्धमानविशुद्धिपरिणामः उत्तरोत्तरगुणस्थानान्यारोहति स एव कषायोदयवशात् विशुद्धिहान्या संक्लेशमानः अधोऽधो गुणस्थानेषु प्रतिपतति न पुनरुपशांतकषायस्यैवंविधारोहणप्रतिपातौ संभवतस्तस्य स्वगुणस्थानकालचरमसमयपर्यंतमवस्थितपरिणामत्वेन विशुद्धिसंक्लेशयोर्हानिवृद्धिपराङ्मुखसंभवात् ।ननूपशांतकषायस्यावस्थितविशुद्धिपरिणामत्वात् कथं प्रतिपातः संभवतीति नाशंकनीयं उपशांतकषायगुणस्थानकालस्यांतर्मुहूर्तात्परं नियमेन प्रक्षयादुपशमनकालक्षयहेतुकप्रतिपातस्य संभवाविरोधात् । अत एवायं प्रतिपातोऽद्धाक्षयहेतुक एव न विशुद्धिपरिणामहानिनिबंधनो नाप्यन्यनिमित्तक इति ॥ ३१० ॥ अथ सूक्ष्मसांपरायगुणस्थाने प्रतिपतितस्य क्रियाविशेषप्रतिपादनार्थं गाथाचतुष्टयमाह—

स० चं०— आयु विद्यमान होतैं अद्धा क्षयविषै अंतर्मुहूर्तमात्र उपशांत कषायका काल अंत भएं पडिकरि सूक्ष्म सांपराय होइ पीछैं अनिवृत्ति करण होइ । पीछैं अपूर्व करण होइ । पीछैं अधःप्रवृत्त करण रूप अप्रमत्त हो है । ऐसैं अधःप्रवृत्त करण पर्यंत तौ अनुक्रमतैं पडना होइ ही होइ। पीछैं जो विशुद्धता युक्त होइ ऊपरिके गुणस्थानविषै चढै अर संक्लेशता करि युक्त होइ तौ नीचेके गुणस्थाननिविषै पडै किछू नियम नाहीं । बहुरि या प्रकार संक्लेश विशुद्धताके निमित्तकरि उपशांत कषायतैं पडना चढना न हो है। जातैं तहां परिणाम अवस्थित विशुद्धता लीएं वर्तै है । बहुरि तहांतैं जो पडना हो है सो तिस गुणस्थानका काल भए पीछैं नियमतैं उपशम कालका क्षय होइ तिसके निमित्ततैं हो है । विशुद्ध परि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णामानिकी हानिके निमित्ततैं तहांतैं नाही पडै है वा अन्य कोई निमित्ततैं नाही है ऐसा जानना ॥ ३१० ॥

सुहुमप्पविट्ठसमयेणद्धुवसामण तिलोहगुणसेढी ।
सुहुमद्धादो अहिया अवट्ठिदा मोहगुणसेढी ॥३११॥

सूक्ष्मप्राविष्टसमयेनाध्रुवशमं त्रिलोभगुणश्रेणी ।
सूक्ष्माद्धातोऽधिका अवस्थिता मोहगुणश्रेणी ॥ ३११ ॥

सं० टी०—सूक्ष्मसांपरायप्रविष्टसमये तद्गुणस्थानप्रथमसमये विनष्टोपशमनकरणानां त्रयाणां अप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान-संज्वलनलोभानां गुणश्रेणिः प्रारभ्यते तद्गुणश्रेण्यायामश्चारोहकसूक्ष्मसांपरायगुणस्थानकालादावलिमात्रेणाभ्यधिकः १–
२ ७ एवं मोहनीयस्य गुणश्रेणिरस्मिन्नवसरे अवस्थितायामैव ग्राह्या ॥ ३११ ॥

स० चं०— उपशांत कषायतैं ऊपरि सूक्ष्म सांपरायविषै प्रवेश कीया, तहां प्रथम समयविषै नष्ट भया है उपशम करण जिनिका ऐसा जो अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान संज्वलन लोभ तिनकी गुणश्रेणिका आरम्भ हो है । तिस गुणश्रेणि आयामका प्रमाण चढनेवाले सूक्ष्मसांपरायके कालतैं एक आवलीमात्र अधिक है सो इस अवसरविषै मोहकी गुणश्रेणिका आयाम अवस्थित रूप जानना ॥ ३११ ॥

उदयाणं उदयादो सेसाणं उदयबाहिरे देदि ।
छण्हं बाहिरसेसे पुव्वतिगादहियणिक्खेओ ॥३१२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदयानामुदयतः शेषाणां उदयबाह्ये ददाति ।
षण्णां बाह्यशेषे पूर्वत्रिकादधिकनिक्षेपः ॥ ३१२ ॥

सं० टी०— तत्र तावदुदयवतः संज्वलनलोभस्य द्वितीयस्थितौ स्थितं कृष्टिगतं द्रव्यमपकृष्य पल्यासंख्यातभागखंडितैकभागमात्रमुदयसमयादारभ्य गुणश्रेण्यायामचरमसमयपर्यंतमसंख्यातगुणितक्रमेण निक्षिप्य पुनस्तद्बहुभागद्रव्यं गुणश्रेणीशीर्षस्योपर्यंतरायाममुल्लंघ्य द्वितीयस्थितौ 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे' इत्यादिना विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत् । उदयरहितयोरप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानलोभयोर्द्वितीयस्थितौ स्थितं द्रव्यमपकृष्य उदयावलिबाह्यप्रथमसमयादारभ्य गुणश्रेण्यायामचरमसमयपर्यंतमसंख्यातगुणितक्रमेण तदुपर्यंतरायाममुल्लंघ्य द्वितीयस्थितौ पूर्ववद्विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत् । एवमुत्तरत्राप्युदयानुदयवतोर्गुणहानिश्रेणिनिक्षेपक्रमो वेदितव्यः । पुनः षण्णामायुर्मोहवर्जितानां ज्ञानावरणादिकर्मणां द्रव्यमपकृष्य पल्यासंख्यातभागेन खण्डयित्वा तदेकभागं पुनः पल्यासंख्यातभागेन खंडयित्वा तदेकभागमुदयावल्यां निक्षिप्य बहुभागं गुणश्रेण्यायामे अवरोहकसूक्ष्मसांपरायानिवृत्त्यपूर्वकरणकालेभ्यो विशेषाधिकमात्रे गलितावशेषे असंख्यातगुणितक्रमेण निक्षिप्य अवशिष्टबहुभागमुपरितनस्थितौ पूर्ववद्विशेषहीनक्रमेण निक्षिपेत् ॥ ३१२ ॥

स० चं०— तहां उदयरूप जो संज्वलन लोभ ताकी द्वितीय स्थितिविषै तिष्ठता द्रव्यकौं अपकर्षण करि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागकौं उदयरूप प्रथम समयतैं लगाय गुणश्रेणि आयामका अंत निषेक पर्यंत असंख्यातगुणा क्रम लीएं निक्षेपण करै है। अर बहुभागमात्र द्रव्यकौं गुणश्रेणि आयामका अंत निषेकतैं ऊपरि पाइए है जो अंतरायाम ताकौं छोडि ताके ऊपरि जो द्वितीय स्थिति तीहिंविषैं चय घटता क्रमकरि निक्षेपण करै है। बहुरि उदय रहित अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान लोभ तिनकी द्वितीय स्थितिविषै तिष्ठता द्रव्यकौं अपकर्षण करि उदयावलीतैं बाह्य प्रथम समयतैं लगाय गुणश्रेणि आयामका अंत पर्यंत असंख्यातगुणा क्रम लीएं अर ताके ऊपरि अंतरायामकौं छोडि द्वितीय स्थितिविषै चय घटता क्रमकरि पूर्ववत् निक्षेपण करै है। बहुरि आयु मोह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विना छह कर्मनिका द्रव्यकौं अपकर्षण करि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागकौं बहुरि पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भाग उदयावलीविषै दीजिए है। बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषै दीजिए है। सो इनका यहु गुणश्रेणि आयाम उतरनेवाले सूक्ष्मसांपराय अनिवृत्ति करण अपूर्व करणनिका मिलाया हूवा कालतैं किछू अधिक प्रमाण लीएं गलितावशेष रूप जानना। याविषै असंख्यातगुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्यविषै बहुभाग रहे तिनकौं उपरितन स्थितिविषै चय घटता क्रम लीएं दीजिए है ॥ ३१२ ॥

ओदरसुहुमादीए बंधो अंतोमुहुत्त बत्तीसं।
अडदालं च मुहुत्ता तिघादिणामदुगवेयणीयाणं ॥

अवतरसूक्ष्मादिके बंधो अंतर्मुहूर्तं द्वात्रिंशत्।
अष्टचत्वारिंशत् च मुहूर्ताः त्रिघातिनामद्विकवेदनीयानाम् ॥ ३१३ ॥

सं० टी०— उपशांतकषायगुणस्थानादवतीर्णसूक्ष्मसांपरायप्रथमसमये घातित्रयस्य स्थितिबंधोऽतर्मुहूर्तमात्रः। नामगोत्रयोर्द्वात्रिंशन्मुहूर्तमात्रः। वेदनीयस्याष्टचत्वारिंशन्मुहूर्तमात्रः। आरोहणो सूक्ष्मसांपरायस्य चरमसमये स्थितिबंधात् अवरोहणो तत्प्रथमसमये स्थितिबंधो द्विगुणा इति सिद्धांते प्रतिपादितत्वात् एवमवरोहकसूक्ष्मसांपरायस्य प्रथमसमये क्रियाविशेषः प्रतिपादितः ॥ ३१३ ॥

स० चं०— उतरया हूवा सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषै तीन घातियानिका अंतर्मुहूर्त नाम गोत्रका बत्तीस मुहूर्त वेदनीयका अठतालीस मुहूर्तमात्र स्थितिबंध जानना। जातैं आरोहक सूक्ष्मसांपरायका अंत समयविषै जो स्थितिबंध हो है तातैं अवरोहक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषै दूणा स्थितिबंध है। उपशमश्रेणि चढनेवालाका नाम आरोहक कहिए। उतरनेवालाका नाम अवरोहक कहिए अथवा अवतारक कहिए है ऐसी संज्ञा आगैं भी जाननी॥ ३१३॥

गुणसेढीसत्थेदररसबंधो उवसमादु विवरीयं।
पढमुदओ किट्टीणमसंखाभागा विसेसअहियकमा॥

गुणश्रेणी शस्तेतररसबन्ध उपशमात् विपरीतम्।
प्रथमोदयः कृष्टीनामसंख्यभागा विशेषाधिकक्रमाः॥ ३१४॥

सं० टी०— अवरोहकसूक्ष्मसांपरायस्य द्वितीयादिसमयेषु प्रथमसमयापकृष्टद्रव्यादसंख्येयगुणहीनद्रव्यमपकृष्य मोहस्येतरकर्मणां च गुणश्रेणीं करोति। गुणश्रेणिनिर्जराकारणस्यावरोहणे विशुद्धिपरिणामस्य प्रतिसमयमनंतगुणहीनत्वसंभवात्। सातादिप्रशस्तप्रकृतीनां ज्ञानावरणाद्यप्रशस्तप्रकृतीनां चानुभागबंधस्तत्प्रथमसमयानुभागबंधाद्यथासंख्यमनंतगुणहीनोऽनंतगुणश्च प्रतिसमयं वेदितव्यः। तत्कारणस्य विशुद्धिसंक्लेशस्य चानंतगुणहानिवृद्धिसंभवात्। अत एवोपशमादुपशमश्रेण्यारोहणाच्चदवरोहणे विपरीतमित्युक्तं। स्थितिबन्धस्तु अंतर्मुहूर्तपर्यंतं तादृश एव। पुनरंतर्मुहूर्तेऽन्तर्मुहूर्ते आरोहकस्थितिबन्धात् द्विगुणं वर्धते तच्चरमसमयं यावत्। अवरोहकसूक्ष्मसांपरायप्रथमसमये उदयनिषेककृष्टीनां पल्यासंख्यातभागखंडितबहुभागमात्रो मध्यमकृष्टयः

```
|    १~
४     प
ख  प  a
```

उदयमागच्छंति। तदेकभागस्य पुनरसंख्यातभागाः द्विपंचमभागमात्र्यः कृष्टय आदिकृष्टेरारभ्यानुदयाः

```
| a
४  २
ख  ५  प
      a
```

उपरि च तत्त्रिपंचभागमात्र्यः कृष्टयोऽग्रकृष्टेरारभ्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।
नुदयाः ४ २ तासामाद्यंतकृष्टीनां स्वस्वरूपं परित्यज्य मध्यमकृष्टिस्वरूपेण परिणम्योदयो भवतीत्यर्थः । पुनर्द्वि-
ख प ५
३
।
तीयसमये आदिकृष्टीनां पल्यासंख्यातैकभागमात्रीः ४ २ कृष्टीस्त्यक्त्वाग्रकृष्टीनां पल्यासंख्यातैकभागमात्रीः कृष्टीः
ख प ५ प
३ ३
। । ।
४ ३ गृहीत्वा मध्यमकृष्टयः उदयमागच्छंति । तत्र ऋणात् ४ २ अस्माद्धनमिदं ४ ३ अभ्य-
ख प ५ प ख प ५ प ख प ५ प
३ ३ । ३ ३ ३ ३
धिकमिति धनर्णयोर्विवरे शेष ४ १ प्रमाणेन प्रथमसमयोदयकृष्टिभ्यो द्वितीयसमयोदयकृष्टयो विशेषाधिकाः
ख प ५ प
। ३ ३
४ प एवं तृतीयादिसमयेष्वपि तच्चरमसमयपर्यंतेषु विशेषाधिकाः कृष्टयः उदयमागच्छंति अत एव प्रतिसमयमनं-
ख प ३
३
तगुणानुभागोदयः कृष्टीनां ज्ञातव्यः । एवमनेन क्रमेण सूक्ष्मसांपरायकालो गतः ॥ ३१४ ॥ अथावरोहकस्यानिवृत्ति-
करणबादरसांपराये गुणस्थाने क्रियाविशेषं प्रदर्शयन् गाथाद्वयमाह—

स० चं०— अवरोहक सूक्ष्मसांपरायका द्वितीयादि समयनिविषै समय समय प्रति प्रथमादि समय सम्बन्धीतैं असंख्यातगुणा घाटि क्रम लीएं द्रव्यकौं अपकर्षण करि गुणश्रेणि करै है। अर प्रशस्त प्रकृतिनिका अनंतगुणा घाटि क्रम लीएं अर अप्रशस्त प्रकृतिनिका अनंतगुणा बंधता क्रम लीएं अनुभाग बंध हो है। जातैं इहां समय समय विशुद्ध संक्लेशकी अनंतगुणी हानि वृद्धि हो है। यातैं उपशम श्रेणी चढनेसे उतरनेविषै विपरीतपना कह्या है। बहुरि स्थितिबंध है सो तिस प्रथम समयतैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत समान ही है। बहुरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतर्मुहूर्त अंतर्मुहूर्तविषे आरोहकके स्थितिबंधतैं यथा ठिकाणैं अवरोहककैं दूणा स्थितिबंध सूक्ष्मसांपरायका अंतसमय पर्यंत जानना। चढतैं जिस ठिकाने जो स्थितिबंध होता था तातैं उतरतैं उस ठिकानैं आय दूणा स्थितिबंध हो है। जैसैं स्थितिबंधापसरणकरि चढतैं स्थितिबंध घटाइ एक एक अंतर्मुहूर्तविषे समान बंध करै था तैसै इहां स्थितिबंधोत्सरणकरि स्थितिबंध बधाइ एक एक अंतर्मुहूर्तविषे समान बंध करै है। बहुरि अवरोहक सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषैं उदय आया जे निषेक कृष्टि पाइए है तिनकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीजिए तहां बहुभागमात्र बीचिकी कृष्टि उदय आवै है। अर अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागकी सहनानी पांचका अंक ताका भाग दीएं तहां दोय भागमात्र तो आदि कृष्टितैं लगाय जे नीचेकी कृष्टि हैं ते अनुदयरूप हैं अर तीन भागमात्र अंतकृष्टितैं लगाय जे ऊपरिकी कृष्टि हैं ते अनुदयरूप कृष्टि कहीं। ते अपने स्वरूपकौं छोडि जे आदि कृष्टितैं लगाय नीचली कृष्टि हैं ते तो अनंतगुणा अनुभागरूप परिणमि मध्यम कृष्टिरूप होइ उदय आवै हैं। अर अंत कृष्टितैं लगाय जे ऊपरिकी कृष्टि हैं ते अनंतवे भागि अनुभागरूप परिणमि मध्यम कृष्टि रूप होइ उदय आवैं हैं। अंक संदृष्टिकरि जैसैं उदय आया निषेकविषे कृष्टि हजार तिनकौं पांचका भाग दीएं बहुभागमात्र आठसै बीचिकी कृष्टि तौ उदयरूप जाननी। अवशेष एक भाग दोयसै ताकौं पांचका भाग देइ तहां एक भाग जुदा राखि अवशेषके दोय भागकरि तहां एकभागमात्र असी कृष्टि तौ जघन्य कृष्टितैं लगाय नीचेकी कृष्टि अनुदयरूप हैं ते अनुभाग बंधनेतैं मध्यम कृष्टिरूप होइ परिणमि उदय हो हैं। बहुरि एक भागविषै जुदा राख्या भाग मिलाएं एकसौ बीस कृष्टि भईं ते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंत कृष्टितैं लगाय ऊपरिकी कृष्टि अनुदयरूप हैं ते अनुभाग घटनेतैं मध्यम कृष्टिरूप होइ उदय आवै हैं ऐसा अर्थ जानना।

बहुरि दूसरा समयविषैं जे आदिकृष्टि पहले समय उदय रूप न थीं तिनकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र नवीन कृष्टि अनुदय रूप करीं अर अंतकी कृष्टि जे पहले समय उदय रूप न थीं तिनकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टिनिकौं नवीन उदय रूप करीं । इहां उदय रूप करी कृष्टिनिका प्रमाण विषैं अनुदयरूप करी कृष्टिनिका प्रमाण घटाएं अवशेष जो प्रमाण रहै तितना प्रमाणकरि प्रथम समयसंबंधी उदय कृष्टिनितैं अधिक दूसरा समयविषैं उदयकृष्टि हो है। अंकसंदृष्टिकरि जैसैं पहले समय उदयकृष्टि आठसै थी इहां द्वितीय समयविषैं पहलैं उदय ऊपरिकी एकसौ वीस कृष्टि अनुदयरूप थीं तिनकौं पांचका भाग दीएं चौईस पाए सो इतनी तौ ऊपरिकी कृष्टि नवीन उदय भईं अर जे नीचैकी कृष्टि ऐसी अनुदयरूप थीं तिनकौं पांचका भाग दीएं सोलह पाए, सो इतनी कृष्टि इहां नवीन उदयरूप न हो हैं ऐसैं चौवीसमें सोलह घटाए आठ रहे सो इतनी कृष्टि बंधनेतैं द्वितीय समयविषैं आठसै आठ कृष्टि उदय हो हैं। ऐसैं ही यथार्थ कथन समझना। इहां बहु अनुभागयुक्त ऊपरिकी कृष्टिके उदय होनेतैं अर स्तोक अनुभागयुक्त नीचेकी कृष्टि न उदय होनेतैं प्रथम समयतैं द्वितीय समयविषैं अनुभागका बंधना हो है ऐसा अर्थ जानना ऐसैं ही तृतीयादि अंतसमय पर्यंत समयनिविषै विशेषकरि अधिक कृष्टि उदय हो है । याहीतैं समय समय प्रति कृष्टिनिका अनंतगुणा अनुभागका उदय है। ऐसैं सूक्ष्म सांपरायका काल व्यतीत भया ॥ ३१४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरपढमे किट्टी मोहस्स य आणुपुव्विसंकमणं ।
णट्ठं ण च उच्छिट्ठं फड्डयलोहं तु वेदयदि ॥ ३१५ ॥

बादरप्रथमे कृष्टिः मोहस्य च आनुपूर्विसंक्रमणं ।
नष्टं न च उच्छिष्टं स्पर्धकलोभं तु वेदयाति ॥ ३१५ ॥

सं० टी०— अनिवृत्तिकरणस्य प्रथमसमये सूक्ष्मकृष्टयः उच्छिष्टावलिमात्रनिषेकान् वर्जयित्वा सर्वाः स्वरूपेण विनष्टाः सूक्ष्मकृष्टिशक्तितोऽनंतगुणशक्तियुक्तस्पर्धकस्वरूपेणैकस्मिन् समये परिणमिता इत्यर्थः । उच्छिष्टावलिमात्रनिषेककृष्टयस्तु प्रतिसमयमेकैकनिषेकप्रमाणेन उदयमानस्पर्धकनिषेकेषु स्थितोक्तसंक्रमेण तद्रूपतया परिणम्योदेष्यंति । तस्मिन्नेव प्रथमसमये मोहस्यानुपूर्विसंक्रमश्च नष्टः । अयं तु विशेषः—

अप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानलोभद्वयस्य संज्वलनलोभे बध्यमाने यद्यपि संक्रमः प्रारब्धस्तथापि तदविवक्षया संज्वलनलोभस्य बध्यमानसजातीयकषायांतरासंभवात् आनुपूर्वीसंक्रमो व्यक्त्यपेक्षया विनष्टः । शक्त्यपेक्षया संज्वलनलोभद्रव्यस्याप्यनानुपूर्व्या परप्रकृतिसंक्रमपरिणामः संजातः । सूक्ष्मसांपराये तु मोहस्य बंधाभावात् संक्रमो न संभवत्येवेति । तथैव स्पर्धकगतं बादरसंज्वलनलोभमुदयमानमनुभवन् जीवो बादरसांपरायानिवृत्तिकरणप्रथमसमये संज्वलनलोभद्रव्यमपकृष्य उदयसमयादारभ्य बादरलोभवेदककालसाधिकद्वित्रिभागमात्रे आवल्यभ्यधिके २ ७ २ ॥ ३ अवस्थितायामे प्रतिनिषेकमसंख्यातगुणितक्रमेण निक्षिपति । प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानलोभद्वयद्रव्यमपकृष्य उदयावलिबाह्ये पूर्वोक्तायामे असंख्यातगुणितक्रमेण निक्षिपति । द्वितीयादिसमयेषु पुनरसंख्येयगुणहीनं द्रव्यमपकृष्यावस्थितायामे गुणश्रेणिं करोति ॥ ३१५ ॥

स० चं०— अवरोहक अनिवृत्तिकरणका प्रथम समयविषैं सूक्ष्मकृष्टि हैं ते उच्छिष्टावलीमात्र निषेक विना अन्य सर्वही स्वरूप करि नष्टभई सूक्ष्मकृष्टिकी अनुभागशक्तितैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंतगुणी शक्तियुक्त जो स्पर्धक तिन स्वरूप होइ एकही समयविषैं परिणईं। बहुरि कृष्टिके उच्छिष्टावलीमात्र निषेक रहे ते समय समय प्रति एक एक निषेककरि उदयमान जे स्पर्धकके निषेक तिनविषै थिउक संक्रमकरि तद्रूप परिणमि उदय होसी। बहुरि तिसही प्रथम समयविषैं मोहका आनुपूर्वी संक्रम भी नष्ट भया। इतना विशेष—जो अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान लोभका बध्यमान जो संज्वलन लोभ तिसहीविषैं संक्रम होनेका प्रारंभ भया तथापि याविषैं आनुपूर्वी संक्रमकी विवक्षा नाहीं। बहुरि संज्वलन लोभकैं बध्यमान और कोई स्वजातीय प्रकृति नाहीं तातैं व्यक्ति अपेक्षा आनुपूर्वी संक्रम नष्ट भया। शक्ति अपेक्षा संज्वलन लोभके आनुपूर्वीकरि अन्य प्रकृतिविषैं संक्रम होनेका परिणाम भया है। बहुरि सूक्ष्मसांपरायविषैं मोहके बंधका अभावतैं संक्रम संभवै नाहीं। बहुरि तथैव स्पर्धकरूप जो वादर लोभ उदय आया ताकौं भोगवता जो अनिवृत्तिकरण वादर सांपराय ताका प्रथम समयविषैं संज्वलन लोभका द्रव्यकौं अपकर्षण करि उदय रूप समयतै लगाय वादर लोभवेदक कालका साधिक दोय तीसरे भाग आवलीकरि अधिक प्रमाणमात्र जो गुणश्रेणि आयाम तिसविषैं असंख्यातगुणा क्रमलीएं निक्षेपणकरै है। अर प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यान लोभका द्रव्यकौं उदयावलीतैं वाह्य पूर्वोक्त गुणश्रेणी आयामविषैं असंख्यात गुणा क्रमलीएं निक्षेपण करै है। बहुरि अनिवृत्तिका द्वितीयादि समयनिविषैं असंख्यातगुणा घटता क्रमलीएं द्रव्यकौं अपकर्षणकरि अवस्थित गुणश्रेण्यायामविषै पूर्वोक्तप्रकार निक्षेपण करै है। अन्य कर्मनिकी गलितावशेष गुणश्रेणी पूर्वैं कही है सोई जाननीं ॥ ३१५ ॥

ओदरवादरपढमे लोहस्संतोमुहुत्तियो बंधो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुदिणंतो घादितियं चउवस्संतो अघादितियं ॥

अवतरवादरप्रथमे लोभस्यांतर्मुहूर्तको बंधः ।
द्विदिनांतो घातित्रिके चतुर्वर्षान्तोऽघातित्रये ॥ ३१६ ॥

सं० टी०—अवतारकवादरसांपरायानिवृत्तिकरणप्रथमसमये संज्वलनलोभस्य स्थितिबंधोंऽतर्मुहूर्तमात्रः, स चारोहकृतचरमसमयस्थितिबंधाद् द्विगुणः । ज्ञानदर्शनावरणांतरायाणां किंचिन्न्यूनदिनद्वयमात्रः । नामगोत्रयोः किंचिन्न्यूनचतुर्वर्षमात्रः । वेदनीयस्य तीसियप्रतिभागत्वाद् द्व्यर्धगुणितकिंचिन्न्यूनचतुर्वर्षमात्रः । ततोंऽतर्मुहूर्तमात्रे समबंधककाले गते पुनः संज्वलनलोभस्थितिबन्धो विशेषाधिकः २ ७ । २ घातित्रयस्य दिनपृथक्त्वं दि ७/८ अघातित्रयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः १००० ७ एवं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबंधेषु आकृष्योत्कृष्यं संवृत्तेषु यदा लोभवेदककाल २ ७ ३/३ (?) द्वितीयत्रिभागस्य २ ७ १/३ संख्येयभागो गतः २ ७ १/७ ३ तदा संज्वलनलोभस्य स्थितिबंधो मुहूर्तमात्रपृथक्त्वं । मु ७/८ । घातित्रयस्य वर्षसहस्रपृथक्त्वं व १०००७/८ अघातित्रयस्य संख्येयसहस्रवर्षमात्रः व १००० ७ ७ एवं स्थितिबन्धसहस्रेषु गतेषु लोभवेदककालः समाप्तो भवति । अयं विशेषः—

आरोहकस्य लोभवेदककालादवरोहकस्य लोभवेदककालः किंचिन्न्यून इति ज्ञातव्यं । एवं सर्वत्र मायावेदकादिकालेषु अपि आरोहककालादवरोहकस्य किंचिन्न्यूनता द्रष्टव्या ॥ ३१६ ॥ अथावरोहकानिवृत्तिकरणवादरसांपरायस्य मायावेदककाले क्रियाविशेषप्रदर्शनार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं०—— उतरनेवाला वादरसांपराय अनिवृत्ति करणका प्रथम समयविषै संज्वलन लोभका स्थितिबंध अंतर्मुहूर्तमात्र है सो चढनेवाला अनिवृत्ति करणका अंत समय संबंधी स्थितिबंधतैं दूणा जानना । बहुरि तीन घातियानिका किछू घाटि दोय दिन, नाम गोत्रका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किछू घाटि च्यारि दिन, वेदनीयका यातैं ड्योढ गुणा स्थितिबंध है। बहुरि अंतर्मुहूर्त पर्यंत ऐसा समान बंध भया पीछैं संज्वलन लोभका पूर्वतैं किछू अधिक तीन घातियानिका पृथक्त्व दिनमात्र तीन अघातियानिका संख्यात हजार वर्षमात्र स्थितिबंध भया । बहुरि ऐसैं वृद्धिरूप संख्यात हजार स्थितिबंध भएं लोभ वेदक कालका दूसरा त्रिभागका संख्यातवां भाग व्यतीत भया तब संज्वलन लोभका पृथक्त्व मुहूर्त, तीन घातियानिका पृथक्त्व हजार वर्ष, तीन अघातियानिका संख्यात हजारवर्ष प्रमाण स्थितिबंध हो है । बहुरि हजारों स्थितिबंध गएं लोभ वेदकका काल समाप्त हो है। आरोहकके लोभ वेदकका कालतैं अवरोहकका लोभ वेदक काल किंचित् न्यून है। ऐसैं ही मायावेदक कालादिकनिविषै किंचित् न्यूनता जाननी। जिस कषायका जेता कालविषै उदयका भोगना होइ तिस प्रमाण ताका वेदक काल जानना ॥ ३१६ ॥

ओदरमायापढमे मायातिण्हं च लोभतिण्हं च ।
ओदरमायावेदगकालादहियो दु गुणसेढी ॥ ३१७॥

अवतरमायाप्रथमे मायात्रयाणां च लोभत्रयाणां च ।
अवतरमायावेदककालादधिका तु गुणश्रेणी ॥ ३१७॥

सं० टी०—लोभवेदककालसमाप्त्यनंतरं मायावेदककालप्रथमसमये अवतारकानिवृत्तिकरणः, अप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनमायात्रयद्रव्यं तत्तद्द्वितीयस्थितेरपकृष्य उदयवतो मायासंज्वलनस्य उदयसमयादारभ्यावतारकमाया- १- वेदककालादावल्यधिके २ ७ अवस्थितायामे गुणश्रेणिं करोति । उदयरहितस्य मायाद्वयस्य उदयावलिबाह्ये तावन्मात्रा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यामे २ ७ृ अवस्थितगुणश्रेणिं करोति। तथा उदयरहितस्य लोभत्रयस्यापि द्वितीयस्थितिद्रव्यमपकृष्य उदयावलिबाह्ये संज्वलनमायावेदककाल २ ७ृ मात्रे अवस्थितायामे गुणश्रेणिं करोति। ज्ञानावरणादिशेषकर्मणां प्रागुक्तायामे गलितावशेषगुणश्रेणिं करोति। तस्मिन्नेव मायावेदकप्रथमसमये लोभत्रयद्रव्यं मायाद्वयद्रव्यं च मायासंज्वलने संक्रामति तथा द्विविधमायाद्रव्यं त्रिविधलोभद्रव्यं च लोभसंज्वलने संक्रामति। तस्यापि बंधसंभवात्। बंधरहितेषु न संक्रामति अनानुपूर्वीसंक्रमप्रतिज्ञानादेवंविधसंस्थुलसंक्रमणसंभवः॥ ३१७॥

स० चं०— लोभ वेदक कालके अनंतरि माया वेदक कालका प्रथम समयविषै उतरनेवाला अनिवृत्ति करण है सो अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान संज्वलन मायाके द्रव्यकों अपनी अपनी द्वितीय स्थितिविषैतैं अपकर्षणकरि उदय रूप जो संज्वलन नाम माया ताके द्रव्यकौं तौ उदयावलीका प्रथम समयतैं लगाय अर उदय रहित दोय मायाके द्रव्यकौं उदयावलीतैं बाह्य प्रथम समयतैं लगाय आवलीकरि अधिक मायावेदक काल प्रमाण अवस्थिति आयामविषै गुणश्रेणि करै है। बहुरि उदय रहित तीन लोभ तिनका भी द्वितीय स्थितिके द्रव्यकौं अपकर्षण करि उदयावलीतैं बाह्य साधिक मायावेदक कालमात्र अवस्थिति आयामविषै गुणश्रेणि करै है। अर अवशेष छह कर्मनिकी पूर्वोक्त गलितावशेष आयामविषै गुणश्रेणि करै है। बहुरि तिस ही माया वेदक कालका प्रथम समयविषै तीन लोभका द्रव्य दोय मायाका द्रव्य है सो संज्वलन मायाविषै संक्रमण करै है। अथवा दोय मायाका द्रव्य तीन लोभका द्रव्य है सो संज्वलन लोभविषै संक्रमण करै है जातैं इहां संज्वलन लोभ वा मायाहीका बंध है। अर बंधविषै ही संक्रमण हो है। आनुपूर्वी संक्रमणके अभावतैं ऐसैं बंध संभवै है॥ ३१७॥

ओदरमायापढमे मायालोभे दुमासठिदिबंधो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छण्हं पुण वस्साणं संखेज्जसहस्सवस्साणि ॥३१८॥

अवतरमायाप्रथमे मायालोभे द्विमासस्थितिबंधः ।
षण्णां पुनः वर्षाणां संख्येयसहस्रवर्षाणि ॥३१८॥

सं० टी०— अवतारकमायावेदकप्रथमसमये संज्वलनमायालोभयोः स्थितिबन्धो द्विमासमात्रः । घातित्रयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः, अघातित्रयस्य ततः संख्येयगुणः । एवं स्थितिबंधसहस्रेषु गतेषु मायावेदककालः समाप्तो भवति ॥ ३१८ ॥ अथ मानवेदकस्य क्रियाविशेषं प्ररूपयन् गाथाद्वयमाह—

स० चं०— उतरनेवाला मायावेदक कालका प्रथम समयविषै संज्वलन माया लोभका दोय मास, तीन घातियानिका संख्यात हजार वर्ष तीन अघातियानिका तातैं संख्यातगुणा स्थितिबंध हो है। ऐसैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं माया वेदक काल समाप्त भया ॥ ३१८ ॥

ओदरगमाणपढमे तेत्तियमाणादियाण पयडीणं ।
ओदरगमाणवेदगकालादहियं दु गुणसेढी ॥३१९॥

अवतरकमानप्रथमे तावन्मानादिकानां प्रकृतीनाम् ।
अवतरकमानवेदककालादधिकातु गुणश्रेणी ॥ ३१९ ॥

सं० टी०— अयमवतारकानिवृत्तिकरणो मायावेदककालपरिसमाप्त्यनंतरसमये संज्वलनमानद्रव्यमपकृष्य उदयसमयादारभ्य मानवेदककालावलिकाभ्यधिके अवस्थितायामे गुणश्रेणिं करोति । मध्यममानद्वयस्य मायात्रयस्य लोभत्रयस्य च द्रव्यमपकृष्य उदयावलिबाह्यं तावन्मात्रायामे अवस्थितगुणश्रेणिं करोति । तस्मिन्नेव मानवेदकप्रथमसमये नवविधकषायद्रव्यमनानुपूर्व्या बध्यमानलोभमायामानेषु संक्रामति ॥ ३१९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— ताके अनंतरि मान वेदक कालका प्रथम समयविषै संज्वलन मानका द्रव्यकौं अपकर्षणकरि उदयावलीका प्रथम समयतैं लगाय अर दोय मान तीन माया तीन लोभानिके द्रव्यकौं अपकर्षणकरि उदयावलीतैं बाह्य प्रथम समयतैं लगाय आवली अधिक मान (या) वेदक कालका प्रमाण अवस्थित आयामविषै गुणश्रेणि करै है। औरनिकी गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम है ही। बहुरि तिस ही समयविषै अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान संज्वलन लोभ माया मानरूप नव कषायनिका द्रव्य है सो इहां बध्यमान संज्वलन मान माया लोभनिविषै आनुपूर्वी रहित जहां तहां संक्रमण करै है ॥ ३१९ ॥

ओदरगमाणपढमे चउमासा माणपहुदिठिदिबंधो।

छण्हं पुण वस्साणं संखेज्जसहस्समेत्ताणि ॥ ३२० ॥

अवतरकमानप्रथमे चतुर्मासा मानप्रभृतिस्थितिबंधः।

षण्णां पुनः वर्षाणां संख्येयसहस्रमात्राणि ३२० ॥

सं० टी०— तस्मिन्नेव मानवेदकप्रथमसमये संज्वलनमानमायालोभानां स्थितिबंधश्चतुर्मासमात्रः। घातित्रयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः। अघातित्रयस्य ततः संख्येयगुणः। एवं स्थितिबन्धसहस्रेषु गतेषु मानवेदककालः समाप्तो भवति ॥ ३२० ॥ अथानिवृत्तिकरणबादरसांपरायस्य संज्वलनक्रोधे प्रतिपातप्ररूपणार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं०— तिसही उतरनेवाले मान वेदक कालका प्रथम समयविषै संज्वलन मान माया लोभनिका चारि मास तीन घातियानिका संख्यात हजार वर्ष तीन अघातियानिका तातैं संख्यातगुणा स्थितिबंध हो है। ऐसैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं मान वेदकका काल समाप्त भया ॥ ३२० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओदरगकोहपढमे छक्कम्मसमाणया हु गुणसेढी।
बादरकसायणं पुण एतो गलिदावसेसं तु ॥३२१॥

अवतरकक्रोधप्रथमे षट्कर्मसमानिका हि गुणश्रेणी।
बादरकषायाणां पुनः इतः गलितावशेषं तु ॥ ३२१ ॥

सं० टी०— संज्वलनमानवेदककालसमाप्त्यनंतरं सोऽयमवतारकोऽनिवृत्तिकरणः संज्वलनक्रोधोदयप्रथमसमये ज्ञानावरणादिषट्कर्मणां प्रागुपक्रांतेनावतारकानिवृत्त्यपूर्वकरणकालद्वयाद्विशेषाधिकगलितावशेषगुणश्रेण्यायामेन समाने आयामे द्वादशकषायाणां गुणश्रेणिं गलितावशेषां करोति। इतः पूर्वं मोहनीयस्यावस्थितायामा गुणश्रेणी कृता। इदानीं पुनर्गलितावशेषायामा प्रारब्धेत्ययं विशेषः। यस्य कषायस्योदयेनोपशमश्रेणीमारूढो जीवः पुनरवतरणे तस्य कषायस्य उदयसमयादारभ्य गलितावशेषगुणश्रेणिरन्तरापूरं च क्रियते। तत्रोदयवतः संज्वलनक्रोधस्य द्रव्यमपकृष्य स a १२- / ७। ८। ओ पल्यासंख्यातभागेन खण्डयित्वा तदेकभागं स a १२- / ७। ८। ओ प उदयादिगुणश्रेण्यायामे निक्षिपति। पुनर्द्वितीयस्थितौ प्रथमनिषेकद्रव्यं स a १२- / ७। ८। १२ (a) इदं, पदहतमुखमादिधनमित्यनेनांतर्मुहूर्तमात्रांतरायामेन गुणयित्वा लब्धं समपट्टिकाधनं— स a १२- । २ ९ / ७। ८। १२ द्वितीयस्थितिप्रथमनिषेके द्विगुणगुणहान्या विभज्य द्वाभ्यां गुणिते अधस्तनगुणहानिचयो भवति।

सैकपदाहतपददलचयहतमुत्तरधनमित्यानीतं चयधनं स a १२- । २ । २ ९ (१-) । २ ९ / ७। ८। १२। १६। २ इदं प्रागानीते समपट्टिकाधने सा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धिकं कुर्यात् स ३ । १२–।२ ७ एतावद्द्रव्यमपकृष्टद्रव्यस्य पल्यासंख्यातभागखंडितबहुभागद्रव्यात् गृहीत्वा अद्धा-
७।८।१२
णेण सव्वधरो खंडिदेत्यादिविधिना विशेषहीनक्रमेणांतरायामे निक्षिपेत् । अवशिष्टबहुभागद्रव्यं स ३ १२– प द्विती-
७।८।ओ प
यस्थितौ ' दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा ' इत्यादिविधिना नानागुणहानिषु विशेषहीनक्रमेण तत्तदपकृष्टनिषेकमति-स्थापनावलिमात्रेणाप्राप्य निक्षिपति । एवं निक्षिप्ते गुणश्रेणिशीर्षद्रव्यादंतरायामप्रथमसमयनिक्षिप्तद्रव्यमसंख्यातगुण-हीनं । अंतरायामचरमसमयनिक्षिप्तद्रव्याद् द्वितीयस्थितिप्रथमसमयनिक्षिप्तद्रव्यमसंख्यातगुणहीनं द्रष्टव्यं । एवमुदयरहि-तानां शेषैकादशकषायाणां द्रव्यमपकृष्य उदयावलिबाह्यगुणश्रेण्यायामे अंतरायामे द्वितीयस्थितौ च द्रव्यत्रयनिक्षेप-विधिः कर्तव्यः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

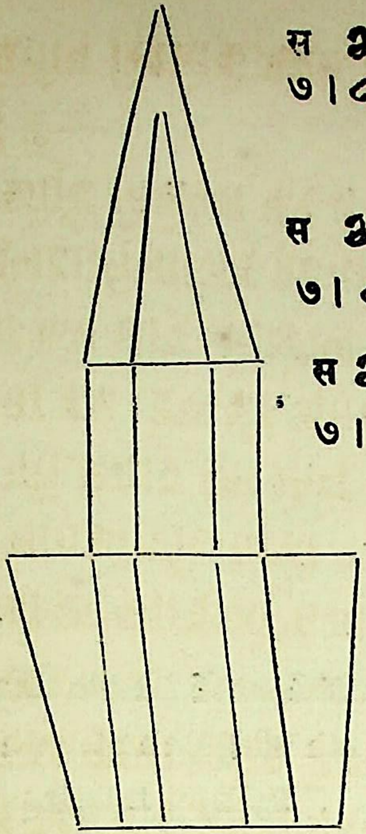

स ३ १२ १६ – ८
७।८। ओ १६ प १६
० ३ २
०

स ३ १२ – १६
७।८। ओ । १२ । १६
०

स ३ १२ – २ १७ । १६
७।८।२ १७ । १६ – २ १७ १६
० २

स ३ १२ – २ १७ १६ – २ १७
७।८।२ १७ । १६ – २ १७ १६
० २

स ३ १२ – ६४
७।८। ओ प ८५
० ३
०

स ३ । १२ – १
७।८। ओ प ८५
। ३

संज्वलनमानादित्रयद्रव्ये स ३ १२– ३ । सर्वघातिमध्यमकषायाष्टकद्रव्येण तदनंतैकभागमात्रेण—
७।८ ।
स ३ १२– । ८ साधिकशेषकादशकषायद्रव्यमित्थं भवति स ३ १२– । ३ अस्मादपकृष्य गुणश्रेण्यादिषु निक्षिपती-
७। ख १७ ७।८
त्यर्थः । संज्वलनक्रोधोदयप्रथमसमये द्वादशकषायाणां द्रव्यं बध्यमानेषु संज्वलनक्रोधादिषु चतुर्षु अनानुपूर्व्या संक्रमति ॥ ४१०

स० चं०– ताके अनंतरि उतरनेवाला अनिवृत्ति करण है सो संज्वलन क्रोधके उद-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यका प्रथम समयविषै अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान संज्वलन क्रोध मान माया लोभ रूप बारह कषायनिकी ज्ञानावरणादि छह कर्मनिके समान गलितावशेष गुणश्रेणि करै है। याके आयामका प्रमाण उतरनेवालेका अनिवृत्ति करण अपूर्व करणके कालतैं किछू अधिक है। इहांतैं पहले मोहका गुणश्रेणि आयाम अवस्थित था अब गलितावशेषरूप प्रारंभ भया। बहुरि इतना जानना—

जिस कषायके उदयकरि उपशमश्रेणी चढ्या होइ बहुरि उतरनेविषै तिसकषायका जिससमय उदय होइ तिस समयतैं लगाय सर्व मोहकी गलितावशेष गुणश्रेणी करिए है। अर अंतरका पूरना करिए है सो इहां क्रोधकी विवक्षा है तातैं तिसकी अपेक्षा ही कथन करिए है—

तहां उदयवान् जो संज्वलन क्रोध ताके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागकौं ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भाग तौ उदय समयतैं लगाय गुणश्रेणि आयामविषै निक्षेपण करै है। बहुरि बहुभागमात्र द्रव्यविषै कितना इक द्रव्यकौं अंतरायामविषै "अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे" इत्यादि विधानतैं चय घटता क्रम लीएं निक्षेपण करि अवशेष द्रव्यकौं तिस क्रोधकी द्वितीय स्थितिविषै 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा' इत्यादि विधानतैं नानागुणहानिविषै अंतविषै अतिस्थापनावली छोडि निक्षेपण करै है। इहां अंतरायामविषैं कितना द्रव्य दीया ताके जाननेकौं उपाय कहैं हैं—

द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेकका जो द्रव्यका प्रमाण ताकौं 'पदहतमुखमादिधनं'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस सूत्रकरि अंतरायाममात्र गच्छकरि गुणैं अंतरायामविषै समपट्टिकारूप आदिधन हो है। बहुरि द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेककौं दो गुणहानिका भाग दीएं द्वितीय स्थितिकी प्रथम गुणहानिविषै चयका प्रमाण आवै है। ताकौं दोयकरि गुणैं ताके नीचैं जो अंतरायाम तीहिंविषै चयका प्रमाण आवै है। बहुरि "सैकपदाहतपददलद्वयहतमुत्तरधनं" इस सूत्रकरि एक अधिक गच्छकरि गच्छका आधा प्रमाणकौं गुणि बहुरि ताकौं चयका प्रमाण करि गुणैं उत्तर धनका प्रमाण आवै है। इहां प्रथम स्थानविषै भी चय मिल्या है तातैं ऐसा सूत्र कह्या है सो आदि धन उत्तर धन मिलाएं जो प्रमाण भया तितना द्रव्य इहां अंतरायामविषै दीजिए है। इहां द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकके नीचैं अंतरायाम है तातैं ताकी अपेक्षातैं कथन कीया है सो इतना द्रव्य दीएं जिनि निषेकनिका अभाव कीया था तिनिका सद्भाव जैसा प्रथम स्थितिके नीचैं चय घटता क्रम लीएं संभवै तैसा हो है। ऐसैं निक्षेपण कीएं गुणश्रेणि शीर्षकेविषै निक्षेपण कीया द्रव्यतैं अंतरायामका प्रथम निषेकविषै निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यातगुणा घटता है। बहुरि अंतरायामका अंतानिषेकविषै निक्षेपण कीया द्रव्यतैं द्वितीय स्थितिका प्रथम समयविषै निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यातगुणा घटता है ऐसा जानना। बहुरि संज्वलन मानादिक तीन कषायका द्रव्यविषै ताके अनंतवे भागमात्र सर्व घाती अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान आठ कषायनिका द्रव्यकौं अधिक कीएं उदय रहित ग्यारह कषायनिका द्रव्य हो है। तिस द्रव्यतैं अपकर्षण करि उदयावलीतैं बाह्य गुणश्रेणि आयामविषै अंतरायामविषै द्वितीय स्थितिविषैं निक्षेपण पूर्वोक्त प्रकार दीजिए है। बहुरि क्रोध उदयका प्रथम समयविषै बारह कषायनिका द्रव्यकौं तत्काल बध्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मान जे संज्वलन क्रोधादिक च्यारि तिनिविषै आनुपूर्वी विना जहां तहां संक्रमण करे है ॥

ओदरगकोहपढमे संजलणाणं तु अट्ठमासठिदी।
छण्हं पुण वस्साणं संखेज्जसहस्सवस्साणि ॥३२२॥

अवतरकक्रोधप्रथमे संज्वलनानां तु अष्टमासस्थितिः।
षण्णां पुनः वर्षाणां संख्येयसहस्रवर्षाणि ॥ ३२२ ॥

सं० टी०— अवतारकानिवृत्तिकरणसंज्वलनक्रोधोदयप्रथमसमये संज्वलनचतुष्टयस्य स्थितिबंधोऽष्टमासमात्रः। घातित्रयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः। ततः संख्येयगुणो नामगोत्रयोः। ततो द्व्यर्धगुणितो वेदनीयस्य॥ ३२२ ॥ अथावतारकानिवृत्तिकरणस्य पुंवेदोदयकाले संभवत्क्रियाविशेषान् गाथाचतुष्टयेनाह—

स० चं०— उतरनेवालेकैं क्रोध उदयका प्रथम समयविषै संज्वलन च्यारि कषायनिका आठ मास, तीन घातियानिका संख्यात हजार वर्ष, नाम गोत्रका तातैं संख्यातगुणा वेदनीयका तातैं ड्योढा स्थितिबंध हो है ॥ ३२२ ॥

ओदरगपुरिसपढमे सत्तकसाया पणट्ठउवसमणा।
उणवीसकसायाणं छक्कम्माणं समाणगुणसेढी ॥

अवतरकपुरुषप्रथमे सप्तकषायाः प्रणष्टोपशमकाः।
एकोनविंशकषायाणां षट्कर्मणां समानगुणश्रेणी ॥ ३२३ ॥

सं० टी०— संज्वलनक्रोधवेदककाले पुंवेदोदयप्रथमसमये युगपदेव पुंवेदो हास्यादिषण्णोकषायाश्च प्रणष्टोपशमकरणाः संजाताः। तदैव द्वादशकषायाणां सप्तनोकषायाणां च ज्ञानावरणादिषट्कर्मगुणश्रेण्यायामसमानेन आ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यामेन गुणश्रेणिं करोति । तत्रोदयवतोः पुंवेदसंज्वलनक्रोधयोः द्रव्यमपकृष्य उदयादिगुणश्रेण्यायामे अंतरायामे द्वितीयस्थितौ च संज्वलनक्रोधोक्तप्रकारेण द्रव्यनिक्षेपं करोति। उदयरहितानां शेषकषायनोकषायाणां द्रव्यमपकृष्य उदयावलिबाह्यगुणश्रेण्यायामे अंतरायामे द्वितीयस्थितौ च पूर्वोक्तप्रकारेण निक्षिपति। तदैव सप्तनोकषायाणामनानुपूर्व्या संक्रमोऽपि पूर्ववज्ज्ञातव्यः । तदैव पुंवेदस्य बन्धोऽपि प्रारब्धः ॥ ३२३ ॥

स० चं०— संज्वलन क्रोध वेदक कालविषै पुरुष वेदका उदय होनेका प्रथम समयविषै पुरुषवेद अर छह हास्यादिक ए सात कषाय हैं ते नष्ट भया है उपशम करण जिनकौं ते ऐसे भए। तब ही बारह कषाय अर सात नोकषायनिकी ज्ञानावरणादि छह कर्मनिके समान आयामविषै गुणश्रेणि करै है। तहां उदयरूप पुरुषवेद संज्वलन क्रोधके द्रव्यकौं तौ अपकर्षण करि उदय समयतैं लगाय अर अन्य कषायनिका द्रव्यकौं अपकर्षणकरि उदयावलीतैं बाह्य समयतैं लगाय पूर्वोक्त प्रकार गुणश्रेणि आयाम अंतरायाम द्वितीय स्थितिविषै निक्षेपण करै है। बहुरि तब ही सात नोकषायनिका द्रव्य आनुपूर्वी विना जहां तहां संक्रमण करै है। बहुरि तब ही पुरुषवेदके बंधका प्रारंभ हो है ॥ ३२३ ॥

पुंसंजलणिदराणं वस्सा बत्तीसयं तु चउसट्ठी ।
संखेज्जसहस्साणि य तक्काले होदि ठिदिबंधो ॥

पुंसंज्वलनेतरेषां वर्षाणि द्वात्रिंशत् चतुःषष्टिः ।
संख्येयसहस्राणि च तत्काले भवति स्थितिबंधः ॥ ३२४ ॥

सं० टी०— अवतारकस्य पुंवेदोदयप्रथमसमये पुंवेदस्य द्वात्रिंशद्वर्षमात्रः स्थितिबंधः । संज्वलनचतुष्कस्य च चतुःषष्टिवर्षमात्रः । घातित्रयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः । नामगोत्रयोस्ततः संख्येयगुणः । वेदनीयस्य ततो द्व्यर्धगुणः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— उतरनेवालेकैं पुरुषवेद उदयका प्रथम समयविषैं पुरुष वेदका बत्तीसवर्ष, संज्वलन चतुष्कका चौसठि वर्ष, तीन घातियानिका संख्यात हजार वर्ष, नाम गोत्रका तातैं संख्यातगुणा, वेदनीयका तातैं ड्योढा स्थितिबंध हो है ॥ ३२४ ॥

पुरिसे दु अणुवसंते इत्थी उवसंतगोत्ति अद्धाए ।
संखाभागासु गदेसु संखवस्सं अघादिठिदिबंधो ॥

पुरुषे तु अनुपशांते स्त्री उपशांतका इति अद्धायाः ।
संख्यभागेषु गतेष्वसंख्यवर्षं अघातिस्थितिबंधः ॥ ३२५ ॥

सं० टी०— पुंवेदोदयकालेऽन्तर्मुहूर्तमात्रे यावत् स्त्रीवेदोपशमनं न विनश्यति तावत्काले संख्यातभागेषु गतेषु अघातिकर्मणां स्थितिबंधोऽसंख्यातवर्षमात्रः ॥ ३२५ ॥

स० चं०— पुरुषवेदका उदय कालविषै स्त्रीवेदका उपशम यावत् काल न विनसै तावत्कालके संख्यात बहुभाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहैं अघातिया कर्मनिका स्थिति बंध असंख्यात हजार वर्षमात्र हो है ॥ ३२५ ॥

णवरि य णामदुगाणं वीसियपडिभागदो हवे बंधो ।
तीसियपडिभागेण य बंधो पुण वेयणीयस्स ॥३२६॥

नवरि च नामद्विकयोः वीसियप्रतिभागतो भवेद् बंधः ।
तीसियप्रतिभागेन च बंधः पुनः वेदनीयस्य ॥ ३२६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०— तत्र नामगोत्रयोः पल्यासंख्यातैकभागमात्रः स्थितिबंधः । वीसियस्थितिबन्धे एतावति तीसियस्थितिबंधः कियानिति त्रैराशिकसिद्धो वेदनीयस्थितिबन्धो द्व्यर्धगुणितपल्यासंख्यातभागमात्रः—

प फ इ लब्ध प ३
२० प ३० a २
a

घातित्रयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः स्थितिबंधः । ततः संख्येयगुणहीनो मोहनीयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः स्थितिबंधः ॥ ३२६ ॥ अथ स्त्रीवेदोपशमनविनाशप्ररूपणार्थं गाथाद्वयमाह—

स० चं०— तहां विशेष जो नाम गोत्रनिका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र स्थितिबंध है। अर वीसियनिका इतना भया तौ तीसीयनिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक कीएं वेदनीयका ड्योढ गुणा पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध है। बहुरि तीन घातियानिका संख्यात हजार वर्षमात्र मोहनीयका तातैं संख्यातगुणा घटता संख्यात हजार वर्षमात्र स्थितिबंध है ॥ ३२६ ॥

थी अणुवसमे पढमे वीसकसायाण होदि गुणसेढी ।
संढुवसमोत्ति मज्झे संखाभागेसु तीदेसु ॥ ३२७ ॥

स्त्री अनुपशमे प्रथमे विंशकषायाणां भवति गुणश्रेणी ।
षंढोपशम इति मध्ये संख्यभागेष्वतीतेषु ॥ ३२७ ॥

सं० टी०—ततः संख्यातसहस्रस्थितिबंधेषु अंतर्मुहूर्तकाले गतेषु एकस्मिन् समये स्त्रीवेदोपशमो विनष्टः । ततः प्रभृति स्त्रीवेदद्रव्यं संक्रमापकर्षणादिकरणायोग्यं संजातमित्यर्थः । तस्मिन् स्त्रीवेदोपशमनविनाशप्रथमसमये स्त्रीवेदद्रव्यमपकृष्य तस्योदयरहितत्वादुदयावलिबाह्यगुणश्रेण्यायामे अंतरायामे द्वितीयस्थितौ च पूर्वोक्तविधानेन निक्षिपति । अत्र गुणश्रेण्यायामः शेषकर्मणां गलितावशेषगुणश्रेण्यायामसमानः । द्वादशकषायसप्तनोकषायाणां द्रव्यमपकृष्य पू-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वोक्तप्रकारेण गलितावशेषगुणश्रेण्यायामे अंतरायामे द्वितीयस्थितौ च निक्षिपति । एवं विंशतिकषायाणां गुणश्रेणी-करणं प्ररूपितं । यावन्नपुंसकवेदोपशमोऽस्ति तावत्कालस्य संख्यातबहुभागेषु गतेषु तन्मध्ये ॥ ३२७ ॥

स० चं०— तातैं बंधनेरूप संख्यात हजार स्थिति बंध भएं अंतर्मुहूर्त काल गएं स्त्रीवेदका उपशम नष्ट भया । तहांतैं लगाय स्त्रीवेदका द्रव्य संक्रम अपकर्षणादि करने योग्य भया । तिसका प्रथम समयविषै स्त्रीवेदका द्रव्यकौं अपकर्षणकरि यहु उदय रहित है तातैं उदय वाह्यतैं लगाय अन्य कर्मनिका गुणश्रेणि आयामकैं समान गलितावशेष गुणश्रेणि आयामविषै अर अंतरायामविषै अर द्वितीय स्थितिविषै निक्षेपण करै है । अर बारह कषाय सात नोकषायनिका द्रव्यकौं अपकर्षणकरि पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है ऐसैं इहां वीसकषायनिका गुणश्रेणि हो है । बहुरि तिस ही कालविषै यावत् नपुंसक वेदका उपशम पाइए है तावत्कालका संख्यात बहुभाग व्यतीत भएं कहा ? सो कहैं हैं—

घादितियाणं णियमा असंखवस्सं तु होदि ठिदिबंधो ।
तक्काले दुट्ठाणं रसबंधो ताण देसघादीणं ॥

घातित्रयाणां नियमात् असंख्यवर्षस्तु भवति स्थितिबंधः ।
तत्काले द्विस्थानं रसबंधः तेषां देशघातिनाम् ॥ ३२८ ॥

सं० टी०— घातित्रयस्य स्थितिबन्धः पल्यासंख्यातभागः स चासंख्यातवर्षमात्रः, नामगोत्रयोस्ततोऽसंख्येयगुणः पल्यासंख्यातभागमात्रः । वेदनीयस्य द्व्यर्धगुणितस्तावन्मात्रः, मोहनीयस्य संख्यातसहस्रवर्षमात्रः स्थितिबंधः । अस्मिन्नेवावसारे तेषां चतुर्ज्ञानावरणीयत्रिदर्शनावरणीयपंचांतरायाणां देशघातिनां लतादारुसमानद्विस्थानानुभागबंधो भवति ॥ ३२८ ॥ अथ नपुंसकवेदोपशमनविनाशं तत्कालसंभवक्रियाविशेषं च प्ररूपयितुं गाथाद्वयमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०– तीन घातियानिका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र नाम गोत्रका तातैं असंख्यातगुणा वेदनीयका तातैं ड्योढा मोहका संख्यात हजार वर्षमात्र स्थितिबंध हो है। इस ही अवसरविषै च्यारि ज्ञानावरण तीन दर्शनावरण पांच अंतराय इन देश घातियानिका लता अर दारु समान द्विस्थानगत अनुभागबंध हो है॥ ३२८॥

संढणुवसमे पढमे मोहिगिवीसाण होदि गुणसेढी।
अंतरकदोत्ति मज्झे संखाभागासु तीदासु॥ ३२९॥

षंढानुपशमे प्रथमे मोहैकविंशानां भवति गुणश्रेणी।
अंतरकृत इति मध्ये संख्यभागेष्वतीतेषु॥ ३२९॥

सं० टी०—ततः संख्यातसहस्रस्थितिबंधेषु एकस्मिन् समये नपुंसकवेदोपशमो विनष्टः। तत्प्रथमसमये नपुंसकवेदद्रव्यमपकृष्य इतरकर्मगलितावशेषगुणश्रेण्यायामसमाने उदयावलिबाह्यगुणश्रेण्यायामे अंतरायामे द्वितीयस्थितौ च पूर्वोक्तविधानेन निक्षिपति। अवशिष्टविंशतिमोहप्रकृतीनां द्रव्यमपकृष्य गलितावशेषगुणश्रेणिं प्राग्वत् करोति। नपुंसकवेदोपशमविनाशप्रथमसमयादारभ्य आरोहकानिवृत्तिकरणस्यांतरकरणनिष्ठापनचरमसमयपर्यंतं योऽन्तर्मुहूर्तकालस्तस्य संख्यातबहुभागेषु गतेषु तदन्तरे॥३२९॥

स० चं०– तातैं बंधता क्रमकरि संख्यात हजार स्थितिबंध गएं नपुंसक वेदका उपशम नष्ट भया ताके प्रथम समयविषै नपुंसक वेदके द्रव्यकौं अपकर्षणकरि उदयावलीतैं बाह्य समयतैं लगाय अर अन्य बीस मोह प्रकृतिनिके द्रव्यकौं अपकर्षणकरि पूर्वोक्त प्रकार अन्य कर्मनिके समान गलितावशेष गुणश्रेणि आयामविषै अंतरायामविषै द्वितीय स्थितिविषै निक्षेपण करै है। बहुरि नपुंसक वेदका उपशम नाश होनेके समयतैं लगाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उतरता संता चढनेवाला जिस अवसरविषै अंतर करणका समाप्तपना करै तिस अवसर पावने पर्यंत अंतर्मुहूर्त्त काल है ताका संख्यात बहुभाग व्यतीत भएं कहा ? सो कहैं हैं—

मोहस्स असंखेज्जा वस्सपमाणा हवेज्ज ठिदिबंधो ।
ताहे तस्स य जादं बंधं उदयं च दुट्ठाणं ॥ ३३० ॥

मोहस्य असंख्येयानि वर्षप्रमाणानि भवेत् स्थितिबंधः ।
तस्मिन् तस्य च जातो बंध उदयश्च द्विस्थानम् ॥ ३३० ॥

सं० टी०— मोहनीयस्यासंख्यातवर्षमात्रः स्थितिबन्धः । ततोऽसंख्येयगुणो घातित्रयस्य स्थितिबन्धः । ततोऽसंख्येयगुणो नामगोत्रयोः स्थितिबन्धः । ततो विशेषाधिको वेदनीयस्य स्थितिबन्धः । तस्मिन्नेवावसरे मोहनीयस्य द्विस्थानानुभागबंधोदयौ जातौ ॥ ३३० ॥ अथावतरणो लोभसंक्रमप्रतिघातादिप्ररूपणार्थं गाथात्रयमाह—

स० चं०— मोहनीयका असंख्यातवर्ष तीन घातियानिका तातैं असंख्यातगुणा, नाम गोत्रका तातैं असंख्यातगुणा, वेदनीयका तातैं अधिक स्थितिबंध हो है । इस ही अवसरविषै मोहनीयका लता दारुरूप द्विस्थानगत बंध वा उदय भया ॥ ३३० ॥

लोहस्स असंकमणं छावलितीदेसु दीरणत्तं च ।
णियमेण पडंताणं मोहस्सणुपुव्विसंकमणं ॥ ३३१ ॥

लोभस्य असंक्रमणं षडावल्यतीतेषूदीरणत्वं च ।
नियमेन पततां मोहस्यानुपूर्विसंक्रमणम् ॥ ३३१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० टी०— अवतारकसूक्ष्मसांपरायप्रथमसमयादारभ्याधःसर्वावस्थासु बध्यमानज्ञानावरणादिकर्मणां समयप्रबद्धद्रव्यमारोहके षडावलिका व्यतिक्रम्य उदीयत इति नियमः प्रागुक्तः, तं परित्यज्य इदानीं बंधावलीव्यतिक्रमे उदीयते । अवतारकानिवृत्तिकरणप्रथमसमयादारभ्य लोभस्यासंक्रमोऽधः सर्वत्रारोहकविपर्ययेण प्रतिहन्यते । संज्वलनलोभस्य मायादिषु संक्रमणशक्तिःपरिप्राप्ता तिर्जातेत्यर्थः । तथा मोहस्य नपुंसकादिप्रकृतीनां आनुपूर्वीसंक्रमश्च नष्टः । आरोहके य आनुपूर्वीसंक्रमः प्रागुक्तस्तं परित्यज्य इदानीमनानुपूर्व्या बध्यमाने सजातीयप्रकृत्यंतरे यत्र यत्र वा संक्रमो जातः इत्यर्थः ॥ ३३१ ॥

स० चं०— उतरनेवालेकैं सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयतैं लगाय बंधे थे जे कर्म तिनकी आवली व्यतीत भएं उदीरणा होनेका नियम था ताकौं छोडि बंधावली व्यतीत होतैं ही उदीरणा करिए है बहुरि उतरने वालेकैं अनिवृत्ति करणका प्रथम समयतैं लगाय लोभका संक्रमण था सो चढनेवालेतैं विपरीत रूपकरि हणिए है । संज्वलन लोभकी मायादिकविषै संक्रम होनेकी शक्ति भई यहु अर्थ जानना । बहुरि मोहकी सर्व प्रकृतिनिका जो आनुपूर्वी संक्रमका नियम भया था सो नष्ट भया जहां तहां स्वजातीय कोई चारित्र मोहकी प्रकृतिका कोई चारित्र मोहकी प्रकृतिनिविषै संक्रमण हो है ॥ ३३१ ॥

विवरीयं पडिहण्णदि विरयादीणं च देसघादित्तं ।
तह य असंखेज्जाणं उदीरणा समयपबद्धाणं ॥३३२॥

विपरीतं प्रतिहन्यते वीर्यादीनां च देशघातित्वम् ।
तथा च असंख्येयानामुदीरणा समयप्रबद्धानाम्॥ ३३२ ॥

सं० टी०—एवमुक्तप्रकारेण स्थितिबंधसहस्रेषु गतेषु वीर्यांतरायस्यानुभागबन्धो देशघातिस्वरूपं परित्यज्य सर्वघातिस्वरूपो जातः । ततः स्थितिबन्धपृथक्त्वेषु गतेषु मतिज्ञानावरणीयोपभोगांतराययोरनुभागबन्धो देशघातिरूपं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुक्त्वा सर्वघातिरूपो जातः। ततः स्थितिबन्धपृथक्त्वेषु गतेषु चक्षुर्दर्शनावरणीयस्यानुभागबन्धो देशघातिरूपं मुक्त्वा सर्वघातिरूपो जातः। ततः स्थितिबन्धपृथक्त्वेषु गतेषु श्रुतज्ञानावरणीयचक्षुर्दर्शनावरणीयभोगांतरायाणामनुभागबन्धो देशघातिरूपं मुक्त्वा सर्वघातिरूपो जातः। ततः स्थितिबन्धपृथक्त्वेषु गतेषु अवधिज्ञानावरणीयावधिदर्शनावरणीयला-भांतरायाणामनुभागबन्धो देशघातिरूपं त्यक्त्वा सर्वघातिरूपो जातः। ततः स्थितिबन्धपृथक्त्वेषु गतेषु मनःपर्ययज्ञा-नावरणीयदानांतराययोरनुभागबन्धो देशघातिरूपं त्यक्त्वा सर्वघातिरूपो जातः। ततः स्थितिबंधसहस्रेषु असंख्यातस-मयप्रबद्धोदीरणा प्रतिहन्यते ॥ ३३२ ॥

स० चं०— ऐसैं बंधता क्रमरूप हजारौं स्थितिबंध गएं वीर्यांतरायका, तातैं परै बहुत स्थिति बंध गएं मति ज्ञानावरण उपभोगांतरायका, तातैं परै बहुत स्थिति बंध गएं चक्षु-र्दर्शनावरणका अर तातैं परैं बहुत स्थितिबंध गएं श्रुतज्ञानावरणीय अर चक्षुर्दर्शनावरणीय भोगांतरायका बहुरि तातैं परैं बहुत स्थिति बंध गएं अवधि ज्ञानावरणीय अवधि दर्शना-वरण लाभांतरायनिका अर तातैं परैं बहुत स्थितिबंध गएं मनःपर्यय ज्ञानावरण दानां-तरायका क्रमतैं पूर्वोक्त देशघाती बंध होता था ताकौं छोडि सर्वघाती रूप अनुभागबंध होने लगा तातैं परैं हजारौं स्थिति बंध भएं असंख्यात समयप्रबद्धकी उदीरणा होनेका अ-भाव भया ॥ ३३२ ॥

लोयाणमसंखेज्जं समयपबद्धस्स होदि पडिभागो ।
तत्तियमेत्तद्दव्वस्सुदीरणा वट्टदे तत्तो ॥ ३३३ ॥

लोकानामसंख्येयं समयप्रबद्धस्य भवति प्रतिभागः ।
तावन्मात्रद्रव्यस्योदीरणा वर्तते ततः॥ ३३३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेषाधिकः प॥/a४ ततः संख्यातसहस्रस्थितिबन्धेषु गतेषु सर्वतः स्तोको नामगोत्रयोः स्थितिबन्धः प/a३ ततो विशेषाधिको घातित्रयवेदनीययोः प/a।३।२ ३ ततोऽर्धाधिको मोहनीयस्य प/a३ २ एवं सिद्धांताविरोधेन स्थितिबन्धाल्पबहुत्वं ज्ञातव्यं ॥ ३३५ ॥

स० चं– तातैं असंख्यात हजार स्थितिबंध गएं सर्वतैं स्तोक मोहका तातैं असंख्यातगुणा नाम गोत्रका तातैं विशेष अधिक तीन घातिया अर वेदनीयका स्थितिबंध हो है। बहुरि तातैं संख्यात हजार स्थिति बंध गएं सर्वतैं स्तोक नाम गोत्रका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र तातैं विशेष अधिक मोहका तातैं विशेष अधिक तीन घातिया अर वेदनीयका स्थितिबंध हो है। बहुरि तातैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध गएं सर्वतैं स्तोक नाम गोत्रका तातैं विशेष अधिक तीन घातिया अर वेदनीयका तातैं तीसरा भाग अधिक मोहका स्थितिबंध हो है ॥ ३३५ ॥

कमकरणविणट्ठादो उवरिट्ठविदा विसेसअहियाओ।
सव्वासिं तण्णट्ठे हेट्ठा सव्वासु अहियकमं ॥

क्रमकरणविनाशात् उपरि स्थिता विशेषाधिकाः।
सर्वासां तदद्धायां अधस्तना सर्वासु अधिकक्रमं ॥ ३३६ ॥

सं० टी०— क्रमकरणविनाशस्य व्युत्क्रमणकालस्योपरि तत्कालावसानपल्यासंख्यातभागमात्रस्थितिबन्धात्प्रभृत्युत्तरकाले सर्वकर्मप्रकृतीनां स्थितिबन्धाः विशेषाधिकाः स्थापिताः रचिता इत्यर्थः। क्रमकरणविनाशादधस्तात्तत्कालादिनाऽसंख्येयवर्षमात्रस्थितिबन्धात्पूर्वं संख्यातवर्षसहस्रस्थितिबन्धपर्यंतमायुर्वर्जितसप्तकर्मप्रकृतीनां स्थितिबन्धाः विशेषाधिकाः ॥ ३३६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– क्रम करणका विनाश जिस कालविषै भया तिस कालके ऊपरि तिस काल का अंत समयविषै पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध भया तातैं लगाय पीछैं उत्तर कालविषै सर्व कर्म प्रकृतिनिका जे स्थितिबंध हैं ते पूर्व स्थितिबंधतैं उत्तर स्थितिबंध विशेष अधिक स्थापे हैं। गुणकार रूप नाही हैं। बहुरि क्रमकरणका नाशके नीचैं तिस क्रमकरणका कालकी आदिविषै असंख्यात वर्षमात्र स्थितिबंध है तातैं पहिलैं संख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबंध पर्यंत आयु विना सात कर्मनिका बंध हो है। ते भी पूर्व स्थिति बंधतैं उत्तर स्थितिबंध अधिक क्रम लीएं हो हैं गुणकार रूप नाही हैं ॥ ३३६ ॥

जत्तोपाये होदि हु असंखवस्सप्पमाणठिदिबंधो।
तत्तोपाये अण्णं ठिदिबंधमसंखगुणियकमं ॥

यदुत्पादे भवति हि असंख्यवर्षप्रमाणस्थितिबंधः।
तदुपायेन अन्यं स्थितिबंधमसंख्यगुणितक्रमं ॥ ३३७ ॥

सं० टी०— यतः प्रभृति नामगोत्रादिकर्मप्रकृतीनामसंख्यातवर्षमात्रस्थितिबन्धः प्रारब्धः। ततः प्रभृति पूर्वपूर्वस्थितिबन्धादुत्तरोत्तरस्थितिबंधोऽन्योऽसंख्येयगुणो भवति यावत्सर्वपश्चिमः पल्यासंख्यातभागमात्रः स्थितिबंधो जायते ३३७

स० चं– जहांतैं लगाय नाम गोत्रादिकनिका असंख्यात वर्षमात्र स्थितिबंधका प्रारंभ भया तहांतैं लगाय पहला पहला स्थितिबंधतैं पिछला पिछला और स्थितिबंध भया सो असंख्यात गुणा है यावत् सर्वतैं पीछैं पल्यका असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध होइ तावत् ऐसाही क्रम जानना ॥ ३३७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं पल्लासंखं संखं भागं च होइ बंधेण ।
एत्तोपाये अण्णं ठिदिबंधो संखगुणियकमं ॥३३८॥

एवं पल्यासंख्यं संख्यं भागं च भवति बंधेन ।
एतदुपायेन अन्यः स्थितिबंधः संख्यगुणितक्रमः ॥ ३३८ ॥

सं० टी०— एवं संख्यातसहस्रेषु पल्यासंख्यातभागप्रमितेषु स्थितिबंधेषु सर्वपश्चिमपल्यासंख्यातभागमात्रस्थितिबंधात्परं युगपदेव सप्तकर्मणां पल्यासंख्यातभागमात्रः स्थितिबन्धो जातः । तत्र वीसियस्थितिबंधात तीसियस्थितिबंधो द्व्यर्धगुणितः । चालीसियस्थितिबंधो द्विगुण इति विशेषः पूर्ववद्द्रष्टव्यः । आरोहकस्य क्रमेणोपलभ्यमानो दूरापकृष्टिविषयस्थितिबंधः कथमवरोहकस्यैकवारमेव संभवतीति नाशंकनीयं प्रतिपातिपरिणाममाहात्म्येन तत्र तथाभावस्य विरोधाभावात् । इतः प्रभृत्यनंतरस्थितिबंधोऽन्यः संख्यातगुणितः सप्तकर्मणां जायते ॥ ३३८ ॥

स० चं– ऐसैं यथासंभव हीनाधिक प्रमाण लीए पल्यका असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध बंधता क्रम लीएं संख्यात हजार व्यतीत भएं तहां सर्वतैं पीछैं जो पल्यका असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध भया तातैं परैं एक एक कालविषैं सातो कर्मनिका स्थिति बंध पल्यके असंख्यातवे भागमात्र हो है । तहां विशेष जो वीसीयनिकेतैं तीसयिनिका ड्योढा, चालीसियनिका दूणा स्थितिबंध जानना । पल्यका असंख्यातवे भागके भेद घने तातैं हीनाधिक रूप घने स्थितिबंधनिकौं आलापकरि पल्यका असंख्यातवां भागमात्र ही कह्या है चढनेवालेकैं दूरापकृष्टि नामा स्थितिबंध क्रमतैं भया था इहां उतरनेवालेकैं प्रतिपाती परिणामनिकरि एकहीवार दूरापकृष्टिनामा स्थितिबंध हो है यातैं परैं अनंतर और स्थितिबंध हो है सो सातो कर्मनिका संख्यात गुणा हो है ॥ ३३८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहस्स य ठिदिबंधो पल्ले जादे तदा दु परिवड्ढी ।
पल्लस्स संखभागं इगिविगलासण्णिबंधसमं ॥२२९॥

मोहस्य च स्थितिबंधः पल्ये जाते तदा तु परिवृद्धिः ।
पल्यस्य संख्यभागं एकविकलासंज्ञिबंधसमं ॥ २२९ ॥

सं० टी०—— एवं संख्यातगुणितवृद्धिक्रमेण संख्यातसहस्रस्थितिबंधोत्सरणेषु सर्वपश्चिमस्थितिबंधो नामगोत्रयोः पल्यासंख्यातैकभागमात्रः प $\frac{\text{१}}{\text{५}}$ ततस्तीसियस्थितिबन्धो द्व्यर्धगुणितः प $\frac{\text{३}}{\text{५ २}}$ ततः मोहनीयस्थितिबंधो द्विगुणः प $\frac{\text{२}}{\text{५}}$ तदनंतरस्थितिबन्धो मोहस्य संपूर्णपल्यमात्रः ।प। अत्र वृद्धिप्रमाणं पल्यासंख्यातबहुभागमात्रं प $\frac{\text{५ – २}}{\text{५}}$ तीसियस्थितिबंधः पल्यत्रिचतुर्भागमात्रः प $\frac{\text{३}}{\text{४}}$ अत्र वृद्धिप्रमाणं अनंतराधस्तनस्थितिप्रमाणेन प $\frac{\text{३}}{\text{५ २}}$ अनेन साधिकपल्यचतुर्भाग प $\frac{\text{१}}{\text{४}}$ न्यूनपल्यमात्रं प $\frac{\text{५}}{\text{५ ४}}$ वीसियस्थितिबंधः पल्यार्धमात्रः प $\frac{\text{१}}{\text{२}}$—अत्र वृद्धिप्रमाणं अनंतराधस्तनस्थितिबंधमात्रेण पल्यासंख्यातभागेन प $\frac{\text{}}{\text{५}}$ न्यूनपल्यार्धमात्रं प $\frac{\text{१}}{\text{२}}$ – पूर्वस्थितिबंधे उत्तरोत्तरस्थितिबंधे शोधिते अवशेषमात्रं वृद्धिप्रमाणं सर्वत्र ज्ञातव्यं ।

चालीसियस्थितिबंधस्य यदि पल्यमात्रः स्थितिबंधो लभ्यते तदा तीसियस्थितिबन्धस्य कीदृशः स्थितिबंधो भवति—
प्र फ इ इति त्रैराशिकसिद्धः पल्यत्रिचतुर्भागमात्रस्तीसियस्थितिबंधः । तथा वीसियस्थितिबंधमिच्छाराशिं कृत्वा
४० ५ ३०
त्रैराशिकसिद्धो प्र फ इ वीसियस्थितिबंधः पल्यार्धमात्रः । एवं मोहनीयस्य स्थितिबंधो यदा पल्यमात्रो जातः
४० ५ २०
ततः परमनंतरानंतरस्थितिबंधोत्सरणेषु पल्यासंख्यातैकभागमात्रं वृद्धिप्रमाणं द्रष्टव्यं । ततः संख्यातसहस्रेषु स्थितिबंधो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्सरणेषु गतेषु मोहस्य स्थितिबंधः एकेंद्रियस्थितिबंधसदृशः सागरोपमचतुःसप्तमभागमात्रः सा ४/७ तीसियस्थितिबंधः सागरोपमत्रिसप्तमभागमात्रः सा ३/७ वीसियस्थितिबंधः सागरोपमद्विसप्तमभागमात्रः स २/७ एवं प्रतिकांडकं संख्यातसहस्र-स्थितिबंधोत्सरणेषु गतेषु द्वींद्रियत्रींद्रियचतुरिंद्रियासंज्ञिपंचेन्द्रियस्थितिबंधसदृशा मोहनीयस्य स्थितिबंधाः परमागमोक्त-प्रतिभागक्रमेण ज्ञातव्याः ॥ ३३९ ॥

स० चं– ऐसैं संख्यातगुणा क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबंधोत्सरण भएं सबतैं पीछैं नाम गोत्रका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र तातैं ड्योढ़ा तीसीयनिका दूना मोहका स्थितिबंध होइ। ताके अनंतरि मोहका पल्यमात्र तीसीयनिका पल्यका तीन चौथा भागमात्र वीसीयनिका आधा पल्यमात्र स्थितिबंध हो है पूर्व पूर्व स्थितिबंधके प्रमाणकौं उत्तर उत्तर स्थिति बंधका प्रमाणविषैं घटाएं अवशेष रहै सोई पूर्वोक्त स्थितिबंधतैं उत्तर स्थितिबंधविषै वृद्धिका प्रमाण हो है। सो इहां भी साधनकरि जानना। बहुरि चालीसीयनिका स्थितिबंध पल्यमात्र होइ तौ तीसीय अथवा वीसीयनिका केता होइ ? ऐसैं त्रैराशिककरि तीसीयनिका पल्यका तीन चौथा भागमात्र वीसीयनिका आधापल्यमात्र स्थितिबंध सिद्ध हो है। ऐसैं अन्यत्र भी त्रैराशिक जानना जैसैं स्थिति घटावनेविषै पूर्वै स्थिति बंधापसरण संज्ञा कही थी तैसैं स्थिति बधावनेविषैं इहां स्थितिबंधोत्सरण संज्ञा जाननी सो एक एक स्थितिबंधोत्सरण-विषैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंधै ऐसैं प्रत्येक संख्यातहजार स्थितिबंध होइ क्रमतैं एकेंद्री वेइंद्री तेइंद्री चोइंद्री असंज्ञी पंचेंद्रीका स्थितिबंधके समान स्थितिबंध हो है॥ ३३९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहस्स पल्लबंधे तीसदुगे तत्तिपादमद्धं च।
दुतिचरुसत्तमभागा वीसतिये एयवियलठिदी॥

मोहस्य पल्यबंधे त्रिंशद्विके तत्त्रिपादमर्धं च।
द्वित्रिचतुःसप्तमभागा वीसत्रिके एकविकलस्थितिः॥ ३४० ॥

सं० टी०— यदा मोहस्य पल्यमात्रस्थितिबंधो जातस्तदा तीसियस्थितिबंधः पल्यत्रिचतुर्भागमात्रः। वीसियस्थितिबंधः पल्यार्धमात्रः। पुनरेकेंद्रियस्थितिबन्धसदृशा वीसियतीसियमोहानां स्थितिबन्धाः सागरोपमस्य द्विसप्तमत्रिसप्तमचतुःसप्तमभागमात्राः। पुनर्द्वीन्द्रियादिस्थितिबंधा सदृशा वीसियादिस्थितिबंधाः पंचविंशतिपंचाशच्छतसहस्रगुणिता असंज्ञिस्थितिबंधपर्यंता अनुमन्तव्याः—

मो प २ ३	प २ ५।५।५।५	प २ ५ ५ ५	प २ ५	प १
ती प ३ ३ २	प ५ ५ ५ ५ ३ २	प ५ ५ ५ ३ २	प ३ ५। २	प ३ ४
वी प ३	प ५ ५ ५ ५	प ५ ५ ५	प ५	प १ २

अवतारकानिवृत्तिकरणचरमसमयस्थितिबंधप्ररूपणार्थमाह—

सं० च०— जब मोहका स्थितिबंध पल्यमात्र भया तब तीसीयनिका पल्यका तीन चौथाभागमात्र वीसीयनिका आधा पल्यमात्र स्थितिबंध हो है सोई कहि आए हैं। बहुरि एकेंद्री समान स्थिति बंध भया तहां मोहका सागरके च्यारि सातवां भागमात्र तीसीयनिका सागरके तीन सातवां भागमात्र वीसीयनिका सागरके दोय सातवां भागमात्र स्थितिबंध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानना । बहुरि बेंद्री तेंद्री चौंद्री असंज्ञी समान स्थितिबंध जहां भया तहां क्रमतैं एकेंद्री समान बंध पचीसगुणा पचासगुणा सौगुणा हजारगुणा क्रमतैं जानना ॥ ३४० ॥

तत्तो अणियट्टिस्स य अंतं पत्तो हु तत्थ उदधीणं ।
लक्खपुधत्तं बंधो से काले पुव्वकरणो हु ॥

तत: अनिवृत्तेश्च अंतं प्राप्तो हि तत्र उदधीनाम् ।
लक्षपृथक्त्वं बंधः स्वे काले अपूर्वकरणो हि ॥ ३४१ ॥

सं० टी०— ततोऽसंज्ञिपंचेंद्रियस्थितिबंधात्परं संख्यातसहस्रेषु स्थितिबंधोत्सरणेषु गतेषु अवतारकानिवृत्तिकरण-चरमसमयं प्राप्तः । तस्मिन् वीसियादिस्थितिबन्धः स्वस्वप्रतिभागगुणितः सागरोपमलक्षपृथक्त्वमात्रो भवति—
मो सा ल ७ । ४ तीसिय सा ल ७ । ३ वीसिय सा ल ७ । २ तदनंतरसमये अयमवतारकोऽपूर्वकरणो जातः ३४१
८ । ७ ८ । ७ ८ । ७

अथापूर्वकरणे संभवद्विशेषमाह—

सं० च०— तहां पीछैं असंज्ञी समानबंधतैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंधोत्सरण भए उतरनेवाला अनिवृत्तिकरणके अंत समयकौं प्राप्त भया । तहां मोह वीसीय तीसीयनिका क्रमतैं पृथक्त्व लक्ष सागरनिका च्यारि सातवां भाग अर तीन सातवां भाग अर दोय सातवां भागमात्र स्थितिबंध हो है। बहुरि ताके अनंतरि समयविषै उतरने वाला अपूर्व करण भया ॥ ३४१ ॥

उवसामणा णिधत्ती णिकाचणुग्घाडिदाणि तत्थेव ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चदुतीसदुगाणं च य बंधो अद्धापवत्तो य ॥

उपशामना निधत्तिः निकाचना उद्घटितानि तत्रैव ।
चतुस्त्रिंशद्द्विकानां च च बंधो अधाप्रवृत्तः च ॥

सं० टी०— तस्मिन्नवतारकापूर्वकरणे प्रथमसमयादारभ्य अप्रशस्तोपशमनकरणं निधत्तिकरणं निकाचनकरणं च युगपदेवोद्घाटितानि भवंति तत्कालस्य सप्तभागीकृतस्य प्रथमभागे हास्यरतिभयजुगुप्सानां चतुःप्रकृतीनां बंधको जातः । ततोऽवतीर्य तत्कालद्वितीयभागे तीर्थकरत्वादित्रिंशत्प्रकृतीनां बंधको जातः । ततस्तत्कालषष्ठभागचरमसमयादारभ्य निद्राप्रचलयोर्बंधो भवति ततः संख्यातसहस्रस्थितिबंधोत्सरणेषु गतेषु अवतारकापूर्वकरणचरमसमये

४
३०
०
०
०
२

वीसियादिस्थितिबन्धः स्वस्वप्रतिभागगुणितः सागरोपमकोटिलक्षपृथक्त्वमात्रो भवति—

मो सा को ल	७ । ४ ८ । ७
ती सा को ल	७ । ३ ८ । ७
वी सा को ल	७ । २ ८ । ७

सर्वकर्मणां गुणश्रेणी गलितावशेषायामा अद्य यावत्प्रवृत्ता तदनंतरसमये ततोवतीर्याप्रमत्तगुणस्थाने विशुद्धेरनंतगुणसंभवहानिवशेनाधःप्रवृत्तकरणपरिणामं प्राप्नोति ॥ ३४२ ॥ अथावतारकाप्रमत्तस्याधःप्रवृत्तकरणपरिणामप्रथमसमये गुणश्रेणिविशेषप्रदर्शनार्थमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० च०— ताके प्रथम समयतैं लगाय अप्रशस्तोपशम करण अर निधत्ति करण अर निष्काचन करण ए युगपत उघाडे प्रगट कीए इनिका लक्षण पूर्वैं कह्या ही था। बहुरि अपूर्व करण कालके सात भाग कीएं तहां प्रथम भागविषै हास्य रति भय जुगुप्सा इन च्यारि प्रकृतिनिका दूसरे भाग विषै तीर्थंकरादि तीस प्रकृतिनिका छठा भागका अंत समयतैं लगाय निद्रा प्रचलाका बंध हो है। बहुरि तातैं संख्यात हजार स्थिति बंधोत्सरण भएं उतरनेवाला अपूर्व करणका अंत समयविषैं मोह तीसीय वीसीयानिका क्रमतैं पृथक्त्व लक्ष कोटि सागरनिका च्यारि सातवां भाग तीन सातवां भाग दोय सातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है। सर्व कर्मनिकी गुणश्रेणी गलितावशेष आयाम लीए इहां पर्यंत वर्तै है। ताके अनंतरि समयविषैं उतरि अप्रमत्त गुणस्थान विषैं अधःकरण परिणामकौं प्राप्त हो है॥ ३४२॥

पढमो अधापवत्तो गुणसेढिमवट्ठिदं पुराणादो।
संखगुणं तच्चंतोमुहुत्तमेत्तं करेदी हु॥ ३४३॥

प्रथमोऽधाप्रवृत्तः गुणश्रेणीमवस्थितां पुराणात्।
संख्यगुणं तच्च अंतर्मुहूर्तमात्रं करोति हि॥ ३४३॥

सं० टी०— अथावतारकापूर्वकरणचरमसमये अपकृष्टद्रव्यात् संख्येयगुणहीनं द्रव्यमपकृष्य अवतारकसूक्ष्मसांपरायप्रथमसमयारब्धात् पौराणिकगुणश्रेण्यायामात् संख्यातगुणायाममवस्थितगुणश्रेणिनिक्षेपमवतारकाप्रमत्तः अधःप्रवृत्तकरणप्रथमसमये करोति। विशुद्धिहान्यापकृष्टद्रव्यहानिः गुणश्रेण्यायामः संख्येयगुणोऽप्यंतर्मुहूर्तमात्र एव नाधिकः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

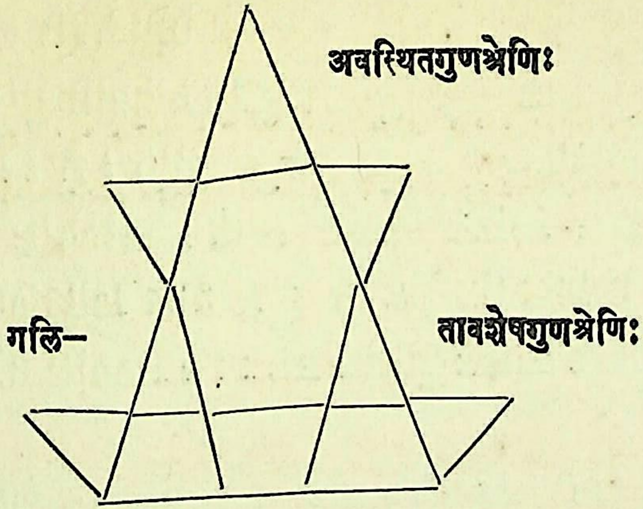

॥ ३४३ ॥ अथ पुराणगुणश्रेण्यनुवादार्थमाह—

स० चं०— ताका प्रथम समयविषै उतरनेवाला अपूर्व करणका अंत समयविषै जेता द्रव्य अपकर्षण कीया तातैं असंख्यातगुणा घटता द्रव्यकौं अपकर्षणकरि गुणश्रेणि करै है। सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषै जाका प्रारंभ भया ऐसा पुराणा गुणश्रेणिका आयामतैं संख्यातगुणा है तौ भी अंतर्मुहूर्त्तमात्र याका अवस्थित आयाम जानना। इहां विशुद्धता की हानि होनेतैं गुणश्रेणिविषै द्रव्यका प्रमाण घटि गया आयामका प्रमाण बधि गया है ॥ ३४३ ॥

ओदरसुहुमादीदो अपुव्वचरिमोत्ति गलिदसेसे व।
गुणसेढी णिक्खेवो सट्ठाणे होदि तिट्ठाणं ॥ ३४४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवतरसूक्ष्मादितो अपूर्वचरम इति गलितशेषो वा।
गुणश्रेणी निक्षेपः स्वस्थाने भवति त्रिस्थानं॥ ३४७॥

सं० टी०— अवतारकसूक्ष्मसांपरायप्रथमसमयादारभ्यावतारकापूर्वकरणचरमसमयपर्यंतं ज्ञानावरणादिकर्मणां गुणश्रेण्यायामो गलितावशेषमात्र एव नावस्थितः प्रवृत्तः। अयं तु विशेषः—मोहनीयस्यावतारकसूक्ष्मसांपरायप्रथमसमयात्प्रभृति कियंतमपि कालमवस्थितिस्वरूपेण गुणश्रेणिनिक्षेपो भूत्वा ततः परं गलितावशेषायामेन ज्ञानावरणादिकर्मगुणश्रेण्यायामसदृशो जात इति त्रिषु स्थानेषु वृद्ध्यावस्थितिगुणश्रेण्यायामदर्शनात्। तत्कथं ? अवतारकसूक्ष्मसांपरायकाले सर्वत्रावस्थितिस्वरूपेण, स्पर्धकगतलोभाकर्षणे एकवारवृद्ध्या बादरलोभवेदकाद्धापर्यंतमवस्थितस्वरूपेण, पुनर्मायापकर्षणे द्वितीयवारवृद्ध्या मायावेदककालपर्यंतमवस्थितस्वरूपेण, ततः परं मानापकर्षणे तृतीयवारवृद्ध्या मानवेदककालपर्यंतमवस्थितस्वरूपेण, एवं त्रिषु स्थलेषु गुणश्रेण्यायामः प्रवृत्तः। ततः परं क्रोधापकर्षणे चतुर्थवारवृद्ध्या गुणश्रेण्यायामः, अवतारकापूर्वकरणचरमसमयपर्यंतं गलितावशेषमात्र एवागतः। इदानीं पुनरधःप्रवृत्तकरणप्रथमसमये ज्ञानावरणादिकर्मणां गुणश्रेण्यायामः पुराणगुणश्रेण्यायामात् संख्यातगुणितोऽवस्थितिस्वरूपोऽतर्मुहूर्तपर्यंतं प्रवर्तत इत्यर्थः। अधःप्रवृत्तकरणाद्धामात्रमंतर्मुहूर्तं प्रतिसमयमेकांतेन विशुद्ध्यनंतगुणहान्याऽवतीर्य स्वस्थानाप्रमत्तसंयतो भवति। तस्य च संक्लेशविशुद्धिवशेन वृद्धिहान्यवस्थानलक्षणं स्थानत्रयं गुणश्रेण्यायामस्य संभवति॥ ३४४॥ अथ तत्स्थानत्रयविषयविभागं प्रदर्शयति——

स० चं—उतरनेवाला सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयतैं लगाय अपूर्व करणका अंतसमय पर्यंत ज्ञानावरणादिकनिका गुणश्रेणि आयाम है सो गलितावशेष है अवशेष अवस्थित नाही है। इतना विशेष—सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयतैं लगाय केते इक काल मोहका गुणश्रेणि आयाम अवस्थित हो है। पीछैं और कर्मनिका गुणश्रेणि आयामके समान मोहका भी गुणश्रेणि आयाम गलितावशेष हो है। जातैं तीन स्थाननिविषै बंधिकरि अवस्थित गुणश्रेणि आयाम हो है। सो कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उतरनेवाला सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयतैं लगाय अवस्थित आयाम ही है। बहुरि स्पर्धक रूप वादर लोभका द्रव्यके अपकर्षणविषै एकवार गुणश्रेणि आयाम बंधिकरि वादर लोभ वेदक काल पर्यंत अवस्थित रहै है। बहुरि मायाके द्रव्यका अपकर्षणविषै दूसरीबार बंधिकरि मायाका वेदक काल पर्यंत अवस्थित गुणश्रेणि आयाम रहै है। बहुरि मानके द्रव्यका अपकर्षणविषै तीसरीबार बंधिकरि मानका वेदक काल पर्यंत अवस्थित गुणश्रेणि आयाम रहै है। ऐसैं तीनबार अवस्थित गुणश्रेणि आयाम हो है। बहुरि चौथीबार क्रोधका अपकर्षणविषै बंधिकरि अपूर्व करणका अंत पर्यंत अन्य कर्मनिके समान मोहका भी गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम आया। बहुरि अधःप्रवृत्त करणका प्रथम समयतैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत पुराना गुणश्रेणि आयामतैं संख्यातगुणा ज्ञानावरणादि कर्मनिका अवस्थित गुणश्रेणि आयाम प्रवर्तै है। अधःप्रवृत्त करणका जेता अंतर्मुहूर्त काल है तितना कालविषै समय समय एकांतपनैं अनंतगुणी घाटि विशुद्धताकरि उतरि पीछैं स्वस्थान अप्रमत्त हो है॥ ३४४॥

सट्ठाणे तावदियं संखगुणूणं तु उवरि चडमाणे।
विरदाविरदाहिमुहे संखेज्जगुणं तदो तिविहं॥ ३४५॥

स्वस्थाने तावत्कं संख्यगुणोनं तु उपरि चटमाने।
विरताविरताभिमुखे संख्येयगुणं ततः त्रिविधं॥ ३४५॥

सं० टी०—प्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानयोः स्वस्थानसंयतो भूत्वा वृद्धिहानिभ्यां विनाऽवस्थितं गुणश्रेण्यायामं (गलं)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करोति । विरताविरतगुणस्थानाभिमुखः सन् संक्लेशवशेन प्राक्तनगुणश्रेण्यायामात् संख्यातगुणं गुणश्रेण्यायामं करोति । पुनः स एव यदि परावृत्त्योपशमकक्षपकश्रेण्यारोहणाभिमुखो भवति तदा विशुद्धिवशेन प्राक्तनगुणश्रेण्यायामात् संख्यातगुणहीनं गुणश्रेण्यायामं करोति । एवं गुणश्रेण्यायामस्य वृद्धिहान्यवस्थानलक्षणं स्थानत्रयं व्याख्यातं ॥ ३४५ ॥ अथावतारकाप्रमत्तस्याधःप्रवृत्तकरणे संक्रमसंभवविशेषं प्रदर्शयति—

स० चं०— तहां प्रमत्त वा अप्रमत्त गुणस्थानविषै स्वस्थान संयत होइ वृद्धि हानि रहित अवस्थित गुणश्रेणि आयाम करै है। बहुरि सोई जीव जो विरताविरत पंचम गुणस्थानकौं सन्मुख होइ तौ संक्लेशताकरि पूर्वै गुणश्रेणि आयामतैं संख्यातगुणा बंधता गुणश्रेणि आयाम करै है। अर पलटिकरि उपशम वा क्षपकश्रेणी चढनेकौं सन्मुख होइ तो विशुद्धताकरि तिस गुणश्रेणि आयामतैं संख्यातगुणा घटता गुणश्रेणि आयाम करै है। ऐसैं स्वस्थान संयमीकैं गुणश्रेणिकी वृद्धि हानि अवस्थित रूप तीन स्थान कहे ॥ ३४५ ॥

करणे अधापवत्ते अधापवत्तो दु संकमो जादो ।
विज्झादमबंधाणे णट्ठो गुणसंकमो तत्थ ॥ ३४६ ॥

करणे अधःप्रवृत्ते अधःप्रवृत्तस्तु संक्रमो जातः ।
विध्यातमबंधने नष्टो गुणसंक्रमस्तत्र ॥ ३४६ ॥

सं० टी०— अवतारकाधःप्रवृत्तकरणे बन्धवतामथाप्रवृत्तसंक्रमो जातः । अबंधानां विध्यातसंक्रमः । तत्र गुणसंक्रमो विनष्ट एव ॥ ३४६ ॥ अथ द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकालप्रमाणं गाथाद्वयमाह—

स० चं— उतरनेवाला अधःप्रवृत्त करणविषैं जिनि प्रकृतिनिका बंध पाइए तिनकैं तो अथाप्रवृत्त नामा संक्रम भया, इनका अन्य प्रकृतिविषै संक्रम होनेविषै अधःप्रवृत्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नामा भागहार संभवै है। बहुरि जिनका बंध न पाइए तिनकैं विध्यात संक्रमण पाइए है। इनका अन्य प्रकृतिविषै संक्रम होनेविषै विध्यात नामा भागहार संभवै है अर गुण संक्रमका नाश ही भया। इनका स्वरूप पूर्वैं कह्या है सो जानना ॥ ३४६ ॥

चडणोदरकालादो पुव्वादो पुव्वगोत्ति संखगुणं।

कालं अधापवत्तं पालदि सो उवसमं सम्मं ॥

चटनावतरकालतोऽपूर्वात् अपूर्वक इति संख्यगुणं।

कालं अधःप्रवृत्तं पालयति स उपशमं सम्यं ॥ ३४७ ॥

सं० टी०– द्वितीयोपशमसम्यक्त्वेनोपशमकश्रेण्यामारूढस्यापूर्वकरणप्रथमसमयादारभ्य ततोऽवतीर्णापूर्वकरणचरमसमयपर्यंतं यावत्कालस्ततः संख्येयगुणं कालमंतर्मुहूर्तप्रमितं, अधःप्रवृत्तकरणेन स हि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वमनुपालयति ॥ ३४७ ॥

स० चं०– द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सहित जीव चढतैं अपूर्व करणका प्रथम समयतैं लगाय उतरतैं अपूर्व करणका अंत समय पर्यंत जितना काल भया तातैं संख्यातगुणा ऐसा अंतर्मुहूर्तमात्र द्वितीयोपशम सम्यक्त्वका काल है। सो इस काल पर्यंत अधःप्रवृत्त करण सहित इस द्वितीयोपशम सम्यक्त्वकौं पालै है ॥ ३४७ ॥

तस्सम्मत्तद्धाए असंजमं देससंजमं वापि।

गच्छेज्जावलिछक्के सेसे सासणगुणं वापि ॥ ३४८ ॥

४३७

तत्सम्यक्त्वाद्धायां असंयमं देशसंयमं वापि।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गत्वावलिषट्के शेषे सासनगुणं वापि ॥ ३४८ ॥

सं० टी०— तस्य द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकाले अधःप्रवृत्तकरणकालं नीत्वा पुनरप्रत्याख्यानावरणकषायोदयात् असंयमपरिणाममपि गच्छेत् । प्रत्याख्यानावरणकषायोदयाद्देशसंयममपि वा गच्छेत् । अथवा असंयमं प्राप्य तत्रांतर्मुहूर्तं स्थित्वा पश्चाद्देशसंयमं क्रमेण गच्छेत् । देशसंयमं प्राप्य तत्रांतर्मुहूर्तं स्थित्वा पश्चादसंयमं वा क्रमेण गच्छेत् । एवं क्रमेणोभयप्राप्तेः प्रवचने कथितत्वात् । अथवा तदुपशमसम्यक्त्वकालस्यावलिकषट्केऽवशिष्टेऽनंतानुबंधिकषायान्यतमोदयात्सासादनगुणस्थानमपि गच्छेत् ॥ ३४८ ॥ अथ द्वितीयोपशमसम्यक्त्वात्सासादनगुणप्राप्तस्य संभवद्विशेषमाह—

स० चं— तिस ही द्वितीयोपशम सम्यक्त्वका कालविषै अधःप्रवृत्त करण कालकौं समाप्तकरि अप्रत्याख्यानके उदयतैं असंयमकौं प्राप्त होइ तौ चौथे गुणस्थान आवै है । अथवा प्रत्याख्यानके उदयतैं देश संयमकौं प्राप्त होइ तौ पांचवे गुणस्थान आवै अथवा असंयत होइ तहां अंतर्मुहूर्त्त तिष्ठि देश संयम होइ अथवा देश संयत होइ तहां अंतर्मुहूर्त्त तिष्ठि असंयत होइ अथवा तिस कालविषै छह आवली अवशेष रहैं अनंतानुबंधी क्रोधादिविषै किसीका उदयतैं सासादनकौं भी प्राप्त होइ ॥ ३४८ ॥

जदि मरदि सासणो सो णिरयातिरक्खं णरं ण गच्छेदि ।
णियमा देवं गच्छदि जइवसहमुणिंदवयणेण ॥

यदि म्रियते सासनः स निरयातिर्यञ्चं नरं न गच्छति ।
नियमात् देवं गच्छति यतिवृषभमुनींद्रवचनेन ॥ ३४९ ॥

सं० टी०— यदि स उपशमश्रेणितोऽवतीर्णः सासादनः स्वायुःक्षयवशान्म्रियते तदा नरकगतिं तिर्यग्गतिं मनुष्यगतिं च नियमेन न गच्छति किंतु देवगतिं गच्छति । एवमुपशमश्रेणीतोऽवतीर्णस्य सासादनगुणप्राप्तेः । तस्य म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रणं गतिविशेषश्च कषायप्राभृताख्यद्वितीयसिद्धांतव्याख्याने यतिवृषभाचार्यस्य वचनप्रामाण्येन भणितं ॥ ३४९ ॥

अथ तत्सासादनस्य गतित्रयगमने कारणमाह—

स० चं–उपशम श्रेणीतैं उतर्या जो सासादन जीव सो आयु नाशतैं मरै तौ नारक तिर्यंच मनुष्य गतिकौं प्राप्त न होइ नियमतैं देवगति हीकौं प्राप्त होइ। ऐसैं उपशम श्रेणीतैं उतर्या जीवकैं सासादन गुणस्थानकी प्राप्ति वा ताके मरण होनेका विशेष कह्या है सो कषाय प्राभृत नामा दूसरा महाधवल शास्त्रविषै यतिवृषभ नामा आचार्य प्रतिपादन किया है। ताके अनुसारि इहां कथन कीया है॥ ३४९ ॥

णरतिरियक्खणराउगसत्तो सक्को ण मोहमुवसमिदुं।
तम्हा तिसुवि गदीसु ण तस्स उप्पज्जणं होदि॥

नरकतिर्यग्नरायुष्कसत्त्वः शक्यो न मोहमुपशमयितुम्।
तस्मात् त्रिष्वपि गतिषु न तस्य उत्पादो भवति॥ ३५०॥

सं० टी— नरकतिर्यग्मनुष्यायुःसत्त्वसहितो जीवश्चारित्रमोहनीयमुपशमयितुं न शक्तः तत्सत्त्वेन देशसंयमसकलसंयमयोः प्राप्त्यभावात्। तस्मात्कारणात्तत्सासादनस्य तिसृष्वपि गतिषूत्पादो नास्ति। इदं सर्वं बद्धपरभवायुष उपशमश्रेणिमारुह्यावतीर्णस्य भणितं। अबद्धपरभवायुषः तच्छ्रेणिमारुह्यावरूढस्य सासादनस्य मरणमेव न संभवति ३५०

अथोपशमश्रेण्यामवतीर्णस्य सासादनत्वप्राप्त्यभावमाचार्यांतराभिप्रायेण भणति—

स० चं– नारक तिर्यंच मनुष्य आयुका सत्त्व सहित जीव चारित्रमोह उपशमावनेकौं समर्थ नाहीं जातैं नरक तिर्यंच मनुष्यायुका सत्व सहित जीवकैं देश संयम वा सकल संयमकी भी प्राप्तिका अभाव है। तातैं उपशम श्रेणीतैं उतर्या सासादनकैं देव विना अन्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीन गतिनिमैं उपजना न हो है। बहुरि पूर्वें आयु जाकै बंध्या होइ तिस ही उपशम श्रेणीतैं उतरया सासादनका मरण हो है। अबद्धायुका न हो है ॥ ३५० ॥

उवसमसेढीदो पुण ओदिण्णो सासणं ण पाउणदि।
भूदवलिणाहणिम्मलसुत्तस्स फुडोवदेसेण ॥ ३५१ ॥

उपशमश्रेणीतः पुनरवतीर्णः सासनं न प्राप्नोति।
भूतवलिनाथनिर्मलसूत्रस्य स्फुटोपदेशेन ॥ ३५१ ॥

सं० टी०— उपशमश्रेणीतोऽवतीर्णः सासादनत्वं न प्राप्नोत्येव। तत्प्राप्तिकारणानंतानुबंधिकषायोदयस्यासंभवात्, पूर्वमेवानंतानुबंधिचतुष्टयं द्वादशकषायस्वरूपेण परिणमय्य पश्चादुपशमश्रेणिमारूढस्य तत्सत्त्वाभावात्। इदं सर्वं भूतवलिमुनिनाथप्रोक्ते महाकर्मप्रकृतिप्राभृतार्थप्रथमस्थितिगोचरे प्रथमसिद्धांते निर्मलस्य पूर्वापरविरोधादिरहितस्य सूत्रस्य स्फुटोपदेशेनास्माभिर्निश्चितं ॥ ३५१ ॥ अथोपशमश्रेण्यारूढद्वादशपुरुषप्रक्रियाभेदप्रदर्शनार्थं द्वादशगाथाः प्ररूपयति—

स० चं– उपशम श्रेणीतैं उतरया जीव सासादनकौं प्राप्त न होइ जातैं पूर्वैं अनंतानुबंधीका विसंयोजनकरि उपशम श्रेणी चढ्या है ताकै अनंतानुबंधीका उदय न संभवै है। ऐसैं भूतवलि नामा मुनिनाथ ताका कह्या जो महाकर्म प्रकृति प्राभृत नामा पहला धवल शास्त्र तिसविषै पूर्वापर दोष रहित निर्मल प्रगट उपदेश है ताकरि हम निश्चय कीया है। ॥ ३५१ ॥ आगैं उपशम श्रेणी चढनेवाले बारह प्रकार जीव हैं तिनकी क्रियाविषै विशेष है सो कहैं हैं—

पुंकोधोदयचलियस्सेसाह परूवणा हु पुंमाणे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मायालोभे चलिदस्सात्थि विसेसं तु पत्तेयं ॥

पुंक्रोधोदयचटितस्य शेषा अथ प्ररूपणा हि पुंमाने ।
मायालोभे चटितस्यास्ति विशेषं तु प्रत्येकं ॥ ३५२ ॥

सं० टी०— पुंवेदसंज्वलनक्रोधोदयसहितस्योपशमश्रेणिमारूढस्य पूर्वोक्ता सर्वापि प्ररूपणा भवति । पुंवेदसंज्वलनमानोदयेन पुंवेदसंज्वलनमायोदयेन पुंवेदसंज्वलनलोभोदयेन चोपशमश्रेणिमारूढानां प्रत्येकं प्रक्रियाविशेषोऽस्ति ॥ ३५२ ॥ तद्यथा—

स० चं— पूर्वैं कही जो सर्व प्ररूपणा सो पुरुषवेद अर क्रोध कषाय सहित उपशम श्रेणी चढनेवाले जीवकी कही है । बहुरि पुरुषवेद अर संज्वलन मान वा माया वा लोभ सहित उपशम श्रेणी चढनेवालोंकैं क्रिया विशेष है ॥ ३५२ ॥ सोई कहिए है—

दोण्हं तिण्ह चउण्हं कोहादीणं तु पढमठिदिमित्तं ।
माणस्स य मायाए वादरलोहस्स पढमठिदी ॥

द्वयोः त्रयाणां चतुर्णां क्रोधादीनां तु प्रथमस्थितिमात्रम् ।
मानस्य च मायाया बादरलोभस्य प्रथमस्थितिः ॥ ३५३ ॥

सं० टी०— संज्वलनक्रोधमानमायालोभानां मध्ये पुंक्रोधोदयेनारूढस्य द्वयोः क्रोधमानयोर्यावन्मात्री प्रथमस्थितिस्तावन्मात्री पुंमानोदयेनारूढस्य मानप्रथमस्थितिर्भवति—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

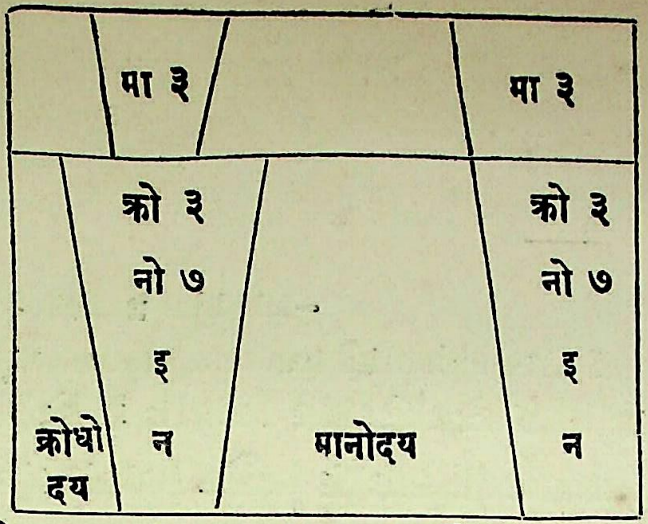

तथा पुंक्रोधोदयारूढस्य क्रोधमानमायासंज्वलनानां त्रयाणां संपिंडिता प्रथमस्थितिर्यावन्मात्री पुंमायोदयारूढस्य संज्वलनमायाप्रथमस्थितिर्भवति ।

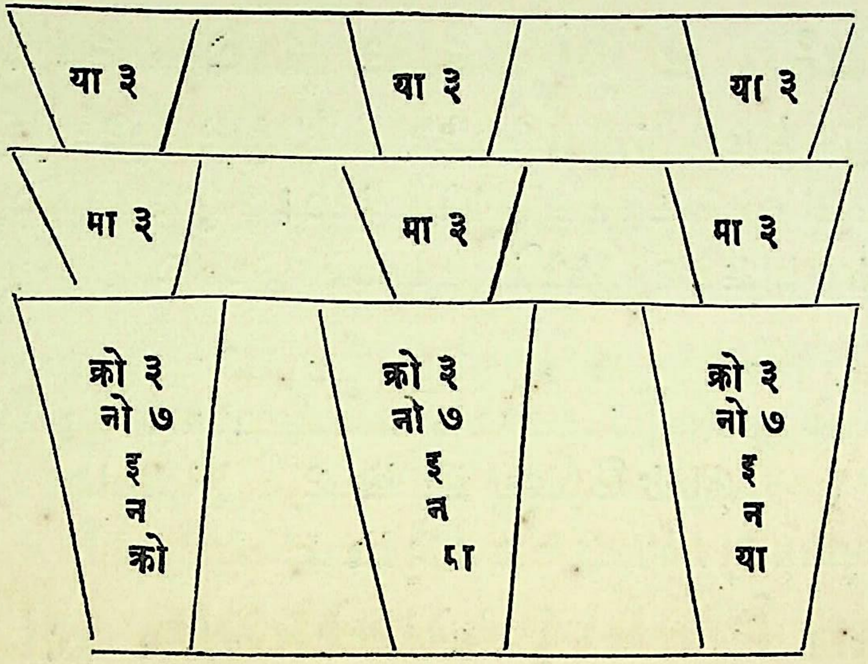

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथा पुंक्रोधोदयारूढस्य संज्वलनक्रोधमानमायालोभानां समुदिता यावन्मात्री पुंलोभोदयेनारूढस्य संज्वलनबादरलोभस्य प्रथमस्थितिर्भवति।

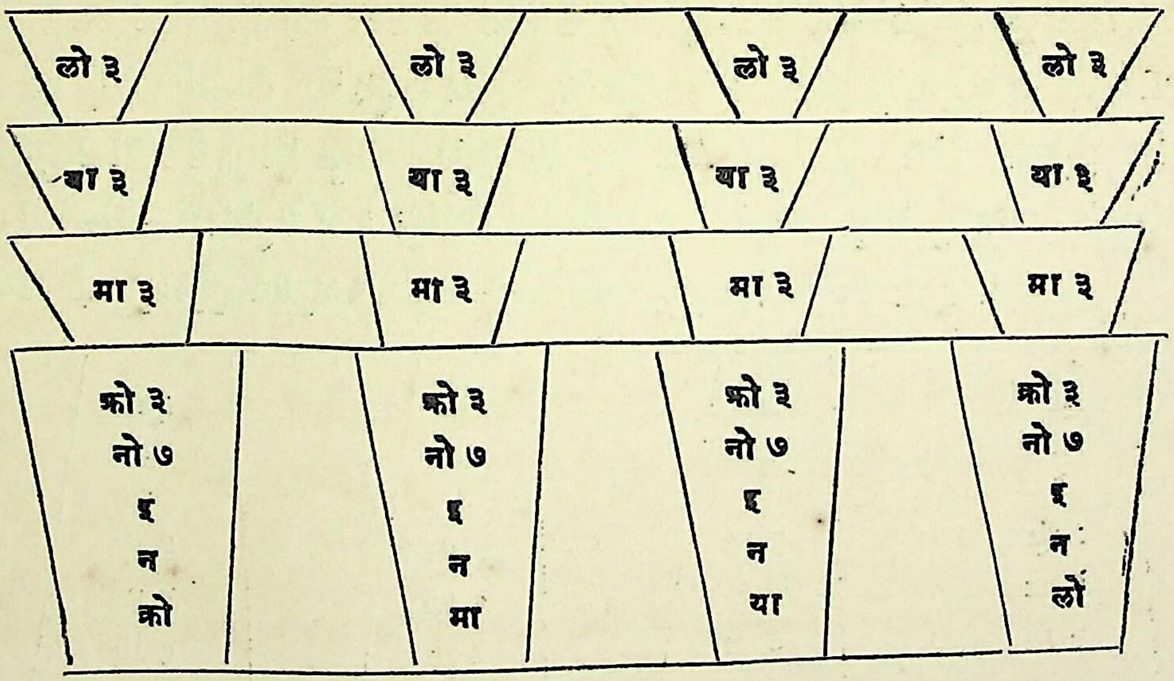

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर्णामुदयैः श्रेण्यारूढानां सर्वेषां सूक्ष्मलोभप्रथमस्थितिः समानैव।

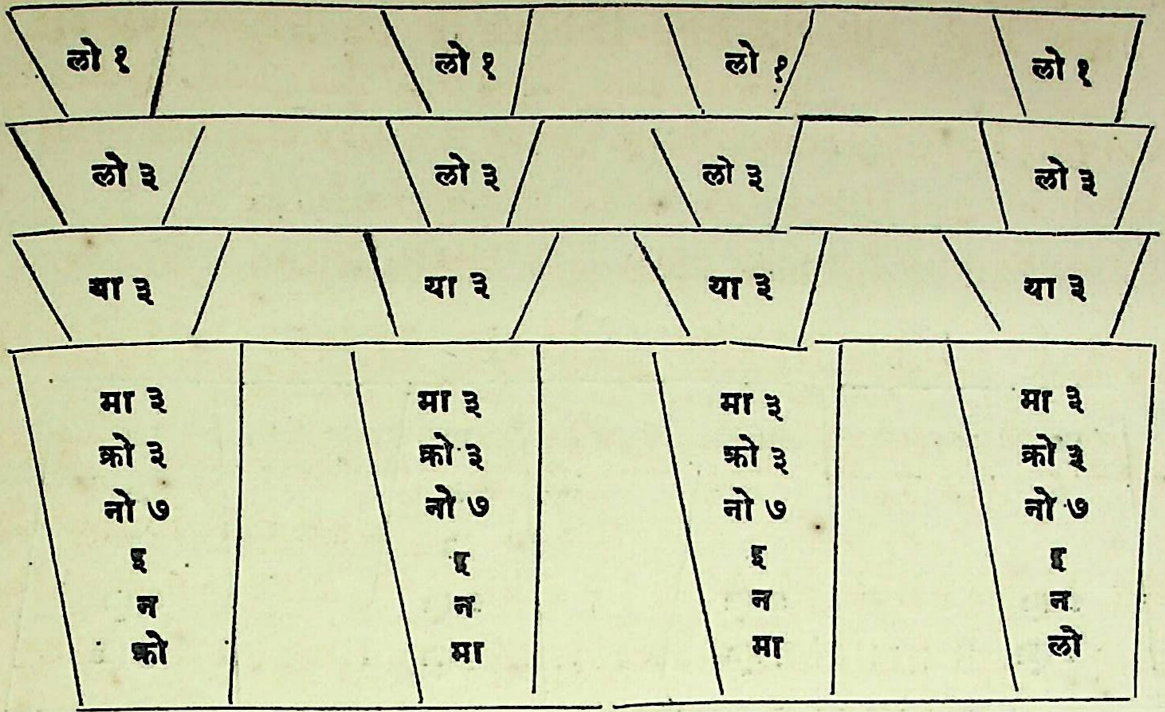

तथा नपुंसकवेदस्त्रीवेदसप्तनोकषायाणामुपशमनकालश्चतुर्णां समान एव ॥ ३५३ ॥

सं० च०—पुरुषवेद अर क्रोधका उदय सहित चढ्या जीवकी क्रोध अर मानकी प्रथम स्थिति मिलाई हुई जेती होइ तितनी मानका उदय सहित चढ्या जीवकैं मानकी प्रथम स्थिति हो है। भावार्थ—जो क्रोध सहित श्रेणी चढनेवालेकैं तौ पाहिलैं क्रोधका उदय हो है। पीछैं मानका उदय हो है। अर मानका उदय सहित श्रेणी चढ्याकैं क्रोधका उदय न हो है मानका ही उदय हो है। ताकैं तिन दोऊनिका उदय कालके समान याकैं मानका उदय काल ४४४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है इस वास्तैं तिनि दोऊनिकी प्रथम स्थिति समान याकैं मानकी प्रथम स्थिति कही है। ऐसैं ही आगैं समझना। बहुरि क्रोधका उदय सहित चढ्या जीवकैं क्रोध अर मान अर मायाकी प्रथम स्थिति मिलाई हुई जेती होइ तितनी मायाका उदय सहित चढ्या जीवकैं लोभकी प्रथम स्थिति हो है। इहां ऐसा जानना—

क्रोधका उदय सहित श्रेणी चढ्याकैं तौ क्रमतैं च्यारयो कषायका उदय हो है। मान सहित चढ्याकैं क्रोध विना तीनका ही उदय हो है। माया सहित चढ्याकैं माया अर लोभका ही उदय है। लोभ सहित चढ्याकैं केवल लोभ हीका उदय हो है तातैं पूर्वोक्त प्रकार प्रथम स्थिति कही है। बहुरि च्यारयोविषै किसी कषायका उदय सहित चढै सर्व ही जीवनिका सूक्ष्म लोभकी प्रथम स्थिति समान है। अर तिनकैं नपुंसक स्त्रीवेद सात नोकषायनिका उपशमन काल समान है ॥ ३५३ ॥

जस्सुदयेणारूढो सेढीं तस्सेव ठविदि पढमठिदिं।
सेसाणावलिमेत्तं मोत्तूण करेदि अंतरं णियमा ॥

यस्योदयेनारूढो श्रेणिं तस्यैव स्थापयति प्रथमस्थितिः।
शेषाणामावलिमात्रं मुक्त्वा करोति अंतरं नियमात् ॥ ३५४ ॥

सं० टी०— यस्य वेदस्य कषायस्य वा उदयेन श्रेणीमारूढस्तस्य प्रथमस्थितिमंतर्मुहूर्तमात्रीं स्थापयित्वा शेषवेद-कषायाणां उदयरहितानामावलिमात्रीं मुक्त्वा उपर्यंतरं करोति ॥ ३५४ ॥

स० चं०— जिस वेद वा कषायका उदय करि जीव श्रेणी चढ्या होइ ताकी तौ अंतर्मुहूर्तमात्र प्रथम स्थिति स्थापै है। तिस प्रथम स्थितिके ऊपरिके निषेकनिका अंतर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करै है बहुरि उदय रहित वेद वा कषायनिकी आवलीमात्र स्थिति छोडि ताके ऊपरके नि-षेकानिका अंतर करै है ॥ ३५४ ॥

जस्सुदयेणारूढो सेढिं तक्कालपरिसमत्तीए।
पढमट्ठिदिं करेदि हु अणंतरुवरुदयमोहस्स ॥

यस्योदयेनारूढः श्रेणिं तत्कालपरिसमाप्तौ।
प्रथमस्थितिं करोति हि अनंतरोपर्युदयमोहस्य ॥ ३५५ ॥

सं॰ टी॰— यस्य कषायस्योदयेन श्रेणीमारूढः तत्कषायप्रथमस्थितौ समाप्तायां पुनरनन्तरोपरितनोदयवत् कषायस्य प्रथमस्थितिं करोति। तथाहि—

यथा पुंक्रोधोदयेन श्रेणीमारूढः संज्वलनक्रोधप्रथमस्थितावंतर्मुहूर्तमात्र्यां समाप्तायां पुनर्मानसंज्वलनस्य प्रथमस्थितिमंतर्मुहूर्तमात्रीं करोति। एवमुपर्यपि। तथा पुंमानोदयेन श्रेणीमारूढः संज्वलनमानस्थितावंतर्मुहूर्तमात्र्यां समाप्तायां पुनः संज्वलनमायाप्रथमस्थितिमंतर्मुहूर्तमात्रीं करोति। एवमुपर्यपि। तथा पुंमायोदयेन श्रेणीमारूढः संज्वलनमायाप्रथमस्थितावंतर्मुहूर्तमात्र्यां समाप्तायां पुनः संज्वलनलोभस्य प्रथमस्थितिमंतर्मुहूर्तमात्रीं करोति। एवमुपर्यपि। तथा पुंलोभोदयेन श्रेणीमारूढः संज्वलनलोभप्रथमस्थितावंतर्मुहूर्तमात्र्यां निष्ठितायां पुनः सूक्ष्मलोभस्य प्रथमस्थितिमंतर्मुहूर्तमात्रीं करोति ॥ ३५५ ॥

स॰ चं॰— जिस कषायका उदय सहित श्रेणी चढ्या है तिस कषायकी प्रथम स्थिति समाप्त भएं ताके अनंतरवर्ती कषायकी प्रथम स्थिति करै है। सोई कहिए है— क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीवकैं क्रोधकी प्रथम स्थितिका काल पूर्ण भएं पीछैं मानकी प्रथम स्थिति हो है। ऐसैं ही ऊपरि मायादिककी जाननी। बहुरि मान सहित चढ्या जीवकैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानकी प्रथम स्थिति समाप्त भएं पीछैं मायाकी प्रथम स्थिति हो है ऐसैं ही ऊपरि जानना। बहुरि माया सहित चढ्या जीवकैं मायाकी प्रथम स्थिति पूर्ण भएं पीछैं लोभकी प्रथम स्थिति करै है। ऐसैं ही उपरि जाननी। बहुरि लोभ सहित श्रेणी चढ्याकैं लोभकी प्रथम स्थिति भएं पीछैं सूक्ष्म लोभकी प्रथम स्थिति हो है॥ ३५५॥

माणोदएण चडिदो कोहं उवसमदि कोहअद्धाए।
मायोदएण चडिदो कोहं माणं सगद्धाए॥ ३५६॥

मानोदयेन चटितः क्रोधं उपशमयति क्रोधाद्धायाम्।
मायोदयेन चटितः क्रोधं मानं स्वकाद्धायाम्॥ ३५६॥

सं० टी०—पुंक्रोधोदयेनारूढस्य या संज्वलनक्रोधोदयाद्धा तस्यामेव पुंमानोदयेन श्रेण्यारूढः उदयरहितक्रोधत्रयमुपशमयति। तथा पुंमायोदयेनारूढः उदयरहितं क्रोधत्रयं मानत्रयं च पुंक्रोधोदयारूढस्य क्रोधप्रथमस्थितौ मानप्रथमस्थितौ चोपशमयति॥ ३५६॥

स० चं०— क्रोधका उदय सहित चढ्या जीवकैं जो क्रोधके उदयका काल है तिस काल विषै ही मानका उदय सहित चढ्या जीव उदय रहित तीन क्रोधनिकौं उपशमावै है। बहुरि तैसैं ही मायाका उदय सहित चढ्या जीव उदय रहित तीन क्रोध अर तीन मानका क्रमतैं क्रोध सहित चढ्या जीवकैं जो क्रोधकी प्रथम स्थिति अर मानकी प्रथम स्थितिका काल है तिस कालविषै ही उपशमावै है॥ ३५६॥

लोभोदएण चडिदो कोहं माणं च मायमुवसमदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्पप्पण अद्धाणे ताणं पढमट्ठिदी णत्थि ॥३५७॥

लोभोदयेन चटितः क्रोधं मानं च मायामुपशमयति ।
आत्मात्मनः अध्वाने तेषां प्रथमस्थितिर्नास्ति ॥ ॥ ३५७ ॥

सं० टी०–पुंलोभोदयेनारूढः उदयरहितं क्रोधत्रयं मानत्रयं मायात्रयं च पुंक्रोधोदयारूढस्य यथासंख्यं क्रोधप्रथमस्थितौ मानप्रथमस्थितौ मायाप्रथमस्थितौ चोपशमयति । तेषां क्रोधमानमायानां प्रथमस्थितिर्नास्त्युदयरहितत्वात् ॥३५७॥

स० चं०– लोभका उदय सहित चढ्या जीव है सो उदय रहित तीन क्रोध तीन मान तीन माया तिनकौं क्रोध सहित चढ्या जीवकैं जो क्रोधकी अर मानकी अर मायाकी प्रथम स्थितिका काल है तिस कालविषै क्रमतैं उपशमावै है । अर याकैं तिन क्रोधादिकानि की प्रथम स्थितिका अभाव है जातैं लोभ सहित चढ्या जीवकैं क्रोधादिकानिका उदय न पाइए है ॥ ३५७ ॥

माणोदयचडपडिदो कोहोदयमाणमेत्तमाणुदओ ।
माणतियाणं सेसे सेससमं कुणदि गुणसेढी ॥३५८॥

मानोदयचटपतितः क्रोधोदयमानमात्रमानोदयः ।
मानत्रयाणां शेषे शेषसमं करोति गुणश्रेणीं ॥ ३५८ ॥

सं० टी०— पुंमानोदयेन श्रेणिमारुह्य पतितस्य मानोदयकालः क्रोधोदयारूढस्य क्रोधमानोदयकालप्रमितः । स मानोदयारूढपतितस्त्रिविधं मानमपकृष्य ज्ञानावरणादिगुणश्रेणेरायामसमानं गलितावशेषायामेन गुणश्रेणिं करोति । मायोदयारूढपतितस्य मायोदयकालः क्रोधोदयारूढस्य क्रोधमानमायोदयकालप्रमितः । स मायोदयारूढपतितस्त्रिविध- मायामपकृष्य ज्ञानावरणादिगुणश्रेण्यायामसमेन गलितावशेषायामेन गुणश्रेणिं करोति । लोभोदयारूढपतितस्य लोभो- ४४९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दयकालः क्रोधोदयारूढस्य क्रोधमानमायालोभोदयकालमात्रः स लोभोदयारूढपतितस्त्रिविधलोभमपकृष्य ज्ञानावरणादिगुणश्रेण्यायामसमेन गलितावशेषायामेन गुणश्रेणिं करोति ॥ ३५८ ॥

स० चं०– मानका उदय सहित श्रेणी चढ पड्या जो जीव ताकैं क्रोध उदय सहित चढ्या जीवकैं क्रोध मानका उदय काल मिलाया हूवा जितना होइ तितना मानका उदय काल है। ऐसैं ही माया उदय सहित चढ्या पड्या जीवकैं क्रोध सहित चढ्याकैं क्रोध मान मायाके उदयका जितना काल होइ तितना मायाका उदय काल है। लोभ उदय सहित चढ्या पड्या जीवकैं क्रोध सहित चढ्याकैं जितना क्रोध मान माया लोभका उदय काल होइ तितना एक लोभ हीका उदय काल हो है। बहुरि मान माया सहित चढिकरि पडे जीव क्रमतैं मान माया लोभका द्रव्यकौं अपकर्षणकरि ज्ञानावरणादिकनिकी गुणश्रेणि आयामके समान गलितावशेष आयामकरि गुणश्रेणि करै है। भावार्थ यहु– मानका उदय सहित चढि जो जीव पड्या ताकैं क्रमतैं लोभ मानका उदय होइ। तहां मानका उदय भएं मोहका गुणश्रेणि आयाम और कर्मनिके समान करै है। जातैं याकैं क्रोधका उदय होना नाहीं। ऐसैं ही माया सहित चढ्या पड्याकैं लोभका उदय आया पीछैं मायाका उदय आए अर लोभका उदय सहित चढि पड्याकैं लोभ हीका उदय है तातैं पहलैं ही अन्य कर्मनिके समान मोहका गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम हो है ॥ ३५६ ॥

माणादितियाणुदये चडपाडिये सगसगुदयसंपत्ते ।
णवछत्तिकसायाणं गलिदवसेसं करेदि गुणसेढी ॥ ४४१

मानादित्रयाणामुदये चटपतिते स्वकस्वकोदयसंप्राप्ते ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवषट्त्रिकषायाणां गलितावशेषां करोति गुणश्रेणिं ॥ ३५९ ॥

सं० टी०— मानमायालोभोदयैरारूढपतितः स्वस्वकषायोदयं संप्राप्तः यथासंख्यं नवषट्त्रिकषायाणां गलितावशेषायामं पूर्वोक्तप्रकारेण गुणश्रेणिं करोति ॥ ३५९ ॥

स० चं— मान माया लोभका उदय सहित चढ्या पड्या जीव हैं ते अपनी अपनी कषायका उदयकौं प्राप्त होत संते क्रमतैं नव कषायनिकी अर छह कषायनिकी अर तीन कषायनिकी पूर्वोक्त प्रकार गलितावशेष आयाम गुणश्रेणि करै हैं। भावार्थ यहु— जैसैं क्रोधका उदय सहित चढि पड्या जीव क्रोधका उदय आएं बारह कषायनिका पूर्वोक्त प्रकार गलितावशेष आयाम लीएं गुणश्रेणि करै है तैसैं मानका उदय सहित चढि पड्या जीव मानका उदय आएं क्रोध विना नव कषायनिका करै है। माया सहित चढि पड्या जीव मायाका उदय भएं लोभ मायारूप छह कषायनिका करै है। लोभ सहित चढि पड्या जीव लोभका उदय आएं तीन प्रकार लोभ हीका अन्य कर्मनिके समान गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम करै है॥ ३५९ ॥

जस्सुदएण य चडिदो तम्हि य उक्कट्टियम्हि पडिऊण।
अंतरमाऊरेदि हु एवं पुरिसोदए चडिदो॥ ३६० ॥

यस्योदयेन च चटितः तस्मिंश्च अपकर्षिते पतित्वा।
अंतरमापूरयति हि एवं पुरुषोदये चटितः॥ ३६० ॥

सं० टी०— यस्य कषायस्योदयेन श्रेणिमारुह्य पतितः तस्मिन् कषायेऽपकृष्टेऽतरमापूरयति। एवमुक्तप्रकारेण पुंवेदोदयेन श्रेण्यारूढावरूढो व्याख्यातः॥ ३६० ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– जिस कषायका उदय साहित चढि पड्या होइ तिस ही कषायका द्रव्यका अपकर्षण होत संतै अंतरकौं पूरै है। नष्ट कीए निषेकनिका सद्भाव करै है। भावार्थ यहु–जैसैं क्रोध साहित चढि पड्या जीव क्रोधका उदय आएं द्रव्यकौं अपकर्षणकरि अंतरकौं पूरै है तैसैं मान सहित चढि पड्या जीव मानका उदय आएं अर माया सहित चढि पड्या जीव मायाका उदय आएं अर लोभ सहित चढि पड्या जीव लोभका उदय आएं प्रथम समयविषै द्रव्यकौं अपकर्षणकरि जे अंतर करणविषै निषेक नष्ट कीए थे तिनविषै द्रव्यका निक्षेपणकरि तिनका सद्भाव करै है। इसप्रकार पुरुषवेद साहित क्रोधादियुक्त श्रेणि चढने उतरनेवालाका व्याख्यान जानना ॥ ३६० ॥

थी उदयस्स य एवं अवगदवेदो हु सत्तकम्मंसे।
सममुवसामदि संढस्सुदए चडिदस्स वोच्छामि ॥

स्त्री–उदयस्य च एवं अपगतवेदो हि सप्तकर्मांशान्।
सममुपशमयति षंढस्योदये चटितस्य वक्ष्यामि ॥ ३६१ ॥

सं० टी०— स्त्रीवेदोदयेन सहितैः क्रोधादिकषायोदयैः श्रेणिमारूढः, अपगतवेदोदयः सन्नेव सप्तनोकषायान् युगपदुपशमयति। अवशिष्टं सर्वमुपशमनविधानं पुंवेदारूढवद्द्रष्टव्यं ॥ ३६१ ॥ अथ षंढोदयारूढस्य विशेषं वक्ष्यामि—

स० चं– स्त्रीवेदयुक्त क्रोधादिकनिका उदय सहित श्रेणी चढया च्यारि प्रकार जीव है सो वेद उदय रहित होत संता पुरुषवेद अर छह हास्यादिकनिका इन सात नोकषायनिकौं युगपत् उपशमावै है। अन्य सर्व विधान पुरुषवेदका उदय सहित श्रेणी चढ्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवके समान जानना ॥ ३६१ ॥ अब नपुंसक वेदका उदय सहित श्रेणी चढ्याकैं विशेष है ताहि कहस्यों—

संढुदयंतरकरणो संढद्धाणम्हि अणुवसंतेसे ।
इत्थिस्स य अद्धाए संढं इत्थिं च समगमुवसमादि ॥

षंढोदयांतरकरणः षंढाद्धायां अनुपशांतांशे ।
स्त्रियः च अद्धायां षंढं स्त्रीं च समकमुपशमयति ॥ ३६२ ॥

सं० टी०— नपुंसकवेदोदयेन सहितैः क्रोधादिकषायैः श्रेण्यारूढो नपुंसकवेदस्यांतरं कुर्वाणः प्रथमस्थितिंपुंवेदोदयारूढस्य नपुंसकस्त्रीवेदोपशमनकालमात्रीं स्थापयित्वा प्रागेव नपुंसकवेदोपशमनं प्रारभ्य पुंवेदारूढनपुंसकोपशमनकालपर्यंतं गच्छति नाद्यापि नपुंसकवेदोपशमनं समाप्तं । ततः स्त्रीवेदोपशमनं प्रारभ्य द्वावपि वेदावुपशमयन् पुंवेदारूढस्य स्त्रीवेदोपशमनकालमात्रमंतर्मुहूर्तं गत्वा ॥ ३६२ ॥

स० चं०— नपुंसक वेद युक्त क्रोधादिकानिका उदय सहित श्रेणी चढ्या च्यारि प्रकार जीव सो नपुंसक वेदका अंतर करत संता पुरुषवेद सहित चढ्या जीवकैं नपुंसक वेद स्त्रीवेदकौं उपशम करनेका जितना काल है तावन्मात्र नपुंसक वेदकी प्रथम स्थितिकौं स्थापै है । स्थापिकरि पुरुष वेद सहित चढ्या जीवकैं नपुंसकवेदकैं उपशमनकाल जो पाइए है ताका अंतपर्यंत कालकौं नपुंसक वेदकौं उपशमावता संता प्राप्त भया परि याकैं नपुंसक वेदका उपशम समाप्त न भया । तहां पीछैं स्त्रीवेद नपुंसकवेद इनि दोऊनिका युगपत् उपशम करने लगा । तहां पुरुषवेद सहित चढ्या जीवकैं स्त्री वेदके उपशम करनेका जो काल तिस काल कौं प्राप्त होइ कहा सो कहैं हैं ॥ ३६२ ॥ ४५२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताहे चरिमसवेदो अवगदवेदो हु सत्तकम्मंसे ।
सममुवसामदि सेसा पुरिसोदयचलिदभंगा हु ॥

तस्मिन् चरमसवेदो अवगतवेदो हि सप्तकर्मांशान् ।
सममुपशमयति शेषाः पुरुषोदयचालितभङ्गा हि ॥ ३६३ ॥

सं० टी०— तदा चरमसमयसवेदः स्त्रीनपुंसकवेदोपशमनं निष्ठापयति । ततः परमपगतवेदः सप्तनोकषायान् सममुपशमयति । शेषं सर्वं पुंवेदारूढप्रकारेण ज्ञातव्यं ॥ ३६३ ॥ अथोपशमश्रेण्यामल्पबहुत्वपदकथनप्रतिज्ञामाह–

स० चं०—तहां सवेद अवस्थाका अंत समयकौं प्राप्त होता संता स्त्री वेद नपुंसकवेदके उपशमनकौं युगपत् समाप्त करै है। तातैं परैं अवगतवेदी होत संता पुंवेद अर छह हास्यादिक इन सात नोकषायनिकौं युगपत् उपशमावै है। अन्य सर्व पुरुषवेद सहित श्रेणी चढ्या जीवकैं समान विधान जानना ॥ ३६३ ॥

पुंकोहस्स य उदए चलपालिदेऽपुव्वदो अपुव्वोत्ति ।
एदिस्से अद्धाणं अप्पाबहुगं तु वोच्छामि ॥ ३६४ ॥

पुंक्रोधस्य च उदये चटपतितेऽपूर्वतः अपूर्व इति ।
एतस्य अद्धानामल्पबहुकं तु वक्ष्यामि ॥ ३६४ ॥

सं० टी०— पुंक्रोधोदयारूढावरूढस्यारोहकापूर्वकरणप्रथमसमयात्प्रभृति अवरोहकापूर्वकरणचरमसमयपर्यंते काले संभवाल्पबहुत्वपदानि वक्ष्यामि ॥ ३६४ ॥ अथ तान्येवाल्पबहुत्वपदानि व्याख्यातुं सप्तविंशतिगाथाः प्ररूपयति–

स० चं०— पुरुषवेद अर क्रोध कषायका उदय सहित चढ्या पड्या जीवकैं आरोहक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपूर्व करणका प्रथम समयतैं लगाय अवरोहक अपूर्व करणका अंत समय पर्यंत कालविषैं संभवते जे अल्पबहुत्वके स्थान तिनकौं कहौंगा। इहां श्रेणी चढनेवालाका नाम तो आरोहक जानना। उतरनेवालाका नाम अवरोहक जानना। बहुरि जहां विशेष अधिक है तहां पूर्वतैं किछु अधिक जानना। ऐसी संज्ञा है॥ ३६४॥

अवरादो वरमहियं रसखंडुक्कीरणस्स अद्धाणं।
संखगुणं अवराट्ठिदिखंडस्सुक्कीरणो कालो॥ ३६५॥

अवरात् वरमधिकं रसखंडोत्करणस्याध्वानम्।
संख्यगुणं अवरास्थितिखंडस्योत्करणः कालः॥ ३६५॥

सं० टी०— सर्वतः स्तोका जघन्यानुभागकांडकोत्करणाद्धा २१ ज्ञानावरणादिकर्मणामारोहकसूक्ष्मसांपरायचरमानुभागकांडकोत्करणाद्धा मोहनीयस्यांतरकरणे क्रियमाणे तत्र चरमानुभागकांडकोत्करणाद्धा च जघन्या कथ्यते। १। तत उत्कृष्टानुभागखंडोत्करणाद्धा विशेषाधिका २१ साप्यारोहकापूर्वकरणप्रथमसमये सर्वकर्मणां भवति। २। ततो ज्ञानावरणादिकर्मणां जघन्यस्थितिकांडकोत्करणकालः सूक्ष्मसांपरायचरमसमयसंभवी अनिवृत्तिकरणचरमसमयसंभवी मोहनीयस्य जघन्यस्थितिबन्धकालश्च संख्यातगुणौ २१४ परस्परं समानौ ३॥ ३६५॥

स० चं०— सर्वतैं स्तोक जघन्य अनुभागकांडकोत्करणका काल अंतर्मुहूर्तमात्र है सो यहु ज्ञानावरणादि कर्मनिका तौ आरोहक सूक्ष्म सांपरायके अंतका अनुभाग कांडकोत्करण जानना अर मोहका अंतर करत संता अंतका अनुभाग कांडकोत्करण जानना। तातैं उत्कृष्ट अनुभागकांडकोत्करण काल विशेष अधिक है सो यहु सर्व कर्मनिका आरोहक अपूर्वकरणका प्रथम समय विषैं संभवै है २। तातैं सूक्ष्म सांपरायका अंत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समयविषैं संभवता ऐसा ज्ञानावरणादि कर्मनिका जघन्य स्थिति कांडकोत्करण काल अर अनिवृत्तिकरणका अंत समयविषैं संभवता ऐसा मोहनीयका जघन्य स्थिति बंध पडै सो काल संख्यात गुणे हैं। अर ते दोऊ परस्पर समान हैं ३ ॥ ३६५ ॥

पडणजहण्णट्ठिदिबंधद्धा तह अंतरस्स करणद्धा।
जेट्ठट्ठिदिबंधाठिदीउक्कीरद्धा य अहियकमा॥ ३६६॥

पतनजघन्यस्थितिबंधाद्धा तथा अंतरस्य करणाद्धा।
ज्येष्ठस्थितिबंधास्थित्युत्करणाद्धा च अधिकक्रमाः ॥ ३६६ ॥

सं० टी०— तस्मादवतारकसूक्ष्मसांपरायप्रथमसमये ज्ञानावरणादिकर्मणा जघन्यस्थितिबन्धकालः अवतारकानिवृत्तिकरणप्रथमसमये मोहनीयस्य जघन्यस्थितिबन्धकालश्च विशेषाधिकौ परस्परं समानौ २ ७। ४। ४ एतस्माद्दंतरकरणकालो विशेषाधिकः २ ७। ४ ननु पूर्वमेकस्थितिकांडकोत्करणकालसमानः अंतरकरणकाल इत्युक्तं। इदानीं विशेषाधिक इत्युच्यते कथने पूर्वापरविरोधः इति चेन्न मध्यमस्थितिकांडकोत्करणकालेनांतरकरणकालस्य समानत्ववचनात्। ५। तस्माद्दंतरकरणकालादारोहकापूर्वकरणप्रथमसमयसंभविनौ उत्कृष्टस्थितिबंधकाल उत्कृष्टस्थितिकांडकोत्करणकालश्च विशेषाधिकौ २ ७ ४ परस्परं समानौ। ६। ॥ ३६६ ॥

स० चं०— तातैं अवरोहक सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषैं संभवता ज्ञानावरणादि कर्मनिका जघन्यस्थिति बंधापसरण काल अर अवरोहक अनिवृत्तिकरणका प्रथम समयविषैं संभवता मोहका जघन्यस्थिति बंधापसरणकाल विशेष अधिक है ते दोऊ परस्पर समा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न हैं ४। तातैं अंतर करण करनेका काल विशेष अधिक है।

इहां कोऊ कहै— पूर्वै स्थितिकांडकोत्करण कालकै समान अंतरकरण काल कह्या था इहां अधिक कैसैं कहो हो ? ताका समाधान—पूर्वै तहां संभवता जो मध्य स्थिति कांडकोत्करण काल ताके समान अंतर करण काल कह्या था इहां जघन्य स्थिति कांडकोत्करण कालतैं अधिक कह्या है। ५। तातैं आरोहक अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं संभवता ऐसा उत्कृष्ट स्थितिबंध काल कहिए जेते काल समानरूप उत्कृष्ट स्थितिबंध होइ ऐसा स्थितिबंधापसरण काल अर उत्कृष्ट स्थिति कांडकोत्करणकाल विशेष अधिक है ते दोऊ परस्पर समान हैं ॥ ३६६ ॥

सुहमंतिमगुणसेढी उवसंतकसायगस्स गुणसेढी।
पडिवदसुहुमद्धावि य तिण्णिवि संखेज्जगुणिदकमा ॥

सूक्ष्मांतिमगुणश्रेणी उपशांतकषायकस्य गुणश्रेणी।
प्रतिपतत्सूक्ष्माद्धापि च तिस्रोपि संख्येयगुणितक्रमाः ॥ ३६७ ॥

सं० टी०— तत आरोहकसूक्ष्मसांपरायचरमसमयसंभविगलितावशेषो गुणश्रेण्यायामः संख्यातगुणः—
। ।।।   । ।।।
२ ७ृ। ४। ४। ७ तत उपशांतकषायस्य प्रथमसमये आरब्धगुणश्रेण्यायामः संख्यातगुणः २ ७ृ। ४। ४। ४। ८
। ।।।
ततः प्रतिपतत्सूक्ष्मसांपरायकालः २ ७। ४। ४। ४। ४। ९ ॥ ३६७ ॥

स० चं०— तातैं अवरोहक सूक्ष्म सांपरायका अंत समयविषैं संभवता ऐसा गलिता-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वशेष गुण श्रेणी आयाम संख्यात गुणा है। ७। तातैं उपशांतकषायका प्रथम समयविषैंआ-रंभ्या ऐसा गुणश्रेणि आयाम संख्यात गुणा है। ८। तातैं पडनेवाला सूक्ष्मसांपरायका काल संख्यात गुणा है। ९॥ ३६७॥

तग्गुणसेढी अहिया चलसुहुमो किट्टिउवसमद्धा य।
सुहुमस्स य पढमठिदी तिण्णिवि सरिसा विसेसहिया॥

तद्गुणश्रेणी अधिका चलसूक्ष्मः कृष्ट्युपशमाद्धा च।
सूक्ष्मस्य च प्रथमस्थितिः तिस्रोपि सदृशा विशेषाधिकाः॥ ३६८॥

सं० टी०— तस्मात्प्रतिपतत्सूक्ष्मसांपरायस्य संज्वलनलोभगुणश्रेण्यायामः आवलिमात्रेण विशेषाधिकः २ ७ (१) । १० तत आरोहकसूक्ष्मसांपरायकालः सूक्ष्मकृष्ट्युपशमनकालः सूक्ष्मसांपरायप्रथमस्थित्यायामश्च विशेषाधिकाः २ ७ (१) परस्परं समानाः। अत्र विशेषप्रमाणमंतर्मुहूर्तमात्रं ११। ॥ ३६८॥

स० चं०— तातैं पडनेवाला सूक्ष्मसांपरायकैं लोभका गुणश्रेणि आयाम आवलीमात्र विशेष करि अधिक है। १०। तातैं आरोहक सूक्ष्मसांपरायका काल अर सूक्ष्मकृष्टि उपशमावनेका काल अर सूक्ष्म सांपरायका प्रथम स्थिति आयाम यथासंभव अंतर्मुहूर्तमात्र विशेषकरि अधिक है। ए तीनौं परस्पर समान हैं। ११॥ ३६८॥

किट्टीकरणद्धहिया पडबादरलोभवेदगद्धा हु।
संखगुणा तस्सेव य तिलोहगुणसेढिणिक्खेओ॥ ३६९॥

५८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिकरणाद्धाधिका पतद्बादरलोभवेदकाद्धा हि।
संख्यगुणं तस्यैव च त्रिलोभगुणश्रेणिनिक्षेपः ॥ ३६९ ॥

१।।

सं० टी०— ततः सूक्ष्मकृष्टिकरणकालो विशेषाधिकः २ ७ अयं चानिवृत्तिकरणकालस्य किंचिन्न्यूनत्रिभागमात्रः २ ७ १/३ – । १२ । ततः पतद्बादरसांपरायस्य बादरलोभवेदककालः संख्यातगुणः २ ७ २/३ । १३ । ततः पतदनिवृत्तिकरणस्य लोभत्रयगुणश्रेणिनिक्षेपः आवलिमात्रेणाधिकः २ ७ । २/३ । १४ ॥ ३६९ ॥

स० चं— तातैं सूक्ष्म कृष्टि करनेका काल विशेष अधिक है। सो यहु अनिवृत्ति करण कालका किंचित् न्यून त्रिभाग मात्र है।१२। तातैं पडने वाले वादर सूक्ष्म सांपरायके बादर लोभ वेदकका काल संख्यात गुणा है।१३। तातैं पडने वाले अनिवृत्ति करणके तीन लोभकी गुणश्रेणीका आयाम आवलीमात्र अधिक है। १४ ॥ ३६९ ॥

चडबादरलोहस्स य वेदगकालो य तस्स पढमठिदी।
पडलोहवेदगद्धा तस्सेव य लोहपढमठिदी ॥ ३७० ॥

चटबादरलोभस्य च वेदककालश्च तस्य प्रथमस्थितिः।
पतल्लोभवेदकाद्धा तस्यैव च लोभप्रथमस्थितिः ॥ ३७० ॥

॥

सं० टी०— तस्मादारोहकानिवृत्तिकरणस्य बादरलोभवेदककालोऽन्तर्मुहूर्तमात्रेणाधिकः २ ७ । २/३ । १५ । तत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥।

आरोहकानिवृत्तिकरणस्य बादरलोभप्रथमस्थित्यायामो विशेषाधिकः २ ७ । २ । १६ । ततः पतद्बादरलोभवेदककालो
२ १

विशेषाधिकः २ ७ । १७ । ततोऽवतारकस्य लोभप्रथमस्थित्यायामः आवलिमात्रेणाधिकः २ ७ । १८ ॥ ३७० ॥

स०चं-तातैं आरोहक अनिवृत्ति करणकैं बादरलोभका वेदक काल अंतर्मुहूर्तकरि आधिक है १५ तातैं आरोहक अनिवृत्ति करणकैं बादर लोभका प्रथम स्थितिका आयाम विशेष अधिक है ।१६। तातैं पडनेवालाकैं बादर लोभका वेदक काल विशेष अधिक है ।१७। तातैं उतरनेवालेकैं लोभकी प्रथम स्थितिका आयाम आवलीमात्र अधिक है । १८ ॥ ३७० ॥

तम्मायावेदद्धा पडिवडछण्हंपि खित्तगुणसेढी ।
तम्माणवेदगद्धा तस्स णवण्हंपि गुणसेढी ॥ ३७१ ॥

तन्मायावेदकाद्धा प्रतिपतत्षण्णामपि क्षिप्तगुणश्रेणी ।
तन्मानवेदकाद्धा तस्य नवानामपि गुणश्रेणी ॥ ३७१ ॥

१ ।

सं० टी०— ततः पतन्मायावेदककालोऽन्तर्मुहूर्तमात्रेणाधिकः २ ७ । १९ । ततः प्रतिपतन्मायावेदकस्य षण्णां क-
१ ।। १ ।।।

षायाणां गुणश्रेण्यायामः आवलिमात्रेणाधिकः । २ ७ । २० । ततः प्रतिपतन्मानवेदककालोंतर्मुहूर्तेनाधिकः २ ७
१ ।।।।

२१ । ततस्तस्यैव नवानां कषायाणां गुणश्रेण्यायामः आवलिमात्रेणाधिकः २ ७ २२ ॥ ३७१ ॥

स०चं-तातैं पडनेवालेकैं मायावेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है।१९। तातैं पडनेवाले माया ४५९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदकके छह कषायनिका गुणश्रेणी आयाम आवली करि अधिक है।२०। तातैं पडनेवालेकैं मान वेदक काल अंतर्मुहूर्तकरि अधिक है। २१ तातैं तिसहीकैं नव कषायनिका गुण श्रेणी आयाम आवलीकरि अधिक है। २२ ॥ ३७१ ॥

चडमायावेदद्धा पढमट्ठिदिमायउवसमद्धा य।
चलमाणवेदगद्धा पढमट्ठिदिमाणउवसमद्धा य ॥

चटमायावेदाद्धा प्रथमस्थितिमायाउशमाद्धा च।
चटमानवेदकाद्धा प्रथमस्थितिमानोपशमाद्धा च ॥ ३७२ ॥

सं० टी०— तत आरोहकमायावेदककालोंऽतर्मुहूर्तेनाधिकः २ ७ । २३ ततस्तन्मायाप्रथमस्थित्यायाम उच्छि-
१___
ष्टावलिमात्रेणाधिकः २ ७ २४ । ततो मायोपशमनकालः समयोनावलिमात्रेणाधिकः २ ७ २५ । तत आरोहकमान-
१|
वेदककालोंऽतर्मुहूर्तमात्रेण विशेषाधिकः २ ७ २६ । ततस्तत्प्रथमस्थित्यायामः आवलिमात्रेणाधिकः २ ७ २७ । तत-
१|| १|||
स्तन्मानोपशमनकालः समयोनावलिमात्रेणाधिकः २ ७ । २८ ॥ ३७२ ॥
१||||

स० चं–तातैं चढनेवालेकैं माया वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है। २३। तातैं तिसकैं मायाकी प्रथम स्थितिका आयाम उच्छिष्टावलीकरि अधिक है। २४। तातैं मायाके उपशमावनेका काल समय घाटि आवलीमात्र अधिक है। २५। तातैं चढनेवालेकैं मान वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है। २६। तातैं ताकी प्रथम स्थितिका आयाम आवली मात्र अधिक है। २७। तातैं ताकैं मान उपशमावनेका काल समय घाटि आवली मात्र अधिक है। २८ ॥ ३७२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोहोवसामणद्धा छप्पुरिसित्थीण उवसमाणं च ।
खुद्दुभवगहणं च य अहियकमा एक्कवीसपदा ॥

क्रोधोपशामनाद्धा षद्पुरुषस्त्रीणामुपशमानां च ।
क्षुद्रभवग्रहणं च च आधिकक्रमाणि एकविंशपदानि ॥ ३७३ ॥

सं० टी०— ततः क्रोधोपशमनकालोऽन्तर्मुहूर्तमात्रेणाधिकः २ ७ २९ । ततः षएणोकषायोपशमनकालो विशेषाधि-
।　　　　　　　　　　　　　　॥
कः २ ७ ३० । ततः पुंवेदोपशमनकालः समयोनद्व्यावलिमात्रेणाधिकः २ ७ । ३१ । ततः स्त्रीवेदोपशमनकालोऽन्त-
॥।
र्मुहूर्तमात्रेणाधिकः २ ७ ३२ । ततो नपुंसकवेदोपशमनकालोऽन्तर्मुहूर्तमात्रेणाधिकः २ ७ ३३ । ततः क्षुद्रभवग्रहणं वि-
शेषाधिकं १ । ३४ ॥ ३७३ ॥
१८

स० चं०— तातैं क्रोधके उपशमावनेका काल अंतर्मुहूर्तकरि अधिक है ॥ २९॥ तातैं छह नोकषायनिके उपशमावनेका काल विशेष अधिक है ।३०। तातैं पुरुषवेदके उपशमावनेका काल समयघाटि दोय आवलीकरि अधिक है । ३१ । तातैं स्त्रीवेद उपशमावनेका काल अंतर्मुहूर्तकरि अधिक है । ३२ । तातैं नपुंसकवेद उपशमावनेका काल अंतर्मुहूर्तकरि अधिक है ३३ । तातैं क्षुद्रभवका काल विशेष अधिक है सो यहु एक उश्वासके अठारहे भागमात्र है ३४ ॥ ३७३ ॥

उवसंतद्धा दुगुणा तत्तो पुरिसस्स कोहपढमठिदी । ४६१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहोवसामणद्धा तिण्णिवि अहियक्कमा होंति ॥

उपशांताद्धा द्विगुणा ततः पुरुषस्य क्रोधप्रथमस्थितिः ।
मोहोपशमनाद्धा त्रीण्यपि अधिकक्रमाणि भवंति ॥ ३७४ ॥

सं० टी०— तत उपशांतकषायकालो द्विगुणः १।२।३५ । ततः पुंवेदस्य प्रथमस्थित्यायामो विशेषाधिकः २ ७ (१८ ॥) ३६ । ततः संज्वलनक्रोधप्रथमस्थित्यायामः किंचिन्न्यूनत्रिभागमात्रेणाधिकः २ ७ (॥) । ३७ । ततो मोहनीयस्योपशमनकालः नपुंसकवेदोपशमनप्रारम्भात् प्रभृति मानमायालोभोपशमनकालैः साधिकः २ ७ ॥ ३८ ॥

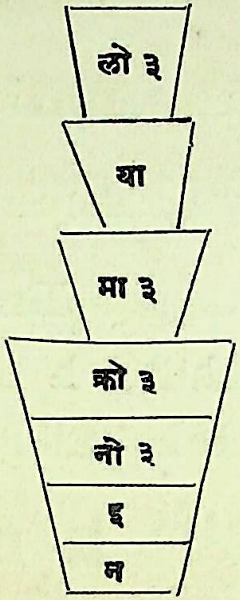

॥ ३७४ ॥

स० चं०—तिस क्षुद्रभवतैं उपशांत कषायका काल दूणा है। तातैं पुरुषवेदकी प्रथम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

स्थितिका आयाम विशेष अधिक है । ३६ । तातैं संज्वलन क्रोधकी प्रथम स्थितिका आयाम किंचित न्यून त्रिभाग मात्रकरि अधिक है ।३७। तातैं सर्व मोहनीयका उपशमावनेका काल है सो नपुंसक वेदके उपशमावनेका प्रारम्भतैं लगाय मान माया लोभका उपशम कालनिकरि साधिक है। ३८ ॥ ३७४ ॥

पडणस्स असंखाणं समयपबद्धाणुदीरणाकालो ।
संखगुणो चडणस्स य तक्कालो होदि अहिया य ॥

पतनस्यासंख्यानां समयप्रबद्धानामुदीरणाकालः ।
संख्यगुणः चटनस्य च तत्कालो भवत्याधिकश्च ॥ ३७५ ॥

सं० टी०—ततः पततोऽसंख्यातसमयप्रबद्धोदीरणाकालः संख्येयगुणः २ ७ ४ । ३९ । तत आरोहकस्यासंख्येयसमयप्रबद्धोदीरणाकालोऽन्तर्मुहूर्तमात्रेण विशेषाधिकः २ ७ । ४ । ४० ॥३७५॥

स०च०– तातैं पडनेवालेकैं असंख्यात समयप्रबद्धकी उदीरणा होनेका काल संख्यात गुणा है ३९ । तातैं चढ़नेवालेकैं असंख्यात समयप्रबद्धका उदीरणा होनेका काल अंतर्मुहूर्त मात्र अधिक है। ४० । ३७५ ॥

पडणाणियट्टियद्धा संखगुणा चडणगा विसेसहिया ।
पडमाणा पुव्वद्धा संखगुणा चडणगा अहिया ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पतनानिवृत्त्यद्धा संख्यगुणा चटनका विशेषाधिका ।
पतंत्यापूर्वाद्धाः संख्यगुणाः चटनका अधिकाः ॥ ३७६ ॥

सं० टी०— पततोऽनिवृत्तिकरणकालस्ततः संख्येयगुणः २ ७ । ४ । ४ । ४१ । आरोहकानिवृत्तिकरणकालस्ततोंऽतर्मुहूर्तमात्रेण विशेषाधिकः २ ७ । ४ । ४ । ४२ । ततः पतदपूर्वकरणकालः संख्येयगुणः । २ ७ ७ । ४३ । तत आरोहकापूर्वकरणकालोंऽतर्मुहूर्तमात्रेणाधिकः २ ७ ७ । ४४ ॥ ३७६ ॥

स० च—तातैं पडनेवालेकैं अनिवृत्ति करणका काल संख्यातगुणा है ४१ । तातैं चडनेवालेकैं अनिवृत्ति करणका काल अंतर्मुहूर्तमात्र करि अधिक है । ४२ । तातैं पडनेवालकैं अपूर्व करणका काल संख्यातगुणा है ४३ । तातैं चडनेवालकैं अपूर्व करणका काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ४४ ॥ ३७६ ॥

पडिवडवरगुणसेढी चढमाणापुव्वपढमगुणसेढी ।
अहियकमा उवसामगकोहस्स य वेदगद्धा हु ॥

प्रतिपतद्वरगुणश्रेणी चटदपूर्वप्रथमगुणश्रेणी ।
अधिकक्रमा उपशामकक्रोधस्य च वेदकाद्धा हि ॥ ३७७ ॥

सं० टी०— ततः प्रतिपततः सूक्ष्मसांपरायप्रथमसमये प्रारब्धोत्कृष्टगुणश्रेण्यायामोंऽतर्मुहूर्तेनाधिकः २ ७ ७ ४५ । आरोहकापूर्वकरणप्रथमसमयगुणश्रेण्यायामस्ततोंऽतर्मुहूर्तेनाधिकः २ ७ ७ । ४६ । तत आरोहकस्य क्रोधवे-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दककाल: संख्येयगुण: २ ७ ७ । ४७ । अधःप्रवृत्तप्रथमसमयादारभ्य संज्वलनक्रोधवेदकत्वेनापूर्वकरणप्रथमसमयार-
ब्धगुणश्रेण्यायामात क्रोधवेदककालस्य संख्येयगुणत्वसंभवात् ॥ ३७७ ॥

स०चं०—तातैं पडनेवालेकैं सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषै आरंभ्या ऐसा उत्कृष्ट गुणश्रेणि आयाम सो अंतर्मुहूर्तकरि अधिक है ४५। तातैं चढनेवालेकैं अपूर्व करणका प्रथम समयविषैं जाका आरंभ भया ऐसा उत्कृष्ट गुणश्रेणि आयाम सो अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ४६ तातैं चढनेवालेकैं क्रोध वेदक काल संख्यातगुणा है जातैं याका आरंभ तो अधःकरण का प्रथम समयतैंही है अर गुणश्रेणी आयामका आरंभ अपूर्व करणके प्रथमसमयतैं है तातैं असंख्यात गुणापना संभवै है। ४७। ३७७॥

संजदअधापवत्तगगुणसेढी दंसणोवसंतद्धा।
चारित्तंतरिगठिदी दंसणमोहंतराठिदीओ॥ ३७८॥

संयताधःप्रवृत्तकगुणश्रेणी दर्शनोपशांताद्धा।
चारित्रांतरिकास्थिति: दर्शनमोहांतरास्थिति: ॥ ३७८ ॥

सं० टी०— ततः प्रतिपततः स्वस्थानाप्रमत्तसंयतस्य प्रथमसमयकृतगुणश्रेण्यायाम: संख्येयगुण: ४८ । ततो दर्शनमोहस्योपशांतावस्थाकाल: संख्येयगुण: । चारित्रमोहोपशमनात्पूर्वं पश्चाच्चाप्रमत्ताद्यसंयतकालपर्यंतं द्वितीयोपशमसम्यक्त्वानुपालनात् ४९ । ततश्चारित्रमोहांतरायाम: संख्येयगुण: ५० । ततो दर्शनमोहस्यांतरायाम: संख्येयगुण: ५१ ।

स० चं–तातैं पडनेवाला अप्रमत्त संयमीकैं प्रथम समयविषैं कीया गुण श्रेणि आयाम सो संख्यात गुणा है। ४८। तातैं दर्शन मोहका उपशम अवस्थाका काल संख्यात गुणा है जा·

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तैं चारित्र मोहके उपशमन कालतैं पीछे वा पहलैं अप्रमत्तादि असंयत पर्यंत द्वितीयोपशम सम्यक्त्वका सद्भाव करै है। ४९। तातैं चारित्र मोहका अंतर आयाम संख्यात गुणा है। ५०। तातैं दर्शन मोहका अंतर आयाम संख्यात गुणा है। ५१ ॥ ३७८ ॥

अवराजेट्ठाबाहा चडपडमोहस्स अवराठिदिबंधो।
चडपडतिघादिअवराट्ठिदिबंधंतोमुहुत्तो य ॥

अवराज्येष्ठाबाधा चटपतमोहस्य अवरस्थितिबंधः।
चटपतत्रिघात्यवरस्थितिबंधांतर्मुहूर्तश्च ॥ ३७९ ॥

सं० टी०— तत आरोहकसूक्ष्मसांपरायचरमसमये ज्ञानावरणादिबंधस्य जघन्याबाधा संख्येयगुणा, मोहनीयस्य पुनरारोहकानिवृत्तिचरमसमये जघन्याबाधा ग्राह्या ५२। ततोऽवरोहकापूर्वकरणचरमसमये सर्वकर्मणां स्थितिबंधस्योत्कृष्टाबाधा संख्येयगुणा २ ७ृ साऽप्यंतर्मुहूर्तप्रमिता एव ५३। तत आरोहकानिवृत्तिकरणचरम (प्रथम) समये मोहजघन्य स्थितिबंधः संख्येयगुणः, सोप्यंतर्मुहूर्त्तप्रमितएव ५४ ततोऽवरोहकानिवृत्तिप्रथमसमये मोहजघन्यस्थितिबंधः संख्येयगुणः स चारोहकस्थितिबंधादवरोहकस्थितिबंधस्य द्विगुणत्वसंभवाद् युक्त एव ५५। ततश्चारोहकसूक्ष्मसांपरायचरमसमये घातित्रयस्य जघन्यस्थितिबंधः संख्येयगुणः ५६। ततोऽवरोहकसूक्ष्मसांपरायप्रथमसमये घातित्रयस्य जघन्यस्थितिबंधः संख्येयगुणः स पूर्वस्माद्द्विगुण एव ५७। तत उत्कृष्टांतर्मुहूर्तः संख्येयगुणः २ ७ृ–१ ।५८। समयोनमुहूर्त उत्कृष्टांतर्मुहूर्त इति प्रतिपादनात्। अनेनांतदीपकपदेन इतः पूर्वपदानां सर्वेषामंतर्मुहूर्तमात्रत्वमेव सूचितं ॥ ३७९ ॥

स०चं-तातैं चढने वालेकैं सूक्ष्म सांपरायका अंत समय विषैं संभवता ज्ञानावरणादिकका अर अनिवृत्ति करणका अंत समयविषै संभवता मोहका स्थितिबंधकी जघन्य आबाधा सो संख्यात गुणी है। ५२। तातैं उतरनेवालेकैं अपूर्व करणका अंत समय विषैं संभवती सर्व कर्मनिका स्थितिबंधकी उत्कृष्ट आबाधा संख्यात गुणी है। ५३। तातैं चढ़ने वालेकैं अनिवृत्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

करणका प्रथम समयविषैं संभवता मोहका जघन्य स्थितिबंधका प्रमाण सो संख्यात गुणा है । ५४ । तातैं उतरनेवालेकैं अनिवृत्ति करणका प्रथम समय विषैं संभवता मोहका जघन्य स्थितिबंधका प्रमाण संख्यातगुणा है इहां संख्यातका प्रमाण दोय जानना ५५ तातैं चढनेवालेकैं सूक्ष्म सांपरायका अंत समय विषैं संभवता ऐसा तीन घातिया कर्मनिका जघन्य स्थिति बंध सो संख्यात गुणा है । ५६ । तातैं उतरने वालेकैं सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समय विषै संभवता तीन घातिया कर्मनिका जघन्य स्थितिबंध सो संख्यात गुणा है सो दूणा जानना । ५७ । तातैं उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त संख्यात गुणा है सो एक समय घाटि दोय घडी प्रमाण जानना । ५८ । इहां अंत दीपक न्यायकरि पूर्वैं जे सर्व काल कहे थे ते सर्व अंतर्मुहूर्त मात्र ही जानने । जातैं अंतर्मुहूर्तके भेद बहुत हैं ॥ ३७९ ॥

चडमाणस्स य णामागोदजहण्णट्ठिदीण बंधो य ।
तेरसपदासु कमसो संखेण य होंति गुणियकमा ॥

चटतः च नामगोत्रजघन्यस्थितीनां बंधश्च ।
त्रयोदशपदेषु क्रमशः संख्येन च भवंति गुणितक्रमाः ॥ ३८० ॥

सं० टी०— तत आरोहकस्य नामगोत्रयोर्जघन्यस्थितिबंधः संख्येयगुणः सोऽपि षोडशमुहूर्तमात्रः ५९ । स्वस्वबंधव्युच्छित्तिचरमसमये ग्राह्यः ॥ ३८० ॥

स०चं–तातैं चढनेवालेकैं नामगोत्रका जघन्य स्थितिबंध संख्यात गुणा है सो सोलह मुहूर्त मात्र है । ५९ । सो यहु जघन्य बंध अपनी अपनी व्युच्छित्तिका अंत समय विषै जानना ३८०

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चलतादियअवरबंधं पडणामागोदअवराठिदिबंधो ।
पडतादियस्स य अवरं तिण्णि पदा होंति अहियकमा ॥

चटतृतीयावरबंधं पतन्नामगोत्रावरास्थितिबंधः ।
पतत्तृतीयस्य च अवरं त्रीाणि पदानि भवंति अधिकक्रमाणि ॥ ३८१ ॥

सं० टी०— तत आरोहकस्य वेदनीयजघन्यस्थितिबंधो विशेषाधिकः । सोऽपि चतुर्विंशतिमुहूर्तमात्रः । ६० । ततः पततो नामगोत्रस्थितिबंधो विशेषाधिकः । सोऽपि द्वात्रिंशन्मुहूर्तमात्रः ६१ । ततः पततो वेदनीयजघन्यस्थितिबंधो विशेषाधिकः । सोऽप्यष्टचत्वारिंशन्मुहूर्तमात्रः ६२ ॥ ३८० ॥

स० चं–तातैं चढनेवालेकैं वेदनीयका जघन्य स्थितिबंध विशेष अधिक है सो चौईस मुहूर्तमात्र है ६० । तातैं पडनेवालेकैं नाम गोत्रका जघन्य स्थिति बंध विशेष अधिक है सो बत्तीस मुहूर्तमात्र है । ६१ । तातैं पडनेवालेकैं वेदनीयका जघन्य स्थितिबंध विशेष अधिक है सो अठतालीस मुहूर्तमात्र है । ६२ ॥ ३८१ ॥

चडमायमाणकोहो मासादीदुगुण अवराठिदिबंधो ।
पडणे ताणं दुगुणं सोलसवस्साणि चलणपुरिसस्स ॥

चटमायामानक्रोधो मासादिद्विगुणावरास्थितिबंधः ।
पतने तेषां द्विगुणं षोडशवर्षाणि चटनपुरुषस्य ॥ ३८२

सं० टी०— आरोहकस्य संज्वलनमायाजघन्यस्थितिबंधः पूर्वस्मात्संख्यातगुणो मासप्रमितः । मा १ । ६३ । तस्यैव संज्वलनमानजघन्यस्थितिबंधो द्विगुणः मा २ । ६४ । तस्यैव क्रोधसंज्वलनजघन्यस्थितिबंधो द्विगुणः मा ४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेषामेव मायादीनां प्रतिपततो जघन्यस्थितिबंधाः आरोहकजघन्यस्थितिबंधेभ्यो द्विगुणाः मा २। मा ४। मा ८। आरोहकस्य पुंवेदजघन्यस्थितिबंधः षोडशवर्षमात्रः ॥ ३८२ ॥

स० चं–तातैं चढनेवालेकैं संज्वलन मायाका जघन्य स्थितिबंध संख्यातगुणा है सो एकमासमात्र है ६३। तातैं तिसहीकैं मानका जघन्य स्थितिबंध दूणा है ६४। तातैं तिसहीकैं क्रोधका जघन्य स्थितिबंध दूणा है ६५। बहुरि उतरनेवालेकैं तिन ही मायादिकनिका जघन्य स्थितिबंध चढनेवालेतैं दूणा है सो मायाका दोयमास मानका च्यारिमास क्रोधका आठ मासमात्र जानना। बहुरि चढनेवालेकैं पुरुषवेदका जघन्य स्थितिबंध सोलह वर्षमात्र है ॥ ३८२ ॥

पडणस्स तस्स दुगुणं संजलणाणं तु तत्थ दुट्ठाणे।
बत्तीसं चउसट्ठी वस्सपमाणेण ठिदिबंधो॥ ३८३॥

पतनस्य तस्य द्विगुणं संज्वलनानां तु तत्र द्विस्थाने।
द्वात्रिंशत् चतुःषष्टिः वर्षप्रमाणेन स्थितिबंधः ॥ ३८३ ॥

सं० टी०— प्रतिपततस्तद्बंधो द्विगुणः। तत्काले संज्वलनचतुष्टयस्यारोहके स्थितिबंधो द्वात्रिंशद्वर्षमात्रः। अवरोहके तद्बन्धश्चतुःषष्टिवर्षमात्रः ॥ ३८३ ॥

स० चं– पडनेवालेकैं पुरुषवेदका जघन्यस्थितिबंध तातैं दूणा बत्तीस वर्षमात्र है। बहुरि तिसकालविषै संज्वलन चतुष्कका स्थितिबंध चढनेवालेकैं बत्तीस वर्ष, उतरनेवालेकैं चौसठि वर्षमात्र हो है ॥ ३८३ ॥

चडपडणमोहपढमं चरिमं तु तहा तियादियादीणं। ४६९

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संखेज्जवस्सबंधो संखेज्जगुणक्कमो छण्हं ॥ ३८४ ॥

चटपतनमोहप्रथमं चरमं तु तथा त्रिघातकादीनाम् ।
संख्येयवर्षबंधः संख्येयगुणक्रमः षण्णाम् ॥ ३८४ ॥

सं० टी०— आरोहकस्यांतरकरणनिष्पत्त्यनंतरसमये मोहनीयस्य प्रथमस्थितिबंधः पूर्वस्मात्संख्यातगुणः संख्यातसहस्रवर्षप्रमितः । अवरोहकस्य तत्प्रणिधिस्थाने मोहचरमस्थितिबंधः ततः संख्येयगुणः सोऽपि संख्यातवर्षसहस्रप्रमित एव । यथा पूर्वमारोहकस्थितिबंधादवरोहकस्थितिबंधस्य द्विगुणत्वनियमस्तथाऽस्मिन्नवसरे तन्नियमो नास्ति किंतु यथासंभवसंख्येयगुणकारो द्रष्टव्यः । आरोहकस्य घातित्रयप्रथमस्थितिबंधः पूर्वस्मात्संख्येयगुणः । ततोऽवरोहकस्य प्रथम (चरम) स्थितिबंधः संख्येयगुणः । तत आरोहकस्य सप्तनोकषायोपशमनकाले अघातित्रयप्रथमस्थितिबंधः संख्येयगुणः । ततोऽवरोहकस्य तच्चरमस्थितिबंधः संख्येयगुणः ॥ ३८४ ॥

स० चं– तातै चढनेवालेकैं अंतर करण करनेकी समाप्ति होनेकै अनंतर समयविषै संभवता ऐसा मोहनीयका प्रथम स्थितिबंध संख्यातगुणा है सो संख्यात हजार वर्षमात्र है। तातैं उतरनेवालेकैं तिस समयकी समान अवस्थाविषै संभवता ऐसा मोहका अंतस्थितिबंध है सो संख्यातगुणा है । सो भी संख्यात हजार वर्षमात्र है । जैसैं पूर्वै चढनेवालेतैं उतरनेवालेकैं दूणा स्थितिबंध कह्या था तैसैं अब न जानना । अब यथासम्भव संख्यातगुणा जानना । तातैं चढनेवालेकैं तीन घातियानिका प्रथम स्थितिबंध संख्यातगुणा है । तातैं उतरनेवालेकैं तिनका तहां अंतस्थितिबंध संख्यातगुणा है । तातैं चढनेवालेकैं सप्त नोकषायनिका उपशम कालविषै तीन अघातिया कर्मनिका प्रथम स्थितिबंध संख्यातगुणा है । तातैं उतरनेवालेकैं तहां अंत स्थितिबंध संख्यातगुणा है ॥ ३८४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चडपडणमोहचरिमं पढमं तु तहा तिघादियादीणं ।
असंखेज्जवस्सबंधो संखेज्जगुणक्कमो छण्हं ॥ ३८५ ॥

चटपतनमोहचरमं प्रथमं तु तथा त्रिघातकादीनाम् ।
असंख्येयवर्षबंधः संख्येयगुणक्रमः षण्णाम् ॥ ३८५ ॥

सं० टी०—तत आरोहके मोहनीयस्यासंख्यातवर्षप्रमितश्चरमस्थितिबंधोऽसंख्येयगुणः, स च पल्यासंख्यातभागमात्रोंऽतरकरणप्रारम्भसमये संभवति । ततोऽवरोहके मोहनीयस्यासंख्यातवर्षसहस्रमात्रः प्रथमस्थितिबंधोऽसंख्येयगुणः । तत आरोहके घातित्रयस्यासंख्यातवर्षसहस्रमात्रचरमस्थितिबंधोऽसंख्येयगुणः । स च स्त्रीवेदोपशमनकाले संख्यातभागं गत्वा संभवति । ततोऽवतारके तत्प्रथमस्थितिबंधोऽसंख्येयगुणः । तत आरोहकघातित्रयस्य चरमस्थितिबंधोऽसंख्येयगुणः । स च सप्तनोकषायोपशमनकाले संख्यातभागे गते संभवति । ततोऽवतारके तत्प्रथमस्थितिबंधोऽसंख्येयगुणः । एषोऽपि पल्यासंख्यातभागमात्र एव च । अवतारकस्य स्थितिबन्धाः प्रागुक्ताः सर्वेऽपि आरोहकस्थितिबंधकालमंतर्मुहूर्तं-

७

नाप्राप्य संभवंति ॥ ३८५ ॥

स० चं०– तातैं चढनेवालेकैं मोहनीयका असंख्यात वर्षमात्र अंत स्थितिबंध है सो असंख्यातगुणा है । सो यहु पल्यका असंख्यातवां भागमात्र है, अंतर करण करनेका प्रारंभ समयविषै संभवै है । तातैं उतरनेवालेकैं मोहका असंख्यात वर्षमात्र प्रथम स्थितिबंध है सो असंख्यातगुणा है । तातैं चढनेवालेकैं तीन घातियानिका असंख्यात वर्षमात्र अंत स्थितिबंध है सो असंख्यातगुणा है । सो यहु स्त्रीवेदका उपशम कालका संख्यात भाग गएं हो है । तातैं उतरनेवालेकैं तीन घातियानिका असंख्यात वर्षमात्र पहिला स्थितिबंध सो असंख्यातगुणा है । तातैं चढनेवालेकैं तीन घातियानिका अंत स्थितिबंध असंख्यातगुणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है सो सप्त नोकषायनिका उपशम कालविषै संख्यात भाग भएं हो है। तातैं उतरनेवालेकैं तिनहीका प्रथम स्थितिबंध है सो असंख्यातगुणा है। सो यहु भी पल्यका असंख्यातवां भागमात्र है। इहां उतरनेवालेकैं जे स्थितिबंध कहे हैं ते सर्व ही चढनेवालेका तिस स्थितिबंध होनेका कालकौं अंतर्मुहूर्तकरि अप्राप्ति होइ संभवै हैं। चढनेवालेकैं जो प्रथम स्थितिबंध होइ उतरनेवालेकैं ताके निकटवर्ती अवस्थाकौं पाएं अंत स्थिति बंध होइ जातैं चढनेवाला जिस अवस्थाकौं पहलैं पावै तिस अवस्थाकौं उतरनेवाला अंतविषै पावै है ॥३८५॥

चडणे णामदुगाणं पढमो पलिदोवमस्स संखेज्जो।
भागो ठिदिस्स बंधो हेट्ठिल्लादो असंखगुणो॥

चटने नामाद्विकयोः प्रथमः पलितोपमस्यासंख्येयः।
भागः स्थितेर्बंधः अधस्तनादसंख्यगुणः॥ ३८६॥

सं० टी०– तत आरोहके नामगोत्रयोः पल्यासंख्यातैकभागमात्रः प्रथमस्थितिबंधोऽधस्तनात् घातित्रयस्थितिबन्धादसंख्येयगुणः प ॥ ३८६॥
५

स० चं०– तातैं चढनेवालेकैं नाम गोत्रका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र भया पहला स्थितिबंध सो नीचेका घातित्रयका स्थितिबंधतैं असंख्यातगुणा है॥ ३८६॥

तीसियचउण्ह पढमो पलिदोवमसंखभागठिदिबंधो।
मोहस्सवि दोण्णि पदा विसेसअहियक्कमा होंति॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीसियचतुर्णां प्रथमः पलितोपमासंख्यभागास्थितिबंधः ।
मोहस्यापि द्वे पदे विशेषाधिकक्रमा भवंति ॥ ३८७ ॥

सं० टी०— तत आरोहके तीसियचतुष्कस्य प्रथमस्थितिबन्धो विशेषाधिकः, स च पल्यासंख्यातभाग एव प २ / ५ । २
तत आरोहके मोहस्य चालीसियस्थितिबंधो विशेषाधिकः प २ / ५ विशेषप्रमाणं तत्त्रिभागमात्रं प २ / ५ । २ । ३ ॥ ३८७ ॥

स० चं०— तातैं चढनेवालेकैं तीसिय चतुष्कका पहलैं स्थितिबंध विशेष अधिक है सो भी पल्यके असंख्यातवे भागमात्र है तातैं चढनेवालेकैं मोहका तहां चालीसिय स्थितिबंध है सो ताहीका त्रिभागमात्र विशेषकरि अधिक है ॥ ३८७ ॥

ठिदिखंडयं तु चरिमं बंधोसरणट्ठिदी य पल्लद्धं ।
पल्लं चडपडबादरपढमो चरिमो य ठिदिबंधो ॥

स्थितिखंडकं तु चरमं बंधापसरणास्थिती च पल्यार्धं ।
पल्यं चटपतद्बादरप्रथमः चरमश्च स्थितिबंधः ॥ ३८८ ॥

सं० टी०— ततश्चरमस्थितिबन्धः संख्येयगुणः प / १ १ स च ज्ञानावरणादिकर्मणां सूक्ष्मसांपरायचरमसमये मोहस्य चांतरकरणकाले संभवति । ततः पल्योत्पत्तिनिमित्तपल्यसंख्यातभागपर्यंताः बन्धापसरणे समुत्पन्ना ये स्थितिबन्धाः पल्यसंख्यातभागप्रमितास्ते सर्वेऽपि संख्यातगुणाः प / १ १ १ १ ० ० ० ० ० ० प / १ पल्यार्धात्पल्यसंख्यातभागात् पल्यं संख्यातगुणं प तत आरोहकानिवृत्तिकरणप्रथमसमये स्थितिबंधः संख्येयगुणः । सोऽपि सागरोपमलक्षणपृथक्त्वमात्रः । ततोऽवतारकानिवृत्तिकरणचरमसमये स्थितिबन्धः संख्येयगुणः ॥ ३८८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– तातैं अंतका स्थिति खंड जो स्थितिकांडकायाम संख्यातगुणा है सो ज्ञानावरणादि कर्मनिका तौ सूक्ष्मसांपरायका अंत समयविषै अर मोहका अंतर करण कालविषै संभवै है तातैं पल्यमात्र स्थितिकी उत्पत्तिके निमित्त पल्यका संख्यातवां भाग पर्यंत स्थितिबंधापसरणनिकरि उपजे पल्यके संख्यातवे भाग प्रमाण स्थितिबंध ते सर्व ही क्रमतैं संख्यातगुणे हैं। बहुरि पल्यका संख्यातवां भागतैं पल्यका प्रमाण संख्यातगुणा है तातैं चढनेवालेकैं अनिवृत्ति करणका प्रथम समयविषै संभवता स्थितिबंध सो संख्यातगुणा है सो पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण है। तातैं उतरनेवालेकैं अनिवृत्तिकरणका अंतसमयविषै संभवता स्थितिबंध संख्यातगुणा है ॥ ३९८ ॥

चडपडअपुव्वपढमो चरिमो ठिदिबंधओ य पडणस्से।
तच्चरिमं ठिदिसंतं संखेज्जगुणक्कमा अट्ठ ॥

चटपतदपूर्वप्रथमः चरमस्थितिबंधकश्च पतनस्य ।
तच्चरमं स्थितिसत्त्वं संख्येयगुणक्रमं अष्ट ॥ ३९९ ॥

सं० टी०– तत आरोहकापूर्वकरणप्रथमसमये स्थितिबंधः संख्येयगुणः सा अंतः को २ सोऽपि सागरोपमांतः-
४ । ४ । ४ । ४
कोटीकोटिप्रमितः । ततः प्रतिपतदपूर्वकरणचरमसमये स्थितिबंधः संख्येयगुणः सा अंत को २ अत्र गुणकारः द्विरूप-
४ । ४ । ४
मात्रः तत्प्रायोग्यसंख्यातरूपमात्रो वा ग्राह्यः । ततः प्रतिपतदपूर्वकरणचरमसमये स्थितिसत्त्वं संख्येयगुणं–
१ ___ ___ ___
सा अंतः को २ – २ ॥ ३९९ ॥
४ । ४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स०चं— तातैं चढनेवाले अपूर्व करणका प्रथम समयविषै स्थितिबंध संख्यातगुणा है। सो अंतःकोटाकोटी सागरमात्र है। तातैं पडनेवाला अपूर्व करणका अंत समयविषै स्थितिबंध संख्यातगुणा है। सो दूणा अथवा यथासम्भव संख्यातगुणा जानना। तातैं पडनेवालेकैं अपूर्व करणका अंत समयविषैं स्थिति सत्त्व संख्यातगुणा है ॥ ३८९ ॥

तप्पढमट्ठिदिसत्तं पडिवडअणियट्टिचरिमठिदिसत्तं।
अहियकमा चलवादरपढमट्ठिदिसत्तयं तु संखगुणं ॥

तत्प्रथमस्थितिसत्त्वं प्रतिपतदनिवृत्तिचरमस्थितिसत्त्वं।
अधिकक्रमं चटवादरप्रथमास्थितिसत्त्वकं तु संख्यगुणम् ॥ ३९० ॥

१ ___ ^ ___

सं० टी०— ततः प्रतिपतदपूर्वकरणप्रथमसमये स्थितिसत्त्वं विशेषाधिकं सा अंतः को २ विशेषप्रमाणं समयो-
४ । ४

१ ^

नापूर्वकरणकालमात्रं २ ७ अवतारणे प्रथमसमयस्थितिकरणं तेन तावत्समयानां चरमसमयस्थितिसत्त्वेन तत्त्वात्। ततः प्रतिपतदनिवृत्तिकरणचरमसमयस्थितिसत्त्वमेकसमयेनाधिकं सा अंतः को २ तत आरोहकानिवृत्तिकरणप्रथ-
४ । ४

मसमयस्थितिसत्त्वं संख्यातगुणं सा अंतः को २ अस्याद्याप्यनिवृत्तिकरणपरिणामकृतस्थितिसत्त्वघातसंभवात् ॥३९०॥
४

स० चं– तातैं पडनेवालेकैं अपूर्व करणका प्रथम समयविषै स्थिति सत्त्व है सो समय घाटि अपूर्व करणका कालमात्र विशेषकरि अधिक है जातैं उतरनेविषै प्रथम समय स्थिति सत्वतैं अंत समयविषै स्थिति सत्वकी हीनता तितने समयमात्र ही हो है। तातैं पडनेवाले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनिवृत्ति करणका अंत समयविषै स्थिति सत्व एक समयकरि अधिक है तातैं चढनेवाला अनिवृत्ति करणका प्रथम समयविषै स्थिति सत्व संख्यातगुणा है जातैं याकौं अब भी अनिवृत्तिकरणके परिणामनिकरि स्थिति सत्वका खंड न संभवै है ॥ ३९० ॥

चडमाणअपुव्वस्स य चरिमट्ठिदिसत्तयं विसेसहियं।
तस्सेव य पढमठिदीसत्तं संखेज्जसंगुणियं ॥३९१॥

चटदपूर्वस्य च चरमस्थितिसत्त्वकं विशेषाधिकम्।
तस्यैव च प्रथमस्थितिसत्त्वं संख्येयगुणितम् ॥ ३९१ ॥

सं० टी०— तत आरोहकापूर्वकरणचरमसमये स्थितिसत्त्वं विशेषाधिकं $\frac{\text{प}}{\text{७}}$ सा अंतः को २ $\frac{}{४}$ तच्चरमकांडकचरमफालिप्रमाणस्य पल्यसंख्यातभागस्य संभवात्। तत आरोहकापूर्वकरणप्रथमसमयस्थितिसत्त्वं संख्यातगुणं सा अं को २ तच्चांतःकोटीकोटिसागरोपमप्रमितं । अपूर्वकरणकाले संभविसंख्यातसहस्रमात्रस्थितिकांडकघातवशेन तत्प्रथमसमयस्थितिसत्त्वसंख्यातबहुभागेषु घातितेषु सत्तच्चरमसमयस्थितिसत्त्वं संख्यातैकभागमात्रं । तस्मात्तत्प्रथमसमयस्थितिसत्त्वस्य पूर्वस्थितिकांडकघाताभावात् संख्यातगुणत्वसंभवात् ॥ ३९१ ॥

एवं चारित्रमोहोपशमनविधानं समाप्तं ।

प्रणमामि महावीरं सर्वशांतिकारं जिनं ।
प्रशांतदुरितानीकं शांतये सर्वकर्मणां ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– तातैं चढनेवाले अपूर्व करणका अंत समयविषै स्थिति सत्त्व विशेष अधिक है जातैं तिसके अंत कांडककी अंतफालिका प्रमाण पल्यके संख्यातवे भागमात्र संभवै है सो इतना अधिक जानना । जातैं चढनेवाले अपूर्वकरणका प्रथम समयविषै स्थिति सत्व संख्यातगुणा है । सो अंतःकोटाकोटी प्रमाण है । जातैं अपूर्व करणका कालविषै संख्यात हजार स्थिति कांडक हो है तिनकरि ताका प्रथम समयविषै जो स्थिति पाइए ताका संख्यात बहुभागमात्र स्थितिका घात हो है । ताका अंत समयविषै एकभागमात्र स्थिति रहै है । अर तिस प्रथम समयवर्ती स्थिति सत्वतैं पहलैं स्थिति कांडकका घात है नाहीं तातैं ताका चरम समयवर्ती स्थिति सत्वतैं प्रथम समयवर्ती स्थिति सत्व संख्यातगुणा जानना ॥ ३८९ ॥ ऐसैं अल्प बहुत्व जानना । या प्रकार चारित्र मोहके उपशमावनेका विधान समाप्त भया ॥

दोहा––कर्म शांतिके अर्थि जिन नमौ शांति करतार ।
प्रशमित दुरित समूह सब महावीर जिनसार ॥ १ ॥

इति लब्धिसारः
समाप्तः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ क्षपणासारः ।

स० चं– इहां पर्यंत गाथा सूत्रनिका व्याख्यान संस्कृत टीकाके अनुसारि कीया जातैं इहां पर्यंत गाथानिहीकी टीकाकरिकैं संस्कृत टीकाकारने ग्रंथ समाप्त कीना है। बहुरि इहांतैं आगै गाथा सूत्र हैं तिनिविषै क्षायिक चारित्रका वर्णन है तिनकी संस्कृत टीका तौ अवलोकनेमैं आई नाहीं तातैं तिनका व्याख्यान अपनी बुद्धि अनुसारि इहां कीजिये है। बहुरि भोज नामा राजाका बाहुवलि नामा मंत्रीकैं ज्ञान उपजावनेके अर्थि श्रीमाधवचंद्र नामा आचार्य करि विराचित क्षपणासार ग्रंथ है तिसविषै क्षायिक चारित्र हीका विधान वर्णन है सो इहां तिस क्षपणासारका अनुसारि लीएं भी व्याख्यान करिए हैं। तहां प्रथम मंगलाचरण करिए है–

श्रीवर धर्म जलधिके नंदन रत्नाकरवर्धक सुखकार।
लोक प्रकाशक अतुल विमल प्रभु संतनिकर सेवित गुणधार ॥
माधववरबलभद्रनमितपदपद्मयुगल धारैं विस्तार।
नेमिचंद्र जिन नेमिचंद्र गुरु चंद्रसमान नमहुं सो सार ॥ १ ॥

याके नेमिनाथ तीर्थंकर वा नेमिचंद्र आचार्य वा चंद्रमाका विशेषण करने करि तीन अर्थ हैं तहां माधववरबलभद्रनमितपदपद्मयुगलका अर्थ– नेमिचंद्र जिनकी पक्षविषै तो नारायण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बलभद्रकरि अर नेमिचंद्र गुरुकी पक्ष विषै माधवचंद्र आचार्य अर कल्याण रूप बाहुबलि मंत्री तिनकरि अर चंद्रमाकी पक्षविषै वसंतराज उत्कृष्ट सप्तसेना विषै प्रधान ताकरि नमित हैं चरण युगल जिनके असे हैं। अन्य अर्थ सुगम हैं॥ अब इहां गाथा सूत्र कहिए है–

तिकरणमुभयोसरणं कमकरणं खवणदेसमंतरयं।
संकम अपुव्वफड्ढयाकिट्टीकरणाणुभवण खमणाये॥

त्रिकरणमुभयापसरणं क्रमकरणं क्षपणं देशमंतरकम्।
संक्रमं अपूर्वस्पर्धककृष्टिकरणानुभवनानि क्षपणायाम्॥ ३१२॥

स॰चं– अधःकरण १ अपूर्व करण १ अनिवृत्ति करण १ ए तीन करण अर बंधापसरण १ सत्वापसरण १ ए दोय अपसरण बहुरि क्रमकरण १ अष्टकषाय सोलह प्रकृतीनिकी क्षपणा १ देश घातिकरण १ अंतर करण १ संक्रमण १ अपूर्व स्पर्धककरण १ कृष्टिकरण १ कृष्टिअनुभवन १ असैं ए चारित्र मोहकी क्षपणाविषैं अधिकार जानने। तहां पीछैं ज्ञानावरणादि कर्मनिका क्षपणा अधिकार अर योग निरोध अधिकारका वर्णन होगा।

तहां प्रथम अधःकरणका वर्णन करिए है– पहलैं पूर्वोक्त प्रकार तीन करण विधानतैं सात प्रकृतिनिका नाशकरि क्षायिक सम्यग्दृष्टी होइ मोहनीकी इकईस प्रकृतिनिका सत्वसहित होइ सो जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त अर उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त सहित आठ वर्षकरि हीन दोय कोटि पूर्व तिनिकरि अधिक तेतीस सागरकाल क्षायिक सम्यग्दृष्टी संसारमें रहै तहां किसी कालविषै चारित्र मोहकी क्षपणाकौं योग्य जे विशुद्ध परिणाम तिनकरि सहित होइ प्रमत्ततैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रमत्तविषैं अप्रमत्ततैं प्रमत्तविषैं हजारोंवार गमनागमनकरि महामुनि चक्रवर्ती हैं सो यथाख्यात चारित्ररूप एकछत्र राज्य करनेके अर्थ क्षपक श्रेणीरूप दिग्विजय करनेके सन्मुख होत संता प्रथम सातिशय अप्रमत्त गुणस्थानविषैं अधःकरणरूप प्रस्थान करै है। ताका विशेष जाननेकौं इहां प्रश्नोत्तर हो है—

कसायखवणो ठाणे परिणामो केरिसो हवे।
कसाय उपजोगो को लेस्सा वेदा य को हवे ॥ १ ॥
काणि वा पुव्वबद्धाणि को वा अंसेण बंधदि।
कदियावलि पविसंति कदिण्हं वा पवेसगो ॥ २ ॥
केट्टिय सेज्झीयदे पुव्वं बंधेण उदयेण वा।
अंतरं वा कहिं किच्चा के के संकामगो कहिं ३ ॥
केट्टिदीयाणि कम्माणि अणुभागेसु केसु वा।
उक्कट्टिदूण सेसाणि कं ठाणं पडिवज्जदि ॥ ४ ॥

इनि च्यारि सूत्रनि करि प्रश्न कीए। तहां प्रश्न जो—चारित्रमोहकी क्षपणाका प्रारंभक जीवकैं परिणाम कैसा होइ ? ताका उत्तर— अति विशुद्ध होइ।

बहुरि प्रश्न—योग कैसा होइ ? ताका उत्तर—च्यारि मनोयोगनिविषै कोई एक वा च्यारि वचन योगनिविषै कोई एक वा सात काय योगनिविषै औदारिक काय योग होइ।

बहुरि प्रश्न— कषाय कैसा होइ ? ताका उत्तर— च्यारि संज्वलन विषै कोई एक होइ, सो भी हीयमान होइ वृद्धिरूप न होइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि प्रश्न--उपयोग कैसा होइ ? ताका उत्तर—बहुत मुनिनिकैं प्रसिद्ध उपदेशकरि तो श्रुतज्ञान ही उपयोग है। दर्शन उपयोग नाहीं है। अन्य आचार्यनिके मतकरि माति श्रुति ज्ञानविषैं एक वा अचक्षु दर्शनविषै एक उपयोग है।

बहुरि प्रश्न—लेश्या कैसी हो है ? ताका उत्तर—शुक्ल ही हो है।

बहुरि प्रश्न— वेद कैसा हो है ? ताका उत्तर— भाव वेद तीनोंविषै कोई एक हो है। द्रव्यवेद पुरुषवेद ही है।

बहुरि प्रश्न— पूर्वबद्ध कर्म हैं ते सत्त्व रूप कैसैं हैं ? ताका उत्तर— सात मोहनी अर नरक तिर्यंच देव आयु इन दश विना सर्व प्रकृतिनिका सत्त्व होइ तहां आहारक आहार-कांगोपांग तीर्थंकर ए भजनीय हैं। कोईकैं होइ कोईकैं न होंइ। बहुरि स्थिति सत्त्व मनुष्यायु विना तिन प्रकृतिनिका अंतःकोटाकोटी सागर प्रमाण है अर तिनविषैं प्रशस्त प्रकृतिनिका गुड खंड शर्करा अमृत रूप चतुःस्थानक, अप्रशस्त प्रकृतिनिका दारु लता वा निंब कांजीर रूप द्विस्थानक अनुभाग सत्त्व है। अर तिनका प्रदेशसत्व अजघन्य वा अनुत्कृष्ट संभवै है। जघन्य उत्कृष्ट कर्म परमाणूनिका समूह इहां न पाइए है।

बहुरि प्रश्न— जो नवीन कर्म किसा अंशकरि बंधै है ? ताका उत्तर— ज्ञानावरण पांच ५ दर्शनावरणकी स्त्यानगृद्धित्रिक विना छह ६ सातावेदनीय १ संज्वलन चतुष्क ४ पुरुष वेद १ हास्य १ राति १ भय १ जुगुप्सा १ उच्चगोत्र १ अंतराय पांच ५ ऐसैं सताईस अर नाम कर्मविषै देवगाति १ पंचेंद्री जाति १ वैक्रियिक तेजस कार्माण शरीर ३ समचतुरस्र संस्थान १ वैक्रियिक अंगोपांग १ प्रशस्तवर्णादिक च्यारि ४ देवगत्यानुपूर्वी १ अगुरुलघु१ उ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पघात १ परघात १ उश्वास १ प्रशस्तविहायोगति १ त्रस १ बादर पर्याप्त १ प्रत्येक १ स्थिर १ शुभ १ सुभग १ सुस्वर १ आदेय १ यशस्कीर्ति १ निर्माण १ ए अठाईस वा कोईकैं तीर्थंकर सहित गुणतीस वा कोईकैं आहारकादिकसाहित तीस वा कोईकैं आहारक द्विक तीर्थंकर सहित इकतीस प्रकृति बंधै है। अर तिनि प्रकृतिनिका स्थिति सत्वतैं संख्यात गुणा घटता अंतः कोटाकोटी सागर प्रमाण स्थिति बंध हो है। अर तिनिविषैं अप्रशस्त प्रकृतिनिका समय समय अनंत गुणा घटता क्रम लीएं द्विस्थानक अर प्रशस्त प्रकृतिनिका समय समय अनंत गुणा बंधता क्रम लीएं चतुःस्थानिक अनुभाग बंध हो है। अर तिनिका अजघन्य अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध हो है। इहां जघन्य वा उत्कृष्ट समय प्रबद्ध नाही बंधै है। तहां विशेष जो प्रचला निद्रा हास्य रति भय जुगुप्सा देवगति देवानुपूर्वी वैक्रियिक द्विक आहारकद्विक प्रथम संस्थान प्रशस्त विहायोगति सुभग सुस्वर आदेय तीर्थंकर इनि प्रकृतिनिका किसी प्रकार करि उत्कृष्ट प्रदेश बंध भी हो है।

बहुरि प्रश्न—उदयावली प्रति कर्म कैसे प्रवेश करै है? ताका उत्तर—मूलप्रकृति तो सर्व उदय रूप ही होइ खिरै हैं, उत्तर प्रकृति कोई उदयरूप होइ निर्जरै है, कोई विना ही उदय दिये निर्जरै है।

बहुरि प्रश्न— केते कर्म उदीरणा रूप होइ उदयावली प्रति प्रवेश करै हैं? ताका उत्तर-साता वेदनीय अर मनुष्यायु विना स्वमुखोदयी सर्व ही कर्म उदयावलीविषैं प्रवेश करैं हैं उदीरणारूप हो हैं।

बहुरि प्रश्न—पूर्वैं कौन कर्म उदय अर बंधकरि विनशै है? ताका उत्तर—स्त्यान गृद्धि- ५८३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिक ३ असाता वेदनीय १ मिथ्यात्व १ कषाय बारह १२ अरति १ शोक १ स्त्रीनपुंसकवेद २ आयु चारि ४ परावर्त अशुभ नामकी गुणतीस २९ मनुष्य गति १ औदारिक शरीर वा अंगोपांग २ वज्रवृषभ नाराच १ मनुष्यानुपूर्वी १ आतप १ उद्योत १ नीच गोत्र १ इत नी प्रकृतिनिकी बंधकी व्युच्छित्ति पहलैं भई है। इहां नरक तिर्यंच गति २ एकेंद्रियादि चारि ४ संस्थान पांच ५ संहनन पांच ५ नरक तिर्यंचानुपूर्वी २ अप्रशस्त विहायोगति १ स्थावर १ सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ साधारण १ अस्थिर १ अशुभ १ दुरभग १ दुःस्वर १ अनादेय १ अयशस्कीर्ति १ ए गुणतीस प्रकृति परावर्त अशुभनाम कर्मकी जाननी। बहुरि स्त्यान गृद्धित्रिक ३ दर्शन मोह ३ कषाय बारह १२ नरक तिर्यंच देव आयु ३ नरक तिर्यंच देव गति वा आनुपूर्वी ६ एकेंद्रियादि जाति चारि, वैक्रियिक आहारक शरीर वा अंगोपांग ४ वज्रवृषभ नाराच विना संहनन पांच ५ मनुष्यानुपूर्वी १ आतप १ उद्योत १ स्थावर १ सूक्ष्म १ साधारण १ अपर्याप्त १ दुर्भग १ अनादेय १ अयशस्कीर्ति १ तीर्थंकर १ नीचगोत्र १ इनके उदयकी व्युच्छित्ति पहलैं भई है, अवशेषनिका इहां उदय पाइए है।

बहुरि प्रश्न– अंतर करणकौं कहीं करिकैं कौंन कौंन कर्मनिका कहां संक्रमण करावनेवालाहो है? ताका उत्तर–अनिवृत्ति करण कालका संख्यातवां भाग रहैं अंतर करण अर संक्रमण क्रियाकौं करै है। इस अवसरविषैं नाहीं करै है।

बहुरि प्रश्न–किसस्थिति विषैं वर्तमान कर्म है सो कांडक घात करि कैसे स्थिति स्थानकौं प्राप्त हो है? भावार्थ यहु–स्थिति कांडक घातका प्रश्न कीया, बहुरि किसा अनुभाग विषैं वर्तमान कर्म है सो कांडक घातकरि अवशेष कैसा स्थानकौं प्राप्त हो है भावार्थ यहु– अ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुभाग कांडक घातका प्रश्न कीया। इनि दोऊनिका उत्तर यहु—जो स्थितिकांडक घात अनुभाग कांडक घात इस अधःकरण विषैं नाहीं है अपूर्व करणविषैं हो है। ऐसा यहु चारित्र मोहकी क्षपणाकौं सन्मुख भया जीव प्रथम अधः प्रवृत्त करण करै है॥ ३९२॥

गुणसेढी गुणसंकमठिदिरसखंडाण णत्थि पढमम्हि।
पडिसमयमणंतगुणं विसोहिवड्ढीहिं वड्ढदि हु॥३९३॥

गुणश्रेणी गुणसंक्रमं स्थितिरसखंडनं नास्ति प्रथमे।
प्रतिसमयमनंतगुणं विशुद्धिवृद्धिभिः वर्धते हि॥ ३९३॥

स० चं—पहलैं अधःप्रवृत्त करणविषै गुणश्रेणि १ गुणसंक्रम १ स्थितिकांडक घात १ अनुभाग कांडक घात १ ए नाहीं संभवै हैं। सो जीव समय २ प्रति अनंतगुणा क्रम लीएं विशुद्धताकी वृद्धिकरि वर्धमान हो है॥ ३९३॥

सत्थाणमसत्थाणं चउविट्ठाणं रसं च बंधदि हु।
पडिसमयमणंतेण य गुणभजियकमं तु रसबंधे॥

शस्तानामशस्तानां चतुरपि स्थानं रसं च बध्नाति हि।
प्रतिसमयमनंतेन च गुणभजितक्रमं तु रसबंधे॥ ३९४॥

स० चं०— बहुरि सो जीव समय समय प्रति प्रशस्त प्रकृतिनिका अनंतगुणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम लीएं चतुःस्थानक अनुभाग बंध करै है। अर अप्रशस्त प्रकृतिनिका अनंतवां भाग का क्रम लीएं द्विस्थानिक अनुभाग बंध करै है ॥ ३९४ ॥

पल्लस्स संखभागं मुहुत्तअंतेण ओसरादि बंधे।
संखेज्जसहस्साणि य अधापवत्तम्हि ओसरणा ॥

पल्यस्य संखभागं मुहूर्तान्तरपसराति बंधे।
संख्येयसहस्राणि च अधःप्रवृत्ते अपसरणानि ॥ ३९५ ॥

स॰ चं– पूर्व स्थितिबंधतैं पल्यका संख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध घटाइ एक अंतर्मुहूर्त्त काल पर्यंत समय समय समान बंध होइ सो यहु एक स्थिति बंधापसरण भया ऐसैं संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण अधःप्रवृत्त करणविषैं हो हैं ॥ ३९५ ॥

आदिमकरणद्धाए पढमट्ठिदिबंधदो दु चरिमम्हि।
संखेज्जगुणविहीणो ठिदिबंधो होदि णियमेण ॥

आद्यकरणाद्धायां प्रथमस्थितिबंधतस्तु चरमे।
संख्येयगुणविहीनः स्थितिबंधो भवति नियमेन ॥ ३९६ ॥

स॰ चं– ऐसैं स्थिति बंधापसरण होनेतैं प्रथम अधःप्रवृत्त करण कालविषै प्रथम समय जो स्थितिबंध हो है तातैं संख्यातगुणा घटता अंत समयविषै स्थितिबंध नियमकरि हो है। ऐसैं इस अधःकरणविषै आवश्यक हो है। जहां अन्य जीवके नीचले समयवर्ती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावानिके समान अन्य जीवकैं ऊपरि समयवर्ती भाव होंहि सो अधःप्रवृत्त करण ऐसा सार्थक नाम जानना ॥ ३९६ ॥ आगैं अपूर्वकरणका वर्णन करिए है—

गुणसेढी गुणसंकम ठिदिखंडमसत्थगाण रसखंडं।
विदियकरणादिसमए अण्णं ठिदिबंधमारवई ॥

गुणश्रेणी गुणसंक्रमं स्थितिखंडमशस्तकानां रसखंडम्।
द्वितीयकरणादिसमये अन्यं स्थितिबंधमारभते ॥ ३९७ ॥

स० चं— दूसरा जो अपूर्वकरण ताका प्रथम समयविषैं गुणश्रेणि १ गुणसंक्रम १ अर स्थिति खंडन १ अर अप्रशस्त प्रकृतिनिका अनुभाग खंडन हो है। बहुरि अधःकरणका अंत समयविषै जो स्थितिबंध होता था तातैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र घटता और ही स्थितिबंधकौं प्रारभैं है जातैं इहां एक स्थिति बंधापसरण होनेतैं इतना स्थितिबंध घटाइए है ॥ ३९७ ॥

गुणसेढीदीहत्तं अपुव्वचउक्कादु साहियं होदि।
गलिदवसेसे उदयावलिबाहिरदो दु णिक्खेओ ॥

गुणश्रेणीदीर्घत्वं अपूर्वचतुष्कात् साधिकं भवति।
गलितावशेषे उदयावलिबाह्यतस्तु निक्षेपः ॥ ३९८ ॥

स० चं— इहां गुणश्रेणि आयामका प्रमाण अपूर्व करण अनिवृत्ति करण सूक्ष्म सांप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राय क्षीणकषाय इन च्यारि गुणस्थाननिका मिलाया हूवा कालतैं साधिक है। सो अधिक का प्रमाण क्षीणकषाय कालके संख्यातवे भागमात्र है सो उदयावलीतैं बाह्य गलितावशेष रूप जो यहु गुणश्रेणि आयाम ताविषै अपकर्षण कीया द्रव्यका निक्षेपण हो है ॥ ३९८ ॥

पडिसमयं उक्कट्टदि असंखगुणिदक्कमेण संचदि य।
इदि गुणसेढीकरणं पडिसमयमपुव्वपढमादो ॥

प्रतिसमयं अतिकर्षति असंख्यगुणितक्रमेण सिंचति च।
इति गुणश्रेणीकरणं प्रतिसमयमपूर्वप्रथमात् ॥ ३९९ ॥

स० चं– प्रथम समयविषै अपकर्षण कीया द्रव्यतैं द्वितीयादि समयानिविषै असंख्यातगुणा क्रम लीएं समय समय प्रति द्रव्यकौं अपकर्षण करै है। अर सिंचति कहिए उदयावलीविषै गुणश्रेणि आयामविषै उपरितन स्थितिविषै निक्षेपण करै है ऐसैं अपूर्व करणका प्रथम समयतैं लगाय समय समय प्रति गुणश्रेणिका करना हो है। ऐसैं गुणश्रेणिका स्वरूप कह्या ॥ ३९९ ॥

पडिसमयमसंखगुणं दव्वं संकमदि अप्पसत्थाणं।
बंधुज्झियपयडीणं बंधंतसजादिपयडीसु ॥ ४०० ॥

प्रतिसमयमसंख्यगुणं द्रव्यं संक्रामति अप्रशस्तानाम्।
बंधोज्झितप्रकृतीनां बध्यमानस्वजातिप्रकृतिषु ॥ ४०० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाश होनेतैं जो अभाव होना सोई निर्वाण है ताकौं कहिए है–

जहां मूल वस्तुका नाश होइ तौ ताके अर्थि उपाय काहेकौं करिए। ज्ञानी तौ अपूर्व लाभके अर्थि उपायकरे तातैं अभाव मात्र मोक्ष कहना युक्त नाही। बहुरि योगमतवाला कहै है–बुद्धि सुख दुःख इच्छा द्वेष प्रयत्न धर्म अधर्म संस्कार ए नव आत्माके गुण हैं तिनका नाश सोइ मोक्ष है। ताकौं भी तिस पूर्वोक्त वचनहीकरि निराकरण समाधान कीया। जहां विशेष रूप गुणनिका अभाव भया तहां आत्मवस्तुका अभाव आया सो बनै नाही। बहुरि सांख्यमतवाला कहै है–दूरि भया है कार्य कारण संबंध जाका ऐसा जो आत्मा ताकैं बहुत सूता पुरुषकी ज्यों अव्यक्त चैतन्यता रूप होना सो निर्वाण है। ताका भी पूर्वोक्त वचनकरि निराकरण भया। इहां भी अपना चैतन्य गुण था सो उलटा अव्यक्त भया। ऐसैं नाना प्रकार अन्यथा प्ररूपै हैं। तिनिका निराकरण जैनके न्याय शास्त्रनिमैं कीया है सो जानना। मोक्ष अवस्थाकौं प्राप्त सिद्ध भगवान हैं ते निरंतर अनंत अतींद्रिय आनंदकौं अनुभवैं है। जातैं इंद्रिय मनकरि किंचित् जानना होइ अर किछू निराकुलता होइ तब ही आत्मा आपकौं सुखी मानै है। तौ जहां सर्वका जानना भया अर सर्वथा निराकुलपनां भया तौ तहां परम सुख कैसैं न हो है? तीन लोकके तीन कालसंबंधी पुण्यवंत जीवनिका सुखतै भी अनंतगुणा सुख सिद्धनिकैं एक समयविषैं हो है। जातैं संसारविषैं सुख ऐसैं हैं जैसैं महारोगी किंचित् रोगकी हीनता भएं आपको सुखी मानै अर सिद्धनिकैं सुख ऐसैं है जैसैं रोगरहित निराकुल पुरुष सहज ही सुखी है। ऐसैं अनंत सुख विराजमान सम्यक्त्वादि अष्ट गुण सहित लोकाग्रविषैं विराजमान सिद्ध भगवान हैं सो कल्याण करो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– अपूर्व करणका प्रथम समयतैं लगाय जिनिका इहां बंध न पाइए ऐसीं जे अप्रशस्त प्रकृति तिनिका गुण संक्रमण हो है सो समय समय प्रति असंख्यातगुणा क्रम लीएं तिनि प्रकृतिनिका द्रव्य है सो इहां, जिनिका इहां बंध पाइए ऐसी जे स्वजाति प्रकृति तिनविषै संक्रम करै है तद्रूप परिणमै है। जैसें असाता वेदनीयका द्रव्य साता वेदनीयरूप परिणमै है। ऐसें ही अन्य प्रकृतिनिका जानना॥ ४०० ॥

उव्वट्टणा जहण्णा आउलियाऊणिया तिभागेण।
एसा ठिदिसु जहण्णा तहाणुभागेसणंतेसु ॥ ४०१॥

अतिस्थापना जघन्या आवलिकौनिका त्रिभागेन।
एषा स्थितिषु जघन्या तथानुभागेष्वनंतेषु ॥ ४०१ ॥

स० चं– संक्रमणविषै जघन्य अतिस्थापन अपना त्रिभागकरि ऊन आवलीमात्र है सो यहु ही जघन्य स्थिति है। तैसें ही अनंत अनुभागनिविषै भी जानना ॥ ४०१ ॥

संकामेदुक्कड्डदि जे अंसे ते अवट्ठिदा होंति।
आवलियं से काले तेण परं होंति भजियव्व ॥

संक्रामे तु उत्कृष्यंते ये अंशास्ते अवस्थिता भवंति।
आवालिकां स्वे काले तेन परं भवंति भजितव्याः ॥ ४०२ ॥

स० चं०– संक्रमणविषै जे प्रकृतिनिके परमाणू उत्कर्षणरूप करिए है ते अपने काल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषै आवली पर्यंत तो अवस्थित ही रहैं। तातैं परैं भजनीय हो हैं, अवस्थित भी रहैं अर स्थित्यादिककी वृद्धि हानि आदि रूप भी होंइ ॥ ४०२ ॥

उक्कट्टिदि जे अंसे से काले ते च होंति भजियव्वा।
वड्ढीए अवठाणे हाणीए संकमे उदए ॥ ४०३ ॥

उत्कृष्यंते ये अंशाः स्वे काले ते च भवंति भजितव्याः।
वृद्धौ अवस्थाने हानौ संक्रमे उदये ॥ ४०३ ॥

स० चं– जे प्रकृतिनिके परमाणू अपकर्षण करिए है ते अपने कालविषै भजनीय हो हैं स्थित्यादिककी वृद्धि वा अवस्थान वा हानि अर संक्रमण अर उदय इनरूप होंइ भी अर न भी होंइ, किछू नियम नाहीं ॥ ४०३ ॥

एक्कं च ठिदिविसेसं तु असंखेज्जेसु ठिदिविसेसेसु।
वट्टेदि रहस्सेदि व तहाणुभागेसुणंतेसु ॥ ४०४ ॥

एकं च स्थितिविशेषं तु असंख्येयेषु स्थितिविशेषेषु।
वर्त्यते रहस्यते वा तथानुभागेष्वनंतेषु ॥ ४०४ ॥

स० चं– एक स्थिति विशेष जो एक निषेकका द्रव्य सो असंख्यात निषेकनिविषै वर्तैं है निक्षेपण करिए है तैसैं ही अनंत अनुभागनिविषै भी एक स्पर्धकका द्रव्य अनंत स्पर्धकनिविषै निक्षेपण करिए है ऐसा जानना। इन च्यारि गाथानिका अर्थ नीकैं मेरे जाननेमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न आया अर क्षपणासारविषै भी इनका प्रयोजन किछू लिख्या नाही तातैं बुद्धिमान होइ सो इनका यथासम्भव विशेष अर्थ जानियो। ऐसैं गुणसंक्रमका स्वरूप कह्या ॥ ४०४ ॥

पल्लस्स संखभागं वरं पि अवरादु संखगुणिदं तु।
पढमे अपुव्विखवगे ठिदिखंडपमाणयं होदि ॥

पल्यस्य संख्यभागं वरमपि अवरात् संख्यगुणितं तु।
प्रथमे अपूर्वक्षपके स्थितिखंडप्रमाणकं भवति ॥ ४०५ ॥

स० चं– क्षपक अपूर्व करणका प्रथम समयविषै स्थितिखंड कहिए स्थितिकांडकायाम ताका जघन्य वा उत्कृष्ट प्रमाण पल्यके संख्यातवे भागमात्र है तथापि जघन्यतैं उत्कृष्ट संख्यातगुणा है। तहां जो जीव क्षायिक सम्यग्दृष्टी होइ उपशम श्रेणी चढि पीछैं क्षपक श्रेणी चढै ताकैं तहां उपशम श्रेणिविषै बहुत स्थिति कांडक घात होनेकरि स्थिति सत्व स्तोक रहै है। तातैं ताकैं इहां स्थिति कांडकायाम जघन्य हो है। बहुरि जो जीव उपशम श्रेणी न चढि क्षपकश्रेणी चढै ताकैं तिसतैं स्थिति सत्व संख्यातगुणा है। ताकैं स्थिति कांडकायाम भी संख्यातगुणा हो है जातैं स्थितिके अनुसारि कांडक घात हो है ऐसैं दूसरा जघन्य कांडकतैं दूसरा उत्कृष्ट कांडक तीसरातैं तीसरा इत्यादि सर्वत्र जघन्य कांडकतैं उत्कृष्ट कांडक संख्यातगुणा जानना ॥ ४०५ ॥

आउगवज्जाणं ठिदिघादो पढमादु चरिमठिदिसंतो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठिदिबंधो य अपुव्वे होदि हु संखेज्जगुणहीणो ॥

आयुष्कवर्ज्यानां स्थितिघातः प्रथमात् चरमस्थितिसत्त्वम् ।
स्थितिबंधश्च अपूर्वे भवति हि संख्येयगुणहीनः ॥ ४०६ ॥

स० चं– आयु विना सात कर्मनिका स्थिति कांडकायाम अर स्थिति सत्व अर स्थितिबंध ए तीनों अपूर्व करणका प्रथम समयविषै जो पाइए है तिनितैं ताके अंत समयविषै संख्यातगुणे घाटि हो हैं ॥ ४०६ ॥

अंताकोडाकोडी अपुव्वपढमम्हि होदि ठिदिबंधो ।
बंधादो पुण सत्तं संखेज्जगुणं हवे तत्थ ॥ ४०७॥

अंतःकोटीकोटिः अपूर्वप्रथमे भवति स्थितिबंधः ।
बंधात् पुनः सत्त्वं संख्येयगुणं भवेत् तत्र ॥ ४०७ ॥

स० चं०– अपूर्व करणका प्रथम समयविषै स्थितिबंध अंतःकोटाकोटी प्रमाण है सो पृथक्त्व लक्ष कोडि सागर प्रमाण है । बहुरि तहां स्थिति सत्त्व आलाप करि तितना ही है तथापि स्थितिबंधतैं संख्यातगुणा है । ऐसैं स्थिति कांडकका स्वरूप कह्या ॥ ४०७ ॥

एक्केक्कट्ठिदिखंडयणिवडणठिदिओसरणकाले ।
संखेज्जसहस्साणि य णिवडंति रसस्स खंडाणि ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकैकस्थितिखंडकनिपतनास्थित्युत्करणकाले ।
संख्येयसहस्राणि च निपतंति रसस्य खंडानि ॥ ४०८ ॥

स० चं– एकस्थितिखंडनिपतन कहिए स्थिति कांडकघात जाविषैं होइ ऐसा स्थितिकांडकोत्करण काल तीहिं विषैं संख्यात हजार अनुभाग कांडकनिका निपतन कहिए घात हो है। भावार्थ यहु–अपूर्वकरणका प्रथम समयविषैं स्थिति कांडकका अर अनुभाग कांडकका युगपत् प्रारंभ भया। तहां यथायोग्य काल गएं प्रथम अनुभाग कांडक पूरा भया अर स्थिति कांडक सोई है। बहुरि अनुभाग कांडक दूसरा भया, बहुरि तीसरा भया ऐसैं संख्यात हजार अनुभाग कांडक भएं प्रथम स्थिति कांडकका काल पूर्ण हो है। ऐसैं ही द्वितीयादि स्थिति कांडक कालनिविषैं क्रम जानना ॥ ४०८ ॥

असुहाणं पयडीणं अणंतभागा रसस्स खंडाणि ।
सुहपयडीणं णियमा णत्थित्ति रसस्स खंडाणि ॥

अशुभानां प्रकृतीनां अनंतभागा रसस्य खंडानि ।
शुभप्रकृतीनां नियमात् नास्तीति रसस्य खंडानि ॥ ४०९ ॥

स० चं०–अशुभ प्रकृतिनिका अनंत बहुभागमात्र अनुभाग कांडकका प्रमाण है। पूर्वै जो अनुभाग था ताकौं अनंतका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र प्रथम अनुभाग कांडकविषैं घटाइए है अवशेष एक भागमात्र अनुभाग रहै है। बहुरि ताकौं अनंतका भाग दीएं तहां बहुभाग दूसरा अनुभाग कांडकविषै घटाइए है अवशेष एक भाग अनुभाग रहै है। ऐसैं अंत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुभागकांडक पर्यंत क्रम जानना। या प्रकार अप्रशस्त प्रकृतिनिका अनुभाग खंड इहां हो है। बहुरि प्रशस्त प्रकृतिनिका अनुभाग खंड नियमतैं न हो है जातैं विशुद्ध परिणामनिकरि शुभप्रकृतिनिके अनुभागका घटावना संभवता नाहीं। ऐसैं अनुभाग खंडका स्वरूप कह्या ॥ ४०९ ॥

पढमे छट्ठे चरिमे भागे दुग तीस चदुर वोछिण्णा।
बंधेण अपुव्वस्स य से काले बादरो होदि ॥

प्रथमे षट्के चरमे भागे द्विकं त्रिंशत् चतस्रो व्युच्छिन्नाः।
बंधेन अपूर्वस्य च स्वे काले बादरो भवति ॥ ४१० ॥

स० चं०— पूर्वोक्त प्रकार स्थिति बंधापसरणानिकरि घटि घटि संख्यात हजार स्थिति बंध भए कहा ? सो कहिए है—

अपूर्वकरणका कालके समान सात भाग करिए तहां प्रथमभागका अंत समयविषै निद्रा प्रचला इनि दोऊनिके बंधकी व्युच्छित्ति भई। इहां ही निद्रा प्रचलाका द्रव्य है सो गुणसंक्रमण विधान करि इहां बध्यमान स्वजातीय चक्षु अचक्षु अवधि केवलदर्शनावरणीय तिन विषै संक्रमण करै है। बहुरि यातैं परैं संख्यात हजार स्थिति बंध भएं ताका छठा भागका अंत समयविषैं देवगति १ पंचेंद्री जाति १ वैक्रियिक तैजस आहारक कार्माण शरीर ४ समचतुरस्र संस्थान १ वैक्रियिक आहारक अंगोपांग २ वर्णादि च्यारि ४ देवानुपूर्वी १ अगुरुलघु १ उपघात १ परघात १ उश्वास १ प्रशस्तविहायोगति १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ प्रत्ये-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क १ स्थिर १ शुभ १ सुभग १ सुस्वर १ आदेय १ निर्माण १ तीर्थंकर १ इन तीस प्रकृतिके बंधकी व्युच्छित्ति हो है। बहुरि यातैं संख्यात हजार स्थिति बंध भएं अपूर्व करणका अंत समयविषैं हास्य १ रति १ भय १ जुगुप्सा १ इन च्यारिनिके बंधकी व्युच्छित्ति हो है। अर इहां ही छह नोकषायनिके उदयकी व्युच्छित्ति हो है। जहां उपरि समय संबंधी मात्र सर्वदा नीचले समय संबंधी भावनिके समान न होंइ सो कर्म नाश करनेवाला सार्थक नामका धारक अपूर्व करण जानना। याकौं समाप्त होतैं ताके अनंतर समय निज कालविषैं बादर कहिए अनिवृत्ति करण हो है॥ ४१०॥ ताका व्याख्यान करिए है—

अणियट्टिस्स य पढमे अण्णं ठिदिखंडपहुदिमारवई।
उवसामणा णिधत्ती णिकाचणा तत्थ वोछिण्णा॥

अनिवृत्तेश्च प्रथमे अन्यं स्थितिखंडप्रभृतिमारभते।
उपशामना निधात्तिः निकाचना तत्र व्युच्छिन्नाः॥ ४११॥

स० चं०— अनिवृत्तिकरणका प्रथम समयविषै और ही स्थिति खंडादिक प्रारंभिए है तहां अपूर्व करणका अंतसमयवर्तीतैं अन्यही पल्यका संख्यातवां भाग मात्र तौ स्थिति कांडकायाम हो है। अर यातैं पीछैं अवशेष रह्या जो अनुभाग ताका अनंत बहुभागमात्र और ही अनुभाग कांडक हो है। अर अपूर्व करणका अंत समय संबंधी स्थिति बंधतैं पल्यका संख्यातवां भागमात्र घटता और ही स्थिति बंध इहां हो है। बहुरि इहां ही अप्रशस्तोपशम १ निधात्ति १ निष्काचना १ इन तीन करणानिकी व्युच्छित्ति भई। अब सर्व ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्म उदय संक्रमण उत्कर्षण अपकर्षण करनेकौं योग्य भए ॥ ४११ ॥

बाहरपढमे पढमं ठिदिखंडं विसरिसं तु विदियादि।
ठिदिखंडयं समाणं सव्वस्स समाणकालम्हि ॥

बादरप्रथमे प्रथमं स्थितिखंडं विसदृशं तु द्वितीयादि।
स्थितिखंडकं समानं सर्वस्य समानकाले ॥ ४१२ ॥

स० चं– अनिवृत्ति करणका प्रथम समयविषै पहला स्थिति खंड है सो तो विसदृश है नाना जीवनिकैं समान नाहीं है। बहुरि द्वितीयादि स्थिति खंड हैं ते समान कालविषै सर्व जीवनिके समान हैं। अनिवृत्ति करण माढें जिनकौं समान काल भया तिनकैं परस्पर द्वितीयादि स्थिति कांडक आयामका समान प्रमाण जानना ॥ ४१२ ॥

पल्लस्स संखभागं अवरं तु वरं तु संखभागहियं।
घादादिमठिदिखंडो सेसा सव्वस्स सरिसा हु ॥

पल्यस्य संख्यभागं अवरं तु वरं तु संख्यभागाधिकम्।
घातादिमस्थितिखंडः शेषाः सर्वस्य सदृशा हि॥ ४१३ ॥

स० चं–सो प्रथम स्थितिखंड जघन्य तो पल्यका संख्यातवां भागमात्र है। उत्कृष्ट ताका संख्यातवां भाग करि अधिक है। बहुरि अवशेष द्वितीयादि स्थिति खंड सर्व जीवनिकैं समान हो हैं। इहां कारण कहिए है–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोई जीवकैं स्थिति सत्व स्तोक है। कोईकैं तातैं संख्यातवां भाग करि अधिक है तातैं स्थिति सत्वके अनुसारि स्थिति कांडक भी कोईकैं जघन्य कोईकैं उत्कृष्ट हो है सो अपूर्व करणका प्रथम समयतैं लगाय अनिवृत्ति करणविषैं यावत् प्रथम खंडका घात न होइ तावत् ऐसैं ही संभवै है। बहुरि तिस प्रथम कांडकका घात भएं पीछैं समान समयनिविषैं प्राप्त सर्व जीवानिकैं स्थिति सत्वकी समानता हो है तातैं द्वितीयादि स्थिति कांडक आयामनिकी भी समानता जाननी ॥ ४१३ ॥

उदधिसहस्सपुधत्तं लक्खपुधत्तं तु बंध संतो य।
अणियट्टीसादीए गुणसेढीपुव्वपरिसेसा ॥ ४१४ ॥

उदधिसहस्रपृथक्त्वं लक्षपृथक्त्वं तु बंधः सत्त्वं च।
अनिवृत्तेरादौ गुणश्रेणी पूर्वपरिशेषा ॥ ४१४ ॥

स०चं०– अनिवृत्ति करणका प्रथम समयविषैं पूर्वैं स्थितिबंध अंतःकोटाकोटि सागर प्रमाण था सो अपूर्वकरण विषैं भए संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण तिनकरि घटता होइ पृथक्त्व हजार सागर प्रमाण स्थितिबंध भया। बहुरि पूर्वैं स्थितिसत्व अंतःकोटाकोटि सागर प्रमाण था सो अपूर्व करण विषै भए संख्यात हजार स्थिति कांडक घात तिनकरि घटता होइ पृथक्त्व लक्षसागर प्रमाण स्थिति सत्व भया। बहुरि गुणश्रेणि आयाम इहां अपूर्व करण काल व्यतीत भए पीछैं जो अवशेष रह्या सो इहां जानना। समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं पूर्ववत् गुणश्रेणी अर गुणसंक्रम वर्तै है ॥ ४१४ ॥ आगे स्थिति बंधापसरणका क्रम कहिए है –

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठिदिबंधसहस्सगदे संखेज्जा बादरे गदा भागा।
तत्थासण्णिस्सट्ठिदिसरिसं ठिदिबंधणं होदि॥

स्थितिबंधसहस्रगते संख्येया बादरे गता भागाः।
तत्रासंज्ञिनः स्थितिसदृशं स्थितिबंधनं भवति ॥ ४१५ ॥

स०चं०-ऐसैं प्रथम समय विषैं कह्या अनुक्रम लीएं एक स्थिति बंधापसरण करि स्थितिबंध घटनेतैं एक स्थिति बंध होइ ऐसैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं अनिवृत्ति करणके कालका संख्यात भागनिविषै बहु भाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रह्या तहां असंज्ञी पंचेंद्री समान स्थिति बंध हो है सो हजार सागरके चारि सातवां भाग मात्र मोहका, तीन सातवां भाग मात्र तसीयनिका, दोय सातवां भाग मात्र वीसीयनिका स्थितिबंध हो है। चालीस तीस वीस कोडाकोडी सागरस्थितिकी अपेक्षा चारित्र मोहका नाम चालीसीय अर ज्ञानावरणादि च्यारिका नाम तीसीय, नाम गोत्रका नाम वीसीय जानना ॥ ४१५ ॥

ठिदिबंधसहस्सगदे पत्तेयं चदुरतियविएइंदी।
ठिदिबंधसमं होदि हु ठिदिबंधमणुक्कमेणेव॥

स्थितिबंधसहस्रगते प्रत्येकं चतुस्त्रिद्विएकेंद्री।
स्थितिबंधसमं भवति हि स्थितिबंधमनुक्रमेणैव ॥ ४१६ ॥

स० चं– पूर्वोक्त क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबंध प्रत्येक भएं अनुक्रमतैं चौंद्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेंद्री वेंद्री एकेंद्री समान स्थितिबंध हो है। तहां चौंद्री समान तौ सौ सागरका अर तेंद्री समान पचास सागरका, वेंद्री समान पचीस सागरका, एकेंद्री समान एक सागरका च्यारि सातवां भागमात्र तौ मोहका, तीन सातवां भागमात्र तीसीयनिका, दोय सातवां भागमात्र वीसीयनिका स्थितिबंध हो है। तहां एकेंद्री वेंद्री तेंद्री चौंद्री असंज्ञीकैं सत्तर कोडाकोडी उत्कृष्ट स्थितिका धारक जो मिथ्यात्व ताका क्रमतैं एक पचीस पचास सौ हजार सागरका स्थितिबंध होइ तौ चालीस तीस बीस कोडाकोडी उत्कृष्ट स्थितिका धारक जो मोह अर ज्ञानावरणादि अर नाम गोत्र तिनका केता बंध होइ ऐसैं त्रैराशिक कीएं पूर्वोक्त स्थितिबंधका प्रमाण आवै है। ऐसैं ही त्रैराशिकका क्रम आगैं भी जानना ॥ ४१६ ॥

एइंदियट्ठिदीदो संखसहस्से गदे हु ठिदिबंधे।
पल्लेकदिवड्ढदुगं ठिदिबंधो वीसियतियाणं ॥ ४१७ ॥

एकेंद्रियस्थितितः संख्यसहस्रे गते हि स्थितिबंधे।
पल्यैकद्व्यर्धद्विकं स्थितिबंधः वीसियत्रिकाणाम् ॥ ४१७ ॥

स० चं– एकेंद्रिय समान स्थितिबंधतैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध गएं वीसीयनिका एक पल्य, तीसीयनिका ड्योढ पल्य, मोहका दोय पल्यमात्र स्थितिबंध हो है ॥ ४१७ ॥

तक्काले ठिदिसंतं लक्खपुधत्तं तु होदि उवहीणं।
बंधोसरणा बंधो ठिदिखंडं संतमोसरदि ॥ ४१८ ॥ ४३१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्काले स्थितिसत्त्वं लक्षपृथक्त्वं तु भवति उदधीनाम्।
बंधापसरणं बंधः स्थितिखंडं सत्त्वमपसरति ॥ ४१८ ॥

स० चं– तिस कालविषै कर्मनिका स्थिति सत्व पृथक्त्व लक्षसागर प्रमाण हो है सो अनिवृत्ति करणका प्रथम समय सम्बन्धी स्थितिबंधतैं संख्यातगुणा घाटि जानना। बहुरि सर्वत्र ऐसा जानना– स्थितिबंधापसरणनिकरि स्थितिबंध घटै है अर स्थितिकांडकनिकरि स्थिति सत्व घटै है ॥ ४१८ ॥

पल्लस्स संखभागं संखगुणूणं असंखगुणहीणं।
बंधोसरणे पल्लं पल्लासंखं असंखवस्संति ॥ ४१९ ॥

पल्यस्य संख्यभागं संख्यगुणोनमसंख्यगुणहीनम्।
बंधापसरणे पल्यं पल्यासंख्यं असंख्यवर्षमिति ॥ ४१९ ॥

स० चं– पल्यका संख्यातवां भाग अर पूर्व बंधतैं संख्यातगुणा घटता अर असंख्यातगुणा घटता प्रमाण लीएं स्थितिबंधापसरणनिकरि पल्यमात्र अर पल्यका असंख्यातवां भागमात्र अर असंख्यात वर्षमात्र स्थितिबंध हो है। भावार्थ–पल्यमात्र स्थितिबंध होने पर्यंत तौ पल्यका संख्यातवां भागमात्र स्थितिबंधापसरण जानना। तहां पूर्व स्थितिबंधतैं अनंतरि स्थितिबंध किछू विशेष घटता हो है। बहुरि तातैं परैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र जो दूरापकृष्टि नामा स्थितिबंध ताके होने पर्यंत पल्यकौं संख्यातका भाग दीएं तहां एक भाग विना बहुभागमात्र स्थितिबंधापसरण जानना। तहां पूर्व स्थितिबंधतैं अनंतर स्थि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिबंध संख्यातगुणा घटता हो है। बहुरि तातैं परैं असंख्यात हजार वर्षमात्र स्थितिबंध होने पर्यंत पल्यकौं असंख्यातका भाग दीएं तहां एक भाग बिना बहुभागमात्र स्थितिबंधापसरण जानना। तहां पूर्व स्थितिबंधतैं अनंतर स्थितिबंध असंख्यातगुणा घटता हो है। ऐसैं एक एक स्थितिबंधापसरणविषै स्थितिबंध घटाएं अवशेष स्थितिबंध रहै हैं। तहां पूर्व स्थितिबंधतैं अनंतर स्थितिबंध किछू विशेष घटता हो है। बहुरि याही प्रकार प्रमाण लीएं स्थिति कांडकनिकरि स्थिति सत्वकौं घटाइ पल्यादिमात्र स्थितिसत्वका होना जानना ॥

एवं पल्लं जादा वीसीया तीसिया य मोहो य।
पल्लासंखं च कमं बंधेण य वीसियतियाओ ॥

एवं पल्यं जाते वीसिया तिसीया च मोहश्च।
पल्यासंख्यं च क्रमेण बंधेन च वीसियत्रिकाः ॥ ४२० ॥

स० चं– ऐसैं वीसीयनिका पल्यमात्र स्थितिबंध भया तहां पर्यंत तौ वीसीयनिकेतैं ड्योढा तीसीयनिका अर दूणा मोहका स्थितिबंध है। ऐसा ही क्रम जानना। बहुरि ताके अनंतरि एक स्थितिबंधापसरण होनेकरि वीसीयनिका तौ स्थितिबंध संख्यातगुणा घटता भया। पल्यकौं संख्यातका भाग दीएं तहां बहुभाग घटाएं एक भागमात्र स्थितिबंध रह्या बहुरि अन्य कर्मनिका पल्यमात्र स्थितिबंध न भया है तातैं पूर्व बंधतैं पल्यका संख्यातवां भागमात्र विशेषकरि हीन स्थितिबंध भया। तहां वीसीयनिका स्तोक स्थितिबंध है। तातैं तीसीयनिका संख्यातगुणा है। जातैं इहां वीसीयनिका तौ पल्यके संख्यातवे भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भया अर तीसीयनिका साधिक पल्यमात्र है। बहुरि तीसीयनिकेतैं मोहका विशेष अधिक है। ऐसैं अल्पबहुत्व हुआ। इस क्रमकरि संख्यात हजार स्थितिबंध भएं तीसीयनिका पल्यमात्र स्थितिबंध भया। तहां तातैं तीसरा भाग अधिक मोहका स्थितिबंध हो है जातैं तीसीयका पल्यमात्र स्थितिबंध होइ तौ चालीसियका केता होइ ऐसैं त्रैराशिककरि त्रिभाग अधिक पल्यमात्र मोहका स्थितिबंध आवै है। बहुरि याके अनंतरि तीसीयनिका पल्यका संख्यात बहुभागमात्र एक स्थितिबंधापसरणकरि पूर्व स्थितिबंधतैं संख्यातगुणा घटता स्थितिबंध हो है। तहां नाम गोत्रका स्तोक तातैं तीसीयनिका संख्यातगुणा तातैं मोहका संख्यात गुणा स्थितिबंध हो है। इहां वा आगैं अल्पबहुत्व यथासम्भव स्थितिबंधापसरण होनेतैं संभवै है सो विचारैं प्रगट भासै है।

बहुरि इस अनुक्रमतैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं मोहका पल्यमात्र स्थितिबंध हो है। तहां अवशेष छह कर्मनिका स्थितिबंध पल्यके संख्यातवे भागमात्र हो है। ऐसैं वीसीय तीसीय मोहका पल्यमात्र स्थितिबंध होनेका क्रम जानना। बहुरि ताके अनंतरि मोहका पल्यका संख्यात बहुभागमात्र एक स्थितिबंधापसरण भया तब सातौं ही कर्मनिका स्थितिबंध पल्यके संख्यातवे भागमात्र भया। तहां नाम गोत्रका स्तोक तातैं तीसीयनिका संख्यातगुणा तातैं मोहका संख्यातगुणा स्थितिबंध जानना। बहुरि ऐसैं अनुक्रमकरि संख्यात हजार स्थितिबंध भएं नाम गोत्रका दूरापकृष्टि नामा पल्यका संख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध हो है। बहुरि ताके अनंतरि पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र एक स्थितिबंधापसरण होनेतैं नाम गोत्रका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध हो है तहां अन्य कर्मनिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पल्यके संख्यातवे भागमात्र ही स्थितिबंध है जातैं इनकैं दूरापकृष्टिका उलंघन होनेतैं स्थितिबंधापसरण पल्यके संख्यात बहुभागमात्र ही है। तहां नाम गोत्रका स्तोक तातैं तीसीयनिका असंख्यातगुणा तातैं मोहका संख्यातगुणा स्थितिबंध जानना। बहुरि इस क्रमतैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं तीसीयनिका स्थितिबंध दूरापकृष्टिकौं उलंघि पल्यके असंख्यातवे भागमात्र भया। तहां नाम गोत्रका स्तोक तातैं तीसीयनिका असंख्यातगुणा तातैं मोहका असंख्यातगुणा स्थितिबंध है। बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं मोहका भी पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध भया। तहां सर्व ही कर्मनिका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र स्थितिबंध हो है। ऐसैं वीसीय तीसीय चालीसीयनिका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र स्थितिबंध क्रमतैं हो है॥ ४२०॥

उदधिसहस्सपुधत्तं अब्भंतरदो दु सदसहस्सस्स।
तक्काले ठिदिसंतो आउगवज्जाण कम्माणं॥

उदधिसहस्रपृथक्त्वं अभ्यंतरतस्तु शतसहस्रस्य।
तत्काले स्थितिसत्त्वं आयुर्वर्जितानां कर्मणाम्॥ ४२१॥

स॰ चं॰– तिस मोहनीयका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध होनेके कालविषे आयु विना अन्य कर्मनिका स्थिति सत्व पृथक्त्व हजार सागर प्रमाण हो है सो पृथक्त्व हजार शब्दकरि इहां लक्षके माही यथासम्भव प्रमाण जानना। पूर्वै पृथक्त्व लक्ष सागरका स्थितिसत्व था सो कांडक घातनिकरि इहां इतना रह्या है॥ ४२१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहगपल्लासंखट्ठिदिबंधसहस्सगेसु तीदेसु ।
मोहो तीसिय हेट्ठा असंखगुणहीणयं होदि ॥४२२॥

मोहगपल्यासंख्यस्थितिबंधसहस्रकेष्वतीतेषु ।
मोहः तीसियं अधस्तना असंख्यगुणहीनकं भवति ॥ ४२२ ॥

स० चं– मोहका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र स्थितिबंध भया तिस कालविषै नाम गोत्रका स्तोक तातैं तीसीयनिका असंख्यातगुणा तातैं मोहका असंख्यातगुणा स्थितिबंध हो है। बहुरि ऐसा अल्पबहुत्व लीएं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं नाम गोत्रका स्तोक तातैं मोहका असंख्यातगुणा तातैं तीसीयानिका असंख्यातगुणा ऐसैं अन्य प्रकार स्थितिबंध हो है। इहां विशुद्धताके निमित्ततैं तीसीयनिके नीचैं अति अप्रशस्त जो मोह ताका स्थितिबंध असंख्यातगुणा घटता भया ॥ ४२२ ॥

तत्तियमेत्ते बंधे समतीदे वीसियाण हेट्ठादु ।
एक्कसराहे मोहे असंखगुणहीणयं होदि ॥ ४२३ ॥

तावनमात्रे बंधे समतीते वीसियानां अधस्तात् ।
एकसमये मोहोऽसंख्यगुणहीनको भवति ॥ ४२३ ॥

स० चं०— बहुरि ऐसा अल्पबहुत्वका क्रम लीएं तितने ही संख्यात हजार स्थितिबंध भएं एकहीबार अन्य प्रकार स्थितिबंध भया तहां मोहका स्तोक तातैं नाम गोत्रका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असख्यातगुणा तातैं च्यारयो तीसीयानिका असंख्यातगुणा स्थितिबंध हो है । इहां विशुद्धताके बलतैं अति अप्रशस्त मोहका स्थितिबंध वीसियानिके नीचैं असंख्यातगुणा घटता भया ॥ ४२३ ॥

तेत्तियमेत्ते बंधे समतीदे वेदणीयहेट्ठादु ।
तीसियघादितियाओ असंखगुणहीणया होंति ॥

तावन्मात्रे बंधे समतीते वेदनीयाधस्तात् तु ।
तीसियघातित्रिका असंख्यगुणहीनका भवंति ॥ ४२४ ॥

स० चं–बहुरि ऐसा क्रम लीएं तितने ही संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं और ही प्रकार स्थितिबंध भया तहां मोहका स्तोक तातैं नाम गोत्रका असंख्यातगुणा तातैं तीन घातियानिका असंख्यातगुणा तातैं वेदनीयका असंख्यातगुणा स्थितिबंध हो है । इहां विशुद्धतातैं तीसीयानिविषै भी वेदनीयतैं नीचैं अप्रशस्त तीन घातिया कर्मनिका असंख्यातगुणा घटता स्थितिबंध भया ॥ ४२४ ॥

तेत्तियमेत्ते बंधे समतीदे वीसियाण हेट्ठा दु ।
तीसियघादितियाओ असंखगुणहीणया होंति ॥

तावन्मात्रे बंधे समतीते वीसियानामधस्तात् तु ।
तीसियघातित्रिका असंख्यगुणहीनका भवंति ॥ ४२५ ॥ ५०५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– बहुरि ऐसा क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं तहां अन्त स्थितिबंधतैं अन्य प्रकार स्थितिबंध भया। तहां मोहका स्तोक तातैं तीन घातियानिका असंख्यातगुणा तातैं नाम गोत्रका असंख्यातगुणा तातैं वेदनीयका साधिक स्थितिबंध हो है। इहां विशुद्धताके बलतैं वीसीयानिके नीचैं आति अप्रशस्त तीन घातिया कर्मनिका असंख्यातगुणा घटता स्थितिबंध हो है ॥ ४२५ ॥

तक्काले वेयणियं णामागोदाउ साहियं होदि।
इदि मोहतीसवीसियवेयणियाणं कमो बंधे ॥

तत्काले वेदनीयं नामगोत्रात् साधिकं भवति।
इति मोहतीसियवीसियवेदनीयानां क्रमो बंधे ॥ ४२६ ॥

स० चं०— तिस कालविषै वेदनीयका स्थितिबंध नाम गोत्रके स्थितिबंधतैं साधिक है। ताका आधा प्रमाणकरि अधिक हो है जातैं वीसीयनिका स्थितिबंधतैं तीसीयनिका स्थितिबंध ड्योढ गुणा त्रैराशिककरि सिद्ध हो है। ऐसैं मोह तीसीय वीसीय वेदनीयका क्रमतैं बंध भया सोई क्रमकरण जानना। नाम गोत्रतैं वेदनीयका ड्योढा स्थितिबंध रूप क्रम लीएं अल्पबहुत्व होना सोई क्रमकरण कहिए है ॥ ४२६ ॥ आगैं स्थिति सत्त्वापसरण कहिए है—

बंधे मोहादिकमे संजादे तत्तियेहिं बंधेहिं।
ठिदिसंतमसण्णिसमं मोहादिकमं तहा संते ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधे मोहादिक्रमे संजाते तावद्भिर्बंधैः ।
स्थितिसत्त्वमसंज्ञिसमं मोहादिक्रमं तथा सत्वे ॥ ४२७ ॥

स० चं— बहुरि मोहादिका क्रम लीएं जो क्रमकरण रूप बंध भया तातैं परैं इस ही क्रम लीएं तितने ही संख्यात हजार स्थितिबंध भएं असंज्ञी पंचेंद्री समान स्थिति सत्व हो है। बहुरि तातैं परैं जैसैं मोहादिकका क्रमकरण पर्यंत स्थितिबंधका व्याख्यान कीया तैसैं ही स्थिति सत्वका होना अनुक्रमतैं जानना। तहां पल्य स्थिति पर्यंत पल्यका संख्यातवां भागमात्र तातैं दूरापकृष्टि पर्यंत पल्यका संख्यात बहुभागमात्र तातैं संख्यात हजार वर्ष स्थिति पर्यंत पल्यका असंख्यात बहुभागमात्र आयाम लीएं जे स्थितिबंधापसरण तिनकरि स्थितिबंधका घटना कह्या था तैसैं इहां तितने आयाम लीएं स्थिति कांडकनिकरि स्थिति सत्वका घटना हो है। बहुरि तहां संख्यात हजार स्थितिबंधका व्यतीत होना कह्या तैसैं इहां भी कहिए वा तहां तितने स्थिति कांडकनिका व्यतीत होना कहिए जातैं स्थितिबंधापसरणका अर स्थितिकांडकोत्करणका काल समान है। बहुरि तहां स्थितिबंध जहां कह्या था इहां स्थिति सत्व तहां कहना। बहुरि अल्पबहुत्व त्रैराशिक आदि विशेष बंधापसरणवत् ही इहां जानने। सो स्थिति सत्वका क्रम कहिए है—

प्रत्येक संख्यात हजार कांडक गएं क्रमतैं असंज्ञी पंचेंद्री चौंद्री तेंद्री वेंद्री एकेंद्रीनिकैं स्थितिबंधके समान कर्मनिका स्थिति सत्व हजार सौ पचास पचीस एक सागर प्रमाण हो है। बहुरि संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं वीसीयनिका पल्य, तीसीयनिका ड्योढ पल्य, मोहका दोय पल्य स्थिति सत्व हो है। तातैं परैं पूर्व सत्वका संख्यात बहुभागमात्र एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांडक भएं वीसीयनिका पल्यके संख्यात भागमात्र स्थिति सत्व भया तिस कालविषै वीसीयनिकेतैं तीसीयनिका संख्यातगुणा मोहका विशेष अधिक स्थितिसत्व भया। बहुरि इस क्रमतैं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं तीसीयनिका पल्यमात्र मोहका त्रिभाग अधिक पल्यमात्र स्थिति सत्व भया। ताके परैं एक कांडक भएं तीसीयनिका भी पल्यके संख्यातवे भागमात्र स्थिति सत्व भया। तिस समय वीसीयनिका स्तोक तातैं तीसीयनिका संख्यातगुणा तातैं मोहका संख्यातगुणा स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मोहका पल्यमात्र स्थिति सत्व हो है। बहुरि एक कांडक भएं मोहका भी पल्यके संख्यातवे भागमात्र स्थिति सत्व हो है। तीहिं समय सातौ कर्मनिका स्थिति सत्व पल्यके संख्यातवे भागमात्र भया। तहां वीसीयनिका स्तोक तीसीयनिका संख्यातगुणा तातैं मोहका संख्यातगुणा स्थिति सत्व हो है। तातैं परैं इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं वीसीयनिका स्थिति सत्व दूरापकृष्टिकौं उलंघि पल्यके असंख्यातवे भागमात्र भया तिस समय वीसीयनिका स्तोक तातैं तीसीयनिका असंख्यातगुणा तातैं मोहका संख्यातगुणा स्थिति सत्व हो है। तातैं परैं इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं तीसीयनिका स्थिति सत्व दूरापकृष्टिकौं उलंघि पल्यके असंख्यातवे भागमात्र भया तब सर्व ही कर्मनिका स्थिति सत्व पल्यके असंख्यातवे भागमात्र भया। तहां वीसीयनिका स्तोक तातैं तीसीयनिका असंख्यातगुणा तातैं मोहका असंख्यातगुणा स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस क्रमकरि संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं नाम गोत्रका स्तोक तातैं मोहका असंख्यातगुणा तातैं तीसीयनिका असंख्यातगुणा स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस क्रम लीएं सं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मोहका स्तोक तातैं वीसीयनिका असंख्यातगुणा तातैं तीसीयनिका असंख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मोहका स्तोक तातैं वीसीयनिका असंख्यात गुणा तातैं तीन घातियानिका असंख्यात गुणा तातैं वेदनीयका असंख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मोहका स्तोक तातैं तीन घातियानिका असंख्यातगुणा तातैं नाम गोत्रका असंख्यात गुणा तातैं वेदनीयका विशेष अधिक स्थिति सत्व हो है। ऐसैं अंतविषैं नाम गोत्रकातैं वेदनीय का स्थिति सत्व साधिक भया तब मोहादिकैं क्रम लीएं स्थितिसत्वका क्रमकरण भया ॥ २७ ॥

तीदे बंधसहस्से पल्लासंखेज्जयं तु ठिदिबंधे।
तत्थ असंखेज्जाणं उदीरणा समयबद्धाणं ॥४२८॥

अतीते बंधसहस्रे पल्यासंख्येयकं तु स्थितिबंधे।
तत्र असंख्येयानां उदीरणा समयबद्धानाम् ॥ ४२८ ॥

स०चं—बहुरि इस क्रम करणतैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं जो पल्यका असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध होइ ताकौं होत संतैं तहां असंख्यात समय प्रबद्धनिकी उदीरणा हो है। इहांतैं पहलैं अपकर्षण कीया द्रव्यकौं उदयावलीविषैं देनेके अर्थि असंख्यात लोक प्रमाण भागहार संभवै था तहां समय प्रबद्धके असंख्यातवां भाग मात्र उदीरणा द्रव्य था अब तहां पल्यका असंख्यातवां भाग प्रमाण भागहार होनेतैं असंख्यात समय प्रबद्ध मात्र उदीरणा द्रव्य भया ॥ ४२८ ॥ आगे क्षपणाधिकारका प्रारंभ हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठिदिबंधसहस्सगद अट्ठकसायाण होदि संकमगो।
ठिदिखंडपुधत्तेण य तट्ठिदिसंतं तु आवलियविद्धं ॥

स्थितिबंधसहस्रगते अष्टकषायाणां भवति संक्रमकः।
स्थितिखंडपृथक्त्वेन च तत्स्थितिसत्त्वं तु आवलिकविद्धं ॥ ४२१ ॥

स०चं—असंख्यात समय प्रबद्ध मात्र उदीरणा होनेतैं लगाय संख्यात हजार स्थितिकांडक व्यतीत भएं अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान क्रोध मान माया लोभ रूप आठ कषायनिका संक्रम होइ है। इहां संक्रमणका अर्थ यहु—क्षपणाका प्रारंभ हो है । ए अति अप्रशस्त थे तातैं पहलै इनकी क्षपणा संभवै है। सो इनका जो द्रव्य सो कितना एक क्षपणाका प्रारंभका प्रथम समयविषैं कितना एक दूसरा समयविषैं ऐसैं समय समय प्रति एक एक फालिका संक्रमण होते अन्तर्मुहूर्तके जेते समय तितनी फालि करि प्रथम कांडकका संक्रमण हो है। ऐसैंही द्वितिय कांडकका संक्रमण हो है। ऐसैं क्रमकरि संख्यात हजार स्थिति कांडकनिकरि आठ कषायनिके द्रव्यका च्यारि संज्वलन कषाय अर पुरुष वेदविषैं संक्रमण हो है। ऐसैं ए परमुखकरि नष्ट हो हैं । अन्य प्रकृति रूप होनेकरि जाका नाश होइ सो परमुख करि नष्ट कहिए। ऐसैं मोह राजाकी सेनाके नायक अष्ट कषाय तिनका अंत कांडकका नाश होतैं अवशेष स्थिति सत्व काल अपेक्षा आवली मात्र रहै है । अर निषेक अपेक्षा समय घाटि आवली मात्र रहै है। जातैं अंत कांडक घातके समयविषै प्रथम निषेकका स्वमुख उदय युक्त जो कोई संज्वलन तीहिविषै संक्रम होइ उदय हो है। बहुरि उदयावलीविषै प्राप्त निषेकका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांडकघात न होइ तातैं समय घाटि आवलीमात्र निषेक अंत फालिकी साथि नाहीं विनसै है ॥ ४२९ ॥

ठिदिबंधपुधत्तगदे सोलसपयडीण होदि संकमगो ।
ठिदिखंडपुधत्तेण य तट्ठिदिसंतं तु आवलिपविट्ठं ॥

स्थितिबंधपृथक्त्वगते षोडशप्रकृतीनां भवति संक्रमकः ।
स्थितिखंडपृथक्त्वेन च तत्स्थितिसत्त्वं तु आवलिप्रविष्टम् ॥ ४३० ॥

स०चं– यातैं ऊपरि पृथक्त्व कहिए संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं निद्रा निद्रा १ प्रचला प्रचला १ स्त्यानगृद्धि १ ए तीन दर्शनावरणकी अर नरक तिर्यंचगति वा आनुपूर्वी च्यारि ४ एकेंद्रियादि च्यारि जाति ४ आतप १ उद्योत १ स्थावर १ सूक्ष्म १ साधारण १ ए तेरह नाम कर्मकी ऐसैं सोलह प्रकृतिनिका संक्रमक हो है । क्षपणा प्रारंभका समयतैं लगाय समय समय प्रति इनके द्रव्यकौं पूर्वोक्त प्रकार एक फालिका संक्रमण होतैं प्रथम कांडक होइ ऐसैं संख्यात हजार स्थिति कांडकनिकरि संक्रमण हो है । तहां अंत कांडक घात होतैं अवशेष स्थिति सत्व काल अपेक्षा आवलीमात्र निषेक अपेक्षा समय घाटि आवली मात्र रहै है । ऐसैं इनका उदयावलीतैं वाह्य सर्व निषेक द्रव्यनिका द्रव्य है स्वजाती अन्य प्रकृतिनिविषैं संक्रमण होइ क्षयकौं प्राप्त हो है । अपनी जातिकी अन्य प्रकृतिनिकौं स्वजाती कहिए है । जैसैं स्त्यान गृद्धित्रिककी स्वजाती दर्शनावरणकी अन्य प्रकृति हैं ऐसैं अन्य जाननी । बहुरि यहांतैं लगाय पृथक्त्व शब्दका अर्थ संख्यात हजार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानना। या प्रकार इहां मोहकी तौ आठका नाश भएं तेरहका सत्व रह्या अर दर्शनावरणकी तीनका नाश भएं छहका सत्व रह्या अर नामकी तेरहका नाश भएं असी प्रकृति का सत्व रह्या। ज्ञानावरण वेदनीय गोत्र अंतरायनिविषैं किसी प्रकृतिका नाश न भया ॥ ४३० ॥ आगैं देशघाति करण कहिए है—

ठिदिबंधपुधत्तगदे मणदाणा तत्तियेवि ओहि दुगं।
लाभं च पुणोवि सुदं अचक्खुभोगं पुणो चक्खु॥
पुणरवि मदिपरिभोगं पुणरवि विरयं कमेण अणुभागो
बंधेण देसघादी पल्लासंखं तु ठिदिबंधो ॥ ४३२ ॥

स्थितिबंधपृथक्त्वगते मनोदाने तावत्यपि अवधिद्विकम्।
लाभश्च पुनरपि श्रुतं अचक्षुर्भोगं पुनः चक्षुः ॥ ४३१ ॥
पुनरपि मतिपरिभोगं पुनरपि वीर्यं क्रमेण अनुभागः।
बंधेन देशघातिः पल्यासंख्यस्तु स्थितिबंधः ॥

स० चं— मनः पर्यय आदि बारह प्रकृतिनिका पूर्वैं सर्वघाती द्विस्थानगत अनुभाग बंध होता था इहांतैं परैं देश घाति दारु लतारूप द्विस्थानगत अनुभाग बंध होने लागा सो देश घाती करण है। सोई कहिए है—

सोलह प्रकृति संक्रमणतैं परैं पृथक्त्व संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मनःपर्यय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानावरण अर दानांतरायका बहुरि तितने स्थिति कांडक व्यतीत भएं अवधिज्ञानावरण अवधि दर्शनावरण लाभांतरायका बहुरि तितने स्थिति कांडक भएं श्रुतज्ञानावरण अचक्षु दर्शनावरण भोगांतरायका बहुरि तितने स्थिति कांडक भएं चक्षुदर्शनावरणका बहुरि तितने स्थिति कांडक भएं मतिज्ञानावरण उपभोगांतरायका बहुरि तितने स्थिति कांडक भएं वीर्यांतरायका अनुभाग बंध देश घाती हो है। पुरुषवेद संज्वलन कषायका पूर्वै संयता-संयत आदि विषै ही देश घाती अनुभागबंध भया तातैं इहां न कह्या। इस अवसर विषैं स्थितिबंध यथासंभव पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र ही जानना॥ ४३१-४३२ ॥ आगे अंतर करण काहिए है–

ठिदिखंडसहस्सगदे चदुसंजलणाण णोकसायाणं ।
एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरं कुणइ ॥ ४३३ ॥

स्थितिखंडसहस्रगते चतुःसंज्वलनानां नोकषायाणां ।
एकस्थितिखंडोत्कीरणकाले अंतरं करोति ॥ ४३३ ॥

स० चं०– देशघाती करणतैं परैं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं च्यारि संज्वलन अर नव नोकषाय इनका अंतर करै है। औरनिका अंतर न हो है। नीचले ऊपरले निषेकनिकौं छोडि अंतर्मुहूर्त मात्र वीचिके निषेकनिका अभाव करना सो अंतर करना जानना तहां अंतर करणकालका प्रथम समयविषैं पूर्वतैं अन्य प्रमाण लीएं स्थिति कांडक अनुभाग कांडक स्थिति बंध हो है। बहुरि एक स्थिति कांडकोत्करणका जितना काल तितने काल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि अंतरकौं पूर्ण करै है। इस कालके प्रथमादि समयनिविषैं तिन निषेकनिका द्रव्यकौं अन्य निषेकनिविषै निक्षेपण करै है ॥ ४३३ ॥

संजलणाणं एक्कं वेदाणेक्कं उदेदि तद्दोण्हं ।
सेसाणं पढमट्ठिदिं ठवेदि अंतोमुहुत्तआवलियं ॥

संज्वलनानामेकं वेदानामेकमुदेति तद्द्वयोः ।
शेषाणां प्रथमस्थितिं स्थापयति अंतर्मुहूर्तमावलिकां ॥ ४३४ ॥

स० चं०— संज्वलन चतुष्कविषैं कोई एक अर तीनौं वेदनिविषैं कोई एक ऐसैं उदयरूप दोय प्रकृतिनिकी तौ अंतर्मुहूर्तमात्र प्रथम स्थिति स्थापै है। इन विना जिनका उदय न पाइए ऐसी ग्यारह प्रकृतिनिकी आवलीमात्र प्रथम स्थिति स्थापै है। जैसैं पुरुषवेद अर क्रोधका उदय सहित श्रेणी माडी ताकैं इनि दोऊनिकी तौ अंतर्मुहूर्तमात्र औरानिकी आवलीमात्र प्रथम स्थिति स्थापै है सो वर्तमान समय संबंधी निषेकतैं लगाय प्रथम स्थिति प्रमाण निषेकनिकौं नीचैं छोडि इनके ऊपरि निषेकनिका अंतर करै है ॥ ४३४ ॥

उक्कीरिदं तु दव्वं संत्ते पढमट्ठिदिम्हि संथुहदि ।
बंधेवि य आबाधमदित्थिय उक्कड्डदे णियमा ॥

अपकर्षितं तु द्रव्यं सत्त्वे प्रथमस्थितौ संस्थापयति ।
बंधेपि च आबाधामतिक्रम्योत्कर्षति नियमात् ॥ ४३५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०— तिनि अंतर रूप निषेकानिके द्रव्यकौं अंतर करण कालका प्रथम समयविषैं ग्रह्या सो प्रथम फालि यातैं असंख्यातगुणा दूसरे समय ग्रह्या सो द्वितीय फालि ऐसैं असं-ख्यात गुणा क्रम लीएं अंतर्मुहूर्तमात्र फालिनिकरि सर्व द्रव्य अन्य निषेकानिविषैं निक्षेपण करै है। अंतररूप निषेकानिविषैं नाही निक्षेपण करै है। कहां निक्षेपण करिए सो कहिए है—

बंध उदय रहित वा केवल बंध सहित उदय राहित जे प्रकृति तिनिकी प्रथम स्थिति समय घाटि आवलीमात्र कही तिनके द्रव्यकौं अपकर्षण करि उदयरूप अन्य प्रकृतिनिकी प्रथम स्थितिविषैं संक्रमणरूप करि निक्षेपण करै है। अर बंध उदय रहित प्रकृतिनिका द्रव्यकौं अपनी द्वितीय स्थितिविषैं नाहीं निक्षेपण करै है जातैं बंध विना उत्कर्षण होना संभवै नाहीं बहुरि केवल बंध सहित प्रकृतिनिका द्रव्यकौं उत्कर्षण करि अपना द्वितीयस्थितिविषैं नि-क्षेपण करै है वा बंधती जो अन्य प्रकृति ताकी द्वितीय स्थितिविषै संक्रमण रूप करि नि-क्षेपण करै है। बहुरि जे प्रकृति केवल उदय सहित हैं वा बंध उदय सहित हैं तिनकी प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्तमात्र कही तिनविषैं जे केवल उदय सहित ही हैं तिनका द्रव्यकौं अपकर्षण करि अपनी प्रथम स्थितिविषैं निक्षेपण करै है। अन्य प्रकृतिनिका भी द्रव्य इनकी प्रथम स्थितिविषैं संक्रमण रूप निक्षेपण करिए है। बहुरि इनका द्रव्य है सो उत्कर्षण करि बंधती जे अन्य प्रकृति तिनकी अंतरायामतैं संख्यातगुणा जो आबाधा ताकौं छोडि द्वितीय स्थितिविषैं जो जघन्य निषेक तीहिंस्यों लगाय बंधती स्थितिके सर्व निषेकानिविषैं निक्षेपण करिए है। केवल उदयमान प्रकृतिनिका द्रव्य अपना द्वितीय स्थिति विषैं नाही निक्षेपण क-रिए है। बहुरि बंध उदय सहित प्रकृतिनिके द्रव्यकौं प्रथम स्थितिविषै वा बंधती द्वितीय स्थितिनिविषैं निक्षेपण करिए है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां अंतरायामके नीचैं निषेकरूप तौ प्रथम स्थिति अर अंतरायामके उपरिवर्ती निषेक रूप द्वितीय स्थिति जाननी। तहां छह तौ नोकषाय अर पुरुषवेद सहित श्रेणी चढ्याकैं तौ अन्य दोय वेद अर स्त्रीवेद सहित श्रेणी चढ्याकैं नपुंसक वेद अर नपुंसकवेद सहित श्रेणी चढ्याकैं स्त्रीवेद ए तौ बंध उदय रहित हैं। बहुरि स्त्री वा नपुंसकवेद सहित श्रेणी चढ्याकैं पुरुष वेद है सो अर सवनिकैं जिस कषाय सहित श्रेणी चढ्या तींहि विना तीन संज्वलन कषाय ए उदय रहित केवल बंध सहित हैं। बहुरि स्त्री वा नपुंसक वेद सहित चढ्या जीवकैं स्त्री वा नपुंसक वेद केवल उदय सहित हैं बहुरि पुरुष वेद सहित श्रेणी चढ्याकैं पुरुष वेद अर सवनिकैं जिस कषाय सहित श्रेणी चढ्या सो कषाय ए बंध उदय सहित हैं। सो इनका अंतर रूप निषेकनिका द्रव्यकौं पूर्वोक्त प्रकार सत्त्वविषै अपकर्षण करि तौ प्रथम स्थितिविषैं अर उत्कर्षण कीएं आबाधा छोडि बंधरूप स्थितिविषैं निक्षेपण करिए है। इस अंतर करण कालविषैं अनुभाग कांडक हजारौं हो हैं। अर स्थिति कांडक अर समान स्थिति बंध अर अंतर करण इन तीनौंका काल समान है तातैं युगपत् समाप्त हो हैं ॥ ४३५ ॥ आगैं संक्रमण कहिए है—

सत्त करणाणि यंतरकदपढमे ताणि मोहणीयस्स।
इगिठाणियबंधुदओ तस्सेव य संखवस्सठिदिबंधो ॥
तस्साणुपुव्विसंकम लोहस्स असंकमं च संढस्स। ५१६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवेत्तकरणसंकम छावलितीदेसुदीरणदा ॥ ४३७ ॥

सप्तकरणानि अंतरकृतप्रथमे तानि मोहनीयस्य।
एकस्थानिकबंधोदयौ तस्यैव च संख्यवर्षस्थितिबंधः ॥ ४३६ ॥
तस्यानुपूर्विसंक्रमं लोभस्यासंक्रमं च षंढस्य।
आवृत्तकरणसंक्रमं षडावल्यतीतेषूदीरणता ॥ ३७ ॥

स० चं०– अंतर जानैं कीया ऐसा अंतरकृत जीव ताकैं प्रथम समयविषै सात करणनिका प्रारंभ भया। ते कहिए हैं—

मोहनीयका बंध उदय हैं सो दारुपना छोडि केवल लतारूप एक स्थानगत भए ए दोय करण बहुरि तिस ही मोहनीयका स्थितिबंध पल्यका असंख्यातवां भाग प्रमाणतैं घटि संख्यात वर्षमात्र भया एक यहु करण, बहुरि मोह प्रकृतिनिका पूर्वैं जहां तहां स्वजातीय प्रकृतिनिविषै संक्रमण होता था अब आगैं कहिए है तैसैं आनुपूर्वी संक्रमण होइ अन्यथा न होइ एक यहु करण, बहुरि पूर्वैं लोभका अन्य प्रकृतिनिविषै संक्रमण होता था अब न होइ एक यहु करण, बहुरि नपुंसकवेदका आवृत्त करण संक्रमण भया याकौं अन्य प्रकृतिरूप परिणमाइ नाश करनेका उद्यमी भया एक यहु करण, बहुरि पूर्वैं कर्म बंध पीछैं आवली व्यतीत भएं ही उदीरणा होती थी अब छह आवली व्यतीत भएं पीछैं ही उदीरणा होइ यहु एक करण, इन सात करणनिका अंतर करनेके अनंतर समयविषै युगपत् प्रारंभ भया ॥ ४३६–४३७ ॥

संछुहदि पुरिसवेदे इत्थीवेदं णउंसयं चेव। ५१७

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्तेव णोकसाए णियमा कोहम्हि संछुहदि ॥
कोहं च छुहदि माणे माणं मायाए णियमि संछुहदि।
मायं च छुहदि लोहे पडिलोमो संकमो णत्थि ॥

संक्रामति पुरुषवेदे स्त्रीवेदं नपुंसकं चैव ।
सप्तैव नोकषायान् नियमात् क्रोधे संक्रामति ॥ ४३८ ॥

क्रोधश्च क्रामति माने मानो मायायां नियमेन संक्रामति ।
माया च क्रामति लोभे प्रतिलोमः संक्रमो नास्ति ॥ ४३९ ॥

स० चं– स्त्रीवेद अर नपुंसकवेदका द्रव्य तौ पुरुषवेदविषै संक्रमण करै है । पुरुषवेद छह हास्यादि ऐसैं सात नोकषायनिका द्रव्य संज्वलन क्रोधविषै संक्रमण करै है। क्रोधका द्रव्य मानविषै संक्रमण करै है। मानका द्रव्य मायाविषै संक्रमण करै है । मायाका द्रव्य लोभविषै संक्रमण करै है ऐसैं संक्रमणकरि अन्य रूप परिणमि आप नाशकौं प्राप्त हो है यहु आनुपूर्वी संक्रमण जानना। प्रतिलोम कहिए अन्यथा प्रकार संक्रमण अब न हो है । इहांतैं आगैं स्थितिबंधतैं संख्यातगुणा घाटि स्थितिबंधापसरणका प्रमाण मोहनीयका भया जातैं संख्यात वर्ष स्थितिबंध होनेतैं परैं स्थितिबंधापसरणका प्रमाण स्थितिबंधतैं संख्यातगुणा घटता हो है। अर बत्तीस वर्षमात्र स्थितिबंध भएं पीछैं स्थितिबंधापसरणका प्रमाण अंतर्मुहूर्तमात्र हो है ऐसी व्याप्ति सर्वत्र जाननी ॥ ४३८–४३९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठिदिबंधसहस्सगदे संढो संकामिदो हवे पुरिसे ।
पडिसमयमसंखगुणं संकामगचरिमसमओत्ति ॥

स्थितिबंधसहस्रगते षंढः संक्रामितो भवेत् पुरुषे ।
प्रतिसमयमसंख्यगुणं संक्रामकचरमसमय इति ॥ ४४० ॥

स० चं– अंतर करणके अनंतर समयतैं लगाय संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं नपुंसक वेद है सो पुरुषवेदविषै संक्रमित हो है । नपुंसकवेदकी क्षपणाका प्रथम समयतैं लगाय समय समय प्रति असंख्यातगुणा क्रम लीएं संक्रम कालका अंतसमयविषै नपुंसक वेदके द्रव्यका पुरुषवेदविषै संक्रमण हो है । सो समय समयविषै जेता द्रव्य संक्रमण भया सो फालि है अर अंतर्मुहूर्तमात्र फालिनिका समूह रूप कांडक है सो ऐसैं गुणसंक्रमणरूप अनुक्रमतैं संख्यात हजार कांडक भएं अंतसमयविषै जो अंतकांडककी अंत फालि ताकौं सर्व संक्रमणकरि संक्रमावै है । ऐसैं नपुंसकवदकौं पुरुषवेदरूप परिणमाइ नाशकौं प्राप्त करै है । ऐसा अर्थ स्त्रीवेदकी क्षपणा आदिविषै भी जोडना ॥ ४४० ॥

बंधेण होदि उदओ अहिओ उदएण संकमो अहिओ ।
गुणसेढि असंखेज्जापदेसअंगेण बोधव्वा ॥ ४४१ ॥

बंधेन भवति उदयः अधिक उदयेन संक्रमोऽधिकः ।
गुणश्रेणिरसंख्येयप्रदेशांगेन बोद्धव्या ॥ ४४१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– नपुंसकवेदका संक्रमण कालविषै पुरुषवेदका बंध द्रव्यतैं उदय द्रव्य अधिक है अर उदय द्रव्यकरि संक्रम द्रव्य अधिक है सो अधिकता असंख्यात प्रदेश समूहकरि गुणश्रेणि कहिए गुणकारकी पंक्ति तिस रूप जाननी। भावार्थ– इहां पुरुषवेदका जितने प्रदेशनिका बंध हो है तातैं असंख्यातगुणा अधिक ताके प्रदेशनिका उदय हो है। अर तातैं असंख्यातगुणा अधिक प्रदेशनिका तहां संक्रमण हो है। सोई कहिए है—

प्रदेश शब्दकरि परमाणू रूप द्रव्य जानना सो इहां समयप्रबद्ध बंधै है, तीहिंकौं सातका भाग दीएं मोहका द्रव्य होइ ताकौं कषाय नोकषायका भागके अर्थि दोयका भाग दीएं पुरुषवेदका द्रव्य होइ सो इतना तौ प्रदेशनिका बंध हो है। बहुरि सर्व सत्तारूप पुरुषवेदका द्रव्यविषै गुणश्रेण्यादिकरि दीया द्रव्य सहित इस समयविषै उदय आवने योग्य निषेकका द्रव्य जेता होइ तितने प्रदेशनिका उदय हो है ते ए बंध प्रदेशनितैं असंख्यातगुणे हैं। बहुरि नपुंसकवेदका सर्व द्रव्यकौं गुण संक्रमका भाग दीएं जो प्रमाण आवै तितने नपुंसकवेदके प्रदेशनिका पुरुषवेदविषै संक्रमण हो है। ते ए उदय प्रदेशनितैं असंख्यात गुणे जानने। ऐसैं अल्प बहुत्व कहनेकरि गुण संक्रमण द्रव्यका प्रमाण जानिए है॥ ४४१॥

गुणसेढिअसंखेज्जापदेसअंगेण संकमो उदओ।
से काले से काले उज्जो बंधो पदेसंगो॥ ४४२॥

गुणश्रेण्यसंख्येयप्रदेशांगेन संक्रम उदयः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वे काले स्वे काले योग्यो बंधः प्रदेशांगः ॥ ४४२ ॥

स० चं— अपने कालविषै स्वस्थान अपेक्षा संक्रमतैं संक्रम अर उदयतैं उदय है सो प्रदेश अपेक्षाकरि असंख्यातरूप गुणकारकी पंक्ति लीएं है। भावार्थ— नपुंसकवेद क्षपणा कालविषै प्रथम समयविषै जेते नपुंसकवेदके प्रदेशानिका पुरुषवेदविषै संक्रमण हो है तातैं दूसरा समयविषै असंख्यातगुणा हो है। तातैं तीसरा समयविषै असंख्यातगुणा हो है ऐसैं अन्त समय पर्यंत जानना। बहुरि अपना पुरुषवेदका उदय कालविषै प्रथम समयविषै जितने पुरुषवेदके प्रदेशानिका उदय हो है तातैं दूसरे समय असंख्यातगुणा तातैं तीसरे समय असंख्यातगुणा ऐसैं अन्त समय पर्यंत जानना। बहुरि अपने पुरुषवेदका बन्धकालविषै प्रदेशरूप बन्ध है सो भजनीय है। जातैं प्रदेश बन्ध है सो योगानिके अनुसारि है तातैं प्रथमादि समयतैं द्वितीयादि समयनिविषै पुरुषवेदका बन्ध कदाचित् संख्यातवे भागि असंख्यातवे भागि संख्यातगुणा असंख्यातगुणा बन्धता कदाचित् ऐसैं ही घटता कदाचित् जितनेका तितने अवस्थित रूप पुरुषवेदके प्रदेश बन्ध इहां हो हैं ॥ ४४२ ॥ इन अठाईस गाथानिका अर्थरूप व्याख्यान क्षपणासारविषै नाहीं लिख्या। इहां मोकूं प्रतिभास्या तैसैं लिख्या है।

इदि संढं संकामिय से काले इत्थिवेदसंकमगो।
अण्णं ठिदिरसखंडं अण्णं ठिदिबंधमारवई ॥ ४४३ ॥

इति षंढं संक्राम्य स्वे काले स्त्रीवेदसंक्रमकः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्यास्थितिरसखंडमन्यं स्थितिबंधमारभते ॥ ४४३ ॥

स० चं—ऐसैं नपुंसकवेदका संक्रमणकरि अपने कालविषै स्त्रीवेदका संक्रमक कहिए पुरुषवेदविषै संक्रमणकरि क्षपणा करनेवाला हो है। तहां प्रथम समयविषै पूर्वतैं अन्य प्रमाण धरैं स्थितिकांडक अनुभाग कांडक स्थितिबन्धकौं प्रारंभै है ॥ ४४३ ॥

थी अद्धा संखेज्जाभागेपगदे तिघादिठिदिबंधो ।
वस्साणं संखेज्जं थी संकंतापगद्धंते ॥ ४४४ ॥

स्त्री अद्धा संख्येयभागेपगते त्रिघातिस्थितिबंधः ।
वर्षाणां संख्येयं स्त्री संक्रमोपगताधांते ॥ ४४४ ॥

स० चं– तहां संख्यात हजार स्थितिकांडकनिकरि स्त्रीवेद क्षपणा कालका संख्यातवां भाग व्यतीत भएं ज्ञानावरण दर्शनावरण अंतराय इन तीन घातियानिका स्थितिबन्ध पल्यका असंख्यातवां भागमात्र होता था ताकौं समाप्तकरि संख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबन्ध करै है। तातैं परैं संख्यात हजार स्थितिकांडक व्यतीत भएं स्त्रीवेद क्षपणा कालके अवशेष बहुभाग व्यतीत भएं जो घात कीएं पीछैं स्त्रीवेदका स्थिति सत्व अवशेष पल्यका असंख्यातवां भागमात्र रह्या ताकौं अंत स्थिति कांडक रूप करै है तिस ही काल विषै अवशेष कर्मनिका स्थितिकांडक पल्यका असंख्यातवां भागमात्र स्थिति सत्वके असंख्यातवे भागमात्र था सो ताका असंख्यात भागमात्र आयाम धरैं है तहां अंत कांडककौं सम्पूर्ण भएं स्त्रीवेद भी संक्रमण रूप भया। द्वितीय स्थितिविषै तिष्ठता ऐसा पल्यका अ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्यातवां भागमात्र आयाम धरैं जो अन्तस्थिति कांडक ताकी अन्त फालिकौं पुरुषवेदविषै संक्रमणकरि स्त्रीवेदकी सत्ताका नाश करै है ॥ ४४४ ॥

ताहे संखसहस्सं वस्साणं मोहणीयठिदिसंतं ।
से काले संकमगो सत्तण्हं णोकसायाणं ॥ ४४५ ॥

तस्मिन् (अ) संख्यसहस्रं वर्षाणां मोहनीयास्थितिसत्त्वम् ।
स्वे काले संक्रमकः सप्तानां नोकषायाणाम् ॥ ४४५ ॥

स० चं– तहां स्त्रीवेद क्षपणाकालका अंतविषै मोहनीयका स्थितिसत्व असंख्यात वर्ष प्रमाण हो है । बहुरि ताके अनंतरि अपने कालविषै सात नोकषायनिका संक्रमक कहिए संज्वलन क्रोधरूप परणमाइ नाश करणहारा हो है ॥ ४४५ ॥

ताहे मोहो थोवो संखेज्जगुणं तिघादिठिदिबंधो ।
तत्तो असंखगुणियो णामदुगं साहियं तु वेयणियं ॥

तत्र मोहः स्तोकः संख्येयगुणं त्रिघातिस्थितिबंधः ।
ततोऽसंख्येयगुणितो नामद्विकं साधिकं तु वेदनीयम् ॥ ४४६ ॥

स० चं०– तहां प्रथम समयविषै मोहका स्तोक तातैं तीन घातियानिका संख्यातगुणा बहुरि तातैं नाम गोत्रका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र है तातैं बहुरि असंख्यातगुणा तातैं वेदनीयका त्रैराशिकतैं आधा प्रमाणकरि साधिक स्थितिबंध हो है ॥ ४४६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताहे असंखगुणियं मोहादु तिघादिपयडिठिदिसंतं ।
तत्तो असंखगुणियं णामदुगं साहियं तु वेयणियं ॥

तस्मिन् असंख्यगुणितं मोहात् त्रिघातिप्रकृतिस्थितिसत्त्वम् ।
ततोऽसंख्यगुणितं नामाद्विकं साधिकं तु वेदनीयं ॥ ४४७ ॥

स० चं– तहां ही प्रथम समयविषै संख्यात वर्षमात्र मोहका स्थिति सत्व स्तोक है । तातैं असंख्यातगुणा तीन घातियानिका स्थिति सत्व पल्यका असंख्यातवां भागमात्र है । तातैं असंख्यातगुणा नाम गोत्रका स्थिति सत्व है । तातैं साधिक वेदनीयका स्थिति सत्व है । क्रम करणके अल्पबहुत्वका अनुक्रम इहां पर्यंत भी प्रवर्तै है । ऐसा जानना ॥ ४४७ ॥

सत्तण्हं पढमट्ठिदिखंडे पुण्णे दु मोहठिदिसंतं ।
संखेज्जगुणविहीणं सेसाणमसंखगुणहीणं ॥ ४४८ ॥

सप्तानां प्रथमस्थितिखंडे पूर्णे तु मोहस्थितिसत्त्वं ।
संख्येयगुणविहीनं शेषाणामसंख्यगुणहीनम् ॥ ४४८ ॥

स० चं०–सात नोकषायनिका पाहिला स्थिति कांडककौं पूर्ण भए पूर्व स्थिति सत्त्वतैं मोहका तौ स्थिति सत्व संख्यात गुणा घटता भया जातैं संख्यात वर्ष स्थिति सत्व होनेतैं स्थिति कांडक आयाम पूर्वस्थिति सत्वका संख्यात बहुभागमात्र है । बहुरि अवशेष कर्मनिका स्थिति सत्व पूर्व स्थिति सत्वतैं असंख्यात गुणा घटता भया जातैं पल्यका असंख्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तवां भागमात्र स्थिति सत्व होनेतैं स्थिति कांडक आयाम पूर्वस्थिति सत्वके असंख्यात बहुभाग मात्र है ॥ ४४८ ॥

सत्तण्हं पढमट्ठिदिखंडे पुण्णेति घादिठिदिबंधो ।
संखेज्जगुणविहीणं अघादितियाणं असंखगुणहीणं ॥

सप्तानां प्रथमस्थितिखंडे पूर्णे इति घातिस्थितिबंधः ।
संख्येयगुणविहीनो अघातित्रयाणामसंख्यगुणहीनः ॥ ४४९ ॥

स० चं०— सात नोकषायनिका प्रथम स्थिति खंडकौं संपूर्ण होत संतैं पूर्व स्थिति बंधतैं च्यारि घातिया कर्मनिका तौ संख्यात गुणा घटता अर तीन अघातियानिका असंख्यात गुणा घटता स्थिति बंध हो है जातैं एक स्थितिबंधापसरणकरि इतनी स्थितिका घटना संभवै है ॥ ४४९ ॥

ठिदिबंधपुधत्तगदे संखेज्जदिमं गतं तदद्धाए ।
एत्थ अघादितियाणं ठिदिबंधो संखवस्सं तु ॥

स्थितिबंधपृथक्त्वगते संख्येयं गतं तदद्धायाम् ।
अत्र अघातित्रयाणां स्थितिबंधः संख्यवर्षस्तु ॥ ४५० ॥

स० चं०— तातैं परै पृथक्त्व कहिए संख्यात हजार स्थिति बंध गएं तिस सप्त नोकषाय क्षपणा कालका संख्यातवां भाग व्यतीत भया तहां नाम गोत्र वेदनीय इन तीन अ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घातियानिका स्थिति बंध पल्यका असंख्यातवां भागपनाकौं छोडि संख्यात हजार वर्षमात्र हो है ॥ ४५० ॥

ठिदिखंडपुधत्तगदे संखाभागा गदा तदद्धाए।
घादितियाणं तत्थ य ठिदिसंतं संखवस्सं तु ॥

स्थितिखंडपृथक्त्वगते संख्यभागा गता तदद्धायाः।
घातित्रयाणां तत्र च स्थितिसत्त्वं संख्यवर्षं तु ॥ ४५१ ॥

स०चं–तातैं परैं संख्यात हजार स्थिति कांडक गएं सात नोकषाय कालका संख्यात बहु भाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहैं तीन घातियानिका स्थिति सत्त्व संख्यात वर्ष प्रमाण भया। तातैं आगे च्यारि घातियानिका स्थितिबंध अर स्थिति सत्त्व एक कांडक काल पर्यंत समान रूप होइ। बहुरि केई स्थितिबंध अर स्थिति सत्व पूर्वतैं संख्यात गुणे घटते हो हैं जातैं घातिकर्मनिका स्थितिबंध वा स्थिति सत्व संख्यात वर्ष मात्र होनेतैं स्थितिबंधापसरण वा स्थिति कांडकका प्रमाण पूर्व स्थितिबंध वा स्थिति सत्वतैं संख्यात बहु भाग मात्र है। बहुरि नाम गोत्र वेदनीयका स्थिति कांडक पूर्ण होतैं पूर्वस्थिति सत्वतैं असंख्यातगुणा घटता स्थिति सत्व हो है। अर इनका स्थितिबंधापसरण पूर्ण होतैं पूर्व स्थिति बंधतैं संख्यात गुणा घटता स्थिति बंध हो है ऐसा अनुक्रम सप्त नोकषाय क्षपणाकालका अंत पर्यंत जानना ॥ ४५१ ॥

पडिसमयं असुहाणं रसबंधुदया अणंतगुणहीणा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधोवि य उदयादो तदणंतरसमय उदयोथ ॥

प्रतिसमयमशुभानां रसबंधोदयौ अनंतगुणहीनौ ।
बंधोपि च उदयात् तदनंतरसमय उदयोथ ॥ ४५२ ॥

स० चं०—अशुभ प्रकृतिनिका अनुभागबंध अर अनुभागका उदय सो समय समय प्रति अनंत गुणा घटता हो है। प्रथम समयतैं दूसरे समय दूसरा समयतैं तीसरे समय ऐसैं कूमतैं अनुभागका बंध अर उदय अनंत गुणा घटता इहां जानना। बहुरि पूर्व समय संबंधी उदयतैं उत्तर समयका बंध भी अर अनंतरवर्ती समयका उदय हो है। सो अनंत गुणा घटता अनुभाग रूप जानना ॥ ४५२ ॥

बंधेण होदि उदओ अहियो उदएण संकमो अहियो ।
गुणसेढिअणंतगुणा बोधव्वा होदि अणुभागे ॥

बंधेन भवति उदयोऽधिक उदयेन संक्रमोऽधिकः ।
गुणश्रेणिरनंतगुणा बोद्धव्या भवति अनुभागे ॥ ४५३ ॥

स० चं०—बंधकरि तो उदय अधिक कहिए है अर उदयकरि संकूम अधिक है ऐसैं अनुभागविषै अनंतगुणा गुणश्रेणी कहिए गुणकारकी पंक्ति जाननी। भावार्थ— विवाक्षित एक समय विषैं अनुभागके बंधतैं अनंत गुणा अनुभागका तौ उदय है अर तातैं अनंत गुणा अनुभागका संकूम हो है ॥ ४५२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणसेढि अणंतगुणेणूणा य वेदगो दु अणुभागो।
गणणादिकंतसेढी पदेसअंगेण बोधव्वा॥ ४५४ ॥

गुणश्रेणिरनंतगुणेनोना च वेदकस्तु अनुभागः।
गुणनातिक्रांतश्रेणी प्रदेशांगेन बोद्धव्या ॥ ४५४ ॥

स० चं– यद्यपि वेदक कहिए उदयरूप अनुभाग सो समय समय प्रति अनंतगुणा घटतारूप गुणकार पंक्ति लीएं है तथापि प्रदेश अंशकरि गणनातिक्रांत कहिए असंख्यात गुणकारकी पंक्तिरूप जानना। भावार्थ– समय समय प्रति अनुभागका उदय अनंतगुणा घटता है तथापि प्रदेश जे कर्मपरमाणू तिनका उदय समय २ प्रति असंख्यातगुणा बंधता जानना ॥ ४५४ ॥

बंधोदएहिं णियमा अणुभागो होदि णंतगुणहीणो।
से काले से काले भज्जो पुण संकमो होदि॥ ४५५ ॥

बंधोदयाभ्यां नियमादनुभागो भवति अनंतगुणहीनः।
स्वे काले स्वे काले भाज्यः पुनः संक्रमो भवति ॥ ४५५ ॥

स० चं– अपने कालविषै अनुभाग है सो बंध अर उदयकरि तौ समय समय प्रति अनंतगुणा घटता हो है। बहुरि अपने कालविषै संक्रम है सो भजनीय है– घटनेका नियमकरि रहित है ॥ ४५५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संकमणं तदवट्ठं जाव दु अणुभागखंडयं पडिदि ।
अण्णाणुभागखंडे आढंते णंतगुणहीणं ॥ ४५६ ॥

संक्रमणं तदवस्थं यावत्तु अनुभागखंडकं पतति ।
अन्यानुभागखंडे आरब्धे अनंतगुणहीनम् ॥ ४५६ ॥

स० चं०– जिस अनुभाग कांडकविषै संक्रमण होइ तिस अनुभाग कांडकका घात न होइ निवरै तावत् समय समय प्रति अवस्थित समान रूप ही अनुभागका संक्रमण हो है। बहुरि अन्य नवीन अनुभाग कांडकका प्रारम्भ भएं पूर्वतैं अनंतगुणा घटता अनुभागका संक्रम हो है ॥ ४५६ ॥ इन पांच गाथानिका अर्थरूप व्याख्यान क्षपणासारविषै लिख्या नाहीं इहां जैसैं प्रतिभास्या तैसैं अर्थ लिख्या है। बुद्धिमान होइ सो स्पष्ट अर्थ जैसा होइ तैसा जानियो।

सत्तण्हं संकामगचरिमे पुरिसस्स बंधमडवस्सं ।
सोलस संजलणाणं संखसहस्साणि सेसाणं ॥ ४५७ ॥

सप्तानां संक्रामकचरमे पुरुषस्य बंधोष्टवर्षम् ।
षोडश संज्वलनानां संख्यसहस्राणि शेषाणाम् ॥ ४५७ ॥

स० चं०–सात नोकषाय संक्रमक कालका अंतसमयविषै पुरुषवेदका अन्त स्थितिबन्ध अष्टवर्ष प्रमाण हो है। बहुरि संज्वलन चतुष्कका सोलह वर्षमात्र अवशेष मोह आयु विना छह कर्मनिका संख्यात हजार वर्षमात्र स्थितिबन्ध हो है ॥ ४५७ ॥ ५२९

६७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठिदिसंतं घादीणं संखसहस्साणि होंति वस्साणं।
होंति अघादितियाणं वस्साणमसंखमेत्ताणि॥

स्थितिसत्त्वं घातिनां संख्यसहस्राणि भवंति वर्षाणां।
भवंति अघातित्रयाणां वर्षाणामसंख्यमात्राणि॥ ४५८॥

स० चं- तहां ही स्थितिसत्व है सो च्यारि घातियानिका संख्यात हजार वर्षमात्र अर तीन अघातिनिका असंख्यात वर्ष प्रमाण जानना॥ ४५८॥

पुरिसस्स य पढमट्ठिदि आवलिदोसुवरिदासु आगाला।
पडिआगाला छिण्णा पडिआवलियादुदीरणदा॥

पुरुषस्य च प्रथमस्थितौ आवलिद्वयोरुपरतयोरागालाः।
प्रत्यागालाः छिन्नाः प्रत्यावलिकाया उदीरणता॥ ४५९॥

स० चं- पुरुषवेदकी प्रथम स्थितिविषै आवली प्रत्यावली ए दोय उवरैं अवशेष रहैं आगाल प्रत्यागाल नष्ट भए। द्वितीय स्थितिविषै तिष्ठते परमाणूनिकौं अपकर्षण वशतैं प्रथम स्थितिविषै प्राप्त करना सो आगाल कहिए। प्रथम स्थितिविषै तिष्ठते परमाणूनिकौं उत्कर्षण वशतैं द्वितीय स्थितिविषै प्राप्त करना सो प्रत्यागाल कहिए। बहुरि प्रत्यावली जो द्वितीयावलीतैं उदीरणा वर्तै है। प्रत्यावलीके निषेकनिका द्रव्य उदयावलीविषै दीजिए है। बहुरि एक समय अधिक प्रत्यावली अवशेष रहैं जघन्य स्थितिकी उदीरणा हो है जातैं प्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्यावलीका प्रथम एक निषेककी उदीरणा हो है उदयावलीविषै ताकौं प्राप्त कीजिए है बहुरि तीहिं समयविषै वेद सहितपनाका अंत समयविषै हो है जातैं उच्छिष्टावली है नाम जाका ऐसी जो प्रत्यावली ताके निषेकानिका उदय न हो है ॥ ४५९ ॥

अंतरकदपढमादो कोहे छण्णोकसाययं छुहदि ।
पुरिसस्स चरिमसमए पुरिसवि एणेण सव्वयं छुहदि ॥

अंतरकृतप्रथमात् क्रोधे षण्णोकषायकं संक्रामति ।
पुरुषस्य चरमसमये पुरुषमपि एतेन सर्वं संक्रामति ॥ ४६० ॥

स० चं– अंतर करण करनेके अनन्तरवर्ती प्रथम समयतैं लगाय संक्रमण होता था सो पुरुषवेदके उदय कालका अन्त समयविषै छह नोकषायनिका सर्व सत्वकौं संज्वलन क्रोधविषै संक्रमण करै है । तहां अन्त समयविषै द्वितीयस्थितिविषै प्राप्त संख्यात हजार वर्षमात्र स्थिति सत्वरूप अन्त फालि ताकौं सर्व संक्रमणतैं संज्वलन क्रोधविषै निक्षेपणकरि तिन छह नोकषायनिकी सत्ता नाश करै है । बहुरि तिस ही समयविषै पुरुषवेद भी सर्व संज्वलन क्रोधविषै निक्षेपण करै है ॥ ४६० ॥ किछू अवशेष रहै है सो कहिए है–

समऊणदोण्णिआवलिपमाणसमयप्पबद्धणवबंधो ।
बिदिये ठिदिये अत्थि हु पुरिसस्सुदयावली च तदा ॥

समयोनद्व्यावलिप्रमाणसमयप्रबद्धनवबंधः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीयस्यां स्थितौ अस्ति हि पुरुषस्योदयावली च तदा ॥ ४६१ ॥

स० चं– तहां द्वितीय स्थितिविषै तौ समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्ध अर प्रथम स्थितिविषै असंख्यात समयप्रबद्धमात्र उदयावली कहिए उच्छिष्टावलीके निषेक पुरुषवेदका सत्वविषैं अवशेष रहैं अन्य सर्व संख्यात हजार वर्षमात्र स्थिति लीएं पुरुषवेद का पुरातन सत्व था सो संज्वलन क्रोधविषैं संक्रमण रूप कीया। इहां द्वितीय स्थितिविषै समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्ध कैसैं अवशेष रहैं ? सो कहिए है–

नवीन बन्ध्या समयप्रबद्धकौं नवक समयप्रबद्ध कहिए सो क्षपणा काल बन्धे पीछैं आवली पर्यंत जो बन्धावली तिसविषै तौ क्षपावना नाहीं पीछैं समय समयविषै एक एक फालिकरि आवलीविषैं एक एक समयप्रबद्धकौं खिपावै है तातैं पुरुषवेदकी प्रथम स्थितिविषै बन्धावली क्षपणावली उच्छिष्टावली ऐसैं तीन आवली अवशेष रहैं बन्धावलीका प्रथम समयविषै जो समयप्रबद्ध बन्ध्या ताकौं बन्धावली गमाइ क्षपणावलीविषै एक एक फालिकरि सर्व क्षपाया अर बंधावलीका द्वितीय तृतीयादि समयनिविषै जे समयप्रबद्ध बंधे तिनकी क्रमतैं एक दोय तीन आदि फालि अवशेष राखि क्षपणावलीविषै तिनकौं खिपाए। ऐसैं बंधावलीका अंत समयविषै बंध्या समयप्रबद्धकी क्षपणावलीका अंत समयविषैं एक ही फालि खिपाई। समय घाटि आवलीमात्र फालि अवशेष रही। बहुरि क्षपणावलीके प्रथमादि समयनिविषै बन्धे समयप्रबद्ध तिनकी एक हू फालि न खिपाई। बहुरि उच्छिष्टावलीविषै बंध है ही नाहीं। ऐसैं इहां एक देशकौं सर्व कहिए इस न्यायतैं अवशेष रही फालिनिकौं समयप्रबद्ध संज्ञा कहनेकरि बन्धावलीविषैं बंधे ऐसे एक घाटि आवलीमात्र समयप्रबद्ध अर क्षपणावली-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषै बन्धे सम्पूर्ण आवलीमात्र समयप्रबद्ध मिलि समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्ध अवशेष रहैं हैं। सो अपगत वेद होइ उच्छिष्टावलीका प्रथम समयतैं लगाय एक २ समयविषै एक २ समयप्रबद्धकौं संज्वलन क्रोधरूप परिणमाइ समय घाटि दोय आवली कालविषै इन नवक समयप्रबद्धनिकौं भी नाश करै है। अब सवेद अनिवृत्तिकरणके अनंतरि अपगत वेदी होइ अश्वकर्ण क्रिया सहित अपूर्व स्पर्धक करणका प्रारम्भ करै है। तहां यातैं पीछैं अवशेष रह्या जो संज्वलन चतुष्कका सत्व तिसविषै स्थिति अनुभाग कांडककी प्रवृत्ति जाननी ॥ ४६१ ॥ अब अश्वकर्ण करणका स्वरूप कहिए है—

से काले ओवट्टणिउट्टण अस्सकण्ण आदोलं।
करणं तियसण्णगयं संजलणरसेसु वट्टिहिदि ॥

स्वे काले अपवर्तनोद्वर्तनं अश्वकर्णमांदोलं।
करणं त्रिकसंज्ञागतं संज्वलनरसेषु वर्तयाति ॥ ४६२ ॥

स० चं०— अपने कालविषैं अपवर्तनोद्वर्तनकरण १ अश्वकर्ण करण १ आंदोल करण १ ऐसैं तीन संज्ञाकौं प्राप्त किया है सो संज्वलन चतुष्कका अनुभागविषै प्राप्त हो है। तहां इहां आरंभ्या जो प्रथम अनुभागकांडक ताका घात भए पीछैं अवशेष अनुभाग क्रोधतैं लगाय लोभपर्यंत अनंत गुणा घटता वा लोभतैं लगाय क्रोध पर्यंत अनंत गुणा बंधता हो है। तातैं अपवर्तनोद्वर्तन करण संज्ञा कहिए। बहुरि जैसैं घोडेका कान मध्य प्रदेशतैं आदि पर्यंत क्रमतैं घटता हो है तैसैं प्रथम अनुभागकांडकका घात भए पीछैं क्रोध आदि लोभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर्यंतका क्रमतैं अनुभाग घटता हो है तातैं अश्वकर्ण संज्ञा कहिए। बहुरि जैसैं ही वाकैं रज्जुबंधै है सो रज्जुके वीचिका प्रदेश आदितैं अंतपर्यंत क्रमतैं घटता हो है तैसैं पूर्ववत् क्रोधतैं लोभ पर्यंत अनुभाग घटता हो है तातैं आंदोलन करण संज्ञा कहिए है ॥ ४६२ ॥

ताहे संजलणाणं ठिदिसंतं संखवस्सयसहस्सं ।
अंतोमुहुत्तहीणो सोलसवस्साणि ठिदिबंधो ॥ ४६३॥

तत्र संज्वलनानां स्थितिसत्वं संख्यवर्षसहस्रम् ।
अंतर्मुहूर्तहीनः षोडशवर्षाणि स्थितिबंधः ॥ ४६३ ॥

स० चं– तहां अश्वकर्णका प्रारंभ समयविषैं संज्वलन चतुष्कका स्थितिसत्व संख्यात हजारवर्षमात्र है। बहुरि स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि सोलह वर्षमात्र है। एक स्थितिबंधापसरणकरि पूर्व स्थितिबंधतैं अंतर्मुहूर्तहीन स्थितिबंध इहां भया और कर्मनिके बंधसत्वका आलाप पूर्ववत इहां भी कहना ॥ ४६३ ॥

रससंतं आगहिदं खंडेण समं तु माणगे कोहे ।
मायाए लोभेवि य अहियकमा होंति बंधेवि ॥

रससत्त्वमागृहीतं खंडेन समं तु मानके क्रोधे ।
मायायां लोभेपि च अधिकक्रमं भवति बंधेपि ॥ ४६४ ॥

स० चं०– अपगत वेदी होइ जो प्रथम अनुभागकांडक आगृहीतं कहिए प्रारंभ किया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिस सहित इस प्रथम अनुभागकांडकका घात होनेतैं पहलै मानविषैं क्रोधविषैं मायाविषैं लोभविषै अनुभाग सत्व है सो अधिक क्रम लीएं है। एक गुणहानिविषैं जेते स्पर्धक पाइए तिस प्रमाणकौं नानागुणहानिका प्रमाण करि गुणें मानके स्पर्धक हैं ते स्तोक हैं तिनतैं क्रोधके विशेष अधिक हैं तिनतैं मायाके विशेष अधिक हैं। तिनतैं लोभके विशेष अधिक हैं। इहां अपने अपने स्पर्धकानिका प्रमाण स्थापि अनंतका भाग दीएं विशेषका प्रमाण आवे है सो यहु विशेष भी अनंत स्पर्धकमात्र है याकरि अधिक अधिक जानने। जैसैं अंक संदृष्टि करि मानके स्पर्धक पांचसै बारा अर तातैं क्रोध माया लोभके क्रमतैं तीन तीन अधिक—

क्रोध	मान	माया	लोभ
५१५	५१२	५१८	५२१

बहुरि इस अश्वकर्णका प्रारंभ समयविषैं जो अनुभाग बंध हो है तिसविषैं भी ऐसैं ही अल्पबहुत्वका क्रम जानना। बहुरि यहु अनुभागका कथन अंत दीपक समान है तातैं याके पहिले गुणस्थाननिविषै जो अनुभाग सत्व है तिस विषैं भी ऐसैं ही अल्पबहुत्व है ऐसैं जानना ॥ ४६४ ॥

रसखंडफड्ढयाओ कोहादीया हवंति अहियकमा।
अवसेसफड्ढयाओ लोहादि अणंतगुणियकमा ॥

रसखंडस्पर्धकानि क्रोधादिकानां भवंति अधिकक्रमाणि।
अवशेषस्पर्धकानि लोभादेः अनंतगुणितक्रमाणि ॥ ४६५ ॥

स० चं०— घात करनेकौं प्रथम अनुभाग कांडकरूप ग्रहे जे स्पर्धक ते क्रोधके स्तोक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं। तातैं मानके विशेष अधिक हैं। तातैं मायाके विशेष अधिक हैं तातैं लोभके विशेष अधिक हैं। इहांतैं पहले जे अनुभाग कांडक भए तिनविषैं अनुभाग सत्वके अनुसारि मानके स्तोक तातैं क्रोध माया लोभके क्रमतैं विशेष अधिक स्पर्धक ग्रहण होते थे अब परिणामनिके विशेषतैं विशेष घात पाइ अपने अपने अनुभाग सत्वकौं अनंतका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र अब कीया इस कांडककरि गृहीत जो अनुभाग है सो क्रोधका स्तोक तातैं मान माया लोभके क्रमतैं विशेष अधिक हो हैं। अंक संदृष्टिकरि इस कांडककरि ग्रहे क्रोध के तीनसै सित्यासी, मानके च्यारिसै असी, मायाके पांचसै दश, लोभके पांचसै उगणीस, स्पर्धक जानने-

क्रोध	मान	माया	लोभ
३८७	४८०	५१०	५१९

बहुरि प्रथम अनुभाग कांडकका घात भए पीछैं अवशेष स्पर्धक रहे ते लोभके स्तोक तातैं मायाके अनंतगुणे तातैं मानके अनंत गुणे तातैं क्रोधके अनंत गुणे जानने। अंक संदृष्टि करि जैसैं प्रथम कांडकका घात भए पीछैं अवशेष रहे स्पर्धक ते लोभके दोय तातैं माया मान क्रोधके क्रमतैं चौगुणे चौगुणे जानने।

क्रोध	मान	माया	लोभ
१२८	३२	८	२

इहां आशंका-जो कांडक विषैं विशेष अधिकपना कह्या तो अवशेष अनुभागविषैं अनंतगुणापना कैसैं संभवै? ताका समाधान—अंक संदृष्टि अपेक्षा कहिए है। मानका अनुभाग सत्व पांचसै बारह तातैं क्रोधका तीन अधिक मायाका छह आधिक लोभका नव अधिक है। तहां अधिक प्रमाणकौं जुदे राखि पांचसै बारहकौं अनंतकी संदृष्टि च्यारि ताका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षपणासार ५३७

भाग देइ तहां एक भाग विना बहुभाग ५१२/४ तीनसै चौरासी तामैं क्रोधविषैं तीन अधिक कहे थे ते मिलाएं क्रोध कांडक विषैं तीनसै सित्यासी स्पर्धकनिका प्रमाण हो है बहुरि अवशेष एक भागमात्र ५१२/४ एकसौ अठाईस स्पर्धक प्रमाण क्रोधका अवशेष अनुभाग सत्व हो है। बहुरि इस अवशेष एक भागकौं च्यारिका भाग देइ तहां बहुभाग ५१२।३ / ४।४ छिनवै तिनकौं पहले बहुभाग तीनसै चौरासी कहे थे तिनमें जोडैं मान कांडकका प्रमाण च्यारिसै असी ४८० हो है। अवशेष एक भाग ५१२ / ४।४ मात्र बत्तीस स्पर्धक प्रमाण मानका अवशेष अनुभाग सत्व हो है। बहुरि यहु अवशेष एक भाग रह्या ताकौं च्यारिका भाग देइ तहां बहुभाग ५१२।३ / ४।४।४ चौईस तिनकौं पूर्वै मान कांडक च्यारिसै असी कह्या था तामैं जोडैं अर मायाका अधिक प्रमाण छह तिनकौं अधिक कीएं माया कांडकका प्रमाण पांचसै दश ५१० हो है। अवशेष एक भागमात्र ५१२ / ४।४।४ आठ स्पर्धक प्रमाण मायाका अवशेष सत्व हो है। बहुरि इस अवशेष एक भागकौं च्यारिका भाग देइ तहां बहुभाग— ५१२।३ / ४।४।४।४ छह तिनकौं अधिक प्रमाण रहित जो माया कांडक पांचसै च्यारि तामैं जोडि इहां लोभका अधिक प्रमाण नव तिनकौं अधिक कीएं लोभ कांडकका प्रमाण पांचसै उ- ५३७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णीस ५११ आवै है। अवशेष एक भागमात्र ५१२ दोय स्पर्धक प्रमाण लोभके अ-
४।४।४।४
वशेष अनुभाग सत्त्वका प्रमाण हो है। ऐसैं क्रोध मान माया लोभ कांडकका प्रमाण तौ वि-शेष अधिक क्रम लीएं हो है। अर अवशेष रह्या अनुभागका प्रमाण अनंत गुणा क्रमलीएं हो है तिनकी रचना ऐसी–

नाम	क्रोध	मान	माया	लोभ
पूर्व अनुभाग	५१५	५१२	५१८	५२१
कांडक अनुभाग	३८७	४८०	५१०	५१९
अवशेष अनुभाग	१२८	३२	८	२

इहां कांडक अनुभाग अर अवशेष अनुभागके वीचि ब्योढी लोक करी है सो हीनाधिक अनुभाग प्रगट करनेके अर्थि जानना। ऐसैं क्रोधादिकविषैं घटता क्रम लीएं अनुभाग कांड करना सो अश्वकर्ण करण है ताका वर्णन कीया।

अब अश्वकर्ण करण अवस्थाविषै ही भए अर पूर्वैं संसार अवस्थाविषै संभवते थे जे पूर्व स्पर्धक तिनतैं अनंतगुणा घटता अनुभाग लीएं ऐसे जे अपूर्व स्पर्धक तिनका स्वरूप कहिए है। सो पहिले पूर्व स्पर्धकानिका स्वरूप जाने विना अपूर्व स्पर्धकानिका ज्ञान न होइ तातैं इहां पूर्व स्पर्धकानिका किछू स्वरूप कहिए है–

सर्व कर्म परमाणूविषै जाविषै अनुभागके थोरे अविभाग प्रतिच्छेद पाइए ऐसी जो परमाणू सो जघन्य वर्ग कहिए। ऐसी ऐसी समान परमाणूनिका पुंज ताका नाम जघन्य ५३९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्गणा है। बहुरि जघन्य वर्गणातैं एक अविभाग प्रतिच्छेद जिनमैं अधिक पाइए ऐसे एक एक वर्गणा परमाणू तिनका पुंजकौं द्वितीय वर्गणा कहिए। ऐसैं क्रमतैं एक एक अविभाग प्रतिच्छेदकरि बंधती जे वर्ग कहिए वर्गका पुंजरूप एक एक वर्गणा यावत् होइ तावत् पर्यंत जेती वर्गणा भईं तिन सर्व वर्गणानिका पुंजकौं जघन्य स्पर्धक कहिए। बहुरि ताके अनंतरि जघन्य वर्गतैं दूणा अविभाग प्रतिच्छेदयुक्त जे वर्ग तिनका समूहरूप द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणा हो है। बहुरि पूर्ववत् यातैं एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बंधती लीएं वर्गनिका पुंजरूप ताकी द्वितीयादि वर्गणा हो हैं। बहुरि ऐसैं ही जघन्य वर्गतैं तिगुणा चौगुणा आदि जेथवां स्पर्धक होइ तितना गुणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनिका समूह रूप जो वर्गणा होइ सो तो तृतीय चतुर्थ आदि स्पर्धकानिकी प्रथम वर्गणा जाननी। अर ऊपरि एक एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक क्रम लीएं वर्गनिका समूह रूप अपनी अपनी द्वितीयादि वर्गणा जाननी। इहां सर्व कर्म परमाणूनिका प्रमाणकौं किंचित् अधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणाके वर्गनिका प्रमाण आवै है। याकौं दोगुणहानिका भाग दीएं विशेषका प्रमाण आवै है सो एक विशेषकरि घटता द्वितीयादि वर्गणानिविषै वर्गनिका प्रमाण हो है ऐसैं प्रथम गुणहानिविषै क्रम जानना। बहुरि प्रथम गुणहानितैं द्वितीयादि गुणहानिनिविषै आधा आधा प्रमाण लीएं वर्गणाके वर्गनिका अर विशेषका प्रमाण जानना। ऐसैं कर्म परमाणूनिविषै नाना गुणहानि पाइए है। इहां अनुभाग रचनाविषै गुणहानि वा नाना गुणहानिनिका प्रमाण यथासम्भव अनंत है। तहां एक एक गुणहानिविषै पूर्वोक्त प्रकार स्पर्धक अनंत हैं। एक एक स्पर्धकविषै वर्गणा अनंती हैं। सो एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणहानिविषै जो वर्गणानिका प्रमाण सोई गुणहानि आयामका प्रमाण जानना । ऐसी गुणहानि जेती पाइए तिनके प्रमाणका नाम नानागुणहानि है ।

अंकसंदृष्टिकरि सर्व कर्म प्रदेशरूप द्रव्य इकतीससै ३१०० गुणहानि प्रमाण आठ नानागुणहानि पांच तहां सर्व द्रव्यकौं किंचित् अधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषै वर्ग दोयसै छप्पन है । याकौं दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष का प्रमाण सोलह सौ इतना इतना घाटि द्वितीयादि वर्गणा होइ । बहुरि ऐसैं क्रमतैं जिस वर्गणाविषै प्रथम गुणहानिका प्रथम वर्गणातैं आधा एकसौ अठाईस वर्ग पाइए सो द्वितीय गुणहानिकी प्रथम वर्गणा है । इस चयका प्रमाण भी आधा आठ है । तातैं आठ आठ घटते द्वितीयादि वर्गणाके वर्ग जानने । ऐसैं गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा प्रमाण जानना । ऐसी पांच गुणहानि सर्व जाननी । ऐसैं ही यथार्थ कथनका अर्थ जानना । तहां जघन्य स्पर्धकतैं लगाय अनंत स्पर्धक लता भागरूप हैं । तिनके ऊपरि अनंत स्पर्धक दारु भागरूप हैं । तिनके ऊपरि अनंत स्पर्धक अस्थिभागरूप हैं । तिनके ऊपरि उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत अनंत स्पर्धक शैल भागरूप हैं । तहां प्रथम स्पर्धक देशघातीका जघन्य स्पर्धक है । तातैं लगाय लताभागके सर्व स्पर्धक अर दारु भागके अनंतवां भागमात्र स्पर्धक देशघाती हैं । तहां अंतविषै देशघाती उत्कृष्ट स्पर्धक भया । बहुरि ताके ऊपरि सर्व घातीका जघन्य स्पर्धक है । तातैं लगाय ऊपरिके सर्व स्पर्धक सर्व घाती हैं । तहां अंत स्पर्धक उत्कृष्ट सर्व घाती जानना । तहां केवल विना च्यारि ज्ञानावरण, तीन दर्शनावरण अर सम्यक्त्व मोहनी, संज्वलन चतुष्क, नोकषाय नव, अंतराय पांच इन छबीस प्रकृतिनिकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लता समान स्पर्धककी प्रथम वर्गणा सो एक एक वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी अपेक्षा समान है। बहुरि वेदनीय आयु नाम गोत्र इन अघाति कर्मनिकी भी प्रथम वर्गणा तैसें ही परस्पर समान है। बहुरि मिथ्यात्व विना केवलज्ञानावरण केवल दर्शनावरण निद्रा पांच मिश्रमोहनी संज्वलन विना बारह कषाय इन सर्वघाती वीस प्रकृतिनिके देशघाती स्पर्धक हैं नाहीं तातैं सर्व घाती जघन्य स्पर्धक वर्गणा तैसैं ही परस्पर समान जाननी। तहां पूर्वोक्त देशघाती छब्बीस प्रकृतिनिकी अनुभाग रचना देशघाती जघन्य स्पर्धकतैं लगाय उत्कृष्ट देशघाती स्पर्धक पर्यंत होइ। तहां सम्यक्त्व मोहनीका तौ इहां ही उत्कृष्ट अनुभाग होइ निवस्या अवशेष पचीस प्रकृतिनिकी रचना तहांतैं ऊपरि सर्वघाती उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत जाननी। बहुरि सर्व घाती वीस प्रकृतिनिकी रचना सर्वघातीका जघन्य स्पर्धकतैं लगाय उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत है। तहां विशेष इतना—सर्वघाती दारु भागके स्पर्धकनिका अनंतवां भागमात्र स्पर्धक पर्यंत मिश्रमोहनीके स्पर्धक जानने। ऊपरि नाहीं हैं। बहुरि इहां पर्यंत मिथ्यात्वके स्पर्धक नाहीं हैं। इहांतैं ऊपरि उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत मिथ्यात्वके स्पर्धक हैं। बहुरि च्यारि अघातिया कर्मनिकी भी देशघाती जघन्यतैं लगाय उत्कृष्ट पर्यंत वा सर्वघाती जघन्यतैं लगाय उत्कृष्ट पर्यंत परस्पर समान अनुभाग रचना जाननी। ऐसैं संसार अवस्थाविषै संभवते पूर्वस्पर्धक जानने ॥ ४६५ ॥ अब इहां अश्वकर्ण करणका प्रथम समयविषै भए ऐसे अपूर्व स्पर्धक तिनिका व्याख्यान करिए है—

ताहे संजलणाणं देसावरफड्डयस्स हेट्ठादो।
णंतगुणूणमपुव्वं फड्डयमिह कुणदि हु अणंतं ॥ ५९१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तस्मिन् संज्वलनानां देशावरस्पर्धकस्य अधस्तनात्।
अनंतगुणोनमपूर्वं स्पर्धकमिह करोति हि अनंतं ॥ ४६६ ॥

स चं– तहां अश्व कर्णका प्रारंभ समय विषैं च्यारयो संज्वलन कषायनिका युगपत् अपूर्वस्पर्धक देशघाती जघन्य स्पर्धकतैं नीचैं अनंत गुणा घटता अनुभाग रूप करे है पूर्वस्पर्धकनिविषे जघन्यस्पर्धककी जो जघन्य वर्गणा थी ताके नीचैं घटता अनुभाग लीएं कोई वर्गणा थी नाहीं सो अब इहां जघन्य स्पर्धककी जघन्य वर्गणाके नीचैं अपूर्वस्पर्धकनिकी वर्गणाकी रचना भई। तहां पूर्वस्पर्धकानिकी जघन्य वंगणातैं भी अपूर्व स्पर्धकनिकी उत्कृष्ट वर्गणाविषे भी अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेद अंनतवां भाग मात्र हो हैं। ऐसैं अपूर्व स्पर्धक हो हैं तिनका प्रमाण अनंत जानना ॥ ४६६ ॥

गणणादेयपदेसगगुणहाणिट्ठाणफड्डयाणं तु।
होदि असंखेज्जादिमं अवरादु वरं अणंतगुणं ॥४६७॥

गणनादेकप्रदेशकगुणहानिस्थानस्पर्धकानां तु।
भवति असंख्येयं अवरतो वरमनंतगुणं ॥ ४६७ ॥

स० चं०– सो अनंत कैसा है? सो कहिए है– गणनाकरिकैं प्रदेश गुणहानि कहिए अनुभाग रचना विषै जे वर्गणा तिनविषै प्रदेश जे परमाणु तिनका प्रमाण एक एक विशेष घटतैं संतैं जहां आधा होइ तहांतैं पहलैं एक गुण हानि कहिए। तिस एक गुण हानिविषैं स्पर्धकानिका प्रमाण अभव्यराशितैं अनंत गुणा वा सिद्ध राशिके अनंतवे भाग मात्र है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताकौं अपकर्षण भागहारतैं असंख्यात गुणा जो भाग हार ताका भाग दीएं एक भाग मात्र अपूर्वस्पर्धकानिका प्रमाण अनंत संख्यामात्र जानना। तहां जघन्य अपूर्व स्पर्धकतैं उत्कृष्ट अपूर्व स्पर्धक विषै अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेद अनंतगुणे जानना। सो अनुभागके अल्पबहुत्वका विशेष इहां कहिए है—

अपूर्व स्पर्धकनिविषै प्रथम स्पर्धककी प्रथमवर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद जीवराशितैं अनंत गुणे हैं तथापि औरानितैं स्तोक हैं। बहुरि याकौं अनंत का भाग देइ तहां बहुभाग तिसहीमैं मिलाएं द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं। ऐसैं ही अंतस्पर्धकपर्यंत क्रम जानना। सो यहु अल्पबहुत्व वर्गणानिविषै पाइए है। जे सर्व परमाणूं रूप वर्ग तिन सबनिकैं अविभाग प्रतिच्छेद मिलायकरि कह्या है। बहुरि एक एक वर्गकी अपेक्षा प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणातैं द्वितीय तृतीयादि स्पर्धकनिकी प्रथम वर्गणाविषैं दूणे तिगुणे आदि अविभाग प्रतिच्छेद जानने। जातैं आदि वर्गतैं आदिवर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदका प्रमाण जेथवां स्पर्धक होइ तितना गुणा ही हो है। कषाय प्राभृत द्वितीय नाम महाधवलविषैं भी ऐसैं ही कह्या है। सोई विशेष करि कहिए है—

स्थिति संबंधी असंख्यात प्रमाण लीएं जो स्पर्धकगुणहानि ताकरि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण अपना अपना द्रव्य स्थापि ताकौं अनुभाग संबंधी अनंत प्रमाण लीएं जो किंचिदून ड्योढ गुणहानि ताका भाग दीएं प्रथम वर्गणाविषैं परमाणूनिका प्रमाण आवै। एक गुणहानिविषैं जेता स्पर्धकानिका प्रमाण सो एक गुणहानि स्पर्धक शलाका कहिए है। एक स्पर्धकविषैं जेता वर्गणानिका प्रमाण सो एक स्पर्धक वर्गणा शलाका कहिए। इन दोऊनिकौं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परस्पर गुणैं अनुभाग संबंधी गुणहानि आयामका प्रमाण होइ। बहुरि प्रथम वर्गणाकौं गुणहानितैं दूणा प्रमाण लीएं जो दोगुणहानि ताका भाग दीएं विशेषका प्रमाण आवै है। वर्गणा वर्गणा प्रति जितनी परमाणू घटैं ताका नाम इहां विशेष जानना सो विशेषकौं दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम वर्गणा होइ। बहुरि एक परमाणु विषै जेते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए तिनके समूहका नाम वर्ग है याकरि प्रथम वर्गणाकौं गुणैं प्रथम स्पर्धककी पूथम वर्गणाके अविभाग पूतिच्छेदनिका पूमाण हो है। बहुरि यातैं दूणे द्वितीय स्पर्धककी पूथम वर्गणाके अविभाग पूतिच्छेद हैं। यातैं द्वितीयभाग अधिक तृतीय स्पर्धककी पूथम वर्गणाके हैं यातैं तृतीय भाग अधिक चतुर्थ स्पर्धककी पूथम वर्गणाके, ऐसैं क्रमतैं उत्कृष्ट संख्यातवां भाग अधिक पर्यंत तौ संख्यात भाग वृद्धि, ताके ऊपरि उत्कृष्ट असंख्यातवां भाग अधिक पर्यंत असंख्यात भाग वृद्धि ताके ऊपरि अंतपर्यंत अनंत भाग वृद्धि हो है। तहां द्विचरमस्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदानिकौं एक घाटि अपूर्व स्पर्धक प्रमाणका भाग देइ तहां एक भाग तामें जोड़ें चरम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है। सो प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदानितैं द्वितीय तृतीयादि स्पर्धकानिकी प्रथम वर्गणाके अविभाग पूतिच्छेद क्रमतैं दोय गुणा तिगुणा आदि होइ अंतस्पर्धककी पूथम वर्गणाविषैं अपूर्वस्पर्धक पूमाणकरि गुणित अविभाग पूतिच्छेद हो हैं। सो यहु स्थूल पनैं कथन है।

सूक्ष्मपनेकरि जेते विशेष घटैं तिन विशेषनिके जेते वर्ग होंइ तिनके अविभाग प्रतिच्छेद घटावनेकौं द्वितीयादि स्पर्धकानिकी प्रथम वर्गणानिका स्थूलपनै जो अविभाग प्रति- ५४५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च्छेदानिका प्रमाण कह्या तामैं किंचित् न्यूनपना जानना। तहां प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणातैं द्वितीय वर्गणाविषै एक विशेष, तृतीय वर्गणाविषै दोय विशेष, चतुर्थ वर्गणाविषै तीन विशेष ऐसैं क्रमतैं विशेष घाटि घाटि पाइए है तातैं सिद्धराशिके अनंतवे भागि वा अभव्य राशितैं अनंतगुणी जो एक स्पर्धक वर्गणा शलाका तितने विशेष प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणातैं द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषै घटते जानने। सो इन विशेषनिके परमाणूनिका प्रमाणकौं दूणा जघन्य वर्गकरि गुणैं जो प्रमाण होइ तितना द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषै ऋण जानना। बहुरि तृतीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणानिविषै प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणातैं एक स्पर्धक वर्गणा शलाकामात्र विशेष घटैं तिनके परमाणूनिका प्रमाणकौं तिगुणा जघन्य वर्गकरि गुणैं तहां ऋण हो है। ऐसैं क्रमतैं अंत स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषै एक घाटि अपूर्व स्पर्धक प्रमाणकरि गुणित एक स्पर्धक वर्गणा शलाकामात्र विशेष घटैं तिनके परमाणूनिका प्रमाणकौं अपूर्व स्पर्धकका प्रमाणकरि गुणित जो जघन्य वर्गताकरि गुणैं तहां ऋण हो है। ऐसैं कह्या अपना अपना ऋण ताकौं पूर्वोक्त अपना अपना स्थूल प्रमाणमैं घटाएं सूक्ष्म तारतम्यरूप अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण आवै है। ऐसैं अव्यवधान कहिए निरंतरपनैं स्पर्धकनिका अल्पबहुत्व कह्या। बहुरि व्यवधान कहिए सांतर तीहिंकरि कहिए है—

प्रथम स्पर्धककी प्रथमवर्गणातैं अंतस्पर्धककी प्रथमवर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद अनंतगुणे हैं। किंचित् ऊन अपूर्व स्पर्धक प्रमाणकरि गुणित जानने। ऐसैं क्रोध मान माया लोभके अपूर्व स्पर्धकनिविषै अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेदनिका अल्पबहुत्वका व्याख्यान समान जानना॥ ४६७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुव्वाण फड्ढयाणं छेत्तूण असंखभागदव्वं तु।
कोहादीणमपुव्वं फड्ढयमिह कुणदि अहियकमा ॥

पूर्वान् स्पर्धकान् छित्वा असंख्यभागद्रव्यं तु।
क्रोधादीनामपूर्वं स्पर्धकमिह करोति अधिकक्रमं॥ ६६८ ॥

स० चं– संज्वलन क्रोध मान माया लोभके पूर्व स्पर्धकनिका जो सर्व द्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहारमात्र असंख्यातका भाग दीएं तहां एक भागमात्र द्रव्यकौं ग्रहि इहां अपूर्व-स्पर्धक करै है। सोई कहिए है—

स्थिति सम्बंधी द्व्यर्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्धमात्र मोहनीयका देशघाती द्रव्य है जातैं मोहके सर्वघाती द्रव्यका इहां अभाव है। ताकौं अनुभाग संबंधी किंचित अधिक द्व्यर्धगुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणा होइ, तातैं प्रथम वर्गणाकौं किंचित् अधिक ड्योढगुणहानिकरि गुणैं मोहनीयके सर्व द्रव्यका प्रमाण हो है। ताकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागकौं जुदा राखि बहुभागानिके समान दोय भाग करिए। तहां एक भाग समान भागविषै जुदा राख्या, एक भाग मिलाएं कषायनिका द्रव्य साधिक आधा है। बहुरि एक समान भागमात्र नोकषायनिका द्रव्य किंचिदून आधा है। तहां कषायनिके द्रव्यकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भाग जुदा राखि बहुभागनिके च्यारि समान भाग करने बहुरि जुदा राख्या एक भागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभागनिकौं प्रथम समान भागविषै जोडैं लोभका द्रव्य हो है। बहुरि अवशेष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक भागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग द्वितीय समान भागविषै जोडैं मायाका द्रव्य हो है। बहुरि अवशेष एक भागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग तृतीय समान भागविषै मिलाएं क्रोधका द्रव्य हो है। बहुरि अवशेष एक भागकौं चतुर्थ समान भागविषै मिलाएं मानका द्रव्य हो है। बहुरि नोकषायनिका सर्व द्रव्य क्रोधरूप संक्रमण भया तातैं याकौं क्रोधका द्रव्यविषै मिलाइए ऐसैं सर्व मोहके द्रव्यका साधिक आठवां भागमात्र लोभका द्रव्य भया। किंचिदून आठवां भागमात्र माया-का द्रव्य भया। किंचिदून आठवां भागमात्र मानका द्रव्य भया। किंचिदून पांचगुणा आ-ठवां भागमात्र क्रोधका द्रव्य भया ऐसैं अपने अपने द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्य ग्रहि अपूर्व स्पर्धक करिए है ते क्रोधादिकनिके अपूर्व स्पर्धक अधिक क्रम लीएं हैं। तहां क्रोधके अपूर्व स्पर्धक स्तोक हैं। यातैं याकौं अनंतका भाग दीएं एक भागमात्र अधिक मानके अपूर्व स्पर्धक हैं बहुरि यातैं याकौं पूर्व भागहारतैं एक अधिक भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र अधिक मायाके अपूर्व स्पर्धक हैं। बहुरि यातैं याकौं पूर्व भागहारतैं एक अधिक भागहारका भाग दीएं तहां एक भागमात्र अधिक लोभके अपूर्व स्पर्धक हैं।

अंक संदृष्टिकरि जैसैं क्रोधके अपूर्व स्पर्धक अठारह १८ याकौं छहका भाग दीएं तीन पाए तिनकौं तहां अधिक कीएं मानके इकईस हो हैं। याकौं पूर्व भागहारतैं एक अधिक सात ताका भाग दीएं तीन पाए तिनकरि अधिक मायाके चौईस हो हैं। इनकौं पूर्व भागहारतैं एक अधिक आठ तिनिका भाग दीएं तीन पाए तिनकरि अधिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोभके सत्ताईस हो हैं। ऐसैं यथार्थकरि क्रोधादिकानिके अपूर्व स्पर्धक क्रमतैं अधिक अधिक जानने। ऐसैं अपूर्व स्पर्धक करनेके कालके प्रथमादि समयनिविषै अपूर्व स्पर्धक करिए है॥ ४६८॥

समखंडं सविसेसं णिक्खवियोकट्टिदादु सेसधणं।
पक्खेवकरणसिद्धं इगिगोउंछेण उभयत्थ॥ ४६९॥

समखंडं सविशेषं निक्षिप्यापकर्षितात् शेषधनं।
प्रक्षेपकरणसिद्धं एकगोपुच्छेन उभयत्र॥ ४६९॥

स० चं०— अपकर्षण कीया जो द्रव्य तिसविषै कितने इक द्रव्य तौ विशेष सहित समखण्डरूप अपूर्व स्पर्धकनिविषै निक्षेपणकरि अवशेष धन हैं सो ऐसैं एक गोपुच्छकरि उभयत्र कहिए पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिविषैं निक्षेपण करना सिद्ध भया। सोई कहिए है—

अपकर्षण कीया जो द्रव्य तिसविषै केता इक द्रव्यकरि तौ अपूर्व स्पर्धक पूर्वैं न थे ते नवीन सद्भावरूप करिए है अर अवशेष द्रव्य रहे सो पूर्वस्पर्धक पूर्वैं थे अर अपूर्वस्पर्धक न भए तिनविषै निक्षेपण करिए है। तहां अपूर्व स्पर्धक केते द्रव्यकरि करिए है? सो कहिए है—

पूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्य ग्रहि अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषै तिस द्रव्यकरि केते इक वर्ग करिए है। बहुरि ऐसैं ही दोय घाटि अपकर्षण भागमात्र पूर्व स्पर्धककी द्वितियादि वर्गणानिके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमाणूनिकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्यकौं ग्रहि अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषै निक्षेपण करिए है। इनकौं मिलाएं वर्गणाके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं तहां एक भाग विना बहुभागमात्र द्रव्य भया सो वर्गणाका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देनेतैं अर एक घाटि अपकर्षण भागहारमात्र वर्गणाका द्रव्य ग्रह्या तातैं एक घाटि अपकर्षण भागहारकरि गुणनेतैं यहु द्रव्य पूर्व स्पर्धककी वर्गणाका द्रव्यके समान हो है जातैं पूर्व स्पर्धकानिकी सर्व वर्गणानिके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्य अपकर्षण कीया तब तहां बहुभागमात्र द्रव्य रह्या सो इतना यहु द्रव्य भया, सो इतने द्रव्यकरि तौ अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणा भई। बहुरि ताके ऊपरि इतने इतने द्रव्य ही करि अपूर्व स्पर्धककी अन्य द्वितीयादि वर्गणा भई सो अपूर्व स्पर्धकनिका जो प्रमाण अर एक स्पर्धकानिविषै जो वर्गणानिका प्रमाण इन दोऊनिकौं परस्पर गुणें जेता प्रमाण होइ तितनी अपूर्वस्पर्धकानिकी वर्गणा हैं सो एक वर्गणाका पूर्वोक्त प्रमाण द्रव्य होइ तौ इतनी वर्गणाका केता द्रव्य होइ ऐसैं त्रैराशिककरि पूर्वोक्त द्रव्यकौं अपूर्व स्पर्धककी वर्गणानिका प्रमाणकरि गुणें अपूर्व स्पर्धककी वर्गणानिके आदि धनका प्रमाण हो है। सो यहु तौ पूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके सदृश अपूर्व स्पर्धकानिकी सर्व वर्गणानिकी समान अपेक्षाकरि समपाट्टिका द्रव्य भया। अब इनविषै जो विशेष कहिए चय ते जैसैं बंधती पाइए है सो कहिए है—

पूर्व स्पर्धकनिविषैं गुणहानि गुणहानि प्रति उपरितैं नीचैं दूणा दूणा विशेषका प्रमाण है सो इहां पूर्वस्पर्धककी प्रथम गुणहानिके नीचैं अपूर्वस्पर्धकानिकी रचना भई तातैं पूर्वस्प-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्धकनिकी प्रथम गुणहानिविषैं जो विशेषका प्रमाण पूर्वस्पर्धककी प्रथम वर्गणाकौं दोगुणहानिका भाग दीएं हो है तातैं दूणां अपूर्वस्पर्धकनिविषैं विशेषका प्रमाण जानना सो ऐसा एक विशेष तौ अपूर्वस्पर्धककी प्रथमवर्गणाके नीचैं भई जो अंत अपूर्वस्पर्धककी अंत वर्गणा तीहिंविषैं अधिक हो है। बहुरि ताके नीचैं द्विचरमवर्गणाविषैं दोय विशेष अधिक हो हैं अैसैं क्रमतैं एक एक विशेष अधिक होइ, अपूर्व स्पर्धकनिकी वर्गणाका जेता प्रमाण तितने विशेष प्रथम अपूर्वस्पर्धककी प्रथमवर्गणाविषैं हो है सो इहां आदि एक उत्तर एक गच्छ अपूर्वस्पर्धक वर्गणामात्र स्थापि "सैकपदाहतपददले" इत्यादि सूत्रकरि जेता संकलन धन होइ तितना उत्तर धन जानना। सो पूर्वोक्त आदि धन अर इस उत्तरधनकौं जोडैं जो प्रमाण होइ तितना द्रव्यकौं तिस अपकर्षण कीया द्रव्यतैं ग्रहि करि अैसैं अपूर्वस्पर्धकनिकी रचना करिए है। पूर्वस्पर्धक तो पूर्वैं थे तातैं तिनका सद्भाव होनेकौं इतना द्रव्य तौ जुदाही अपूर्वस्पर्धकनिविषै दीया सो जैसैं गऊका पूंछ क्रमतैं मोटाईकी अपेक्षा घटता हो है तैसैं इहां चय घटता क्रम होनेतैं अपूर्वस्पर्धकनिका एक गोपुच्छ भया। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वस्पर्धकनिकी भी रचना चय घटता क्रम लीएं हैं। तातैं पूर्व अपूर्वस्पर्धकनिका मिलकरि भी एक गोपुच्छ हो है सो अैसैं एकगोपुच्छ होनेकरि तिस अपकर्षण किया द्रव्यविषै पूर्वोक्त द्रव्य घटाएं जो अवशेष द्रव्य रह्या सो पूर्वस्पर्धक वा अपूर्वस्पर्धकनिविषैं सर्वत्र विभाग करि देना। तहां अपूर्वस्पर्धककरि वर्गणा प्रमाण एक शलाका स्थापि ताका भाग अपूर्वस्पर्धक वर्गणा प्रमाणकौं दीएं अपूर्वस्पर्धक संबंधी तौ एक शलाका भई अर ताहीका भाग ड्योढ गुणहानि गुणित पूर्वस्पर्धक वर्गणा प्रमाणकौं दीएं असंख्यात गुणा अप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पकर्षण भागहारका ड्योढ गुणा करिए इतनी पूर्वस्पर्धककी वर्ग शलाका भई। इहां पूर्वस्पर्धककी एक गुणहानिविषै जो स्पर्धकनिका प्रमाण है ताकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपूर्वस्पर्धकनिका प्रमाण हो है तातैं असंख्यातगुणा अपकर्षण भागहार कह्या। अर पूर्वस्पर्धकनिविषैं नानागुणहानि अनंती हैं तथापि द्रव्यकी अपेक्षा ड्योढ गुण हानि गुणित वर्गणामात्र ही है तातैं ड्योढका गुण कार कीया है ऐसा जानना। सो पूर्व अपूर्व स्पर्धकानिकी शलाकानिकौं मिलाय ताका भाग तिस अपकर्षण कीया द्रव्यविषैं जो अवशेष द्रव्य रह्या था ताकौं दीएं जो प्रमाण आया ताकौं पूर्वस्पर्धक संबंधी बहुशलाकाकारि गुणैं पूर्वस्पर्धकनिविषै देने योग्य द्रव्यका विभाग आवै है अर तिसहीकौं अपूर्व स्पर्धक संबंधी एक शलाकाकरि गुणैं अपूर्वस्पर्धकानिविषैं देने योग्य द्रव्यका विभाग आवै है सो इस अपूर्वस्पर्धकका विभागरूप द्रव्य अर जिस द्रव्यकरि पूर्वै अपूर्वस्पर्धककी रचना करनी कही थी ऐसे चयधन सहित समपट्टिकारूप धन इन दोऊनिकौं मिलाएं अपूर्वस्पर्धक संबंधी सर्व द्रव्य भया। सो 'अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे' इत्यादि सूत्रकरि ताकौं अपूर्वस्पर्धक वर्गणा प्रमाण जो गच्छ ताका भाग दीएं मध्य धन होइ। याकौं एक घाटि जो गच्छ ताका आधा प्रमाण करि हीन जो दोगुणहानि ताका भाग दीएं विशेष होइ सो एक घाटि गच्छका आधा जो प्रमाण होइ तितने विशेष तिस मध्य धनविषैं जोडें जो होइ तितना द्रव्य अपूर्वस्पर्धकनिकी आदि वर्गणा विषैं दीजिए है तातैं एक एक विशेष घटता क्रम लीएं द्वितीयादि वर्गणानिविषैं क्रमतैं दीजिए है। ऐसैं एक घाटि गच्छ प्रमाण चयनिकरि हीन द्रव्य अंतवर्गणाविषैं दीजिए है ऐसैं तौ अपूर्वस्पर्धक नवीन कीए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि पूर्वस्पर्धकनिकी रचना तौ पूर्वें थी ही अब इनविषैं इहां पूर्वोक्त बहुशलाकानिका जो विभाग रूप द्रव्य कह्या था सो देना । सो 'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा' इत्यादि सूत्रकरि तिस पूर्वस्पर्धक संबंधी विभाग रूप द्रव्यकौं साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं जेता प्रमाण होइ तितना द्रव्य तो पूर्वस्पर्धकनिकी आदि वर्गणाविषैं निरूपण करिए है। बहुरि याकौं दोगुणहानिका भाग दीएं विशेषका प्रमाण होइ सो ऊपरि द्वितीयादि वर्गणानिविषै प्रथम गुणहानिपर्यंत एक एक विशेष घटता क्रम लीएं अर गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा क्रम लीएं द्रव्य निक्षेपण करिए है ॥ ४६९ ॥

उक्कट्टिदं तु देदि अपुव्वादिमवग्गणाउ हीणकमं ।
पुव्वादिवग्गणाए असंखगुणहीणयं तु हीणकमा ॥

अपकर्षितं तु ददाति अपूर्वादिमवर्गणा हीनक्रमं ।
पूर्वादिवर्गणायामसंख्यगुणहीनकं तु हीनक्रमं ॥ ४७० ॥

स० चं०—पूर्वोक्त विधानकरि अपकर्षण कीया जो द्रव्य तिसविषै ते अपूर्वस्पर्धककी आदिवर्गणाविषै बहुत द्रव्य दीजिए है तातैं ताकी द्वितीयादि अंतवर्गणा पर्यंत विषैं विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है । बहुरि अपूर्वस्पर्धककी अंतवर्गणाविषैं जो द्रव्य दीया तातैं साधिक अपकर्षण भागहारमात्र जो असंख्यात तितना गुणा घटता पूर्वस्पर्धककी प्रथमवर्गणाविषैं द्रव्य दीजिए है । इहां नवीन द्रव्य दीया तिसहीकी विवक्षा जाननी । इस पूर्वस्पर्धककी प्रथम वर्गणाका पुरातन द्रव्य वर्गणाके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीएं बहुभागमात्र है । तिस सहित नवीन दीया द्रव्य है सो अपूर्वस्पर्धककी अंतवर्गणाके द्रव्यतैं एक विशेषमात्र ही घटता जानना। जातैं अपूर्वस्पर्धकनिका एक गोपुच्छ भया है। बहुरि तिस पूर्वस्पर्धककी प्रथम वर्गणातैं उपरि द्वितीयादि वर्गणानिविषैं एक एक चय घटता द्रव्य निक्षेपण करिए है । इस ही कथनके विशेष निर्णय करनेकौं क्षेत्र रूप कल्पनाकरि स्थापि कथन कीजिए है–

पूर्व स्पर्धकनिका सर्व द्रव्य ड्योढ गुणहानि गुणित प्रथमवर्गणामात्र है सो ड्योढ गुणहानिका जेता प्रमाण तितना लंबा अर प्रथम वर्गणाका जेता परमाणू तिनका प्रमाण तितना चौडा क्षेत्र ऐसा स्थापना यामैं अपकर्षण कीया द्रव्यकौं जुदा करनेके अर्थि चौडाई विषै अपकर्षणका भागहारका जेता प्रमाण तितने खंड करिए तब ऐसा हो है– तहां ऐसैं अपकर्षणभागहारका भाग दीएं एकभागमात्र चौडा क्षेत्र एक खंडका है सो अपकर्षण कीया द्रव्यका स्वरूप जानना। अवशेष बहुभागमात्र चौडा क्षेत्र अवशेष खंडनिका रह्या सो अपकर्षण कीएं पीछें अवशेष पूर्व स्पर्धक स्वरूप जानने । लंबे ते दोऊ ही स्पर्धक गुणहानिमात्र हैं। ते एक खंड बहुखंड ऐसैं भए बहुरि तहां एक खंड ऐसा तींहिंविषै अपकर्षण कीया द्रव्यका विभाग करनेके अर्थि एक गुणहानिका स्पर्धक प्रमाणकौं असंख्यातगुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपूर्वस्पर्धकनिका प्रमाण होइ अर तहां लंबाई ड्योढ गुणहानिमात्र थी तातैं असंख्यात गुणा जो अपकर्षण भागहार ताकौं ड्योढ गुणा कीएं जेता प्रमाण तितना तिस एक खंडकी लंबाईविषै खंड

७०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे 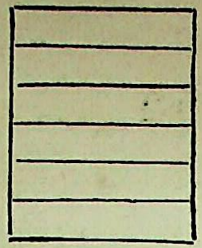 करने। तहां एक खंडविषैं लंबाईका प्रमाण अपूर्वस्पर्धकनिका प्रमाण मात्र आया चौडे पूर्वोक्त प्रमाण मात्र है ही। बहुरि इन खंडनिविषैं जिस द्रव्यकरि अपूर्वस्पर्धक नवीन बनैं तिस द्रव्य स्वरूप साधिक एक घाटि अपकर्षण भागहारमात्र खंड ग्रहण करने। इहां अपूर्वस्पर्धक प्रमाण गच्छका एकवार संकलनधनमात्र जे पूर्वस्पर्धक संबंधी विशेषतैं दूणा प्रमाण लीएं विशेष तिनका अधिकपना साधिक शब्दकरि जानना। सो तिन खंडनिकौं ग्रहणकरि पूर्वैं जे अवशेष बहुखंडमात्र पूर्वस्पर्धक स्वरूप क्षेत्र ऐसा 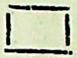 रह्या था ताके नीचैं अविरोधपने जोडिए सो जोडने योग्यतैं सर्वखंडनिकौं चौडाईविषैं बरोबरि आगैं ऐसे 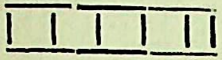 स्थापिए तब प्रथम वर्गणाकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक खंडकी चौडाई है ताकौं इहां ग्रहे हुए खंडानिका प्रमाण एक घाटि अपकर्षण भागहारमात्र ताकरि गुणें चौडाई का प्रमाण हो है सो अवशेष पूर्वस्पर्धकरूप क्षेत्रकी चौडाईके समान हो है। बहुरि इहां ग्रहे हुए खंडानिका प्रमाणविषैं विशेषनिका साधिकपना कह्या है तातैं तिस पूर्वस्पर्धकस्वरूप क्षेत्रतैं चौडाईका प्रमाण क्रमतैं किछू साधिक जानना। अर इहां जोडनेयोग्य खंडनिकी लंबाई अपूर्वस्पर्धक प्रमाणमात्र है तातैं नीचैं जोड्या क्षेत्रका लंबाईका प्रमाण अपूर्वस्पर्धक प्रमाण मात्र भया सो ऐसैं पूर्वस्पर्धकनिका क्षेत्रके नीचैं तिस द्रव्यकरि अपूर्वस्पर्धककी रचना भई तिस द्रव्यरूप जो ग्रहे खंडानिका अपूर्वस्पर्धकरूप क्षेत्र ताकौं जोडें ऐसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पूर्वस्पर्धक क्षेत्र
अपूर्वस्पर्धक क्षेत्र

भया । ऐसैं पूर्वस्पर्धककी प्रथम वर्गणातैं अपूर्वस्पर्धकनिकी वर्गणा अनुक्रमतैं विशेष अधिक जाननीं । बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं जितना द्रव्यकरि अपूर्वस्पर्धक बनैं तिनरूप क्षेत्र जोडनेका विधान तौ कह्या अब अवशेष रह्या द्रव्य पूर्व अपूर्वस्पर्धकनिविषैं देना तिसरूप क्षेत्र जोडनेका विधान कहिए है—

असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारतैं ड्योढ गुणा प्रमाण लीएं खंड कीए थे तिनविषैं साधिक एक घाटि अपकर्षण भागहारमात्र खंड ग्रहण कीएं पीछैं अवशेष जे खंड रहे तिन विषै एक खंड ऐसा ताकौं सकल खंड कहिए । ताकी चौडाई विषैं असंख्यात गुणा अपकर्षणभागहारतैं ड्योढ गुणा प्रमाणमात्र खंड ऐसे करने सो इतने खंडनिकौं विकल खंड कहिए । तहां एक विकल खंडकौं अपूर्वस्पर्धक संबंधी क्षेत्रकी चौडाई विषै क्रमतैं जोडना अर अवशेष विकल्प खंडानिकौं तैसैं ही पूर्वस्पर्धक संबंधी क्षेत्रकी चौडाईविषैं अनुक्रम परिपाटी लीएं जोडना । याही प्रकार जेते अवशेष सकल खंड रहे तिनकौं पूर्व अपूर्वस्पर्धक संबंधी क्षेत्रविषैं अविरोधपने चौडाईविषैं जानने । ऐसै जोडें ऐसा

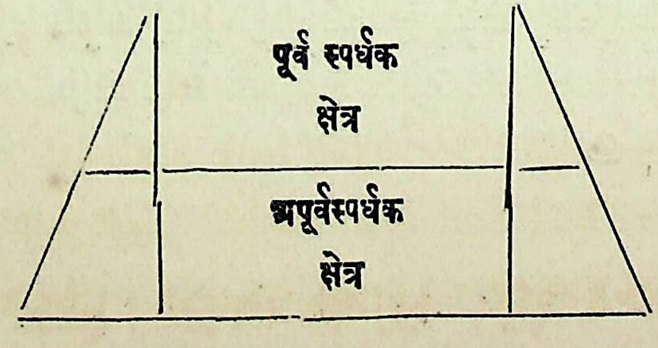

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षेत्र भया। इहां पूर्वस्पर्धककी प्रथमवर्गणाविषै जोडैं समस्त विकल खंड ते मिलिकरि भी एक सकल खंड प्रमाण भए जाते अपकर्षण भागहारमात्र विकलखंडनिकरि हीन हो हैं। ऐसैं पूर्वस्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं दीया किंचिदून एक सकल खंड है। अर अपूर्वस्पर्धककी अंत वर्गणाविषैं पाहिले वा पीछै दीए हुए एक घाटि अपकर्षण भागहारमात्र सकल खंड हैं तातैं अपूर्वस्पर्धककी अंत वर्गणाविषैं दीया द्रव्यतैं पूर्वस्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं दीया द्रव्य असंख्यात गुणा घटता है। असंख्यातका प्रमाण इहां साधिक अपकर्षण भागहारमात्र जानना ऐसैं पूर्वोक्त कथनकौं क्षेत्ररूप स्थापि प्रगट कीया ॥ ४७० ॥

कोहादीणमपुव्वं जेट्ठं सरिसं तु अवरमसरित्थं।
लोहादिआदिवग्गणअविभागा होंति अहियकमा ॥

क्रोधादीनामपूर्वं ज्येष्ठं सदृशं तु अवरमसदृशं।
लोभादिआदिवर्गणाअविभागा भवंति अधिकक्रमाः ॥ ४७१ ॥

स० चं०– क्रोधादिके चारचो कषायनिका अपूर्व स्पर्धकानिकी उत्कृष्ट वर्गणा जो अंतस्पर्धककी प्रथम वर्गणा सो अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेदनिके प्रमाणकी अपेक्षा समान हैं। बहुरि जघन्य वर्गणा जो प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणा सो असमान है। तहां लोभादिककी जघन्य वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद क्रमकरि अधिक हैं। लोभकी जघन्य वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद तौ स्तोक हैं तातैं मायाकीके अधिक है तातैं मानकीके अधिक हैं तातैं क्रोधकीके अधिक हैं ॥ ४७१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सगसगफड्डयएहिं सगजेट्ठे भाजिदे सगीआदि ।
मज्झेवि अणंताओ वग्गणगाओ समाणाओ ॥

स्वकस्वकस्पर्धकैः स्वकज्येष्ठे भाजिते स्वकीयादि ।
मध्येपि अनंता वर्गणाः समानाः ॥ ४९८ ॥

स॰ चं॰– सामान्य आलापकरि अभव्य राशितैं अनंतगुणा वा सिद्धराशिके अनंतवे भागमात्र हीनाधिकरूप जो अपना अपना स्पर्धकानिका जो प्रमाण ताका भाग अपनी अपनी उत्कृष्ट वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाणकौं दीएं अपनी अपनी आदि वर्गणाका प्रमाण आवै है।

अंकसंदृष्टिकरि जैसैं च्यारचो कषायनिके समान प्रमाण लीएं उत्कृष्ट वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद पन्द्रहसौ बारह १५१२ इनकौं लोभ माया मान क्रोधके स्पर्धकानिका प्रमाण कूमतैं सत्ताईस चौवीस इकईस अठारह तिनका भाग दीएं लोभकी जघन्य वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद छप्पन ५६, मायाकीके तरेसठि ६३, मानकीके बहत्तरि ७२ क्रोधकीके चौरासी ८४ हो हैं। अथवा अपनी अपनी जघन्य वर्गणानिके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाणकौं अपनी अपनी स्पर्धकानिका प्रमाणकरि गुणैं अपनी अपनी उत्कृष्ट वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है। कैसैं ? सो कहिए है—

लोभादिककी प्रथम स्पर्धककी प्रथमवर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद समूहतैं दूसरे स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके दूणे, तीसरे स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके तिगुणे, चौथे स्पर्धककी प्रथम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्गणाके चौगुणे ऐसैं क्रमतैं जितने अपने स्पर्धकानिका प्रमाण तितने गुणे अंतस्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदानिका प्रमाण हो है सो च्यारयो कषायनिका समान है। बहुरि मध्यविषै भी अनंत वर्गणा च्यारयो कषायनिकी परस्पर समान हो है सो कथन आगैं करिए है ॥ ४७२ ॥

जे हीणा अवहारे रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं ।
हीणवहारेणहिये अद्धं पुव्वं फलेणहियं ॥ ४७३ ॥

ये हीना अवहारे रूपाः तैः गुणितं पूर्वफलं ।
हीनावहारेणाधिके अर्धं पूर्वं फलेनाधिकं ॥ ४७३ ॥

स० चं– इस गाथाका अर्थरूप व्याख्यान क्षपणासारविषै किछू कीया नाहीं अर मेरे जाननेमैं भी स्पष्ट न आया तातैं इहां न लिख्या है। बुद्धिमान होइ यथार्थ याका अर्थ होइ सो जानियो ॥ ४७३ ॥

कोहदुसेसेणवहिदकोहे तक्कंडयं तु माणतिए ।
रूपहियं सगकंडयहिदकोहादी समाणसला ॥

क्रोधद्विशेषेणावहितक्रोधे तत्कांडकं तु मानत्रयं ।
रूपाधिकं स्वककांडकहितक्रोधादि समानशलाकाः ॥ ४७४ ॥

स० चं— क्रोधद्विक अवशेष कहिए क्रोधके स्पर्धकानिका प्रमाणकौं मानके स्पर्धक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निका प्रमाणविषै घटाएं जो अवशेष रहै ताका भाग क्रोधके स्पर्धकनिका प्रमाणकौं दीएं जो प्रमाण आवै ताका नाम क्रोध कांडक है। बहुरि मानत्रिकविषै एक एक अधिक है सो क्रोधकांडकतैं एक अधिकका नाम मानकांडक है। यातैं एक अधिकका नाम माया कांडक है। यातैं एक अधिकका नाम लोभकांडक है।

अंकसंदृष्टिकरि जैसैं क्रोधके स्पर्धक अठारह, ते मानके इकईस स्पर्धकविषै घटाएं अवशेष तीन, ताका भाग क्रोधके अठारह स्पर्धककौं दीएं क्रोध कांडकका प्रमाण छह यातैं एक एक अधिक मान माया लोभके कांडकनिका प्रमाण क्रमतैं सात आठ नव रूप जानने। बहुरि अपने अपने कांडकनिका भाग अपने अपने स्पर्धकनिका प्रमाणकौं दीएं जो नाना कांडकनिका प्रमाण आवै तितनी वर्गणानिके अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्यो कषायनिके परस्पर समान हो हैं। कैसैं ? सो कहिए है—

क्रोधादिककी प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणातैं द्वितीय तृतीयादि स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद क्रमतैं दूणे तिगुणे इत्यादि होइ अपना अपना कांडकका जेता प्रमाण तितना स्थान भएं जो स्पर्धक ताकी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्यो कषायनिके समान हो हैं। बहुरि तहांतैं ऊपरि प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके जेते अविभाग प्रतिच्छेद तितने तितने एक एक स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषै बंधते अपने अपने कांडक प्रमाण स्थान भएं जो स्पर्धक ताकी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद समान हो हैं। या प्रकार अपना अपना कांडकमात्र स्पर्धक भएं च्यार्यो कषायनिकी वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी समानता होतैं नाना कांडक प्रमाण वर्गणानिविषै समानता हो है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंकसंदृष्टिकरि जैसैं क्रोध मान माया लोभके प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद क्रमतैं चौरासी बहत्तरि तरेसठि छप्पन हैं। बहुरि ताके ऊपरि एक एक स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषै तितने तितने बधते अपना कांडकमात्र छह सात आठ नव स्पर्धक भए तहां प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद च्यारयो कषायनिके परस्पर समान पांचसै च्यारि हैं। बहुरि ताके ऊपरि तैसैं ही बधती होतैं अपने कांडकमात्र स्पर्धक भए तहां प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद च्यारयो कषायनिके समान एक हजार आठ हो हैं। बहुरि ताके ऊपरि तैसैं ही बधती होतैं अपने कांडकमात्र स्थान भए तहां प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद च्यारयो कषायनिके समान पन्द्रहसो बारह हो हैं। ऐसैं अपना अपना कांडकका भाग अपना अपना स्पर्धक प्रमाणकौं दीएं नाना कांडकका प्रमाण तीन पाया सो तीन ही स्पर्धकानिकी प्रथम वर्गणा परस्पर समानरूप हैं और वर्गणानिका समान रूप नाही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोध	मान	माया	लोभ
१५१२	१५१२	१५१२	१५१२
०	०	०	०
०	०	०	०
१०९२	१०८०	१०७१	१०६४
१००८	१००८	१००८	१००८
०	०	०	०
०	०	०	०
५८८	५७६	५६७	५६०
५०४	५०४	५०४	५०४
४२०	४३२	४४१	४४८
३३६	३६०	३७८	३९२
२५२	२८८	३१५	३३६
१६८	२१६	२५२	२८०
८४	१४४	१८९	२२४
	७२	१२६	१६८
		६३	११२
			५६

ऐसैं इहां अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण कह्या है सो विवक्षित वर्गणाविषै जो एक परमाणू रूप वर्ग तीहिंविषै जेते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए ताकी अपेक्षा कथन कीया है। सर्व वर्गनिका समूह रूप वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण यथा सम्भव जानना ॥

५६१ ताहे दव्ववहारो पदेसगुणहाणिफड्ढयवहारो । ५६१

पल्लस्स पढममूलं असंखगुणियक्कमा होंति ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्र द्रव्यावहारः प्रदेशगुणहानिस्पर्धकावहारः ।
पल्यस्य प्रथममूलं असंख्यगुणितक्रमा भवंति ॥ ४७५ ॥

स० चं–अश्वकर्ण करणका प्रथम समय विषैं अपूर्व स्पर्धक करनेका द्रव्य ग्रहण करनेके अर्थि सर्व द्रव्यकौं जिस अपकर्षण भाग हारका भाग दीया तातैं प्रदेश संबंधी एक गुणहानिविषैं जो स्पर्धकनिका प्रमाण ताकौं अपूर्वस्पर्धकनिका प्रमाण ल्यावनेके अर्थि जाका भाग दीया सो असंख्यातगुणा है। तातैं पल्यका प्रथम वर्गमूल असंख्यात गुणा है। इहां ऐसा प्रयोजन जानना–

जो अपकर्षण भागहारतैं असंख्यातगुणा वा पल्य का प्रथम वर्ग मूलके असंख्यातवे भाग मात्र जो भागहार ताका भाग अनुभाग संबंधी एक गुणहानिकी स्पर्धक शलाकाकौं दीएं प्रथम समय विषैं कीए जे अपूर्व स्पर्धक तिनका प्रमाण आवै है ॥ ४७५ ॥

ताहे अपुव्वफड्डयपुव्वस्सादीदणंतिमुवदेहि ।
बंधो हु लताणंतिमभागोत्ति अपुव्वफड्डयदो ॥

तस्मिन् अपूर्वस्पर्धकपूर्वस्यादितोऽनंतिममुदेति ।
बंधो हि लतानंतिमभाग इति अपूर्वस्पर्धकतः ॥ ४७६ ॥

स०चं– तिस अश्वकर्ण करणका प्रथम समय विषैं उदय निषेक संबंधी सर्व अपूर्व स्पर्धक अर पूर्वस्पर्धककी आदितैं लगाय ताका अनंतवां भाग उदय हो है। कैसैं? सो कहिए है- अपूर्वस्पर्धकरूप परिणया है अनुभाग सत्त्व जाका ऐसा जो कर्म ताका असंख्यातवां भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मात्र प्रदेशनिकौं अपकर्षण करि उदीरणा कर्ता जो जीव ताकैं वर्तमान समयविषै उदय आवने योग्य जो उदय निषेक तींहि विषैं सर्व ही अनुभाग सत्व अपूर्व स्पर्धक स्वरूप हैं। तातैं ते तौ सर्व ही स्पर्धक उदीरणारूप हैं अर उदय निषेकतैं ऊपरिके निषेक तिनके समान अनुभाग शक्ति धरैं जे अपूर्वस्पर्धक ते उदय न हो हैं। तातैं ते अनुदीर्णा रूप हैं। ऐसैं केई अपूर्व स्पर्धकानिका उदय अर केई अपूर्व स्पर्धकनिका अनुदय जानना। बहुरि पूर्व स्पर्धकनिविषै भी जे प्रथम स्थितिविषै लता दारुरूप स्पर्धक हैं तिनविषै लता समान अनुभागका अनंतवां भागमात्र स्पर्धक उदय हो है सो उदीरणारूप है। बहुरि उदय निषेकतैं ऊपरिके निषेकानिके समान शक्ति लीएं लता भागका अनंतवां भाग उदय न हो है सो अनुदीर्णारूप है। बहुरि ताके उपरिवर्ती लताभागका अनंत बहुभागनिविषै बहुभाग अर समस्त दारु भाग है सो उदयकौं न प्राप्त हो है। ऐसैं पूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणातैं लगाय अनंतवां भाग उदयरूप हो है। अन्य अनुदयरूप है। ऐसैं अश्वकर्ण करणका प्रथम समयविषै उदय होनेका स्वरूप कह्या। बहुरि इस समयविषै संज्वलनका बंध हो है। तहां पूर्वै लता भागके अनंतवे भागमात्र बंध होता था सो अब तातैं अनंतवे भागमात्र अपूर्व स्पर्धकका प्रथम स्पर्धकतैं लगाय अंत स्पर्धक पर्यंत अर पूर्व स्पर्धकनिका लता भागका अनंतवां भाग पर्यंत जे स्पर्धक तिनरूप होइ बंध रूप स्पर्धक परिणमै हैं। इहां उदय रूप अनुभागतैं बंध रूप अनुभाग अनंतगुणा घटता है। ऐसा जानना ॥ ४७६ ॥ ऐसैं यहु कही सो अश्वकर्ण करण कालका प्रथम समय सम्बन्धी प्ररूपणा जाननी ॥

विदियादिसु समयेसु वि पढमं व अपूव्वफड्ढयाण विही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णवरि य संखगुणूणं ....[1] पडिसमयं ॥

द्वितीयादिषु समयेषु अपि प्रथमं व अपूर्वस्पर्धकानां विधिः।
नवरि च संख्यगुणोनं .... तु प्रतिसमयम् ॥ ४७७ ॥

स० चं०– अश्वकर्ण करणका द्वितीयादिसमयनिविषैं अपूर्वस्पर्धकनिका विधान ताके प्रथम समयवत् जानना। तहां विशेष है सो कहिए है– इस गाथाविषैं लिखनेवालेने अक्षर केते इक न लिखे तातैं आधा गाथाका अर्थ न जानि इहां नाहीं लिख्या है ॥ ४७७ ॥

णवफड्ढयाण करणं पडिसमयं एवमेव णवरिं तु।
दव्वमसंखेज्जगुणं फड्ढयमाणं असंखगुणहीणं ॥

नवस्पर्धकानां करणं प्रतिसमयं एवमेव नवरि तु।
द्रव्यमसंख्येयगुणं स्पर्धकमानं असंख्यगुणहीनम् ॥ ४७८ ॥

स० चं०– ऐसैं ही प्रथम समयवत् समय समय प्रति नवीन स्पर्धकनिकौं करै है। विशेष इतना–तहां द्रव्य तौ क्रमतैं असंख्यातगुणा बंधता अपकर्षण करिए है। अर नवीन स्पर्धक कीएं तिनका प्रमाण असंख्यातगुणा घटता हो है। सोई कहिए है–

अश्वकर्ण करणका द्वितीय समयविषैं जो प्रथम समयविषैं पूर्वस्पर्धकनिके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भागमात्र द्रव्य अपकर्षण किया था तातैं असंख्यात गुणा

१ रायचंद्र जैन शास्त्रमालाके मुद्रित ग्रंथमें 'दव्वपमाणं तु' ऐसा पाठ अभिप्रायानुसार बना कर लिखा गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यकौं पूर्वस्पर्धक अर प्रथम समयविषैं कीए अपूर्वस्पर्धक तिनका जो द्रव्य था तातैं अपकर्षण करि तिस द्रव्यका असंख्यातवां भागमात्र द्रव्यकरि तौ इहां नवीन अपूर्वस्पर्धक करिए है। ते प्रथम समयविषैं कीए अपूर्वस्पर्धक तिनकी प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके नीचैं घटता अनुभाग लीएं करिए है।

तिस प्रथम वर्गणातैं एक एक वर्गणा प्रति एक एक विशेषमात्र द्रव्यकी अधिकता द्वितीय समय संबंधी नवीन अपूर्वस्पर्धककी प्रथम वर्गणा पर्यंत जाननी। तहां पूर्वोक्त प्रकार समपट्टिका धन चयधन जोडैं जेता द्रव्य होइ तितने द्रव्यकरि तौ इहां नवीन स्पर्धक बनैं बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं इतना द्रव्य घटाएं जो अवशेष द्रव्य रह्या ताकौं द्वितीय समयविषैं कीने नवीन अपूर्वस्पर्धक अर प्रथम समयविषैं कीने अपूर्वस्पर्धक अर पूर्वस्पर्धक तिनिका एक गोपुच्छ भया तिसविषैं चय घटता क्रमकरि सर्वत्र देना। बहुरि प्रथम समयविषैं कीए अपूर्वस्पर्धक तिनिके प्रमाणतैं द्वितीय समयविषैं कीए नवीन अपूर्वस्पर्धक तिनका प्रमाण असंख्यातगुणा घटता जानना। बहुरि अश्वकर्ण करणका तृतीय समयविषैं जो द्वितीय समयविषैं द्रव्य अपकर्षण कीया तातैं असंख्यात गुणा द्रव्य पूर्वस्पर्धक अर प्रथम द्वितीय समयविषैं कीए अपूर्वस्पर्धक तिनके द्रव्यतैं अपकर्षण करिए है ताके असंख्यातवां भागमात्र द्रव्यकरि तौ द्वितीय समयविषै कीए स्पर्धक तिनके नीचैं इहां नवीन अपूर्वस्पर्धक करिए है अर अवशेष द्रव्यकौं तृतीय द्वितीय प्रथम समय संबंधी अपूर्वस्पर्धकानिका अर पूर्वस्पर्धकनिका एक गोपुच्छ भया ताविषैं क्रमकरि निक्षेपण करिए है। इहां द्वितीय समयविषैं कीए नवीन अपूर्वस्पर्धकानिका प्रमाणतैं तृतीय समयविषैं कीए नवीन अपूर्वस्प-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्धकनिका प्रमाण असंख्यातगुणा घटता जानना। ऐसैं ही अपूर्वस्पर्धक करण कालका अंत समय पर्यंत समय समय प्रति असंख्यातगुणा द्रव्यकौं अपकर्षण करै है अर नवीन अपूर्व-स्पर्धक नीचैं नीचैं हो हैं तिनका प्रमाण असंख्यातगुणा घटता हो है। अन्य विशेष जैसैं प्रथम समयविषैं कह्या है तैसैं जानना॥ ४७८॥

पढमादिसु दिज्जकमं तक्कालजफड्ढयाण चरिमोत्ति।
हीणकमं से काले असंखगुणहीणयं तु हीणकमं॥

प्रथमादिषु देयक्रमं तत्कालजस्पर्धकानां चरम इति।
हीनक्रमं स्वे काले असंख्यगुणहीनकं तु हीनक्रमम्॥ ४७९॥

स० चं०– अपकर्षण कीया द्रव्यकौं जैसैं दीया तैसैं जो अनुक्रम सो देय क्रम कहिए सो ऐसैं हैं–

अपूर्वस्पर्धक करणकालका प्रथमादि समयनिविषैं तिस काल कीए स्पर्धकनिका अंतपर्यंत तौ विशेष हीन क्रम लीएं अर ताके अनंतरि असंख्यातगुणा घटता ताके ऊपरि विशेष हीन क्रम लीएं जानना। सो कहिए है–

प्रथम समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्य तिसविषैं तिस समय कीए अपूर्वस्पर्धक तिनकी प्रथम वर्गणाविषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। तातैं तिनकी द्वितीय वर्गणा आदि अंतवर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। बहुरि अपूर्वस्पर्धककी अंतवर्गणाविषैं दीया द्रव्यतैं अपूर्वस्पर्धकनिकी प्रथम वर्गणाविषैं असंख्यात गुणा घटता द्रव्य दीजिए है। तातैं ताके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपरि तिनकी अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रमकरि दीजिये है। बहुरि द्वितीय समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्य तिसविषैं तिस समय कीए नवीन अपूर्वस्पर्धक तिनकी प्रथम वर्गणा विषैं बहुत द्रव्य अर द्वितीयादि अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रमकरि द्रव्य दीजिए है। बहुरि तिसकी अंत वर्गणाके द्रव्यतैं प्रथम समयविषैं कीए अपूर्वस्पर्धकानिकी प्रथम वर्गणाविषैं असंख्यातगुणा घटता द्रव्य दीजिए है। तातैं ताके ऊपरि तिनकी अंत वर्गणा पर्यंत वा ताके ऊपरि पूर्वस्पर्धकानिकी प्रथमादि अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रमकरि दीजिए है। बहुरि तृतीय समयविषैं नवीन बने अपूर्वस्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं बहुत द्रव्य, ताके उपरि तिनकी अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि द्वितीय समयविषैं कीए अपूर्वस्पर्धकानिकी प्रथमवर्गणाविषैं असंख्यातगुणा घटता द्रव्य दीजिए है। ताके उपरि तिनकी अंत वर्गणा पर्यंत वा प्रथम समयविषैं कीए अपूर्वस्पर्धककी प्रथमादि अंतवर्गणा पर्यंत वा पूर्वस्पर्धकानिकी प्रथमादि अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ऐसैं ही चतुर्थादि समयनिविषै भी जानना। इहां विवक्षित समयविषैं जे अपूर्वस्पर्धक बनैं ते तौ अपकर्षण कीया द्रव्यविषै केते इक द्रव्यतैं बनैं अर तिनके ऊपरि जे स्पर्धक हैं ते पूर्वैं थे ही। बहुरि तिन सबनिविषैं अवशेष द्रव्य विभाग करि दीया तातैं निजकालविषै बने अपूर्वस्पर्धककी अंतवर्गणाविषैं दीया द्रव्यतैं अनंतर वर्गणाविषैं असंख्यात गुणा घटता द्रव्य दीया कह्या, अन्यत्र चय घटता क्रम लीएं कह्या है ॥ ४७९ ॥

पढमादिसु दिस्सकमं तक्कालजफड्ढयाण चरिमोत्ति। ५६७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हीणकमं से काले हीणं हीणं कमं तत्तो ॥ ४८० ॥

प्रथमादिषु दृश्यक्रमं तत्कालजस्पर्धकानां चरम इति।
हीनक्रमं स्वे काले हीनं हीनं क्रमं ततः ॥ ४८० ॥

स० चं०– अपूर्वस्पर्धक करणकालका प्रथमादि समयनिविषै दृश्य कहिए देखनेमें आवै ऐसा परमाणूनिका प्रमाण ताका अनुक्रम सो दृश्यक्रम कहिए। सो कैसैं है? सो कहिए है–

तहां तिस विवक्षित समयविषैं बने अपूर्वस्पर्धक तिनका तो जो देय द्रव्य सो ही दृश्य द्रव्य है। जातैं तिस समय अपकर्षण कीया द्रव्य हीतैं तिनकी रचना भई है। सो तिनकी प्रथम वर्गणातैं लगाय अंत वर्गणापर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं दृश्य द्रव्य है। बहुरि तिस अंत वर्गणाके द्रव्यतैं ताके ऊपरि जो वर्गणा तिसका भी दृश्य द्रव्य एक चयमात्र घटता है जातैं दीया द्रव्य तौ तिस अंत वर्गणा द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घटता है तथापि दीया द्रव्य अर पूर्वैं वाका सत्तारूप पुरातन द्रव्य दोऊ मिलि तिसतैं एक चयमात्र घटता दृश्य द्रव्य हो है। बहुरि ताके उपरि पूर्वस्पर्धककी अंतवर्गणा पर्यंत दीया द्रव्य अर पूर्व द्रव्य मिलि क्रमतैं चय प्रमाण करि घटता दृश्य द्रव्य जानना। ऐसैं विवक्षित समयविषैं कीए अपूर्वस्पर्धक तिनकी प्रथम वर्गणातैं लगाय पूर्वस्पर्धकानिकी अंत वर्गणा पर्यंत एक गोपुच्छ भया तातैं तहां चय घटता क्रम लीएं ही दृश्य द्रव्य जानना।

ऐसैं अश्वकर्ण करणकालका प्रथमादि समयनिविषैं यावत् प्रथम अनुभाग कांडकका घात न होइ तावत् स्थितिकांडक अनुभाग कांडक स्थितिबंध अनुभाग सत्त्व तौ तिन समयनिविषैं समान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूप है। अर अप्रशस्तकर्मनिका अनुभागबंध समय समय अनंत गुणा घटता है। अर गुणश्रेणि विषै समय समय असंख्यातगुणा द्रव्यकौं अपकर्षणकरि दीजिए है। अर अतीत समय संबंधी स्पर्धकानिके नीचैं अपूर्व शक्ति लीएं नवीन अपूर्वस्पर्धक समय समय प्रति करिए है ॥ ४८० ॥ ऐसैं प्रथम अनुभाग कांडकका घात भएं कहा हो है? सो कहैं हैं—

पढमाणुभागखंडे पडिदे अणुभागसंतकम्मं तु ।
लोभादणंतगुणिदं उवरिं पि अणंतगुणिदकमं ॥

प्रथमानुभागखंडे पतिते अनुभागसत्त्वकर्म तु ।
लोभादनंतगुणितमुपर्यपि अनंतगुणितक्रमं ॥ ४८१ ॥

स० चं०— ऐसैं प्रथम अनुभाग खंडका पतन होतैं लोभतैं अनंतगुणा क्रम लीएं अनुभाग सत्त्वरूप कर्म हो है। तहां लोभका स्तोक तातैं मायाका अनंत गुणा तातैं मानका अनंतगुणा तातैं क्रोधका अनंतगुणा अनुभाग सत्व हो है ऐसा जानना जातैं तहां अश्वकर्ण क्रियाकरि प्रथम अनुभाग कांडकका घात भए पीछैं अवशेष अनुभाग सत्व हो है। बहुरि यातैं उपरिवर्ती अश्वकर्ण कालके सर्व समयनिकेविषैं भी ऐसैं ही अल्प बहुत्वका क्रम लीएं अनुभाग सत्त्व जानना ॥ ४८१ ॥

आदोलस्स य पढमे णिव्वात्तिदअपुव्वफड्डयाणि बहू ।
पडिसमयं पलिदोवममूलासंखेज्जभागभजियकमा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आंदोलस्य च प्रथमे निर्वर्तितापूर्वस्पर्धकानि बहूनि।
प्रतिसमयं पलितोपममूलासंख्येयभागभजितक्रमं ॥ ४८२ ॥

स० चं– आंदोल कहिए अश्वकर्ण ताका प्रथम समयविषै जे अपूर्वस्पर्धक कीए ते बहुत हैं। पीछे समय समय प्रति पल्यके वर्गमूलका असंख्यातवां भागकरि भाजित क्रम लीएं जानने। प्रथम समयविषै कीए अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाणकौं पल्यके वर्गमूलका असंख्यातवां भागका भाग दीएं द्वितीय समयविषै नवीन कीए अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण हो है। याकौं पल्य वर्गमूलका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तृतीय समयविषै कीए नवीन अपूर्वस्पर्धकानिका प्रमाण हो है। ऐसैं ही अपूर्वस्पर्धक करण कालका अंतसमय पर्यंत क्रम जानना ॥ ४८२ ॥

आदोलस्स य चरिमे अपुव्वादिमवग्गणाविभागादो।
दोचाढिमादीणादी चढिदव्वा मेत्तणंतगुणा ॥ ४८३ ॥

आंदोलस्य च चरमेऽपूर्वादिमवर्गणाविभागात्।
द्विचटितादीनामादिः चटितव्यामात्रानंतगुणा ॥ ४८३ ॥

स० चं– ऐसैं क्रमतैं अपूर्वस्पर्धक होतैं अपूर्वस्पर्धक सहित अश्वकर्ण कालका अंत समयविषै सर्व अपूर्वस्पर्धक भए। तहां प्रथम समय स्पर्धककी आदि वर्गणाविषै अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेद स्तोक हैं। तातैं दूसरे स्पर्धककी आदि वर्गणाविषै दूणे, तीसरे स्पर्धककी आदि वर्गणाविषै तिगुणे ऐसैं जेथवां स्पर्धक होइ तिसकी आदि वर्गणाविषैं तितने गुणे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होंइ सो अनंतगुणा पर्यंत चढना। अंत स्पर्धककी आदि वर्गणाविषै अनंतगुणे हो हैं ऐसा जानना। इहां विवक्षित वर्गणाकी एक एक परमाणूविषै पाइए हैं जे अविभाग प्रतिच्छेद तिनिकी अपेक्षा अल्प बहुत्व कह्या है। सर्व परमाणू अपेक्षा किंचित् ऊन दूणा तिगुणा क्रम जानना। ऐसैं पूर्वै ही यतिवृषभ आचार्यकरि प्रतिपादन कीया है। च्यारचो कषायनिविषै ऐसैं ही क्रम जानना ॥ ४८३ ॥

आदोलस्स य पढमे रसखंडे पाडिदे अपुव्वादो ।
कोहादी अहियकमा पदेसगुणहाणिफड्डया तत्तो ॥
होदि असंखेज्जगुणं इगिफड्डयवग्गणा अणंतगुणा ।
तत्तो अणंतगुणिदा कोहस्स अपुव्वफड्डयाणं च ॥
माणादीणहियकमा लोभगपुव्वं च वग्गणा तेसिं ।
कोहोत्ति य अट्ठपदा अणंतगुणिदक्कमा होंति ॥

आंदोलस्य च प्रथमे रसखंडे पातिते अपूर्वात् ।
क्रोधात् अधिकक्रमाः प्रदेशगुणहानिस्पर्धकास्ततः ॥ ४८४ ॥
भवति असंख्येयगुणं एकस्पर्धकवर्गणा अनंतगुणा ।
ततः अनंतगुणितं क्रोधस्य अपूर्वस्पर्धकानां च ॥ ४८५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानादीनामधिकक्रमं लोभगपूर्वं च वर्गणा तेषां ।
क्रोध इति च अष्ट पदानि अनंतगुणितक्रमाणि भवंति ॥ ४८६ ॥

स० चं०– अश्वकर्णका प्रथमसमय अनुभाग कांडकका घात होत संते भए ऐसे क्रोधके अपूर्वस्पर्धक स्तोक हैं। तातैं मानके अपूर्वस्पर्धक विशेष अधिक हैं। तातैं मायाके अपूर्वस्पर्धक विशेष अधिक हैं। तातैं लोभके अपूर्वस्पर्धक विशेष अधिक हैं। बहुरि तातैं प्रदेश सम्बन्धी एक गुणहानिविषै स्पर्धकनिका प्रमाण असंख्यातगुणा है जातैं याकौं असंख्यातका भाग दीएं अपूर्वस्पर्धकनिका प्रमाण आवै है। तातैं अपूर्वस्पर्धकनिका प्रमाणकौं असंख्यात करि गुणैं याका प्रमाण भया कह्या। बहुरि तातैं एक स्पर्धकविषै पाइए जे वर्गणा तिनका प्रमाण अनंतगुणा है जातैं पूर्व वा अपूर्वस्पर्धकविषै वर्गणा अभव्य राशितैं अनंतगुणी वा सिद्धराशिके अनंतवे भागमात्र पाइए है। तातैं अनंतका गुणकार संभवै है। बहुरि तिनतैं क्रोधके सर्व अपूर्वस्पर्धकनिकी वर्गणाका प्रमाण अनंतगुणा है जातैं एक स्पर्धककी वर्गणाका प्रमाण कह्या ताकौं क्रोधके अपूर्वस्पर्धकनिका प्रमाण प्रदेश सम्बन्धी गुणहानिविषै स्पर्धकनिके प्रमाणके असंख्यातवां भागमात्र प्रमाणकरि गुणैं यहु हो है। बहुरि तातैं मानके सर्व अपूर्वस्पर्धकनिकी वर्गणा विशेष अधिक है। तिनतैं मायाके सर्व अपूर्व स्पर्धकनिकी वर्गणा विशेष अधिक है। तातैं लोभके सर्व अपूर्वस्पर्धकनिकी वर्गणा विशेष अधिक है। इहां इनके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण विशेष अधिक क्रम लीएं है। तातैं तिनकी वर्गणानिका प्रमाण भी विशेष अधिक क्रम लीएं कह्या। बहुरि लोभके अपूर्वस्पर्धकनिकी वर्गणानिका प्रमाणतैं लोभके पूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण अनंतगुणा है जातैं लोभ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के अपूर्वस्पर्धकानिका प्रमाण प्रदेश गुणहानिकी स्पर्धक शलाकाके असंख्यातवे भागमात्र, ताकौं एक स्पर्धककी वर्गणाका प्रमाणकरि गुणैं लोभके अपूर्व स्पर्धकनिकी वर्गणानिका प्रमाण हो है अर एक गुणहानिकी स्पर्धक शलाकाकौं प्रदेश सम्बन्धी नाना गुणहानिकरि गुणैं लोभके पूर्व स्पर्धकानिका प्रमाण हो है। सो इहां एक स्पर्धककी वर्गणाका प्रमाणतैं नाना गुणहानिका प्रमाण अनंतगुणा है। तातैं अनंतका गुणकार संभवै है। बहुरि तातैं लोभके पूर्वस्पर्धकानिकी वर्गणाका प्रमाण अनंतगुणा है जातैं ताकौं एक स्पर्धककी वर्गणा शलाकाकरि गुणै यहु हो है। बहुरि तिसतैं मायाके पूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण अनंतगुणा है जातैं प्रथम अनुभाग कांडकका घात कीए पीछैं अनुभाग सत्व अश्वकर्णके आकार भया है तातैं अनंतगुणापना संभवै है। बहुरि तातैं मायाके पूर्वस्पर्धकानिकी वर्गणाका प्रमाण अनंतगुणा है। तातैं मानके पूर्वस्पर्धकनिका प्रमाण अनंतगुणा है। तातैं मानके पूर्वस्पर्धकनिकी वर्गणानिका प्रमाण अनंतगुणा है। तातैं क्रोधके पूर्वस्पर्धकनिका प्रमाण अनंतगुणा है। तातैं क्रोधके पूर्वस्पर्धकानिकी वर्गणानिका प्रमाण अनंतगुणा है। इनविषैं कारण पूर्वोक्त हो है। ऐसैं अल्पबहुत्व जानना ॥ ४८४–४८६ ॥

रसठिदिखंडाणेवं संखेज्जसहस्सगाणि गंतूणं ।
तत्थ य अपुव्वफड्ड्यकरणविही णिट्ठिदा होई ॥

रसस्थितिखंडानामेवं संख्येयसहस्रकाणि गत्वा ।
तत्र च अपूर्वस्पर्धककरणविधिर्निष्ठिता भवति ॥ ४८७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– ऐसैं क्रमकरि हजारौं अनुभाग कांडक गएं एक स्थिति कांडक होइ ऐसैं संख्यात हजार स्थितिकांडक जाविषैं होंइ ऐसा अंतर्मुहूर्त मात्र अश्वकर्ण करणका काल भएं तहां अपूर्व स्पर्धक करणकी विधि है सो निष्ठिता कहिए पूर्ण भई। भावार्थ यहु–अपूर्व स्पर्धक क्रिया सहित अश्वकर्णका काल समाप्त भया। आगैं कृष्टि क्रिया सहित अश्वकर्ण क्रिया होसी ऐसा यतिवृषभ आचार्यका तात्पर्य जानना ॥ ४८७ ॥

हयकण्णकरणचरिमे संजलणाणट्ठवस्सठिदिबंधो।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति सेसाणं ॥ ४८८॥

हयकर्णकरणचरमे संज्वलनानामष्टवर्षस्थितिबंधः।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति शेषाणां ॥ ४८८ ॥

स० चं०–अपूर्व स्पर्धक सहित अश्वकर्ण करण कालका अंत समयविषै संज्वलन चतुष्टयका आठ वर्षमात्र स्थितिबंध है। ताका प्रथम समयविषैं सोलह वर्षमात्र था सो एक एक स्थिति बंधापसरणविषैं अंतर्मुहूर्तमात्र घाटि इहां अवशेष आठ वर्षमात्र रहै है। बहुरि अवशेष कर्मनिका स्थितिबंध संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है। ताका प्रथम समयविषैं संख्यात हजार वर्ष मात्र था सो एक एक स्थिति बंधापसरण विषैं संख्यातगुणा घाटि संख्यात हजार स्थितिबंधापसरणनिकरि घट्या परंतु आलापकरि इतना ही कहिए है ॥ ४८८ ॥

ठिदिसत्तमघादीणं असंखवस्साण होंति घादीणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति णियमेण ॥

स्थितिसत्त्वमघातिनामसंख्यवर्षा भवंति घातिनाम् ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति नियमेन ॥ ४८१ ॥

स० चं०– बहुरि तिस ही अंत समयविषैं अघातिया नाम गोत्र वेदनीय तिनका स्थिति सत्त्व असंख्यात वर्षमात्र है । प्रथम समयविषैं असंख्यात वर्षमात्र था सो असंख्यात गुणा घटता क्रम लीए संख्यात हजार स्थिति कांडकनिकरि घट्या तथापि आलापकरि इतना ही कहिए । बहुरि च्यारि घातिया कर्मनिका स्थिति सत्त्व संख्यात वर्षमात्र है । प्रथम समयविषैं भी संख्यात वर्षमात्र था सो संख्यात गुणा घटता क्रम लीए संख्यात हजार स्थिति कांडकनि करि घट्या परंतु सामान्य आलाप करि इतना ही कहिए है ॥ ४८१ ॥

इति अपूर्वस्पर्धक–अधिकार समाप्त ॥

स० चं०– अब अपूर्व स्पर्धक करनेका कालके अनंतरि समयतैं लगाय कृष्टि करणका काल है । जिस करणतैं कर्मका अनुभाग कृष कहिये हीन करिए सो सार्थक नाम कृष्टि जानना सो दोय प्रकार है–वादर कृष्टि १ सूक्ष्मकृष्टि १ तहां संज्वलन कषायानिके पूर्व अपूर्व स्पर्धक जैसैं ईंटनिकी पंक्ति होइ तैसैं अनुभागका एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधती लीएं परमाणूनिका समूह रूप जो वर्गणा तिनके समूह रूप हैं । तिनके अनंत गुणा घटता अनुभाग होनेकरि स्थूल स्थूल खंड करिए सो वादर कृष्टि करण है अर तिन स्थूल खंडनिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंत गुणा घटता अनुभाग रूप करि सूक्ष्म सूक्ष्म खंड करिए सो सूक्ष्मकृष्टि करण है तहां वादरकृष्टिकरणका काल प्रमाण जाननेकौं सूत्र कहै हैं—

छक्कम्मे संछुद्धे कोहे कोहस्स वेदगद्धा जा।
तस्स य पढमतिभागो होदि हु हयकण्णकरणद्धा॥

षट्कर्माणि संक्षुब्धे क्रोधे क्रोधस्य वेदकाद्धा या।
तस्य च प्रथमत्रिभागः भवति हि हयकर्णकरणाद्धा॥ ४९०॥

विदियतिभागो किट्टीकरणद्धा किट्टिवेदगद्धा हु।
तदियतिभागो किट्टीकरणो हयकण्णकरणं च॥

द्वितीयत्रिभागः कृष्टिकरणाद्धा कृष्टिवेदकाद्धा हि।
तृतीयत्रिभागः कृष्टिकरणं हयकर्णकरणं च॥ ४९१॥

स० चं०—छह नोकषायनिकौं संज्वलन क्रोधविषैं संक्रमणकरि नाश करनेके अनंतरि समयतैं लगाय जो अंतर्मुहूर्तमात्र क्रोध वेदक काल है ताकौं संख्यातका भाग देइ तहां बहुभागके समान रूप तीन भाग करिए। बहुरि अवशेष एक भागकौं संख्यातका भाग देइ तहां बहुभागकौं प्रथम त्रिभागविषैं जोडिए। बहुरि अवशेष एक भागकौं संख्यातका भाग देइ तहां बहुभाग दूसरा त्रिभागविषैं जोडिए। अवशेष एक भाग तीसरा त्रिभागविषैं जोडिए ऐसैं करतैं पहिला त्रिभाग साधिक भया, सो तौ अपूर्व स्पर्धक सहित अश्वकर्ण करणका काल है सो पूर्वैं होइ गया। बहुरि दूसरा त्रिभाग किंचित् ऊन है सो च्यारि संज्वलन कषायनिका कृ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष्टि करनेका काल है सो अब वर्तै है। बहुरि तीसरा त्रिभाग किंचिदून है सो क्रोध कृष्टिका वेदक काल है सो आगें प्रवर्तिसी। बहुरि इस कृष्टि करण कालविषैं भी अश्वकर्ण करण पाइए है। जातैं इहां भी अश्वकर्णके आकारि संज्वलन कषायनिका अनुभाग सत्व वा अनुभाग कांडक वर्तै है। तातैं इहां कृष्टि सहित अश्वकर्ण करण पाइए है ऐसा जानना। तहां प्रथम समयविषैं एक स्थिति बंधापसरण होने करि संज्वलन चतुष्कका अंतर्मुहूर्त घाटि आठ वर्ष प्रमाण अन्य कर्मनिका पूर्वस्थिति बंधतैं संख्यात गुणा घटता संख्यात वर्ष प्रमाण स्थिति बंध हो है। बहुरि एक स्थिति कांडक घात होने करि घातिया च्यारि कर्मनिका पूर्व स्थिति सत्वतैं संख्यात बहुभागमात्र घटता संख्यात हजार वर्षमात्र अर तीन अघातियानिका पूर्व स्थिति सत्वतैं असंख्यात बहुभागमात्र घटता असंख्यात वर्षमात्र स्थिति सत्व पाइए है॥४९१॥

कोहादीणं सगसगपुव्वापुव्वगयफड्ढयेहिंतो।
उक्कड्डिदूण दव्वं ताणं किट्टी करेदि कमे॥ ४९२॥

क्रोधादीनां स्वकस्वकपूर्वापूर्वगतस्पर्धकान्।
अपकर्षयित्वा द्रव्यं तेषां कृष्टिं करोति क्रमेण॥ ४९२॥

स० चं०–संज्वलन क्रोध मान माया लोभनिका अपना अपना पूर्व अपूर्वस्पर्धक रूप जो सर्व द्रव्य ताकौं अपकर्षण भाग हारका भाग देइ एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि यथाक्रम लीए तिन क्रोधादिकानिकी कृष्टि करै है॥ ४९२॥

उक्कट्टाटिदव्वस्स य पल्लासंखेज्जभागबहुभागो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरकिट्टिणिबद्धो फड्डयगे सेसइगिभागो॥ ४३९॥

अपकर्षितद्रव्यस्य च पल्यासंख्येयभागबहुभागः।
बादरकृष्टिनिबद्धः स्पर्धके शेषैकभागः ॥ ४९३ ॥

स० चं– अपकर्षण कीया जो द्रव्य ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभागमात्र द्रव्य तौ वादर कृष्टि सम्बन्धी है । याकरि वादर कृष्टि निपजे है। अवशेष एक भागमात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिविषै निक्षेपण करिए है ॥ ४९३ ॥

किट्टीयो इगिफड्डयवग्गणसंखाणणंतभागो दु ।
एक्केक्कम्हि कसाये तियंति अहवा अणंता वा ॥

कृष्टय एकस्पर्धकवर्गणासंख्यानामनंतभागस्तु ।
एकैकस्मिन् कषाये त्रिकात्रिकमथवा अनंता वा ॥ ४९४ ॥

स० चं–एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बंधनेका क्रम लीएं प्रत्येक सिद्धराशिका अनंतवां भागमात्र परमाणूनिका समूहरूप ईंटनिकी पंक्तिके आकार जे वर्गणा, ते एक स्पर्धकविषै एक गुणहानिविषै जेते स्पर्धक पाइए तिनतैं अनंतगुणी पाईए है। सो ऐसैं एकस्पर्धकविषैं जो वर्गणानिका प्रमाण ताकौं वर्गणा शलाका कहिए। ताके अनंतवे भागमात्र सर्व कृष्टिनिका प्रमाण है। अनुभागका स्तोक बहुत अपेक्षा कृष्टिनिका विभाग करिए है। तहां एक एक कषायविषै संग्रह कृष्टि तीन तीन हैं। बहुरि एक एक संग्रह कृष्टिविषै अंतर कृष्टि अनंत हैं। तहां नीचैं ही नीचैं लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टि है तिसविषै अन्तरकृष्टि अनंत हैं। ताके ऊपरि लोभकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय संग्रह कृष्टि है। तहां अंतर कृष्टि अनन्त हैं। ताके ऊपरि लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टि है। तहां अन्तर कृष्टि अनंत हैं। ऐसैं ही क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टि पर्यंत अवशेष नव संग्रह कृष्टि जाननी। तहां एक एक संग्रह कृष्टिविषै अनंत अनंत अंतरकृष्टि जाननी। एक प्रकार बंधता गुणकार रूप जो अंतर कृष्टि तिनके समूह ही का नाम संग्रह कृष्टि जानना॥ ४९४॥

अकसायकसायाणं दव्वस्स विभंजणं जहा होई।
किट्टिस्स तहेव हवे कोहो अकसायपडिबद्धं॥

अकषायकषायाणां द्रव्यस्य विभंजनं यथा भवति।
कृष्टेस्तथैव भवेत् क्रोधः अकषायप्रतिबद्धः॥ ४९५॥

स० चं– अकषाय कहिए नोकषाय अर कषाय इनिके द्रव्यका विभाग जैसैं हो है तैसैं ही इन कृष्टिनिके प्रमाणका विभाग जानना। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी कृष्टि हैं ते क्रोधकी कृष्टिनिविषै जोडनी जातैं नोकषायनिका सर्व द्रव्य संज्वलन क्रोधरूप संक्रमण भया है। तहां द्रव्य विभाग कैसैं हो है? सो कहिए हैं—

पूर्वै अपूर्वस्पर्धक करण कालविषै जैसैं अनुक्रम कहि आए हैं तिस अनुक्रम करि सर्व चारित्र मोहका द्रव्य साधिक द्व्यर्ध गुणहानि गुणित प्रथम वर्गणामात्र है। तहां लोभका द्रव्य साधिक आठवां भागमात्र, मायाका किंचिदून आठवां भागमात्र, मानका किंचिदून आठवां भागमात्र, क्रोधका किंचिदून आठवां भागमात्र अर याहीमैं किंचिदून द्वितीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागमात्र नोकषायका द्रव्य मिलाएं क्रोधका द्रव्य पांच गुणा किंचिदून आठवां भागमात्र हो है। बहुरि इस अपने अपने द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपना अपना अपकर्षण कीया द्रव्यका प्रमाण आवै है। याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिविषै देना है। ताकौं जुदा राखि अवशेष बहुभागनिविषै क्रोधविषै जो नोकषायनिका द्रव्य मिल्या ताकौं जुदा कीएं जो अपना अपना द्रव्य रह्या ताकौं जुदा जुदा पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभागनिके समान रूप तीन पुंज करने। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग प्रथम पुंजविषै जोडने। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग द्वितीय पुंजविषै जोडने। अवशेष एक भाग तृतीय पुंजविषै जोडना। ऐसैं साधिक त्रिभागमात्र प्रथम पुंज भया सो अपनी अपनी प्रथम संग्रह कृष्टिका द्रव्य है। किंचिदून त्रिभागमात्र द्वितीय पुंज सो अपनी अपनी द्वितीय संग्रहकृष्टिका द्रव्य है। किंचिदून त्रिभागमात्र तृतीय पुंज सो अपनी अपनी तृतीय संग्रह कृष्टिका द्रव्य है। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी सर्व द्रव्यकौं क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टि विषै मिलावना। या प्रकार कृष्टि सम्बन्धी सर्व द्रव्यकौं चौईसका भाग दीएं क्रोधकी तृतीय कृष्टिका तेरह भागमात्र अर अन्य ग्यारह कृष्टिनिका एक एक भागमात्र द्रव्य हो है। तहां लोभकी कृष्टिविषै साधिकपना अन्यत्र किंचित् न्यूनपना यथासम्भव जानना। ऐसैं द्रव्यका विभाग कीया। बहुरि याही प्रकार अब कृष्टिके प्रमाणका विभाग करिए है—

एक स्पर्धककी वर्गणा शलाकाके अनंतवे भागमात्र सर्व कृष्टिनिका प्रमाण है। ताकौं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवलीके असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां बहुभागके समान दोय भागकरि अवशेष एक भागकौं प्रथम समान भागविषै मिलाएं साधिक आधा तौ कषायनिके द्रव्यकरि कीया कृष्टिनिका प्रमाण हो है अर द्वितीय समान भागमात्र किंचिदून आधा नोकषायनिके द्रव्यकरि कीया कृष्टिनिका प्रमाण हो है। बहुरि कषाय सम्बन्धी कृष्टिनिके प्रमाणकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भाग जुदा राखि बहुभागनिके समानरूप च्यारि भाग करने। बहुरि अवशेष एक भागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग प्रथम समान भागविषै मिलाएं साधिक चौथा भागमात्र लोभकी कृष्टिनिका प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां बहुभाग दूसरे समान भागविषै मिलाएं किंचिदून चतुर्थ भागमात्र मायाकी कृष्टिनिका प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग तीसरा समान भागविषै मिलाएं किंचिदून चौथा भागमात्र क्रोधकी कृष्टिनिका प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भाग चौथा समान भागविषै मिलाएं किंचिदून चौथा भागमात्र मानकी कृष्टिनिका प्रमाण हो है। बहुरि नोकषायनिका सम्बन्धी कृष्टिनिका प्रमाण क्रोधकी कृष्टिनिका प्रमाणविषै जोडना। ऐसैं सर्व कृष्टिनिका प्रमाणकौं आठका भाग देइ तहां एक एक भागमात्र लोभ माया मानकी, पांच भागमात्र क्रोधकी कृष्टिनिका प्रमाण हो है। तहां लोभकीविषै साधिकपना अन्यकी विषै किंचित् न्यूनपना यथा संभव जानना। बहुरि क्रोधकी कृष्टिनिविषै नोकषायसम्बन्धी कृष्टि जुदी कीएं अवशेष अपना अपना कृष्टिनिका जो प्रमाण ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुभागके समान तीन भाग करिए। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग प्रथम समान भागविषै मिलाएं अपना अपना प्रथम संग्रह कृष्टिका आयाम साधिक हो है। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग द्वितीय समान भागविषै जोडैं अपना अपना द्वितीय संग्रह कृष्टिका आयाम किंचित् ऊन हो है। बहुरि अवशेष एक भाग तीसरा समान भागविषै जोडैं अपनी अपनी तृतीय संग्रहकृष्टिका आयाम किंचित् ऊन हो हैं। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी कृष्टिनिका प्रमाण ताकौं क्रोधकी तृतीय संग्रहकृष्टिका आयामविषै जोडना। ऐसैं सर्व कृष्टिनिका प्रमाणकौं चौईसका भाग देइ तहां क्रोधकी तृतीय संग्रहकृष्टिका आयाम तेरह भागमात्र अन्य ग्यारह संग्रह कृष्टिनिका आयाम एक भागमात्र हो है। तहां लोभकीविषै साधिकपना अन्यत्र किंचित् न्यूनपना यथासम्भव जानना। इहां संग्रह कृष्टिविषै जितनी अंतर कृष्टिका प्रमाण होइ तीहिंका नाम संग्रह कृष्टिका आयाम है॥ ४९५॥

पढमादिसंगहाओ पल्लासंखेज्जभागहीणाओ।
कोहस्स तदीयाए अकसायाणं तु किट्टीओ॥

प्रथमादिसंग्रहाः पल्यासंख्येयभागहीनाः।
क्रोधस्य तृतीयायामकषायानां तु कृष्ट्यः॥ ४९६॥

स० चं– पूर्वोक्त प्रकार करि प्रथम आदि बारह संग्रह कृष्टिनिका आयाम है सो पल्यका असंख्यातवां भागका क्रमकरि घटता जानना। बहुरि नोकषायसंबंधी सर्वकृष्टितैं क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं प्राप्त जानना॥ ४९६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोहस्स य माणस्स य मायालोभोदएण चडिदस्स।
वारस णव छत्तिण्णि य संगहकिट्टी कमे होंति॥

क्रोधस्य च मानस्य च मायालोभोदयेन चटितस्य।
द्वादश नव षट् त्रीणि च संग्रहकृष्ट्यः क्रमेण भवंति॥ ४९७॥

स० चं– संज्वलन क्रोधका उदय सहित जो जीव श्रेणी चढ़ै ताकैं तो च्यारयो कषायनिकी बारह संग्रह कृष्टि हो हैं। बहुरि मानका उदय सहित श्रेणी चढ़ै ताकैं क्रोधका पहिले ही संक्रमण करि क्षय होइ तातैं अवशेष तीन कषायानिकी नव संग्रह कृष्टि हो हैं। बहुरि मायाका उदय सहित जो श्रेणी चढ़ै ताकैं क्रोध मानका पहलैं ही संक्रमणकरि क्षय होइ तातैं दोय कषायनिकी छह संग्रह कृष्टि हो हैं। बहुरि लोभका उदय सहित जो श्रेणी चढ़ै ताकैं क्रोध मान मायाका पहलैंही संक्रमण करि क्षय होइ तातैं एक लोभ हीकी तीन संग्रह कृष्टि हो हैं। तहां जेती संग्रह कृष्टि होंइ तिनहीविषैं कृष्टि प्रमाणका विभाग यथासंभव जानना॥ ४९७॥

संगहगे एक्केक्के अंतरकिट्टी हवदि हु अणंता।
लोभादि अणंतगुणा कोहादि अणंतगुणहीणा॥

संग्रहके एकैकस्मिन् अंतरकृष्टिः भवति हि अनंता।
लोभादौ अनंतगुणा क्रोधादौ अनंतगुणहीना॥ ४९८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– एक एक संग्रह कृष्टि विषैं अंतर कृष्टि अनंत पाइए हैं जातैं अनंती कृष्टिनिके समूहका ही नाम संग्रह कृष्टि है। बहुरि तहां कृष्टिनिविषै लोभतैं लगाय क्रमतें अनंत गुणा बंधता अर क्रोधतैं लगाय क्रमतैं अनंत गुणा घटता अनुभाग पाइए है। सोई कहिए है–

लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं जो जघन्य कृष्टि है सो स्तोक है। सर्वतैं मंद अनुभाग सहित है। तातैं ताकी दूसरी कृष्टि अनंतगुणी है। अभव्यराशितैं अनंतगुणा वा सिद्धराशिके अनंतवे भाग मात्र अनंत प्रमाण लीएं जो गुणकार तिस करि जघन्य कृष्टिके अनुभागकौं गुणैं द्वितीय कृष्टिका अनुभाग हो है ऐसैं ही आगे भी जानना। बहुरि दूसरी कृष्टितैं तीसरी कृष्टि अनंत गुणी है। ऐसैंही प्रथम संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टि पर्यंत अनुक्रम जानना। बहुरि तिस प्रथम संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टितैं द्वितीय संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टि अनंत गुणी है सो इहां गुणकारका प्रमाण अन्य प्रकार हो है जातैं इहां परस्थान गुणकार भया सो सर्व स्वस्थान गुणकारनितैं यहु अनंत गुणा है सो ऐसैं गुणकारका भेद ही करि संग्रह कृष्टिनिका भेद भया है। कृष्टिनिका अनुभाग विषैं गुणकारका प्रमाण यावत् एक प्रकार बंधता भया तावत् सोही संग्रह कृष्टि कही। बहुरि जहां नीचली कृष्टितैं ऊपरली कृष्टिका गुणकार अन्यत्र प्रकार भया तहांतैं अन्य संग्रह कृष्टि कही है। सो इस कथनकौं आगें व्यक्त करि दिखाइऐगा। बहुरि द्वितीय कृष्टिकी जघन्य कृष्टितैं ताकी द्वितीय कृष्टि अनंत गुणी है। ऐसैं अंत कृष्टि पर्यंत क्रम जानना। बहुरि द्वितीय कृष्टिकी अंतकृष्टितैं तृतीय कृष्टिकी जघन्य कृष्टि अनंत गुणी हैं। इहां परस्थान गुणकार जानना। तातैं ताकी द्वितीयादि अंत पर्यंत कृष्टि क्रमतैं अनंत गुणी है ऐसैं लोभ की तीन संग्रह कृष्टि भईं। बहुरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंत कृष्टितैं मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टि अनंत गुणी है। बहुरि लोभवत् क्रम जानना। बहुरि मायाकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टितैं मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टि अनंत गुणी है। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार क्रम जानना। बहुरि मानकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंत कृष्टितैं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टि अनंतगुणी है। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार क्रम जानना। बहुरि क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंत कृष्टितैं अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणा अनंत गुणी है; जातैं कृष्टिका अनुभागतैं स्पर्धकका अनुभाग अनंत गुणापनेकौं लीए है। इहां गुणकार अनुभाग अपेक्षा ही जानना॥ ४९८॥ अब इस कथनके स्पष्ट करनेकौं सूत्र कहै हैं—

लोभादी कोहोत्ति य सट्ठाणंतरमणंतगुणिदकमं।
तत्तो बादरसंगहकिट्टी अंतरमणंतगुणिदकमं॥

लोभादितः क्रोधांतं च स्वस्थानांतरमनंतगुणितक्रमं।
ततो बादरसंग्रहकृष्टेरंतरमनंतगुणितक्रमं॥ ४९९॥

स० चं०– लोभतैं लगाय क्रोध पर्यंत स्वस्थान अंतर है सो अनंत गुणा क्रम लीएं है। बहुरि तिस स्वस्थान अंतरतैं वादर संग्रह कृष्टि तिनका अंतर अनंत गुणा क्रम लीएं है। सोई कहिए है–

वादर संग्रह कृष्टि है तहां एक एक संग्रह कृष्टिविषैं अंतर कृष्टि सिद्धि राशिके अनंतवे भागमात्र है। बहुरि तिनके अंतराल एक घाटि कृष्टि प्रमाण हैं जातैं दोय वीचि अंतराल एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होइ, तीनि वीचि दोय होंइ ऐसैं विवक्षित प्रमाणविषैं अंतराल एक घाटि तिस प्रमाण मात्र हो हैं। बहुरि इहां अंतरकी उत्पत्तिकौं कारण जे गुणकार तिनकौं अंतर कहिए। जातैं कारणविषैं कार्यका उपचार हो है। बहुरि इहां कृष्टिनिविषैं गुणकार हीका नाम अंतर भया तातैं तिन का नाम कृष्ट्यंतर कहिए। बहुरि नीचली संग्रह कृष्टि अर ऊपरली संग्रह कृष्टिनिविषैं ग्यारह अंतर हो हैं जातैं संग्रह कृष्टि बारहविषैं एक घाटि अंतरनिका प्रमाण हो है सो इनका नाम संग्रह कृष्ट्यंतर कहिए। भावार्थ यहु–जेते अंतराल होंइ तितनीवार गुणकार होइ तहां स्वस्थान गुणकारनिका नाम कृष्ट्यंतर है। परस्थान गुणकारनिका नाम संग्रह कृष्ट्यंतर है। एक ही संग्रह कृष्टिविषैं नीचली अंतर कृष्टितैं ऊपरली अंतर कृष्टिविषैं गुणकार होइ ताकौं तौ स्वस्थान गुणकार कहिए है। बहुरि जहां नीचली संग्रह कृष्टिकी अंतकी अंतरकृष्टितैं अन्य संग्रह कृष्टिकी आदि अंतरकृष्टिविषैं जो गुणकार होइ ताकौं परस्थान गुणकार कहिए है। ऐसैं संज्ञा कहि कृष्ट्यंतर वा संग्रह कृष्टिनिका अल्प बहुत्व कहिए है। तहां निस्संदेह होनेकौं अंक संदृष्टि करि भी कथन करिए है–

तहां अनंतकी संदृष्टि दोय अर एक संग्रह कृष्टिनिविषैं अंतर कृष्टिके प्रमाणकी संदृष्टि च्यारि जाननी। तहां प्रथम लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिकी जघन्य कृष्टि स्थापि ताकौं तिस अनंत गुणकार करि गुणैं ताकी द्वितीय कृष्टि होइ। तिस गुणकारका नाम जघन्य कृष्ट्यंतर है ताकी संदृष्टि दोयका अंक, बहुरि द्वितीय कृष्टिकौं जिस गुणकार करि गुणैं तृतीय कृष्टि होइ तिस गुणकारका नाम द्वितीय कृष्ट्यंतर है। सो यहु जघन्य कृष्ट्यंतरतैं ५८६
अनंत गुणा है। ताकी संदृष्टि च्यारिका अंक, ऐसैं क्रमतैं तृतीयादि कृष्ट्यंतर क्रमतैं अनं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त गुणे होंइ, जिस गुणकार करि द्विचरम कृष्टिकौं गुणैं अंत कृष्टि होइ सो अनंतका गुणकार द्विचरम गुणकारतैं अनंत गुणा है, ताकी संदृष्टि आठका अंक, बहुरि इस प्रथम संग्रह कृष्टिकी अंत कृष्टिकौं जिस गुणकार करि गुणैं द्वितीय कृष्टिकी प्रथम कृष्टि होइ सो परस्थान गुणकार है। तातैं याकौं छोडि द्वितीय संग्रह कृष्टिकी प्रथमकृष्टिकौं जिस गुणकार करि गुणैं ताकी द्वितीय कृष्टि होइ सो प्रथमगुणकार पूर्वोक्त अंतका स्वस्थान गुणकारतैं अनंतगुणा है। ताकी संदृष्टि सोलहका अंक, ऐसैं ही वीचि वीचि परस्थान गुणकार छोडि एक २ कृष्टि प्रति गुणकारका प्रमाण अनंत गुणा जानना। सो कृष्टिनिका जेता प्रमाण तिनमैं एक घाटि तो अंतराल पाइए अर तहां ग्यारह परस्थान गुणकार पाइए अर एक जघन्य गुणकार हो है। ऐसैं तेरह घटाएं अवशेष जेता प्रमाण तितनीवार जघन्य गुणकारकौं अनंतकरि गुणैं जो गुणकार भया तिसकरि क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी द्विचरम कृष्टिकौं गुणैं ताकी अंतर कृष्टि हो है। अंक संदृष्टि करि अठतालीस कृष्टिनिविषैं तेरह घटाएं पैंतीस रहे सो पैंतीस वार दोयकौं दोय करि गुणैं सोलह गुणा वादाल प्रमाण हो है। बहुरि इहांतैं स्वस्थान गुणकार छोडि बाहुरि करि लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी अंतवर्गणाकौं जिस गुणकार करि गुणैं द्वितीय संग्रह कृष्टिकी प्रथम वर्गणा होइ सो परस्थान गुणकार पूर्वोक्त अंतका स्वस्थान गुणकारतैं अनंतगुणा है। ताकी संदृष्टि बत्तीस गुणा बादाल है। बहुरि लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टिकौं जिस गुणकार करि गुणैं लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टि होइ सो द्वितीय परस्थान गुणकार सो प्रथम परस्थान गुणकारतैं, अनंतगुणा है। बहुरि लोभकी तृतीय कृष्टिकी अंत कृष्टिकौं जिस गुणकार करि गुणैं मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम संग्रह कृष्टि होइ सो तीसरा परस्थान गुणकार द्वितीय परस्थान गुणकारतैं अनंत गुणा है। याही प्रकार ग्यारह परस्थान गुणकारनिकौं क्रमतैं अनंतकरि गुणैं क्रोधकी द्वितीय कृष्टिकी अंत कृष्टिकौं जिस गुणकार करि गुणैं क्रोधकी तृतीय कृष्टिकी प्रथम कृष्टि होइ तिस गुणकार प्रमाण आवै है।

यहु गुणकारनिका यंत्र है तहां पण्णट्ठीकी संदृष्टि ऐसी ६५ = बादालकी ऐसी ४२ = अर इनके आगैं जितनेका अंक तितनेका इनकौं गुणकार जानना।

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध	
तृतीय संग्रहकृष्टि-विषै स्वस्थान गुणकार	५१२ २५६ १२८	६५ = ४ ६५ = २ ६५ = १	६५ = २०४८ ६५ = १०२४ ६५ = ५१२	४२ = १६ ४२ = ८ ४२ = ४	
परस्थान गुणकार	४२=६४	४२ = ५१२	४२ = ४०९६	४२ = ३२७६८	
द्वितीय संग्रहकृष्टि-विषै स्वस्थान गुणकार	६४ ३२ १६	३२७६८ १६३८४ ८१९२	६५ = २५६ ६५ = १२८ ६५ = ६४	४२ = २ ४२ = १ ६५ = ३२७६८	
परस्थान गुणकार	४२=३२	४२ = २५६	४२ = २०४८	४२ = १६३८४	
प्रथम संग्रहकृष्टि-विषै स्वस्थान गुणकार	८ ४ २	४०९६ २०४८ १०२४	६५ = ३२ ६५ = १६ ६५ = ८	६५ = १६३८४ ६५ = ८१९२ ६५ = ४०९६	अपूर्व स्पर्धक वर्गणा गुणकार
परस्थान गुणकार	जघन्य	४२ = १२८	४२ = १०२४	४२ = ८१९२	४२ = ६५ =

अंकसंदृष्टिकरि ग्यारह परस्थान गुणकारनिकौं दूणा २ कीएं जैसैं बत्तीस हजार सातसै अडसठि गुणा बादाल प्रमाण होइ। बहुरि यातैं तिस गुणकार करि क्रोधकी तृतीय संग्रह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिकी अंत कृष्टिकौं गुणैं लोभके अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अनुभागका अविभाग प्रतिच्छेदानिका प्रमाण हो है। तिस परस्थान गुणकारका प्रमाण अनंत गुणा जानना। ताकी संदृष्टि पण्णट्ठी गुणा बादाल है। ऐसैं गुणकारानिका प्रमाण कह्या। इहां ऐसा अर्थ जानना—

अंक संदृष्टिकरि जैसैं लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी जघन्यकृष्टिविषैं जो अनुभाग पाइए है तातैं दूणा द्वितीय कृष्टिविषैं तातैं चौगुणा तृतीय कृष्टिविषैं है। तातैं अठगुणा अंत कृष्टिविषैं है। तातैं बत्तीस गुणित बादाल गुणा लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टिविषैं अनुभाग है। इहांतैं पहलैं अन्य प्रकार गुणकार था तातैं तहां पर्यंत प्रथम संग्रह कृष्टिका ही इहां अन्यप्रकार गुणकार भया। तातैं इहांतैं लगाय द्वितीय संग्रह कृष्टि कही। ऐसैं ही अंत पर्यंत विधान जानना। बहुरि याही प्रकार यथार्थ कथन जानना। दोयकी जायगा अनंत जानना। अर संग्रह कृष्टिविषैं च्यारि अंतर कृष्टि कहीं हैं तहां अनंती जाननी। ऐसैं अनुभागके अविभाग प्रतिच्छेदानिकी अपेक्षा कृष्टिनिका कथन जानना॥ ४९९॥

लोहस्स अवरकिट्टिगदव्वादो कोधजेट्ठकिट्टिस्स।
दव्वोत्ति य हीणकमं देदि अणंतेण भागेण॥५००॥

लोभस्य अवरकृष्टिगद्रव्यात् क्रोधज्येष्ठकृष्टेः।
द्रव्यांतं च हीनक्रमं दीयते अनंतेन भागेन॥ ५००॥

स० चं० —लोभकी जघन्य कृष्टिका द्रव्यतैं लगाय क्रोधकी उत्कृष्ट कृष्टिका द्रव्य पर्यंत हीन क्रमलीए द्रव्य दीजिये है। सोई कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिविषैं देनेयोग्य अपकर्षण कीया द्रव्यविषैं जो द्रव्य सो सर्वधन है। याकौं कृष्टिनिका प्रमाण मात्र जो गच्छ ताका भाग दीएं मध्य कृष्टिविषैं जितना द्रव्य दीया ताका प्रमाणमात्र मध्य धन हो है। याकौं एक कृष्टि घाटि गच्छका आधाकरि हीन जो दो गुणहानि ताका भाग दीएं एक विशेषका प्रमाण आवै है। याकौं दोगुणहानिकरि गुणें जो प्रमाण आवै तितना द्रव्य तौ लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिविषै दीजिए है। याके आगें द्वितीयादि कृष्टितैं लगाय सर्व संगूह कृष्टिनिकी अंतरकृष्टि उलंघि क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टिपर्यंत एक एक विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। इहां पूर्व पूर्व कृष्टितैं उत्तर उत्तर कृष्टिविषै द्रव्य दीया सो ही दृश्यमान है सो अनंत भाग घटता क्रम लीएं है पूर्व कृष्टिकौं अनंतका भाग दीएं तहां एक भागमात्र घटता उत्तर कृष्टिका द्रव्य प्रमाण हो है॥ ५०० ॥

लोभस्स अवरकिट्टिगदव्वादो कोधजेट्ठकिट्टिस्स।
दव्वं तु होदि हीणं असंखभागेण जोगेण॥५०१॥

लोभस्यावरकृष्टिगद्रव्यतः क्रोधज्येष्ठकृष्टेः।
द्रव्यं तु भवति हीनं असंख्यभागेन योगेन॥ ५०१ ॥

स० चं०—लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिका द्रव्य जो प्रदेशसमूह तातैं क्रोधकी तृतीय कृष्टिकी उत्कृष्ट कृष्टिका द्रव्य एक घाटि कृष्टि प्रमाणमात्र विशेषनिकरि घटता भया सो अनंतवां भागमात्र घटता भया जानना। जातैं सर्व कृष्टिनिका प्रमाण एकस्पर्धककी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्गणाके अनंतवे भागमात्र है सो एक घाटि इतने चय घटनेतैं लोभकी जघन्य कृष्टिका द्रव्यके अनंतवे भागमात्र ही द्रव्य घटता भया है। बहुरि पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिविषै जो देने योग्य द्रव्य कह्या था ताकौं साधिक द्व्यर्धगुण हानिका भाग दीएं अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण हो है। सो यहु क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टिविषै दीया द्रव्यके असंख्यातवे भागमात्र है। बहुरि तिसतैं तिनकी द्वितीय वर्गणा आदि पूर्व स्पर्धकनिकी अंत वर्गणा पर्यंतनिविषैं विशेष घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है। ऐसैं कृष्टिकारकका प्रथम समयका निरूपण जानना॥ ५०१॥

पडिसमयमसंखगुणं कमेण उक्कट्टिदूण दव्वं खु।
संगहहेट्ठापासे अपुव्वकिट्टी करेदी हु॥ ५०२॥

प्रथमसमयसंख्यगुणं क्रमेणापकृष्य द्रव्यं खलु।
संग्रहाधस्तनपार्श्वे अपूर्वकृष्टिं करोति हि॥ ५०२॥

स० चं– बहुरि प्रथम समयतैं द्वितीयादि समयनिविषै असंख्यातगुणा क्रम लीएं द्रव्यकौं अपकर्षणकरि संग्रह कृष्टिके नीचैं वा पार्श्वविषै अपूर्वकृष्टिकौं करै है। पूर्व समयविषै जे कृष्टि करी थीं तिनविषै बारह १२ संग्रह कृष्टिनिकी जे जघन्य कृष्टि तिनतैं अनंतगुणा घटता अनुभाग लीएं नीचैं केती इक नवीन कृष्टि अपूर्व शक्तियुक्त करिए है। याहीतैं इनका नाम अधस्तन कृष्टि जानना। बहुरि पूर्व समयनिविषै जे कृष्टि करी थीं तिनहीके समान शक्ति लीएं तिनके पास केती इक कृष्टि करिए है। भावार्थ यहु –– पूर्व समय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निविषै करी कृष्टिनिविषै जो नवीन द्रव्यका निक्षेपण करिए सो पार्श्वविषैं करी कृष्टि कहिए है ॥ ५०२ ॥

हेट्ठा असंखभागं फासे वित्थारदो असंखगुणं ।
मज्झिमखंडं उभयं दव्वविसेसे हवे फासे ॥५०३॥

अधस्तनमसंख्यभागं पार्श्वे विस्तारतोऽसंख्यगुणं ।
मध्यमखंडमुभयं द्रव्यविशेषे भवेत् पार्श्वे ॥ ५०३ ॥

स० चं०– संग्रह कृष्टिके नीचैं करी हुई कृष्टिनिका प्रमाण तौ सर्व कृष्टिनिका प्रमाणके असंख्यातवे भागमात्र है। बहुरि पार्श्वविषै करी हुई कृष्टिनिका प्रमाण तिनतैं असंख्यातगुणा है। तहां पार्श्वविषै करी कृष्टि तिनविषै मध्यम खंड अर उभय द्रव्य विशेष हो हैं। अर स्तोक जानि न कह्या तथापि तहां अधस्तन शीर्षका भी होना जानना । कैसैं ? सो कहिए है—

द्वितीयादि समयनिविषै समय समय प्रति असंख्यातगुणा द्रव्यकौं पूर्व अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी द्रव्यतैं अपकर्षणकरि तहां पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिविषै देने योग्य द्रव्य जुदा कीएं अवशेष कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य हो है। तिसविषै अधस्तन शीर्ष १ अधस्तन कृष्टि २ मध्यम खंड ३ उभय द्रव्य विशेष ४ ऐसैं च्यारि विभाग करिए सो अधस्तन शीर्षादिकका स्वरूप उपशम चारित्रविषै सूक्ष्म कृष्टिका वर्णन करतैं पूर्वैं विशेषकरि कह्या है सो जानना। वा इहां भी किछू कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहां पूर्व समयविषै करी कृष्टि तिनविषै प्रथम कृष्टितैं लगाय विशेष घटता क्रम है सो सर्व पूर्व कृष्टिनिकौं आदि कृष्टि समान करनेके अर्थि घटे विशेषनिका द्रव्यमात्र जो द्रव्य तहां दीजिए ताका नाम अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य है। बहुरि पूर्वैं न थी ऐसी करीं जे नवीन कृष्टि तिनिकौं पूर्व कृष्टिकी आदि कृष्टिके समान करनेके अर्थि जो द्रव्य दीया ताका नाम अधस्तन कृष्टि द्रव्य है। बहुरि इन सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषै आदि कृष्टितैं लगाय अंत कृष्टि पर्यंत विशेष घटता क्रम करनेके अर्थि जो द्रव्य दीया ताका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। बहुरि इन तीनोंको जुदा कीएं अवशेष जो द्रव्य रह्या ताकौं सर्वकृष्टिनि-विषै समानरूप दीजिए ताका नाम मध्यम खंड है। ऐसैं संग्रह कृष्टिनिके पार्श्ववर्ती कृष्टि-निविषै तौ अधस्तन शीर्ष मध्यम खंड उभय द्रव्य विशेष रूप तीन प्रकार द्रव्य दीजिए है। अर संग्रहकृष्टिनिके नीचैं जे नवीन कृष्टि करीं तिनविषै अधस्तन शीर्ष मध्यम खंड उभय द्रव्य विशेषरूप तीन प्रकार द्रव्य दीजिए है। अब याका विशेष दिखाइए है—तहां द्वितीय समयविषै कैसैं द्रव्य दीजिए है सो वर्णन कीजिए है—

क्रोध मान माया लोभके पूर्व अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी द्रव्यतैं पहले समय जो अपक-र्षण कीया द्रव्य तातैं असंख्यातगुणा द्रव्य अपकर्षण करै है। तहां सर्वद्रव्यकौं आठका भाग दीएं एक एक भागमात्र लोभ माया मानका पांच भागमात्र क्रोधका द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार यथासम्भव साधिक वा किंचित् न्यूनपना लीएं जानना। बहुरि याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिविषै देना। ताकौं जुदा राखि अवशेष द्रव्यका पल्यका प्रथम समयवत् बारह संग्रह कृष्टिनिविषै विभाग क-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिए तब सर्व द्रव्यकौं चौईसका भाग दीएं तहां ग्यारह संग्रह कृष्टिनिका एक एक भागमात्र अर क्रोधकी तृतीय संगूह कृष्टिका तेरह भागमात्र द्रव्य हो है। इहां साधिकपना वा न्यूनपना यथासम्भव जानि लेना।

अब द्वितीय समयविषै अपकर्षण कीया जो द्रव्य तिसविषै एक एक संगूह कृष्टिका द्रव्य जो कह्या तिसविषै अधस्तन शीर्षादि च्यारि प्रकार द्रव्यका प्रमाण ल्याइए है– तहां प्रथम समयविषै अंतकृष्टितैं लगाय कृष्टि २ प्रति जितना द्रव्य बध्या सो एक विशेष है। ताका प्रमाण पूर्वै कह्या था सो आदिविषै जो विशेषका प्रमाण सो आदि अर एक एक विशेष कृष्टि कृष्टि प्रति बध्या तातैं एक विशेष उत्तर अर प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाण मात्र गच्छ सो ऐसैं आदि उत्तर गच्छ स्थापि श्रेणी व्यवहार नाम गणितकै अनुसारि––

रूपेणोनो गच्छो दलीकृतः प्रचयताडितो मिश्रः।
प्रभवेण पदाभ्यस्तः संकलितं भवति सर्वेषां ॥ १ ॥

इस सूत्रतैं एक घाटि गच्छका आधाकौं विशेषकरि गुणि ताकौं आदिविषैं जोडि ताकौं गच्छकरि गुणैं सवनिका संकालित धन कहिए जोड्या हूवा प्रमाण हो है। सो जो जो प्रमाण होइ तितना तितना अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो है। सोई कहिए है––

एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर अर प्रथम कृष्टिविषैं विशेष मिल्या नाहीं तातैं एक घाटि लोभकी प्रथम संगूह कृष्टिविषै प्रथम समयविषै कीनी अंतर कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धनमात्र लोभकी प्रथम संगूहकृष्टिका जो द्वितीय समय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषै अपकर्षण द्रव्यविषैं द्रव्य कह्या था तिस द्रव्यकौं द्वितीय समयविषै अपकर्षण कीया तीहिंविषैं जो कृष्टिनिविषै देने योग्य द्रव्य कह्या था तीहिंविषै अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो है। बहुरि ऐसैं ही लोभकी प्रथम संगूह कृष्टिकी अंतरकृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर द्वितीय संगूह कृष्टिकी अंतर संगूह कृष्टिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धनमात्र लोभकी द्वितीय संगूह कृष्टिका द्रव्यविषै अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो है। बहुरि लोभकी प्रथम द्वितीय संग्रह कृष्टिनिविषै जो अंतर कृष्टिनिका प्रमाण तितने विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंतर कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धनमात्र लोभकी तृतीय संग्रहकृष्टिका द्रव्यविषै अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो है। बहुरि लोभकी प्रथम द्वितीय तृतीय संग्रहकृष्टिनिकी अंतर कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी अंतर कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धनमात्र मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रमाणविषै अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो है। ऐसैं ही अवशेष आठ संग्रह कृष्टिनिविषै अपने अपने नीचैकी संग्रह कृष्टिनिकी अंतर कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपना अपना अंतर कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धनमात्र अपना अपना संग्रह कृष्टिका द्रव्यविषै अधस्तन शीर्षका द्रव्य हो है। इस सर्वको जोडैं एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर एक घाटि प्रथम समयविषै कीनी सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापैं जो संकलन धन होइ तितना सर्व अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य जानना। बहुरि प्रथम समयविषै जो लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जघन्य कृष्टिविषै द्रव्यका प्रमाण कह्या था तीहिं प्रमाण एक एक घाटि कृष्टिका द्रव्य स्थापि ताकौं अपनी अपनी संग्रह कृष्टिनिविषै करीं जे अंतरकृष्टि नवीन कृष्टि तिनका प्रमाणकरि गुणैं अपनी अपनी संग्रह कृष्टिका द्रव्यविषै अधस्तन कृष्टिका द्रव्य प्रमाण हो है। सर्व कृष्टिनिका प्रमाणकरि ताहीकौं गुणैं सर्व अधस्तन शीर्षकृष्टि द्रव्य हो है। बहुरि प्रथम समय द्वितीय समय सम्बन्धी जो कृष्टिविषै देने योग्य द्रव्य ताकौं जोडैं सर्व धन होइ याकौं पुरातन वा नवीन करी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र जो गच्छ ताका भाग दीएं मध्य धन हो है। ताकौं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं एक उभय द्रव्यका विशेष हो है। सो एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर अर क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण गच्छ स्थापि तहां पूर्वोक्त सूत्र अनुसारि संकलन धनमात्र क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषै जो द्वितीय समयविषै कृष्टिनिविषै देने योग्य अपकर्षण द्रव्य कह्या था तिसविषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्यका प्रमाण हो है। बहुरि एक अधिक क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिका पुरातन नवीन कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर क्रोधकी प्रथम द्वितीय कृष्टिकी पुरातन नवीन कृष्टिमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धनमात्र क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिविषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि एक अधिक क्रोधकी तृतीय द्वितीय संग्रह कृष्टिनिका पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी पुरातन नवीन कृष्टिमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धनमात्र क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि एक अधिक क्रोधकी तीनों संग्रह कृष्टिनिकी पुरातन नवीन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टि प्रमाणमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर मानकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धन मात्र मानकी तृतीय संग्रहकृष्टिविषै उभय द्रव्य विशेष हो है। ऐसैं एक अधिक अपनी ऊपरिकी संग्रह कृष्टिनिकी पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाणमात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी संग्रह कृष्टिकी पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलनकी अवशेष आठ संग्रहकृष्टिनिविषै भी उभय द्रव्य विशेष द्रव्यका प्रमाण आवै है। इस सर्वकौं जोडैं एक उभय द्रव्य विशेष आदि एक उभय द्रव्य विशेष उत्तर सब पुरातन नवीन कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलन धन कीएं सर्व उभय द्रव्य विशेष द्रव्यका प्रमाण आवै है। बहुरि द्वितीय समयविषै अपकर्षण कीया द्रव्यविषै जो कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य तीहिंविषै पूर्वोक्त तीन प्रकार द्रव्य घटाएं जो अवशेष द्रव्य रह्या ताकौं सर्व पुरातन नवीन कृष्टिके प्रमाणका भाग दीएं एक खंडका प्रमाण आवै ताकौं अपनी अपनी पुरातन नवीन कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणैं अपनी अपनी संग्रह कृष्टिका द्रव्यविषै मध्यम खंडका प्रमाण आवै है। बहुरि तिस एक खंडकौं सर्व पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाणकरि गुणैं सर्व मध्यम खण्डका द्रव्य हो है। इहां प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिकौं पुरातन कहिए। द्वितीय समयविषै करिए है तिनकौं नवीन कहिए है। ऐसैं द्वितीय समयविषै अपकर्षण कीया द्रव्यविषै जो कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य तिसविषै च्यारि प्रकार कहे। अब इनके देनेका विधान कहिए है—

लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिके नीचैं जे अपूर्व नवीन कृष्टि करीं तिनकी जघन्य कृष्टिविषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। तहां अधस्तन शीर्षका द्रव्य तौ न दीजिए है अर अधस्तन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिका द्रव्यतैं एक कृष्टिका द्रव्य अर मध्यम खंडका द्रव्यतैं एक खंडका द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेषका द्रव्यतैं सर्व नवीन पुरातन कृष्टिनिका जेता प्रमाण तितने विशेषनिका द्रव्य ग्रहि तहां ही दीजिए है। ऐसा यतिवृषभ आचार्यका तात्पर्य है। बहुरि द्वितीयादि अंतपर्यंत जे नवीन कृष्टि तिनविषै अधस्तन कृष्टिका द्रव्यतैं एक कृष्टिका द्रव्य अर मध्यम खंडतैं एक खंड तौ समान रूप सर्वत्र दीजिए है अर उभय द्रव्य विशेष द्रव्यविषै एक एक विशेषमात्र द्रव्य घटता क्रमतैं दीजिए है। सो कृष्टि कृष्टि प्रति उभय द्रव्यका एक विशेष जो घट्या सो अनंतवे भागमात्र घट्या तातैं पूर्व कृष्टितैं उत्तर कृष्टिविषैं अनंतवे भागमात्र घटता द्रव्य दीया कहिए है इहां प्रथम संग्रहकृष्टिका अधस्तन कृष्टि द्रव्य तौ समाप्त भया। बहुरि नवीन कृष्टिकी अंत कृष्टिके ऊपरि पुरातन कृष्टिकी जघन्य कृष्टि है तीहिविषै मध्यम खंडका द्रव्यतैं एक खंड अर उभय द्रव्य विशेषतैं जितनी कृष्टि नीचै नवीन होइ आई तिनके प्रमाणकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेषनिका द्रव्य दीजिए है। सो इहां नवीन कृष्टिकी अंतकृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य अर एक उभय द्रव्यका विशेषका द्रव्य घटता दीया सो तिस नवीन अंतकृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य तौ असंख्यातवे भागमात्र अर एक उभय द्रव्यका विशेष अनंतवे भागमात्र है तातैं तिस नवीन अंतकृष्टितैं असंख्यातवां भागमात्र द्रव्य पुरातन कृष्टिकी जघन्य कृष्टिविषै दीया कहिए है। इहां पुरातन जघन्य कृष्टिविषै प्रथम समयविषै दीया द्रव्य एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्यके समान है। ताकौं जोडै एक गोपुच्छाकार होइ जाइ परंतु ताकी इहां विवक्षा नाही। इहां द्वितीय समयविषै दीया द्रव्य हीकी विवक्षा है तातैं असंख्यातवां भाग ५१९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घटता कह्या ऐसें आगैं भी जहां नवीन अंतकृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं पुरातन जघन्य कृष्टिविषै दीया द्रव्य असंख्यात बहुभागमात्र घटता है तहां ऐसी ही युक्ति जाननी । बहुरि याके ऊपरि पुरातन कृष्टिकी द्वितीय कृष्टि तिसविषै अधस्तन शीर्षका द्रव्यतैं एक विशेषका द्रव्य अर मध्यम खंडतैं एक खंडका द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेषतैं जितनी कृष्टि नीचैं नवीन अर एक पुरातन होइ आईं तिनके प्रमाणकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेषनिका द्रव्य दीजिए है । सो इहां पुरातन जघन्य कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं एक अधस्तन शीर्षके विशेषका द्रव्य बध्या अर एक उभय द्रव्यका विशेष घट्या सो उभय द्रव्यका विशेष विषै प्रथम समय सम्बन्धी विशेषमात्र अधस्तन शीर्षका विशेष घटाएं जो अवशेष रह्या सो पुरातन प्रथम कृष्टिविषै दीया द्रव्यके अनंतवे भागमात्र है । तातैं तिस पुरातन प्रथम कृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं इस द्वितीय कृष्टिविषै दीया द्रव्य अनंतवे भागमात्र घटता कहिए है । बहुरि पुरातन कृष्टिकी तृतीयादि अंत पर्यंत कृष्टिनिविषै मध्यम खंडतैं एक एक खंडका द्रव्य तौ समानरूप अर अधस्तन शीर्ष द्रव्यतैं एक एक विशेषका द्रव्य क्रमतैं बधता अर उभय द्रव्यविशेषतैं एक एक विशेषतैं एक एक विशेषका द्रव्य क्रमतैं घटता दीजिए है । तातैं अनंतवां भागमात्र घटता द्रव्य दीया कहिए । ऐसैं लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टि सम्बन्धी च्यारि प्रकार द्रव्य देनेका विधान कह्या । बहुरि लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी पुरातन अंतकृष्टिके ऊपरि लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिकी नवीन कृष्टिकी जघन्य कृष्टि है तिसविषै लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टि सम्बन्धी च्यारि प्रकार द्रव्यविषै अधस्तन शीर्ष द्रव्य तौ न दीजिए है अर अधस्तन कृष्टिका द्रव्यतैं एक कृष्टिका द्रव्य अर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्यम खंड द्रव्यतैं एक खंडका द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेषतैं नीचैं होइ आईं जे प्रथम संग्रह कृष्टिकी जे नवीन पुरातनकृष्टि तिनके प्रमाणकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेषनिका द्रव्य दीजिए है। सो इहां प्रथम संग्रह कृष्टिकी पुरातन अंत कृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं एक अधस्तन शीर्ष विशेषका द्रव्य अर एक उभय द्रव्य विशेषका द्रव्य तौ घटता अर एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य बधता दीया सो एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्यविषै एक अधस्तन शीर्षका विशेष अर एक उभय द्रव्य विशेषका द्रव्य घटाएं जो अवशेष रह्या सो प्रथम संग्रह कृष्टिकी पुरातन अंत कृष्टिविषै दीया द्रव्यके असंख्यातवे भागमात्र है तातैं तिस पुरातन अंतकृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं याविषै दीया द्रव्य असंख्यातवे भागमात्र बधता कहिए है। ऐसैं इहां दीयमान द्रव्यकी अपेक्षा गोपुच्छका अभाव भया। ऐसैं ही आगैं भी जहां पुरातन कृष्टिकी अंत कृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं नवीन कृष्टिकी प्रथम कृष्टिविषैं दीया द्रव्य असंख्यातवां भागमात्र बधता है तहां ऐसी ही युक्ति जाननी। बहुरि याके ऊपरि नवीन कृष्टिकी द्वितीयादि अंत पर्यंत कृष्टिनिविषै एक एक उभय विशेष प्रमाण घटता द्रव्य दीजिए है। तहां क्रमतैं अनंतवां भाग घटता दीया द्रव्य क्रमतैं जानना। इहां अधस्तन कृष्टि द्रव्य समाप्त भया।

बहुरि द्वितीय संग्रह कृष्टिकी तिस नवीन अंत कृष्टिके ऊपरि पुरातन जघन्य कृष्टि है तिस विषैं अधस्तन शीर्षका द्रव्यतैं तौ नीचैं होइ आईं जे प्रथम संग्रह संबंधी पुरातन कृष्टि तिनके प्रमाण मात्र विशेषनिका द्रव्य अर मध्यम खंड द्रव्यतैं एक खंडका द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेषतैं नीचैं होइ आईं जे सर्व नवीन पुरातन कृष्टि तिनका प्रमाणकरि हीन ६००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्व कृष्टिनिका प्रमाण मात्र विशेषानिका द्रव्य दीजिए। सो एक एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य विषैं इहां अधस्तन शीर्षका द्रव्य दीया सो घटाएं अवशेष द्वितीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिके समान होइ उभयद्रव्यका विशेष मिलाएं जो द्रव्य भया सो नवीन अंत कृष्टिविषैं दीया द्रव्यके असंख्यातवे भाग मात्र है तातैं नवीन अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्यतैं इहां जघन्य पुरातन कृष्टिविषैं दीया द्रव्य असंख्यातवां भाग मात्र घटता द्रव्य दीया कहिए। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंतपर्यंत पुरातन कृष्टिनिविषैं क्रमतैं एक एक अधस्तन शीर्षका विशेष बंधता अर एक एक उभय द्रव्यका विशेष घटता दीजिए है तहां अनंतवां भाग मात्र घटता अनुक्रमतैं पूर्वोक्त प्रकार है। ऐसैं लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिका च्यारि प्रकार द्रव्य देनेका विधान है। बहुरि ताके ऊपरि लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी नवीन पुरातन कृष्टि है तिन विषैं द्रव्य देनेका विधान लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिका च्यारि प्रकार द्रव्य स्थापि तहां द्वितीय कृष्टिवत् जानना। विशेष इतना पुरातन कृष्टिनिविषैं अधस्तन शीर्षका द्रव्यतैं जेती नीचै पुरातन कृष्टि भईं तितने विशेषानिका द्रव्य देना अर नवीन वा पुरातन कृष्टिनिविषैं उभयद्रव्यका विशेषतैं जेती नीचैं नवीन पुरातन कृष्टि भईं तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेषानिका प्रमाण द्रव्य देना। इहां लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिका च्यारि प्रकार द्रव्य समाप्त भया। बहुरि लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी पुरातन अंतकृष्टिके ऊपरि मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी नवीन जघन्य कृष्टि है तिस विषैं मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी च्यारि प्रकार द्रव्य विषैं अधस्तन शीर्षका द्रव्य बिना एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य एक मध्यम खंडका द्रव्य अर लोभकी सर्व नूतन पुरातन कृष्टिनिका प्रमाणकरि हीन सर्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेषनिका द्रव्य दीजिए है। सो एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्यविषैं लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंत कृष्टिविषैं जो अधस्तन शीर्षका द्रव्य दिया ताकौं घटाएं अवशेष लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंत कृष्टिका प्रथम समयविषै जो द्रव्य था ताका प्रमाण होइ तामैं एक उभय द्रव्यका विशेष घटाएं अवशेष द्रव्य लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंत कृष्टिके असंख्यातवे भाग मात्र है तातैं लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं इहां मायाकी जघन्य नूतन कृष्टिविषैं दीया द्रव्य असंख्यातवां भाग मात्र बधता जानना। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत नवीन कृष्टिनिविषैं एक एक उभय द्रव्यका विशेष प्रमाण अनंतवां भाग घटता क्रमकरि द्रव्य दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी पुरातन जघन्य कृष्टितैं लगाय क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिका पुरातन अंत कृष्टि पर्यंत पूर्वोक्त प्रकार विधान द्रव्य देनेका जानना। तहां सर्व नूतन पुरातन कृष्टिनिविषैं एक एक मध्यम खंडका द्रव्यकौं देना अर जेती नीचैं नूतन पुरातन कृष्टि भईं तिनके प्रमाणकरि हीन सर्व नूतन पुरातन कृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेषनिका द्रव्यकौं देना अर नवीन कृष्टिनिविषैं एक एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य देना अर पुरातनकृष्टिविषैं जेती नीचैं पुरातन कृष्टि भईं तिनके प्रमाण मात्र अधस्तन शीर्षके विशेषनिका द्रव्यदेना। ऐसैं द्वितीय समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्य तिस विषैं जो कृष्टि संबंधी द्रव्य था तिसके निक्षेपण करनेका विधान कह्या। बहुरि जो अपना अपना पूर्व अपूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य था ताकौं "दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा" इत्यादि विधानकरि तिस द्रव्यकौं साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं ६०२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लब्ध प्रमाणमात्र अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। बहुरि ऊपरि प्रथम गुणहानि पर्यंत चय घटता क्रमकरि दीजिए है। बहुरि ऊपरि गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा द्रव्य दीजिए है। या प्रकार जैसैं यहु द्वितीय समयविषैं वर्णन कीया तैसैं ही कृष्टि करण कालका तृतीयादि अंतपर्यंत समयनिविषैं विधान जानना। विशेष इतना—समय समय प्राति अपकर्षण कीया द्रव्यका प्रमाण क्रमतैं असंख्यात गुणा बधता जानना। अर नीचैं नीचैं नवीन कृष्टि करिए है तिनका प्रमाण क्रमतैं असंख्यात गुणा घटता जानना॥ ५०३॥

पुव्वादिम्हि अपुव्वा पुव्वादि अपुव्वपढमगे सेसे।
दिज्जदि असंखभागेणूणं अहियं अणंतभागूणं॥

पूर्वादौ अपूर्वा पूर्वादौ अपूर्वप्रथमके शेषे।
दीयते असंख्यभागेनोनमधिकं अनंतभागोनं॥ ५०४॥

स० चं०— अपूर्व जो नवीन कृष्टि ताकी अंत कृष्टितैं पूर्वै जो पुरातन कृष्टि ताकी आदि कृष्टिविषैं तौ असंख्यातवे भाग घटता द्रव्य दीजिए है। बहुरि पूर्वै जो पुरातन कृष्टिकी अंतकृष्टि तातैं अपूर्व जो नवीन कृष्टि ताकी प्रथम कृष्टिविषैं असंख्यातवां भाग मात्र अधिक द्रव्य दीजिए है। बहुरि अवशेष सर्वकृष्टिनिविषैं पूर्वकृष्टितैं उत्तर कृष्टिविषैं द्रव्य अनंतवां भाग मात्र घटता दीजिए है। सो कथन करिही आए हैं॥ ५०४॥

वारेक्कारमणंतं पुव्वादि अपुव्वआदि सेसं तु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेवीस ऊंटकूडा दिज्जे दिस्से अणंतभागूणं ॥५०५॥

द्वादशैकादशमनंतं पूर्वादि अपूर्वादि शेषं तु ।
त्रयोविंशतिरुष्ट्रकूटा देये दृश्ये अनंतभागोनम् ॥ ५०५ ॥

स० चं– तहां पुरातन प्रथम कृष्टि तौ बारह अर प्रथम संग्रहकी विना नवीन संग्रह कृष्टि ग्यारह अर अवशेष कृष्टि अनंत जाननी । ऐसैं देय जो देने योग्य द्रव्य तिसविषैं तेईस स्थाननिविषैं उष्ट्र कूट रचना हो है । जैसैं ऊंटकी पींठि पछाड़ी तौ ऊंची अर मध्यविषैं नीची अर आगैं ऊंची वा नीची हो है तैसैं इहां पहलैं नवीन जघन्य कृष्टि विषैं बहुत, बहुरि द्वितीयादि नवीन कृष्टिनिविषैं क्रमतैं घटता अर आगैं पुरातन कृष्टिनिविषैं अधस्तन शीर्षविशेष करि बधता अर अधस्तन कृष्टि अथवा उभय द्रव्य विशेष करि घटता द्रव्य दीजिए है तातैं देयमान द्रव्य विषैं तेईस उष्ट्रकूट रचना हो है । बहुरि दृश्यमानविषैं लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी नवीन जघन्य कृष्टितैं लगाय क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी पुरातन अंत कृष्टिपर्यंत अनंतवे भाग मात्र घटता क्रम लीएं द्रव्य जानना । जातैं नवीन कृष्टिनिविषैं तौ विवक्षित समयविषैं दीया द्रव्य सोई दृश्यमान है अर पुरातन कृष्टिनिविषैं पूर्व समयनिविषैं दीया द्रव्य अर विवक्षित समयविषैं दीया द्रव्य मिलाएं दृश्यमान द्रव्य हो है सो नूतन कृष्टिनिविषैं तौ अधस्तन कृष्टिका द्रव्य दीएं अर पुरातन कृष्टिनिविषैं अधस्तन शीर्षका द्रव्य दीएं तौ सर्वकृष्टि पुरातन प्रथम कृष्टिके समान हो है । तहां एक एक मध्यम खंडकौं दीएं तिनका समान प्रमाण ही रह्या । बहुरि उभय द्रव्य विशेष क्रमतैं एक एक विशेष घटता दीया सो यहु विशेष विवक्षित कृष्टिकी नीचली कृष्टिका द्रव्यके अनंतवे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागमात्र है। तातैं दृश्यमान द्रव्यकी अपेक्षा सर्वत्र अनंतवां भागमात्र घटता क्रम कह्या है। बहुरि अंत कृष्टितैं अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणा विषैं दीया द्रव्य अनंतगुणा घटता है जातैं तहां एक भाग विषैं द्व्यर्ध गुणहानिका भाग दीएं ताका प्रमाण हो है ॥ ५०५ ॥

किट्टीकरणद्धाए चरिमे अंतोमुहुत्तसुज्जुत्तो ।
चत्तारि होंति मासा संजलणाणं तु ठिदिबंधो ॥

कृष्टिकरणद्धायाः चरमे अंतर्मुहूर्तसंयुक्ताः ।
चत्वारो भवंति मासाः संज्वलनानां तु स्थितिबंधः ॥ ५०६ ॥

स० चं– कृष्टि करणकाल अंतर्मुहूर्त मात्र है ताका अंत समयविषैं अंतर्मुहूर्त अधिक च्यारि मास प्रमाण संज्वलन चतुष्कका स्थितिबंध है। अपूर्व स्पर्धक करण कालका अंत समयविषैं आठवर्षमात्र था सो एक एक स्थितिबंधापसरणविषैं अंतर्मुहूर्तमात्र घटि इहां इतना रहै है ॥ ५०६ ॥

सेसाणं वस्साणं संखेज्जसहस्सगाणि ठिदिबंधो ।
मोहस्स य ठिदिसंतं अडवस्संतोमुहुत्तहियं ॥

शेषाणां वर्षाणां संख्येयसहस्रकानि स्थितिबंधः ।
मोहस्य च स्थितिसत्त्वं अष्टवर्षांतर्मुहूर्ताधिकः ॥ ५०७ ॥

स० चं०–बहुरि अवशेष कर्मानिका स्थिति बंध संख्यात हजार वर्षमात्र है। पूर्वै भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्यात हजार वर्षमात्र ही था सो संख्यात गुणा घटता क्रमरूप संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण भएं भी आलापकरि इतना ही कह्या। बहुरि मोहनीयका स्थितिसत्व पूर्वै संख्यात-हजार वर्षमात्र था सो घटिकरि इहां अंतर्मुहूर्त अधिक आठवर्ष मात्र रह्या है ॥ ५०७ ॥

घादितियाणं संखं वस्ससहस्साणि होदि ठिदिसंतं ।
वस्साणमसंखेज्जसहस्साणि अघादितिण्णं तु ॥

घातित्रयाणां संख्यं वर्षसहस्राणि भवति स्थितिसत्त्वम् ।
वर्षाणामसंख्येयसहस्राणि अघातित्रयाणां तु ॥ ५०८ ॥

स० चं०—तीन घातियानिका संख्यातहजार वर्ष प्रमाण स्थितिसत्त्व है। बहुरि तीन अघातियानिका असंख्यात हजार वर्षमात्र इहां स्थिति सत्व है ॥ ५०८ ॥

पडिपदमणंतगुणिदा किट्टीयो फड्डया विसेसाहिया ।
किट्टीण फड्डयाणं लक्खणमणुभागमासेज्ज ॥ ५०९ ॥

प्रतिपदमनंतगुणिता कृष्टयः स्पर्धका विशेषाधिकाः।
कृष्टीनां स्पर्धकानां लक्षणमनुभागमासाद्य ॥ ५०९ ॥

स० चं०—कृष्टि हैं ते तौ प्रतिपद अनंतगुणा अनुभाग लीए हैं। प्रथम कृष्टिका अनुभागतैं द्वितीय कृष्टिका अनुभाग अनंतगुणा, तातैं तृतीय कृष्टिका, असैं अंतकृष्टि पर्यंत क्रमतैं अनंतगुणा अनुभाग पाइए है। बहुरि स्पर्धक हैं ते प्रतिपद विशेष अधिक अनुभाग लीए हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्पर्धकनिकी प्रथम वर्गणातैं द्वितीय वर्गणाविषैं तातैं तृतीय वर्गणाविषैं ऐसैं अनंत वर्गणा पर्यंत क्रमतैं किछू विशेष अधिक अनुभाग पाइए है। ऐसैं अनुभागकौं आश्रय करि कृष्टि अर स्पर्धकनिका लक्षण है। द्रव्य अपेक्षा तौ चय घटता क्रम दोऊनिविषैं ही है परंतु अनुभागका क्रमकी अपेक्षा इनका लक्षण जुदा जानि जुदापना कह्या है ॥ ५०९ ॥

पुव्वापुव्वप्फड्ढयमणुहवादि हु किट्टिकारओ णियमा।
तस्सद्धा णिट्ठायदि पढमट्ठिदि आवलीसेसे ॥ ५१० ॥

पूर्वापूर्वस्पर्धकमनुभवति हि कृष्टिकारको नियमात्।
तस्याद्धा निष्ठापयति प्रथमस्थितौ आवलिशेषे ॥ ५१० ॥

स० चं०—कृष्टि करनेवाला तिसकालविषैं पूर्व अपूर्व स्पर्धकानिहीके उदयकौं नियम करि भोगवै है। जैसैं अपूर्व स्पर्धक करनेतैं पूर्वस्पर्धक सहित अपूर्व स्पर्धक भोगवै है तैसैं कृष्टि करतैं कृष्टिकौं नाहीं भोगवै है ऐसा जानना। या प्रकार संज्वलन क्रोधका प्रथम स्थितिविषैं उच्छिष्टावलिमात्र काल अवशेष रहैं तिस कृष्टि करण कालकौं निष्ठापन करै समाप्त करै है। इति कृष्टिकरणाधिकारः ॥ ५१० ॥

अथ कृष्टिवेदनाधिकार कहिए है—

से काले किट्टीओ अणुहवदि हु चारिमासमडवस्सं।
बंधो संतं मोहे पुव्वालावं तु सेसाणं ॥ ५११ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वे काले कृष्टीन् अनुभवति हि चतुर्मासमष्टवर्षं।
बंधः सत्त्वं मोहे पूर्वालापस्तु शेषाणाम् ॥ ५११ ॥

स० चं०—कृष्टि करण कालके अनंतरि अपने कृष्टिवेदक कालविषैं कृष्टिनिके उदयकौं अनुभवै है। द्वितीय स्थितिके निषेकनिविषैं तिष्ठती कृष्टिनिकौं प्रथम स्थितिके निषेकनिविषैं प्राप्त करि भोगवै है। तिस भोगवने ही का नाम वेदना है। ताके कालका प्रथम समयविषैं च्यारि संज्वलनरूप मोहका स्थितिबंध च्यारि मास है अर स्थिति सत्त्व आठ वर्षमात्र है। पूर्वैं अंतर्मुहूर्त अधिक थे सो अंतमुहूर्त घाटि इतने रहे। बहुरि अवशेष कर्मनिका स्थितिबंध स्थिति सत्व यद्यपि घटती भया है तथापि आलापकरि पूर्वोक्त प्रकार जैसैं कृष्टि करण कालका अंत समयविषैं करै तैसैं ही जानना॥ ५११ ॥

ताहे कोहुच्छिट्ठं सव्वं घादी हु देसघादी हु।
दोसमऊणदुआवलिणवकं ते फड्डयगदाओ॥ ५१२॥

तत्र क्रोधोच्छिष्टं सर्वं घाति हि देशघाति हि।
द्विसमयोनद्व्यावलिनवकं तत् स्पर्धकगतम् ॥ ५१२ ॥

स०चं०—इहां अनुभाग बंध तौ गुड खंड शर्करा अमृतरूप यथा संभव उत्कृष्ट है। बहुरि अनुभाग सत्व है सो क्रोधकी उच्छिष्टावलीका तौ सर्वघाती है। काहेतैं?—समयघाटि आवली प्रमाण क्रोधके निषेक उदयावलीकौं प्राप्त भये हैं। तिनविषैं पूर्वस्पर्धक रूप अनुभाग सत्त्व लता दारु समान शक्ति युक्त है। सो ऐसी शक्तिकी अपेक्षा इहां सर्वघाती न करै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। शैल समानादि की अपेक्षा सर्वघाती न करे है। सो ए निषेक उदय कालविषैं कृष्टिरूप परिणमि जो वर्तमान समयमें उदय आवने योग्य निषेक तिनविषैं उदयरूप होइ निर्जरे हैं। इहां आवलिविषैं एक समय घाटि कह्या है सो उच्छिष्टावालिका प्रथम निषेक वर्तमान समयविषैं कृष्टिरूप परिणमनेतैं परमुखरूप होइ उदय आवै है तातैं कह्या है। बहुरि संज्वलन चतुष्कका जे दोय समय घाटि दोय आवलि मात्र नवक समय प्रबद्ध रहै हैं तिनविषैं अनुभाग देशघाति शक्तिकरि संयुक्त है। जातैं कृष्टिकरण कालविषैं कृष्टिरूप बंध नाही तातैं ते स्पर्धकरूप शक्तिकरियुक्त हैं ते दोय समयघाटि दोऊ आवली कालविषैं कृष्टिरूप परिणमि सत्तानाशकौं प्राप्त होसी। नवक समय प्रबद्धका स्वरूप वा अन्यरूप परिणमनेका विधान पूर्वै कह्या है सोई जानना। नवक बंध अर उच्छिष्टावलिमात्र निषेक अवशेष रहे तिनका तौ ऐसैं स्वरूप जानना अवशेष सर्व निषेक कृष्टि करण कालका अंतसमयविषैं ही कृष्टिरूप परिणमैं हैं॥

लोहादो कोहादो कारउ वेदउ हवे किट्टी।
आदिमसंगहकिट्टिं वेदयादि ण विदीय तिदियं च॥

लोभात् क्रोधात् कारको वेदको भवेत् कृष्टेः।
आदिमसंग्रहकृष्टिं वेदयति न द्वितीयां तृतीयां च॥ १३॥

स० टं०——कृष्टिका कारक तौ लोभतैं लगाय क्रम लीएं है। अर वेदक है सो क्रोधतैं लगाय क्रम लीए है। भावार्थ यहु—कृष्टिकरणविषै तौ पहिले लोभकी, पीछै मानकी, पीछै मायाकी, पीछै क्रोधकी ऐसैं क्रम लीएं कृष्टि कही थी। इहां कृष्टिका वेदनेविषै पहिले क्रो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घकी, पीछै मानकी, पीछै मायाकी, पीछै लोभकी कृष्टिनिका अनुभवन हो है। बहुरि इतना जानना।

कृष्टिकरणविषै याकौं तृतीय संग्रहकृष्टि कही है ताकौं तौ इहां कृष्टि वेदनविषै प्रथम कृष्टि कहनी अर जाकौं तहां प्रथम कृष्टि कहीं ताकौं इहां तृतीय कृष्टि कहनी जो ऐसैं न होइ तौ पहलैं स्तोक शक्ति लीएं कृष्टिनिका अनुभवन होइ पीछैं बहुत शक्ति लीएं कृष्टिनिका अनुभवन होइ सो बनैं नाही जातैं समय समय अनंतगुणा घटता अनुभागका उदय हो है। तातैं संग्रहकृष्टिनिविषै कृष्टिकारकतैं कृष्टिवेदककैं उलटा क्रम जानना। बहुरि तहां अंतरकृष्टिनिविषै पूर्वोक्त प्रकार ही क्रम जानना। बहुरि इहां पहलैं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिकौं ही अनुभवै है द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टिकौं नाही अनुभवै है ऐसा जानना॥ ५१३॥

किट्टीवेदगपढमे कोहस्स य पढमसंगहादो दु।
कोहस्स य पढमठिदी पत्तो उव्वट्टगो मोहे॥

कृष्टिवेदकप्रथमे क्रोधस्य च प्रथमसंग्रहात् तु।
क्रोधस्य च प्रथमस्थितिः प्राप्तः अपवर्तको मोहे॥ ५१४॥

स० चं– कृष्टिवेदक कालका प्रथम समयविषै क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टितैं क्रोधकी प्रथम स्थिति करै है कैसैं? सो कहिए है—

कृष्टिकरण कालका अंत समय पर्यंत तौ कृष्टिनिका तौ दृश्यमान प्रदेशनिका समूह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है सो चय घटता क्रम लीएं गोपुच्छाकाररूप अपने स्थानविषै तिष्ठै है। अर स्पर्धकानिका अपने स्थानविषै प्रदेश समूह एक गोपुच्छाकार रूप तिष्ठै है तहां कृष्टिनिका द्रव्यतैं स्पर्धकनिका द्रव्य असंख्यातगुणा है तातैं कृष्टि अर स्पर्धकनिकैं एक गोपुच्छाकार है नाहीं। बहुरि कृष्टिकरण कालकी समाप्तताके अनंतरि सर्व ही द्रव्य कृष्टिरूप परिणमि एक गोपुच्छाकार तिष्ठै है। तहां संज्वलनके सर्व द्रव्यकौं आठका भाग देइ तहां एक २ भागमात्र लोभ माया मानका, पांच भागमात्र क्रोधका द्रव्य जानना। बहुरि बारह संग्रहकृष्टिनिविषै विभाग कीजिए तौ सर्व संज्वलन द्रव्यकौं चौईसका भाग दीएं तहां अन्य संग्रह कृष्टिनिका एक एक भागमात्र क्रोधका प्रथम संग्रहकृष्टिका तेरह भागमात्र द्रव्य है इहां साधिकपना न्यूनपना है सो यथासम्भव पूर्वोक्त प्रकार जानना। पूर्वैं कृष्टिकरण कालका द्वितीय समयविषै जैसैं विधान कह्या है तैसैं कहना। बहुरि प्रथम समयविषैं करी कृष्टिनिका प्रमाणविषैं ताके असंख्यातवे भागमात्र द्वितीयादि समयनिविषै करी कृष्टिनिका प्रमाण जोडैं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका प्रमाण हो है। सो कृष्टि वेदकका प्रथम समयविषैं क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिका जो द्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भाग ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्यकौं ग्रहि प्रथम स्थितिकौं करै है। सो क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टि वेदकका कालतैं उच्छिष्टावलीमात्र अधिक प्रथम स्थितिके निषेकनिका प्रमाण है। सोई इहां गुणश्रेणि आयाम जानना। ताके वर्तमान उदयरूप प्रथम निषेकविषैं तौ स्तोक द्रव्य दीजिए है। तातैं द्वितीयादि अंत समय पर्यंत असंख्यातगुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ऐसैं तिस एक भागमात्र द्रव्यका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणश्रेणिरूप देना हो है। इहां प्रथम स्थितिका जो अंतका निषेक ताहीका नाम गुणश्रेणि शीर्ष है। बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य कह्या। ताकौं स्थितिकी अपेक्षा क्रोधकी द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टितैं भी अपकर्षण कीया जो द्रव्य तामैं मिलाएं जो द्रव्य भया ताकौं इहां आठ वर्षमात्र स्थिति है ताकी संख्यात आवली भई सोई गच्छ, ताका भाग दीएं मध्यधन होइ। तामैं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणमात्र चय मिलाएं द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण हो है सो यहु गुणश्रेणि शीर्षविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा है। बहुरि ताके असंख्यातवां भागमात्र विशेषका प्रमाण है सो द्वितीयादि निषेकनिविषैं अतिस्थापनावलीके नीचैं एक एक विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ऐसैं क्रमकरि समय समय प्रति उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणि कीजिए है। बहुरि इहां मोहका अपवर्तन घात हो है। इहांतैं पहलैं अश्वकर्णरूप अनुभागका अंतर्मुहूर्तकरि संपूर्ण होइ ऐसा कांडकघात वर्तैं था। अब संज्वलनकी बारह संग्रहकृष्टि तिनका समय २ प्रति अनंतगुणा घटता अनुभाग होनेकरि अपवर्तनघात वर्तैं है॥ ५१४॥

पढमस्स संगहस्स य असंखभागा उदेदि कोहस्स।
बंधेवि तहा चेव य माणतियाणं तहा बंधे॥ ५१५॥

प्रथमस्य संग्रहस्य च असंख्यभागान् उदयति क्रोधस्य।
बंधेपि तथा चैव च मानत्रयाणां तथा बंधे॥ ५१५॥

स० चं०—कृष्टिवेदकका प्रथम समयविषैं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि सम्बन्धी जे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतर कृष्टि तिनके प्रमाणकौं असंख्यातका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र कृष्टि उदय आवे है। तहां एक भागमात्र नीचेकी ऊपरिकी कृष्टिकौं छोडि बीचिकी बहुभागमात्र कृष्टिनिका उदय हो है। जे प्रथम द्वितीयादि कृष्टि तिनकौं नीचली कृष्टि कहिए। बहुरि अंत उपांत आदि जे कृष्टि तिनकौं ऊपरली कृष्टि कहिए है। तहां उदयरूप न होइ ऐसी नीचली कृष्टि ते तौ अनंतगुणा बंधता अनुभागरूप होइ करि अर ऊपरिकी कृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभागरूप होइ करि ते कृष्टि बीचिकी कृष्टिरूप परिणमि उदय आवै हैं। बहुरि बंधविषैं भी नीचली ऊपरली असंख्यातवां भागमात्र कृष्टि छोडि बीचिकी असंख्यात बहुभागमात्र कृष्टि जाननी। उदयरूप कृष्टिनिविषैं जो ऊपरली अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण तातैं साधिक दूणा प्रमाण लीएं नीचली ऊपरली कृष्टिनिका प्रमाण घटाएं बंधरूप कृष्टिनिका प्रमाण हो है। इनका बंध इहां हो है। बहुरि इहां मानादिककी अपनी अपनी प्रथम संग्रह कृष्टिकी नीचली ऊपरली कृष्टि प्रमाणका असंख्यातवां भागमात्र कृष्टिनिकौं नीचैं ऊपरि छोडि बीचिकी बहुभागमात्र कृष्टि बंधै है। बहुरि इहां मानादिकानिकी तीनों ही संग्रह कृष्टिनिका उदय नाही है अर क्रोधकी द्वितीय तृतीय संग्रहकृष्टिका बंध वा उदय नाही है, ऐसा जानना ॥ ५१५ ॥

कोहस्स पढमसंगहकिट्टिस्स य हेट्ठिमणुभयट्ठाणा।
तत्तो उदयट्ठाणा उवरिं पुण अणुभयट्ठाणा ॥५१६॥
उवरिं उदयट्ठाणा चत्तारि पदाणि होंति अहियकमा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मज्झे उभयट्ठाणा होंति असंखेज्जसंगुणिया ॥ ५१७ ॥

क्रोधस्य प्रथमसंग्रहकृष्टेश्चाधस्तनानुभयस्थानानि ।
तत उदयस्थानानि उपरि पुनरनुभयस्थानानि ॥ ५१६ ॥
उपरि उदयस्थानानि चत्वारि पदानि भवंति अधिकक्रमाणि ।
मध्ये उभयस्थानानि भवंति असंख्येयसंगुणितानि ॥ ५१७ ॥

स० चं– क्रोधकी प्रथम संगृहकृष्टिकी अंतर कृष्टिनिविषैं अधस्तन कहिए प्रथम द्वितीयादि नीचली जे अनुभय स्थान कहिए जिनिका उदय अर बंध दोऊ नाहीं ऐसी नीचली कृष्टि तिनिका प्रमाण स्तोक है ताकी संदृष्टि दोयका अंक २, बहुरि तातैं ताहीकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागमात्र विशेषकरि अधिक तीन अनुभय कृष्टिनिके ऊपरिवर्ती जे नीचली उदयस्थाना कहिए जिनिका उदय पाइए बंध न पाइए ऐसी कृष्टि तिनिका प्रमाण है । ताकी संदृष्टि तीनका अंक ३ । बहुरि तातैं ताहीकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां एक भागमात्र विशेषकरि अधिक उपारितन कहिए अन्त उपांत आदि ऊपारिकी अनुभयस्थाना कहिए बंध उदय रहित कृष्टि तिनका प्रमाण है । ताकी संदृष्टि च्यारिका अंक ४, बहुरि तातैं ताहीकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागमात्र विशेषकरि अधिक तिनि कृष्टिनिके नीचैं पाइए ऐसी ऊपरली उदयस्थाना कहिए उदय सहित बंध रहित कृष्टि तिनका प्रमाण है । ताकी संदृष्टि सातका अंक ७, ऐसैं च्यारि पद तौ अधिक क्रम लीएं हैं बहुरि तातैं असंख्यातगुणा बीचिकी ६१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उभयस्थाना कहिए जिनिका बंध भी पाइए अर उदय भी पाइए ऐसी कृष्टिनिका प्रमाण है। सोई कहिए है—

क्रोधकी प्रथमसंग्रहकृष्टिविषै जो कृष्टिनिका प्रमाण ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभागमात्र तौ बीचिकी उभय कृष्टिनिका प्रमाण बहुरि अवशेष एक भाग रह्या ताकौं 'प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंडः' इत्यादि सूत्र विधानतैं अंक संदृष्टि अपेक्षा दोय तीन च्यारि सात शलाकानिकौं जोडैं सोलह भया ताका भाग देइ जो एक भागका प्रमाण आया ताकौं अपनी अपनी दोय आदि शलाकानिकरि गुणैं नीचली अनुभय कृष्टि आदिकनिका प्रमाण आवै है। ऐसैं ही बारह संग्रह कृष्टिनिका वेदक कालका प्रथम समय विषै अल्प बहुत्व जानना ॥ ५१६–५१७ ॥

बिदियादिसु चउठाणा पुव्विल्लेहिं असंखगुणहीणा।
तत्तो असंखगुणिदा उवरिमणुभया तदो उभया ॥

द्वितीयादिसु चतुःस्थानानि पूर्वेभ्योऽसंख्यगुणहीनानि।
ततः असंख्यगुणितानि उपर्यनुभयानि तत उभयानि ॥ ५१८ ॥

स० चं०—अब कृष्टि करण कालका द्वितीयादि समयनिविषै कहिए है—पूर्व समयविषै जे नीचली बंध रहित केवल उदय कृष्टि थीं ते तौ उत्तर समयविषै उभय कृष्टि रूप हो हैं। अर अपूर्व समयविषै अनुभय कृष्टि थीं तिनविषै अंतकी केते इक कृष्टि उभयरूप तिनतैं नीचली केती इक केवल उदय रूप उत्तर समयविषै हो हैं। बहुरि पूर्व समयविषै जे ऊपरिकी केवल उदय कृष्टि थीं ते सर्व उत्तर समयविषै अनुभय रूप हो हैं। बहुरि पूर्व समयविषै जे ६१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उभय कृष्टि थीं तिनविषै अंतकी केती इक कृष्टि अनुभय रूप तिनतैं नीचै केती इक केवल उदय रूप कृष्टि उत्तर समयविषै हो हैं। ऐसैं समय समय प्रति बंध अर उदयविषै अनुभाग का घटना हो है जातैं नीचली कृष्टिनिविषै अनुभाग स्तोक पाइए है ऊपरिकी कृष्टिनिविषै अनुभाग बहुत पाइये है। ऐसैं होतैं अल्प बहुत्व कहिए है—

नीचेकी अनुभय कृष्टि तौ स्तोक हैं तातैं तिनके ऊपरि जे नीचली केवल उदय कृष्टि ते विशेष अधिक हैं। तातैं परैं उपरि पूर्व समयविषै जो उत्कृष्ट अनुभाग लीएं अंतकी बंध रूप कृष्टि थीं तातैं लगाय नीचैं जे उत्तर समयविषै अनुभय कृष्टि भईं ते विशेष अधिक हैं। तातैं तिनके नीचैं जे विवक्षित समयविषै केवल उदय रूप कृष्टि भईं ते विशेष अधिक हैं। ऐसैं ए च्यारि स्थान तौ पूर्व समयविषै नीचली अनुभय कृष्टि आदिका प्रमाण जो था तातैं असंख्यात गुणे घाटि हैं। बहुरि तिन उदय कृष्टिनितैं पूर्व समयविषै जो ऊपरिकी उदय कृष्टि थीं तिनविषै स्तोक अनुभाग लीएं जो आदिकी जघन्य कृष्टि तीहिं समान कृष्टितैं लगाय जे उत्तर समयविषै सर्व अनुभय कृष्टि भईं ते असंख्यात गुणी हैं। जातैं पूर्व समयविषै जो ऊपरिकी अनुभय कृष्टिनिका प्रमाण था ताके असंख्यातवे भागमात्र कृष्टि पूर्व समय संबधी ऊपरिकी जघन्य उदय कृष्टितैं नीचैं उत्तरोत्तर समयविषै ऊपरिकी जघन्य अनुभय कृष्टि हो हैं। बहुरि तातैं पूर्व समय संबधी ऊपरिकी उदय कृष्टिनिका प्रमाणके असंख्यातवे भागमात्र कृष्टि नीचैं उतरैं इस विवक्षित समयविषै ऊपरिकी जघन्य उदय कृष्टि हो हैं। बहुरि तिन अनुभय कृष्टिनिका प्रमाणतैं वीचिविषै जे बंध उदय युक्त उभय कृष्टि हैं ते असंख्यातगुणी हैं। ऐसैं द्वितीयादि समयनिविषै कृष्टिनिका अल्प बहुत्व जानना ॥ ५१८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुव्विल्लबंधजेट्ठा हेट्ठासंखेज्जभागमोदरिय ।
संपडिगो चरिमोदयवरमवरं अणुभयाणं च ॥५१९॥

पौर्विकबंधज्येष्ठात् अधस्तनमसंख्येयभागमवतीर्य ।
सांप्रतिकः चरमोदयवरमवरं अनुभयानां च ॥ ५१९ ॥

स० चं– पूर्व समय संबंधी बंधकी उत्कृष्ट कृष्टि काहिए अंतकी बंधकृष्टि तातैं लगाय पूर्व समय संबंधी उभयकृष्टिनिके असंख्यातवे भागमात्र कृष्टि नीचैं उतरिकरि सांप्रातिक कहिए वर्तमान उत्तर समय संबंधी अंतकी केवल उदय रूप उत्कृष्ट कृष्टि हो है । अर ताके अनंतरि उपरि अनुभय कृष्टिकी जघन्य कृष्टि पाइए है। बहुरि तिस उत्कृष्ट उदय कृष्टितैं नीचैं पूर्व समय संबंधी उदय कृष्टिके असंख्यातवे भागमात्र कृष्टि नीचैं उतरि सांप्रातिक उदयकी जघन्य कृष्टि हो है। ताके अनंतर नीचैं उभयकृष्टिकी उत्कृष्ट कृष्टि हो है ऐसैं तौ ऊपरि भी कृष्टिनिविषैं विधान जानना ॥ ५१९ ॥

हेट्ठिमणुभयवरादो असंखबहुभागमेत्तमोदरिय ।
संपडिबंधजहण्णं उदयुक्कस्सं च होदित्ति ॥५२०॥

अधस्तनानुभयवरात् असंख्यबहुभागमात्रमवतीर्य ।
संप्रतिबंधजघन्यं उदयोत्कृष्टं च भवतीति ॥ ५२० ॥

स० चं– पूर्व समय संबंधी अनुभय कृष्टिकी जो उत्कृष्ट कृष्टि कहिए अंतकृष्टि

७८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तातैं पूर्व समय संबंधी अनुभय कृष्टिनिका असंख्यात बहुभागमात्र कृष्टि नीचैं ऊपरि सांप्रातिक बंध कृष्टि जो बंध उदय युक्त उभय कृष्टि ताकी जघन्य कृष्टि हो है । बहुरि ताके अनंतरि नीचली कृष्टि सो केवल उदय कृष्टिनिकी उत्कृष्ट कृष्टि है। तातैं लगाय पूर्व समय संबंधी उदय कृष्टिनिके असंख्यातवे भागमात्र कृष्टि उतरि करि सांप्रतिक उदय कृष्टिकी जघन्य कृष्टि हो है । ताके नीचैं पूर्व समय संबंधी अनुभय कृष्टिनिके असंख्यातवे भाग मात्र कृष्टि नीचैं उतरि सांप्रातिक जघन्य अनुभय कृष्टि हो है । सोई सर्व कृष्टिनिविषैं जघन्य कृष्टि है । ऐसैं नीचली कृष्टिनिविषैं विधान जानना । ऐसैं समय समय प्रति पूर्व समय संबंधी नीचली अनुभय उदय कृष्टि ऊपरली उदय अनुदय कृष्टिनिका प्रमाणतैं उत्तर समय संबंधी तिनका प्रमाण असंख्यात गुणा घटता है । अर बीचिविषैं जो उभय कृष्टि हैं तिनका प्रमाण विशेष अधिक हो है, ऐसा जानना ॥ ५२० ॥

पडिसमयं अहिगदिणा उदये बंधे च होदि उक्कस्सं ।
बंधुदये च जहण्णं अणंतगुणहीणया किट्टी ॥ ५२१

प्रतिसमयमहिगतिना उदये बंधे च भवति उत्कृष्टं ।
बंधोदये च जघन्यं अनंतगुणहीनका कृष्टिः ॥ ५२१ ॥

स० चं– समय समय प्रति सर्पकी गतिवत् उत्कृष्ट कृष्टि तौ उदय अर बंध विषैं बहुरि जघन्य कृष्टि बंध अर उदय विषैं अनंतगुणा घटता क्रमलीएं अनुभाग अपेक्षा जाननी । सोई कहिए है—

सर्व कृष्टिनिके अनंत बहुभागमात्र बीचिकी कृष्टि बंधरूप हैं तिनतैं साधिक उदय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूप हैं। तिन विषैं जो सर्वतैं स्तोक अनुभाग लीएं प्रथम कृष्टि सो जघन्य कृष्टि कहिए। सर्वतैं अधिक अनुभाग लीए अंत कृष्टि सो उत्कृष्ट कृष्टि कहिए। तहां कृष्टि वेदकका प्रथम समय विषैं जो उदयकी उत्कृष्ट कृष्टि सो बहुत अनुभाग युक्त है। तातैं तिसही समयविषैं बंधकी उत्कृष्ट कृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभाग लीए है। तातैं द्वितीय समयविषैं उदयकी उत्कृष्ट कृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभाग लीएं है। तातैं तिसही समयविषैं बंधकी उत्कृष्ट कृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभाग लीएं है। तातैं तीसरा समय विषैं उदयकी उत्कृष्ट कृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभागलीएं है। तातैं तिस समय विषैं बंधकी उत्कृष्ट कृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभाग लीएं है। या प्रकार जैसैं सर्प इधरतैं उधर उधरतैं इधर गमन करै है तैसैं विवक्षित समयविषैं उदयकीतैं बंधकी अर पूर्व समय संबंधी बंधकीतैं उत्तर समय संबंधी उदयकी उत्कृष्ट कृष्टिविषैं अनंतगुणा घटता अनुभाग क्रमतैं जानना। बहुरि कृष्टि वेदकका प्रथम समयविषैं बंधकी जघन्य कृष्टि बहुत अनुभाग युक्त है। तातैं तिस समयविषैं उदयकी जघन्य कृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभाग युक्त है। तातैं दूसरा समय विषैं बंधकी जघन्यकृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभाग युक्त है तातैं तिस समयविषैं उदयकी जघन्य कृष्टि अनंतगुणा घटता अनुभाग युक्त है। ऐसैं सर्पकी चालवत् एक समयविषैं बंधकीतैं उदयकी अर पूर्व समय संबंधी उदयकीतैं उत्तर समय संबंधी बंधकी जघन्य कृष्टि विषैं अनंतगुणा अनंतगुणा घटता अनुभाग जानना। ऐसी प्ररूपणा क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक कालका अंतसमय पर्यंत है। बहुरि ताकी द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टि वेदककैं भी ऐसैं ही क्रम जानना॥ ५२१॥ अब संक्रमण द्रव्यका विधान कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संकमदि संगहाणं दव्वं सगहेट्ठिमस्स पढमोत्ति ।
तदणुदये संखगुणं इदरेसु हवे जहाजोग्गं ॥५२२॥

संक्रामति संग्रहाणां द्रव्यं स्वकाधस्तनस्य प्रथम इति ।
तदनुदये संख्यगुणमितरेषु भवेत् यथायोग्यम् ॥ ५२२ ॥

स० चं०—संग्रह कृष्टिनिका द्रव्य है सो विवक्षित स्वकीयकषायके नीचैं जो कषाय ताकी प्रथम संग्रह कृष्टिपर्यंत संक्रमण करै है। भवार्थ यहु—जो स्वस्थानविषैं विवक्षित कषायकी संग्रह कृष्टि का द्रव्य तिसही कषायकी अन्य संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण करै तौ तीसरी संग्रह कृष्टिपर्यंत करै। अर परस्थानविषैं जो अन्य कषाय विषैं संक्रमण करै तौ तिस विवक्षित कषायतैं लगती जो कषाय ताकी प्रथम संगूह्र कृष्टिविषैं संक्रमण करै जो द्रव्य जिसविषैं संक्रण करै सो द्रव्य तिसही रूप परिणमै है। तहां जिस संग्रह कृष्टिकौं भोगवै है ताका अपकर्षण कीया हूवा द्रव्यतैं ताके अनंतरि भोगने योग्य जो संग्रह कृष्टि तिसविषैं संख्यात गुणा द्रव्य संक्रमण हो है। औरानिविषै यथायोग्य संक्रमण हो है। सोई कहिए है—

जैसैं प्रवृत्तिविषै जमाखरच कहिए तैसैं इहां आय द्रव्य व्यय द्रव्य काहिए है। जो अन्य संग्रह कृष्टिनिका द्रव्य संक्रमण करि विवक्षित संग्रह कृष्टि विषैं आया-प्राप्त भया ताका नाम आय द्रव्य है। बहुरि विवक्षित संग्रह कृष्टिका द्रव्य संक्रमण करि अन्य संग्रह कृष्टिनिविषैं गया ताका नाम व्यय द्रव्य है। बहुरि इहां क्रोधका प्रथम संग्रह कृष्टि बिना अन्य ग्यारह संग्रह कृष्टिनिका अपना अपना जो द्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं जो एक भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मात्र द्रव्य संक्रमण करै है सो एक द्रव्य कहिए है। बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं जो एक भागमात्र द्रव्य संक्रमण करै सो तेरह द्रव्य कहिए है जातैं अन्य संग्रह कृष्टिका द्रव्यतैं क्रोधकी प्रथमसंग्रह कृष्टिका द्रव्य नोकषायके द्रव्य मिलनेतैं तेरह गुणा है। तहां लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं लोभकी प्रथमसंग्रह कृष्टि अर द्वितीय संग्रह कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है तातैं ताकैं आय द्रव्य दो है। बहुरि लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टिविषैं लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिका ही अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है तातैं ताके आय द्रव्य एक है, बहुरि लोभकी प्रथमसंग्रहकृष्टिविषै मायाकी प्रथम द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है तातैं ताकैं आय द्रव्य तीन हैं। बहुरि मायाकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं मायाकी द्वितीय प्रथम संग्रह कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है तातैं ताकैं आय द्रव्य दोय हैं। बहुरि मायाकी द्वितीय संग्रह कृष्टिविषैं मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है तातैं ताकैं आय द्रव्य एक है। बहुरि मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं मानकी प्रथम द्वितीय तृतीयसंग्रह कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण हो है तातैं ताकैं आय द्रव्य तीन हैं। बहुरि मानकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं मानकी द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण हो है। तातैं ताकैं आय द्रव्य दोय हैं। बहुरि मानकी द्वितीय संग्रहकृष्टिविषै मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिका ही अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण हो है तातैं ताकैं आय द्रव्य एक है। बहुरि मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं क्रोधकी प्रथम द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण हो है तातैं ताकैं आय द्रव्य पंद्रह हैं। बहुरि क्रोधकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं क्रोधकी प्रथम द्वितीय कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण हो है तातैं ताकैं आय द्रव्य चोदह हैं। बहुरि क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिविषैं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्य तेरह तातैं चौदह गुणा संक्रमण हो है। तातैं ताकैं आय द्रव्य एकसौ वियासी है। इहां चौदहगुणा करनेका प्रयोजन कहिए है—

अनंतरि भोगने योग्य संग्रह कृष्टिविषै संख्यात गुणा द्रव्यका संक्रमण होना कह्या है सो इहां संख्यातका प्रमाण अपने गुणकारतैं एक अधिक जानना। सो यहु क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिकौं भोगवै है। अर ताके अनंतरि क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिकौं भोगवै है। तातैं क्रोधकी प्रथम कृष्टिका अपकर्षण कीया द्रव्यतैं संख्यात गुणा द्रव्यका द्वितीय संग्रह कृष्टिविषै संक्रमण हो है। बहुरि इहां प्रथम कृष्टिका द्रव्यविषै तेरहका गुणकार है तातैं एक अधिक कीएं संख्यातका प्रमाण चौदह इहां जानना। अन्य संग्रह कृष्टि वेदकविषै संख्यातका प्रमाण अन्य होगा सो आगैं कहैंगे। बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषै आय द्रव्य है नाहीं जातैं आनुपूर्वी संक्रमण पाइए है। इहां संक्रमण द्रव्यकौं अपकर्षण द्रव्यका अनुभाग घटनेकी अपेक्षा हानि होनेतैं कह्या है। ऐसैं आय द्रव्यका विभाग कह्या। अब व्यय द्रव्यका विभाग कहिए है—

क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका द्रव्य क्रोधकी द्वितीय तृतीय मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिविषै गया तातैं एकसौ वियासी तेरह तेरह द्रव्य मिलि ताकैं व्यय द्रव्य दोयसै आठ हो हैं। बहुरि क्रोधकी द्वितीय कृष्टिका द्रव्य क्रोधकी तृतीय मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषै गया तातैं ताकैं व्यय द्रव्य दोय हो हैं। बहुरि क्रोधकी तृतीय कृष्टिका द्रव्य मानकी प्रथम संग्रह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिहीविषै गया तातैं ताके व्यय द्रव्य एक है । बहुरि मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिका द्रव्य मानकी द्वितीय तृतीय मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषै गया तातैं ताकैं व्यय द्रव्य तीन हैं। बहुरि मानकी द्वितीय संग्रह कृष्टिका द्रव्य मानकी तृतीय मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषै गया तातैं ताकैं व्यय द्रव्य दोय हैं। बहुरि मानकी तृतीय संग्रह कृष्टिका द्रव्य मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टि ही विषै गया तातैं ताके व्यय द्रव्य एक है। बहुरि मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिका द्रव्य मायाकी द्वितीय तृतीय लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषै गया तातैं ताकैं व्यय द्रव्य तीन हैं। बहुरि मायाकी द्वितीय कृष्टिका द्रव्य मायाकी तृतीय लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषै गया तातैं ताकैं व्यय द्रव्य दोय हैं। बहुरि मायाकी तृतीय संग्रह कृष्टिका द्रव्य लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषै ही गया तातैं ताकैं व्यय द्रव्य एक है। बहुरि लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिका द्रव्य लोभकी द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टिविषै गया तातैं ताकैं व्यय द्रव्य दोय हैं। बहुरि लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिका द्रव्य लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषै गया तातैं ताकैं व्यय द्रव्य एक है। बहुरि लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिका द्रव्य अन्यत्र न जाय है जातैं विपरीत संक्रमणका अभाव है तातैं ताकैं व्यय द्रव्य नाहीं है। ऐसैं व्यय द्रव्यका विभाग कह्या ॥ ५२२ ॥ आगैं अनुसमय अपवर्तनकी प्रवृत्तिका क्रम कहिए है—

पडिसमयं संखेज्जदिभागं णासेदि कंडयेण विणा।
बारससंगहकिट्टीणग्गादो किट्टिवेदगो णियमा ॥५२३॥ ६२३

प्रतिसमयं संख्येयभागं नाशयति कांडकेन विना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वादशसंग्रहकृष्टीनामग्रतः कृष्टिवेदको नियमात् ॥ ५२३ ॥

स० चं–कृष्टि वेदक जीव है सो कांडक बिना बारह संग्रह कृष्टिनिका अग्रभागतैं सर्व कृष्टिनिके असंख्यातवे भागमात्र कृष्टिनिकौं नष्ट करै है नियमतैं। भावार्थ–कृष्टिकरण कालका अंत समय पर्यंत तौ अंतर्मुहूर्त कालकरि निष्पन्न जो कांडक विधान ताकरि अनुभागका नाश होता था अब कृष्टि भोगनेका प्रथम समयतैं लगाय समय समय प्रति अग्रघात होने लगा। तहां बारह संग्रह कृष्टिनिका जे अंतर कृष्टि तिनविषै अंत कृष्टितैं लगतीं जे बहुत अनुभाग युक्त ऊपरिकी केते इक कृष्टि तिनका नाशकरि तिनि कृष्टिनिके द्रव्यकौं स्तोक अनुभाग युक्त नीचली कृष्टिनिविषै निक्षेपण करिए है। तहां जिनि कृष्टिनिका नाश कीया तिनिका नाम घात कृष्टि है सो अपनी अपनी संग्रह कृष्टिविषै अंतर कृष्टिनिका प्रमाण स्थापि ताकौं अपकर्षण भागहारके असंख्यातवे भागमात्र जो असंख्यात ताका भाग दीएं अपनी अपनी घात कृष्टिनिका प्रमाण आवै है। बहुरि इन घात कृष्टिनिके जे परमाणू ताका नाम घात द्रव्य है सो अपनी अपनी अंत कृष्टिका द्रव्यकौं घात कृष्टिनिका प्रमाण करि गुणैं अंत कृष्टिके नीचैं एक एक विशेष बंधता है। तातैं विशेष अधिक कीएं घात द्रव्य का प्रमाण आवै है ॥ ५२३ ॥

णासेदि परट्ठाणिय गोउच्छं अग्गकिट्टिघादादो।

सट्ठाणियगोउच्छं संकमदव्वादु घादेदि ॥ ५२४ ॥ ५२४

नाशयति परस्थानकं गोपुच्छमग्रकृष्टिघातात्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थानिकगोपुच्छं संक्रमद्रव्यात् घातयाति ॥ ५२४ ॥

स० चं– अग्रकृष्टि घाततैं तौ परस्थान गोपुच्छकौं नष्ट करै है अर संक्रम द्रव्य जो अन्य संग्रहरूप भया ऐसा पूर्वोक्त व्यय द्रव्य तातैं स्वस्थान गोपुच्छकौं नष्ट करै है। कैसें? सो कहिए है—

विवक्षित एक संग्रहकृष्टिविषैं जो अंतरकृष्टीनिकैं विशेष घटता क्रम पाइए है सो इहां स्वस्थान गोपुच्छ कहिए है। बहुरि नीचली विवक्षित संग्रहकृष्टिकी अंतकृष्टितैं ऊपरिकी अन्य संग्रहकृष्टिकी आदि कृष्टिकैं विशेष घटता क्रम पाइए है सो इहां परस्थान गोपुच्छ कहिए। तहां कृष्टिनिकैं हीन अधिक द्रव्यका संक्रमण होनेतैं चय घटता क्रम नष्ट भया तातैं पूर्वैं स्वस्थान गोपुच्छ था ताका संक्रमण द्रव्यकरि नाश भया। बहुरि नीचली संग्रहकृष्टिकी अंतकृष्टि अर ऊपरली संग्रहकृष्टिकी आदि कृष्टि तिनिके वीचि कृष्टिनिका घात होनेतैं एक विशेष घटता क्रम न रह्या तातैं पूर्वैं परस्थान गोपुच्छ था ताका घातद्रव्यकरि नाश भया ॥ ५२४ ॥

आयादो वयमहियं हीणं सरिसं कहिंपि अण्णं च।
तम्हा आयद्दव्वा ण होदि सट्ठाणगोउच्छं ॥५२५॥

आयतो व्ययमधिकं हीनं सदृशं कुत्रापि अन्यच।
तस्मादायद्रव्यान्न भवति स्वस्थानगोपुच्छम् ॥ ५२५ ॥

स० चं०— इहां कोऊ कहै व्यय द्रव्य गया अर आया द्रव्य आया तातैं व्यय द्रव्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि स्वस्थान गोपुच्छका नाश कह्या, आय द्रव्यकरि स्वस्थान गोपुच्छका होना कह्या, तहां कहिए है—

कहीं संग्रहकृष्टिविषैं आय द्रव्यतैं व्यय द्रव्य अधिक है, कहीं हीन है, कहीं समान है, कहीं आय द्रव्य है, व्यय नाहीं, कहीं व्यय द्रव्य है आय द्रव्य नाहीं। तातैं आय द्रव्यतैं स्वस्थान गोपुच्छ न हो है ॥ ५२४ ॥ अब जैसैं स्वस्थान परस्थान गोपुच्छका सद्भाव हो है तैसैं कहिए है—

घादयदव्वादो पुण वय आयदखेत्तदव्वगं देदि।
सेसासंखाभागे अणंतभागूणयं देदि ॥ ५२६ ॥

घातकद्रव्यात् पुनर्व्ययमायतक्षेत्रद्रव्यकं ददाति।
शेषासंख्यभागं अनंतभागोनकं ददाति ॥ ५२६ ॥

स० चं– घात द्रव्यतैं व्यय द्रव्य अर आयतक्षेत्र द्रव्यकौं दीएं एक गोपुच्छ हो है। कैसैं ? सो कहिए है—

पूर्वैं जो व्यय द्रव्य कह्या तामैं जिनि कृष्टिनिका घात कीया तिनि कृष्टिनिका व्यय द्रव्य घटाएं अवशेष रहैं तितना द्रव्य घातद्रव्यतैं ग्रहणकरि जिन कृष्टिनिका जितना जितना व्यय द्रव्य भया था तिन कृष्टिनिका तितना तितना देइ पूरण कीएं स्वस्थान गोपुच्छका सद्भाव हो है। घात कृष्टि सम्बन्धी व्यय द्रव्य कितना ? सो कहिए है—

अपनी अपनी संग्रहकृष्टिकी अंतकृष्टिका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीएं तिस अंतकृष्टिका व्यय द्रव्यका प्रमाण आवे हैं। ताकौं अपनी अपनी घात कृष्टि निका प्रमाणकरि गुणें अर तहां विशेष अधिक कीएं सर्वघात कृष्टि सम्बन्धी व्यय द्रव्य-का प्रमाण हो है सो घात कृष्टिनिका तो नाश ही भया सो तहां द्रव्य देना ही नाही। तातैं याकौं व्यय द्रव्यविषैं घटाइ अवशेष व्यय द्रव्यमात्र द्रव्य देनेकरि स्वस्थान गोपुच्छ-की सिद्धि हो है। बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकृष्टिका घात कीएं पीछैं अवशेष रहीं जे कृष्टि तिनविषैं जो अंतकृष्टि तिसतैं लोभकी द्वितीय संग्रहकी प्रथम संग्रहकृष्टि है सो वीचि ही कृष्टिका घात होनेतैं एक अधिक लोभकी तृतीय संग्रहकी घात कृष्टिनिका प्रमाण-मात्र जे विशेष कहिए चय तिनकरि हीन भई सो अपने नीचैं लोभकी तृतीय संग्रहकृष्टि-की घात कृष्टिनिका जो प्रमाण तितने विशेषनिका जेता द्रव्य होइ तितना द्रव्यकौं अपने घात द्रव्यतैं ग्रहणकरि तहां लोभकी द्वितीय संग्रहकी प्रथम कृष्टिविषैं दीएं यहु प्रथम कृष्टि तिस तृतीय संग्रहकी अंतकृष्टितैं एक विशेषमात्र घटती हो है। ऐसैं ही याकी द्वितीयादि घात कीएं पीछैं अवशेष रहीं कृष्टिनिकी अंतकृष्टि पर्यंत कृष्टिनिविषैं तितना तितना द्रव्य घात द्रव्यतैं ग्रहणकरि दीएं लोभकी तृतीय द्वितीय संग्रहविषैं एक गोपुच्छ भया सो इहां आयतैं नीचैं तृतीय संग्रह ताकी घात कृष्टिनिका प्रमाणमात्र जे विशेष तिनका द्रव्य प्रमाण तौ चौडा अर अपनी घात कीएं पीछैं अवशेष रहीं कृष्टिनिका प्रमा-णमात्र लंबा क्षेत्र कल्पना कीएं एक आयत चतुरस्र क्षेत्र भया। बहुरि ऐसैं ही आयतैं नीचैं द्वितीय तृतीय संग्रहकृष्टि तिन दोऊनिकी घात कृष्टिनिका जेता प्रमाण तितना विशेष प्रमाण तौ जुदा २ चौडा अर अपनी घात कीएं पीछैं अवशेष रहीं कृष्टिनिका प्रमाणमात्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लम्बा ऐसा दोय आयत चतुरस्र क्षेत्र प्रमाण द्रव्यकौं अपनी घात द्रव्यतैं ग्रहणकरि लोभकी प्रथम संग्रहकी प्रथमादि कृष्टिनिविषैं दीएं लोभकी तीनों संग्रहकृष्टिनिका एक गोपुच्छ भया। ऐसैं ही क्रमकरि अपने नीचली संग्रहकृष्टिनिकी घात कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेषनिकरि तौ जुदा जुदा चौडा अर अपनी घात कीएं पीछैं अवशेष रहीं कृष्टिनिका प्रमाणमात्र लम्बा ऐसैं क्रमतैं तीन च्यारि पांच छह सात आठ नव दश ग्यारह आयत चतुरस्र क्षेत्ररूप द्रव्य ताकौं अपने अपने घात द्रव्यतैं ग्रहणकरि क्रमतैं मायाकी तृतीय संग्रहादि क्रोधकी प्रथम संग्रह पर्यंत संग्रहकृष्टिनिविषैं दीएं बारह संगृहकृष्टिनिका एक गोपुच्छ हो है। ऐसैं आयत चतुरस्र क्षेत्ररूप द्रव्य देनेकरि परस्थान गोपुच्छकी सिद्धि भई। या प्रकार स्वस्थान परस्थान गोपुच्छ सम्पूर्ण हो है। बहुरि इहां सर्व मोहनीयका द्रव्य साधिक द्व्यर्ध गुणहानि गुणित आदि वर्गणामात्र है ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अर साधिक नव गुणा कीएं समस्त व्यय द्रव्यका प्रमाण आवै है। जातैं सर्व मोहके द्रव्यकौं चौईसका अर अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक व्यय द्रव्यका प्रमाण होइ अर पूर्वोक्त समस्त व्यय द्रव्यनिकौं जोडैं दोयसै छब्बीस होंइ। तहां दोयसै छब्बीस गुणकारका चौईसकरि अपवर्तन कीएं साधिक नवका गुणकार हो है। बहुरि सर्व मोहनीयके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारके असंख्यातवां भागका भाग दीएं सर्व घात द्रव्यका प्रमाण हो है। सो इस घात द्रव्यतैं पूर्वोक्त व्यय द्रव्य अर आयत चतुरस्र क्षेत्ररूप जो द्रव्य गृहण कीया सो याके असंख्यातवे भागमात्र है, सो घटाएं अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य रह्या ताकौं अनंतवां भागमात्र जो एक विशेष ताकरि घटता क्रम लीएं दीजिए है। कैसें? सो क-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिए है–सर्व अवशेष घात द्रव्यका घात कीएं पीछैं अवशेष रही कृष्टिका प्रमाणमात्र जो गच्छ ताका भाग दीएं मध्यधन हो है। बहुरि ताकौं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि हीन जो दोगुणहानि ताका भाग दीएं विशेषका प्रमाण हो है। बहुरि गच्छका एकवार संकलन धनकरि तिस चयकौं गुणैं उत्तरधन हो है। बहुरि याकौं तिस द्रव्यमैं घटाएं अवशेष आदि धन हो है। ताकौं गच्छका भाग दीएं एक खण्डका प्रमाण हो है। तहां एक खंडकौं अर उत्तरधनतैं गच्छ प्रमाण अवशेषनिकौं ग्रहि लोभकी जघन्य कृष्टिविषैं दीजिए है। बहुरि ताकी द्वितीय कृष्टितैं लगाय क्रोधकी उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत एक एक खंड समानरूप अर उत्तर धनविषैं एक एक विशेष घटता दीजिए है। अर ऐसैं अवशेष घात द्रव्य सर्व समाप्त हो है। ऐसैं होतैं सर्वत्र एक गोपुच्छ हो है॥ ५२६॥

उदयगदसंगहस्स य मज्झिमखंडादिकरणमेदेण।
दव्वेण होदि णियमा एवं सव्वेसु समयेसु॥५२७॥

उदयगतसंग्रहस्य च मध्यमखंडादिकरणमेतेन।
द्रव्येण भवति नियमादेवं सर्वेषु समयेषु॥ ५२७॥

स० चं०– उदयकौं प्राप्त जो संगृह कृष्टि ताका इस घात द्रव्य ही करि मध्यम खंडादिक करना हो है। भावार्थ–जिस संगृह कृष्टिकौं वेदै है ताविषै आयु द्रव्यका अभाव है। तातैं संक्रमण द्रव्यकरि कीएं तौ मध्यम खंडादिक होइ नाहीं। तातैं मध्यम खंड उभय द्रव्य विशेष इत्यादि वक्ष्यमाण विधान करनेके अर्थि तिस भोगवनेरूप संग्रह कृष्टिनिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घात द्रव्यतैं ताका असंख्यातवां भागमात्र द्रव्यकौं जुदा स्थापि अवशेष घात द्रव्य हीकौं पूर्वोक्त प्रकार विशेष घटता क्रम लीएं एक गोपुच्छाकारकरि दीजिए है। एक भागका आगैं मध्यम खंडादि विधानतैं द्रव्य देना कहैंगे सो जानना। ऐसैं समय २ प्रति सर्वसमयनिविषैं विधान हो है।

याप्रकार घात द्रव्यकरि एक गोपुच्छ भया। अब जो अन्य संग्रहका विवक्षित संग्रहविषैं द्रव्य आया ताकौं पूर्वैं आय द्रव्य कह्या था ताका नाम इहां संक्रमण द्रव्य कहिए। बहुरि जो नवीन समयप्रबद्धविषैं द्रव्य बंधिकरि कृष्टि रूप हो है सो बंध द्रव्य कहिए। ताका विधान कैसैं है? सो कहिए है—

केता इक संक्रमण द्रव्य अर बंधद्रव्यकरि केती इक नवीन अपूर्वकृष्टि करिए है। तहां संक्रमण द्रव्यकरि तौ तिनि संग्रह कृष्टिनिकी जो जघन्य कृष्टि ताके नीचैं केती इक नवीन अपूर्वकृष्टि करिए है। सो इनका नाम अधस्तन कृष्टि है। बहुरि केती कइ तिनि संग्रह कृष्टिनिकी पूर्व अवयव कृष्टिनिके वीचि वीचि नवीन अपूर्व कृष्टि करिए है। इनका नाम अंतर कृष्टि है। बहुरि बंध द्रव्यकरि अवयव कृष्टिनिके वीचि वीचि ही नवीन अपूर्वकृष्टि करिए है सो इनका भी नाम अंतरकृष्टि है। बहुरि केताइक संक्रमण द्रव्य वा बंध द्रव्यकौं पूर्व कृष्टिनिहीविषै निक्षेपण करै है सो यहु विधान कहिए है ॥४२७॥

हेट्ठाकिट्टिप्पहुदिसु संकामिदासंखभागमेत्तं तु।
सेसा संखाभागा अंतरकिट्टिस्स दव्वं तु ॥५२८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधस्तनकृष्टिप्रभृतिषु संक्रामितासंख्यभागमात्रं तु ।
शेषा असंख्यभागा अंतरकृष्टेर्द्रव्यं तु ॥ ५२८ ॥

स० चं०— संक्रमण द्रव्यकौं असंख्यातका भाग दीएं तहां एक भागमात्र द्रव्य तौ नीचली कृष्टि आदिविषैं दीजिए है। भावार्थ यहु— या द्रव्यकरि अधस्तन अपूर्व कृष्टि करिए है। बहुरि अवशेष असंख्यात बहुभाग हैं ते अंतरकृष्टिनिका द्रव्य हैं। याकरि अंतर कृष्टि करिए है ॥ ५२८ ॥

बंधदव्वाणंतिमभागं पुण पुव्वकिट्टिपाडिबद्धं ।
सेसाणंता भागा अंतरकिट्टिस्स दव्वं तु ॥५२९॥

बंधद्रव्यानंतिमभागं पुनः पूर्वकृष्टिप्रतिबद्धं ।
शेषानंता भागा अंतरकृष्टेर्द्रव्यं तु ॥ ५२९ ॥

स० चं— बंध द्रव्यकौं अनंतका भाग दीएं तहां एकभागमात्र तौ पूर्व कृष्टि संबंधी है। या द्रव्यकौं पूर्वै कृष्टि कहीं थीं तिनहीविषैं निक्षेपण करिए है। बहुरि अवशेष अनंत बहुभाग हैं ते अंतर कृष्टिनिका द्रव्य है। या द्रव्यकरि नवीन अंतर कृष्टि करिए है ॥ ५२९ ॥

कोहस्स पढमकिट्टी मोत्तूणेकारसंगहाणं तु ।
बंधणसंकमदव्वादपुव्वकिट्टिं करेदी हु ॥ ५३० ॥ ६३१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोधस्य प्रथमकृष्टिं मुक्त्वा एकादशसंग्रहाणां तु।
बंधनसंक्रमद्रव्यादपूर्वकृष्टिं करोति हि ॥ ५३० ॥

स० चं०– क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि विना अवशेष ग्यारह संग्रह कृष्टिनिकैं यथा संभव बंध द्रव्य अथवा संक्रमण द्रव्यतैं अपूर्व कृष्टि करै है। क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि-विषैं संक्रमण द्रव्यके अभावतैं बंध द्रव्यकरि ही अपूर्व करण कृष्टि करिए है॥ ५३० ॥

बंधणदव्वादो पुण चदुसट्ठाणेसु पढमकिट्टीसु।
बंधुप्पवाकिट्टीदो संकमकिट्टी असंखगुणा ॥५३१॥

बंधनद्रव्यात्पुनः चतुर्षु स्थानेषु प्रथमकृष्टिषु।
बंधापूर्वकृष्टितः संक्रमकृष्टिः असंख्यगुणा ॥ ५३१ ॥

स० चं०–बहुरि बंध द्रव्यतैं क्रोधादि च्यारि कषायनिकी प्रथम संग्रह कृष्टिरूप जे च्यारि स्थान तिनहीविषै अपूर्व कृष्टि करिए है। संक्रमण द्रव्यकरि पूर्वैं ग्यारह स्थाननिविषैं कृष्टि करनी कही हैं। बहुरि बंध द्रव्यकरि निपजी अपूर्व कृष्टिनितैं संक्रमण द्रव्यकरि निपजी कृष्टि पल्यका असंख्यातवां भाग गुणी हैं जातैं बंध द्रव्य समय प्रबद्धमात्र है, तातैं संक्रमण द्रव्य असंख्यात गुणा है। अर कृष्टि हैं ते द्रव्य कृष्टिके अनुसारि निपजै हैं ॥ ५३१ ॥

संखातीदगुणाणि य पल्लस्सादिमपदाणि गंतूण।
एक्केक्कबंधाकिट्टी किट्टीणं अंतरे होदि ॥ ५३२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्यातीतगुणानि च पल्यस्यादिमपदानि गत्वा।
एकैकबंधकृष्टिः कृष्टीनामंतरं भवति ॥ ५३२ ॥

स० चं०– जिनि संग्रह कृष्टिनिका बंध संभवै तिनकी जे अवयव कृष्टि हैं तिनिविषैं तिनका असंख्यातवां भागमात्र नीचैकी वा उपरिकी कृष्टि तौ बंध योग्य ही नाहीं अर वीचिमैं जे बहुभागमात्र वध्यमान कृष्टि हैं तिनिकी दोय कृष्टिनिके वीचि एक अंतराल बहुरि एक कृष्टि यहु अर एक कृष्टि ऊपरिकी तिनिके वीचि एक अंतराल ऐसैं जे अंतराल हैं तिनि विषैं पहला दूसरा आदि असंख्यात पल्यका प्रथम वर्गमूलमात्र अंतराल उलंघि जो अंतराल है तिसविषैं नवीन एक अपूर्व कृष्टि करिए है। बहुरि ताके ऊपरि तितने ही अंतराल उलंघि जो अंतराल आवै तहां दूसरी अपूर्व कृष्टि करिए है। ऐसैं ही बंधकी उत्कृष्ट कृष्टिके नीचैं पल्यका असंख्यातका वर्गमूलमात्र कृष्टि उतरैं तहां अंतरालविषैं जो उत्कृष्ट अपूर्व कृष्टि करिए है तहां पर्यंत ऐसैं ही क्रम लीएं कृष्टिनिके वीचि अपूर्व कृष्टीनिका होना जानना ॥ ५३२ ॥

दिज्जादि अणंतभागेणूणकमं बंधगे य णंतगुणं।
तण्णंतरे णंतगुणूणं तत्तोणंतभागूणं ॥ ५३३ ॥

दीयते अनंतभागेनोनक्रमं बंधके चानंतगुणं।
तदनंतरेऽनंतगुणोनं ततोऽनंतभागोनं ॥ ५३३ ॥

स० चं०–बंध द्रव्य कृष्टिनिविषैं कैसैं दीजिए है सो कहिए है–पूर्वकृष्टिविषैं बहुत द्रव्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीजिए है। बहुरि दूसरी पूर्वकृष्टिविषैं ताके अनंतवे भागमात्र जो एक विशेष ताकरि घटता द्रव्य दीजिए है। ऐसैं यावत् अपूर्व कृष्टि न प्राप्त होइ तावत् अनंतभागरूप विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। बहुरि तहां अंतकृष्टिविषैं जो दीया द्रव्य तातैं अपूर्व कृष्टिविषै अनंतगुणा द्रव्य दीजिए है। जातैं यहु कृष्टि इसही द्रव्यकरि नवीन निपजै है। बहुरि यातैं याके अनंतरवर्ती जो पूर्वकृष्टि तिसविषैं अनंतगुणा घटता द्रव्य दीजिए है। तातैं उपरि अनंतवां भागरूप विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य यावत् अपूर्वकृष्टि प्राप्त न होइ तावत् दीजिए है। ऐसैं ही अनुक्रम लीए बंधकी उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत बंध द्रव्य देनेका विधान जानना। नवीन बंध द्रव्य करि करी अपूर्व कृष्टि भी अनंत हैं। ऐसैं बंध कृष्टिनिका स्वरूप कह्या है ॥ ५३३ ॥

संकमदो किट्टीणं संगहकिट्टीणमंतरं होदि ।
संगह अंतरजादो किट्टी अंतरभवा असंखगुणा ॥

संक्रमतः कृष्टीनां संग्रहकृष्टीनामंतरं भवति ।
संग्रहे अंतरजातः कृष्टिरंतर्भवा असंख्यगुणा ॥ ५३४ ॥

स० चं०– संक्रमण द्रव्यतैं निपजीं जे अपूर्व कृष्टि ते केती इक कृष्टि तौ संग्रह कृष्टिनिके नीचैं निपजै हैं। अर केती इक पूर्व अवयव कृष्टि थीं तिनिका अंतरालविषैं निपजैं हैं। तहां संग्रह कृष्टिनिका अंतरालविषैं नीचैं निपजी कृष्टिनितैं अवयव कृष्टिनिका अंतराल विषैं निपजी कृष्टि असंख्यातगुणी हैं ॥ ५३४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संगहअंतरजाणं अपुव्वकिट्टिं व बंधकिट्टिं वा।
इदराणमंतरं पुण पल्लपदासंखभागं तु ॥ ५३४ ॥

संग्रहांतरजानामपूर्वकृष्टिमिव बंधकृष्टिमिव।
इतरेषामंतरं पुनः पल्यपदासंख्यभागस्तु ॥ ५३४ ॥

स० चं— संग्रह कृष्टिनिके नीचैं जे संग्रह कृष्टि कीनी तहां द्रव्य देनेका विधान तौ जैसैं कृष्टि कारकका द्वितीय समयविषैं अपूर्व कृष्टिनिका विधान कह्या था तैसैं जानना। विशेष इतना—

तहां अधस्तन अपूर्व कृष्टिकी अंतकृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं पूर्व कृष्टिका जघन्य कृष्टिविषैं दीया द्रव्य असंख्यातवे भाग घटता कह्या था इहां असंख्यातगुणा घटता जानना जातैं इहां अधस्तन कृष्टि द्रव्यतैं मध्यम खंड द्रव्य असंख्यातगुणा घटता है। बहुरि तहां पूर्व कृष्टिकी अंत कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं अपूर्व कृष्टिकी आदि कृष्टिविषैं दीया द्रव्य संख्यात भाग अधिक कह्या था। इहां असंख्यातगुणा बधता जानना जातैं इहां मध्यम खंडके द्रव्यतैं अधस्तन कृष्टिका द्रव्य असंख्यातगुणा है। बहुरि जे अवयव कृष्टिनिके वीचि नवीन कृष्टि कीनीं तहां द्रव्य देनेका विधान जैसैं बंध द्रव्यकरि निपजी अपूर्व कृष्टिनिविषैं विधान कह्या तैसैं जानना। विशेष इतना—

तहां असंख्यात पल्यका वर्गमूल प्रमाण अंतरालरूप स्थान जाइ जाइ बंध द्रव्यकरि निपजी एक एक अपूर्व कृष्टि कही थी इहां पल्यका प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मात्र जो उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार ताका जितना प्रमाण तितना अंतराल भएं संक्रमण द्रव्यकरि एक एक अपूर्व कृष्टि निपजाइए है। अब इहां प्रथम द्रव्य देनेका विशेष तात्पर्य निरूपण करिए है—

तहां प्रथम ही क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि बिना अन्य ग्यारह संग्रह कृष्टिनिविषैं जो आय द्रव्य ताहीका नाम संक्रमण द्रव्य है ताका अर क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं आय द्रव्यका तौ अभाव है तातैं पूर्वैं कह्या था जो वेद्यमान कृष्टिविषैं घात द्रव्यका असंख्यातवां भागमात्र द्रव्य ताकौं जुदा स्थापना तिस जुदा स्थाप्या घातद्रव्यकौं देनेका विधान कहिए है— पूर्वकृष्टिनिविषैं एक एक विशेष घटता क्रम है तिस विशेषका प्रमाण ल्याइए है—

इहां घात कीए पीछैं अवशेष सर्व कृष्टिका प्रमाणमात्र जे गच्छ तिस एक घाटि गच्छका आधा प्रमाण करि हीन जो दोगुणहानि ताकरि गुणित जो गच्छ ताका भाग सर्व द्रव्यकौं दीएं एक विशेष हो है। सो लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं एक विशेष आदि अर एकविशेष उत्तर अर एक घाटि अपनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि श्रेणी व्यवहार गणिततैं जो संकलन धन आवै तितना अधस्तन शीर्ष द्रव्य है। अर अन्य संग्रह कृष्टिनिविषैं जेती नीचली संग्रह संबंधी कृष्टिका प्रमाण तितने विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि जो संकलन धन आवै तितना तितना अधस्तन शीर्ष द्रव्य है। सो याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनिका आय द्रव्यतैं अर क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका घात द्रव्यतैं ग्रहि करि जुदा स्थापना। याकौं यथायोग्य कृष्टिनिविषैं दीएं सर्व पूर्व कृष्टि लोभकी तृतीय कृष्टिकी प्रथम कृष्टिके समान होइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टिकौं अपकर्षण भागहारतैं असंख्यातगुणा ऐसा जो पल्यका असंख्यातवां भाग ताका भाग दीएं एक खंडका प्रमाण आवै ताकौं अपनी अपनी कृष्टिनिका प्रमाण करि गुणैं अपना अपना मध्यम खंड द्रव्य हो है। सो याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनिका आय द्रव्यतैं अर क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका घात द्रव्यतैं ग्रहि जुदा स्थापना। याकौं एक एक खंडकरि कृष्टिनिविषैं दीएं सर्व कृष्टि समान ही रहैं हैं। बहुरि एक मध्यम खंडकरि अधिक जो लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टिका द्रव्य तीहिं प्रमाण एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य स्थापि ताकौं अपनी अपनी कृष्टिनिका प्रमाणकौं अपकर्षण भागहारतैं असंख्यातगुणा जो पल्यका असंख्यातवां भाग ताका भाग दीएं जो संग्रह कृष्टिनिके नीचैं करी अधस्तन कृष्टिनिका प्रमाण ताकरि गुणैं अधस्तन अपूर्व कृष्टि संबंधी द्रव्य हो है। सो याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनिका आय द्रव्यतैं ग्रहि जुदा स्थापना। याकरि संग्रह कृष्टिनिके नीचैं नवीन अपूर्व कृष्टि निपजै है। क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण द्रव्यके अभावतैं नीचैं अपूर्व कृष्टि न हो है। बहुरि पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ सो एक घाटि गच्छका आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि ताकरि गुणित गच्छका भाग इहां संभवता सर्व द्रव्यकौं दीएं उभय द्रव्यका एक विशेष होइ सो क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर अर अपनी भोगवने रूप क्रोधकी प्रथम संग्रहकी सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां जेता संकलन धन भया तितना उभय द्रव्य विशेष द्रव्य भया ताविषैं अपना एक विशेषका अनंतवां भागमात्र द्रव्य घटाएं जो द्रव्य भया ताकौं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका घात द्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्यतैं गृहिकरि जुदा स्थापना। इहां क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका घात द्रव्य जुदा स्थाप्या था सो पूर्ण भया। बहुरि जो पहलैं संग्रह कृष्टि भई तिनकी कृष्टिनिका प्रमाणतैं एक अधिक विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलन कीएं अपना अपना उभय विशेष द्रव्य हो है। याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनिका अपना अपना आय द्रव्यतैं गृहि जुदा स्थापना। विशेष इतना—

जो संग्रह कृष्टि बंधै है ताका उभय द्रव्य विशेषविषै एक विशेषका अनंतवां भागमात्र द्रव्य घटावना। यह घटाया द्रव्य है सो बंध द्रव्यतैं ग्रहकरि दीजिएगा। याकौं यथायोग्य कृष्टिनिविषैं दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिकैं विशेष घटता क्रमरूप गोपुच्छ हो है। बहुरि इन कहे च्यारि द्रव्यानिकौं घटाएं अवशेष जो अपना अपना आय द्रव्य रह्या ताकौं अपनी अपनी संक्रमण द्रव्यकरि करीं अपूर्व अंतर कृष्टिनिका प्रमाणका भाग दीएं एक अंतर कृष्टि संबंधी एक खंड होइ ताकौं अपनी अपनी संक्रमण द्रव्यकरि करी अंतर कृष्टिनिका प्रमाण करि गुणैं अपना अपना संक्रमण द्रव्यकरि निपजीं जे अंतर कृष्टि तिनिके समान द्रव्य हो है। ताकौं जुदा स्थापना। याकरि पूर्व कृष्टिनिके वीचि वीचि नवीन अपूर्व कृष्टि निपजाइए है। इहां संक्रमण द्रव्यकरि भई अंतर कृष्टिनिका प्रमाण ल्यावनेकौं उपाय कहिए है—

एक मध्यम खंडकरि अधिक लोभकी तृतीय कृष्टिकी प्रथम कृष्टिका द्रव्यमात्र द्रव्य करि एक कृष्टि होइ तौ पूर्वोक्त च्यारि प्रकार द्रव्यकरि हीन अपना अपना आय द्रव्यकरि केती कृष्टि होंइ? ऐसैं त्रैराशिक कीएं लब्धमात्र संक्रमण द्रव्यकरि करीं अंतर कृष्टिनिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमाण आवै है। बहुरि याका भाग, अपनी अपनी पूर्व कृष्टिनिका भाग दीएं अपनी अंतर कृष्टिके अंतरालका प्रमाण आवै है। दोय अपूर्व अंतर कृष्टिनिके वीचि इतनी पूर्व कृष्टि पाइए है। ऐसैं संक्रमण द्रव्यकरि निपजी कृष्टिनिका द्रव्य विभाग कह्या। अब बंध द्रव्य करि निपजी कृष्टिनिका द्रव्य विभाग कहिए है—

मोहनीयका एक समय प्रबद्ध ताकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां बहुभागके च्यारि समान पुंजकरि अवशेष एक भागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां बहुभाग प्रथम पुंजविषैं जोडें लोभका बंध द्रव्य हो है। अवशेष एक भागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभाग द्वितीय पुंजविषैं जोडैं मायाका बंध द्रव्य हो है। अवशेष एक भागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां बहुभाग तृतीय पुंजविषैं जोडें क्रोधका बंध द्रव्य हो है। अवशेष एक भाग चतुर्थ पुंजविषैं जोडैं मानका बंध द्रव्य हो है। अब बंध द्रव्यकरि अंतर कृष्टिनिका वा तहां अंतरालनिका प्रमाण ल्यावनेके अर्थि इन द्रव्यविषैं बंध द्रव्यकरि करीं अंतर कृष्टिनिका विशेष संकलन रूप द्रव्य अर पूर्व एक विशेषका अनंतवां भागमात्र द्रव्य आगैं कहिए है तिनकौं घटाएं अवशेष जेता जेता द्रव्य रह्या ताकौं इच्छाराशिकरि त्रैराशिक करिए है—

एक मध्यम खंडकरि अधिक लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिका द्रव्यमात्र द्रव्यकरि एक अंतर कृष्टि द्रव्य होइ तौ पूर्वोक्त द्रव्यकरि केती अंतर कृष्टि होंइ ? ऐसैं त्रैराशिक कीएं लब्धमात्र बंध द्रव्यकरि निपजीं अंतर कृष्टिनिका प्रमाण सर्व पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणकौं छह गुणहानिका भाग दीएं जितना प्रमाण होइ तितना हो है। ते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतर कृष्टि मानविषैं स्तोक तातैं क्रोधविषैं विशेष अधिक तातैं मायाविषै विशेष अधिक तातैं लोभविषैं विशेष अधिक जानना जातैं इनके द्रव्यविषैं भी ऐसा ही क्रम है। इहां एक एक कषायकी एक एक संग्रह कृष्टिहीका बंध है तातैं च्यारि ही संग्रह कृष्टिनिविषैं बंध कृष्टिकी रचना जाननी। इन बंध द्रव्यकरि करीं अंतर कृष्टिनिका प्रमाण है सो पूर्वोक्त संक्रमण द्रव्यकरि करी अंतर कृष्टिनिका प्रमाणतैं असंख्यात गुणा घटता है। जातैं संक्रमणकी अंतर कृष्टिनिका प्रमाण ल्यावनेकौं सर्वकृष्टिनिकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीया तातैं इहां बंधकी अंतर कृष्टिनिका प्रमाण ल्यावनेकौं सर्व कृष्टिनिकौं असंख्यात पल्यका प्रथम वर्गमूलका भाग दीया सो यहु भागहार तिस भागहारतैं असंख्यात गुणा है। बहुरि अपनी अपनी संग्रह कृष्टिकी उपरि नीचैं असंख्यातवां भागमात्र कृष्टि छोडि संक्रमणकी अंतर कृष्टि सहित जे वीचिकी असंख्यात बहुभागमात्र बंधरूप पूर्व कृष्टि तिनकौं बंध द्रव्यकरि करी अपनी अपनी अपूर्व अंतर कृष्टिनिके प्रमाणका भाग दीएं लोभ माया माननिविषैं गुणहानिका चौथा भागमात्र अर क्रोधविषैं यातैं तेरह गुणा अंतरालनिका प्रमाण हो है। बंध द्रव्यकरि करी ऐसी दोय अपूर्व अंतर कृष्टि तिनके वीचि जेती पूर्वकृष्टि पाइए तिनके प्रमाणका नाम इहां अंतराल जानना सो यहु संक्रमणकी अंतर कृष्टिनिका अंतरालतैं असंख्यातगुणा है। ऐसैं प्रमाण ल्याइ अब बंध द्रव्यका विभाग कहिए है—

अपना अपना पूर्वोक्त बंध द्रव्यकौं स्थापि ताकौं अनंतका भाग देइ तहां एक भाग जुदा राखि अवशेष बहुभाग रहे तिनतैं बंधांतर कृष्टि विशेषद्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना ताका प्रमाण कहिए है— बंध द्रव्यकरि करीं जे अपूर्व अंतर कृष्टि तिनिविषैं जो अंतकी कृष्टि ति- ६४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सविषैं पूर्व अंतकी कृष्टितैं जेती कृष्टि नीचे यहु पाइए है तितने विशेष यामैं चाहिये ताकौं तौ आदि स्थापिए। अर वीचिमैं जो अंतरालका प्रमाण तितने विशेष उत्तर स्थापिए अर अपनी अपनी बंध द्रव्यकरि करी अंतर कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापिए ऐसैं स्थापैं जो संकलन धन आवे तितना बंधांतर कृष्टिविशेष द्रव्य जानना। इस द्रव्यकरि बंध द्रव्यतैं जे नवीन अपूर्व कृष्टि करीं तिनविषैं जैसैं अन्य कृष्टिनिका अर इनका एक गोपुच्छ होइ तैसैं विशेषनिका सद्भाव हो है। सो एक विशेषका अनंतवां भागमात्र बंध द्रव्य करि घटते जे पूर्वैं उभय द्रव्य विशेष कहे थे तिनविषैं इनका अवस्थान जानना। भावार्थ यहु—

जो अन्य कृष्टिनिविषै तौ पूर्वोक्त संक्रमण द्रव्यका उभय द्रव्य विशेष द्रव्य देना। अर बंधकी अंतर कृष्टिनिविषै इहां कह्या बंधांतर विशेष द्रव्य सो देना। इहां भी एक विशेषका अनंतवां भागमात्र घटतापना जानना। जातैं इहां भी आगैं कहिए है जो एक विशेषका अनंतवां भागमात्र बंध द्रव्य ताका निक्षेपण हो है। ऐसैं दीएं अन्य कृष्टिनिकैं अर बंधकरि करीं नवीन कृष्टिनिकैं एक गोपुच्छ हो है। बहुरि तिन बहुभागनिविषै इतना द्रव्य घटाएं अवशेष जो द्रव्य रह्या ताकौं बंधकी नवीन अंतरकृष्टिनिके प्रमाणका भाग दीएं एक खंडमात्र एक कृष्टिका द्रव्य होइ। ताकौं बंधकी अंतरकृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणैं सर्वकृष्टि सम्बन्धी द्रव्य होइ सो याका नाम बंधांतरकृष्टि समान खंड द्रव्य है। इस द्रव्यकरि समान प्रमाण लीएं बंधकी नवीन अपूर्व अंतरकृष्टि निपजै है। बहुरि पूर्वैं जो बंध द्रव्यकौं अनंतका भाग देइ एक भाग जुदा राख्या था तिसतैं बंध विशेष द्रव्य गृहि जुदा स्थापना सो कितना है? सो कहिए है— ६४१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्व अपूर्व बंधकृष्टिनिका प्रमाणमात्र इहां गच्छ सो एक गच्छका आधा प्रमाणकरि हीन जो दोगुणहानि ताकरि गुणित गच्छका भाग तिस जुदा राख्या एक भागकौं दीएं एक विशेष होइ, ताकौं अपना सर्व बंध कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणैं बंधविशेष द्रव्य हो है। इस द्रव्यकौं जहां उभय द्रव्य विशेष द्रव्यविषैं अनंतवां भाग घटाया था तहां देना। बहुरि जुदा राख्या एक भागविषैं इतना द्रव्य घटाएं जो अवशेष रह्या ताकौं अपनी सर्वबंध कृष्टिकौं प्रमाणका भाग दीएं एक खंड होइ ताकौं अपनी बंध कृष्टिनिका प्रमाण ही करि गुणैं जो द्रव्य होइ सो बंधका मध्यम खंड द्रव्य जानना। यहु द्रव्य अवशेष रह्या ताकौं बंधकृष्टिनिविषैं समानरूप जहां उभय द्रव्यविशेष द्रव्य विषैं एक विशेषका अनंतवां भाग घटाया तहां ही दीजिए है। भावार्थ यहु—

बंधका विशेष अर मध्यम खंडका द्रव्य दीएं उभय द्रव्यका विशेषविषै घटाया था द्रव्य सो पूर्ण हो है। ऐसैं बंध द्रव्यका विशेष विभाग जानना। अब इन संक्रमण द्रव्यका वा बंध द्रव्य देनेका विधान कहिए है— तहां लोभकी तृतीय द्वितीय संग्रहकृष्टिविषैं तौ बंध द्रव्यका अभाव है तातैं तहां संक्रमण द्रव्यहीकौं देनेका विधान कहिए है—

लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं पंचप्रकार द्रव्य कह्या। तहां नीचैं जे अपूर्व कृष्टि करीं तिनकी जघन्य कृष्टिविषै अधस्तन खंडतैं एक खंड अर मध्यम खंडतैं एक खण्ड अर उभय द्रव्य विशेषतैं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिमात्र विशेष ग्रहि निक्षेपण करै है सो यहु आगैं कृष्टिनिविषै दीजिए है द्रव्य तातैं बहुत है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंतपर्यंत जे अधस्तन अपूर्व कृष्टि तिनविषै एक एक अधस्तन खंड अर एक एक मध्यम खंड तौ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समानरूप अर उभय द्रव्य विशेषविषै एक एक विशेष घटता ऐसैं द्रव्य दीजिए है । इहां अधस्तन खण्ड द्रव्य तो समाप्त भया । बहुरि ताके ऊपरि पूर्वकृष्टिकी प्रथम कृष्टि तिसविषैं मध्यम खंडतैं एक खंड उभय द्रव्य विशेषतैं जेती कृष्टि होइ आईं तितनीकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ग्रहि निक्षेपण करिए है । सो यहु अपूर्वकृष्टिकी अंतकृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घटता है जातैं मध्यम खंडतैं अधस्तन कृष्टि खंड असंख्यातगुणा है । अर एक उभय द्रव्य विशेष भी इहां घट्या है । बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि पूर्व कृष्टि तिनविषै एक दोय आदि एक एक बंधता अधस्तन शीर्षका विशेष अर एक एक मध्यम खण्ड अर होइ गईं कृष्टिनिकरि हीन सर्वकृष्टि प्रमाण उभय द्रव्यका विशेष क्रमतैं यावत् अपकर्षण भागहारका अर्ध प्रमाणमात्र पूर्व कृष्टि होइ तावत् निक्षेपण करिए है । इहां कृष्टिनिविषैं मध्य एक उभय द्रव्यका विशेषविषै एक अधस्तन शीर्ष विशेष घटाएं जो प्रमाण होइ तितना विशेषकरि घटता दीया द्रव्यका क्रम जानना । बहुरि तिनके ऊपरि संक्रमण द्रव्यकरि करीं अपूर्व अंतरकृष्टि हैं । तीहिंविषै अंतरकृष्टि सम्बन्धी समान खंड द्रव्यतैं एक खण्ड अर उभय द्रव्य विशेषतैं भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्वकृष्टि प्रमाणमात्र विशेषनिकौं ग्रहि निक्षेपण करै है । सो यहु नीचली पूर्वकृषटिविषै दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा है । जातैं एक घाटि भईं कृषटिनिका प्रमाणमात्र पूर्व विशेष अर एक मध्यम खण्ड इनकरि हीन जो यहु अंतरकृषटि सम्बन्धी एक खंड है सो पूर्व कृषटिके समान है सो तिस दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा है । तहां एक उभय द्रव्यका हीनपना जानना । बहुरि ताके ऊपरि जो पूर्वकृषटि तिसविषै भईं पूर्वकृषटिनिका प्रमाणमात्र अधस्तन शीर्षके विशेष अर एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्यम खंड अर भई पूर्व अपूर्वकृष्टिनिका प्रमाणकरि हीन सर्वकृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेष दीजिए है सो यहु संक्रमणकी अंतरकृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घटता है जातैं इहां मिलैं अधस्तन शीर्ष विशेष अर मध्यम खण्डका द्रव्य है सो इनकरि हीन अंतरकृष्टि संबंधी समान खंडका द्रव्य पूर्वकृष्टिके समान है तातैं असंख्यातगुणा घटता है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वकृष्टिनिविषैं एक एक अधस्तन शीर्ष बंधता अर एक एक मध्यम खंड समानरूप अर एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता ऐसैं क्रमतैं यावत् आधा अपकर्षण भागहारमात्र पूर्वकृष्टि होइ तावत् निक्षेपण करिए है। बहुरि तिनके ऊपरि संक्रमणकी अपूर्व अंतरकृष्टि है तिसविषैं संक्रमण अंतरकृष्टि सम्बन्धी समान खंड द्रव्यतैं एक खण्ड उभय द्रव्य विशेषतैं भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्वकृष्टि प्रमाणमात्र विशेषनिकौं ग्रहि निक्षेपण करै है। सो यहु यातैं नीचली पूर्वकृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं पूर्वोक्त प्रकार असंख्यात गुणा है। बहुरि याके ऊपरि पूर्व कृष्टि तिसविषैं भई अपूर्व कृष्टिनिका प्रमाण मात्र अधस्तन शीर्षके विशेष अर एक एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्वकृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेष दीजिए है। सो यहु तिनि अंतरकृष्टिनिविषैं दीया द्रव्यतैं पूर्वोक्त प्रकार असंख्यात गुणा घटता जानना। याही प्रकार अपूर्व कृष्टितैं पूर्व कृष्टिविषैं असंख्यात गुणा घटता अर पूर्व कृष्टितैं अपूर्व कृष्टिविषैं असंख्यात गुणा बधता क्रमकरि लोभकी तृतीय कृष्टिकी अंतकृष्टि पर्यंत द्रव्य देनेका विधान जानना। बहुरि ताके ऊपरि लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टि तिसके पंच प्रकार द्रव्य स्थापि तहां ताके नीचैं संक्रमण द्रव्य करि करीं जो अधस्तन अपूर्व कृष्टि तिनकी जघन्य कृष्टिविषैं अधस्तन खंडतैं एक खंड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्यम खंडतैं एक खंड उभय द्रव्य विशेषतैं भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाण मात्र विशेष गृहि निक्षेपण करै है। सो यहु लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यात गुणा है। कारण पूर्वोक्त प्रकार जानना। बहुरि यातैं ऊपरि एक एक अधस्तन खंड एक मध्यम खंड समान रूप एक एक उभय द्रव्यविशेष घटता क्रमलीएं अधस्तन अपूर्वकृष्टिकी चरम कृष्टि पर्यंत द्रव्य देना। इहां अधस्तन कृष्टि द्रव्य समाप्त भया।

बहुरि इनके ऊपरि पूर्वकृष्टिकी आदिकृष्टि तिस विषैं भईं पूर्व कृष्टिनिका प्रमाण मात्र अधस्तन शीर्षके विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाण मात्र उभय द्रव्यके विशेष दीजिए है सो यहु अपूर्व कृष्टिकी अंतकृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यात गुणा घटता है। कारण पूर्वोक्त प्रकार जानना। तातैं आगैं जैसैं लोभकी तृतीय संगृह कृष्टिविषैं विधान कह्या है तैसैंही सर्व जानना। विशेष इतना—

इहां अपकर्षण भागहारमात्र वीचिमैं पूर्व कृष्टि भएं अपूर्व कृष्टिकौं निपजावै है। बहुरि ताके ऊपरि लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टि है सो याका बंध भी है अर याकैं आय द्रव्य भी है। तातैं इहां पंच प्रकार संक्रमण द्रव्य अर च्यारि प्रकार बंध द्रव्य स्थापि देनेका विधान कहिए है। संक्रमण द्रव्यकरि करी नीचैं अधस्तन अपूर्व कृष्टि ताकी जघन्य कृष्टिविषैं एक एक अधस्तन खंड अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्वकृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेष निक्षेपण करिए है। सो यहु लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टि विषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यात गुणा है बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत अधस्तन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिनिविषैं एक एक अधस्तन खंड एक एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्व कृष्टिमात्र उभय द्रव्यकौं विशेषकरि क्रमतैं दीजिए है। बहुरि तिनके ऊपरि पूर्वकृष्टिनिकी प्रथम कृष्टिविषैं भईं पूर्व कृष्टिनिका प्रमाण मात्र अधस्तन शीर्षके विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेष दीजिए है। सो यहु अपूर्व अधस्तन कृष्टिकी अंत कृष्टिका दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घटता है सो इहां असंख्यातगुणाका वा असंख्यातगुणा घटताका कारण पूर्वोक्त ही जानना। बहुरि ताके ऊपरि संक्रमण अंतर कृष्टिका अंतरालतैं एक घाटि कृष्टि पर्यंत कृष्टिनिविषैं एक एक अधस्तन शीर्षका विशेष बंधता अर एक एक उभय द्रव्यका विशेष घटता ऐसैं क्रमकरि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि संक्रमण द्रव्य करि करी अपूर्व अंतर कृष्टि तीहिं विषैं संक्रमण अंतर संबंधी समान खंडतैं एक खंड अर उभय द्रव्य विशेषतैं भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि ऐसैं ही क्रमतैं अपकर्षण भागहारमात्र वीचिमैं पूर्व कृष्टि भएं एक संक्रमणकी अंतर कृष्टि निपजाइए है। तहां पूर्व कृष्टिविषैं तौ भईं पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र अधस्तन शीर्षके विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्वकृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय कृष्टिके द्रव्यके विशेष दीजिए है। अर संक्रमणकी अंतर कृष्टिनिविषैं संक्रमण अंतर कृष्टि संबंधी समान एक खंड अर भईं कृष्टिकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेष दीजिए है। तहां इतना विशेष जानना—

इनविषैं बंध होनेयोग्य कृष्टिकी जघन्य कृष्टितैं लगाय जे पूर्व कृष्टि अर संक्रमण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यकरि करीं अपूर्व कृष्टि हैं तिनविषैं पूर्वोक्त संक्रमण द्रव्य अपना एक निषेकका अनंत-वां भागमात्र घाटि दीजिए है। अर तहां ही बंध द्रव्यतैं पूर्व जघन्य बंधकृष्टिविषैं तौ बंध द्रव्य संबंधी मध्यम खंडतैं एक खंड अर बंध विशेष द्रव्यतैं सर्वबंध कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष द्रव्य दीजिए है। अर ताके ऊपरि कृष्टिनिविषैं यातैं एक एक बंधका विशेषमात्र घ-टता क्रम लीएं दीजिए है। ऐसैं द्रव्य कीएं जो संक्रमण द्रव्यविषैं एक विशेषका अनंतवां भागमात्र घटता द्रव्य दीया था सो पूर्ण हो है। बहुरि या प्रकार द्रव्य दीया तहां अपूर्वकृ-ष्टिविषैं दीया द्रव्य तौ आयतैं नीचली पूर्व कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यात गुणा बंधता अर पूर्व कृष्टिविषैं दीया द्रव्य आयतैं नीचली अपूर्व कृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घटता जानना। ऐसैं एक अधिक संक्रमण कृष्टिका अंतरालका भाग गुणहानिका चौथा भागमात्र तो बंध कृष्टिका अंतराल ताकौं दीएं जो प्रमाण आवै तितनी संक्रमणकी अपूर्व अंतर कृष्टि यावत् पूर्ण होंइ तावत् ऐसैं ही क्रम जानना। बहुरि इहां जो संक्रमणकी अंतर कृष्टि अंतविषैं भई ताके उपरि जो अंतरालविषैं बंध द्रव्यकरि अपूर्व अंतर कृष्टि निपजा-इए हैं तिस विषैं संक्रमण द्रव्य न दीजिए है—

बंध द्रव्यहीके बंधांतर कृष्टि समान खंड द्रव्यतैं एक खंड अर उभय द्रव्य विशेषकी जायगा जो अंतरकृष्टि संबंधी विशेष द्रव्य कह्या तिसतैं भई सर्वकृष्टिनिका प्रमाणकरि हीन सर्वकृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष अपना एक विशेषका अनतवां भागकरि हीन अर मध्यम खंडतैं एक खंड अर बंध विशेष द्रव्यतैं भई बंधकृष्टिनिका प्रमाणकरि हीन सर्व बंध कृष्टि-निका प्रमाणमात्र विशेष ग्रहि दीजिए है सो यहु याके नीचैं जो संक्रमण द्रव्यकी अंतरकृष्टि ६४७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिसविषैं दीया जो बंध द्रव्य तातैं अनंतगुणा जानना। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वकृष्टि तिस विषैं संक्रमण द्रव्यतैं भई कृष्टिनिका प्रमाणमात्र अधस्तनशीर्षके विशेष अर एक मध्यम खंड अर भई कृष्टिनिकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेष अपने एक विशेषका अनंतवां भागकरि दीजिए है तहां ही बंध द्रव्यतैं एक मध्यम खंड अर बंध विशेषतैं भई बंधकृष्टिनिकरि हीन सर्व बंधकृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ग्रहि दीजिए। सो याके नीचैं बधांतर कृष्टिनिविषैं दीया बंध द्रव्यतैं या विषैं दीया बंध द्रव्य अनंतगुणा घाटि है । इहां अनंतगुणा वा अनंतगुणा घाटि द्रव्य कह्या ताका कारण यहु ही जो इहां दीया बंध द्रव्यतैं बंधांतरका द्रव्य अनंतगुणा है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वोक्त प्रकार वीचि वीचि पूर्व कृष्टि होइ एक संक्रमणका अपूर्व कृष्टि होइ ऐसैं एक अधिक संक्रमणका अंतरालकरि बंधके अंतरालका भाग दीएं जो प्रमाण आवै तितनी संक्रमणकी अपूर्व अंतर कृष्टि होंइ तहां द्रव्य देनेका विधान पूर्वोक्त प्रकार जानना। याही प्रकार तावत् बंधांतर कृष्टिनिकी अंत कृष्टि होइ तावत् विधान जानना। इहां बंध द्रव्यके अंतरकृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य अर बंधांतर कृष्टिविशेष द्रव्य समाप्त भया। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वोक्त प्रकार संक्रमण द्रव्य दोय प्रकार बंध द्रव्यहीका यथा योग्य निक्षेपण हो है। सो बंधकी उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत जानना। इहां सर्व बंध द्रव्य समाप्त भया। बहुरि ताके ऊपरि च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्यहीका यथा योग्य निक्षेपण हो है सो अंत कृष्टि पर्यंत जानना। इहां सर्व संक्रमण द्रव्य भी समाप्त भया बहुरि जैसैं लोभकी तीन संग्रह कृष्टिनिविषैं द्रव्य देनेका विधान कह्या तैसैं ही मान माया विषैं भी कहना विशेष इतना ही—जो मानका प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण द्रव्यकरि नि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पजा अपूर्व कृष्टिनिके वीचि अंतराल अपकर्षण भागहारका पंद्रहवां भाग मात्र है। बहुरि क्रोधकी तृतीय द्वितीय संग्रह कृष्टिविषैं भी लोभवत् विधान जानना। विशेष इतनाही—संक्रमकी अंतर कृष्टिनिका अंतराल इहां तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं अपकर्षण भागहारका चौदहवां भागमात्र द्वितीय संग्रह कृष्टिविषैं अपकर्षण भागहारका एकसौ वियासीवां भाग मात्र जानना। बहुरि लोभ मान मायाकी बध्यमान संग्रहकृष्टिनिकैं बंध रहित जे नीचैं उपरि कृष्टि तिनके वीचि संक्रमण द्रव्यकरि अपूर्व अंतर कृष्टि करिए है ऐसा जानना। बहुरि ताके ऊपरि क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टि तिसविषैं संक्रमण द्रव्यका तौ अभाव है, तातैं घात द्रव्यका एक भाग जुदा स्थाप्या था ताका तीन प्रकार द्रव्य अर बंध द्रव्यका च्यारि प्रकार द्रव्य स्थापि तहां अधस्तन अपूर्व कृष्टि होनेका तौ अभाव है। क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिकी अंतकृष्टिके ऊपरि प्रथम संग्रह कृष्टिकी प्रथम पूर्व कृष्टि है तिसविषैं घात द्रव्यकी भईं पूर्व कृष्टिनिका प्रमाण मात्र अधस्तन शीर्षके विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाण मात्र उभय द्रव्यके विशेष निक्षेपण करिए है। सो यहु दीया द्रव्य क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिकी अंत कृष्टिविषैं दीया संक्रमण द्रव्यके अनंतवे भाग मात्र घटता है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक अधस्तन शीर्ष विशेष बंधता एक एक उभय द्रव्यका विशेष घटता ऐसैं क्रमतैं द्रव्य दीजिए है। इहां विशेष इतना—

बंध होने योग्य कृष्टिकी जघन्य कृष्टि समान पूर्व कृष्टितैं लगाय कृष्टिनिविषैं उभय द्रव्यका विशेष द्रव्य अपने विशेषका अनंतवां भागमात्र घटता दीजिए है। तहां जघन्य बंध कृष्टिविषैं बंध द्रव्यका एक मध्यम खंड अर अपनी बंध कृष्टिनिका प्रमाण मात्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधके विशेष दीजिए है। अर ताके ऊपरि कृष्टिनिविषैं एक एक बंधका विशेष घटता क्रम करि दीजिए है। ऐसैं एक जघन्य बंध कृष्टिके ऊपरि सवा तीन गुण हानिमात्र कृष्टि भएं ताके ऊपरि अंतरालविषैं बंध द्रव्यकरि अपूर्व अंतर कृष्टि निपजाइए है। तहां बंधांतर कृष्टि संबंधी समान खंडतैं एक खंड अर बंधांतर कृष्टिके विशेष द्रव्यतैं जेती सर्व कृष्टि होइ आईं तिनकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष अपने एक विशेषके अनंतवे भागकरि हीन सर्व अर मध्यम खंडतैं एक खंड अर भईं सर्व बंध कृष्टिनिका प्रमाणकरि हीन सर्व बंध कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ऐसैं च्यारि प्रकार बंध द्रव्य ही दीजिए है। घात द्रव्य न दीजिए है। सो यहु दीया द्रव्य याके नीचली पूर्वकृष्टिविषैं दीया बंध द्रव्यतैं अनंतगुणा है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि तिसविषैं घात द्रव्यतैं ग्रहि पूर्वैं भईं सर्व पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र अधस्तन शीर्षके विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेष अपने अपने विशेषका अनंतवां भागकरि हीन निक्षेपण करै है। तहां ही बंध द्रव्यका एक मध्यम खंड अर भईं बंध कृष्टिनिकरि हीन बंध कृष्टिनिका प्रमाणमात्र बंध विशेष निक्षेपण करिए है। सो यहु बंध द्रव्य बधांतर कृष्टिका बंध द्रव्यतैं अनंतगुणा घटता है। याका सर्व पूर्व द्रव्य वा दीया द्रव्य मिलि तिस बधांतर कृष्टितैं उभय द्रव्यका एक विशेषमात्र घटता हो है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वोक्त प्रमाण पूर्व कृष्टि भएं बंध द्रव्यकरि एक अपूर्व कृष्टि निपजै है तिनविषैं द्रव्यका देना पूर्वोक्त प्रकार जानना। ऐसैं बंधकी उत्कृष्ट कृष्टिपर्यंत जानना। ताके ऊपरि कृष्टिनिविषैं घात द्रव्यहीका निक्षेपण अपनी उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत हो है। ऐसैं दीयमान द्रव्यकी पंक्तिका अनुक्रम जानना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो इहां जैसैं ऊंटकी पीठ आदि विषैं ऊंची आगे नीची आगैं कहीं ऊंची कहीं नीची तैसैं कहीं बहुत कहीं स्तोक कहीं किछू हीन किछू अधिक द्रव्य देनेतैं अनंत जायगा उष्ट्र कूट रचना हो है जातैं ऐसैं दीएं ही सर्व कृष्टिनिका एक गोपुच्छ होइ। ऐसैं ही यतिवृषभ मुनिका उपदेश है। ऐसैं दीयमान प्रदेशानिका निरूपण कीया।

बहुरि दृश्यमान कहिए पूर्वैं था वा दीया द्रव्य मिलि जैसैं भया सो लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिविषैं बहुत द्रव्य है तातैं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका घात कीए पीछैं जो उत्कृष्ट कृष्टि रही तहां पर्यंत कृष्टिके द्रव्यके अनंतवे भागमात्र जो एक एक उभय द्रव्यका विशेष तीहिंकरि घटता अनुक्रमतैं दृश्यमान द्रव्य जानना। या प्रकार जैसैं प्रथम समयविषैं दीयमान द्रव्यका निरूपण कीया तैसैं ही द्वितीयादि समय विषैं भी जानना। ऐसैं तात्पर्य निरूपण कीया॥ ५३५॥

कोहादिकिट्टिवेदगपढमे तस्स य असंखभागं तु।
णासेदि हु पडिसमयं तस्सासंखेज्जभागकमं॥५३६॥

क्रोधादिकृष्टिवेदकप्रथमे तस्य च असंख्यभागस्तु।
नाशयति हि प्रतिसमयं तस्यासंख्यभागक्रमम्॥ ५३६॥

स० चं०— क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदक जीव है सो प्रथम समयविषैं सर्व कृष्टिनिका असंख्यातवां भागमात्र कृष्टिनिकौं नासै है—घात करै है। बहुरि द्वितीय समयविषैं ताके असंख्यातवे भागमात्र कृष्टिनिका घात करै है ऐसैं ही क्रमतैं समय समय प्रति असं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख्यातवां भागमात्र क्रमकरि घात कृष्टिनिका प्रमाण क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका द्विचरम समय पर्यंत जानना, जातैं अंत समयविषैं नवक बंध अर उच्छिष्टावली विना विवक्षित संग्रहकृष्टिकी सर्व ही कृष्टिनिका अभाव हो है ॥ ५३६ ॥

कोहस्स य जे पढमे संगहकिट्टिम्हि णट्ठकिट्टीओ।
बंधुज्झियकिट्टीणं तस्स असंखेज्जभागो हु ॥

क्रोधस्य च याः प्रथमे संग्रहकृष्टौ नष्टकृष्टयः।
बंधोज्झितकृष्टीनां तस्यासंख्येयभागो हि ॥ ५३७ ॥

स० चं०--क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि वेदकका सर्व कालविषैं जे नष्ट कृष्टि भई, जिनि कृष्टिनिका घात कीया तिनिका प्रमाण कृष्टि वेदकका प्रथम समयविषैं क्रोधका प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं जो ऊपरिकी बंधरहित कृष्टिनिका पूर्वैं प्रमाण कह्या था ताके असंख्यातवे भाग मात्र जानना ॥ ५३७ ॥

कोहादिकिट्टियादिट्ठिदिम्हि समयाहियावलीसेसे।
ताहे जहण्णुदीरइ चरिमो पुण वेदगो तस्स ॥

क्रोधादिकृष्टिकादिस्थितौ समयाधिकावलीशेषे।
तत्र जघन्यमुदीरयति चरमः पुनर्वेदकस्तस्य ॥ ५३८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी प्रथम स्थितिविषैं समय अधिक आवली अवशेष रहैं तहां जघन्य स्थितिकी उदीर्णा करनेवाला हो है। जो आवलीके उपरि एक समय है तिस संबंधी निषेककौं अपकर्षणकरि उदयावलीविषैं निक्षेपण करै है। बहुरि तहां ही क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टि, वेदकका अंतसमयविषै हो है ॥ ५३८ ॥

ताहे संजलणाणं बंधो अंतोमुहुत्तपरिहीणो।
सत्तोवि य सददिवसा अडमासब्भहियछव्वरिसा ॥

तत्र संज्वलनानां बंधोऽन्तर्मुहूर्तपरिहीनः।
सत्त्वमपि च शतदिवसा अष्टमासाभ्यधिकषड्वर्षाः ॥ ५३९ ॥

स० चं– तहां संज्वलन चतुष्कका स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि शत दिवस कहिए सौ दिन ताका तीन महीना अर दश दिन है। पहले समय च्यारि मास था सो संख्यात स्थिति बंधापसरणानिकरि घटि इहां इतना रह्या। क्रोधकी तीनौं संग्रह कृष्टिनिका वेदक कालविषैं जो दोय मास घटै तौ एक संग्रहकृष्टि वेदक कालविषैं कितना घटै ऐसैं त्रैराशिकतैं स्थितिबंध घटनेका प्रमाण पूर्वोक्त आया है। बहुरि तहां संज्वलन चतुष्कका स्थितिसत्व अंतर्मुहूर्त घाटि आठ महीना अधिक छह वर्ष है। प्रथम समय आठ वर्ष था सो घटिकरि इहां इतना रह्या। क्रोधकी तीनौं संग्रह कृष्टिनिका वेदक कालविषैं जो च्यारि वर्ष घटै तौ एक संग्रह कृष्टि वेदक कालविषैं कितना घटै ऐसैं त्रैराशिकतैं स्थिति सत्व घटनेका प्रमाण पूर्वोक्त आवै है ॥ ५३९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घादितियाणं बंधो दसवासंतोमुहुत्तपरिहीणा ।
सत्तं संखं वस्सा सेसाणं संखऽसंखवस्साणि ॥५४० ॥

घातित्रयाणां बंधो दशवर्षा अंतर्मुहूर्तपरिहीनाः ।
सत्त्वं संख्यं वर्षाः शेषाणां संख्यासंख्यवर्षाः ॥ ५४० ॥

स० चं– घाति कर्मनिका स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि दश वर्षमात्र है। प्रथम समय विषैं संख्यात हजार वर्षमात्र था सो इहां संख्यातगुणा क्रमतैं घटि इतना रह्या। बहुरि घातिकर्मनिका स्थिति सत्व संख्यात हजार वर्षमात्र है। पूर्वै संख्यात हजार वर्षमात्र था सो संख्यात हजार स्थिति कांडकनिकरि संख्यात गुणा घटता कूम लीएं घट्या तथापि आलापकरि संख्यात हजार वर्ष मात्र ही रह्या। बहुरि अघाति कर्मानिका स्थितिबंध संख्यात हजार वर्षमात्र है। इहां भी पूर्ववत् तात्पर्य जानना। बहुरि आयु बिना तीन अघातियानिका स्थिति सत्व असंख्यात वर्षमात्र है। यद्यपि पूर्वतैं असंख्यात गुणा घटता कूमकरि घट्या तथापि आलापकरि इतना ही रह्या ऐसैं क्रोधकी प्रथम संगूह कृष्टि वेदकका निरूपण किया ॥५४०॥

से काले कोहस्स य विदियादो संगहादु पढमठिदी ।
कोहस्स विदियसंगहकिट्टिस्स य वेदगो होदि ॥

स्वे काले क्रोधस्य च द्वितीयतः संग्रहात् प्रथमास्थितिः ।
क्रोधस्य द्वितीयसंग्रहकृष्टेश्च वेदको भवति ॥ ५४१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं— क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टि वेदकका अनंतर समयरूप अपने कालविषैं क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टितैं प्रदेश समूहका अपकर्षण करि उदयादि गुणश्रेणिरूप प्रथम स्थिति करै है। ताका प्रमाण क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिका वेदक कालतैं आवलीमात्र अधिक है। याके प्रथमादि समयनिविषैं असंख्यातगुणा क्रम लीएं अपकर्षण कीया हुवा द्रव्य दीजिए है। बहुरि तहां ही क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिका वेदक हो है ॥ ५४१ ॥

कोहस्स पढमसंगहकिट्टिस्सावलिपमाण पढमठिदी।
दोसमऊणदुआवलिणवकं च वि चेउदे ताहे ॥

क्रोधस्य प्रथमसंग्रहकृष्टेरावलिप्रमाणं प्रथमस्थितिः।
द्विसमयोनद्व्यावलिनवकं चापि चतुर्दश तत्र ॥ ५४२ ॥

स० चं— तिस समयविषैं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी प्रथम स्थितिविषै उच्छिष्टावलीमात्र निषेक अर द्वितीय स्थितिविषैं दोय समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्धरूप निषेक अवशेष सत्वरूप रहै हैं। इन विना क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका अन्य सर्व प्रदेश क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिके नीचैं अनंतगुणा घटता अनुभागरूप होइ ताकी अपूर्व कृष्टि होइ परिणमै है। तब ही अन्य संग्रहकृष्टिनिविषैं भी यथासंभव संक्रमण हो है तीहिं कालविषैं क्रोधकी द्वितीय संग्रहकृष्टिका द्रव्य चौदह गुणा हो है। एक गुणा आयका था तातैं तेरह गुणा प्रथम संग्रहका आया, मिलि चौदह गुणा भया ॥ ५४२ ॥

पढमादिसंगहाणं चरिमे फालिं तु विदियपहुदीणं। ६५५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेट्ठा सव्वं देदि हु मज्झे पुव्वं व इगिभागं ॥

प्रथमादिसंग्रहाणां चरमे फालिं तु द्वितीयप्रभृतीनाम् ।
अधस्तनं सर्वं ददाति हि मध्ये पूर्वं इव एकभागम् ॥ ५४३ ॥

स० चं०– प्रथमादि संग्रहकृष्टिनिका अंत समयविषैं जो संक्रमण द्रव्यरूप फालि ताहि द्वितीयादि संग्रहकृष्टिनिके नीचैं सर्व देहै अर मध्यविषै पूर्ववत् एक भागकौं देहै । भावार्थ– जिस संग्रहकृष्टिकौं भोगवै है ताका नवक समयप्रबद्ध विना सर्व द्रव्य सो सर्व संक्रमणरूप है । जो उच्छिष्टावली सो ही अंतफालि है । ताकौं अनन्तर समयविषैं याके अनन्तर जो संग्रहकृष्टि भोगिए ताके नीचैं अर वीचिमैं अपूर्व कृष्टिरूप परिणमावै है । तहां तिस संग्रहकृष्टिकी अवयव कृष्टिनिके बीचि जे अपूर्व कृष्टि करिए है ते पूर्ववत् अंतसमयविषै अपने द्रव्यका असंख्यातवां भागमात्र द्रव्यकरि निपजाइए है । बहुरि अवशेष सर्व द्रव्यकरि तिस संग्रहके नीचैं अपूर्व कृष्टि निपजाइए है ऐसैं विधान है । जातैं इहां क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिके अनंतरि द्वितीय संग्रहकृष्टि भोगिए है सो इहां भी ऐसा ही विधान जानना । इहां प्रश्न–

जो पूर्वैं कृष्टिवेदकका प्रथम समयका व्याख्यानविषैं नीचैं करी कृष्टिनिका प्रमाणतैं वीचिकरी कृष्टिनिका प्रमाण असंख्यातगुणा कह्या था इहां वीचिकरी कृष्टिनिविषै दीया द्रव्यतैं नीचैं करी कृष्टिनिविषैं दीया द्रव्य असंख्यातगुणा कह्या तातैं विरुद्ध आवै है ? ताका समाधान– तहां तौ संग्रहकृष्टिके द्रव्यका असंख्यातवां भागमात्र द्रव्य ग्रह्या ६५६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था ताका विधान कह्या था इहां सर्व संग्रहकृष्टिके द्रव्यकी अपेक्षा वर्णन है तातैं इहां ऐसा विधान जानना। बहुरि जो इहां भी पूर्ववत् विधान करिए तौ अंतर कृष्टिनिके बीचि नवीन कृष्टि बहुत निपजैं सर्व अवयव कृष्टिनिके बीचि बीचि अपूर्व कृष्टि होंइ तब पूर्व कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घटता द्रव्य जो कृष्टिविषैं दीया तातैं अनंतरवर्ती कृष्टिनिविषैं दीया द्रव्य असंख्यातगुणा होइ सो ऐसैं द्रव्य देना। सूत्रविषैं नाहीं कह्या है तातैं इहां विधान कह्या है सोई अंगीकार करना ॥ ५४३ ॥

कोहस्स विदियकिट्टी वेदयमाणस्स पढमकिट्टिं वा।
उदओ बंधो णासो अपुव्वकिट्टीण करणं च ॥

क्रोधस्य द्वितीयकृष्टिः वेदकस्य प्रथमकृष्टिरिव।
उदयो बंधो नाशः अपूर्वकृष्टीनां करणं च ॥ ५४४ ॥

स० चं०–क्रोधकी द्वितीय संग्रहकृष्टिका वेदककैं कृष्टिनिका उदय अर बंध अर घात अर संक्रमण द्रव्यकरि वा बंध द्रव्यकरि अपूर्वकृष्टिका करना इत्यादि विधान जैसैं प्रथम संग्रह कृष्टिका कह्या तैसैं ही समस्त कहना ॥ ५४४ ॥

कोहस्स विदियसंगहकिट्टी वेदंतयस्स संकमणं।
सट्ठाणे तदियोत्ति य तदणंतरहेट्ठिमस्स पढमं च ॥

क्रोधस्य द्वितीयसंग्रहकृष्टिं वेद्यमानस्य संक्रमणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थाने तृतीयांतं च तदनंतरमधस्तनस्य प्रथमं च ॥ ५४५॥

स० चं– क्रोधकी द्वितीय संग्रहकृष्टिका वेदककै स्वस्थान कहिए विवक्षित कषाय ही विषैं संक्रमण तौ तीसरी संग्रहकृष्टिपर्यंत होइ अर परस्थान कहिए अन्य कषायविषैं संक्रमण सो आपके नीचैं जो कषाय ताकी प्रथम संग्रहकृष्टिविषैं होइ ॥ ५४५ ॥ सोई कहिए है–

पढमो विदिये तदिये हेट्ठिमपढमे च विदियगो तदिये।
हेट्ठिमपढमे तदियो हेट्ठिमपढमे च संकमदि ॥

प्रथमो द्वितीये तृतीये अधस्तनप्रथमे च द्वितीयकस्तृतीये ।
अधस्तनप्रथमे तृतीयोऽधस्तनप्रथमे च संक्रामति ॥ ५४६ ॥

स० चं– विवक्षित कषायकी पहली संग्रहकृष्टिका द्रव्य तौ अपनी दूसरी तीसरी अर नीचली कषायकी पहली संग्रहकृष्टिविषैं संक्रमण करै है अर दूसरी संग्रहकृष्टिका द्रव्य अपनी तीसरी अर नीचली कषायकी पहली संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण करै है । अर तीसरी संगूह कृष्टिका द्रव्य नीचली कषायकी पहली संगूहकृष्टिविषैं ही संक्रमण करै है । इहां वेदक अपेक्षा जाकौं भोगवै है ताके पीछैं जाकौं भोगवै ताकौं नीचली कषाय कह्या है सो क्रोधकी द्वितीय संग्रहकृष्टितैं प्रदेश समूह है सो क्रोधकी तीसरी मानकी पहली संगूहकृष्टिविषैं संक्रमण करै है । अर क्रोधकी तीसरी संगूहकृष्टिका द्रव्यतैं मानकी पहली हीविषैं संक्रमण करै है । अर मानकी पहलीका द्रव्य मानकी दूसरी तीसरी मायाकी पहलीविषै संक्रमण करै है । अर मानकी दूसरीका द्रव्य मानकी तीसरी मायाकी पहली-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषैं संक्रमण करै है। अर मानकी तीसरीका द्रव्य मायाकी पहिलीविषै संक्रमण करै है अर मायाकी पहिलीका द्रव्य मायाकी दूसरी तीसरी लोभकी पहिलीविषै संक्रमण करै है। अर मायाकी दूसरीका द्रव्य मायाकी तीसरी लोभकी पहलीविषैं संक्रमण करै है अर मायाकी तीसरीका द्रव्य लोभकी पहलीविषैं संक्रमण करै है। अर लोभकी पहलीका द्रव्य लोभकी दूसरी तीसरीविषैं संक्रमण करै है। अर लोभकी दूसरीका द्रव्य लोभकी तीसरीविषैं संक्रमण होइ प्रवेश करै है। इहां स्वस्थानविषैं तो विवक्षित संग्रहके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं तहां एक भागमात्र अपनी अन्य संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण करै है। अर परस्थानविषैं तिसहीकौं अधःप्रवृत्त भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र द्रव्य वा अन्य कषायकी प्रथम संग्रहकृष्टिविषैं संक्रमण करै है ऐसा विशेष जानना ॥ ५४६ ॥

कोहस्स पढमकिट्टी सुण्णोत्ति ण तस्स अत्थि संकमणं
लोभंतिमकिट्टिस्स य णत्थि पडित्थावणूणादो ॥

क्रोधस्य प्रथमकृष्टिः शून्या इति न तस्या अस्ति संक्रमणं।
लोभांतिमकृष्टेश्च नास्ति प्रतिस्थापनमूनतः ॥ ५४७ ॥

स० चं– इहां क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टि तो शून्य भई–नास्ति भई तातैं ताकैं संक्रमण नाहीं अर लोभकी तृतीय संग्रहकृष्टिका भी संक्रमण नाहीं जातैं प्रतिलोम जो उलटा संक्रमण ताका अभाव है। ऐसैं दोय विना अवशेष दश संग्रहकृष्टिनिका संक्रमण कीया। तहां भोगवनेरूप द्वितीय संग्रहकृष्टिविषैं आय द्रव्यका अभाव है। तहां घात द्रव्यही का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्व कृष्टिनिविषैं देना पूर्वोक्त प्रकार हो है। बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकृष्टिविषैं व्यय द्रव्य नाहीं परंतु आय द्रव्य है तातैं दश संग्रहकृष्टिनिविषैं संक्रमण द्रव्यका पूर्व अपूर्वकृष्टिनिविषैं देना पूर्वोक्त प्रकार हो है। ऐसा जानना ॥ ५४७ ॥

जस्स कसायस्स जं किट्टिं वेदयदि तस्स तं चेव।
सेसाण कसायाणं पढमं किट्टिं तु बंधदि हु ॥

यस्य कषायस्य यां कृष्टिं वेदयति तस्य तां चैव।
शेषाणां कषायाणां प्रथमां कृष्टिं बध्नाति हि ॥ ५४८ ॥

स० चं– जिस कषायकी जिस संग्रहकृष्टिकौं वेदै भोगवै है तिस कषायकी तो तिस ही संग्रहकृष्टिकौं बांधै है। बहुरि अन्य कषायनिकी प्रथम संगूहकृष्टिकौं बांधै है। ऐसी व्याप्ति है। तातैं बंध द्रव्यका विधान च्यारि ही संगूहकृष्टिनिविषैं जानना सो इहां क्रोधकी द्वितीय संग्रहकृष्टिकौं अर अन्य कषायनिकी प्रथम संगूहकृष्टिकौं बांधै है ॥ ५४८ ॥

माणातिय कोहतदिये मायालोहस्स तियतिये अहिया।
संखगुणं वेदिज्जे अंतरकिट्टी पदेसो य ॥ ५४९ ॥

मानत्रयं क्रोधतृतीये मायालोभस्य त्रिकत्रिके अधिका।
संख्यगुणं वेद्यमाने अंतरकृष्टिः प्रदेशश्च ॥ ५४९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– इहां संगूहकृष्टिनिविषैं अवयव कृष्टिनिका वा द्रव्यका अल्प बहुत्व कहिए है सो मानकी तीन अर क्रोधकी एक तीसरी ही अर माया लोभकी तीन तीन इन संगूह कृष्टिनिविषैं तो विशेष अधिक अर वेद्यमान क्रोधकी दूसरी कृष्टिविषै संख्यातगुणा कृष्टिनिका वा प्रदेशनिका प्रमाण कूमतैं है। सोई कहिए है–

मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिका स्तोक तातैं मानकी दूसरीका तातैं मानकी तीसरीका तातैं क्रोधकी तीसरीका तातैं मायाकी प्रथमका तातैं मायाकी दूसरीका तातैं मायाकी तीसरीका तातैं लोभकी प्रथमका तातैं लोभकी दूसरीका तातैं लोभकी तीसरीका अवयव कृष्टिनिका प्रमाण कूमतैं विशेषकरि अधिक है। तहां विशेषका प्रमाण स्वस्थानविषै तो पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं आवै है। जैसैं मानकी प्रथम संगूहकृष्टिकी अवयव कृष्टिनिका प्रमाणतैं याहीकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं जो एक भागमात्र विशेष ताकरि अधिक मानकी द्वितीय संगूहकृष्टिकी अवयव कृष्टिनिका प्रमाण हो है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि परस्थानविषैं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं विशेषका प्रमाण आवै है। जैसैं मानकी तीसरी संगूहकृष्टिकी अवयव कृष्टि प्रमाण क्रमतैं याहीकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र विशेषकरि अधिक क्रोधकी तृतीय संगूहकृष्टिकी अवयव कृष्टिनिका प्रमाण हो है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि लोभकी तृतीय संगूहकृष्टिकी अवयव कृष्टिनिका प्रमाण संख्यात गुणा है सो चौदह गुणा जानना। ऐसैं अवयव कृष्टिनिके प्रमाणका अल्प बहुत्व कह्या। याही प्रकार प्रदेश जे इन संग्रह कृष्टिनिके परमाणू तिनके प्रमाणका भी अल्प बहुत्व जानना जातैं बंध द्रव्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्रमण द्रव्य मिलि ऐसा क्रम हो है। बहुरि इस द्रव्य ही के अनुसारि कृष्टिनिका भी अल्प बहुत्व जानना। जातैं थोडे द्रव्यकरि थोरी, बहुत द्रव्यकरि बहुत कृष्टि निपजै हैं ॥५४९॥

वेदिज्जादिट्ठिदिए समयाहियआवलीयपरिसेसे।

ताहे जहण्णुदीरणचरिमो पुण वेदगो तस्स ॥५५०॥

वेद्यमानादिस्थितौ समयाधिकावलिकपरिशेषे।

तत्र जघन्योदीरणचरमः पुनः वेदकस्तस्य ॥ ५५० ॥

स० चं–जिस संग्रह कृष्टिकौं वेदे है तिसकी प्रथम स्थितिविषैं दोय आवली अवशेष रहैं तौ आगाल प्रत्यागालका नाश हो है। बहुरि समय अधिक आवली अवशेष रहैं जघन्य स्थिति जो उदयावलीतैं ऊपरि एक निषेक ताका उदीरक कहिए उदयावलीविषैं देनेरूप उदीर्णा करनेवाला हो है। तहां ही तिसके वेदककालका अंत समय हो है सो इहां क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टिकी प्रथम स्थितिविषै समय अधिक आवली अवशेष रहैं जघन्य स्थितिका उदीरक अर ताके वेदकका अंत समय भया ॥ ५५० ॥

ताहे संजलणाणं बंधो अंतोमुहुत्तपरिहीणो।

सत्तोवि य दिणसीदी चउमासब्भहियपणवस्सा ॥

तत्र संज्वलनानां बंधो अंतर्मुहूर्तपरिहीनः।

सत्त्वमपि च दिनाशीतिः चतुर्मासाभ्यधिकपंचवर्षाः ॥ ५५१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं– तहां संज्वलन चतुष्कका स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि असी दिन ताका दोय मास अर वीस दिनमात्र है। अर तिनका सत्व अंतर्मुहूर्त घाटि च्यारि मास अधिक पंच वर्षमात्र है। इहां भी पूर्ववत् निरूपण जानना ॥ ५५१ ॥

घादितियाणं बंधो वासपुधत्तं तु सेसपयडीणं ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति णियमेण ॥

घातित्रयाणां बंधो वर्षपृथक्त्वं तु शेषप्रकृतीनाम् ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति नियमेन ॥ ५५२ ॥

स० चं– तीन घातियानिका स्थितिबंध पृथक्त्व वर्षमात्र है। तीनके ऊपरि यथायोग्य पृथक्त्व संज्ञा जाननी। बहुरि अवशेष अघातियानिका स्थितिबंध संख्यात हजार वर्षमात्र है नियमकरि ॥ ५५२ ॥

घादितियाणं सत्तं संखसहस्साणि होंति वस्साणं ।
तिण्हं पि अघादीणं वस्साणि असंखमेत्ताणि ॥

घातित्रयाणां सत्वं संख्यसहस्राणि भवंति वर्षाणां ।
त्रयाणामपि अघातिनां वर्षा असंख्यमात्राः ॥ ५५३ ॥

स० चं– तीन घातियानिका स्थिति सत्व संख्यात हजार वर्षमात्र है। आयु बिना तीन अघातियानिका स्थितिसत्व असंख्यात वर्षमात्र है ॥ ५५३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से काले कोहस्स य तदियादो सगहादु पढमाठिदी।
अंते संजलणाणं बंधं सत्तं दुमास चउवस्सा ॥५५४॥

स्वे काले क्रोधस्य च तृतीयतः संग्रहात् प्रथमस्थितिः।
अंते संज्वलनानां बंधं सत्त्वं द्विमासं चतुर्वर्षाः ॥ ५५४ ॥

स० चं– ताके अनंतरि अपने कालविषैं क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिका वेदक हो है। तहां याका द्रव्य एक गुणा था अर यातैं चौदह गुणा द्वितीय संग्रहका उच्छिष्टावली नवक समय प्रबद्ध बिना द्रव्य मिलनेतैं पंद्रह गुणा हो है। तिस द्रव्यतैं तिसके वेदकका कालतैं आवलीमात्र अधिक प्रथम स्थिति करै है। तहां वर्णन क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टि वेदकवत् जानना। तहां अंत समय विषैं संज्वलन चतुष्कका स्थितिबंध दोय मास अर स्थितिसत्व च्यारिवर्षमात्र जानना। अवशेष कर्मनिका पूर्ववत् आलाप है॥ ५५४॥

से काले माणस्स य पढमादो संगहादु पढमाठिदी।
माणोदयअद्धाये तिभागमेत्ता हु पढमठिदी ॥

स्वे काले मानस्य च प्रथमात् संग्रहात् प्रथमस्थितिः।
मानोदयाद्धायाः त्रिभागमात्रा हि प्रथमस्थितिः ॥ ५५५ ॥

स० चं– क्रोध वेदककौं अनंतरि अपने काल विषैं मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिका द्रव्य एक गुणा था अर पंद्रह गुणा क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिका द्रव्य मिल्या सो मिलिकरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षपि- सटीक
णाए
६६५

सोलह गुणा भया। ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एकभाग मात्र द्रव्य ग्रहि गुणश्रेणि रूप प्रथम स्थिति करै है। सो क्रोधवेदक कालतैं किछू घाटि जो मानका वेदककाल ताका तीसरा भाग आवलीकरि अधिक तिस प्रथम स्थितिका प्रमाण है। तहां मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदक हो है॥ ५५५॥

कोहपढमं व माणो चरिमे अंतोमुहुत्तपरिहीणो।
दिणमासपण्णचत्तं बंधं सत्तं तिसंजलणगाणं॥

क्रोधप्रथमं व मानः चरमे अंतर्मुहूर्तपरिहीनः।
दिनमासपंचाशच्चत्वारिंशत् बंधः सत्त्वं त्रिसंज्वलनानां॥ ५५६॥

स० चं०– क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिका वेदकवत् मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदकका विधान जानना। विशेष इतना– क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदकके बंध द्रव्यकरि उपजीं जे नवीन अंतर कृष्टि तिनका प्रमाण ल्यावनेकौं भागहारका प्रमाण छह गुणहानि मात्र कह्या था, इहां तातैं चौथाई घाटि है तातैं साढा च्यारि गुणहानि मात्र है। आगैं भी इतना ही घाटि जानना। सो मायाकी प्रथम संग्रह कृटि वेदककैं तीन गुणहानिमात्र, लोभकी प्रथम संगूह कृष्टिविषैं ड्योढ गुणहानिमात्र, भागहार जानना। याका भाग सर्व कृष्टिनिकौं दीएं क्रोधकी प्रथम संगूह कृष्टि वेदककैं तौ गुणहानिका चौथा भाग मात्र अतरालका प्रमाण कह्या था। इहां वा आगैं तातैं सोलहां भागमात्र क्रमतैं घटता जानना। ६६५
सो मान माया लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टि वेदककैं बंध द्रव्यकरि निपजीं नवीन कृष्टिनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के वीचि जे कृष्टि पाइए तिनका प्रमाणमात्र अंतराल सो क्रमतैं गुणहानिका तीन सोलहवां भागमात्र, दोइ सोलहवां भागमात्र, एक सोलहवां भागमात्र गुणा स्थापिए। बहुरि क्रोधकी प्रथम द्वितीय तृतीय कृष्टि वेदककैं गुणकार क्रमतैं तेरह चौदह पंद्रहका अर मानकी प्रथमादि संगूह कृष्टि वेदककैं गुणकार क्रमतैं सोलह सतरह अठारह वा मायाकी प्रथमादि संगूह कृष्टि वेदककैं गुणकार क्रमतैं उगणीस वीस इकईसका, लोभकी प्रथमादि संगूह कृष्टि वेदककैं गुणकार क्रमतैं वाईस तेईस चौईसका है। तहां अपने अपने गुणकार करि गुण्यकौं गुणैं अंतरालका प्रमाण आवै है। बहुरि इतना जानना --

क्रोध वेदककैं ग्यारह्यो कषायोंका, मानवेदककैं क्रोध विना तीन कषायनिका, माया वेदककैं क्रोध मान विना दोय कषायनिका लोभ वेदककैं लोभ हीका बंध है। तातैं इनकेही बंध द्रव्यकरि अंतर कृष्टि निपजै हैं। बहुरि जिस कृष्टिकौं भोगिए है ताका द्रव्य जिन कृष्टिनिविषैं संक्रमण करै है तिनविषैं संक्रमण द्रव्यकरि निपजी जे कृष्टि तिनका अंतरालविषैं भी यथासंभव जानना। बहुरि मान प्रथम संगूह कृष्टि वेदककी प्रथम स्थिति विषैं समय अधिक आवली अवशेष रहैं अंत समय होइ। तहां क्रोध बिना तीन संज्वलनका स्थिति बंध अंतर्मुहूर्त घाटि पचास दिन है। अर स्थिति सत्व अंतर्मुहूर्त घाटि चालीस मास मात्र है। इहां क्रोधकी प्रथमसंग्रहकृष्टिवत् त्रैराशिक आदि विधान जानना। इहांतैं आगैं पूर्व संग्रह कृष्टिका द्रव्य मिलनेतैं वेद्यमान कृष्टिका द्रव्यविषैं एक एक गुणकार क्रमतैं वधै है। तहां मानकी द्वितीय तृतीय अर मायाकी प्रथम द्वितीय तृतीय अर लोभकी प्रथम द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टिका द्रव्य क्रमतैं सतरह अठारह उगणीस वीस इकईस वा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस तेईस चौईस गुणा है सो अपने अपने द्रव्यकौं अपकर्षणकरि अपने वेदक कालतैं आवली मात्र अधिक प्रथम स्थिति करिए है। तहां पूर्वोक्त विधानतैं तिस प्रथम स्थितिविषैं समय अधिक आवली अवशेष रहैं अपनी अपनी वेदक कालका अंत समय हो है ॥ ५५६ ॥ तहां स्थितिबंध स्थिति सत्वका विशेष कहिए है—

विदियस्स माणचरिमे चत्तं वत्तीसदिवसमासाणि।
अंतोमुहुत्तहीणा बंधो सत्तो तिसंजलणगाणं ॥

द्वितीयस्य मानचरमे चत्वारिंशद्द्वात्रिंशद्दिवसमासाः।
अंतर्मुहूर्तहीना बंधः सत्त्वं त्रिसंज्वलनानां ॥ ५५७ ॥

स० चं०— ताके अनंतरि मानकी द्वितीय संग्रह कृष्टिका वेदक हो है। ताका अंत समयविषैं तीन संज्वलनका स्थिति बंध अंतर्मुहूर्त घाटि चालीस दिन अर स्थितिसत्व अंतर्मुहूर्त घाटि वत्तीस मासमात्र है ॥ ५५७ ॥

तदियस्स माणचरिमे तीसं चउवीस दिवसमासाणि।
तिण्हं संजलणाणं ठिदिबंधो तह य सत्तो य ॥५५८॥

तृतीयस्य मानचरिमे त्रिंशद्चतुर्विंशद्दिवसमासाः।
त्रयाणां संज्वलनानां स्थितिबंधस्तथा च सत्त्वं च ॥ ५५८ ॥

स० चं०— ताके अनंतरि मानकी तृतीय संग्रह कृष्टिका वेदक हो है। ताका अंत स-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मयविषैं तीन संज्वलनिका स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि तीस दिन अर स्थिति सत्व अंतर्मुहूर्त घाटि चौवीस मासमात्र हो है ॥ ५५८ ॥

पढमगमायाचरिमे पणवीसं वीसदिवसमासाणि ।
अंतोमुहुत्तहीणा बंधो सत्तो दुसंजलणगाणं॥ ५५९॥

प्रथमगमायाचरिमे पंचविंशतिः विंशतिः दिवसमासाः ।
अंतर्मुहूर्तहीनाः बंधः सत्त्वं द्विसंज्वलनकयोः ॥ ५५९॥

स० चं०– ताके अनंतरि मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदक हो है। सो याका काल माया वेदक कालके तीसरे भागमात्र है। ताका अंत समयविषैं संज्वलन माया लोभका स्थिति बंध अंतर्मुहूर्त घाटि पचीस दिन स्थितिसत्व अंतर्मुहूर्त घाटि वीस मासमात्र हो है॥

विदियगमायाचरिमे वीसं सोलं च दिवसमासाणि ।
अंतोमुहुत्तहीणा बंधो सत्तो दुसंजलणगाणं ॥

द्वितीयगमायाचरिमे विंशं षोडश च दिवसमासाः ।
अंतर्मुहूर्तहीनाः बंधः सत्त्वं द्विसंज्वलनकयोः ॥ ५६० ॥

स० चं०–ताके अनंतरि मायाकी द्वितीय संग्रह कृष्टिका वेदक हो है। ताका अंत समयविषैं दोय संज्वलनानिका स्थिति बंध अंतर्मुहूर्त घाटि वीस दिन अर स्थितिसत्व अंतर्मुहूर्त घाटि सोलह मासमात्र हो है ॥ ५६० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तदियगमायाचरिमे पण्णरवारसय दिवसमासाणि ।
दोण्हं संजलणाणं ठिदिबंधो तह य सत्तो य ॥

तृतीयकमायाचरमे पंचदश द्वादश दिवसमासाः ।
द्वयोः संज्वलनयोः स्थितिबंधस्तथा च सत्त्वं च ॥ ५६१ ॥

स० चं०– ताके अनंतर मायाकी तृतीय संग्रह कृष्टिका वेदक हो है । ताका अंत समयविषैं दोय संज्वलननिका स्थिति बंध अंतर्मुहूर्त घाटि पंद्रह दिन अर स्थितिसत्व अंतर्मुहूर्त घाटि वारह मास प्रमाण हो है ॥ ५६१ ॥

मासपुधत्तं वासा संखसहस्साणि बंध सत्तो य ।
घादितियाणिदराणं संखमसंखेज्जवस्साणि ॥५६२॥

मासपृथक्त्वं वर्षाः संख्यसहस्राः बंधः सत्त्वं च ।
घातित्रयाणामितरेषां संख्यमसंख्येयवर्षाः ॥ ५६२ ॥

स० चं०– तहां ही तीन घातियानिका स्थितिबंध पृथक्त्व मास प्रमाण है। स्थितिसत्व यथा योग्य संख्यात हजार वर्षमात्र है । बहुरि तीन अघातियानिका स्थिति बंध यथायोग्य संख्यात वर्ष मात्र है । स्थितिसत्व यथायोग्य असंख्यात वर्षमात्र है ॥ ५६२ ॥

लोहस्स पढमचरिमे लोहस्संतोमुहुत्त बंधदुगे ।
दिवसपुधत्तं वासा संखसहस्साणि घादितिये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोभस्य प्रथमचरिमे लोभस्यांतर्मुहूर्तं बंधद्विके।
दिवसपृथक्त्वं वर्षाः संख्यसहस्रा घातित्रये ॥ ५६३ ॥

स० चं०– ताके अनंतरि लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिका वेदक हो है । ताका काल समस्त लोभ वेदक कालके तीसरे भागमात्र वा वादर लोभ वेदक कालतैं आधा है । ताका अंत समयविषैं संज्वलन लोभका स्थिति बंध वा स्थितिसत्व अंतर्मुहूर्तमात्र है। तहां स्थिति बंधतैं स्थितिसत्व संख्यातगुणा जानना। बहुरि तीन घातियानिका स्थितिबंध पृथक्त्वदिन मात्र अर स्थिति सत्व संख्यात हजार वर्षमात्र है ॥ ५६३ ॥

सेसाणं पयडीणं वासपुधत्तं तु होदि ठिदिबंधो ।
ठिदिसत्तमसंखेज्जा वस्साणि हवंति णियमेण ॥

शेषाणां प्रकृतीनां वर्षपृथक्त्वं तु भवति स्थितिबंधः।
स्थितिसत्त्वमसंख्येया वर्षा भवंति नियमेन ॥ ५६४ ॥

स० चं०–अवशेष तीन अघातिया प्रकृतिनिका स्थितिबंध पृथक्त्व वर्ष मात्र अर स्थितिसत्व यथायोग्य असंख्यात वर्षमात्र है नियमकरि ॥ ५६४ ॥

से काले लोहस्स य विदियादो संगहादु पढमठिदी।
ताहे सुहुमं किट्टिं करोदि तव्विदियतदियादी ॥

स्वे काले लोभस्य च द्वितीयतः संग्रहात् प्रथमस्थितिः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उठिप ६७१

तत्र सूक्ष्मां कृष्टिं करोति तद्द्वितीयतृतीयतः ॥ ५६५ ॥

सर्वीक ६७१

सं०चं—बहुरि ताके अनंतरि अपने कालविषैं लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिके द्रव्यतैं प्रदेश समूहका अपकर्षणकरि उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणीरूप प्रथम स्थिति करे है ताका प्रमाण अवशेष रह्या अनिवृत्ति करण कालतैं आवलीमात्र अधिक है। बहुरि तिसही कालविषैं लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टि अर तृतीय संग्रह कृष्टिका जो द्रव्य तातैं प्रदेश समूहको अपकर्षण करि सूक्ष्म है अनुभाग शक्ति जिन विषैं ऐसी सूक्ष्म कृष्टि करै है। सो वादर लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिका द्रव्य सर्व मोहका द्रव्यका चौइसका भागतैं तेईसगुणा है। तातैं अपकर्षण कीया द्रव्य अनुभागकी अपेक्षा सर्व मोह द्रव्यका चौईसवां भागकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीए एक भाग तातैं पांचसै पिचहत्तरि गुणा है। तहां तेईस गुणा तौ लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिरूप द्रव्य है। अर अवशेष पांचसै वावन गुणा द्रव्य रह्या ताकरि सूक्ष्म कृष्टि करिए है। इहां अपकर्षण कीया द्रव्यविषैं तेईसका गुणकार था ताकौं तातैं एक अधिक चौईस ताकरि गुणैं ताके अनंतरि भोगवने योग्य सूक्ष्म कृष्टि ता विषैं संक्रमण होने योग्य द्रव्य पांचसै बावन गुणा हो है। ताके अनंतरि भोगवने योग्य कृष्टिबिषैं संक्रमण द्रव्य संख्यात गुणा कह्या है। बहुरि लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिकौं द्रव्यतैं अपकर्षण कीया द्रव्य है सो सर्व मोह द्रव्यका चौईसवां भागकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भाग हार मात्र है ताकरि सूक्ष्म कृष्टि करिए है। मिलिकरि मोह द्रव्यका चौईसवां भागकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं तातैं पांचसै तरेपण गुणा द्रव्य भया। सो इतने द्रव्यकरि सूक्ष्म कृष्टि करिए है ऐसा तात्पर्य जानना ॥ ५६५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोहस्स तदियसंगहकिट्टीए हेट्ठदो अवट्ठाणं ।
सुहुमाणं किट्टीणं कोहस्स य पढमकिट्टिणिभा ॥

लोभस्य तृतीयसंग्रहकृष्ट्या अधस्तनतः अवस्थानम् ।
सूक्ष्मानां कृष्टीनां क्रोधस्य च प्रथमकृष्टिनिभा ॥ ५६६ ॥

स० चं०–तिनि सूक्ष्म कृष्टिनिका लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिके नीचैं अवस्थान है। बहुरि ते सूक्ष्म कृष्टि क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिके समान हो हैं। कैसैं ? सो कहिए है–

जैसैं अपूर्व स्पर्धकनिके नीचैं अनंतगुणा घटता अनुभाग लीएं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि है तैसैं बादर कृष्टिके नीचैं अनंतगुणा घटता अनुभाग लीएं सूक्ष्म कृष्टिनिकी रचना हो है। बहुरि जैसैं क्रोधकी प्रथमसंग्रह कृष्टिकी अवयव कृष्टिनिका प्रमाण या विना अवशेष बादर कृष्टिनिका जो प्रमाण तातैं संख्यात गुणा है । तैसैं ही सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाण क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि विना अवशेष कृष्टिनिका प्रमाणतैं संख्यात गुणा है। बहुरि जैसैं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि जघन्य कृष्टितैं लगाय उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत अनंत गुणा अनुभाग क्रम लीएं है तैसैं ही सूक्ष्म कृष्टि भी जघन्यतैं लगाय उत्कृष्ट पर्यंत अनंतगुणा अनुभाग लीएं है ॥ ५६६ ॥

कोहस्स पढमकिट्टी कोहे छुद्धे दु माणपढमं च ।
माणे छुद्धे मायापढमं मायाए संछुद्धे ॥ ५६७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोहस्स पढमकिट्टी आदिमसमयकदसुहुमकिट्टीय
आहियकमा पंचपदा सगसंखेज्जादिमभागेण ॥

क्रोधस्य प्रथमकृष्टिः क्रोधे क्षुब्धे तु मानप्रथमं च ।
मानक्षुब्धे मायाप्रथमं मायायां संक्षुब्धायाम् ॥ ५६७ ॥
लोभस्य प्रथमकृष्टिरादिमसमयकृतसूक्ष्मकृष्टिश्च ।
अधिकक्रमाणि पंचपदानि स्वकसंख्येयभागेन ॥ ५६८ ॥

स चं०—प्रथम समयविषैं कीन्ही सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाण ल्यावनेके अर्थि अल्पबहुत्व कहिए है—

क्रोधकी प्रथम संग्रहकी अवयव कृष्टि स्तोक है। बहुरि कृष्टि प्रमाणका चौईसवां भागतैं तेरह गुणी है। बहुरि क्रोधकी तीनों संग्रहकृष्टि मानकीके ऊपरि मिलाएं मानकी प्रथम संग्रहकी अवयव कृष्टि विशेष अधिक हो है। पूर्व राशिकौं त्रिभाग अधिक च्यारिका भाग दीएं एक भागमात्र अधिक है सो सोलह गुणी हो है। बहुरि मानकी तीनौं संग्रह कृष्टि मायाके ऊपरि मिलाएं मायाकी प्रथम संग्रहकी अवयव कृष्टि विशेष अधिक है सो पूर्व राशिकौं त्रिभाग अधिक पांचका भाग दीएं एक भागमात्र अधिक है सो तेरहकी जायगा उगणीस गुणी हो है। बहुरि मायाकी तीनों संग्रह कृष्टि लोभके ऊपरि मिलाएं लोभकी प्रथम संग्रहकी अवयव कृष्टि विशेष अधिक हो है। सो पूर्व राशिकौं त्रिभाग अधिक छहका भाग दीएं एक भागमात्र अधिक हो है सो बाईसगुणी हो है। बहुरि तातैं प्रथम समयविषै कीन्ही सूक्ष्म कृष्टि- ६७३

८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निका प्रमाण विशेष अधिक है। पूर्व राशिकौं ग्यारहका भाग दीएं एक भागमात्र अधिक हो है सो चौईस गुणी हो है ऐसैं पंच स्थान संख्यातवां भाग अधिक क्रम लीएं जानने॥

सुहुमाओ किट्टीओ पडिसमयमसंखगुणविहीणाओ।
दव्वमसंखेज्जगुणं विदियस्स य लोहचरिमोत्ति॥

सूक्ष्माः कृष्टयः प्रतिसमयमसंख्यगुणविहीनाः।
द्रव्यमसंख्येयगुणं द्वितीयस्य च लोभचरम इति॥ ५६९॥

स० चं०–सूक्ष्म कृष्टिका प्रथम समयविषै कीनी ते बहुत हैं। तातैं द्वितीय समयविषै कीनी अपूर्व सूक्ष्म कृष्टि संख्यात गुणी घाटि हैं। ऐसैं क्रमतैं समय समय प्रति करी नवीन अपूर्व कृष्टि संख्यातगुणी घाटि जाननी। बहुरि सूक्ष्मकृष्टिविषै दीया द्रव्य प्रथम समयविषै स्तोक है। तातैं दूसरा समयविषै संख्यातगुणा है। ऐसैं समय समय प्रति सूक्ष्म कृष्टिविषै दीया द्रव्य क्रमतैं संख्यात गुणां जानना। सो द्वितीय संग्रह कृष्टि वेदक कालरूप जो सूक्ष्म कृष्टि करनेका काल ताका अंत समय पर्यंत जानना॥ ५६९॥

दव्वं पढमे समये देदि हु सुहुमेसणंतभागूणं।
थूलपढमे असंखगुणूणं तत्तो अणंतभागूणं॥५७०॥

द्रव्यं प्रथमे समये ददाति हि सूक्ष्मेष्वनंतभागोनं।
स्थूलप्रथमे असंख्यगुणोनं तत अनंतभागोनं॥ ५७०॥

स०चं०–सूक्ष्मकृष्टि करण कालका प्रथम समयविषै सूक्ष्म कृष्टिकी जघन्य कृष्टितैं ल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गाय अनंतवां भाग घटता क्रम लीएं अर उत्कृष्ट सूक्ष्म कृष्टितैं प्रथम जघन्य वादर कृष्टि-विषैं असंख्यात गुणा घटता अर तातैं द्वितीयादि वादर कृष्टिनिविषैं अनंतवां भाग घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। सो इहां विशेष निर्णयके अर्थि व्याख्यान करिए है—सो वादर कृष्टि करणका द्वितीय समयविषै जो विधान कह्या था ताकौं स्मरणकरि इहां जो विधान कहिए है ताकौं समझना। तहां प्रथम आयद्रव्य व्ययद्रव्य घातद्रव्यनिका स्वरूप कहिए है-

लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं तहां एक भागमात्र लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं आय द्रव्य है। बहुरि इतना ही लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिविषै व्यय द्रव्य है। आनुपूर्वी संक्रमणके नियमतैं लोभकी द्वितीय संग्रहकृष्टि-विषैं आय द्रव्य है नाहीं। बहुरि अपनी अपनी संग्रहकी अंत कृष्टिका द्रव्यकौं अपनी अपनी कृष्टिनिका प्रमाणकौं अपकर्षण भागहारका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र जो अंतविषैं नष्टकरीं ऐसी घातकृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणैं अर विशेष अधिक कीएं घात द्रव्यका प्रमाण हो है। तहां घातद्रव्यंकृष्टि संबंधी व्ययद्रव्य सर्व व्यय द्रव्यके असंख्यातवै भाग मात्र है। ताकौं घटाएं जो व्यय द्रव्य रह्या तितना घात द्रव्यतैं ग्रहण करि जिन कृष्टिनिका व्यय द्रव्य भया था तहां ही दीएं स्वस्थान गोपुच्छ हो है। बहुरि घात कृष्टिनिका प्रमाणमात्र जे विशेष तिनकौं घात कीएं पीछे अवशेष रहीं जे कृष्टि तिन एक एक विषैं देना। तातैं ताकौं अवशेष कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणैं जो द्रव्य होइ तितना द्रव्य घात द्रव्यतैं ग्रहि करि दीएं परस्थान गोपुच्छ भी होइ है। ऐसैं सर्वकृष्टिनिका एक गोपुच्छ भया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि पूर्वोक्त दोय प्रकार द्रव्य दीएं पीछे अवशेष जो घात द्रव्य रह्या तिसविषैं ताकौं घात कीएं पीछे अवशेष रहीं कृष्टिनिका प्रमाण मात्र गच्छका भाग दीएं जो एक खंड मध्यम धन रूप भया ताकौं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाण मात्र जे विशेष तिनकरि अधिक कीएं जो द्रव्य भया ताकौं तृतयि संग्रह कृष्टिका अवशेष घात द्रव्यतैं ग्रहि तृतीय संग्रहका जघन्य कृष्टिविषैं दीजिए है। अवशेष द्रव्यविषैं घटता क्रम लीएं अन्य कृष्टिनिविषैं दीजिए है। ऐसैं अपने अपने अवशेष घात द्रव्यकौं दीएं अवशेष घात द्रव्य एक गोपुच्छाकार हो है। ऐसैं एक गोपुच्छाकार तिष्ठती जे कृष्टि तिनिविषैं संक्रमण द्रव्य अर बंध द्रव्यकरि निपजीं कृष्टिनिविषैं संक्रमण द्रव्य अर बंध द्रव्य देनेका विधान कहिए है---

तहां द्वितीय संग्रह कृष्टिविषैं आय द्रव्यका अभाव है। तातैं घात द्रव्यतैं किछू द्रव्य जुदा राखि इहां कहिए है तैसैं देना। अवशेषकौं पूर्वोक्त प्रकार देना। तहां बादर कृष्टि संबंधी एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर घात कीएं पीछैं तृतीय संग्रहकी अवशेष रहीं कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापैं जो संकलन होइ तितना द्रव्य तृतीय संग्रह कृष्टिका आय द्रव्यतैं ग्रहि जुदा स्थापना। अर जितनी तृतीय संग्रहकी कृष्टि भई तितने विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी अवशेष कृष्टिनिका प्रमाण मात्र गच्छ स्थापैं जो संकलन धन होइ तितना द्रव्य द्वितीय संग्रहका घात द्रव्यतैं ग्रहि जुदा स्थापना इनि दोऊनिका नाम अधस्तन शीर्ष द्रव्य है। बहुरि तृतीय संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिका द्रव्यकौ असंख्यातगुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र जो गुण्य सो एक खंड है। ताकौं तृतीय संग्रह संबंधी कृष्टिनिका प्रमाण करि गुणैं जो होइ तितना द्रव्यकौं तृतीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संग्रहके आय द्रव्यतैं ग्रहि स्थापना। अर तिसही गुण्यकौं द्वितीय संग्रहकी कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणैं जो होइ तितना द्रव्यकौं तृतीय संग्रहके आय द्रव्यतैं ग्रहि स्थापना। इनिका नाम मध्यमखंड द्रव्य है। बहुरि उभय द्रव्य संबंधी एक विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर द्वितीय संग्रहकी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धन मात्र उभय द्रव्यके विशेष तिनविषैं अपने एक विशेषका अनंतवां भागमात्र घटाएं अवशेष रह्या तितना द्वितीय संग्रहकी कृष्टिके घात द्रव्यतैं ग्रहि जुदा स्थापना। यहु वेद्यमान कृष्टि है। तातैं याका बंध नाम भी है। सो घटाया द्रव्यकौं बंध द्रव्यविषैं देइ पूर्ण करैंगे इहां द्वितीय संग्रहका घात द्रव्य पूर्ण भया। बहुरि एक अधिक द्वितीय संग्रहकी जेती कृष्टि भईं तितने विशेष आदि एक विशेष उत्तर अर संक्रमण द्रव्यकरि निपजी अपूर्व कृष्टि सहित सर्व तृतीय संग्रहकी कृष्टिनिका प्रमाण मात्र गच्छ स्थापैं तहां संकलन धनमात्र उभयद्रव्यके विशेषनिकौं तृतीय संग्रहके आय द्रव्यतैं ग्रहि स्थापने। इनि दोऊनिका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। बहुरि तीन प्रकार द्रव्यकरि हीन जो तृतीय संग्रहका आय द्रव्य ताकरि अपूर्व नूतन कृष्टि निपजाइए है तिनका प्रमाण ल्याइए है—

एक मध्यम खंड अधिक जो तृतीय संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिका द्रव्य तिस प्रमाण द्रव्यकरि एक संक्रमण संबंधी अंतर कृष्टि निपजै तौ पूर्वोक्त तीन प्रकार द्रव्य रहित संक्रमण द्रव्यकरि केती नवीन कृष्टि निपजैं ऐसैं त्रैराशिक कीएं संक्रमण द्रव्यकरि निपजी कृष्टिनिका प्रमाण आवै है। याका भाग तृतीय संग्रहकी पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणकौं दीएं संक्रमण कृष्टिनिके वीचि अंतरालका प्रमाण आवै है सो संक्रमण कृष्टिनिके प्रमाणका भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवशेष संक्रमण द्रव्यकौं दीएं एक खंड होइ। ताकौं संक्रमण कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणें जो द्रव्य भया ताका नाम संक्रमण अंतर कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य है। अब बंधद्रव्य का विभाग कहिए है—

बंध द्रव्यकरि निपजीं जे अपूर्व अंतर कृष्टि तिनिविषै जो अंत कृष्टि तिसतैं लगाय ताके ऊपरि जेती कृष्टि पाइए तितने विशेष तौ आदि अर बंधांतर कृष्टिनिका अंतराल-मात्र विशेष उत्तर अर बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलनमात्र द्रव्यकौं मोहनीयका समय प्रबद्धतैं गृहि जुदा स्थापना। याका नाम बंधांतर कृष्टिविशेष द्रव्य है। इहां एक मध्यम खंड अधिक तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिका द्रव्यमात्र द्रव्यतैं एक कृष्टि निपजै तौ किंचित् ऊन मोहका समय प्रबद्धमात्र द्रव्यकरि केती निपजै ! ऐसैं त्रैराशिक कीएं बंध द्रव्यकरि करीं अपूर्व अंतर कृष्टिनिका प्रमाण आवै है। याका भाग किंचिदून सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र जो द्वितीय संग्रहकी कृष्टिनिका प्रमाण ताकौं दीएं बंधांतर कृष्टिनिके वीचि अंतरालका प्रमाण आवै है। बहुरि बंध द्रव्यतैं पूर्वोक्त बंधांतर कृष्टिविशेष द्रव्य अर बंध द्रव्यका अनंतवां भागमात्र द्रव्य जुदा स्थापि अवशेष रह्या द्रव्यकौं बंधांतर कृष्टिका भाग दीएं एक खंड होइ। अरयाकौं बंधांतरकृष्टिका प्रमाणकरि गुणें पूर्वोक्त द्रव्य होइ ताका नाम बंधांतर कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य है बहुरि पूर्वैं जो समय प्रबद्धका एक भागमात्र द्रव्य जुदा राख्या ताकौं बंध कृष्टिनिका प्रमाणमात्र जो इहां गच्छ तिसका एक घाटि गच्छका आधा प्रमाण करि हीन जो दोगुण हानि ताकरि गुणी ताका भाग दीएं इहां विशेषका प्रमाण होइ ताकौं सर्व बंध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छका एकवार संकलन धनमात्र प्रमाणकरि गुणैं जो द्रव्य होइ तितना द्रव्य जुदा स्थाप्या बंध द्रव्यका अनंतवां भागमात्र द्रव्यतैं ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम बंध विशेष द्रव्य है। बहुरि बंध द्रव्यका अनतवां भागविषैं इतना घटाएं जो अवशेष रह्या ताकौं सर्व बंधकृष्टिनिका प्रमाणका भाग दीएं एक खंड होइ। ताकौ बंध कृष्टिनिका प्रमाण ही करि गुणैं जो द्रव्य होइ ताका नाम बंधद्रव्य मध्यम खंड है। बहुरि इहां सूक्ष्म कृष्टिविषैं संक्रमण होने योग्य जो द्वितीय तृतीय संग्रहका द्रव्य अपकर्षण कीया ताका विभाग कहिए है—

सूक्ष्मकृष्टि सम्बन्धी जो द्रव्य ताकौं प्रथम समयविषैं करीं सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छकौं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि हीन दोगुणहानिकरि गुणी ताका भाग दीएं एक विशेष होइ ताकौं सूक्ष्म कृष्टिका प्रमाणमात्र गच्छका एकवार संकलन धनमात्र प्रमाणकरि गुणैं जो होइ तितना द्रव्य सूक्ष्मकृष्टि सम्बन्धी द्रव्यतैं ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम सूक्ष्म कृष्टि सम्बन्धी विशेष द्रव्य है। बहुरि याकौं घटाएं जो अवशेष सूक्ष्म कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य रह्या ताकौं सूक्ष्मकृष्टिनिके प्रमाणका भाग दीएं एक खण्ड होइ अर याकौं सूक्ष्मकृष्टिका प्रमाणकरि ही गुणैं जो द्रव्य होइ सो सूक्ष्मकृष्टि सम्बन्धी समान खंड द्रव्य है। ऐसैं क्रमकरि विभाग रूप कीया जो द्रव्य ताके देनेका विधान कहिए है—

सूक्ष्मकृष्टिकी जो जघन्यकृष्टि तिसविषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। तहां सूक्ष्मकृष्टि सम्बन्धी समान खंड द्रव्यतैं एक खण्ड अर सूक्ष्म कृष्टि संबंधी विशेषतैं सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंतपर्यंत सूक्ष्म कृष्टिनिविषैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिद्रव्यके अनंतवां भागमात्र जो एक सूक्ष्म कृष्टि संबंधी विशेष ताकरि घटता अनुक्रमतैं द्रव्य दीजिए है। भावार्थ यहु- एक एक तौ सूक्ष्मकृष्टि संबंधी समान खण्ड अर वीचि होइ गईं कृष्टिनिका प्रमाणकरि हीन सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाणमात्र सूक्ष्म कृष्टि संबंधी विशेष क्रमतैं तिनविषैं दीजिए है। इहां सूक्ष्म कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य समाप्त भया।

बहुरि अंत सूक्ष्म कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं ताके ऊपरि जघन्य वादर कृष्टिविषैं दीया द्रव्य असंख्यातगुणा घटता है। तहां तृतीय संग्रहका च्यारि प्रकार द्रव्यविषैं मध्यमखंडतैं एक खण्ड अर उभय द्रव्य विशेषतैं सर्व वादर कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ग्रहि तहां जघन्य वादर कृष्टिविषैं दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि वादरकृष्टिनिविषैं अनंतवां भागमात्र विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। भावार्थ- द्वितीयादि वादर कृष्टिनिविषैं एकादि एक एक बंधता क्रम लीएं अधस्तन शीर्षके विशेष अर एकादि एक अधिककरि हीन सर्व वादरकृष्टि प्रमाणमात्र उभयद्रव्यके विशेष अर एक एक मध्यम खण्ड तहां दीजिए है। सो एक उभय द्रव्यका विशेषविषैं एक अधस्तन शीर्ष विशेष घटाइए है इतना इतना क्रमतैं घटता द्रव्य दीजिए है सो संक्रमण द्रव्यकरि निपजीं अपूर्व कृष्टि पर्यंत यहु अनुक्रम जानना। बहुरि जहां संक्रमण द्रव्यतैं नवीन अपूर्वकृष्टि निपजीं तिसविषैं संक्रमणांतरकृष्टि संबंधी समान खण्ड उभय द्रव्य विशेष द्रव्यतैं भई कृष्टिनिका प्रमाण करि हीन सर्वकृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। सो यहु अपनी नीचली पूर्व कृष्टिविषै दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वकृष्टिविषैं भई कृष्टिनिका प्रमाणमात्र अधस्तन शीर्षके विशेष एक मध्यम खण्ड भई कृष्टिनिकरि हीन सर्वकृष्टि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निका प्रमाणमात्र उभय द्रव्यके विशेष दीजिए है। सो यहु यातैं नीचली अपूर्वकृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घाटि है। बहुरि ताकै ऊपरि भी पूर्वोक्त प्रकार द्रव्य दीजिए है। बहुरि द्वितीय संग्रहकृष्टिकी जघन्यकृष्टिविषैं भई कृष्टिनिका प्रमाणमात्र अधस्तन शीर्षके विशेष एक मध्यम खण्ड भई कृष्टिनिका प्रमाणकरि हीन सर्वकृष्टिनिका प्रमाण-मात्र उभय द्रव्यके विशेष दीजिए है। ताकै ऊपरि एक एक अधस्तन शीर्ष विशेष बंधता अर एक उभय द्रव्यका विशेष घटता क्रमकरि द्रव्य दीजिए है। विशेष इतना--

बंधकृष्टिकी जघन्य कृष्टितैं लगाय उभय द्रव्यका विशेषविषैं एक विशेषका अनंतवां भागमात्र घटता क्रमकरि द्रव्य दीजिए है। अर तहां बंध द्रव्यतैं एक एक मध्यम खंड अर भई बंध कृष्टिनिकरि हीन सर्वकृष्टिनिका प्रमाणमात्र बंध विशेषकौं ग्राहे दीजिए है। ऐसैं क्रम होतैं जहां बंध द्रव्यकरि अपूर्व कृष्टि निपजाइए है तहां बंध द्रव्यतैं बंधांतर कृष्टि सम्बन्धी समान खण्ड द्रव्यतैं एक खण्ड अर बंधांतर कृष्टि सम्बन्धी विशेष द्रव्यतैं भई सर्व कृष्टिनिका प्रमाणकरि हीन सर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ग्राहिकरि दीजिए है। सो यहु नीचली कृष्टिविषैं दीया बंध द्रव्यतैं अनंतगुणा है। ताकै ऊपरि पूर्व कृष्टिविषैं तीन प्रकार घात द्रव्य दोय प्रकार बंध द्रव्य दीजिए है। सो इहां दीया बंध द्रव्य अपूर्व अंतर कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं अनंतगुणा घाटि है। ताकै ऊपरि बंधरूप पूर्वकृष्टि वा बंध-करि निपजीं अपूर्वकृष्टि वा बंध रहित पूर्वकृष्टिनिविषैं द्रव्य देनेका विधान पूर्वोक्त प्रकार ही जानना। ऐसैं प्रथम समयविषै सूक्ष्म कृष्टि सम्बन्धी प्ररूपण समाप्त भया ॥ ५७० ॥

विदियादिसु समयेसु अपुव्वाओ पुव्वकिट्टिहेट्ठाओ। ६८१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुव्वाणमंतरेसुवि अंतरजणिदा असंखगुणा ॥५७१॥

द्वितीयादिषु समयेषु अपूर्वाः पूर्वकृष्ट्यधस्तनाः ।
पूर्वासामंतरेष्वपि अंतरजानिता असंख्यगुणाः ॥ ५७१ ॥

स० चं०– द्वितीयादि समयनिविषै अपूर्व नवीन सूक्ष्म कृष्टि करिए है। ते पूर्वसमयविषैं कीनी जे सूक्ष्म कृष्टि तिनके नीचैं करिए है अर तिनके वीचि वीचि करिए है। नीचैं करिए तिनकौं अधस्तन कृष्टि कहिए। वीचि करिए तिनकौं अंतरकृष्टि कहिए। तहां अधस्तन कृष्टिनिका प्रमाण स्तोक है। तिनतैं अन्तर कृष्टिनिका प्रमाण असंख्यातगुणा है ॥ ५७१ ॥

दव्वगपढमे सेसे देदि अपुव्वेसणंतभागूणं ।
पुव्वापुव्वपवेसे असंखभागूणमाहियं च ॥ ५७२ ॥

द्रव्यगप्रथमे शेषे ददाति अपूर्वेष्वनंतभागोनम् ।
पूर्वापूर्वप्रवेशे असंख्यभागोनमधिकं च ॥ ५७२ ॥

स०चं०–द्वितीयादि समयनिविषैं प्रथम समयवत् द्रव्य दीजिए है। विशेष इतना–सूक्ष्म कृष्टि सम्बन्धी द्रव्यकौं अधस्तन अपूर्व कृष्टिनिविषैं अनंतवां भाग घटता क्रम लीएं बहुरि पूर्वकृष्टिका प्रवेशविषैं असंख्यातवां भागमात्र घटता अर अपूर्वकृष्टिका प्रवेश होतैं असंख्यातवां भागमात्र अधिक द्रव्य दीजिए है। सोई विशेषकरि कहिए है--

द्वितीयादि समयनिविषैं घात द्रव्य अर संक्रमण द्रव्यका विभाग तौ पूर्ववत् करना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधि बहुरि सूक्ष्म कृष्टिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य समय समय प्रति असंख्यातगुणा है। ताका
कार विभागविषैं विशेष है सो कहिए है-- सटीक

६८३ तिस अपकर्षण कीया द्रव्यतैं पूर्वसमयविषैं कीनी कृष्टि संबंधी एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर पूर्वसमयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धन-मात्र द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम अधस्तन शीर्ष विशेष है। बहुरि पूर्वसमयविषैं कीनी कृष्टिनिविषैं जो जघन्यकृष्टि ताका द्रव्यमात्र एक खंड ताकौं इस वर्तमान समय-विषै कीनी अधस्तन कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणैं जो द्रव्य होइ ताकौं ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम अधस्तन शीर्ष अपूर्वकृष्टि सम्बन्धी समान खंड द्रव्य है। बहुरि तिस ही जघन्य पूर्वकृष्टिका द्रव्यमात्र एक खंडकौं वर्तमान समयविषैं कीनी अंतर अपूर्व कृष्टिनिका प्रमाण करि गुणैं जो द्रव्य होइ ताकौं ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम अंतर अपूर्व कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य है। बहुरि पूर्वसमय अर इस विवक्षित समय सम्बन्धी सर्व सूक्ष्म कृष्टिके द्रव्यकौं पूर्व अपूर्व सर्व सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाणमात्र जो गच्छ ताकौं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि हीन दोगुणहानिकरि गुणि ताका भाग दीएं एक उभय द्रव्य सम्बन्धी विशेष होइ। ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व सूक्ष्मकृष्टि प्रमाण गच्छका एकबार संकलन धनमात्र प्रमाणकरि गुणैं जो द्रव्य होइ ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व सूक्ष्मकृष्टि प्रमाण गच्छका एकबार संकलन धनमात्र प्रमाणकरि गुणैं जो द्रव्य होइ ताकौं ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम
उभयद्रव्य विशेष द्रव्य है। बहुरि ऐसैं कह्या च्यारि प्रकार द्रव्यकौं इस विवक्षित समय- ६८४
विषैं अपकर्षण कीया द्रव्यमैं घटाएं अवशेष जो द्रव्य रह्या ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व सूक्ष्मकृ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष्टिनिके प्रमाणका भाग दीएं एक खंड होइ ताकौं तिस भागहारमात्र प्रमाणकरि गुणैं जो द्रव्य होइ ताकौं जुदा स्थापना। याका नाम मध्यम धन खण्ड द्रव्य है। ऐसैं सूक्ष्मकृष्टिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्यके पांच प्रकार विभाग कहे। तिनके सूक्ष्मकृष्टिनिविषैं देनेका विधान अर पूर्वोक्त प्रकार वादरकृष्टि सम्बन्धी च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्यका तृतीय संग्रहकृष्टिविषैं देनेका विधान अर च्यारि प्रकार बंध द्रव्य तीन प्रकार घात द्रव्यका अनंतवां भागका द्वितीय संग्रह कृष्टिविषैं देनेका विधान इस विवक्षित समय विषैं निरूपण कीजिए है—

विवक्षित समयविषैं कीनी अधस्तन अपूर्वकृष्टि तिनकी जघन्य कृष्टिविषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। तहां पंचप्रकार सूक्ष्म कृष्टि संबंधी द्रव्यनिविषैं अधस्तन कृष्टि संबंधी समान खण्ड द्रव्यतैं एक खण्ड मध्यम द्रव्यतैं एक खण्ड उभय द्रव्य विशेष द्रव्यतैं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिमात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। बहुरि द्वितीय कृष्टिविषैं अनंतवांभाग घटता द्रव्य दीजिए है। तहां एक अधस्तन कृष्टि सम्बन्धी समान खण्ड एक मध्यम खण्ड एक घाटि सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिमात्र उभय द्रव्य विशेष ग्रहि दीजिए है। ऐसैं ही तृतीयादि अंतपर्यंत अधस्तन अपूर्व कृष्टिनिविषैं एक एक उभय द्रव्यका विशेषमात्र घटता क्रमकरि दीजिए है।

बहुरि तिस अंत कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं पूर्व समय सम्बन्धी सूक्ष्म कृष्टिनिकी जो जघन्य कृष्टि तिसविषैं असंख्यातवां भागमात्र घटता द्रव्य दीजिए है। तहां मध्यम खंडतैं एक खण्ड उभय द्रव्य विशेष द्रव्यतैं भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्व सूक्ष्म कृष्टि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निका प्रमाणमात्र विशेष द्रव्य ग्राहि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीय पूर्वकृष्टि-विषै अनंतवां भाग घटता द्रव्य दीजिए है। तहां अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्यतैं एक विशेष मध्यम खंडतैं एक खंड उभय द्रव्य विशेषतैं भई कृष्टिनिकरि सर्व सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ग्राहि दीजिए है। ऐसैं ही तृतीयादि पूर्वकृष्टिनिविषै एक एक अधस्तन शीर्ष विशेष बंधता अर एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता अर एक एक मध्यम खण्ड समानरूप द्रव्य दीजिए है। यावत् अपूर्व अंतर कृष्टि प्राप्त न होइ तावत् ऐसा क्रम जानना। बहुरि ऐसैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र कृष्टि भएं तहां अंत कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं ताके ऊपरि नवीन निपजाई जो अपूर्व अंतरकृष्टि तिसविषैं असंख्यातवां भागमात्र कृष्टि भएं तहां अंतविषैं दीया द्रव्यतैं ताके ऊपरि नवीन निपजाई जो अपूर्व अंतरकृष्टि तिसविषैं असंख्यातवां भागमात्र अधिक द्रव्य दीजिए है। तहां अंतरकृष्टि सम्बन्धी समान खण्ड द्रव्यतैं एक खण्ड अर मध्यम खंडतैं एक खंड अर उभय द्रव्य विशेष द्रव्यतैं भई कृष्टिनिकरि हीन सर्व सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ग्राहि दीजिए है। बहुरि तातैं ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि तिसविषैं असंख्यातवां भागमात्र घटता द्रव्य दीजिए है तहां अधस्तन शीर्ष विशेषतैं एक घाटि भई पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष अर मध्यम खंडतैं एक खंड अर उभय द्रव्य विशेषतैं भई सर्व कृष्टिनिकरि हीन सर्वकृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष ग्राहि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक अधस्तन शीर्ष विशेष बंधता एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता एक एक मध्यम खंड समानरूप दीजिए है यावत् अपूर्व अंतर कृष्टि न प्राप्त होइ। बहुरि ताके ऊपरि अपूर्व अंतरकृष्टि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषैं एक अंतर कृष्टि सम्बन्धी समान खंड एक मध्यम खंड भईं कृष्टिनिकरि हीन सर्व कृष्टि प्रमाणमात्र उभय द्रव्य विशेष दीजिए है। सो यहु दीया द्रव्य अपनी नीचली कृष्टिनिविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातवां भागमात्र अधिक है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वकृष्टि-विषैं एक घाटि भईं पूर्वकृष्टि प्रमाणमात्र अधस्तन शीर्ष विशेष एक मध्यम खंड भईं सर्व कृष्टिनिकरि हीन सर्व कृष्टि प्रमाणमात्र उभय द्रव्य विशेष द्रव्य दीजिए है सो यहु तिस अपूर्व अंतरकृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातवां भागमात्र घटता है। ताके ऊपरि पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषै ऐसै ही अनुक्रमकरि द्रव्यका देना जानना। यावत् प्रथम समयकृत सूक्ष्म कृष्टिनिकी अंतकृष्टि होइ। बहुरि ताके ऊपरि लोभकी तृतीय वादर संग्रहकृष्टि-की जघन्य कृष्टि तिसविषैं अंत सूक्ष्म कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घटता दी-जिए है। तहां च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्यविषैं मध्यम खंडतैं एक खंड उभय द्रव्य विशेषतैं सर्व वादर कृष्टिमात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि तृतीय संग्रहकृष्टिविषै च्यारिप्रकार संक्रमण द्रव्य देनेका अर द्वितीय संग्रहकृष्टिविषैं च्यारिप्रकार बंध द्रव्य तीन प्रकार घात द्रव्य देनेका विधान द्वितीय संग्रहकी उत्कृष्टकृष्टि पर्यंत जैसैं प्रथम समय विषैं द्रव्य देनेका विधान कह्या तैसैं ही जानना। या प्रकार द्वितीयादि समयनिविषैं द्रव्य देनेका विधान जानना॥ ५७२॥

पढमादिसु दिस्सकमं सुहुमेसु अणंतभागहीणकमं।
वादरकिट्टिपदेसो असंखगुणिदं तदो हीणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमादिसु दृश्यक्रमं सूक्ष्मेष्वनंतभागहीनक्रमं ।
वादरकृष्टिप्रदेशः असंख्यगुणितस्ततो हीनः ॥ ५७३ ॥

स० चं– अब दीया द्रव्य वा पूर्वद्रव्य मिलैं कृष्टिनिविषैं देनेमें आया ऐसा दृश्यमान द्रव्य ताका क्रम कहिए है—

प्रथमादि समयनिविषैं जघन्य सूक्ष्म कृष्टिविषै दृश्यमान द्रव्य बहुत है । ताके ऊपरि द्वितीयादि अंतपर्यंत सूक्ष्मकृष्टिनिविषैं अनंतगुणा घटता क्रम लीएं दृश्यमान द्रव्य है । एक एक विशेष मात्र घटता है । बहुरि ताके ऊपरि तृतीय संग्रहकी वादर जघन्य कृष्टि ताका प्रवेश होतैं तिसविषैं दृश्यमान द्रव्य अंत सूक्ष्म कृष्टिका दृश्यमान द्रव्यतैं असंख्यात गुणा है । ताके ऊपरि द्वितीयादि द्वितीय संग्रहकी अंत वादर कृष्टि पर्यंत दृश्यमान द्रव्य अनंतगुणा घटता क्रम लीएं एक एक विशेष मात्र घटता है ऐसा जानना ॥ ५७३ ॥

लोहस्सयतदियादो सुहुमगदं विदियदो दु तदियगदं ।
विदियादो सुहुमगदं दव्वं संखेज्जगुणिदकमं ॥

लोभस्य च तृतीयतः सूक्ष्मगतं द्वितीयस्तु तृतीयगतं ।
द्वितीयितः सूक्ष्मगतं द्रव्यं संख्येयगुणितक्रमं ॥ ५७४ ॥

स० चं– लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टितैं जो द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि रूप परिनम्या सो स्तोक है । तातैं लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टितैं जो द्रव्य लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टि रूप परिनम्या सो संख्यात गुणा है । तातैं लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टितैं जो द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि रूप परि- ६८७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नग्या सो संख्यात गुणा है जातैं लोभकी तृतीय संग्रहकी कृष्टिनिका प्रमाणतैं सूक्ष्म कृष्टिका प्रमाण संख्यात गुणा है ॥ ५७४ ॥

किट्टीवेदगपढमे कोहस्स य विदियदो दु तदियादो ।
माणस्स य पढमगदो माणतियादो दु माणपढमगदो ॥
मायतियादो लोभस्सादिगदो लोभपढमदो विदियं ।
तदियं च गदा दव्वा दसपदमहियकमा होंति ॥

कृष्टिवेदकप्रथमे क्रोधस्य च द्वितीयतस्तु तृतीयतः ।
मानस्य च प्रथमगतं मानत्रयात् तु मानप्रथमगतः ॥ ५७५ ॥
मायात्रिकात् लोभस्यादिगता लोभप्रथमतो द्वितीयं ।
तृतीयं च गतानि द्रव्याणि दशपदमधिकक्रमाणि भवंति ॥ ५७६ ॥

स० चं– इहां सूक्ष्म कृष्टिनिविषैं संक्रमण भया द्रव्यके प्रमाण ल्यावनेका साधक ऐसा बादर कृष्टिविषैं संक्रमण भया प्रदेशनिका अल्पबहुत्व कहिए है––

बादर कृष्टि वेदक कालका प्रथम समयविषैं क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टितैं मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण भया द्रव्य स्तोक है। तातैं क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टितैं मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण भया द्रव्य विशेष अधिक है। जातैं स्तोक अनुभाग युक्त तृतीय संग्रह विषैं कृष्टिनिका प्रमाण है सो वह अनुभाग युक्त द्वितीय संग्रहकी कृष्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टिनिका प्रमाणतैं विशेष अधिक है तातैं संक्रमण द्रव्य भी विशेष अधिक जानना। इहां पात्रके अनुसारि अधिकपना जानना। पात्रके अनुसारि कहा? द्वितीय संग्रहकी कृष्टिनिका प्रमाणतैं तृतीय संग्रहकी कृष्टिनिका प्रमाण जैसैं अधिक कह्या तैसैं ही संक्रमण द्रव्य भी अधिक कहना। सो इहां पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक जानना। बहुरि तातैं मानकी प्रथम संग्रह कृष्टितैं मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण भया द्रव्य विशेष अधिक है। इहां भी पात्रानुसारि क्रोधकी तृतीय संग्रहकी कृष्टिनितैं मानकी प्रथम संग्रहकी कृष्टि जैसैं अधिक है तैसैं ही आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र अधिक जानना। बहुरि तातैं मानकी द्वितीय संग्रह कृष्टितैं मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण भया द्रव्य विशेष अधिक है। तातैं मानकी तृतीय संग्रहकृष्टितैं मायाकी प्रथमसंग्रहकृष्टिविषैं संक्रमण भया द्रव्य विशेष अधिक है इहां दोऊ जायगा पात्रानुसारि अधिकका प्रमाण पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भाग मात्र है। बहुरि तातैं मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टितैं लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिविषैं संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक है। इहां पात्रानुसारि विशेषका प्रमाण आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र है। बहुरि तातैं मायाकी द्वितीय संग्रहतैं लोभकी तृतीय प्रथम संग्रहकृष्टिविषैं संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक है। तातैं मायाकी तृतीय संग्रहतैं लोभकी प्रथम संग्रह विषैं संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक है। इहां दोऊ जायगा विशेषका प्रमाण पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र है। तातैं लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टितैं लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण भया प्रदेश समूह विशेष अधिक है। ६८९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां पात्रानुसारि विशेषका प्रमाण आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र है। इहां प्रश्न—

जो अन्य कषायकी संग्रहकृष्टिका द्रव्य अन्य कषायकी संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण होना कह्या तहां परस्थान संक्रमणविषैं अपने अपने द्रव्यकौं अधः प्रवृत्त भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र द्रव्य संक्रमण हो है तातै अन्य कषायविषैं संक्रमण द्रव्यतैं विशेष अधिकका क्रम कह्या सो तौ बनै है। बहुरि लोभकी प्रथम संग्रहतैं ताहीकी द्वितीय संग्रहविषैं संक्रमण भया सो इहां स्वस्थान संक्रमण है। सो इहां अपने द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एकभागमात्र द्रव्य संक्रमण हो है। अर अधः प्रवृत्त भागहारतैं अपकर्षण भागहार असंख्यात गुणा घटता है तातैं पूर्वोक्त संक्रमण द्रव्यतैं याका संक्रमण द्रव्य असंख्यात गुणा कहौ, विशेष अधिक कैसे कहौ हो? ताका समाधान—

इहां परिणामके अतिशयतैं अधः प्रवृत्त भागहार भी अपकर्षण भागहारहीके अनुसारि बर्तैं है सो ऐसा विशेष इहां ही संभवै है अन्यत्र सर्वत्र अधः प्रवत्त भागहारतैं अपकर्षण भागहार असंख्यात गुणा घटता ही जानना। बहुरि तातैं लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टितैं लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक है। इहां पात्रानुसारि विशेषका प्रमाण पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भाग मात्र है। ऐसैं दश स्थान अधिक क्रम लीएं जानने ॥ ५७५–५७६ ॥

कोहस्स य पढमादो माणादी कोधतदियविदियगदं।
तत्तो संखेज्जगुणं अहियं संखेज्जसंगुणियं ॥५७७॥ ६९०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोधस्य च प्रथमात् मानादौ क्रोधतृतीयद्वितीयगतम् ।
ततः संख्येयगुणमधिकं संख्येयसंगुणितम् ॥ ५७७ ॥

स० चं०– बहुरि तिस पूर्वोक्त क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टितैं मानकी प्रथम संग्रह विषैं संक्रमण भया द्रव्य संख्यात गुणा है। जातैं लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिका द्रव्यतैं क्रोधकी प्रथम संग्रहका द्रव्य तेरह गुणा है। बहुरि तातैं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टितैं क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक है। इहां विशेषका प्रमाण पात्रानुसारि पल्यका असंख्यातवां भागमात्र है। बहुरि तातैं क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टितैं क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण भया प्रदेश समूह असंख्यात गुणा है। यद्यपि इहां पूर्वोक्ततैं पात्र अल्प है, स्तोक कृष्टिनिका प्रमाण है तथापि वेदिये है जो संग्रह कृष्टि ताका द्रव्य है सो ताके अनंतरि जो संग्रह कृष्टि वेदनेमें आवै तहां संक्रमण होने योग्य औरानितैं संख्यात गुणा कह्या है तातैं इहां वेद्यमान क्रोधकी प्रथम संग्रहका ताके अनंतरि वेद्यमान द्वितीय संग्रह विषैं संक्रमण भया द्रव्य संख्यात गुणा कह्या है। ऐसैं इस कथनका अवसर उलंघि आए तो भी इहां कथन कीया सो सूक्ष्मकृष्टिका प्रमाण ल्यावनेकौं पूर्वैं कथन कीया ताकमैं मिलावनेकौं कह्या है। कैसैं ? लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टितैं जो ताकी तृतीय संग्रह कृष्टिविषैं संक्रमण प्रदेश भया तातैं संख्यात गुणा प्रदेश सूक्ष्मकृष्टि रूप हो है। ऐसैं यह अनुक्रम कह्या सो इहां ही यह गुणकारकी प्रवृत्ति नाही भई है। पूर्वैं वादर कृष्टिविषैं भी संख्यात गुणी द्रव्यतैं संक्रमण भया द्रव्य संख्यात गुणा कहा है। ऐसैं क्रोधका द्रव्य तेरह गुणा था तातैं संक्रमण भया द्रव्य चौदहका गुणकार लीएं कह्या था ऐसैं ही क्रमतैं इहां लोभकी द्वितीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिका द्रव्य तेईस गुणा है तातैं संक्रमण भया द्रव्य चौईसका गुणकार लीएं जानना। इस अनुक्रम जाननेकौं इहां यह कथन कीया है॥ ५७७॥

लोभस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जाव पढमठिदी।
आवलितियमवसेसं आगच्छदि विदियदो तदियं॥

लोभस्य द्वितीयकृष्टिं वेद्यमानस्य यावत् प्रथमस्थितिः।
आवलित्रिकमवशेषमागच्छाति द्वितीयतस्तृतीयं॥ ५७८॥

स० चं०—या प्रकार लोभकी द्वितीय संग्रहकृष्टिकौं वेदता जीवकैं ताकी प्रथम स्थितिविषैं यावत् तीन आवली अवशेष रहैं तावत् द्वितीय संग्रहतैं तृतीय संगृहकौं द्रव्य संक्रमण रूप होइ प्राप्त हो है। सो कहिए है—

लोभकी द्वितीय संग्रहकी प्रथमस्थितिविषैं विश्रमणावली संक्रमणावली उच्छिष्टावली ए तीन अवशेष रहैं तावत् लोभकी द्वितीय संग्रहका द्रव्य लोभकी तृतीय संग्रहविषै दीजिए है। जातैं तृतीय संग्रहविषैं संक्रमण भया जो द्रव्य सो तहां विश्रमणावली पर्यंत तौ तहां ही विश्रामकरि तिष्ठै पीछैं संक्रमणावलीविषै सूक्ष्मकृष्टिरूप होइ संक्रमण करै तब उच्छिष्टावलीमात्र प्रथम स्थिति अवशेष रहि जाय तातैं तीन आवली अवशेष रहैं तावत् द्वितीय संग्रहका द्रव्य तृतीय संग्रहविषै संक्रमण होना कह्या। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीय संग्रहका द्रव्य अपकर्षण संक्रमणकरि सूक्ष्मकृष्टि हीविषै संक्रमण करै है। यावत् दोय आवली अवशेष रहैं तावत् ऐसैं जानना। बहुरि तहां आगाल प्रत्यागालकी व्युच्छित्ति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि बहुरि समय घाटि आवलीमात्र निषेकनिकौं अधोगलनरूप क्रमतैं भोगि समय अधिक आवली अवशेष राखे है ॥ ५७८ ॥

तत्तो सुहुमं गच्छदि समयाहियआवलीयसेसाए।
सव्वं तदियं सुहुमे णव उच्छिट्ठं विहाय विदियं च॥

ततः सूक्ष्मं गच्छति समयाधिकावलीशेषायाम्।
सर्वं तृतीयं सूक्ष्मे नवकमुच्छिष्टं विहाय द्वितीयं च ॥ ५७९ ॥

स० चं– बहुरि तहां द्वितीय संग्रहकी प्रथम स्थितिविषै समय अधिक आवली अवशेष रहैं अनिवृत्ति करणका अंत समय हो है। तहां लोभकी तृतीय संग्रहकृष्टिका तौ सर्व द्रव्य सूक्ष्मकृष्टिकौं प्राप्त हो है। बहुरि लोभकी द्वितीय संग्रहका द्रव्यविषैं समय अधिक उच्छिष्टावलीमात्र निषेक अर समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्ध एतौ बादर कृष्टिरूप रहैं हैं। अन्य सर्वद्रव्य सूक्ष्मकृष्टिरूप द्रव्यार्थिक नय अपेक्षा तौ इससमयविषैं परिनमैं है। बहुरि पर्यायार्थिक नय अपेक्षा अगले समयविषै उच्छिष्टावलीमात्र निषेक अर दोय समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्ध विना अन्य सर्व द्वितीय संग्रहका द्रव्य सूक्ष्मकृष्टिरूप परिनमै है ऐसा जानना ॥ ५७९ ॥

लोभस्स तिघादीणं ताहे अघादीतियाण ठिदिबंधो।
अंतो दु मुहुत्तस्स य दिवसस्स य होदि वरिसस्स॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोभस्य त्रिघातिनां तत्राघातित्रयाणां स्थितिबंधः ।
अंतस्तु मुहूर्तस्य च दिवसस्य च भवति वर्षस्य ॥ ५८० ॥

स० चं– तहां अनिवृत्ति करणका अंतसमयविषै संज्वलन लोभका जघन्यस्थितिबंध अंतर्मुहूर्तमात्र है। इहां ही मोहबंधकी व्युच्छित्ति भई। बहुरि तीन घातियानिका एक दिनतैं किछू घाटि अर तीन अघातियानिका एक वर्षतैं किंचित् न्यून स्थिति बन्ध हो है ॥ ५८० ॥

ताणं पुण ठिदिसंतं कमेण अंतोमुहुत्तयं होइ ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि असंखवस्साणि ॥५८१॥

तेषां पुनः स्थितिसत्त्वं क्रमेणांतर्मुहूर्तकं भवति ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि असंख्यवर्षाणि ॥ ५८१ ॥

स० चं०— तहां तिनिका स्थिति सत्त्व क्रमकरि लोभका अंतर्मुहूर्त तीन घातियानिका यथायोग्य संख्यात हजार वर्षमात्र, तीन अघातियानिका यथायोग्य असंख्यात वर्षमात्र है ॥ ५८१ ॥

से काले सुहुमगुणं पडिवज्जादि सुहुमकिट्टिठिदिखंडं ।
आणायदि तद्दव्वं उक्कट्टिय कुणादि गुणसेढिं ॥५८२॥

स्वे काले सूक्ष्मगुणं प्रतिपद्यते सूक्ष्मकृष्टिस्थितिखंडं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आनयति तद्द्रव्यं अपकृष्य करोति गुणश्रेणिं ॥ ५८२॥

स० चं– अनिवृत्ति करणका अंतसमयके अनंतरि सूक्ष्मकृष्टिनिकौं वेदतौ संतौ अपने कालविषे सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानकौं प्राप्त हो है। इहां ताका प्रथम समयविषैं लोभकी सूक्ष्मकृष्टिनिकी जो अंतर्मुहूर्तमात्र स्थिति है ताके संख्यातवे भागमात्र स्थिति कांडक आयाम लांछित हो है। बहुरि मोहका कृष्टिकौं प्राप्त भया अनुभाग ताका तौ अनुसमयापवर्तन अर ज्ञानावरणादिकनिका स्थितिकांडक घात अनुभाग कांडक घात सो पूर्वोक्तवत् वर्तै है। बहुरि तिस समयविषैं द्रव्य निक्षेपणका विधान कहिए है–

सूक्ष्मकृष्टि सम्बन्धी स्थितिविषै प्राप्त जो मोहका सर्वद्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भाग अपकर्षणकरि गुणश्रेणि करै है॥ ५८२ ॥

गुणसेढि अंतरट्ठिदि विदियट्ठिदि इदि हवंति पव्वतिया
सुहुमगुणादो आहिया अवट्ठिदुदयादि गुणसेढी ॥

गुणश्रेणिरंतरास्थितिः द्वितीयस्थितिरिति भवंति पर्वत्रयाणि।
सूक्ष्मगुणतोऽधिका अवस्थितोदयादिः गुणश्रेणी ॥ ५८३ ॥

स० चं— गुणश्रेणि १ अंतर स्थिति २ द्वितीय स्थिति ३ ए तीन पर्व हैं। अपकर्षण कीया हूवा द्रव्य इन तीनविषैं विभागकरि दीजिए है। इहां यावत् अपकर्षण कीया द्रव्यकौं असंख्यातगुणा क्रम लीएं दीजिए ताका नाम गुणश्रेणि है। बहुरि ताके ऊपरिवर्ती जिनि निषेकानिका पूर्वें अभाव कीया था तिनका प्रमाणरूप अंतर स्थिति है। ताके उप- ६९५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिवर्ती अवशेष सर्वस्थिति ताका नाम द्वितीय स्थिति है। तहां सूक्ष्म सांपरायका जो काल तातैं किछु विशेषकरि अधिक है तौ भी इहां संभवता ज्ञानावरणादिकनिका गुणश्रेणि आयामतैं अंतर्मुहूर्तमात्र घटता ऐसा इहां गुणश्रेणि आयाम है सो यहु उदयादि अवस्थित है। उदयरूप जो वर्तमान समय तातैं लगाय यहु पाइए है। पूर्ववत उदयावली भए पीछैं नाही है तातैं उदयादि कहिए है। बहुरि अवस्थिति प्रमाण लीएँ है। पूर्वैं गलितावशेष गुणश्रेणि आयामविषै एक एक समय व्यतीत होतैं गुणश्रेणि आयामविषै घटता होता था अब एक एक समय व्यतीत होतैं ताके अनंतरवर्ती अंतरायामका एक २ समय मिलि गुणश्रेणि आयामका जेताका तेता रहै है तातैं अवस्थित कहिए॥ ५८३॥

उक्कट्टिदइगिभागं गुणसेढीए असंखबहुभागं।
अंतराहिद विदियठिदी संखसलागा हि अवहरिया॥
गुणिय चउरादिखंडे अंतरसयलट्ठिदिम्हि णिक्खिवादि
सेसवहुभागमावलिहीणे वितियट्ठिदीएहु॥ ५८५॥

अपकर्षितैकभागं गुणश्रेण्यामसंख्यबहुभागम्।
अंतराहिते द्वितीयास्थितिः संख्यशलाका हि अपहारिताः॥ ५८४॥
गुणित्वा चतुरादिखंडे अंतरसकलास्थितौ निक्षिपति।
शेषबहुभागमावलिहीने द्वितीयास्थितौ हि॥ ५८५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं–अपकर्षण कीया जो द्रव्य ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र असंख्यातका भाग दीएं तहां एकभागमात्र द्रव्यकौं गुणश्रेणी आयामविषै दीजिए है। बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्यकौं अंतर स्थितिका भाग द्वितीय स्थितिकौं दीएं जो संख्यात प्रमाण लीएं एकशलाकाका प्रमाण आवै ताका भाग दीजिए तहां एकभागकौं संदृष्टि अपेक्षा च्यारिकरि गुणिए इतना द्रव्य अंतर स्थितिविषैं दीजिए है। बहुरि अवशेष सर्वद्रव्य सो अंतविषैं अतिस्थापनावलीकरि हीन जो द्वितीय स्थिति तीहविषैं दीजिए है। सोई दिखाइए है–

अंतर स्थितिका प्रमाण सर्वतैं स्तोक सो संदृष्टिकरि चौगुणा अंतर्मुहूर्तमात्र बहुरि तातैं स्थितिकांडकायामका प्रमाण संख्यातगुणा सो संदृष्टिकरि सोलहगुणा अंतर्मुहूर्तमात्र बहुरि तातैं स्थितिकांडकके नीचैं जो अवशेष स्थिति रहै ताका प्रमाण संख्यातगुणा सो संदृष्टिकरि चौसठि गुणा अंतर्मुहूर्तमात्र स्थितिकांडकायाम अर अवशेष स्थिति जोडैं सर्व द्वितीय स्थितिका प्रमाण होइ सो असीगुणा अंतर्मुहूर्तमात्र स्थितिकांडकायामका भाग द्वितीय स्थिति आयामकौं दीएं संदृष्टिकरि बीस पाए सो ऐसा संख्यात प्रमाण लीएँ जो शलाका ताका भाग असंख्यात बहुभागमात्र अपकर्षण द्रव्यकौं दीएं तहां एक खंडकौं अंतर स्थितिविषैं देना कहिए तौ अंतर स्थितिका अंत निषेकविषै दीया द्रव्यतैं द्वितीय स्थितिविषैं दीया द्रव्य किंचित् ऊन होइ, अर दोय खण्ड देना कहिए तौ किंचित् न्यून त्रिभागमात्र होइ। ऐसैं क्रमकरि यथायोग्य संख्यात खण्ड ग्रहि अंतर स्थितिविषैं दीजिए है। सो बहु अपकर्षण कीया सर्वद्रव्यके संख्यातवै भागमात्र होइ। संदृष्टिकरि तिस असंख्यात बहुभागमात्र द्रव्यकौं बीसका भाग देइ च्यारिकरि गुणैं अंतर स्थितिविषैं दीया द्रव्यका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमाण आवै है। बहुरि तिस असंख्यात बहुभागमात्र द्रव्यविषैं इतना घटाएं जो अवशेष रहा सो द्वितीय स्थितिविषैं अंतविषैं अतिस्थापनावली छोडि सर्वत्र दीजिएं है। संदृष्टि करि तिस असंख्यात बहुभागमात्र द्रव्यकौं बीसका भाग देइ तहां सोलह भागमात्र द्रव्य द्वितीय स्थितिविषैं दीजिए है॥ ५८४–५८५॥

अंतरपढमठिदित्ति य असंखगुणिदक्कमेण दिज्जदि हु।
हीणकमं संखेज्जगुणूणं हीणक्कमं तत्तो॥५८६॥

अंतरप्रथमस्थित्यंतं असंख्यगुणितक्रमेण दीयते हि।
हीनक्रमं संख्येयगुणोनं हीनक्रमं ततः॥ ५८६॥

स० चं– अंतरायामकी प्रथम स्थिति जो प्रथम निषेक तहां पर्यंत तौ असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि हीन क्रम लीएं संख्यात गुणा घटता बहुरि हीन क्रमलीएं द्रव्य दीजिए है। सोई कहिए है।

गुणश्रेणि आयामका प्रथम निषेकविषैं दीया द्रव्यकी एक शलाका तातैं द्वितीय निषेकविषैं दीया द्रव्यकी शलाका पल्यकी असंख्यातवां भाग गुणी है। ऐसैं क्रमतैं गुणकार लीएं अंत निषेक पर्यंत जेती शलाका होइ तिनका जोड दीएं जो प्रमाण होइ ताका भाग गुण श्रेणिविषैं देने योग्य पूर्वोक्त द्रव्यकौं देइ तहां एक भागकौं अपनी अपनी शलाका प्रमाण करि गुणें प्रथमादि निषेकनिविषैं द्रव्य देनेका प्रमाण आवै है। अंकसंदृष्टिकरि जैसैं एकतैं लगाय चौगुणी चौगुणी शलाका च्यारि निषेकनिविषैं स्थापि १। ४। १६। ६४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जोडैं पिचासी होइ। ताका भाग द्रव्यकौं देइ एक च्यारि आदिकरि गुणैं प्रथमादि निषेकनिविषै दीया द्रव्यका प्रमाण आवै है। इहां गुणकारविषैं जोड़ देनेका प्रमाण करण सूत्र यह जानना--

पदमितगुणहतिगुणितप्रभेदः स्याद्गुणधनं तदा तदा द्व्यूनं
एकोनगुणविभक्तं गुणसंकलितं विजानीयात् ॥ १ ॥

गच्छ मात्र गुणकारनिकौं परस्पर गुणैं गुणधन होइ। तहां प्रथम स्थान घटाइ अवशेषकौं एक घाटि गुणकारका भाग दीएं गुणकार विषैं संकलनधन आवै है। जैसैं इहां संदृष्टिविषैं गच्छ च्यारि गुणकार च्यारि सो च्यारि जायगा च्यारि च्यारि माडि परस्पर गुणैं दोयसैं छप्पन होइ तामैं आदि एक घटाइ अवशेषकौं एक घाटि गुणकार तीन ताका भाग दीएं जोड पिच्यासी हो है। सो ऐसैं वर्तमान उदय रूप गुणश्रेणिका प्रथम निषेकतैं लगाय गुणश्रेणि शीर्ष पर्यंत दीजिए है। गुणश्रेणिका अंतका निषेककौं गुणश्रेणि शीर्ष कहिए है सो सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषैं तो इहां कह्या गुणश्रेणि आयाम ताका जो अंत निषेक सोई गुण श्रेणि शीर्ष है। बहुरि द्वितीयादि समयनिविषैं एक एक समय व्यतीत होतैं जो अंतरायामका प्रथमादि निषेक गुणश्रेणिविषैं (श्रेणि) मिल्या सो गुणश्रेणी शीर्ष है। जातैं इहां अवस्थित गुणश्रेणि आयाम है। बहुरि गुणश्रेणिके उपरिवर्ती जो अंतरायामके निषेक तिनिविषैं द्रव्य देनेका विधान कहिए है--

अंतरायामविषैं देनेयोग्य जो पूर्वोक्त द्रव्य ताकौं अंतरायाममात्र गच्छका भागदीएं मध्यम धन होइ। तीहिविषैं एकघाटि गच्छका आधा प्रमाणमात्र विशेष जोडैं जो होइ तितना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्य अंतरायामका प्रथम निषेकविषैं दीजिए है सो यहु द्रव्य गुणश्रेणी शीर्षविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा है । तातैं सूत्रविषैं अंतरायामका प्रथम निषेक पर्यंत असंख्यात गुणा देय द्रव्य कह्या । वहुरि ताके ऊपरि अंतरायामके द्वितीयादि निषेकनिविषैं एक एक विशेषकरि घटता क्रमलीएं द्रव्य दीजिए है सो यावत् अंतरायामका अंतनिषेक होइ तावत् ऐसा क्रम जानना । अव द्वितीय स्थिति निषेकनिविषैं द्रव्य देनेका विधान कहिए है—

द्वितीय स्थितिविषैं देनेयोग्य जो पूर्वोक्त द्रव्य ताकौं आवली रहित द्वितीय स्थिति-का प्रमाणमात्र जो गच्छ ताका भाग दीएं मध्यधन होइ । यामैं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणमात्र विशेष जोडैं जो होइ तितना द्रव्य द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेक विषैं दीजिए है । सो यहु दीया द्रव्य अंतरायामका अंतनिषेक विषैं दीया द्रव्यतैं संख्यात गुणा घटता है । तातैं सूत्रविषैं इहां दीया द्रव्य संख्यात गुणा घटता कह्या । वहुरि ताके उपरि द्वितीय स्थितिके द्वितीयादि निषेकनिविषैं एक एक विशेष घटता क्रमकरि द्रव्य दीजिए है । ऐसैं देय द्रव्यका विधान कह्या ॥ ५८६ ॥

अंतरपढमठिदित्ति य असंखगुणिदक्कमेण दिस्सदि हु ।
हीणकमेण असंखेज्जेण गुणं तो विहीणकमं ॥

अंतरप्रथमस्थित्यंतं च असंख्यगुणितक्रमेण दृश्यते हि ।
हीनक्रमेण असंख्येयेन गुणमतो विहीनक्रमम् ५८७ ॥

स० चं०—पूर्व द्रव्य वा दीया द्रव्य मिलि जो दृश्यमान होइ ताका विधान कहिए है—वर्त-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मान समयसंबंधी निषेकविषैं दृश्यमान द्रव्य स्तोक है तातैं अंतरायामका प्रथम निषेक पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं है। बहुरि ताके ऊपरि अंतरायामका अंत निषेक पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं है। इहां पर्यंत देयद्रव्यका जैसैं क्रम कह्या तैसैं ही दृश्यमान द्रव्यका भी क्रम जानना। बहुरि तातैं ताके उपरि द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेकका दृश्यमान द्रव्य असंख्यात गुणा है। बहुरि ताके ऊपरि ताका अंत निषेकपर्यंत विशेष घटता क्रमलीएं दृश्यमान द्रव्य है। याप्रकार सूक्ष्मसांपरायका प्रथमसमयतैं लगाय प्रथमस्थिति कांडकका घात यावत् न होइ निबरै तावत् असा क्रम जानना। विशेष इतना अपकर्षण कीया द्रव्यका प्रमाण समय समय असंख्यात गुणा जानना॥ ५८७॥ तहां प्रथम कांडककी अंत फालिके द्रव्यका प्रमाण ल्यावने निमित्ति कहिए है—

कंडयगुणचरिमठिदी सविसेसा चरिमफालिया तस्स।
संखेज्जभागमंतराठिदिम्हि सव्वे तु बहुभागं॥ ५८८॥

कांडकगुणचरमस्थितिः सविशेषा चरमस्फालिका तस्य।
संख्येयभागमंतरस्थितौ सर्वायां तु बहुभागम्॥ ५८८॥

स॰ चं॰—कांडकायाम करि गुणित जो विशेष सहित अंतस्थिति तीहिं प्रमाण अंतफालि द्रव्य है। ताका संख्यातवां भाग तौ अंतरस्थितिविषैं, बहुभाग सर्वस्थितिविषैं दीजिए है, सोइ कहिए है—

द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकविषैं एक घाटि द्वितीय स्थिति आयाममात्र विशेष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घटाएं ताका अंत निषेकका द्रव्य होइ तिसतैं लगाय नीचेके कांडक आयाममात्र निषेकनिका द्रव्य अंतफालिविषैं ग्रहण करिए हैं। तातैं तिस अंत निषेकके द्रव्यकौं जो कांडक आयाम सोई फालिका आयाम ताकरि गुणें तहां नीचले निषेकनिविषैं जे विशेष अधिक पाइए हैं तिनकौं अधिक कीएं अंतफालिके सर्व द्रव्यका प्रमाण हो है यामें नीचले निषेकनिका अपकर्षण कीया जो द्रव्य ताकौं जोडैं जो द्रव्य होइ ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भागकौं गुणश्रेणी आयामविषैं दीएं पीछैं अवशेष जो द्रव्य रह्या ताके देनेका विधान कहिए हैं—

अंतरायामका भाग फालिके आयामकौं दीएं जो संख्यात मात्र प्रमाण होइ ताका भाग तिस अवशेष द्रव्यकौं दीएं जो एक खंड होइ तामैं पूर्व जो अंतरस्थितिविषैं द्रव्य दीया था ताकौं घटाय अवशेषको अंगीकार करि वहुरि इतना द्रव्य घटाएं जो अवशेष द्रव्य रह्या ताकौं कांडकके नीचैं अवशेष स्थिति जो पाइए ताकौं अंतरायामका भाग दीएं जो संख्यातका प्रमाण आवै तामैं एक अधिक करि ताका भाग दीएं जो एक खंडका प्रमाण होइ ताकौं पूर्वै अंगीकार किया द्रव्यविषैं जोडैं जेता होइ तितना द्रव्य अंतरायामविषैं पूर्वोक्तप्रकार गोपुच्छ आकार करि चय घटता क्रम लीएं देना। वहुरि तिस वहुभागमात्र द्रव्यविषैं इतना द्रव्य घटाएं जो अवशेष रह्या ताकौं द्वितीय स्थितिविषैं पूर्वोक्त प्रकार गोपुच्छ आकार करि चय घटता क्रमलीएं देना। तहां अंतरस्थितिका अंतनिषेकविषैं दीया द्रव्यतैं द्वितीय स्थितिका आदिनिषेकविषैं दीया द्रव्य संख्यात गुणा घटता जानना। ऐसैं ही अंतफालिका द्रव्यका संख्यातवां भाग अंतरायामविषैं वहुभाग द्वितीयस्थिति विषैं देनेका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधान जानना। इहां संदृष्टिविषैं संख्यातकी सहनानी च्यारि जानि कथन समझना। इहां इतना जानना—

जो कांडकविषैं स्थिति घटाइए तिसके द्रव्यकौं नीचले निषेकनिविषैं देनेके अर्थि समय समय जेता ग्रहण करिए सो तौ फालिद्रव्य कहिए। अर गुणश्रेणी आदिके अर्थि जो सर्वस्थितिके द्रव्य अपकर्षण करि ग्रहिए सो अपकृष्टि द्रव्य कहिए है। तहां कांडककी प्रथमादि फालिपतन समय विषैं तौ अपकृष्टि द्रव्य बहुत है। फालिद्रव्य स्तोक है, तातैं अपकृष्टि द्रव्यहीका मुख्यपनैं देनेका विधान कह्या, बहुरि अंतफालिविषैं फालि द्रव्य बहुत है। अपकृष्टि द्रव्य स्तोक है तातैं फालि द्रव्यविषैं अवशेष रही स्थितिका अपकृष्टि द्रव्यकौं साधिक करि द्रव्य देनेका विधान कह्या है। या प्रकार प्रथम कांडक काल संपूर्ण होतैं अंतर पूरण भया। जिनि बीचिके निषेकनिका अभाव भया था तिनका सद्भाव भया तब अंतर पूरण होनेकरि गुणश्रेणि आयाम बिना ऊपरिके सर्व निषेकनिविषै एक गोपुच्छ भया ऐसैं सूक्ष्म सांपराय कालका प्रथम समयतैं लगाय प्रथम कांडककी अंत फालिपतन पर्यंत तौ तीन स्थाननिविषैं द्रव्य देनेका विधान समान रूप कह्या। अब द्वितीयादि कांडकनिविषैं देय द्रव्य दृश्य द्रव्यका विधान कहिए है—

अंतरपढमठिदित्ति य असंखगुणिदक्कमेण दिज्जदि हु।
हीणं तु मोहविदियट्ठिदिखंडयदो दुघादोत्ति ॥५८९॥

अंतरप्रथमस्थितिरिति च असंख्यगुणितक्रमेण दीयते हि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हीनं तु मोहद्वितीयस्थितिकांडकतो द्विघात इति ॥ ५८९ ॥

स० चं०– मोहकी द्वितीय स्थिति कांडकघाततैं लगाय द्विचरम कांडकघात पर्यंत कांडककरि गृहीत स्थितितैं नीचैं अर उदयावलीतैं उपरि जे निषेक तिनिका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एकभाग मात्र द्रव्य ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागकौं पूर्वोक्त प्रकार गुणश्रेणि आयाम विषैं प्रथम उदय निनिषेकविषैं तौ स्तोक अर द्वितीयादि निषेकनिविषैं गुणश्रेणि शीर्ष पर्यंत असंख्यातगुणा क्रम लीएं दीजिए है। बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्यकौं गुणश्रेणितैं ऊपरिकी अंतर्मुहूर्त मात्र स्थितिमात्र जो गच्छ ताका भाग देइ तहां एक खंडविषैं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणमात्र विशेष मिलाए जो होइ तितना गुणश्रेणि शीर्षके ऊपरि जो निषेक तीहिंविषैं दीजिए है। सो यहु गुणश्रेणि शीर्षविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यात गुणा है। ऐसैं अंतरका प्रथम निषेक पर्यंत तौ असंख्यातगुणा क्रमकरि द्रव्य दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक विशेष घटता क्रमलीए द्रव्य दीजिए है। सो यावत् अतिस्थापनावली प्राप्त होइ तावत् ऐसा क्रम जानना। यहां प्रथम स्थिति कांडक कालका अंत समयविषैं हीं अंतर है सो पूरण भया तातैं अंतरायामविषैं जुदा द्रव्य देनेका विधान कह्या।

बहुरि सर्वस्थिति कांडकनिविषैं अंत फालि पर्यंत जो अपकृष्ट द्रव्य है सो तौ सकल द्रव्यके असंख्यातवै भागमात्र जानना। बहुरि अंतफालिका पतन समयविषैं कांडकास्थिति तैं आयाम जो फालिद्रव्य है सो सर्व द्रव्यके संख्यातवैं भागमात्र जानना ॥ ५८९ ॥

अंतरपढमाठिदित्ति य असंखगुणिदक्कमेण दिस्सदि हु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हीणं तु मोहविदियट्ठिदिखंडयदो दुघादोत्ति ॥ ५९० ॥

अंतरप्रथमस्थितिरिति च असंख्यगुणितक्रमेण दृश्यते हि ।
हीनं तु मोहद्वितीयस्थितिकांडकतो द्विघातांतम् ॥ ५९० ॥

स० चं– मोहका द्वितीय स्थिति कांडक घाततैं लगाय द्विचरम कांडक घातपर्यंत दृश्यमान द्रव्य गुणश्रेणिका प्रथम निषेकविषैं स्तोक है तातैं गुणश्रेणि शीर्षके ऊपरि जो अंतरायामका प्रथम निषेक तहां पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं है। ताके ऊपरि अंत निषेक पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं दृश्यमान द्रव्य है जातैं प्रथम कांडककी अंत फालिका पतन समयविषैं गुणश्रेणितैं उपरि सर्व स्थितिका एक गोपुच्छ हो है ॥ ५९० ॥

पढमगुणसेढिसीसं पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं ।
उवरिमसमये दिस्सं विसेसअहियं हवे सीसे ॥ ५९१ ॥

प्रथमगुणश्रेणिशीर्षं पूर्वस्मात् असंख्यसंगुणितं ।
उपरिमसमये दृश्यं विशेषाधिकं भवेत् शीर्षे ॥ ५९१ ॥

स० चं– प्रथम समयविषैं जो गुणश्रेणि शीर्ष है सोई गाथाका अर्थकी जायगा चाहिए ॥ ५९१ ॥

सुहुमद्धादो अहिया गुणसेढी अंतरं तु तत्तो दु ।
पढमे खंडं पढमे संतो मोहस्स संखगुणिदकमा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्ष्माद्धातः, अधिका गुणश्रेणी अंतरं तु ततस्तु।
प्रथमं खंडं प्रथमे सत्त्वं मोहस्य संख्यगुणितक्रमं ॥ ५९२ ॥

स० चं– अंतर्मुहूर्त मात्र जो सूक्ष्म सांपरायका काल तातैं ताहीका असंख्यातवां भाग करि अधिक सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषैं मोहकी गुणश्रेणिका आयाम है। तातैं अंतरायाम संख्यात गुणा है। तातैं सूक्ष्म सांपरायके मोहका प्रथम स्थितिकांडक आयाम संख्यात गुणा है तातैं सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषै मोहका स्थितिसत्त्व संख्यात गुणा है ॥ ५९२ ॥

एदेणप्पाबहुगविधाणेण विदीयखंडयादीसु।
गुणसेढिमुज्झियेया गोपुच्छा होदि सुहुमम्हि ॥

एतेनाल्पबहुकविधानेन द्वितीयकांडकादिषु।
गुणश्रेणिमुज्झित्वा एकं गोपुच्छं भवति सूक्ष्मे ॥ ५९३ ॥

स० चं– इस अल्प बहुत्व विधानकरि सूक्ष्म सांपरायविषैं द्वितीय स्थिति कांडकानिका कालविषैं गुणश्रेणिकौं छोडि ताके उपरिवर्ती सर्व स्थितिका एक गोपुच्छ हो है। कैसैं? सो कहिए है–

इहां अंतरायामतैं प्रथमस्थिति कांडकायाम संख्यात गुणा कह्या। तातैं प्रथम स्थिति कांडककी जो अंत फालि ताका द्रव्यविषैं अंतरायामविषैं देनेयोग्य गोपुच्छ रूप द्रव्यकौं अंतरायामविषैं देइ द्वितीय स्थितिकैं अर इस अंतरायामकैं एक गोपुच्छ कीया जो प्रथम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थिति कांडक आयामतैं अतरायाम बहुत होता तो तहां अंतरायाम पूर्ण न होता तब अंतर स्थितिकैं अर द्वितीय स्थितिकैं एक गोपुच्छ न होता। सो इहां अंतरायामतैं प्रथम स्थिति कांडकायाम बहुत कह्या तातैं अंतरायामकैं अर द्वितीय स्थितिकैं एक गोपुच्छ प्रथम स्थिति कांडकी अंत फालिका पतन समयविषैं ही भया। जहां विशेष घटता क्रम लीएं होइ तहां गोपुच्छ संज्ञा है ॥ २९३ ॥

सुहुमाणं किट्टीणं हेट्ठा अणुदिण्णगा हु थोवाओ।
उवरिं तु विसेसहिया मज्झे उदया असंखगुणा ॥

सूक्ष्माणां कृष्टीनांमधस्तना अनुदीर्णका हि स्तोकाः।
ऊपरि तु विशेषाधिका मध्ये उदया असंख्यगुणाः ॥ ५९४ ॥

स० चं– सूक्ष्मसांपरायविषैं जे सूक्ष्म कृष्टि हैं तिनिविषैं जे जघन्यकृष्टि आदि नीचैकी कृष्टि उदय रूप न हो हैं। तिनिका प्रमाण स्तोक है। बहुरि यातैं याहीकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां एक भागमात्र करि अधिक जे अंत कृष्टितैं लगाय ऊपरली कृष्टि उदय रूप न होइ तिनिका प्रमाण है। बहुरि यातैं पल्यका असंख्यातवां भाग गुणा जे वीचिका कृष्टि उदय रूप हो हैं तिनिका प्रमाण है। इहां सर्व सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाणकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभागमात्र वीचिकी उदय कृष्टिनिका प्रमाण है। एक भागकौं अंक सदृष्टि अपेक्षा पांचका भाग दीएं दोय भागमात्र नीचली, तीन भागमात्र ऊपरली अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण है। तहां जे अनुदय रूप कृष्टि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहीं ते वीचिकी कृष्टिरूप परिणमि उदय हो हैं ऐसा जानना ॥ ५९४ ॥

सुहुमे संखसहस्से खंडे तीदे वसाणखंडेण ।
आगायदि गुणसेढी आगादो संखभागे च ॥ ५९५ ॥

सूक्ष्मे संख्यसहस्रे खंडेऽतीतेऽवसानखंडेन ।
आगाप्यते गुणश्रेणी अग्रतः संख्यभागे च ॥ ५९५ ॥

स० चं०—पूर्वोक्त क्रमकरि सूक्ष्मसांपरायविषैं ताका कालका संख्यात बहुभाग गएं संख्यातवां भाग अवशेष रहैं संख्यात हजार स्थिति कांडक व्यतीत होतैं अवसान खंड जो अंतका स्थिति कांडक ताकरि पूर्व गुणश्रेणि आयामके संख्यातवैं भागमात्र आयामविषैं गुणश्रेणि करै है। इहांतैं पहलैं सर्व सूक्ष्मसांपराय कालतैं साधिक अवस्थित गुणश्रेणि आयाम था अब जेता अवशेष सूक्ष्म सांपरायका काल रह्या तितना गुणश्रेणि आयाम जानना ॥

एत्तोसुहुमंतोत्ति य दिज्जस्स य दिस्समाणगस्स कमो ।
सम्मत्तचरिमखंडे तक्कादिकज्जेवि उत्तं च ॥ ५९६ ॥

इतः सूक्ष्मांत इति च देयस्य च दृश्यमानस्य क्रमः ।
सम्यक्त्वचरमखंडे तत्कृतकार्येपि उक्तमिव ॥ ५९६ ॥

स० चं०—इहांतैं लगाय सूक्ष्म सांपरायका अंतपर्यंत देयद्रव्य अर दृश्यमान द्रव्यका ७०९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम है। जैसैं क्षायिक सम्यक्त्व विधानविषैं सम्यक्त्व मोहनीयका अंत स्थिति कांडकविषैं वा ताका कृतकृत्यपना विषैं कह्या था तैसैंही जानना। सो कहिए है—

इहां सर्व मोहकी स्थितिविषैं सूक्ष्म सांपरायका जितना काल अवशेष रह्या तितनी स्थिति बिना अवशेष सर्व स्थितिका घात अंत कांडककरि कीजिए है। तहां इस कांडककी स्थितिके निषेकनिका द्रव्यविषैं जो द्रव्य अंतकांडकोत्करण कालका प्रथम समयविषैं ग्रह्या ताकौं प्रथम काल कहिए है। ताके देनेका विधान कहिए है—

प्रथम फालिद्रव्यकौं अपकर्षणकरि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभागमात्र द्रव्यकौं इहां सम्बन्धी सूक्ष्मसांपराय कालका अंतसमय पर्यंत तौ गुणश्रेणि आयामरूप प्रथम पर्व तिसविषैं दीजिए है तहां तिसके उदयरूप प्रथम निषेकविषैं स्तोक तातैं द्वितीयादि निषेकनिविषैं असंख्यातगुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। तहां सर्व गुणकार शलाकाके जोडका भाग तिस द्रव्यकौं देइ अपनी अपनी गुणकार शलाकाकरि गुणैं निषेकनिविषैं द्रव्य देनेका प्रमाण आवै है। इहां सूक्ष्मसांपरायका जो अन्त समय ताका नाम गुणश्रेणि शीर्ष है। बहुरि अवशेष एकभागमात्र जो द्रव्य ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभागमात्र द्रव्यकौं तिस गुणश्रेणि शीर्षतैं उपरि पहलें जो गुणश्रेणि आयाम था ताका शीर्ष पर्यंत जो द्वितीय पर्व तिसविषैं दीजिए है। तहां तिस द्रव्यकौं द्वितीय पर्वमात्र गच्छका भाग देइ तहां एक भागविषैं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणमात्र विशेष जोडैं गुणश्रेणि शीर्षके अनंतरि जो निषेक तीहिंविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण आवै है। सो यहु गुणश्रेणि शीर्षविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा घाटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है ताके ऊपरि ताके द्वितीयादि निषेकनिविषैं चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। बहुरि अवशेष एक भागमात्र द्रव्य रह्या ताकौं द्वितीय पर्वके ऊपरि जो सर्वस्थिति ताका अंतविषैं अतिस्थापनावली छोडि सर्व निषेकरूप जो तृतीयपर्व तिसविषैं दीजिए है। तहां तिस द्रव्यकौं तृतीय पर्वमात्र गच्छका भाग देइ तहां एक भागविषैं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणमात्र विशेष जोडैं जो होइ तितना द्रव्य पुरातन गुणश्रेणिका शीर्षके अनंतरिवर्ती जो निषेक तिसविषैं दीजिए है। सो यहु पुरातन गुणश्रेणि शीर्षविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यात गुणा घाटि है। बहुरि ताके ऊपरि चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ऐसैं अंत कांडककी प्रथम फालि पतन समयविषैं द्रव्य देनेका विधान कह्या। याही प्रकार अंतकांडककी द्विचरम फालि पतन पर्यंत द्रव्य देनेका विधान जानना। बहुरि अंत कांडककी अंतफालिके द्रव्य देनेका विधान कहिए है—

किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रवद्धमात्र अंत फालिका द्रव्य है। ताकौं असंख्यातगुणा पल्यका वर्गमूलमात्र पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्यकौं वर्तमान उदयरूप जो समय तातैं लगाय सूक्ष्म सांपरायका द्विचरम समय पर्यंत जो प्रथम पर्व तिस विषैं दीजिए हैं। तहां प्रथम निषेकविषैं स्तोक, द्वितीयादि निषेकनिविषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। तहां सर्व गुणकार शलाकानिके जोडका द्रव्यकौं देइ अपनी अपनी गुणकार शलाकाकरि गुणें निषेकनिविषैं देने योग्य द्रव्यका प्रमाण आवै है। बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्यका सूक्ष्मसांपरायका अंत समय संबंधी निषेकरूप जो द्वितीय पर्व तिसविषैं दीजिए है। यहु द्विचरम विषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यात पल्य वर्गमूलकरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणित जानना। ऐसैं देय द्रव्यका विधान कह्या। दृश्यमान द्रव्यका विधान भी यथा संभव जानना ॥ ५९६ ॥

उक्किण्णे अवसाणे खंडे मोहस्स णत्थि ठिदिघादो।
ठिदिसत्तं मोहस्स य सुहुमद्धासेसपरिमाणं ५९७

उत्कीर्णेऽवसाने खंडे मोहस्य नास्ति स्थितिघातः।
स्थितिसत्त्वं मोहस्य च सूक्ष्माद्धाशेषपरिमाणं ॥ ५९७ ॥

स० चं०— या प्रकार मोहराजाका मस्तक समान जो लोभका अंत कांडक ताका घात करते संतैं अब मोहका स्थिति घात न हो है। अब सूक्ष्मसांपरायका जेता काल अवशेष रह्या तितना ही मोहका स्थित सत्व रह्या है सो अनुसमयापवर्तमान सूक्ष्म कृष्टिरूप अनुभाग-कौं प्राप्त हो है ताके एक एक निषेककौं एक एक समयविषै भोगवता संता सूक्ष्म सांपरायका अंत समयकौं प्राप्त हो है ॥ ५९७ ॥

णामदुगे वेयणीये अडवारमुहुत्तयं तिघादीणं।
अंतोमुहुत्तमेत्तं ठिदिबंधो चरिम सुहमम्हि ॥

नामद्विके वेदनीये अष्टद्वादशमुहूर्तकं त्रिघातिनाम्।
अंतर्मुहूर्तमात्रं स्थितिबंधः चरमे सूक्ष्मे ॥ ५९८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०– तहां सूक्ष्म सांपरायका अंत समयविषैं नाम गोत्रका आठ मुहूर्त वेदनीय का वारह मुहूर्त तीन घातियानिका अंतर्मुहूर्तमात्र जघन्य स्थिति बंध हो है ॥ ५९८ ॥

तिण्हं घादीणं ठिदिसंतो अंतोमुहुत्तमेत्तं तु ।
तिण्हमघादीणं ठिदिसंतमसंखेज्जवस्साणि ॥

त्रयाणां घातिनां स्थितिसत्त्वमंतर्मुहूमात्रं तु ।
त्रयाणामघातिनां स्थितिसत्त्वमसंख्येयवर्षाः ॥ ५९९ ॥

स० चं०– तहां ही तीन घातियानिका स्थिति सत्व अंतर्मुहूर्तमात्र है । सो क्षीण कषायके कालतैं संख्यात गुणा है । बहुरि तीन अघातियानिका स्थिति सत्व असंख्यात वर्षमात्र है । मोहका स्थिति सत्व क्षयकौं सन्मुख है । द्रव्यार्थिक नयकरि इस समयविषैं विद्यमान है । तथापि नष्ट ही भया जानना । ऐसैं क्षयकौं सन्मुख जो लोभकी संग्रह कृष्टि ताकौं अनुभवे है । ऐसा पांचवां सूक्ष्मसांपराय चारित्रकरि संयुक्त सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवर्ती जीव जानना ॥ ५९९ ॥ ऐसैं कृष्टिवेदना अधिकार समाप्त भया ।

से काले सोखीणकसाओ ठिदिरसगबंधपरिहीणो ।
सम्मत्तडवस्सं वा गुणसेढी दिज्ज दिस्सं च ॥

स्वे काले स क्षीणकषायः स्थितिरसगबंधपरिहीणः ।
सम्यक्त्वाष्टवर्षमिव गुणश्रेणी देयं दृश्यं च ॥ ६०० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० चं०– समस्त चारित्र मोहका क्षयके अनंतरि अपने काल विषैं सो जीव क्षीण भए हैं द्रव्य भावरूप समस्त कषाय जाकैं ऐसा क्षीण कषाय हो है सो स्थिति अनुभाग बंध रहित है। योग निमित्ततैं प्रकृति प्रदेशबंध याकैं साता वेदनीयका संभवे है सो ईर्यापथ बंध है। प्रथम समयविषैं बांधि अनंतर समयविषै निर्जरै है। बहुरि जैसैं क्षायिक सम्यक्त्वका विधान विषैं सम्यक्त्व मोहनीकी आठ वर्षकी स्थिति अवशेष रहैं कथन कीया था तैसैं इहां गुणश्रेणि वा देय द्रव्य वा दृश्यमान द्रव्यका जानना। सो कहिए है–

छह कर्मनिका प्रदेश समूहकौं अपकर्षणकरि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग-देइ तहां एक भागकौं गुणश्रेणि आयामविषैं दीजिए है। ताका प्रमाण क्षीण कषायके कालतैं ताहीका संख्यातवां भागमात्र अधिक है। तहां पूर्वोक्त क्रमकरि उदय रूप प्रथम निषेकविषैं स्तोक द्वितीयादि गुणश्रेणि शीर्ष पर्यंत निषेकनिविषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं दीजिए है। बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्यकौं गुणश्रेणि शीर्षके ऊपरि जो अतिस्थापनावली रहित अवशेष स्थिति तींहि प्रमाण इहां गच्छ ताकौं एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि हीन जो दोगुणहानिकरि गुणी ताका भाग दीएं तहां एकखंडकौं दोगुणहानिकरि गुणैं जा होइ तितना द्रव्य गुणश्रेणि शीर्षके अनंतर वर्ती निषेकविषैं दीजिए है सो यहु गुणश्रेणि शीर्षविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा है। बहुरि ताके ऊपरि विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है सो यावत् अतिस्थापनावली न प्राप्त होइ तावत ऐसा क्रम जानना। बहुरि सूक्ष्म सांपरायका अंत समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्यतैं इहां अपकर्षण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा जानना जातैं सकषाय परिणाम संबंधी गुणश्रेणि निर्जरातैं निष्कषाय गुणश्रेणि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्जराकैं असंख्यातगुणापना संभवे है। बहुरि इहां क्षीण कषायके प्रथमादि समयनिविषैं अपकर्षण किया द्रव्यका प्रमाण समानरूप है जातैं इहां विशुद्धता प्रमाण समान पाइए है। बहुरि इहां दीयमान वा दृश्यमान द्रव्यका अन्य विशेष निरूपण जैसैं सम्यक्त्व मोहनीकी क्षपणाविषैं कीया था तैसैं इहां तीनघातिया कर्मनिका जानना इहां ऐसा जानना—

क्षीण कषायका प्रथम समयतैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत तौ पहला पृथक्त्व वितर्क वीचार नामा शुक्ल ध्यान वर्तै है। अर क्षीण कषाय कालका संख्यातवां भाग अवशेष रहैं एकत्ववितर्क वीचार नामा दूसरा शुक्ल ध्यान वर्तै है ॥ ६०० ॥

घादीण मुहुत्तंतं अघादियाणं असंखगा भागा ।
ठिदिखंडं रसखंडो अणंतभागा असत्थाणं ॥६०१॥

घातिनां मुहूर्तांतमघातिकानामसंख्यका भागाः ।
स्थितिखंडं रसखंडं अनंतभागा अशस्तानाम् ॥ ६०१ ॥

स० चं०— इहां क्षीण कषायविषैं तीन घातियानिका तौ अंतर्मुहूर्त मात्र अर तीन अघातियानिका पूर्व सत्वका असंख्यात बहु भागमात्र स्थिति कांडक आयाम है। बहुरि अप्रशस्त प्रकृतिनिका पूर्व अनुभागकौं अनंतका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र अनुभाग कांडक आयाम है ॥ ६०१ ॥

बहुठिदिखंडे तीदे संखा भागा गदा तदद्धाए ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरिमं खंडं गिण्हदि लोभं वा तत्थ दिज्जादि ॥६०२॥

बहुस्थितिखंडेऽतीते संख्यभागा गतास्तद्धायाः।
चरमं खंडं गृह्णाति लोभ इव तत्र देयादि ॥ ६०२ ॥

स० चं०— पूर्वोक्त प्रकार क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक व्यतीत भएं क्षीण कषाय कालकौं संख्यातका भाग देतैं तहां बहुभाग गएं एक भाग अवशेष रह्या तब तीन घातियानिका अंत कांडककौं ग्रहण करै है। तहां देयादिक द्रव्यका विधान सूक्ष्म लोभविषैं कह्या था तैसैं जानना। सो कहिए है—

इहां क्षीण कषायका काल जितना अवशेष रह्या तीहिं विना तीन घातियानिकी अवशेष रही सर्वस्थितिकौं अंत कांडककरि घातैं है। क्षीण कषाय संबंधी गुणश्रेणितैं लगाय ताके नीचला क्षीण कषाय कालका संख्यातवां भागमात्र निषेक अर तातैं संख्यातगुणा गुणश्रेणि शीर्षके उपरिवर्ती निषेकानिकौं ग्रहि अंत कांडककरि लांछित करै है ऐसा जानना। ताके द्रव्य देनेका विधान जैसैं लोभका अंत कांडकविषैं कह्या तैसैं जानना। बहुरि ऐसैं अंत कांडककी प्रथमादिक फालिनिकौं घातकरि पीछैं किंचित ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र जो अंतफालिका द्रव्य ताकौं उदय निषेकतैं लगाय क्षीण कषायका द्विचरम समय पर्यंत असंख्यातगुणा क्रम लीएं अर द्विचरम समयविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यात पल्य वर्गमूल गुणा क्षीण कषायका अंत समय संबंधी निषेकविषैं द्रव्य दीजिए है—

चरिमे खंडे पडिदे कदकरणिज्जोत्ति भण्णदे एसो। ७१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तस्स दुचरिमे णिद्दा पयला सत्तुदयवोछिण्णा ६०३॥

चरिमे खंडे पतिते कृतकरणीय इति भण्यते एषः।

तस्य द्विचरमे निद्रा प्रचला सत्त्वोदयव्युच्छिन्ना ॥ ६०३ ॥

स० चं– ऐसैं अंत कांडकका घात होतैं याकौं कृतकृत्य छद्मस्थ कहिए। जातैं याके ऊपरि तीनि घातियानिका स्थिति कांडक घात नाही है। केवल उदयावलीके बाह्य तिष्ठता द्रव्यकौं उदयावलीविषैं प्राप्त करणे रूप उदीरणा ही करै है सो यावत् अधिक समय आवली अवशेष रहै तहां पर्यंत वर्तै है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक समयविषैं एक एक निषेकका क्रमतैं उदय ही पाइए है। जातैं उदयावलीविषैं प्राप्त द्रव्यकी उदीरणा न हो है। बहुरि ऐसैं क्षीण कषायका द्विचरम समय प्राप्त भया तब निद्रा प्रचला कर्मका सत्व अर उदयका व्युच्छेद भया। इहां शुक्लध्यान होतैं भी अव्यक्त निद्रा वा प्रचलाका उदय संभवै था सो भी नाश भया। अब इहां क्षपक श्रेणि चढ़ने वाले जीव तीन वेदविषैं एक वेद अर च्यारि कषायविषैं एक कषायका उदय सहित श्रेणी चढ़नेकी अपेक्षा बारह प्रकार हैं। तहां पूर्वोक्त सर्व प्ररूपणा पुरुषवेद अर क्रोधकषाय सहित श्रेणी चढ़नेवालेकी जाननी॥ बहुरि अवशेष ग्यारह प्रकार जीवनिविषैं विशेष है सो कहिए है। तहां पुरुषवेद अर मानादिक कषाय सहित श्रेणी चढ़नेवालेकैं विशेष है सो कहिए है—

कोहस्स य पढमठिदीजुत्ता कोहादिएक्कदोतीहिं।
खवणद्धा हिं कमसो माणतियाणं तु पढमठिदी ६०४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोधस्य च प्रथमस्थितियुक्ता क्रोधादिएकद्वित्रयाणाम् ।
क्षपणाद्धा हि क्रमशो मानत्रयाणां तु प्रथमस्थितिः ॥ ६०४ ॥

स० चं– पुरुषवेद युक्त मानादि कषाय सहित श्रेणी चढ़्या जीवकैं अधः करणतैं लगाय अंतर करणकी समाप्ति पर्यंत तौ सर्व प्ररूपणा पुरुषवेद क्रोध सहित श्रेणी चढ़्या जीवकैं समान जाननी । ताके अंनतरि क्रोधकी प्रथम स्थिति सहित क्रोधादिक एक दोय तीन कषायनिका जो क्षपणा काल सो क्रमतैं मानादिक तीन कषायनिकी प्रथम स्थिति हो है सोई कहिए है—

मानसहित श्रेणी चढ़्या जीव है सोई अंतर करणकी समाप्तिके अनंतर क्रोधकी प्रथम स्थिति न स्थापै है । मानकी प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्त मात्र स्थापै है । सो क्रोध सहित श्रेणी चढ़्याकैं नपुंसक वेदका क्षपणा कालतैं लगाय कृष्टि कारक काल पर्यंत तो क्रोधकी प्रथम स्थिति अर क्रोधकी तीनो संग्रह कृष्टिका वेदक काल मात्र क्रोधका क्षपणा काल इनि दोऊनिकौं मिलाएं जेता प्रमाण होइ तितना मान सहित श्रेणी चढ्याकैं मानकी प्रथम स्थितिका प्रमाण जानना । बहुरि माया सहित श्रेणी चढ्या जीव है सो अंतर करणका समाप्तिके अनंतरि क्रोध अर मानकी प्रथम स्थिति नाहीं स्थापै है । मायाकी प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्त मात्र स्थापै है सो क्रोधसहित श्रेणी चढ्या जीवकैं जो पूर्वोक्त क्रोधकी प्रथम स्थिति अर क्रोध क्षपणाकाल अर मानकी तीनौं संग्रह कृष्टिका वेदक काल मात्र मान क्षपणा काल इन तीनौंकौं मिलाएं जो होइ तेता माया सहित श्रेणी चढ्या जीवकैं मायाकी प्रथम स्थितिका प्रमाण हो है । बहुरि लोभ सहित श्रेणी चढ्या जीव है सो अंतर करणकी समाप्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के अनंतरि क्रोध अर मान अर मायाकी प्रथम स्थिति नाही स्थापे है लोभकी प्रथम स्थिति स्थापै है। सो क्रोधसहित श्रेणी चढ्याकैं जो पूर्वोक्त क्रोधकी प्रथम स्थिति अर क्रोध क्षपणा काल अर मान क्षपणाकाल अर मायाका वेदक काल मात्र जो मायाका क्षपणा काल इन च्यारोकौं मिलाएं जो होइ तितना लोभ सहित श्रेणी चढ्या जीवकैं लोभकी प्रथम स्थिति का प्रमाण जानना ॥ ६०४ ॥

माणतियाणुदयमहो कोहादिगिदुतिय खवियपणिधम्हि।
हयकण्णकिट्टिकरणं किच्चा लोहं विणासेदि ॥ ६०५ ॥

मानत्रयाणामुदयमथ क्रोधाद्येकद्वित्रयं क्षपकप्रणिधौ।
हयकर्णकृष्टिकरणं कृत्वा लोभं विनाशयति ॥ ६०५ ॥

स० चं– मानादिक तीन कषायनिका उदय सहित श्रेणी चढ्या जीव है सो क्रमतैं क्रोधादिक एक दोय तीन कषायनिका क्षपणा कालके निकटि अश्वकर्ण सहित कृष्टिकरणकौं करि लोभकौं विनाशे है। सोई कहिए है–तहां प्रथम मान सहित श्रेणी चढ्याका व्याख्यान करिए है–

क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव जिस कालविषैं च्यारो कषायनिका अश्वकर्ण करण अर अपूर्व स्पर्धक विधानकौं करै है तिस कालविषैं मान सहित श्रेणी चढ्या जीव पूर्वस्पर्धक रूप जो क्रोध था ताकौं मान कषाय रूप परिनमाय क्षय करै है। तातैं क्रोध सहित श्रेणी चढ्याके बारह संग्रह कृष्टि हो है। मान सहित श्रेणी चढ्याकैं तीन कषायनिकी नव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही संग्रह कृष्टि हो है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस कालविषैं वादर कृष्टि करे है तिस कालविषैं मान सहित श्रेणी चढ्या जीव तीन कषायनिकी अश्वकर्ण सहित अपूर्व स्पर्धक क्रिया करे है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव जिस कालविषैं क्रोधकी तीन संग्रह कृष्टिकौं वेद क्षपावै है तिस कालविषैं मान सहित श्रेणी चढ्या जीव मानादि तीन कषायनिकी नव वादर संग्रहकृष्टि करै है। बहुरि ताके ऊपरि मानकषायका वेदक काल आदि सर्व प्ररूपणा क्रोध सहित श्रेणी चढ्याकै अर मान सहित श्रेणी चढ्याकैं समान है। अव माया सहित श्रेणी चढ्या जीवका व्याख्यान करिए है—

क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिसकालविषैं अश्वकर्ण क्रिया करै है तिस कालविषैं यह क्रोधकौं मान रूप परिनमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिसकालविषैं कृष्टि करै है तिसकालविषैं यह मानको माया रूप परनमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढया जिस कालविषैं क्रोधकी तीन संग्रह कृष्टिकौं वेदि क्षपावैं है तिसकालविषैं यह माया अर लोभकी छह वादर संग्रह कृष्टि करै है। बहुरि ताके ऊपरि मायाकी संग्रह कृष्टिका वेदक काल आदि सर्व प्ररूपणा क्रोध सहित श्रेणी चढयाकैं अर याकैं समान है। अव लोभ सहित श्रेणी चढ्या जीवका व्याख्यान कहिए है—

क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस कालविषैं अश्वकर्ण करै है तिस कालविषैं यहु पूर्व स्पर्धक रूप क्रोधकौं मानरूप परिनमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित चढ्या जीव जिस कालविषैं कृष्टि करै है तिस कालविषैं यहु पूर्व स्पर्धक रूप मानकौं माया रूप परनमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित चढ्या जिस कालविषैं क्रोधकी तीन संग्रह कृष्टिनि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को वेदि क्षय करे है तिस कालविषैं यहु पूर्व स्पर्धक रूप मायाकौं लोभ रूप परिनमाइ क्षय करे है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढया जीव जिस काल मानकी तीन संग्रह कृष्टिनि कौं वेदि क्षय करै है तिस कालविषैं यहु लोभकी तीन वादर संग्रह कृष्टि करै है। तातैं उपरि लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक काल आदि सर्व प्ररूपणा क्रोध सहित श्रेणी चढयाकैं अर याकैं समान है ॥ ६०२ ॥ ऐसैं पुरुषवेद सहित चढ्या च्यारि प्रकार जीवनिके विशेषका वर्णन कीया अर स्त्रीवेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनिकैं विशेष कहिए है—

पुरिसोदएण चडिदस्सित्थी खवणद्धउत्ति पढमठिदी।
इत्थिस्स सत्तकम्मं अवगदवेदो समं विणासेदि ६०६

पुरुषोदयेन चटितस्य स्त्री क्षपणाद्धांतं प्रथमस्थिति।
स्त्रिया सप्तकर्माणि अपगतवेदः समं विनाशयति ॥ ६०६ ॥

स० चं०— स्त्रीवेद सहित चढ्या जीवकैं यावत् अंतर करण न होइ तावत प्ररूपणा सर्व समान है। बहुरि अंतर करण करत संता यहु पुरुष वेदकी प्रथम स्थिति नाहीं करै है। स्त्रीवेदहीकी प्रथम स्थिति स्थापै है जातैं जिस वेदका कषायके उदै श्रेणी चढै ताहीका प्रथम स्थिति स्थापै है। तिस स्त्रीवेदकी प्रथम स्थितिका प्रमाण पुरुष वेदका उदय सहित श्रेणी चढ्या जीवकैं जितना नपुंसक वेदका क्षपणा काल सहित स्त्रीवेदका क्षपणाकाल होइ तितना जानना। बहुरि नपुंसक वेदकी वा स्त्रीवेदकी क्षपणा करनेविषैं स्त्रीवेद सहित चढ्या जीवकैं पुरुषवेद सहित चढ्या जीवकैं समान काल है। बहुरि ताके ऊपरि पुरुषवेद स-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हित चढ्या जीव है सो तौ पुरुष वेदका उदय युक्त हुवा सप्तनोकषायका क्षपणा काल विषैं सप्त नोकषायनिकौं क्षपावै है। तहां पुरुष वेदके नवक समय प्रबद्धनिकौं ताके पीछे समय घाटि दोय आवली काल विषैं क्षपावै है। बहुरि यह स्त्रीवेदसहित चढ्या जीव है सो वेद उदयकरि रहित होत संता सप्त नोकषायका क्षपणाकालविषै सर्व सप्त नोकषायनिकौं क्षपावै है। पुरुष वेदका बंध याकैं नाही है तातैं नवक समय प्रबद्धका पीछैं खिपावना याकैं न संभवै है। बहुरि ताके ऊपरि अश्वकर्णादि क्रियानिविषैं जैसैं पुरुष वेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनिका विशेष कह्या तैसैं ही स्त्रीवेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनिका विशेष वर्णन जानना ॥ ६०६ ॥ अब नपुंसक वेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनिका व्याख्यान करिए है—

थीपढमाट्ठिदिमेत्ता संढस्सवि अंतरादु सेढेक्क।
तस्सद्धाति तदुवरिं संढा इत्थिं च खवादि थीचरिमे॥

अवगयवेदो संतो सत्त कसाये खवेदि कोहुदये।
पुरिसुदये चडणविही सेसुदयाणं तु हेट्ठुवरिं ॥६०८॥

स्त्रीप्रथमस्थितिमात्रा षंढस्यापि अंतरात् षंढैकः।
तस्याद्धा इति तदुपरि षंढं स्त्रीं च क्षपयति स्त्रीचरमे ॥ ६०७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपगतवेदः संतः सप्त कषायान् क्षपयति स्त्रीचरमे ।
पुरुषोदयेन चटनविधिः शेषोदयानां तु अधस्तनोपरि ॥ ६०८ ॥

स० चं०— नपुंसक वेद सहित श्रेणि चढ्या जीवकैं यावत् अंतर करण न करिए तावत् सर्व प्ररूपणा समान है ताके ऊपरि पुरुष वेदकी प्रथम स्थिति नाही स्थापै है नपुंसक वेदहीकी प्रथम स्थिति स्थापै है ताका प्रमाण स्त्रीवेद सहित चढ्याकैं जितना स्त्रीवेदकी प्रथम स्थिति ताका प्रमाण कह्या तावन्मात्र ही है। बहुरि अंतर करण कीएं पीछैं यावत् पुरुष वेद सहित चढ्या जीवकैं नपुंसक वेदका क्षपणा काल है तावत् याकैं एक नपुंसक वेदहीकी क्षपणा हुआ करै है, परन्तु तहां नपुंसक वेदकी क्षपणा होइ निवरै नाहीं तहां पीछैं पुरुषवेद सहित श्रेणी चढ्याकैं जो स्त्रीवेदका क्षपणा काल है तिस विषैं याकैं नपुंसक वेद अर स्त्रीवेद इन दोऊनिकी क्षपणा होने लगै सो स्त्रीवेद क्षपणा कालका अंत समयविषैं सर्व नपुंसक स्त्रीवेद कौं युगवत् क्षय करै है। इहां द्रव्यार्थिक नय विद्यमानका नाशकौं कहै है तिस अपेक्षा इस समय नष्ट भया कह्या। पर्यायार्थिक अविद्यमान वस्तुका नाशकौं कहै है। तिस अपेक्षा इस समयविषैं एक निषेकका सत्व है सो अगले समयविषैं नष्ट होगा ऐसा जानना। ताके अनंतरि स्त्रीवेद सहित चढ्या जीववत् अपगत वेद होत संता सप्त नोकषायनिका क्षपणा कालविषैं सर्व सप्त नोकषायनिकौं क्षपावै है। इहां भी पुरुष वेदका बंधका अभाव है। तातैं नवकसमयप्रबद्धका पीछैं क्षिपावना न संभवै है। ताके ऊपरि जैसैं पुरुषवेद सहित श्रेणी चढे च्यारिप्रकार जीवनिका वर्णन कीया तैसैं ही नपुंसक वेद सहित श्रेणी चढे च्यारि प्रकार जीवनिका वर्णन जानना। ऐसैं तीनप्रकार पुरुषवेद सहित श्रेणी चढे, च्यारिप्रकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीवेद सहित चढे च्यारिप्रकार नपुंसक वेदसहित श्रेणी चढे ए ग्यारह प्रकार जीव तिनके बीचिकी क्रियानिविषैं इहां विशेष वर्णन कीया सो विशेष जानना। अब शेष नीचैं वा ऊपरी सर्वविधान क्रोधका उदय अर पुरुषवेदका उदय सहित श्रेणी चढ्याकैं जैसैं कह्या तैसैंही अवशेष ग्यारह प्रकार उदय सहित जीवनिकैं जानना। इहां तर्क--

जो अनिवृत्ति करणविषैं एक समयवर्ती सब जीवनिकैं परिणाम समान कहे हैं इहां तुम परस्पर विशेष कैसैं कहो हो ? ताका समाधान–परिणामनिकी विशुद्धताकी अपेक्षा समान नाही है परंतु नानाप्रकार वेद कषायका उदयरूप सहकारी कारणका निकट होतैं नानाप्रकार क्षपणाकार्य हो है। ६०७। ६०८। ऐसैं अवसर पाइ विशेषका कथन करि पूर्वैं क्षीणकषायका द्विचरम समय पर्यंत कथन कीया था अब आगैं कथन करिए है--

चरिमे पढमं विग्घं चउदंसण उदयसत्तवोच्छिण्णा।
से काले जोगिजिणो सव्वण्हू सव्वदरसी य ॥ ६०९॥

चरमे प्रथमं विघ्नं चतुर्दर्शनं उदयसत्त्वव्युच्छिन्नाः।
स्वे काले योगिजिनः सर्वज्ञः सर्वदर्शी च ॥ ६०९ ॥

स० चं०–क्षीणकषायका अंत समयविषैं पहला पंचप्रकार ज्ञानावरण अर विघ्न कहिए पंचप्रकार अंतराय अर चउदंसण कहिए च्यारि प्रकार दर्शनावरण ए उदयतैं अर सत्वतैं व्युच्छित्ति रूप भए। इहां अघातिकर्मनिका स्थितिसत्व पल्यके असंख्यातवैं भागमात्र असंख्यात वर्षका है। जैसैं घाति कर्मनिविषैं मोह विशेष अप्रशस्त था ताका पहलैं नाश भया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवशेषनिका इहां नाश भया तैसैं कर्मनिविषैं विशेष अप्रशस्त घाति कर्म थे तिनका इहां नाश भया। अघातियानिका आगैं नाश होगा। वहुरि इहां कोऊ पूछै कि—

छद्मस्थका तौ शरीर निगोदसहित था अर केवलीका शरीर निगोद राहित कहिए हैं सो कैसैं भया ? ताका समाधान—क्षीणकषायका प्रथम समयविषैं निगोद जीव अनंत मरैं हैं दूसरे समय तिनकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भागदीएं एक भागमात्र अधिक मरै हैं। ऐसैं पृथक्त्व आवली पर्यंत क्रम जानना। ताके ऊपरि पूर्व समय विषैं मरे जीवनितैं तिनकौं संख्यातका भाग दीएं एक भागमात्र अधिक जीव मरैं हैं। सो ऐसैं क्षीणकषायका काल आवलीका असंख्यातवां भागमात्र अवशेष रहै तावत् क्रम जानना। वहुरि इस विशेष अधिकरूप मरणकालका अंत समयविषैं मरे जीवनिका प्रमाणकौं पल्यका असंख्यातवां भागकरि गुणैं ताकौं अनंतरि गुणकारकी श्रेणी लीएं मरण कालका जो प्रथम समय तीहिंविषैं मरे जीवनिका प्रमाण हो है। तातैं परैं क्षीणकषायका अंतसमय पर्यंत समय समय पल्यका असंख्यातवां भाग गुणा निगोदजीव मरै हैं ऐसैं सर्व निगोद जीवनिका अभाव होतैं केवलीका शरीर निगोद रहित है। इहां तर्क—

जो ऐसैं मरण होतैं यथाख्यात चारित्र कैसैं कहिए ? ताका समाधान—इहां शुक्लध्यान बलकरि तिनके निपजनेका निरोध हो है। बहुरि उपजे थे ते स्वयमेव अपनी आयु नाशतैं मरै है। यावत् निगोद जीवनिका जघन्य आयुमात्र क्षीण कषायका काल अवशेष रहै तावत् निगोद जीव तहां उपजैं भी है। अर पूर्वैं उपजे जीव मरैं हैं तहां पीछै उपजै नाहीं। आयु नाशतैं केवल मरैं ही है तातैं इनकौं किछू दोष नाहीं उपजै है। ऐसैं क्षीण कषायका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंत समयविषैं घाति कर्मनिका नाशकरि ताके अनंतरि अपने कालविषैं सयोग केवली जिन हो है। सो सर्वज्ञ अर सर्वदर्शी हो है। सर्व पदार्थनिकौं आकाररूप विशेष ग्रहण करै है। तातैं सर्वज्ञ कहिए। बहुरि सर्व पदार्थनिकौं निराकाररूप सामान्य ग्रहण करै है तातैं सर्व-दर्शी कहिए है ॥ ६०९ ॥

खीणे घादिचउक्के णंतचउक्कस्स होदि उप्पत्ती।

सादी अपज्जवसिदा उक्कस्साणंतपरिसंखा ॥ ६१०

क्षीणे घातिचतुष्केऽनंतचतुष्कस्य भवति उत्पत्तिः

सादिरपर्यवसिता उत्कृष्टानंतपरिसंख्या ॥ ६१० ॥

स० चं०—घातिया कर्मनिका चतुष्का नाश होतैं अनंतचतुष्टयकी उत्पत्ति हो है। अ-नंतपना कैसैं सभवे है? सो कहिए है—

सादि कहिए उपजने कालविषै आदि सहित है तथापि अपर्यवसिता कहिए अवसान जो अंत ताकरि रहित है तातैं अनंत कहिए। अथवा अविभाग प्रतिच्छेदनिकी अपेक्षा इनकी उत्कृष्ट अनंतानंतमात्र संख्या है तातैं भी अनंत कहिए ॥ ६१० ॥ अव किस कर्म-निका नाशकैं कौन गुण हो है सो कहिए है—

आवरणदुगाण खये केवलणाणं च दंसणं होइ।

विरियंतरायियस्स य खएण विरियं हवे णंतं ॥ ६११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवरणद्विकयोः क्षये केवलज्ञानं च दर्शनं भवति।
वीर्यांतरायिकस्य च क्षयेण वीर्यं भवेदनंतम् ॥ ६११ ॥

स० चं०— ज्ञानावरण दर्शनावरण इन दोऊनिका नाशकरि केवलज्ञान अर केवल दर्शन हो है। तहां केवल ज्ञान है सो इंद्रिय मन प्रकाशादिकका सहाय रहित है। सो सूक्ष्म अंतरित दूर आदि सर्व पदार्थनिकौं प्रत्यक्ष युगपत् जाने है। तहां परमाणू आदि सूक्ष्म कहिए। अतीत अनागत काल संबंधी अंतरित कहिए। दूर क्षेत्रवर्ती दूरकहिए। बहुरि तैसैंही केवल दर्शन है सो देखे है। जैसैं चंद्रविषैं शीतस्पर्श श्वेतवर्णपनौं युगपत् है तैसैं जिनेंद्रविषैं केवल ज्ञान केवल दर्शन युगवत् प्रवर्तैं हैं छद्मस्थवत् क्रमवर्ती नाहीं हैं। बहुरि वीर्यांतरायकर्मका क्षयकरि अनंतवीर्य हो है सो समस्त ज्ञेयनिकौं सदाकाल जानते भी खेद उपजनेका अभावकौं उपकारी काहूकरि घाती न जाय ऐसी समर्थतारूप है ॥ ६११ ॥

णवणोकसायविग्घचउक्काणं च य खयादणंतसुहं।
अणुवममव्वाबाहं अप्पसमुत्थं णिरावेक्खं ॥ ६१२

नवनोकषायविघ्नचतुष्काणां च क्षयादनंतसुखम्।
अनुपममव्याबाधमात्मसमुत्थं निरपेक्षम् ॥ ६१२ ॥

स० चं०— नव नोकषाय अर दानादि अंतरायचतुष्कका क्षयतैं अनंत सुख हो है सो अन्यत्र ऐसा न पाइए है। तातैं अनौपम्य है। बहुरि काहूकरि बाधित नाहीं तातैं अव्याबाध है। बहुरि आत्माकरि उत्पन्न है तातैं अत्मसमुत्थ है। बहुरि इंद्रियविषय प्रकाशादि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपेक्षा रहित है तातैं निरापेक्ष है ऐसा ज्ञानवैराग्य ताकी उत्कृष्टताकौं प्राप्त भया जो केवली तिनकैं अनाकुल लक्षण अनंत सुख जानना ॥ ६१२ ॥

सत्तण्हं पयडीणं खयादु खइयं तु होदि सम्मत्तं ।
वरचरणं उवसमदो खयदो दु चरित्तमोहस्स ॥

सप्तानां प्रकृतीनां क्षयात् क्षायिकं तु भवति सम्यक्त्वम् ।
वरचरणं उपशमतः क्षयतस्तु चारित्रमोहस्य ॥ ६१३ ॥

स० चं०— च्यारि अनंतानुबंधी तीन मिथ्यात्व इन सात प्रकृतिनिकै क्षयतैं क्षायिक सम्यक्त्व हो है सो तत्वार्थनिका यथार्थ श्रद्धानरूप जानना । बहुरि चारित्र मोहकी इकईस प्रकृतिनिके उपशमतैं वा क्षयतै उत्कृष्ट यथाख्यात चारित्र हो है सो निष्कषाय आत्मचरण रूप है । इहां क्षायिक यथाख्यात चारित्र ही है । तथापि यथाख्यातका प्रसंग पाइ उपशांत कषायविषैं पाइए है जो उपशम यथाख्यात ताका भी कारण दिखाया है ॥ ६१३ ॥ अब इहां कोऊ कहै कि केवलीकैं असाता वेदनीयके उदयतैं क्षुधादि परीषह पाइए हैं तातैं आहारादि क्रिया संभवै हैं तिस प्रति कहै हैं—

जं णोकसायविग्घचउक्काण बलेण दुक्खपहुदीणं ।
असुहपयडिणुदयभवं इंदियखेदं हवे दुक्खं ॥

यत् नोकषायविघ्नचतुष्काणां बलेन दुःखप्रभृतीनाम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशुभप्रकृतीनामुदयभवं इंद्रियखेदं भवेत् दुःखं ॥ ६

स० चं०–जो नोकषाय अर अंतरायचतुष्क इनका उदयके वलकरि दुःखरूप असाता वेदनीय आदि अशुभ प्रकृतिनिका उदय करि उपज्या ऐसा इंद्रियकैं खेद आकुलता ताका नाम दुःख है। सो केवलीकैं नाहीं संभवै है ॥ ६१४ ॥

जं णोकसायविग्घचउक्काण बलेण सादपहुदीणं।
सुहपयडीणुदयभवं इंदियतोसं हवे सोक्खं ॥

यत् नोकषायविघ्नचतुष्काणां बलेन सातप्रभृतीनां।
शुभप्रकृतीनामुदयभवं इंद्रियतोषं भवेत् सौख्यं ॥ ६१५ ॥

स० चं०–जो नोकषाय अर अंतराय चतुष्कका उदयके वलकरि सात वेदनीय आदि शुभ प्रकृतिनिका उदयकरि उपज्या इंद्रियनिके संतोष किछू निराकुलता ताका नाम इंद्रिय जनित सुख है सो भी केवलीके नाहीं संभवै है ॥ ६१५ ॥

णट्ठा य रायदोसा इंदियणाणं च केवलिम्हि जदो।
तेण दु सातासादजसुहदुक्खं णत्थि इंदियजं ॥६१६॥

नष्टौ च रागद्वेषौ इंद्रियज्ञानं च केवलिनि यतः।
तेन तु सातासातजसुखदुःखं नास्ति इंद्रियजं ॥ ६१६ ॥

स० चं०– जातै केवलीविषैं राग द्वेष नष्ट भए हैं। वहुरि इंद्रिय जनित ज्ञान भी नष्ट-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भया है तातैं साता असाता वेदनीयका उदयकरि निपज्या ऐसा इंद्रिय जनित सुख दुःख नाहीं है। इस हेतुतैं यहु सिद्ध भया जो कारणके सद्भावतैं केवलीकैं असातावेदनीयके उदयतैं उपजे ऐसे परीषह उपचारमात्र कहिए है तथापि तिनका दुःख नाहीं व्यापै है जातैं घातिकर्मनिका उदय केवल होतैं वेदनीयका उदयतैं सुख दुःख व्यापै है। जैसैं उपघात परघात नाम कर्मका उदय होतैं भी घाति कर्मनिके वल विना अपना वा अन्यका घात न हो है जो ऐसैं न होइ तो परीषहानिके निमित्ततैं केवलीकौं दुःख होइ तव लाभके अर्थि कार्य करै जैसैं मूल नाश होइ तैसैं यहु कार्य भया सो न संभवै है तातै केवलीकैं भोजन है ऐसा वचन अयुक्त है॥ ६१६॥ अव अन्य हेतु कहैं हैं—

समयट्ठिदिगो बंधो सादस्सुदयप्पिगो जदो तस्स।
तेण असादस्सुदओ सादसरूवेण परिणमदि॥

समयस्थितिको बंधः सातस्योदयात्मको यतः, तस्य।
तेन असातस्योदयः सातस्वरूपेण परिणमति॥ ६१७॥

स० चं०— जातैं केवलीकैं एक समयमात्र स्थिति लीएं सातावेदनीयका बंध हो है सो उदयरूप ही है तातैं ताकैं असाताका उदय है सो भी सातारूप होइ परिनमै है जातैं इहां परम विशुद्धताकरि साताका अनुभागकी वहुत अधिकता पाइए है तातैं असाता जनित क्षुधादि परिषहकी वेदना नाहीं है। वेदना विना ताका प्रतिकार रूप आहार कैसैं संभवै है?। ६१७। इहां कोऊ कहै कि जो आहार न संभवै तौ शास्त्रनिविषैं केवलीकैं आहार मार्गणाका सद्भाव कैसैं कह्या है? सो कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिसमयं दिव्वतमं जोगी णोकम्मदेहपडिबद्धं ।
समयपबद्धं बंधादि गलिदवसेसाउमेत्ताठिदी ॥६१८॥

प्रतिसमयं दिव्यतमं योगी नोकर्मदेहप्रतिबद्धम् ।
समयप्रबद्धं बध्नाति गलितावशेषायुर्मात्रस्थितिः ॥ ६१८ ॥

स० चं०— सयोगी जिन है सो समय समय प्रति नोकर्म जो औदारिक शरीर तीहि संबंधी जो समय प्रबद्ध ताकौ बाधे है ग्रहण करै है। ताकी स्थिति आयु व्यतीत भएं पीछे जेता अवशेष रह्या तावन्मात्र जाननी। सो नोकर्म वर्गणाका ग्रहणहीका नाम आहारमार्गणा है ताका सद्भाव केवलीकैं है जातैं ओज १ लेप्य १ मानस १ केवल १ कर्म १ नोकर्म १ भेद तै छह प्रकार आहार है। तहां केवलीकैं कर्म नोकर्म ए दोय आहार संभवै हैं। साता वेदनीयका समयप्रबद्धकौं ग्रहै है सो कर्म आहार है। औदारिक शरीरका समयप्रबद्ध ग्रहै है सो नोकर्म आहार है ॥६१८॥

णवरि समुग्घादगदे पदरे तह लोगपूरणे पदरे ।
णत्थि तिसमये णियमा णोकम्माहारयं तत्थ ॥

नवरि समुद्घातगते प्रतरे तथा लोकपूरणे प्रतरे ।
नास्ति त्रिसमये नियमात् नोकर्माहारकस्तत्र ॥ ६१९ ॥

स० चं०— इतना विशेष जो केवल समुद्घातकौं प्राप्त केवलीविषैं दोय तौ प्रतरके समय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर एक लोक पूरणका समय इनि तीन समयनिविषैं नोकर्मका आहार नियमतैं नाही है अन्य सर्व सयोगी जिनका कालविषैं नोकर्मका आहार है ॥ ६१९ ॥ अब इहां समुद्घात कब हो है सो कहना—तहां क्षीणकषायके अंतरि ईर्यापथ बंधको कारण जो योग तिनकरि सहित जो तीर्थंकर केवली भया सो समवसरणविषैं मंडपके मध्य तीन पीठिका ऊपरि जो सिंहासन तीहिविषैं विराजमान है। अष्ट प्रातिहार्य चौंतीस अतिशय सहित है। धातु मल रहित, परम औदारिक शरीर सहित है। सर्वलोक पूज्य है। बहुरि एक योजन विषैं तिष्टते ऐसैं दूर वा निकटवर्ती तिर्यंच वा मनुष्य वा देव तिनकी अठारह महाभाषा सातसै क्षुल्लकभाषा ताके आकारि तद्रूप परिनम्या ऐसा जो दिव्यध्वनि ताकरि आसन्न भव्य जीवनिकौं संसारतैं पार करै है। जैसैं विना इच्छा चंद्रमा समुद्रकौं बंधावै है तैसैं अबुद्धिपूर्वकपनैं केवली जगतका हितकौं करै हैं। जातैं सर्वजीवनिका उपकार रूप परिणामनितैं ऐसा कर्म पूर्वै बंध्या है जाके उदयतैं सर्व जीवनिका स्वयमेव उपकार हो है अर भव्य जीवनिका भला होना है तातैं ऐसा निमित्त बना है। बहुरि भगवान विहार करैं तब आकाशविषैं दोयसै पचीस कमलनिके ऊपरि स्वयमेव गमन करै हैं। सो याप्रकार उत्कृष्ट तौ किंचित् ऊन कोडि पूर्व अर जघन्य पृथक्त्व बर्षप्रमाण तीर्थंकर केवलीकी स्थिति सयोग गुणस्थानविषैं जाननी। सामान्यकेवलीनिकैं अतिशयादिक यथासंभव जानना अर जघन्य स्थिति अंतर्मुहूत जाननी। तहां सयोगीका प्रथम समयतैं लगाय उदयादि अवस्थित गुणश्रेणि निर्जरा पाइए है तहां प्रथम समयविषैं वेदनीय नाम गोत्रका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्य ग्रहि पूर्वोक्त प्रकार गुण श्रेणिविषैं देनैं योग्य द्रव्यकौं उदय रूप प्रथम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निषेकविषै तौ स्तोक अर द्वितीयादि गुणश्रेणि शीर्षपर्यंत निषेकनिविषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं निक्षेपण करिए है। वहुरि उपरितन स्थितिविषैं देने योग्य द्रव्यको प्रथमनिषेकविषैं गुणश्रेणि शीर्षविषैं दीया द्रव्यतैं असंख्यातगुणा अर द्वितीयादि अतिस्थापनावली यावत् न प्राप्त होइ तावत् निषेकनिविषैं विशेष घटता क्रम लीएं निक्षेपण करिए है। इहां क्षीणकषाय करि अपकर्षण कीया द्रव्यतैं सयोग केवली करि अपकर्षण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा जानना। वहुरि ताके गुणश्रेणि आयामतैं याका गुणश्रेणि आयाम संख्यात गुणा घटता जानना। वहुरि सयोग केवलीका द्वितीयादि समयनिविषैं भी ऐसाही विधान जानना। परिणाम अवस्थित है तातैं अपकर्षण कीया द्रव्यकी अर गुणश्रेणी आयामकी समानता जाननी। इतना ही विशेष गुणश्रेणी आयाम अवस्थित है तातैं ज्यूं ज्यूं गुणश्रेणि आयामका एक एक समय व्यतीत हो है त्यूं त्यूं उपरितन स्थितिका एक एक समय गुणश्रेणि विषैं मिलै है। या प्रकार सयोगीका काल वहुत व्यतीत होतैं समुद्घात क्रिया जिस कालविषैं हो है सो कहिए है—

अंतोमुहुत्तमाऊ परिसेसे केवली समुग्घादं।
दंड कवाटं पदरं लोगस्स य पूरणं कुणई॥ ६२०॥

अंतर्मुहूर्तमायुषि परिशेषे केवली समुद्घातं।
दंडं कपाटं प्रतरं लोकस्य च पूरणं करोति॥ ६२०॥

स० चं०— अपना आयु अंतर्मुहूर्तमात्र अवशेष रहैं केवली समुद्घात क्रिया करै है। तहां दंड कपाट प्रतर लोकपूरणरूप समुद्घात क्रियाकौं करै है॥ ६२०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेट्ठा दंडस्संतोमुहुत्तमावज्जिदं हवे करणं।
तं च समुग्घादस्स य अहिमुहभावो जिणिंदस्स॥

अधस्तनं दंडस्यांतर्मुहूर्तमावर्जितं भवेत् करणं।
तच्च समुद्घातस्य च अभिमुखभावो जिनेंद्रस्य॥ ६२१॥

स० चं– दंड समुद्घात करनेका कालकैं अंतर्मुहूर्त काल आधा कहिए पहलैं आवर्जित नामा करण हो है सो जिनेंद्र देवकैं जो समुद्घात क्रियाकौं सन्मुखपना सोई आवर्जित करण कहिए॥ ६२१॥

सट्ठाणे आवज्जिदकरणेवि य णत्थि ठिदिरसाण हदी।
उदयादि अवट्ठिदया गुणसेढी तस्स दव्वं च॥

स्वस्थाने आवर्जितकरणेपि च नास्ति स्थितिरसयोः, हतिः।
उदयादिः, अवस्थितो गुणश्रेणिः, तस्य द्रव्यं च॥ ६२२॥

स० चं– आवर्जित करण करने पहलैं जो स्वस्थान तीहिंविषै अर आवर्जित करणविषै भी सयोग केवलीकैं कांडकादि विधानकरि स्थिति अनुभागका घात नाही है। बहुरि उदयादि अवस्थितरूप गुणश्रेणि आयाम है अर तिस गुणश्रेणिका द्रव्य भी अवस्थित है। तहां विशेष इतना जो स्वस्थान केवलीका गुणश्रेणि आयामतैं आवर्जित करणयुक्त केवलीका गुणश्रेणि आयाम संख्यातगुणा घाटि है। बहुरि स्वस्थान केवलीकरि अपकर्षण कीया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यतैं आवर्जित करणयुक्त केवलीकरि अपकर्षण कीया द्रव्य असंख्यातगुणा है जातैं गुणश्रेणि निर्जराके ग्यारह स्थान कहे हैं। तहां ऐसा ही क्रम कह्या है। यद्यपि केवलीकैं परिणामनिकी समानता है तथापि आयुका अंतर्मुहूर्तमात्र अवशेष रहनेका निमित्त पाइ विशेष होनेतैं स्वस्थान जिनतैं समुद्घातकौं सन्मुख जिनकैं गुणश्रेणि आयाम वा अपकर्षण कीया द्रव्यकी समानता नाही कही है बहुरि स्वस्थान जिनकैं प्रथमादि अंतसमय पर्यंत गुणश्रेणि आयाम अर अपकर्षण कीया द्रव्य समान है तातैं अवस्थित जानना। बहुरि आयुवर्जित करणका प्रथम समयतैं लगाय सयोगीकैं द्विचरम स्थितिकांडककी अंतफालिका पतन जिससमय होगा तहां पर्यंत गुणश्रेणि आयाम अर अपकर्षण कीया द्रव्य समान है तातैं अवस्थित जानना। ६२२। अब आवर्जित करणविषै गुणश्रेणि आयाम कितना है? सो कहिए है—

जोगिस्स सेसकाले गयजोगी तस्स संखभागो य।
जावदियं तावदिया आवज्जिदकरणगुणसेढी॥

योगिनः शेषकाले गतयोगी तस्य संख्यभागश्च
यावत् तावत्कं आवर्जितकरणगुणश्रेणिः॥ ६२३॥

स० चं०– आवर्जित करण करनेके पहले समय जो सयोगीका अवशेष काल रह्या अर अयोगीका सर्वकाल अर अयोगीके कालका संख्यातवां भाग इनकौं मिलाएं जितना होइ तितना आवर्जित करण कालका प्रथम समयतैं लगाय द्विचरम कांडककी अंतफा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिका पतन समय पर्यंत समयनिविषै अवस्थित गुणश्रेणि आयाम जानना। तहां अपकर्षण कीया द्रव्य देनेका विधान जैसैं स्वस्थान जिनविषै कह्या तैसैं जानना।

या प्रकार अंतर्मुहूर्तमात्र आवर्जित करण कालविषै क्रिया विशेष कहे, ताके अनंतरि समुद्घात क्रिया हो है। सो अघाति कर्मनिकी स्थिति समान करनेके अर्थि जीवके प्रदेशनिका समुद्गमन फैलना ताका नाम समुद्घात है सो दंड कपाट प्रतर लोकपूरण भेदतैं च्यारि प्रकार है। सो समुद्घात करनेवाले जीव पूर्वकौं सन्मुख वा उत्तरकौं सन्मुख हो हैं। बहुरि पद्मासन वा कायोत्सर्ग आसनयुक्त हो हैं। सो प्रथम समयविषै दंड समुद्घात करै हैं। तहां उत्कृष्ट अवगाहयुक्त केवलीका शरीर एक सौ आठ प्रमाणांगुल प्रमाण ऊंचो होइ ताके नवमे भाग चौडाई होइ सो बारह अंगुल चौडाईकी सूक्ष्म परिधि सैंतीस अंगुल अर एक अंगुलका एकसौ तेरह भागमें पिच्याणवै भागमात्र हो है सो यहु तो कायोत्सर्ग स्थित केवलीके परिधिका प्रमाण जानना। बहुरि पद्मासन स्थितिके चौडाईका प्रमाण तातैं तिगुणा छत्तीस अंगुल है। ताके सूक्ष्म परिधिका प्रमाण एकसौ तेरह अंगुल अर एक अंगुलका एकसौ तेरह भाग सत्ताईस भागमात्र हो है। ऐसैं परिधिरूप होइ किंचिदून चौदह राजू ऊंचे प्रदेश हो हैं। इहां नीचले ऊपरले वातवलयनिविषैं जीवके प्रदेश न फैलैं हैं तातैं तिनके घटावनेके अर्थि किंचिदून कह्या है। ऐसैं दंडके आकारि प्रदेश फैलनेतैं दंड समुद्घात कह्या।

बहुरि द्वितीय समयविषै कपाट समुद्घात करै है। तहां पूर्व दिशा सन्मुख कायोत्सर्ग आसनयुक्त केवलीके प्रदेश किंचिदून चौदह राजू ऊंचे सातराजू चौडे बारह अंगुल मोटे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो हैं। बहुरि पूर्व सन्मुख पद्मासन स्थित केवलीके प्रदेश ऊचे चौडे पूर्वोक्त मोटे छत्तीस अंगुल हो हैं। बहुरि उत्तर सन्मुख कायोत्सर्ग स्थित केवलीके प्रदेश किंचिदून चौदहराजू ऊचे अर नीचे सात राजू क्रमतैं घटि मध्यलोक निकटि एक राजू क्रमतैं बंधि ब्रह्मस्वर्ग निकटि पांचराजू क्रमतैं घटि ऊपरि एक राजू चौडे अर बारह अंगुल मोटे प्रदेश हो हैं। बहुरि उत्तर सन्मुख पद्मासन स्थित केवलीके प्रदेश ऊचे चौडे तैसैं ही अर मोटे छत्तीस अंगुल है। ऐसैं कपाट आकारि प्रदेश फैलनेतैं कपाट कह्या—

बहुरि तीसरे समय प्रतर करै है। तहां वातवलय विना अवशेष सर्वलोकविषैं आत्माके प्रदेश फैलैं हैं। सो याका नाम मंथान भी है—

बहुरि चतुर्थ समयविषै लोक पूरण हो है। तहां वात वलय सहित सर्वलोकविषैं आत्माके प्रदेश फैले हैं। ऐसैं च्यारि समयनिविषैं दंड कपाट प्रतर लोकपूरण क्रमतैं प्रदेश फैलैं हैं॥ ६२३॥ तहां कार्य विशेष हो है सो कहिए है—

ठिदिखंडमसंखेज्जे भागे रसखंडमप्पसत्थाणं।
हणदि अणंता भागा दंडादी चउसु समएसु॥

स्थितिखंडमसंख्येयान् भावान् रसखंडमप्रशस्तानां।
हंति अनंतान् भागान् दंडादिचतुर्षु समयेषु॥ ६२४॥

स० चं— दंडादिकके च्यारि समयनिविषैं स्थित खंड तौ असंख्यात बहुभागमात्र अप्रशस्तानिका अनुभाग खंड अनंत भागमात्र ताकौं घाते है सोई कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंडरूप प्रथम समय विषैं जो नाम गोत्र वेदनीयका स्थिति सत्व पूर्वैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र था ताकौं असंख्यातका भाग दीएं तहां वहुभागमात्र घटाइ एकभाग मात्र अवशेष राखै है। वहुरि अप्रशस्त प्रकृतिनिकौं क्षीणकषायका अंत समयविषैं जो अनुभाग रह्या था ताकौं अनंतका भागदीएं तहां वहुभाग घटाइ एक भागमात्र अवशेष राखै है। वहुरि कपाट रूप द्वितीय समयविषैं जो दंड समयविषैं स्थिति अनुभाग रहे थे तिनकौं क्रमतैं असंख्यात अनंतका भागदीएं तहां वहुभाग घटाइ एकभागमात्र अवशेष राखै है। वहुरि प्रतर रूप तीसरा समयविषैं कपाट समयविषैं जो स्थिति अनुभाग रह्या ताकौं असंख्यात अनंतका भाग क्रमतैं दीएं तहां वहुभाग घटाइ एकभागमात्र अवशेष राखै है। वहुरि लोक पूरणरूप चौथा समय विषै जो प्रतर समयविषैं स्थिति अनुभाग रह्या था ताकौं असंख्यात अनंतका भाग क्रमतैं दीएं तहां वहुभाग घटाइ एक भाग मात्र अवशेष राखै है। प्रशस्त प्रकृतिनिका स्थिति घात हो है अनुभाग घात न हो है ऐसा जानना। वहुरि गुणश्रेणि निर्जरा आवर्जित करणवत् हो है ॥ ६२४ ॥

चउसमएसु रसस्स य अणुसमओवट्टणा असत्थाणं।
ठिदिखंडस्सिगिसमयिगघादो अंतोमुहुत्तुवरिं ॥

चतुःसमयेषु रसस्य च अनुसमयापवर्तनमशस्तानां।
स्थितिखंडस्यैकसमयिकघातो अंतर्मुहूर्तोपरि ॥ ६२५ ॥

स० चं०– ऐसैं च्यारि समयनिविषैं अप्रशस्त प्रकृतिनिके अनुभागका अनुसमय ७३७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पवर्तन भया। समय समय अनुभागका घटना भया। बहुरि स्थिति खंडका एक समयकरि घातभया। एक एक समयविषैं एक एक स्थिति कांडक घात कीया सो यह माहात्म्य समुद्घात क्रियाका जानना। बहुरि लोक पूरणके अनंतरि अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति कांडक वा अनुभाग कांडकका आयाम जानना। अंतर्मुहूर्त कालकरि स्थिति अनुभागका घटावना जानना॥ ६२५॥

जगपूरणम्हि एक्का जोगस्स य वग्गणा ठिदी तत्थ।
अंतोमुहुत्तमेत्ता संखगुणा आउआ होहि॥६२६॥

जगत्पूरणे एका योगस्य च वर्गणा स्थितिस्तत्र।
अंतर्मुहूर्तमात्रा संख्यगुणा आयुषो भवति॥ ६२६॥

स० चं०— लोक पूरणका समयविषैं योगनिकी एक वर्गणा है। पूर्वैं आत्माके प्रदेशनिविषैं हीनाधिक योगनिके अविभाग प्रतिच्छेद थे। इहां आत्माके सर्व प्रदेशनिविषैं समान प्रमाण लीएं योगनिके अविभाग प्रतिच्छेद भए। याका नाम समयोग परिणाम है। सो यहु सूक्ष्म निगोदियाकैं जो जघन्य योग स्थान है ताकी जघन्य वर्गणातैं असंख्यात गुणी जो यथा योग्य मध्यम वर्गणा ताका वर्गनिके समान इहां सर्व आत्म प्रदेशनिविषैं समानरूप अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं। सो यहु एक समय ही रहै हैं। पीछे हीनाधिकता लीएं पूर्वस्पर्धक रूप योग परिणमि जाय हैं। बहुरि तहां लोक पूरण समयविषैं अंतर्मुहूर्तमात्र स्थिति अवशेष राखिए है। सो यहु अवशेष रह्या आयुतैं संख्यात गुणा जानना। इहां पूर्व स्थिति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थीं तामें इतनी स्थिति विना अवशेष सर्व स्थितिका कांडककरि घात भया है॥ ६२६॥ इस लोकपूरण क्रियाके अनंतरि समुद्घात क्रियाकौं समेटैं हैं सो क्रम कहिए है—

एत्तो पदर कवाडं दंडं पच्चा चउत्थसमयम्हि।
पविसिय देहं तु जिणो जोगणिरोधं करेदीदि॥

अतः प्रतरं कपाटं दंडं प्रतीत्य चतुर्थसमये।
प्रविश्य देहं तु जिनो योगनिरोधं करोतीति॥ ६२७॥

स० चं०— इस लोक पूरणके अनंतरि प्रथम समयविषैं लोकपूरणकौं समेटि प्रतररूप आत्म प्रदेश करै है। द्वितीय समयविषैं प्रतर समेटि कपाट रूप आत्म प्रदेश करै है। तीसरे समय कपाट समेटि दंड रूप आत्मप्रदेश करै है। ताके अनंतरि चौथा समयविषैं दंड समेटि सर्व प्रदेश मूल शरीरविषैं प्रवेश करै है। इहां समुद्घात क्रियाके करने समेटनेविषैं सात समय भए। तहां दंडके दोय समयनिविषैं औदारिक काय योग है जातैं इहां अन्य योग न संभवै हैं। वहुरि कपाटके दोय समयनिविषैं औदारिक मिश्रकाय योग है जातैं इहां मूल औदारिक शरीर अर कार्माण शरीर इन दोऊनिका अवलंबनकरि आत्मप्रदेश चंचल हो हैं। वहुरि प्रतरके दोय समय अर लोकपूरणका एक समय विषैं कार्माण काय योग है जातैं तहां मूल शरीरका अवलंबन करि आत्म प्रदेश चंचल न हो हैं। वा शरीर योग्य नोकर्मरूप पुद्गलकौं नाहीं ग्रहण करैं हैं। तहां अनाहारक है ऐसा जानना। पीछैं मूल शरीरविषैं प्रवेशकरि तिस शरीर प्रमाण आत्मा भया तहां औदारिक योग ही है ऐसैं समुद्घात क्रियाका वर्णन किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वहुरि लोकपूरण पीछैं स्थिति अनुभाग कांडक घातका आरंभ कीया था सो मूल शरीर विषैं प्रवेशकरि शरीर प्रमाण आत्मा होइ अंतर्मुहूर्त काल तहां विश्राम कीया। तहां संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं पीछैं योगनिका निरोध करै है। इहां निरोध नाम नाशका जानना ॥ ६२७ ॥

बादरमण वचि उस्सास कायजोगं तु सुहुमजचउक्कं।
रुंभदि कमसो बादरसुहुमेण य कायजोगेण ॥

वादरमनो वच उच्छ्वासकाययोगं तु सूक्ष्मजचतुष्कं।
रुणाद्धि क्रमशो वादरसूक्ष्मेण च काययोगेन ॥ ६२८ ॥

स० चं०– वादर काययोग रूप होइ वादर मनोयोग वचन योग उश्वास काययोग इन च्यारयोंकौं क्रमतैं नष्ट करै है। वहुरि सूक्ष्म काययोग रूप होइ तिन चार्यो सूक्ष्मनिकौं क्रमतैं नष्ट करै है। सोई कहिए है–

केवली भगवान वादर काययोग प्रवर्ततौ संतौ पहले वादर मनोयोगकौं नष्टकरि सूक्ष्म कृष्टि रूप करै है। पीछै वादर वचन योगकौं नष्टकरि सूक्ष्मरूप करै है। पीछै वादर उश्वासकौं नष्टकरि सूक्ष्मरूप करै है। पीछै वादर काययोगकौं नष्ट करि सूक्ष्मरूप करै है याप्रकार जो वादर रूप इनकी शक्ति पूर्वैं थी ताकौं घटाइ सूक्ष्म करी। वहुरि केवली सूक्ष्म काययोग रूप प्रवर्ततौ पहलैं सूक्ष्म मनोयोगकौं पीछै सूक्ष्मवचन योगकौं पीछैं सूक्ष्म उश्वासकौं पीछैं सूक्ष्म काययोगकौं नष्ट करै है। इहां प्रश्न–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो विद्यमानका नाश संभवै। इहां काययोग रूप प्रवर्तना अन्य योग है नाही जातै सिद्धांतविषैं एकै कालि एक योग कह्या है वहुरि जे योग नाहीं तिनका नाश कैसें करै है ताका समाधान—जो वर्तमान व्यक्तरूप काय योग ही प्रवर्तैं है परंतु मन वचनयोगकी वर्गणानि-विषैं मन वचन योग उपजावनेकी शक्ति तहां पाइए है ताकौं नष्ट करै है। तिनकी पहलैं वादरयोग उपजावनेकी शक्ति दूर करि सूक्ष्म कृष्टि योग उपजावनेकी शक्तिरूप तिनकौं करैं है। पीछैं ताकौं भी मिटाइ योग उपजावनेकी शक्तिकरि रहित करै है। ऐसा अर्थ जानना—इहां कारणविषैं कार्यका उपचार हो है इस न्यायकरि योगकौं कारण जो वर्गणानिविषैं शक्ति ताकौं योग कहिए है ॥ ६२८ ॥ इहां पूर्वें वादर योग थे तिनकौं सूक्ष्मरूप परिनमाएं ते कैसें भएं ? सो कहिए है—

सण्णिविसुहुमणि पुण्णे जहण्णमणवयणकायजोगादो।
कुणदि असखगुणूणं सुहुमणिपुण्णवरदोवि उस्सासं॥

संज्ञिद्विसूक्ष्मे पूर्णे जघन्यमनोवचनकाययोगतः।
करोति असंख्यगुणोनं सूक्ष्मनिपूर्णावरतोपि उच्छ्वासं ॥ ६२९ ॥

स० चं०— संज्ञी पर्याप्तकैं जो जघन्य मनोयोग पाइए है तातैं असंख्यात गुणा घटता ऐसा सूक्ष्म मनोयाग करै है। अर वेंद्रिय पर्याप्तकैं जो जघन्य वचन योग पाइए है तातैं असंख्यात गुणा वादर वचन योग था ताकौं घटाइ तातैं असंख्यात गुणा घटता सूक्ष्म वचन योग करै है। वहुरि सूक्ष्म निगोद पर्याप्तका जघन्य काययोगतैं असंख्यात गुणा वादर का-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ययोग था ताकौं मिटाइ तातैं असंख्यात गुणा घटता सूक्ष्म काययोग करै है। वहुरि सूक्ष्म निगोदिया पर्याप्तका जघन्य उश्वासतैं असंख्यात गुणा वादर उश्वास था ताकौं मिटाइ तातैं असंख्यात गुणा घटता सूक्ष्म उश्वास करै है ॥ ६२९ ॥

एक्कक्कस्स णिठंभणकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो हु।
सुहुमं देहणिमाणमाणं हियमाणि करणाणि ६३०

एकैकस्य निष्टंभनकालो अंतर्मुहूतमात्रो हि।
सूक्ष्मं देहानिर्माणं आनं हीयमानं करणानि ॥ ६३० ॥

स० चं०— एक एक वादर सूक्ष्म मनोयोगादिकके निरोधकरनेका काल प्रत्येक अंतर्मूहूर्त मात्र जानना। वहुरि सूक्ष्म काययोगविषैं तिष्ठता सूक्ष्म उश्वासकौं नष्ट करनेके अनंतरि सूक्ष्म काययोग नाशकरनेकौं प्रवर्तै है। ताकै विना इच्छा अबुद्धिपूर्वक आगैं कहिए है ते कार्य हो हैं ॥ ६३० ॥

सुहुमस्स य पढमादो मुहुत्तअंतोत्ति कुणदि हु अपुव्वे।
पुव्वगफड्ढगहेट्ठा सेढिस्स असंखभागमिदो ॥

सूक्ष्मस्य च प्रथमात् मुहूर्तांतरिति करोति हि अपूर्वान्।
पूर्वस्पर्धकाधस्तनं श्रेण्या असंख्यभागमितं ॥ ६३१ ॥

स० चं०— सूक्ष्म काय योग होनेका प्रथम समयतै लगाय अंतर्मूहूर्त कालपर्यंत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वस्पर्धकानिके नीचैं जगच्छ्रेणिके असंख्यातवे भाग मात्र अपूर्वस्पर्धक करै है। सोई कहिए है–

पूर्वस्पर्धकनिका स्वरूप गोम्मटसारका कर्मकांडविषैं जो बंध सत्व उदय अधिकार है तिसविषैं प्रदेश वंधका कथनका प्रसंग पाइ योगनिका वर्णन कीया है तहांतै जानना इहां भी किछू कहिए है–

जघन्य योगस्थान युक्त जीव ताके लोकमात्र प्रदेश तिनविषैं जिस प्रदेशविषैं सवतैं स्तोक योगशक्ति पाइए ताकौं स्थापि ताके उपरि तिसतैं बंधती अर अन्य प्रदेशनितैं हीन जिस अन्य प्रदेशविषैं योग शक्ति पाइए ताकौं स्थापैं तिस प्रदेशतैं याविषैं जितनी योग शक्ति बंधती है ताका नाम अविभाग प्रतिच्छेद है। बुद्धिविषैं इतने प्रमाण खंड कल्पि याकरि योगशक्तिका प्रमाण कीजिए तव जघन्य शक्तियुक्त प्रदेशनिविषैं असंख्यात लोकमात्र अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं। इनका समूहरूप जो एक प्रदेश ताकौं जघन्य वर्ग कहिए है। बहुरि इतने इतने अविभाग प्रतिच्छेद जिनि प्रदेशनिविषैं समानरूप पाइए तिनिका समूहका नाम जघन्य वर्गणा है। ते प्रदेश कितने हैं ?

सर्व जीवके प्रदेशनिकौं साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं एक भागमात्र हैं सो असंख्यात जगत्प्रतर प्रमाण हैं। इहां एक गुणहानिविषैं जो स्पर्धकनिका प्रमाण ताकौं एक स्पर्धकविषैं जो वर्गणानिका प्रमाण ताकौं गुणैं जो होइ सो एक गुणहानिका प्रमाण जानना। बहुरि ताके उपरि जघन्य वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनितैं एक अविभाग प्रतिच्छेद जिनिविषैं अधिक पाइए ऐसैं वर्गनिका समूह रूप द्वितीय वर्गणा है। ते वर्गरूप प्रदेश कितने हैं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जघन्य वर्गणाके प्रदेशनितैं एक विशेषमात्र घटती हैं। विशेषका प्रमाण जघन्य वर्गणाकौं दोयगुणहानिका भाग दीएं जो होइ सो जानना। बहुरि इहांतैं ऊपरि द्वितीय गुणहानिकी प्रथम वर्गणा पर्यंत वर्गणानिविषैं प्रदेशरूप वर्गणानिका प्रमाण एक २ विशेषमात्र घटता क्रमतैं जानना।

तहां द्वितीय वर्गणाका वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनितैं एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनिका समूहरूप तृतीय वर्गणा होइ ऐसैं एक एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनिका क्रम लीएं जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र वर्गणानिकी रचना करिए, इनका समूहका नाम जघन्य स्पर्धक है। बहुरि ताके ऊपरि जघन्य वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनितैं दूणा अविभाग प्रतिच्छेदयुक्त वर्गनिका समूहरूप द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणा हो है। ताके ऊपरि तातैं एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनिका समूहरूप ताकी द्वितीय वर्गणा है ऐसैं क्रम लीएं श्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र वर्गणा होइ तिनके समूहका नाम द्वितीय स्पर्धक है। बहुरि ताके ऊपरि जघन्यवर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनितैं तिगुणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनिका समूहरूप तृतीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होइ। ताके ऊपरि पूर्वोक्तवत् एक एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक युक्त वर्गनिका समूहरूप द्वितीयादि वर्गणा होइ ऐसैं श्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र वर्गणा होइ तिनके समूहका नाम तृतीय स्पर्धक है। या प्रकार अविभाग प्रतिच्छेद बंधनेका यावत् अनुक्रम होइ तावत् सोई स्पर्धक अर युगपत् अनेक स्पर्धक बंधै अन्य स्पर्धक होंइ। सो ऐसैं जगच्छ्रेणिके असंख्यातवै भागमात्र स्पर्धक भएं तिनिका समूहरूप प्रथम गुणहा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नि हो है। बहुरि ताके ऊपरि एक गुणहानिविषैं जो स्पर्धकानिका प्रमाण तातैं एक अधिक प्रमाणकरि गुणित जो जघन्य वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण होइ तितने अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनिका समूहरूप द्वितीय गुणहानिका प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होइ। याविषैं वर्गनिका प्रमाण प्रथम गुणहानिकी प्रथम वर्गणाके वर्गनिका प्रमाणतैं आधा जानना। बहुरि ताके ऊपरि प्रथम गुणहानिवत् अनुक्रम जानना। वर्गणानिविषैं वर्गनिका प्रमाण एक एक विशेष घटता है। सो इहां विशेषका प्रमाण प्रथम गुणहानिके विशेषतैं आधा जानना। ऐसैं द्वितीय गुणहानि समाप्त होइ है।

ऐसैं जघन्य स्पर्धकतैं लगाय जितने स्पर्धक होंइ तितना गुणकारकरि जघन्यवर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिकौं गुणैं विवक्षित स्पर्धककी प्रथम वर्गणाका वर्गविषैं अविभाग प्रतिच्छेदानिका प्रमाण होइ। ऊपरि द्वितीयादि वर्गणानिविषैं एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बंधता क्रम लीएं वर्ग पाइए है। असंख्यात लोकमात्र अविभाग प्रतिच्छेदनिका समूहरूप एक प्रदेशका नाम वर्ग है। असंख्यात जगत्प्रतरमात्र वर्गनिका समूहरूप एक वर्गणा है। जगच्छ्रेणिके असंख्यातवै भागमात्र वर्गणानिका समूहरूप एक स्पर्धक है। ताके असंख्यातवै भागमात्र जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भाग प्रमाण स्पर्धकानिका समूहरूप एक गुणहानि हो है। गुणहानि २ प्रति वर्गणानिविषैं वर्गनिका प्रमाण वा विशेषका प्रमाण क्रमतैं आधा आधा हो है। याहीतैं गुणहानि ऐसा नाम है। ऐसैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र नानागुणहानिका समूहरूप जघन्य योगस्थान हो है। स्पर्धकानिकी संदृष्टि इहां जघन्य वर्गविषैं अविभाग प्रतिच्छेद आठ सो ऐसैं वर्गनिका समूहरूप प्रथम वर्गणा है ताके ८४५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपरि नव नव अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनिका समूहरूप द्वितीय वर्गणा ऐसैं एक एक बंधता क्रम ग्यारह अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्ग पर्यंत कीया इहां प्रथम स्पर्धक भया । बहुरि दूसरे स्पर्धकके प्रथम वर्गणाके वर्गनिविषैं सोलह सोलह अविभाग प्रतिच्छेद ऊपरि एक एक बंधता बहुरि तीसरे स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके वर्गनिविषैं चौईस चौईस ऊपरि एक एक बंधता अविभाग प्रतिच्छेद है। ऐसैं अंकसंदृष्टिकरि पूर्वोक्त कथनके अनुसारि रचना जाननी--

	अंतर		अंतर		अंतर		अंतर	
११	०	१९	०	२७	०	३५	०	४३
१० १०	०	१८ १८	०	२६ २६	०	३४ ३४	०	४२ ४२
९ ९ ९	०	१७ १७ १७	०	२५ २५ २५	०	३३ ३३ ३३	०	४१ ४१ ४१
८ ८ ८ ८	०	१६ १६ १६ १६	०	२४ २४ २४ २४	०	३२ ३२ ३२ ३२	०	४० ४० ४० ४०

ऐसैं जघन्य योगस्थान सूक्ष्म निगोदिया लब्धि अपर्याप्तका विग्रहगतिविषैं प्रथम समयवर्ती जीवकैं हो है। ताके प्रदेशनिविषैं योगशक्तिकी हीन अधिकता पूर्वोक्त प्रकार जाननी। बहुरि याविषैं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र जे जघन्य स्पर्धक तिनके जेते अविभाग प्रतिच्छेद होंइ तिनने मिलाएं दूसरा स्थान हो है। तिस जघन्य योगस्थानतैं बंधता औरनितैं घटता योगस्थान कोई जीवके होइ तो दूसरा स्थान होइ यातैं घाटि न होइ। या प्रकार एक एक स्थानप्रति सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र जघन्य स्पर्धक वधै। ऐसैं जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र स्थानभएं सर्वोत्कृष्ट योगस्थान हो है। सो संज्ञी पर्याप्तककैं संभवै है। याप्रकार योगस्थान हैं तिनविषैं सयोगि जिन हैं सो पाहिली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संज्ञी पर्याप्तिकैं संभवता जो बादर काययोग रूपस्थान तिसरूप प्रवर्तती ताकौं नष्टकरि सूक्ष्म निगोदियाका जघन्यस्थानतैं असंख्यात गुणा घटता सूक्ष्म काययोग तिसरूप प्रवर्त्या। बहुरि तिस पूर्व स्पर्धकरूप सूक्ष्म काययोगकी शक्तिकौं अपूर्व स्पर्धकरूप परिणमावे है। इहांतैं पहले कबहूं ऐसी क्रिया न भई तातैं सार्थक अपूर्व स्पर्धक नाम है। ते अपूर्व स्पर्धक योगनिका जघन्यस्थान संबंधी जघन्य स्पर्धकके नीचे असंख्यात गुणा घटता अविभाग प्रतिच्छेद लीएं हो हैं। तिनका प्रमाण जगच्छ्रेणिके असंख्यातवां भागप्रमाण है ॥ ६३१ ॥

पुव्वादिवग्गणाणं जीवपदेसा विभागपिंडादो ।
होदि असंखं भागं अपुव्वपढमम्हि ताण दुगं ॥

पूर्वादिवर्गणानां जीवप्रदेशाविभागपिंडतः ।
भवति असंख्यं भागमपूर्वप्रथमे तयोर्द्विकम् ॥ ६३२ ॥

स० चं०— पूर्वस्पर्धकनिके जीवके प्रदेशनिका पिंडतैं अर आदि वर्गणाका अविभाग प्रतिच्छेदनिका पिंडतैं अपूर्व स्पर्धकका प्रथम समयविषैं तिनके ते दोऊ असंख्यातवें भाग मात्र हो हैं। भावार्थ—

पूर्व स्पर्धकनिके सर्वप्रदेश साधिक द्व्यर्धगुणहानिगुणित प्रथम वर्गणामात्र हैं। तिनकौं अपकर्षण भागहार मात्र असंख्यातका भाग दीएं जो एकभागमात्र प्रदेश तिनकौं अपूर्व स्पर्धक रूप हो है। बहुरि पूर्वस्पर्धकनिकी जो आदि वर्गणा ताका वर्गविषैं जे ते अविभा-गमात्र प्रदेश तिनकौं अपूर्व स्पर्धक रूप हो है। बहुरि पूर्व स्पर्धकनिकी जो आदि वर्गणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताका वर्गविषैं जेते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए है ताकौं पल्यके असंख्यातवां भागमात्र असंख्यातका भाग दीएं तहां एकभागमात्र अपूर्वस्पर्धककी अंतवर्गणाका वर्गविषैं अविभाग प्रतिच्छेद पाइए हैं। इहां प्रथम समयविषैं अपकर्षण कीए जे जीवके प्रदेश तिनिविषैं अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं तो वहुत प्रदेश दीजिए है। अर द्वितीयादि अंत पर्यंत वर्गणानिविषैं विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। इहां विशेषका प्रमाण प्रथम वर्गणाकौं जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागका भाग दीएंआवै है। बहुरि अपूर्व स्पर्धककी अंतवर्गणाविषैं दीया प्रदेश समूहकौं साधिक अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एकभागमात्र पूर्वस्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं दीया प्रदेश समूह हो है। ताके ऊपरि यथोचित विशेष घटता क्रमलीएं प्रदेश दीजिए है। इहां प्रदेश देनेका अर्थ यहु जानना जो प्रदेशनिकौं ऐसैं योगरूप परिनमाइए है। इहां प्रथम समयविषैं कीने अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण जो एक गुणहानिविषैं पूर्वस्पर्धकनिका प्रमाण है ताके असंख्यातवैं भागमात्र जानना ॥ ६३२ ॥

उक्कट्टदि पडिसमयं जीवपदेसे असंखगुणियकमे।
कुणदि अपुव्वफड्ढयं तग्गुणहीणक्कमेणेव ॥

अपकर्षति प्रतिसमयं जीवप्रदेशान् असंख्यगुणितक्रमेण।
करोति अपूर्वस्पर्धकं तद्गुणहीनक्रमेणैव ॥ ६३३ ॥

स० चं०– द्वितीयादि समयनिविषैं समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रमकरि जीव प्रदेशनिकौं अपकर्षण करै है। बहुरि असंख्यात गुणा घटता क्रमकरि नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है। तहां द्रव्य देनेका विधान कहिए है–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय समयविषैं जेते प्रथम समयविषैं प्रदेश अपकर्षण कीए तिनितैं असंख्यात गुणा प्रदेशनिकौं अपकर्षण करि प्रथम समयविषैं कीने थे जे अपूर्वस्पर्धक तिनके नीचैं इस समयविषै नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है। तहां अपकर्षण कीए प्रदेशनिविषैं तिन नवीन कीए अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं वहुत प्रदेश दीजिए है। ताके ऊपरि द्वितीयादि अत पर्यंत वर्गणानिविषैं विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। यहां प्रथम समयविषैं कीएं अपूर्व स्पर्धकानितैं द्वितीय समयविषैं कीएं नवीन अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण असंख्यात गुणां घटता जानना। बहुरि तिसकी अंतवर्गणाके ऊपरि प्रथम समयविषैं कीएं अपूर्व स्पर्धकनिकी प्रथम वर्गणा तीहिविषैं तातैं असंख्यात गुणा घटता दीजिए है। ताके ऊपरि पूर्व स्पर्धककी अंत वर्गणा पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। वहुरि तृतीयादि समयनिविषैं भी ऐसैं ही विधान जानना। विशेष इतना—

समय समय प्रति अपकर्षण कीए प्रदेशनिका प्रमाण असंख्यात गुणा क्रमतैं जानना। अर नीचैं नीचैं नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है तिनका प्रमाण असंख्यात गुणा घटता क्रमतैं जानना। बहुरि तहां अपकर्षण कीया प्रदेशनिविषैं नवीन स्पर्धककी प्रथमवर्गणाविषैं वहुत प्रदेश होंइ। ताके ऊपरि ताकी अंत वर्गणापर्यंत तौ विशेष घटता क्रमलीएं देना। अर ताके ऊपरि पूर्व समयविषैं कीने स्पर्धककी प्रथम वर्गणा विषैं असंख्यात गुणा घटता दीजिए है। ताके ऊपरि विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। ऐसैं देय प्रदेशनिका विधान कह्या अर दृश्यमान प्रदेश सर्व समयनिविषैं पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिकैं विशेष घटता क्रमलीएं ही जानना॥

सेढिपदस्स असंखं भागं पुव्वाण फड्डयाणं वा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वे होंति अपुव्वा हु फड्डया जोगपडिबद्धा ॥

श्रेणिपदस्यासंख्यं भागं पूर्वेषां स्पर्धकानां वा।
सर्वे भवंति अपूर्वा हि स्पर्धका योगप्रतिबद्धाः ॥ ६३४ ॥

स० चं० सर्व समयनिविषैं कीए योग संबंधी अपूर्व स्पर्धक तिनिका जो प्रमाण सो जगच्छ्रेणिका प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवैं भागमात्र है। अथवा सर्व पूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण के असंख्यातवैं भागमात्र है। जातैं पूर्व स्पर्धकनिविषैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र गुणहानि पाइए है। तहां एक गुणहानिविषैं जो स्पर्धकनिका प्रमाण ताके असंख्यातवे भागमात्र सर्व अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण है। ऐसैं अंतर्मुहूर्त कालविषैं अपूर्व स्पर्धक क्रिया हो है। इहां स्थिति अनुभाग कांडकका घात गुणश्रेणी निर्जरा पूर्ववत् ही प्रवर्तैं है ॥ ६३४ ॥

एत्तो करेदि किट्टिं मुहुत्तअंतोत्ति ते अपुव्वाणं।
हेट्ठादु फड्ढयाणं सेढिस्स असंखभागमिदं ॥ ६३५ ॥

इतः करोति कृष्टिं मुहूर्तांतरिति ता अपूर्वेषाम्।
अधस्तनात् स्पर्धकानां श्रेण्या असंख्यभागमितं ॥ ६३५ ॥

स० चं०– याके अनंतरि अंतर्मुहूर्त कालपर्यंत अपूर्व स्पर्धकनिके नीचैं सूक्ष्म कृष्टि करै है। जो पूर्व अपूर्व स्पर्धकरूप योग शक्ति थी ताकौं घटाइ असंख्यात गुणी घाटि करै है। तिन सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाण जगच्छ्रेणिके असंख्यातवैं भागमात्र है। एक स्पर्धकविषैं जो वर्गणानिका प्रमाण ताके असंख्यातवे भागमात्र है ॥ ६३५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपुव्वादिवग्गणाणं जीवपदेसाविभागपिंडादो ।
होंति असंखं भागं किट्टीपढमम्हि ताण दुगं ॥६३६॥

अपूर्वादिवर्गणानां जीवप्रदेशाविभागपिंडतः ।
भवंति असंख्यं भागं कृष्टिप्रथमे तयोर्द्विकम् ॥

स० चं०– अपूर्व स्पर्धक संबंधी सर्व जीव प्रदेशनिके अर अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिके असंख्यातवे भागमात्र कृष्टि करणका प्रथम समयविषैं तिनकेते दोऊ हो हैं । भावार्थ–

सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिका जो प्रदेश समूह ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एकभागमात्र प्रदेश प्रथम समयविषैं ग्रहि कृष्टि करिए है । सो इनिका प्रमाण सर्व अपूर्व स्पर्धकानिके प्रदेशनिका प्रमाणके असंख्यातवे भागमात्र है । बहुरि अपूर्व स्पर्धकनिकी जघन्य वर्गणाका वर्गके जेते अविभाग प्रतिच्छेद हैं तिनके असंख्यातवे भागमात्र उत्कृष्ट अंतकृष्टिके एक प्रदेश संबंधी अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है । बहुरि इहां प्रथम समयविषैं अपकर्षण कीया प्रदेश देनेका विधान कहिए है—

जघन्य कृष्टिविषैं बहुत प्रदेश दीजिए है । ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत कृष्टिनिविषैं विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है । इहां विशेषका प्रमाण प्रथम कृष्टिकौं जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागका भाग दीएं आवै है । बहुरि अंत कृष्टितैं अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणा विषैं असंख्यात गुणा घाटि दीजिए है । बहुरि उपरि विशेष घटता क्रम लीएं प्रदेश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीजिए है। इहां प्रथम समय विषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाण है सो एक स्पर्धक विषैं जितना वर्गणानिका प्रमाण ताके असंख्यातवें भागमात्र है ॥ ६३६ ॥

उक्कट्टदि पडिसमयं जीवपदेसे असंखगुणियकमे।
तंगुणहीणकमेण य करेदि किट्टिं तु पडिसमए ॥

अपकर्षति प्रतिसमयं जीवप्रदेशान् असंख्यगुणितक्रमेण।
तद्गुणहीनक्रमेण च करोति कृष्टिं तु प्रतिसमयं ॥ ६३७ ॥

स० चं०—द्वितीयादि समयानिविषैं समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रमकरि जीवके प्रदेशनिकौं अपकर्षण करै है। बहुरि समय समय प्रति पूर्व समयविषैं कीनी जे कृष्टि तिनके नीचैं असंख्यात गुणा घटता क्रमलीएं नवीन कृष्टि करै है। इहां अपकर्षण कीया प्रदेश देनेका विधान कहिए है—

नवीन कृष्टिकी प्रथम कृष्टिविषैं जो वहुत प्रदेश दीजिए है ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत कृष्टिनिविषैं विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। ताके ऊपरि पूर्वसमयविषैं कीनी कृष्टि की प्रथम कृष्टिविषैं असंख्यात गुणा घटता दीजिए है। इस कृष्टिविषैं पूर्वे जेते प्रदेश थे तितने अर एक विशेष इतना प्रदेश नवीन अंत कृष्टितैं याविषैं घाटि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि अंत कृष्टिपर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। इहां मध्यम खंडादिविधान पूर्वोक्त प्रकार जानना। वहुरि अंत कृष्टिविषैं दीया द्रव्यतैं अपूर्वस्पर्धककी आदि वर्गणाविषैं दीया प्रदेश संख्यात गुणा जानना। ताके ऊपरि अंत पूर्वस्पर्धक वर्गणापर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं प्रदेश दीजिए है ॥६३७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेढिपदस्स असंखं भागमपुव्वाण फड्ढयाणं व ।
सव्वाओ किट्टीओ पल्लस्स असंखभागगुणिदकमा ॥

श्रेणिपदस्य असंख्यं भागं अपूर्वेषां स्पर्धकानां वा ।
सर्वाः कृष्टयः पल्यस्य असंख्यभागगुणितक्रमाः ॥ ६३८ ॥

स० चं०--सर्व समयनिविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाण जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र है । अथवा अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाणके असंख्यातवां भागमात्र है इहां कोऊ कहै--

स्पर्धक अर कृष्टिविषैं विशेष कहा ? ताका समाधान अविभाग प्रतिच्छेद अपेक्षा स्पर्धक तौ विशेष बंधता क्रमलीएं हैं । अपूर्व स्पर्धकनिविषै भी पूर्वस्पर्धकवत् ही अविभाग प्रतिच्छेदिनिका क्रम पाइए है । बहुरि कृष्टि है सो गुणकार बंधता क्रमलीएं है ऐसा विशेष है । कृष्टिनिविषै गुणकार पल्यका असंख्यातवां भागमात्र जानना । अंतकृष्टिविषैं समान अविभाग प्रतिच्छेद युक्त असंख्यात जगत्प्रतर प्रमाण जीव प्रदेश हैं । तिनविषैं जो एक प्रदेश तीहिंविषैं जेते अविभाग प्रतिच्छेद हैं तिनतैं द्वितीयकृष्टिका एक प्रदेशविषैं पल्यका असंख्यातवां भाग गुणे हैं । तातैं तृतीय कृष्टिका एक प्रदेशविषैं तितने गुणे हैं ऐसैं अंतकृष्टि पर्यंत क्रम जानना । अंतकृष्टितैं अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाका एक प्रदेशविषैं अविभाग प्रतिच्छेद पल्यका असंख्यातवां भाग गुणा है । इस गुणकारकौं कृष्टिस्पर्धक संबंधी कहिए ताके ऊपरि द्वितीयादि वर्गणानिके प्रदेशनिविषैं यथा संभव स्पर्धक विधानवत् विशेष बंधते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए हैं ऐसैं एक एक प्रदेश अपेक्षा कथन कीया । नाना प्रदे-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शनिकी अपेक्षा जघन्य कृष्टिके सर्व प्रदेश संबंधी अविभाग प्रतिच्छेदनिकौं पल्यका असंख्यातवां भागकरि गुणैं द्वितीय कृष्टिके सर्व अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है। ऐसैं अंतकृष्टि पर्यंत गुणकार जानना। बहुरि अंतकृष्टितैं अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके सर्वप्रदेश संबंधी अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यात गुणे घाटि हैं। जातैं अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं अविभाग प्रतिच्छेद अंत कृष्टितैं जेते गुणे हैं तिस गुणकारतैं असंख्यात गुणे गुणकार करि गुणित तिस प्रथम वर्गणाके प्रदेशमात्र अंत कृष्टिके प्रदेश पाइए हैं ॥६३८॥

एत्थापुव्वविहाणं अपुव्वफड्ढयविहिं व संजलणे।
वादराकिट्टिविहिं वा करणं सुहुमाण किट्टीणं ॥

अत्रापूर्वविधानं अपूर्वस्पर्धकविधिरिव संज्वलने।
वादरकृष्टिविधिरिव करणं सूक्ष्माणां कृष्टीनाम् ॥ ६३९ ॥

स० चं०–इहां योगनिके अपूर्व स्पर्धक करनेका विधान जैसैं पूर्वैं संज्वलन कषायके अपूर्व स्पर्धक करनेका विधान कह्या तैसैं जानना। बहुरि इहां योगनिकी सूक्ष्म कृष्टि करनेका विधान पूर्वैं जैसैं संज्वलन कषायकी वादर कृष्टि करनेका विधान कह्या है तैसैं जानना। प्रमाणादिकका विशेष है सो विशेष जानना ॥ ६३९ ॥

किट्टीकरणे चरमे से काले उभयफड्ढये सव्वे।
णासेइ मुहुत्तं तु किट्टीगदवेदगो जोगी ॥ ६४० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्टिकरणचरमे स्वे काले उभयस्पर्धकान् सर्वान् ।
नाशयाति मुहुर्तं तु कृष्टिगतवेदको योगी ॥ ६५० ॥

स० चं०— कृष्टिकारण कालका अंत समय भएं ताके अनंतरि अपने कालविषैं सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धकरूप प्रदेशनिकों नष्ट करै है । कृष्टि करण कालका अंत समय पर्यंत पूर्व अपूर्व स्पर्धक दृश्यमान थे अव ते सर्व ही कृष्टि रूप परिणमे बहुरि इस समयतैं लगाय सयोगी गुण स्थानका अंतपर्यंत जो अंतर्मुहूर्त काल तिसविषैं कृष्टिको प्राप्त योग ताकों वेदे है—अनुभवे है प्रदेशनिविषै जो कृष्टिरूप योग शक्ति भई सो अव वह प्रगट परिणमै है ॥

पढमे असंखभागं हेट्ठुवरिं णासिदूण विदियादी ।
हेट्ठुवरिमसंखगुणं कमेण किट्टिं विणासेदि ॥६४१॥

प्रथमे असंख्यभागं अधस्तनोपरि नाशयित्वा द्वितीयादौ ।
अधस्तनोपर्यसंख्यगुणं क्रमेण कृष्टिं विनाशयति ॥ ६४१ ॥

स० चं०— कृष्टि वेदक कालका प्रथम समयविषैं स्तोक अविभाग प्रतिच्छेदयुक्त नीचै-की अर वहुत अविभाग प्रतिच्छेद युक्त ऊपरिकी जे कृष्टि तिनकों वीचिकी कृष्टिरूप परि-णमाइ नष्ट करै है । तिनका प्रमाण सर्वकृष्टिनिके असंख्यातवै भागमात्र है । बहुरि द्विती-यादि समयनिविषैं तिनतैं असंख्यात गुणा क्रमलीएं ऊपरिकी कृष्टिनिकों तैसैं ही नष्ट करै है । इहां ऐसा जानना—

नीचै ऊपरिकी कृष्टिनिकों नाहीं वेदै है । वीचिकी कृष्टिनिकौं वेदै है । वेदक कालविषै नीचै ऊपरिकी कृष्टि है तिनिको वीचिकों कृष्टिरूप परिणमाइ वेदै है ॥ ६४१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मज्झिम बहुभागुदया किट्टिं वक्खिय विसेसहीणकमा।
पडिसमयं सत्तीदो असंखगुणहीणया होंति ॥

मध्या बहुभागोदयाः कृष्टिमपेक्ष्य विशेषहीनक्रमाः।
प्रतिसमयं शक्तितः, असंख्यगुणहीनका भवंति ॥ ६४२ ॥

सं० चं०—सर्व कृष्टिनिकौं असंख्यातका भाग दीए तहां बहुभागमात्र जे वीचिकी कृष्टि ते उदय रूप हो हैं। ते प्रथम समयतैं द्वितीयादि समयनिविषैं विशेष घटता क्रम लीएं जाननी। ऐसैं कृष्टि नाश करनेतैं अविभाग प्रतिच्छेद रूप शक्ति अपेक्षा प्रथम समयतैं द्वितीयादि सयोगीका अंत समय पर्यंत असंख्यात गुणा घटता क्रमलीएं योग पाइए हैं॥ ६४२ ॥

किट्टिगजोगी झाणं झायदि तदियं खु सुहुमकिरियं तु
चरिमे असंखभागे किट्टीणं णासदि सजोगी ॥ ६४३ ॥

कृष्टिगयोगी ध्यानं ध्यायति तृतीयं खलु सूक्ष्मक्रियं तु।
चरमे असंख्यभागान् कृष्टीनां नाशयति सयोगी ॥ ६४३ ॥

स० चं०—ऐसै सूक्ष्मकृष्टिका वेदक जो सयोगी जिन सो तीसरा सूक्ष्म क्रियाऽप्रतिपाति नामा शुक्लध्यानकौं ध्यावै है। सूक्ष्म कृष्टिकौं प्राप्त काययोग जनित इहां क्रिया जो परिस्पंद सो पाइए है। अर अप्रतिपाति कहिए पडनेतैं रहित है तातैं तिस ध्यानका नाम सार्थ है। याका फल योग निरोध होना ही जानना। यद्यपि प्रत्यक्ष निरंतर ज्ञानीकैं चिंता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निरोध लक्षणरूप ध्यान संभवे नाही तथापि योगनिका निरोध होतैं आस्रव निरोध होने रूप ध्यान फलकौं देखि उपचारतैं केवलीकैं ध्यान कह्या है। अथवा छद्मस्थनिकैं चिंताका कारण योग है तातैं कारण विषैं कार्यका उपचार करि योगका भी नाम चिंता है। ताका इहां निरोध हो है। तातै भी ध्यान कहना संभवै है। छद्मस्थनिकैं चिंताका निरोधका नाम ध्यान है केवलीके योग निरोधका नाम ध्यान है ऐसा जानना। ऐसैं पूर्वोक्त प्रकार समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं कृष्टिनिकौं नष्ट करता संता सयोगीका अंत समय विषैं जे कृष्टिनिका संख्यात बहुभाग मात्र वीचिकी कृष्टि अवशेष रहीं तिनिकौं नष्ट करे है जातैं याके अनंतरि अयोगी होना है ॥ ६४ ॥

जोगिस्स सेसकालं मोत्तूण अजोगिसव्वकालं च ।
चरिमं खंडं गेण्हदि सीसेण य उवरिमाठिदीओ ॥

योगिनः शेषकालं मुक्त्वा अयोगिसर्वकालं च ।
चरमं खंडं गृह्णाति शीर्षेण च उपरिस्थितिः ॥ ६४४ ॥

स० चं०– सयोगी गुणस्थानका अंतर्मुहूर्तमात्र काल अवशेष रहैं वेदनी नाम गोत्रका अंतस्थिति कांडककौं ग्रहै है। ताकरि सयोगीका जो अवशेष काल रह्या सो अर अयोगीका सर्व काल मिलाएं जो होइ तितने निषेकनिकौं छोडि अवशेष सर्व स्थितिके गुणश्रेणि शीर्ष सहित जे उपरितन स्थितिके निषेक तिनकौं लांछित करै है। नष्ट करनेकौं प्रारंभै है ॥६४४॥

तत्थ गुणसेढिकरणं दिज्जादिकमो य सम्मखवणं वा । ७५८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतिमफालीपडणं सजोगगुणठाणचरिमम्हि ॥

तत्र गुणश्रेणिकरणं देयादिक्रमश्च सम्यक्क्षपणमिव ।
अंतिमस्फालिपतनं सयोगगुणस्थानचरिमे ॥ ६४५ ॥

स० चं०– तहां गुणश्रेणिका करना वा तहां देय द्रव्यादिकका अनुक्रम सो जैसैं पूर्वै क्षायिक सम्यक्त्व होतैं सम्यक्त्व मोहनीका क्षपणाविधानविषैं कह्या था तैसैं जानना। अंत कांडकके द्रव्यकौं अपकर्षण करि पूर्वोक्त क्रमतैं उदय निषेकविषैं स्तोक द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि कांडक घात भए पीछैं जो अवशेष स्थिति रहैगी ताका अंत समय पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। यहां यहु गुणश्रेणि आयाम प्रारंभ भया सो गलितावशेष जानना। बहुरि इसका अंत समय संबंधी निषेकहीका नाम गुणश्रेणि शीर्ष है। बहुरि इस-तैं याके ऊपरि जो स्थिति कांडकका प्रथम निषेक ताविषैं असंख्यात गुणा द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि पूर्व जो गुणश्रेणि आयाम था ताका अंतपर्यंत विशेष घटता क्रमकरि दीजिए है ताके ऊपरि जो अनंतरवर्ती निषेक ताविषैं असंख्यात गुणा घटता द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ऐसैं अंतकांडकोत्करणका प्रथमादि समय विषैं द्रव्य देनेका विधान है। सो ऐसे अंतकांडककी द्विचरम फालिका पतन रूप जो सयोगीका द्विचरम समय तहां पर्यंत तौ ऐसैं ही विधान है। बहुरि सयोगीका अंत समयविषैं तिनकी अंत फालिका पतन हो है। तहां तिस अंत फालि द्रव्यकौं उदय निषेकविषैं स्तोक अर द्वि-तीयादि अयोगीका अंत समय संबंधी पर्यंत निषेकनिविषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। तहां विशेष है सो जानि लेना। ऐसैं सयोगीका अंत समयविषैं अघातियानिके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंत कांडककी अंत फालिका पतन अर योगका निरोध अर सयोग गुणस्थानकी समाप्ति युगपत् हो है। यातैं उपरि गुणश्रेणि अर स्थिति अनुभागका घात न हो है। अधः स्थिति गलनकरि एक एक समयविषैं एक एक निषेक कूमतैं उदयरूप होइ निर्जरै है। सो समय समय असंख्यात गुणा द्रव्यकी निर्जरा प्रवर्तैं है। ऐसैं सयोग गुणस्थानका प्ररूपण समाप्त भया ॥ ६४५ ॥

से काले जोगिजिणो ताहे आउगसमा हि कम्माणि।
तुरियं तु समुच्छिण्णं किरियं झायदि अयोगिजिणो ॥

स्वे काले योगिजिनः तत्र आयुष्कसमानि कर्माणि।
तुरीयं तु समुच्छिन्नक्रियं ध्यायति अयोगिजिनः ॥ ६४६ ॥

स० चं०– ताके अनंतरि अपने कालविषैं अयोगी जिन हो है। तहां आयु समान तीन अघातियानिकी स्थिति हो है। सो अयोगी जिन; चौथा समुच्छिन्न क्रिया निवृत्तिनामा शुक्ल ध्यानकौं ध्यावै है। सो समुच्छिन्न कहिए उच्छेद भई मन वचन कायकी क्रिया अर निवृत्ति जो प्रतिपात ताकरि रहित यहु ध्यान है तातैं याका नाम सार्थ है। इहां भी ध्यान का उपचार पूर्वोक्त प्रकार जानना जातैं वस्तुवृत्तिकरि एकाग्र चिंतानिरोध ध्यानका लक्षण है सो केवली विषैं संभवै नाहीं। समस्त आस्रव रहित केवलीकैं अवशेष कर्म निर्जराको कारण जो स्वात्मा विषैं प्रवृत्ति ताहीका नाम ध्यान है ॥ ६४६ ॥

सीलेसिं संपत्तो णिरुद्धणिस्सेसआसओ जीवो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधरयाविप्पमुक्को गयजोगो केवली होइ ॥ ६४७ ॥

शीलेशत्वं संप्राप्तो निरुद्धनिःशेषास्रवो जीवः ।
बंधरजोविप्रमुक्तः गतयोगः केवली भवति ॥ ६४७ ॥

स० चं०– गया है योग जाका ऐसा अयोग केवली जीव है सो समस्त शील गुणका स्वामीपना होनेतैं शैलेश्य अवस्थाको प्राप्त हो गया है। यद्यपि सयोगी जिनकौं समस्त शील गुणका स्वामीपना संभवै है परंतु योगनिका आस्रव पाइए है। तातैं सकल संवरके न संभनेतैं ताके शैलेश्य अवस्था न संभवै है। अयोगीकैं योगास्रव भी न पाइए है तातैं सकल संवर होनेतैं ताके शैलेश्य अवस्था संभवै है। बहुरि सो अयोगी जीव निरोधे है समस्त आश्रव जानैं ऐसा है। बहुरि कर्मबंधरूपी रजकरि विप्रमुक्त कहिए रहित है। भावार्थ यहु–अयोगी जिन सर्वथा निरास्रव निर्बंध भया है ॥ ६४७ ॥

वाहत्तरिपयडीओ दुचरिमगे तेरसं च चरिमम्हि ।
झाणजलणेण कवलिय सिद्धो सो होदि से काले ॥

द्वासप्ततिप्रकृतयः द्विचरमके त्रयोदश च चरमे ।
ध्यानज्वलनेन कवलितः सिद्धः स भवति स्वे काले ॥ ६४८ ॥

स० चं०– अयोगीका काल पांच ह्रस्व अक्षर जेते कालकरि उच्चारण करिए तितना है। तहां एक एक समयविषैं एक एक निषेक गलनरूप जो अधःस्थिति गलन ताकरि क्षीण हुई तिस कालका द्विचरम समयविषैं वहत्तरि प्रकृति अर अंत समय विषैं तेरह प्रकृति ७६०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुक्लध्यान रूपी ज्वलन जो अग्नि ताकरि कवलित कहिए ग्रासीभूत हो हैं। तहां अनुदय रूप वेदनीय १ देवगति १ शरीर ५ बंधन ५ संघात ५ संस्थान ६ अंगोपांग ३ संहनन ६ वर्णादिक २० देवगत्यानुपूर्वी १ अगुरुलघु १ उपघात १ परघात १ उस्वास १ अप्रशस्त प्रशस्त विहायोगति दोय २ अपर्याप्त १ प्रत्येक १ स्थिर १ अस्थिर १ शुभ १ अशुभ १ दुर्भग १ सुस्वर १ दुःस्वर १ अनादेय १ अयशस्कीर्ति १ निर्माण १ नीचगोत्र १ ए बहत्तरि प्रकृति तौ द्विचरमविषै क्षय भईं। बहुरि उदयरूप वेदनीय १ मनुष्य आयु १ मनुष्यगति १ पंचेंद्री जाति १ मनुष्यानुपूर्वी १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ सुभग १ आदेय १ यशस्कीर्ति १ तीर्थंकर १ उच्चगोत्र १ ए तेरह प्रकृति अंत समयविषैं क्षय भईं। ऐसैं क्षयकरि अनंतर समय विषैं सिद्ध हो है। जैसैं कालिमा रहित शुद्ध सोना निष्पन्न होइ तैसैं सर्व कर्ममल रहित कृतकृत्य दशारूप निष्पन्न आत्मा हो है॥ ६४८॥

तिहुवणसिहरेण मही वित्थारे अट्ठजोयणुदयथिरे।
धवलच्छत्तायारे मणोहरे ईसिपब्भारे॥ ६४९॥

त्रिभुवनशिखरेण मही विस्तारे अष्ट योजनान्युदयास्थिरा।
धवलछत्राकारा मनोहरा ईषत्प्रभारा॥ ६४९॥

स० चं०– सो जीव ऊर्ध्व गमन स्वभावकरि तीन लोकके शिखरविषैं ईषत्प्राग्भार है नाम जाका ऐसी जो आठवी पृथ्वी ताके ऊपरि एक समयमात्र कालकरि जाइ तनुवात वलयका अंतविषैं विराजमान हो है। कैसी है वह पृथ्वी? मनुष्य पृथ्वीके समान पैंतालीस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाख योजन चौडी गोल आकार है। बहुरि आठ योजन ऊंची है। बहुरि स्थिर है। बहुरि श्वेत छत्रके आकारि है सो श्वेतवर्ण है। वीचिमें मोटी छेहडैं पतली अैसी है। बहुरि मनोहर है। यद्यपि ईषत्प्राग्भार नामा पृथ्वी घनोदधि-वात वलयपर्यंत है परंतु इहां तिस पृथ्वीके वीचि पाइए है जो सिद्धाशिला ताकी अपेक्षा अैसा प्ररूपण कीया है। धर्मास्तिकायके अभावतैं तहांतैं ऊपरी गमन न हो है। तहां ही चरम शरीरतैं किंचित् ऊन आकार रूप जीव द्रव्य अनंत ज्ञानानंदमय विराजे हैं ॥ ६४९ ॥

पुव्वण्हस्स तिजोगो संतो खीणो य पढमसुक्कं तु।
विदियं सुक्कं खीणो इगिजोगो झायदे झाणी ॥

पूर्वज्ञस्य त्रियोगः शांतः क्षीणश्च प्रथमशुक्लं तु।
द्वितीयं शुक्लं क्षीण एकयोगो ध्यायति ध्यानी ॥ ६५० ॥

स० चं०– शुक्लध्यान च्यारि प्रकार है तहां सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति व्युरतक्रियानिर्वृति ए दोऊ तो सयोगी अयोगी केवलीके हो हैं ते पूर्वे कहे। अर दोय शुक्लध्यान कौनकैं हो है? सो गाथामैं वर्णन न कीया था सो अब इहां वर्णन करिए है–

जो महामुनि पूर्वनिका ज्ञाता तीन योगनिका धारक उपशम श्रेणी वा क्षपक श्रेणी वर्ती सो पृथक्त्व वितर्क वीचार नामा पहला शुक्लध्यानकौं ध्यावैं है। बहुरि दूसरे शुक्लध्यानकौं क्षीणकषाय गुणस्थान वर्ती तीन योगनिविषैं एक योगका धारक होइ सो ध्यावे है। इहां पृथक्त्व कहिए जुदा जुदा वितर्क कहिए भावश्रुतज्ञान ताकरि वीचार कहिए अर्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यंजन योगनिका संक्रमण तहां अर्थनैं ध्यावने योग्य द्रव्य वा गुण वा पर्याय तिनका अर व्यंजन श्रुतके शब्द तिनका अर योग मन वा वचन वा काय तिनिका जो पलटना सो वीचार है । ऐसैं जिस ध्यानविषैं प्रवृत्ति होइ सो पृथक्त्व वितर्क वीचार जानना । बहुरि जहां एकत्व कहिए एकता लीएं वितर्क कहिए भाव श्रुत ताकरि अवीचार कहिए जिस अर्थकौं जिस श्रुतशब्दरूप जिस योगकी प्रवृत्ति लीएं ध्यावै ताकौं तैसैं ही ध्यावै पलटना न होइ ऐसैं एकत्वतर्क अवीचार ध्यानविषैं प्रवृत्ति जाननी ॥ ६५० ॥

सो मे तिहुणमहियो सिद्धो बुद्धो णिरंजणो णिच्चो ।
दिसदु वरणाणदंसणचारित्तसुद्धिं समाहिं च ॥

स मे त्रिभुवनमहितः सिद्धः बुद्धो निरजनो नित्यः ।
दिशतु वरज्ञानदर्शनचारित्रशुद्धिं समाधिं च ॥ ६५१ ॥

स० चं०— सो सिद्ध भगवान त्रिभुवनकरि पूजित अर बुद्ध कहिए सबका ज्ञाता अर निरंजन कहिए कर्म रहित अर नित्य कहिए विनाश रहित ऐसा है सो मुझको उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन चारित्रकी शुद्धता अर समाधि कहिए अनुभव दशा वा सन्यास मरण ताकौं द्यो प्राप्त करो । इहां सिद्धनिकैं जो मोक्ष अवस्था भई ताकौ स्वरूप सर्व कर्मका सर्वथा नाशतैं संपूर्ण आत्मस्वरूपकी प्राप्ति रूप जानना । बहुरि अन्यमती अन्यथा कहै है सो न श्रद्धान करना । तहां—

बौद्ध तो कहै जैसैं दीपकका निर्वाण कहिए बुझना तैसैं आत्माका स्कंध संतानका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाश होनेतैं जो अभाव होना सोई निर्वाण है ताकौं कहिए है—

जहां मूल वस्तुका नाश होइ तौ ताके अर्थि उपाय काहेकौं करिए। ज्ञानी तौ अपूर्व लाभके अर्थि उपायकरे तातैं अभाव मात्र मोक्ष कहना युक्त नाही। बहुरि योगमतवाला कहै है—बुद्धि सुख दुःख इच्छा द्वेष प्रयत्न धर्म अधर्म संस्कार ए नव आत्माके गुण हैं तिनका नाश सोइ मोक्ष है। ताकौं भी तिस पूर्वोक्त वचनहीकरि निराकरण समाधान कीया। जहां विशेष रूप गुणनिका अभाव भया तहां आत्मवस्तुका अभाव आया सो बनै नाहीं। बहुरि सांख्य-मतवाला कहै है—दूरि भया है कार्य कारण संबंध जाका ऐसा जो आत्मा ताकैं बहुत सूता पुरुषकी ज्यों अव्यक्त चैतन्यता रूप होना सो निर्वाण है। ताका भी पूर्वोक्त वचनकरि निराकरण भया। इहां भी अपना चैतन्य गुण था सो उलटा अव्यक्त भया। ऐसैं नाना प्रकार अन्यथा प्ररूपै हैं। तिनिका निराकरण जैनके न्याय शास्त्रनिमैं कीया है सो जानना। मोक्ष अवस्थाकौं प्राप्त सिद्ध भगवान हैं ते निरंतर अनंत अतींद्रिय आनंदकौं अनुभवैं है। जातैं इंद्रिय मनकरि किंचित् जानना होइ अर किछू निराकुलता होइ तब ही आत्मा आपकौं सुखी मानै है। तौ जहां सर्वका जानना भया अर सर्वथा निराकुलपनां भया तौ तहां परम सुख कैसैं न हो है? तीन लोकके तीन काल संबंधी पुण्यवंत जीवनिका सुखतै भी अनंतगुणा सुख सिद्धनिकैं एक समयविषैं हो है। जातैं संसारविषैं सुख ऐसैं हैं जैसैं महारोगी किंचित् रोगकी हीनता भएं आपकौ सुखी मानै अर सिद्धनिकैं सुख ऐसैं है जैसैं रोगरहित निराकुल पुरुष सहज ही सुखी है। ऐसैं अनंत सुख विराजमान सम्यक्त्वादि अष्ट गुण सहित लोकाग्रविषैं विराजमान सिद्ध भगवान हैं सो कल्याण करो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi